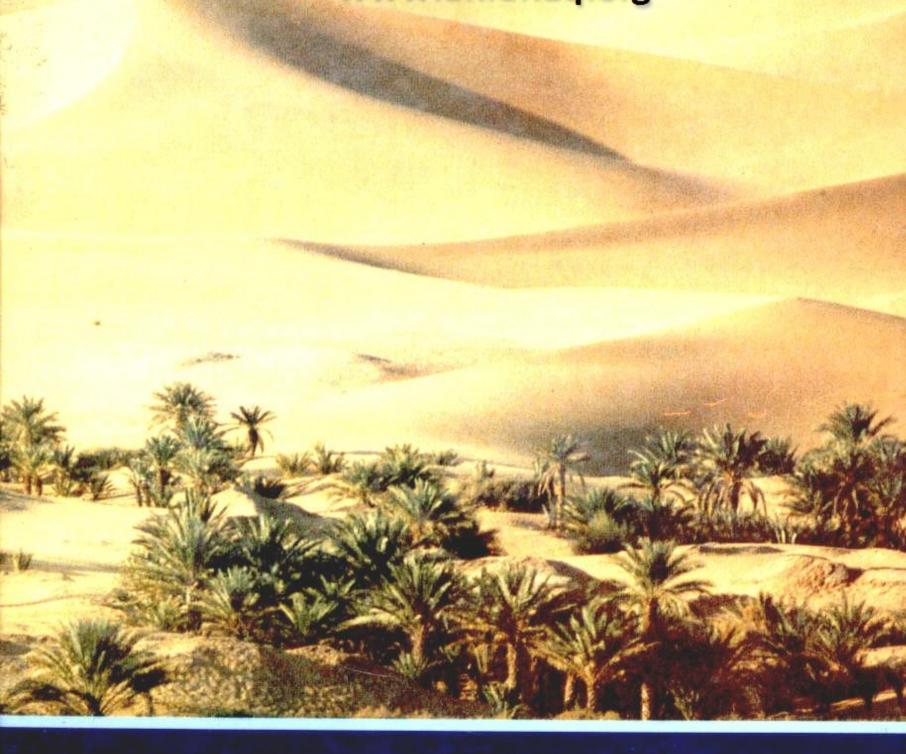
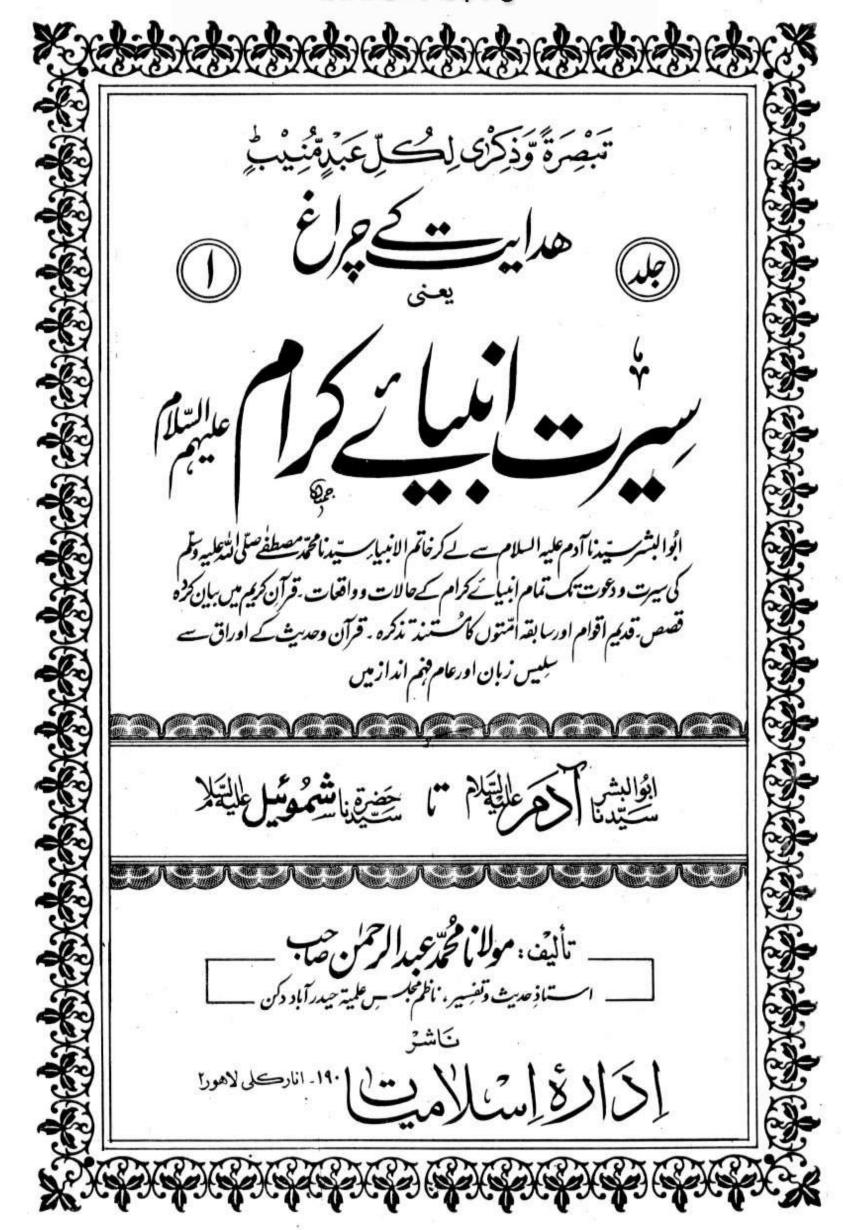


www.ahlehaq.org



الآرارة (سيط الميني) مواقع الماري ال



انثرف برا دران تتمهم الرحان ا داره اسلامیات، لابور

عرفان افضل برنمنگ برلس، لابهور

ملفے ہے ہے۔ ادارہ اسلاسیات ، 19 افارکلی لاہو ملا دارالاشاعت اردو بازار، کراچی ملا دارالاشاعت اردو بازار، کراچی ملا ادارته المعارف - وارالعلوم كورنگی كراچی محتبه دارا تعلوم - واراتعلوم كورنگی كراچی

| 8 | جلد ا وّل | | ۳ | بت مرجر باغ |
|----|-----------|--|---------|---|
| | | 25 1 15 | د | 5 |
| | | عباوب | | |
| | -16. Veg | عُنواب | · Fises | عُنواتِ. |
| | 44 | فطرت کی ^ح کمرا نی | ۳ | پیش نفظ. قرآن مکیم اور نسانِ نبوت |
| | " | توبه کی سنّت | 1000 | ين معلو البشرسيد الدم صفى الترعليالسلام |
| | 84 | تذكره كاعبرتيناك بيبلو | | تعارُف العارُف |
| | 44 | تذكره بإبيل وقابيل | 11 | قراً فی مضمون |
| | " | دنسلِ انسانی کے بڑے بھائی، | rr | الجيس كامناظره |
| | ~9 | انسان كأيبهاقتل | ۲۳ | قرآن مضمون |
| | ۵. | قرآن مضمون | tr | در ازی عمرکی درخواست |
| | ۵۱ | نتائج وعيب ر | " | قرآ نی مضمون |
| | " | مغترِ إبيل | 74 | خلافتِ ارضی |
| | " | دفن كا پاكيزه طرايقه | 11 | قرآنی مضمون |
| | or | قابيل كى حيثيت | " | اقراروسيم |
| | " | مقام عبرت | 19 | قرآ في مضمون |
| | ٥٣ | تذكره سبدنا ادركس عليالسلام | ۳. | جنّت كاتيام |
| | " | اسم کرامی | ٣٢ | قرآ بی مضمون |
| | 24 | قرآني مضمون | 44 | نتائج وعبب |
| 22 | " | تنائج وغيب ر | " | تاریخ پیدائش آ دم وحو ّار |
| | ". | علم رمل کی ایجاد | 20 | آدم وحوا |
| | | سيد ناا درئيس علبه السلام کامزیرتعارف | ۳4 | ایک شبه اور اُس کا جواب |
| | - 1 | ر ر کا تحلبہ مبارک ر ر ر یک تعلیات کا خلاصہ | " | المبيس كى حقيقت |
| | DA | ا توال حكمت | P2 | معيار خلافت |
| | 09 | سيدناادرىس علىالتىلام كى پنتين گونی | 71 | معیار اُسو ه اورعصمتِ انبیار |
| | 4. | مذكره اول ريس سيد انوح عليالسلام | 44 | د و وضاحتیں ابوالبشر |
| | " | اقر ارسل | r'r | فرشتوں کی حقیقت |
| | " | سيدنانوح عليه السلام اورقرأ نامكيم | 44 | جنات کاتعارف ایکمشت فاک |
| • | | 3-1 S | | ایک مشت فاک |

| مِلداوَل | <u>r</u> | | <u>مایت کے چراغ</u> |
|----------|--|----------|---|
| ۶. · | أُ عُنوان | 16. | عنوان |
| - 6 | سيدنا يو دعلسه السلامران قرين حكيم | 41 | سيدنا نوح عليه السلام كى دعوت اورقوم كى مخا |
| 1.7 | قوم ماد | 45 | قرآ فی مضمون |
| 1.9 | سيدنا ہو دعلبہ السلام کی تبلیغ | 44 | برسبی اور فریاد |
| 11. | عذاب مي آمد | . 44 | قرآني مضمون |
| 111 | قرآ في مضمون | 41 | ا ہے استوں تباہی |
| 114 | نتائج وعيب ر | 47 | قرآن مصنمون |
| 171 | 68 | , | آخری منزل |
| . " | احقاف والے | | قرآ ن مضمون |
| 177 | بےحقیقت نام سخت در در | 74 | سفينه اورقوم كااستهزار |
| 175 | آخری مہلت ' | | قرآ في مضمون |
| 110 | زمنی و فکری از نداد ۱۰ یک شبه کاازال ا در د | 10 | عنداب کی آمد اور صروری بدایات |
| 174 | بادِ <i>صرصر</i> می میزاد | " | قرآ في مصمدان |
| 174 | ایام نخسات تدر میسان پر | 24 | ابخام سفين |
| 144 | تگنی کا جواب شیرین کلامی تری پیریش | 4 | نتائج وعب |
| " | قدیمی جر ثومه نام کار ایسان | • | ايك قديم بين الاقوامي محمرابي اوراً سكااذاله |
| 111 4 | تعشره شبدناصاط عليهالسلام | " | توم نوح كيمعبو د |
| 1"1 | اورقوم تمود - اصحاب الجحر | 97 | ين ين د |
| " | ستيد ناصألح عليه السّلام ا ور قوّم ثمود | 10000000 | والشري مرايب لنشر |
| " | بدرنب ا | 94 | لوفان کی عالمگری |
| 144 | د د کی بستیاں در کردند | | شبه كاازال |
| " | نود کا زبانہ | - 9 | يك اورشيه كان ال |
| 124 | نو د کا ندېب | . 1. | . اَنْ ا |
| " | دم کاانکار پر | 11 | שלים בילוולוו |
| 124 | تَّشَيُّهُ الشِّر | - 11 - | ک گزاری |
| ١٠. | مجرت سن . | | M6 1 8 8 80 10 10 |
| וויו | رآ تي مضمون | | ب اور قدیم جاہلی مرض مند عسر تیں |
| 144 | مانخ وعبب ر کین آنف به دریا | | المرت المراه على الترجي توري |
| | م فی آزمانش اور ناقعهٔ النتر - شبه کلازاله | | مره سيد ما جو د عليه انسلا) اور قوم عاد السم. رف |
| 149 | ت سبه کاارا له | 4111 | · I |

| tries | ا عُنوان | ا کونی | عُنوان |
|-------|--|--------|--|
| 7.1 | نتائج وعيب ر | ١٣٩ | انسانی خو د فریبی |
| " | انبياركرام كي اليا بي محيفيت | 101 | چدعترین |
| 7.7 | حيات بعد الموت كاايك اور واقعه | 101 | نا پاک مردوں سے خطاب |
| ۲٠٢ | بنی قطور ہ | 100 | مغجزات كى حقيقت |
| " | پہلی دعائے ابراہمی کی وضاحت | 104 | ٱ ثارِ عبرت |
| r.v | دوسری دعائے ابراہمی کی وضاحت | 100 | ایک مشرکانه نظریه |
| 1.9 | النیسری دعائے ابراہتمی کی وضاحت در سے معاشے ا | 141 | جابليت اوراسلام كاطرز استدلال |
| 111 | ثلث كذبات | " | نِبِي كَي قَوْتِ ا مِتمادُ |
| 114 | مشرک کے لئے دعائے مغفرت | 141 | كمراع تمدّن كى علامت |
| 114 | ایک سنتمبر کی وضاحت | 145 | قانونِ مِيكافات |
| 119 | آ ٹاریکا کنات ہے رہے کا کنات تک | 144 | اطاعیت گرمیزی کے اسباب |
| " | ورط فوک بات م | 140 | ہراقتدارتے بالاتر |
| ++. | اندهى تقليد | | تذكر خليل الترسيدنا ابراسيم عليه السلام |
| 777 | علم ويقين كي ايك علامت | 144 | اورنمرود مستايات |
| 776 | أسلام كالخشن شلوك | " | سيلة كنيب |
| " | مت لُ الْأَعْلَىٰ | " | تعارف ب |
| 110 | برُ وں کا بچین | 144 | سيدنا ابراميم مليه السلام اور قرآن عكيم |
| | تذكره ذبيج الترسيد بالتمعيل عليالسلا | 141 | قوم ابراسم |
| 774 | ا ورتعمیب رکعبه | " | ا قرآ نی مضمول |
| . " | ذ کر ولادت | 147 | باپ كو دعوتِ توحيد |
| 770 | اسيدنااصمعيل عليه السلام اور قرآن فليمر | 140 | قرآني مضمون |
| 119 | و ادى غير ذى زرعٍ | 14 | قوم کو دعوتِ توجید |
| 444 | قرآ في مفهون | 140 | قرآنی مضمون |
| 777 | و بيخ اين | 144 | ستاره پرستی یا خدا کیستی ؟ |
| 779 | قرآ فامضون | 149 | قرآني مضمون |
| 440 | سيد نااسمعل عليه الشلام كي اولاد بر | 14. | بتوں کی ہے تب |
| 144 | " م اور قرآن عليم | 223 | قرآ في مضمون |
| + 12 | . " يخ ع " كي و فات | 174 | باد شا <u>ه</u> وقت کو دعوتِ توحید |
| 1 4 | سانج وتبيسر | 144 | 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1 |
| 1 | بهلا وَه گفرخدا کا نو ک | 100 | قرآ في مضمون كَانَاتُ كُذِفِي بُدُدُّةً ا وَّسَلَامًا |
| | المميرتعب البيخة على الآلاد | 149 | |
| 100 | تذكره سيدنا أسحق عليه الشلام | 19. | قرآ في مضمون |
| 104 | ولادت باسعادت قرق ن مضمین | 197 | مهجرتِ ابراتهمي |
| | فرآنی مصمون | 191 | هجرت بجانب فلسطين |
| 14. | نتائج وعب سنتِ ابراسَمِي | 190 | البجرت بجانب مقمر |
| , | سيد نااسخن كانكاح | 191 | مثابكه وحيات بعدالموت |
| 741 | سدنااسخق كاولاد | + | قرآ فی مضمون |

| جلدادل | 16 | 1 | ہدایت کے چراغ |
|--------|--|------------|--|
| tie | عُنوان | tive's | عُنوان |
| 194 | آغاذِ قصرَ اورنرالانحواب | 747 | تذكره سبدنا لوط عليهالت لام |
| 191 | قرآ نی مضمون | " | تعارُف |
| " | برا درا بزرازشش | " | سدوم |
| ۳ | قرآ ل مضمون | 746 | تين قومى جرائم |
| " | حبُومًا نُون | 140 | دعوت وتبليغ |
| ٣٠٣ | قرآنى مضمون | 444 | ملائكة التُدكى آمد |
| ۳.۳ | د ورِ غلامی | 146 | قرآنی مضمون |
| r. 4 | قرآ نی مضمون | 749 | ملائكة التنزاورسيدنالوط مليه السلام |
| " | باذا يمصرين | 144 | قرآ في مضمون |
| F. A | قرآني مضمون | 744 | نتائج وعيب ر |
| " | سخت تربین آز مانش | " | قوم بوط كا وطن |
| 71. | عظیم کامیا بی | 760 | ا نرالا گناه |
| 414 | محسن يوسفي كاآشكارا | " | لواطت کی نشرعی سزا ایک صروری تنبییہ |
| 414 | قرآ في مضمون | 101 | پایمزه طربقه اورشبه کاجواب |
| 714 | تیدُفانے ہیں | 122 | وَخُواْهُمُ وَضَاحَيْنِ |
| TIA | قرآ بی مضمون | 1A4 1A4 | ایت اکتر تذکره سید بالوط علیه السلام کا قرآنی درس |
| ۳۲. | خواب مسلطانی | " | چنداعلی حصلیں |
| 1 | معنمونِ قرآ بی | 149 | تذکره سید الیعقوب علیه السلام تعارُف |
| 777 | در بادِمصریمی در بادِمصریمی | " | تعارُف |
| 777 | قرآ نی مضمون قرآ نی مضمون | 79. | سيدنا يعقوب عليه السّلام اور قرآن حكيم |
| 772 | در بارِیوسفی اوربهائیوں کی آمد | 191 | بنی اسرائیل |
| 771 | ترآ بی مضمون قرآ بی مضمون | 1 | اولا دِمعِقوب عليه السّلام اور قرآن مكيم |
| m mm | در بادِ یوسفی اور د و <i>سرا</i> داخله | 195 | تذكره سيدنا يوسف علبيه السلام |
| 274 | قرآ نی مضمون | | اور عزيزم مصر |
| 441 | در بارِ پوسفی اورتبسرا داخله | " | تعادبُ العادبُ |
| 444 | قرآ نی مضمون | 194 | فرآن عليم اورسيدنا يوسعن عليه السلام |
| 244 | در بار پوسفی اور چومها داخله | " | احسن القصص |
| 40. | قرآنی مضمون | 190 | چندتهیدی بالیس |

| جلد اول | ^ | | 05,2014 |
|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------|
| *ire | عُنوان | ikitej. | عُنُوانِ |
| 0.4 | قرآ نی مضمون | ro. | وادئ مقدس |
| 0.0 | نزوكِ تورات | rot | واخلهُ مصر |
| ۵۱۰ | قرآ نی مضمون | " | قرآ نی مضمون |
| DIT | مصنوعى خدا | MOL | فرعون اور دعوت حق |
| 010 | قرآن مضمون | 407 | قرآني مضمون |
| 019 | خيانت اور ہلاکت | 444 | إمان |
| or. | قرآ نی مضمون | 444 | آفاذِمقابلہ |
| DYI | ر فع طور | 440 | قرآن مضمون |
| DTT | قرآ نی مضمون | 449 | ٔ طهورِ حق ا |
| 014 | ا رض مقدس | 441 | قرآ ني مضمون |
| 014 | قرآني مضمون | " | انتقامی کا در واتی |
| D74 | ذبح بقره | PLY | قرآنى مصنمون |
| | قرآ فی معنمون | 24 | مروموس |
| 044 | تارو <u>ن</u> تارون | 424 | قرآ نی مضمون |
| 0 4 | قرآنی مضمون | 11 | مردمومن اورا بخام خير |
| 044 | ہے و فاالزام تراش | M4 9 | قرآ فی مضمون |
| 079 | قرآ في مضمون | rn. | تسع آیات دنومعجزے |
| 04. | عَبْدًا مِينُ عِبَادِنَا | 444 | قرآنی مضمون |
| 040 | قرآ في مضمون | 400 | تعاقبُ اور فلقِ بحر |
| 00. | و فاتب سيّد نا موسىٰ عليه السّلام | 491 | قرآ في مضمون |
| 001 | ايك عُمده تشريح | 11 | عبرتناك انجام |
| 000 | رُتِے جے وُنیا میں خدا دیتا ہے . | 110 | قرآ في مضمون |
| 204 | نتائج وعِب ر | 111 | يب لامطالب |
| | روح تذكره | 11 | دوسرامطا لب |
| ", | حن كا اعباز | | تيشرامطالب |
| 000 | مسبرکی یونخی | 11 | حج تمقا مطالب |
| 009 | اخلافي مخزوري | 11 | |
| " | وزم وہمت کی موت | 0.0 | كو و طورا در اعتكاف |

حضرت مولانا شاه ابرآر الحق صنا دامت برگانهم، ناظم مدارس دوه الحق هردونی دیو،پی،

محرم ومحترم مولوى عبد الرحمن صاحب زير لطفه السامي. السلام عليكم ورائدة الترو بركاته .

آپی مولفہ کناب بُہ ایت کے چراغ "کی جلدا ق ل کا مطالعہ اور اس سے امتفادہ کا شرف عاصل ہواؤس بات سے بہت مسترت ہوئی کہ آپ نے آیاتِ فرآنی اور احادیثِ شریفہ کی روایاتِ معتبرہ پر حالاتِ صرات، نبیار کرام کو مداد مکا نبزا سکے ساتھ ساتھ مقانت پر کوئی اشکال یا سوال پیدا ہوتا ہے انکا فقت ل اور تحقیقی جراب بھی کہ کھا گیا ہے۔ کتا کے مصابین کے لحاظ سے جی چاہتا ہے کہ انکا خلاصہ ایسے طور پر ہوجا و سے کہ حضرات انبیاء کرام کے قرآنی حالات جو قرآن پاک ہیں ہیں نبزانکے باد سے بیں جو سوال اور اشکال ہے انکا جواب بھی ہوجا و سے اس سے امر نہ سلم کے جوقرآن پاک ہیں ہیں نبزانکے باد سے بیں جو سوال اور اشکال ہے انکا جواب بھی ہوجا و سے اس سے امر نہ سلم کے بچوں اور دینی مدارس کے طلبہ کو بھی زیادہ نفع کی توقع ہے ۔ یہ ناکارہ دُعاکر تا ہے اللّٰہ تعالیٰ اسکو قبول فرائے اور آب کے اور آمت مسلم کو اس سے نفع اُ نشانے کی توفیق عطا فراو ہے۔ اور آمت مسلم کو اس سے نفع اُ نشانے کی توفیق عطا فراوے۔ اور آمت مسلم کو اس سے نفع اُ نشانے کی توفیق عطا فراوے۔ اور آمت مسلم کو اس سے نفع اُ نشانے کی توفیق عطا فراوے۔ اور آمت مولانا شاہ ابراد الحق صاحب) بقلم (قاری) امیر صن

تقـــرنظ

لسالِ مَثْنُوى مولانا حكيم محد اخترصا منطلَّهُ ناظم مجلس شاعت التي گلشن اقبال كراچ. پاكسان بسم التّٰدارمن الرحمي بخمدهٔ وصلى على رسوله الكرم.

ہمادے محترم فیلصم مولا ناعبدالرحمٰی صائز بدلطفۂ نے اپنی کتاب می 'ہُایت کے جراغ ' توجلد وں پی زتیب دی ہے بموصوف کی اس تالیعت کا حصداق ل دیدہ زمیج سن طباعث سے آراستہ ہو کرمنعی شہو دہب آ چکاہے۔ اس مطبوعہ صرکوجہات بھی دکھااس خرکا صلاق زفرق تا بہ قدم ہر کہا کہ می نگرم جو سے کہ سے کشمہ دامن دل می کشد کرجاایں جا

اسلوب بیال کا دکشتی مضامین کی معیاری بلندی اور مردوضوع کا مرلا فادہ با دور تعبا درضعے دیر تک مطالع کرتارہا قلب تا ہوئے کیا تھا۔
اس کتاب کی نافعیت علمیہ اورعملیہ کامعتقد ہوا اور قرآن پاکے مجزانہ انداز کے عبرتناک اقتا اور اندیا علیم ماسلام کی پنجیبرار تعلیما اور
نافرمان قوموں کی طاغوتی طاقتوں کی تباہ کا دیاں ، قبرخدا و ندی کی درمہ خیز عذا بوں کی تفصیلا سے ایمان کو تازکی ، درح بس بالبدگ اور
منفس ایل فتا دگی اور بندگی کی جوشان بیدا ہوتی ہے وہ اس کتاب ہوا بیکے چراغ سے آفتاب روشن کی طرح واضح ہے۔ التہ تھا اس کتاب کو شروی محسن قبول بخشے اور صدقہ اربربائے ، امت سلم کیلئے ہمایت کا چراغ "بنائے۔ آئین ۔

العارض محدا خترعفا الترنعالي عنه نزيل مده هراكست ووائه مطابق م وم

بأفذومراج

(تفسير، حديث، تاريخ وسايرت)

(عدیت)

(۱) بخاری شریف (۱: ۱) بخاری شریف (۲) مسلم شریف (۲) بوطانات اس (۳) ترندی شریف (۴) مرقات شرح مسکون (۳) ابوداؤدشریف (۹) فتح الباری (۵) نسانی شریف (۱۰) عینی شرح بخاری (تاریخ فیسبوت)

را) قصص القرآن مولنا حفظ الرحمن سبو باروي ً

۲۰) قصص الانبيار - ابن كثير

وس) قصص الانبيار. عبدالو بابنجاره

دم، تاریخ ابن کثیر

ره) ارض القرآن مولنناسلیمان ندوی ا

(۱4) البدايہ والنہايہ

(۵) سیرت ابن هشام

دم) گسدالغایہ

رو، زرقانی

(۱۰) کاوالمعاو

(۱۱) سيرت المصطفيٰ

(۱۲) روضَ الانف علامسَهيلي

د قرآن ،

(۱) قرآن کیم دمطبوعة اج ممینی کراچی)

(٢) تمفسير دُرِي منتثور

۳) تفسيرابنِ کثير

(٧) تفسير جلالين

(۵) تفسیرابن جریر طبری دجامع البیان)

(٢) تفسيردُوح المعاني

(۷) تفسیرمظهری

(۸) تفسیرقرطبی

دو) تفسير بيان القرآن

دن تفسيرمعارث القرآن

(۱۱) تنفسيريا جدى

(۱۲) نرجمه قرآن شاه عبدالقادرصاحب

رس۱) ترجمه قرآن شاه رفيع الدين صاحب

رس رجه قرآن شیخ البندمولن المحمود سن صنا ۱۳۷)

(١٥) رُجه قرآن مولنا شبراحد صناعتمانی ه

(۱۶) ترجمه قرآن مولینا اشرف علی صنا تھا نوی

(١٤) ترجمه قرآن مولسا عبد الماجد صنا دريا آبادي

ہایت نے چراغ مرکب سرعالی میں البتروی الوالیان کی آیک البتروی

مولنا محدعبدارمن صنا مؤلف کتاب بذا کا خصوصی عربی تعارف جوایک موقع برولناستار بوآن علی ندوی ظلائے مکتُ الکرمی معلی مال کیا گیا تھا. ترجه درج ذیل ہے:-

بعد حمد وصلوة: -

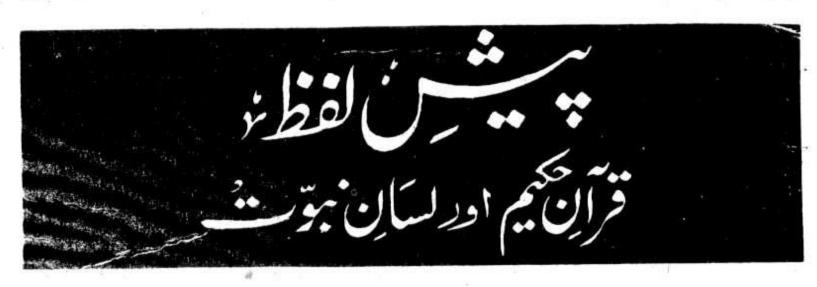
حضرت مولنما عبدالرحمان بن احد شریف صاحب حیدر آبادی سے بین بخوبی واقف بہوں ا مولنما علوم دینی واسلامی کے فاضل ہیں جنوبی ہند کے دینی ولمی حلقوں بیں آپ کی بیش بہا خد مات رہی ہیں مولنما نے ہندوستان کے مختلف اداروں سے استفادہ کیا ہے۔ آخر ہیں ہر س مظا ہر علوم ضلع سہار نپور (یوبی) سے علوم د نبیہ کی بحمیل کی اور اصول دین ولم شریعت میں اعلیٰ سندیں حال کیس بچصیل علم کے بعد جامعہ نظا میہ حیدر آباد ہیں تفریباً بندرہ سال درس تدریب کے خد مات انجام دسی ہیں۔ اسکے علاوہ مولئم اموصوف نے عامیۃ السلمین کی تعلیم و تربیت کی جانب بھی خصوصی توجہ دی۔ اس سلسلے ہیں اہل علم حضرات سیلئے مجلس علمیۃ "کی تاسیس رکھی جس کا دینی ولمی حلقوں ہیں اثر رہا ہے۔

چونکه موللنا توحید وسنت سے داعی وعلمبردار منفے اپنے شہر میں اہل بدعت کی مخالفتوں سے دو چار ہوگئے۔ اسی سال موصوف نے فریفیئہ حج ا داکیا اور ا ن کی خواہش کے مخالفتوں سے دو چار ہوگئے۔ اسی سال موصوف نے فریفیئہ حج ا داکیا اور ا ن کی خواہش سے کہ کچھ عرصہ انہی مقاباتِ مقدّسہ ہیں رہ کرعلمی و دینی خدمت انجام دیں۔ چنانچہ انہیں اس مقصد سے خصول کے لئے تعاون کی ضرورت ہے۔

محجے اس بات سے خوشی ہوگئ کے مولنا کے مقصد کی کمیل ہو۔ اِس بارے ہیں جو بھی اِن کے ساتھ معا دنت کر ہیں ہیں اُن کا مشکر گذار رہوں گا۔

والتسلام

كتبُ الفقيرا ٰلى السُّر ابوالحسن على الجيسنى الندوى



قرآن حکیم میں آگی اور پھپلی قوموں کے حالات نذکور ہیں۔
اسمیں تمہارے فیصلہ جات بھی موجود ہیں۔
یہ حق و باطل کے درمیان فیصلہ کرنے والی کتاب ہے۔ نداق و دل گئی شرکانہیں۔
جواس کے خلاف بغاوت کریگا التّر تعالیٰ اسکو تباہ و ہر باد کر دے گا۔ اور جو کوئی اسکو جھوڑ کرکسی اور کتاب سے ہدایت ورہنما ئی طلب کرے گا اللّہ تعالیٰ اسکو گمراہ کر دیگا۔
یہ التّر عظیم کی مضبوط رسی ہے۔
یہ التّر عظیم کی مضبوط رسی ہے۔
یہ التّر عظیم کی مضبوط رسی ہے۔

اس کے پڑھنے سے خیالات ہیں ہے را ہ روی نہیں آتی اور نہ ہی الجھن پیسہ ا

الله كريم كى برى دحمت وعنايت ہے كه أس فے انسانی بدايت وربنمانی كيلئے آنمینی اور فوجداری طرزخطاب اختیار نهبیس کیاجس میں مرضیات اور نامرضیات کی طویل فہرست ہوتی ہے جیبا کہ حکومت ملطنت سے آئینی و فعات و قوا بین ہوا کرتے ہیں۔ اگرچه الته عظیم کی حاکما نه و قاهرانه ذاتِ عالی هرطرح سزا داریج که د و زمین پر ا بنی مرضیات اور نامرضیات کا دستور د فعات کی شکل میں نا فذکرے کیکن اُسکے فضل وکرم احیان وعنایت،جود وسخارحمت وراً فت نے انسانی رہنمانی اور ہدایت کے لئے اپنی ت بمبین میں آئینی اور فوجداری و فعات کا طرز اختیار نہیں کیا بلکہ وعظ ونصیحت، درس وعبرت ، شفقت ومحبّت کا عنوان اختیار کیاہے :-

وَلَقَدُ يَتَوْنَا الْقُوْاَنَ لِلدِّكُوفَ لَمِن مُّدَّكِرُ

دانقرآیت کیا)

(ہم نے قرآن کونصیحت وعبرت کے لئے بہت آس ن سردیاہے، میرسیاکوئی نصیحت قبول کرنے والاہے) يم مي وعظ ونصيحت، دعوت تبليغ ، درس وعبرت كے عمومًا جارعنوان اختيار كئے مَعَ مِن الجَسِيح وربع انسانيت كورشدو بدايت كاراسته فراهم كميا كميا --

دن تذكير بآلآيرالتُّد ۲۱) تذكير بِأَيَّامِ النَّر (٣) تذكير بآياتِ التُد

رسى) تذكير بِمَا بَعْدَ المؤت

(۱) تذکیر بالآیر الٹرکامطلب بیہو پاہیے کہ الٹر تعالیٰ نے اپنی مخلوق پر دن رات جن معتوں كى ارزان فرمائى ہے أن كو يا دولاكر اپنى اطاعت وسٹ كرگزارى كا فريضه يا دولا يا جائے سرجس ذاتِ كريم كے ايسے ايسے كرم واحسان ہوں اُس كوكيوں كرمجولاً جاسكتا ہے. غَاذْكُو وَا اللهِ اللهِ لَعَلَكُمُ تُفَلِحُونَ -

(اعراف آیت م<u>۳۹ ، مهم</u>ک

(التُركي معتول كويا دكرو ماكه تم فلاح ياوً) ٣٠) تَذَكِيرِ بِا يَامِ النُّرِكَا يُمِطلب ہے كہ اقوام سابقہ اور مَلِل قدیمیہ سے حالات اور اُن کے

برايت تحريراغ

عروج وزوال کا نذکرہ کر کے نصیحت وغیرت فراہم کی جائے تاکہ موجودہ قولمیں اُن حوادث ہے دوجار نہ ہوجائیں جوم کا فاتِ عمل کانتیجہ ہوا کرتی ہیں سور ہ ابراہم آیت عظیں اس " ذكير كا ذكر موجود ب :-

وَ ذَكِرُ هُدُ إِنَّا يَهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

دنیا وآخرت کی فلاح یا تی ا ورجن قوموں نے سکوشی و بغاوت کی اس شے بتیجیں عذاب المہی

وم نوح ا و راصحاب الرِّس، قوم ثمو د ، قوم عادٍ ، فرعونِ ، قوم لوط ، اصحاب الأيمير ، قوم تبع ان میں سے ہرایک نے نبیوں کی تعلیمات سے روگر دا نی کی ، الن^{یوغ}ظیم کا قانونِ مکافا

سکواینی گرفت میں لے لیا۔

رم، تذکیر با یات النرکامفہوم بہ ہے کہ عالم کون ومکان کی نشانیاں و کھسلاکر خالیٰ کائنات کی ہتی ا در اُس کی وحدت کا اعتراف کر وایا جائے کہ بیر دشن شارے مخترا چاند، دېمتاسورج، بيستون آسمان،ک و ه زَمين، فلک بوس پېاژ، روال دوال دريا، نبوا وُں کی ریل پیل، دن رات کا آنا جانا ،طلوع وغروب کاننظم نظام، یہ کیا ایسے ہی پل ر ہاہے ؟ جبکہ عمولی سی حرکت بھی بغیر کسی سبب نہیں ہوتی تو بھر پیز زمین وخلا اور آسمانوں کا با فاعدُه نظامُ سي سي كے بغير حيوں كر قائم و دائم روسكتا ہے؟

اس سارے نظام کائناتی سے جزئیات وتفصیلات پر آگریقول وند ترسے کام لب جائے تو تم خو د بول اسٹو کئے کہ بیٹیک جس ذات نے ایسے کامل اور تعکم انتظامات کیتے ہیں وہی ذاتِ واحد قا درمطلق ا وربحیم کلَ اورسب کا پرور دگارہے ۔ ۔

فَكُبُحًانَ اللهِ مَن إِلْ الْعَالَمِينَ .

سورة يوسف بي اس تذكيركا اظهار كياكيا -- :-وَكَايِّينُ مِّنُ ايَتٍ فِي السَّنُوَاتِ وَالْأَمُضِ يَمُرُّوْنَ

عَكَيْهَا وَهُوْعَنْهَا مُعْرِضُونَ. رآيت عضا)

(اورزمین وآسمانوں میں اللرکے بہت سے نشانات ہیں جن پریہ لوگ ہے توجہی ہے گزرجاتے ہیں اور اُن کی طرف سے منھ

دم) تذکیر بما بعد الموت کامطلب یہ ہو تاہے کہ عالم برزخ د قبر) اور عالم آخرت و قیامت کے مالات وحوا دث مناکر وعظ نوصیحت کی جائے۔ الٹر تعالیٰ نے انسانوں کو اس مخصوص عنوان سے جا بجا خبردار كياہے اور ذكر آخرت كو قرآن حكيم كي اُساسى تذكير شمار كيا ہے۔

قرآن علیم کی یہ تذکیر سور و ق بیں بیان کی گئی ہے:۔

فَذَكِرٌ بِالْفَزَاٰنِ مَنُ يَخَانُ دَعِيُدِ رَايَتِ عِينَ ایس قرآن کے ذریع نصیحت کر واسٹنے میں کو جو الٹر کی وعید

لیعنی بعد الموت کے عذاب سے ڈرٹا ہو) قرآن حکیم کا وعظ وارسٹ دعمو مًا انہی چارعنوا نات پڑھمل ہے

زیرنظرکتاب قرآنی تذکیراربعه کاایک عنوان ہے د تذکیر با یام الٹر) اسمیں انبیار ورسل کی وعوت وسلینے ، قوموں کار دِعمل اور الترعزوجل کے قانون مکا فات کا تذکرہ چالیس عناوین میں جمع کیا گیاہے اور اس بات کی کوشش کی گئی ہے کہ عنوان واحد کے سخت جسقدرتهى موا دفران يحيم تسيمختلف مقامات يرملنا ب أسكو يكجا كرديا جائے اور ا ما دينٍ صحیحہ میں اس عنوان کے تخت جو وضاحت آئی ہے اس کو قرآن تھیم کی تشریح و تا ویل کے ملور پرشریک کیا جائے ۔ تاریخ وسیرت سے اُسی قدر استیفاد ہ کیا گیا جو قرآن و مدسیش کی وضاحت تے لئے ضروری تھا اور جو ابجے منشار اور مراد سے مکرا تا نہو۔

آخري بربرعنوان كے سخت نتائج وعبركامفيد ومؤثر ذخيره جمع كرديا كيا بے جو قرآن تذكير كامقصد ونشا ہوا كريا ہے يكو يا آپ كى پيركتاب انبيار وُرسِل كى حياتِ طبيّبه اور أنجى دعوت وتبلیغ ، ایثار وقر بانی کا تذکرہ اور قوموں کے عروج وزوال کی رُوئیدا دہے۔ کتاب کا پڑھنے والا قرآنی واقعات اور اخبار کو بیک نظر تفصیل سے سابھ کیجا مطالعہ کرسکتا ہے۔ قرآنی قصص اور واقعات سے تحت اہل علم حضرات نے بکثرت کتابیں تالیف کیں ہیں جنمیں بعفی کتب اخذ ومرج کی حیثیت سے معروف ومقبول ہیں۔ انہی معروف وستند کتب سے زیرمطالعه کتاب مرتب کی مخنی ہے تیفصیلات ، اختلا فات ، بحث ومباحثہ جیسے عنوا نات سے حتى الإمكان احتراز كمياكيا يه عام طور پرحوادث و واقعات كو نارىخ وسيرت كى كما بول سے اغذ کیا جاتا ہے اور اسی کو ماغذ و مرجع تھی سمجھا گیا ہے لیکن زیرنظر کتاب ہیں اصل ماغذ

ہایت کے چراغ جلداؤل

ومرجع قرآن عیم اوراحا دین صحیحہ کو قرار دیا گیاہے بینی تاریخ وسیرت سے وہی بات قبول کی گئی ہے جو قرآن حکیم اوراحا دین صحیحہ سے مطابقت رفعتی ہوا دراسکی روح و منشار سے فکرا نی نہ ہو۔ ہمارااحساس والقان اسی اصول پر قائم ہے کہ قرآن حکیم میں اقوام قدیمہ اور میل سابقہ کے و قائع وحوا دث کا جو بھی تذکرہ پایا جاتا ہے وہی اصل یا خذا ور قابل اعتماد غیر شکوک علمی ذخیرہ ہے۔ اور یہ بات مھی قابل وکر ہے کہ علمی ذخیرہ ہے۔ اور یہ بات مھی قابل وکر ہے کہ عام طور پر قرآنی واقعات میں اسرائیلی روایات بمثر تنقل کی جاتی ہیں جس کا سسلسلہ آغازِ مسلام سے آج یک جاری رہاہے بین زیر مطابعہ کتاب کو اس کثرت سے آپ خالی پائیں گے۔ اسلام سے آج یک جاری رہاہے بین زیر مطابعہ کتاب کو اس کثرت سے آپ خالی پائیں گے۔ اسلام سے آج یک جاری رہاہے بین زیر مطابعہ کتاب کو اس کثرت سے آپ خالی پائیں گے۔ اسلام سے آج یک جاری رہاہے اسلام کے اسلام سے آج یک جاری رہائے و مینا سرائی و مینا سرائی ہو اس کر دیا ہے۔ اسلام سے آج یک جاری رہائی ہو اس کر دیا ہے۔ اس کر دیا ہو کہ کہ میں اسرائی ہو کہ میں اسلام سے آج یک جاری رہائی ہو کہ میں اسلام سے آج یک جاری رہائے و مینا سرائی ہو اس کر دیا ہو کہ کا میں سے آج یک جاری رہائی ہو کہ میں اسلام سے آج یک جاری رہائے و مینا سرائی ہو کہ کو اس سے آج یک جاری رہائی گرام کی عنوان پیسے ہو کہ والی سے آج یک ہو گائی ہو کہ کو اس سے آج یک ہو گائیں ہو گرائی ہو گائی ہو گائی ہو گو گائی ہو گائیں گرائی ہو گائی ہو گائی ہو گائی ہو گائی ہو گائی ہو گائیں گائی ہو گائیں ہو گائی ہو گائیں ہو گائی ہو گائی ہو گائی ہو گائیں ہو گائی ہو گائیں ہو گائی ہو گائیں ہو گرائی ہو گائیں ہو گائیں ہو گائی ہو گائیں ہو گائی ہو گائیں ہو گائ

حَشْبُنَا كِتَابُ اللّٰهِ دِالسّٰرِي كَتَابِ اللّٰهِ عَلَى كَتَابِ كَا فَي كِي

کتاب کی تالیف میں جن کتابوں سے استفاد ہ کیا گیاہے اُن کی محمل فہرست دیدی گئی ہے۔ آپ کتاب کے مضامین کو انہی کتب سے ماخو ذیا ہیں گے۔

ہمیں اس بات سے اظہار میں خوشی محسوس ہوتی ہے کہ آپ کی یہ کتاب مصابیج اُلھڑی در ہاتے اُلھڑی در ہاتے کے اُلھڑی دہدا میں در ہاتے کے سال کی مسل در ہاتے کے سال کی مسل مشغولیت سے بعد شب قدر ۲۹ ررمضان المبارک سے بھالے مسجد الحرام دخانہ کعبہ ہیں مف میں ابراہیم سے قریب اختتام کومینجا۔ فَلِتْ الْحُکْمُ اُلَّہُ مَالَہُ کَا اَلْہُ مَالَہُ کَا اَلْہُ مَالَہُ کَا اَلْہُ مَالَہُ کَا اَلْہُ مَالْہُ کَا اَلْہُ مَالُہُ مَالُہُ کَا اَلْہُ مَالُہُ کَا اَلْہُ مَالْہُ کَا اَلْہُ مَالُہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اَلْہُ مَالُہُ کَا اَلْہُ کَا اَلْہُ کَا اَلْہُ کَا اَلْہُ کَا اَلْہُ کَا اَلْہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَالُہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اَلْہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَالْہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰہُ کَا اللّٰمُ کَالْکُ کُلُورُ کَالْکُورُ کَا اللّٰہُ کَا ا

'' خطا وَنْسِیان کے بخون محفوظ رہاہے جو آپ کا یہ خا دم محفوظ ہوگا۔ بس اس سے

زیاده اورکیاعرض کرسکتا ہوں۔

رَبِّنَا تَقَبَّلُ مِنَّا إِنَّكَ آنَتُ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ وَثَبُ عَلَيْنَا الْكَالَمُ وَثُبُ عَلَيْنَا الْكَالِمُ وَثَلِيلُهُ وَصَلَّى اللهُ عَلَىٰ خَلَقِهِ وَاَ فَضَلِ رُسُلِهِ النَّكَ اللهُ عَلَيْهِ وَاَ فَضَلِ رُسُلِهِ مَسَيْدِ نَا وَوَسِيْكَتَنَا فِي الدَّارَيْنَ مُحَتَّد بُنِ عَبُدُ اللهِ خَاتَمَ النَّيِّيِينَ تَ مَنْ اللَّهُ النَّيِيدُ نَ مَا وَمِ القَلَ اللهُ وَصَحْدِمِ اَجْمَعِينَ - فَا وَمِ القَلَ اللهُ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ مَصَحْدِمِ اَجْمَعِينَ - فا وم القَلَ اللهُ اللهُ وَصَحْدِمِ الْجَمَعِينَ - فا وم القَلَ اللهُ الل

خا دم القرآن عبدُ الرحمٰن غف رلهٔ ۱۷رجما دی الآخرہ ست بھلے مطابق ۵ رفروری سے فلے یوم الجمعیہ یوم الجمعیہ تعارُفَ اسیدنا آدم علیہ السلام موجودہ زمین سے سب سے پہلے انسانِ اور پہلے نبی ورسول ہیں۔ فرآن محیم اور احادیث صحبحہ اس بار کے میں ساکت ہیں کہ سیدنا آ دم علیدات الم سے بہلے اس زمین پر اور تھی کوئی مخلوق آباد فنی یانہیں؟ أكُرجِيب ببدنا آدم عليه السلام سے بيہلے جنّات كى بيدائش ہو عكى تحفى اور ملائكة الله إن سے مجمی بہلے وجو رہیں آ چیچے متھے ، لیکن یہ وضاحت نہیں ملتی تھ موجودہ زمین اِن مخلوفات

الٹر تنعالیٰ نے اپنے بندوں کے لئے وہی باتیں بیان کیں ہیں جو بندوں کی ہدایت واصلاح سے لئے صروری تخبیں ، ایسے مباحث و تحقیقات سے احتراز فرما یا ہے جبیب نہ اُنکے ونیا کانفع ہے نہ آخرت کا۔

اس کئے ہمیں بھی ایسے ہی امور کی جانب توجہ دینا جاہیے جو ہمارے لئے نفع بجش ہو بِالفرض سبیدنا آ دم علیهال لام سے پہلے موجودہ زمین بر کونی اور مخلوق آبا د متفی ہیساکہ طبقات الارض سے ماہرین کا حیال ہے تاہم اس تحقیق سے نہمیں صرف ''انکٹنا ہے'' کی حد تک فائدہ حاصل ہوگا ، ہما راسلسلہ نسب جس ذات سے سے وہ ذات ترامی سیدنا آدم علیدال ام کی ہے جن کا تذکرہ قرآن حکیم نے سب سے بہلے کیا اور بار بار کئی آیات میں بیان کیاہے۔

قرآن حکیم نے نہایت وضاحت سے ساتھ غیرمشکوک اورغیرمبہم الفاظ میں کئی ایک مقام پر ہمیں یہ بتایا ہے کہ انسانیت کا آغاز خالص انسانیت ہی سے ہوا ہے۔ انسان کی تاریخ ئسی غیرانسانی وجو دسے قطعاً کوئی تھی رسشتہ نہیں تھتی ، و ہ اوّل روز ہی ہے انسان بنا یا

www.ahlehaq.org جلىدا وّل ہدایت کے حیراغ سیامتها اور الله تعالے نے اسکو کامل انسانی شعور سے ساتھ اسکی ارضی زندگی کی ابتدار کی ہے۔ ڈارون کا' نظریہ ارتمقار" (بندر سے انسان ہونا) ویسے یہ نظریہ خود اپنے ورسیت ہونے میں مختاج ثبوت ہے تاہم بیراہم نکتہ ہرمسلمان سے پیش نظر رہنا ضروری ہے کہ کیسی نظر به براگر مجه دلائل قائم مجي سوجائيل توخو اَسى نخواسى سنى چنر كا بالكليه أابت سو جا نا صروری ہوجائے ایسا ہر گزنہیں ہے، اگر کسی وقت منطق وعقل کی قوت وطاقت نے ی معمولی سنتون کوسونا نابت کر دیا ہوا ور انسان اُس سے قبول کرنے پر مجبور تھی ہوگی ہوتا ہم بچھر، پچھرہی رہے گاسونا ہرگزنہ ہیں ہوسکتا۔ نظریّہ ارتمقارا بنے ولائل نیں آگر بہت مجھ سامان رکھتا مھی ہوتو اسکی حیثیت محص ایک مورو نی دفینہ سے مجھزیادہ مہیں سے ت حضرت آدم علیه انسلام کا تذکره قرآن محکیم کی گیاراه سورتوں بیں ملتاہے .اور آپکا اسم گرامی بچید و مرتبه آیا ہے ، اور مرمرتب سی نکسی تطبیف عنوان سے شمن میں لایا گیا ہے. - البقرة _ آيات - ١٦ ، ٣٣ ، ٣٣ ، ٢٥ ، ٢٠-- معدان_آبات_ ۲۳، ۵۹-- ١٦٠ - ١١٠٠ - ١٦٠ - ١٦٠ -الاعران_ آیات_ ۱۱، ۱۹، ۲۷، ۲۷، ۱۲، ۵۳، ۲۲۱-ه_الاسراء_آبات- ۲۱،۰۷۱ ٧_آلکهف_آیت _٥٠٠ ٤_مشريع_آيت-٥٨-- الما ١١٦٠ ١١١٤ ١١١٤ ١١١٥ على الما ١٢١٠ ١٢١٠ ما ١٢١٠ م و_ تس _ آیت _ ۹۰ _ نخمصر__آبت-۲۷،۲۷-ال صرح _ آبات _ ایمال ۸ التٰرتِعالے نے حضرتِ آ دم علیہ السِلام کو اپنی قدرتِ خاصِ سے البی مٹی سے پیدا کیا

ان مختلف الصفات منٹی کا خوبصورت پتلا بنا یا تھیراسمیں روح داخل کی۔ سورہ تجرمیں ان اوصاف کا ذکر آیا ہے۔

وَإِذُ قَالَ مَ بَتُكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِي ْخَالِقٌ بَشَيرِا مِنْ صَلْصَالِ مِّنْ حَسَاءً مَّسُنُونِ - رَجِرَايت مِن)

اوریاد کرواس موقع کوجب تنهارے رب نے فرشتوں سے کہا کہ میں خمیرے ہ مٹی سے سو سمھے گارے سے ایک بشریبیدا کر رہا ہوں ۔

کا سے توسے ہارہے سے ایک جسر پیدا کر رہ ہوں۔ بعنی اوّل گارے کوخوب خمیر تحیا کہ اسمیں بؤا نے لگی ، تھیروہ خشک ہوگیا ،اور خشک ہونے سے تھن بولنے لگا۔ جیسے کہ مٹی کا برتن تھونک مارنے سے سجا کر تا ہے

مچراس خشک گارے ہے آدم کا بتلا بنا یا گیا۔

انسان (حضرت آدم علیہ انسلام) کی پیدائش کی حقیقت جس طرح قرآن حکیم نے بیان کی ہے نوع انسانی کی تاریخ کا یہ وہ نا در باب ہے جیچے معلوم ہونے کا کوئ و وسرا ذریعہ انسان کو میستر نہیں آسکتا۔ تخلیق انسانی کے اس آغاز کو تفصیل کیفیت کیسا تھ سمجھنا انسانی عقل سے بالا نرے کیونکہ حضرت آ دم علیہ انتسلام اس طرح پیدا نہیں ہوئے جس طرح عام انسان پیدا ہواکر تاہے۔ التر تعالیٰ نے ان کی پیدائش کے مضمون میں واضح طور پریہ کہا ہے کہ بیں نے اُنھیں اپنی تقدرت خاص "سے پیدا کیا ہے۔ انہیں پیدائش کے وہ اسباب نہیں ہیں جو عام انسان کے لئے ضروری ہوتے ہیں بلکہ اپنی قدرتِ خاص سے انہیں بنایا ہے۔ اس خصوصیت کو اس طرح بیان کیا گیا ہے۔

قَالَ يَكَا إِبْلِيسُ مَا مَنْعَكَ آنُ تَسُجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَى اللَّهَ

ا سے املیس تجھکوکس بات نے رو کا کر توسجدہ کرے اس مخلوق کو رص آبت <u>، ھے</u>)

جس کومیں نے اپنے دونوں ہاتھ سے بنایا ہے۔

اس کئے ہم اس حقیقت کا پوری طرح ا دراک نہیں کرسکتے کہ مواو ارصنی سے بہتر کس طرح بنایا گیا؟ اور اس می صورت گری کیوں کر ہوئی ؟ اس لئے ہم انسان کی تخلیق کے بارے ہیں اس سے زیا دہ اور کچھ نہیں کہ سکتے ۔

الغرض حضرت آدمم کا ان مختلف الصفات مٹی سے ایک خوبصورت میتلا بنا یا گیا اور اسمیں روح داخل کی گئی تو و ہ گوشت پوست کے انسان ہو گئے ا ورعفل وہوش فوت جلدا وّل

بدایت کے چراغ وارادہ ، دیکھنے بولنے ، سننے سمجھنے ، چلنے بھیرنے ، کے اوصا ن کے ِعامل بن گئے ۔ حضرت آدم عليه التسلام جب محمل انساني نباس اختيار كريكے تو فرشتنوں كوحكم ہواكه آدم كوسجده سریٰ بنام فرشتوں نے بلاتوقت تعمیل تی ،ابلنیں جو جنات کی تسم سے تھااور تعملیم وتربیت کے لئے فرشتوں ہیں رکھا گیا تفاغرور وتکترسے انسکار کیا اور اپنی برتری کا اظہار کی اسپرالٹرتعالیٰ نے ذکت وخواری کے ساتھ اُسکوزمین برا تاردیا۔ حضرت آدم علیه السلام کی بیدائش کا ذکر ، فرشتوں کوسجدہ کرنے کام ،البیس کا نکار ذیل کی آیات میں اس طرح بیان کیا گیاہے۔

قر آن مضمون و لَقَدُ خَلَقُنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالِ مِّنْ حَمَا مِتَسُنُونٍ - اللَّهِ (سورة الحجرآيات علالا تاعلا)

اورہم نے انسان کو بحبتی ہوئی مٹی سے جو کہ خمیر کئے ہوئے گارے کی بنی تھی پیلا کیا اور جنات کوآ دم مے مبہت پہلے آگ ہے کہ وہ ایک گرم ہوا تھی پیدا کر چکے تھے .اور وہ وقت یا دکرنے سے قابل ہے جب آب سے رب نے ملائکہ سے کہا کہ میں ایک بسشر کو بجتی ہوئی مٹی سے جو کرخمیر کئے ہوئے گارے کی بنی ہوگی بیدا کرنے والا ہول سوجب ہیں ا مسکو پورا بنا چکوں اور اُس میں اپنی مخلوق روج سے کچھے مچپونک دول تو تم سب اُسکے آ کے سجدہ نیں گریڑنا۔

چنائنچہ تمام فرشتوں نے سجدہ کیا ، سوائے ابلیس سے اُس نے سجدہ کرنے والوں كامائة دينے سے انكاركيا۔

۔ النٹر تعالے نے پوچھا اے ابلیس تجھے کیا ہوا کہ تونے سجدہ کرنے والوں کا ساتھ ندریا ؟ تو وہ محینے لگاکہ میں ایسانہیں کدبشر کوسجدہ کروں جسکوآب نے بحتی ہوئی مٹی سے جو کہ سٹرے ہوئے گارے کی بنی ہے بید اکباہے۔

سورة اعراف ميب اس طرح تنفصي ل ملتي -وَكَقَلُ خَلَفَنْكُو ثُمَّ صَوَّرُ نَكُو ثُمَّ قُلْنًا لِلْمَلَيْكَةِ الْح (الاعراف آيت علاملاملا)

اور سم نے تم کو پیدا کیا مجرسم نے تمہاری صورت بنائی مجھر ہم نے فرشتوں سے کہاکہ آ دم کوسجدہ محروسوسب نے سجدہ کیا بجز ابلیس کے ، وہ سجدہ کرنے والوں ہیں شامل

نه ہوا۔

التٰرتعالیٰ نے فرمایا تجھے کس جیزنے سجدہ کرنے سے روکا جب کہ میں نے

بسار ہمیں ہوں ہیں۔ بولا میں اس سے مہتر ہوں کیونکہ تونے مجھے آگ سے ببیداکیا اور اُسکومٹی سے . فرما یا تو آسمان سے اُنز جانتجھ کو کو ٹئ حق حاصل نہیں کہ تو تکبر کرے آسمان میں رہ کر، لہذا نکل جائے شک تو ذلیلوں میں شمار ہونے لگا۔

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَيْكَةِ السُجُدُ وَآلِا وَمَ فَسَجَدُ وَآلِا لَا لَيْلِيسَ. الإرالكمِفَ النَّيْ الدُولَةِ فَلَا اللَّهِ اللَّهُ الللِّهُ اللَّهُ اللَّه

ریاں بھر جب میں اُس کو پوری طرح بنالوں اور اُس بیں اپنی مخلوق روح سے مجھے مخبوب میں اُس کو پوری طرح بنالوں اور اُس بیں اپنی مخلوق روح سے کچھ مخبوب کر دوں توسب فرشتے اُس کے لئے سربسحو د ہوجائیں ،لیں سب ہی نے سجدہ مربا منظر البی میں بہتے ہی سے سے کا فروں میں مقا۔ مربا منظر المبیس نے نہ ما نا تھمنڈ کیا اور وہ (علم الہی میں بہتے ہی سے کا فروں میں مقا۔

ا بلیس کی منا طرق الترنعالیٰ نے ابلیس سے جواب لینے کے لئے پوچھاکہ تجھ کو کو کسی منا طرق کسی ہے ہے گئے ہوچھاکہ تجھ کو کسی منا طرق کسی جیز نے سجدہ کرنے سے روکا ؟ التیرتعالیٰ کا یہ سوال اپنے جانئے کے لئے نہ تھا بلکہ ابلیس پر اپنی خجت پوری کرنے کے لئے نظاء ابلیس نے جواب دیا اس بات نے کہ ہیں آ دم سے بہتر ہوں ، محیونکھ

تونے محصے آگ ہے بیداکیا اور آدم کومٹی ہے۔

ظا ہرہے آگ مٹی سے افضل ہے کیونکہ مٹی ہمبشہ پستی کی طرف جاتی ہے اور آگ بلندی ورفعت چاہتی ہے ۔اور ہر بلندا ہنے کمترسے افضل ہواکر اہے ۔ مھلا ہیں افضل واعلیٰ ہوکر بھی تا دم مجبسے مم درجہ مخلوق کوسجدہ کروں اور اُس کی معظیم ہجا لاوں ؟

میرے نزدیک یففل و دانش کا فیصله مهیں۔

یہ تھا فلاصہ ابلیس کی حجنت و دنبل کاجس نے اپنے ہمارب سے مق المبدکرنا مشروع کر دیا علم جب ناقص ہوتا ہے توکسی بات کو ثابت کرنے کے لئے کمزورا ور گودے سہارے بہاڑی طرح بلند ومضبوط نظراتے ہیں۔ ابلیس سے ناقص علم نے اِسکوا بسے ہی اسرارے بہاڑی طرح بلند ومضبوط نظراتے ہیں۔ ابلیس سے ناقص علم نے اِسکوا بسے ہی

رہنمائی کی آور وہ گمراہی کی طرف میں بڑا۔ آگ و فاک کا تقابی حس انداز سے کیا گیا ہے آگر وہ اپنی جگہ درست بھی ہوجا تب بھی مجرم اپنی جگہ باقی ہے بسوال اپنے افضل وغیرافضل کا نہیں متھا بلکہ اطاعت الہی کا تقادیحی یہ دیا گیا تھا کہ ہمارے بھی کی معمیل کرو، اسمیں جیوٹا بڑا، اعلی و ہمت ر سب بحال ہیں جنا بخیاس بھی میں مدلاً اعظے سے فرضتے بھی شامل سخے جو دیگر فرشتوں سے اعلیٰ واضل ہیں۔ سب ہی نے سجدہ کیا، حکم کی علّت اگر تمتر یا برتر ہوتی توملاء اعظے سے فرضتوں کو سجدہ نہ کرنا چاہئے تھا۔ البیس کا یہ مناظرہ اِن آیات میں اسی طرح بیال کیا گیا ہے۔

فرائ مضمون قَالَ يَا إِبْلِينُسُ مَا لَكَ اَلَّا لَكُوْنَ مَعَ السَّجِدِينِيَ - الخ د الجرآيات معتاله الم

التراغ بات نے جو کوسجدہ کرنے سے منع کیا جبکہ ہیں نے تجھکو محکم التاریخ کوسجدہ کرنے سے منع کیا جبکہ ہیں نے تجھکو محکم

التدیے فرما یاش بات کے مجھ توسیدہ کرتے سے سط کیا جبکہ میں کے مجھکو سم دیا تھا ہ کہا اس بات نے کہ میں آ دم سے بہتر ہوں ، تونے مجھے آگ سے پیداکیا اور اسکومٹی ہے۔

۔ فرمایا احتجاتو بہاں سے نیچے اُتر، تجھے حق نہیں کہ یہاں بڑائی کا گھمنڈ کر نے، نکل جاکہ درحقیقت تو اُن لوگوں ہیں سے ہے جوخو دابنی ذلت جا ہتے ہیں۔

ورازمی عمر می ورخواست ایم ترخطاکاروه ہے جو فوری توبہ کرنے ۔ ابلیس کے جو است کی ورخواست ابلیس کے جواب سے معلوم ہوتا ہے کہ اسکا انکار کرنا ، کھول

ياغفلت كانتيجه نه تقاء ديرهُ و دانستهُ ّارتكاب جرم" نفأ جرم کی یا داست میں جنت سے اُترجانے کا غضب ناک حکم مشکر تو یہ وندامت ہے بچائے الٹارتعالے سے استدعا کرنے لگا کہ قیامت تک میری عمر دراز کر دی جائے اورمجھے الیسیٰ طاقت و قدرت دے دی جائے کہ اولا د آ دم کو ہرطور وطریقے ہے تھے۔را ہ كرسكول ؟ الله تعالے معلم و محمت كامجى يہ مى فيصله تقالى بنى آ دم كى آ زمائش كے لئے اسکولمبی مہلت دی جائے جینالبخہ اُس کی یہ درخواست منظور کرلی گئی ۔ نہ صرف اُسسس کو حیات طویل دے دی گئی بلکہ اُس کو وہ اسباب و ذرا تع بھی مہیا کر دیے سکتے جوانسانوں کو گمراہ کرنے سے لئے درکار مخے۔اس موقعہ برأس نے مچرایک اورمرتبہ اپنی فطرت کا مظاہرہ کیا۔ تھنے لگا اب جبکہ تونے مجھے راندہ درگاہ کری ویا توجس آدم کی بدولت پیہ رسوانی نصبیب ہوئی بیں بھی آ دعم کی اولا و کو ذلیل ورسوا کرکے رہوں گا اور ان کے ہر جار سمت ہوکر گمراہ کرنے ہیں کوئی کسنرمہیں جیوڑوں گا۔اور ان کی اکثریت کو ناشکر گزار نیا دونگا۔ بھِرٹا پرکھے ہوش میں آگر کہنے لگا البتہ تیرے مخلص بندے" میرے نسلط کو باہر رہینگے۔ انٹر تعالے نے بھی بے نبازی سے **جوا**ب دیا مجھکو اسکی کی**ا بیرو**اہ ہے میٹ را قانون مکا فات " اپنی جگہ اٹل رہے گا،جوانسان مجمی مجھےسے روگر دانی نوکے نیری پیروی كرے گا، و ہ نيرے ساتھ جہنم كاسزا وار ہوگا اور ابدى لعنت كاستحق -

ور فرآن میم کی آیات دیل انہی تفصیلات برشتمل بیں۔ فران مضمون عال ما منعک آلانشہ کی ایک دادہ مون ایات ماناما)

حلداول التدنے فرمایا داے ابلیس اتجھکوکس چیزنے سجدہ کرنے سے روکا جبکہ میں نے تجھکو حكم ويا تخفا ؟ تہا ہیں اُس سے بہتر ہوں، مجھکو تونے آگ سے پیدا کیا ہے اور اُسکومٹی سے ، اللّٰہ نے فرما یا تو مجبر تونیجے اُتر جا۔ تیرا یہ حق نہیں کہ تو یہاں بڑائی جنائے ،لہذا تو تکل ما بینک نو ذلیلوں میں سے ہے۔ سمنے لگا مجھے اُس دن بیک مہلت دیے جس دن سب دوبارہ اُ مٹھا تھے جا سینگے رمعینی قیامت تک)الٹرنے فرما یا ہے شک تُواُن افراد میں سے ہے جن کو مہلت نہنے لگا اچھاجس طرح تونے مجھے ہے راہ کیاہے میں تھی اب تیری سیدھی راہ پر اِن انسانوں کی گھات ہیں لگار ہوں گا۔ ' مچرد گمراہی کا سامان لیکری اُن انسانوں کے یاس اُن کے آگے سے اور اُن کے کھیے ہے اور اُن کے دائیں ہے اور اُن کے بائیں ہے آؤں گا اور تواُن میں سے اکثر کو شخر گزار نہ پائے گا۔ التُّرِنَّ فرما یا نعل جا بہاں سے زلیل وٹھکرایا ہوا ہوکر دا ورجان لے کہ ان میں ہے جو تیری بیروی کرینگے تجھ سمیت اُن سب سے چنم کو تھر دُوں گا۔ قَالَ يَآ إَبُلِيسُ مَا لَكَ آلَ تُكُونَ مَعَ السَّجِدِينَ الْ رَالْحِرِآيات ٢٦ تا ١٨٨) الشرنے فرمایا اے ابلیس تخصے کیا ہواکہ توسجدہ کرنے والوں بیں شامل نہ ہوا ؟ کہا میں ایسے بشرکوسبحدہ نہیں کرسکتا جیسے تونے خمیراً تھے ہوئے گارے سے بیداکیا ہے جوسو کھ کر سے لگتا ہے ۔ (مینی معمولی درجہ کی مخلوق) الترنے فرمایا تو بہاں سے تکل جاکہ تومردود ہے۔ اور بیشک تجھ بر قیامت تک لعنت ہے۔

كہنے لگا خدا یا محصواس دن يک مہلت ديدے جبکه انسان دوبارہ اُٹھائے جا کينگے ر نعینی **قیامت یک**)۔

التلانے فرما یا بیشک تو مہلت یا فتہ لوگوں میں سے ہے۔ اُس دن بہے جس کا وقت مہیں معلوم ہے۔

بولا یادب جیسا کہ تونے مجھ پر سنجات کی راہ بند کر دی ہے تو ہیں ضرور ایس ' 'کروں گا کہ زمین میں انسانوں کے لئے دل فریبیاں پیدا کرکے اُن سب کو بہکا دوں گا۔ البتہ اُن میں سے جو تیرے مخلص بندے ہوں گے دجومیرے بہکائے میں نہیں آئیں گئے۔'

التہ نے فرما یابس یہی سیدھی راہ ہے جومجھ کک پہنچانے والی ہے۔ جومیرے مخلص بندے ہیں اُن پرتیرا کچے مجم زور نہیں چلیگا ہمرف انہیں پر چلیگا جو (بندگی کی راہ) سے بھٹک گئے ہوں۔ اور اُن سب کے لئے جہنم سے عذا ب کا وعدہ ہے (جو تعجی طلخے والا نہیں) اس جہنم کے شات دروازے ہیں، ہر دروازے کے لئے اُن لوگوں کے الگ الگ حصتے ہیں۔

سورۂ اسرار میں التُرتعالے نے شیطان کی اتباع کرنے والوں کا انجام اسطرح بت یا ہے:۔

وَإُذُ قُلُنَا لِلْمَلَيْكِيَّةِ اسْجُكُوْآ لِلْاَ مَرْفَسَجَكُوْآ إِلَّا كُلِيْسَ الْحَ ربن اسرائيں آبات علا آبھہ)

اورجب ایسا ہوا تھا کہ ہم نے فرشتوں کوفکم دیا آ دم کے آگے تھےک جاؤ،اسپر سب مجھک گئے گر اہلیس نہ مجھکا، اُس نے کہا کیا ہیں ایسی مہتی کے آگے مجھکوں جے تونے مٹی سے بیداکیا ہے۔

نیز اُس نے تمہاکیا تیرا یہی فیصلہ ہے کہ نونے اس (حقیر) ہستی کو مجھ پر ٹرائی دی ؟ اگر تو مجھے قیامت کے دن تک مہلت دے تو ہیں صروراسی نسل کی بیخ دنبیا د اُکھاڑ کے رہوں گا ، البتہ مخوڑے آ دمی اس ہلاکت سے بجیں اور کوئی نہ ہجے ۔ الٹارنے فرمایا جا اپنی را ہ لیے ، جو کوئی مجمی ان ہیں سے تیری را ہ جلے گا ، اُس

العترے شرفاجا ہی داوسے ، ہوتوں بن ان یا سے غیری داوہ ہے ہوتوں ۔ کے لئے اور تیرے لئے جہنم کی پوری پوری سزا ہوگی۔ اُن بیں سے جس نسسی کو تو اپنی صدا نیں سنا کر مہکا سکتا ہے بہکانے کی کوشش کرلے ،اپنے لشکر کے سواروں اور پیا دوں سے حملہ کر ، اور اُن کے مال واولا دہیں شرک ہوجا ، اور اُن سے دطرح طرح کی باتوں سے) وعدے کر ، اور شیطان کے وعدے تو سراسر دھو سے سے سوانچھ نہیں ہیں ۔ جلد اوّل ب

جایت ایا ہے۔ جومیرے سچے بندے ہیں اُن پر تو قابو پانے والانہیں ، تیرا پر وروگار کارسازی کے لئے

بس سيم. عَالَ لِآلِبُلِيسُ مَامَنَعَكَ أَنُ نَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيدَى الإرضَ آيات، عن المصاعد)

قَالَ بِآاِبُلِيسُ مَا مُنْعَكُ أَنْ تَسْجُد لِمَا خَلَقَتْ بِبِيلَى الْجُ رَسُ ابِيلَ الْمُعَلِّمُ الْمُ الْم فرمایا اے ابلیس ایس چیزنے روک دیا تجھ کوسجدہ کرے اُس کوجسکو ہیں نے

اپنے انتحوں سے بنایا ہے۔ یہ تو نے غرور کیا یا تو طرانھا درجے ہیں ؟ بولا ہیں مہتر ہوں اُس سے ،مجھکو تو نے آگ سے بنایا سے اور اسکومٹی سے۔

وہ یا بانکل جا آسمان سے بیشک تومردُود ہوگیا ہے۔ فرما یانکل جا آسمان سے بیشک تومردُود ہوگیا ہے۔

اور تجھ پرمیری بچٹکارہ جزا کے دن تک۔ بولا اے رب مجھے مہلت دیدے اس دن تک بیں مُردے اُ مٹھا کے جانیں گے

رمیعنی قیامت تک)

فرمایا تعجمکوں ہات ہے معین وقت کی ٹاریخ تک۔ بولاقسم ہے تیری عزت کی میں گمراہ کروں گا اُن سب کو۔ گرجو بند ہے ہیں تیرے اُن میں سے جینے ہوئے دوہ میری گمراہی سے دور گمرجو بند ہے ہیں تیرے اُن میں سے جینے ہوئے د

فرمایا تو تعیک بات یہ ہے اور میں تلمیک ہی کہتا ہوں۔ محبکو مصرنا ہے دوزخ تجھ سے اور جوان میں تبری راہ جیس ان سب کو ہمی ۔ محبکو مصرنا ہے دوزخ تجھ سے اور جوان میں تبری راہ جیس ان سب کو ہمی ۔

خلاف و التراضي المنسبة النبي المائي المائية المركبيل المواسم الترتعالى نے جب ابنا الله و الترتعالى نے جب ابنا الله و التي الله و الله

علاقوں میں مقید کردیاگیا۔ اب جو مغلوق بیدا ہوگی ظاہراً اسمیں خیروسٹر ہوگا دکیونکہ خیر محض توہم ہیں ہیں ایسی مغلوق سے فقنہ و فساد کی توقع ممکن ہے۔ کہنے گئے پروردگار! الیمی نئی مغلوق سے اگر تیری سبج و تقدیس ، تہاہیل و تکبیر مقنسود ہے تو یہ منصب ہمارے گئے زیادہ مناسب ہے کیونکہ ہم ہر لمحہ تیری جبج و تقدیس ہجالاتے ہیں ، اور بے جون و چرا تیرا حکم سلیم کرتے ہیں۔ فرایا اورخون ریزی ہریا کر دے ؟ کرتے ہیں۔ فدایا اس کوہم جانیا اس کوہم ہانیا اس کوہم ہانیا

چاہتے ہیں ؟ بارگاہِ الٰہی ہے اُمضیں اولاً یہ ادب سکھایا گیا کہ مخلوق کو خالق کے معاملات میں فطل میں بنرین دیں نہید جہ میں سے جذبتہ میں اسٹرنیسی کی اسٹریسی اسٹر

دینے کا کوئی اختیار نہیں جب تک کہ حقیقت سامنے نہ آجائے زبان بندر نہی چاہئے ، عیرالٹر تعالیٰ نے اپنا حاکمانہ جواب اس طرح دیا جوحقیقت تم نہیں جانتے ہیں اسکو جانتا ہوں ، فرسٹ توں نے بیرجواب مسکر سر سیم مم محردیا ،

آیاتِ ویل میں یہ می مضمون بیان کی گیائے۔ وَ إِذْ قَالَ رَبِّلَةَ لِلْمَلَيْكِ مِنْ إِنْ جَاعِلُ فِي الْأَمْنِ خِلِيْفَةً الْمُ رَبِقُوآیت ٣٠)

فرا فی صفه و در ایسا به اکه تمهار سے پروردگارنے فرختوں سے کہا تحت ایسا به اکه تمهار سے پروردگارنے فرختوں سے کہا تحت ایسی میں زمین بیں ایک خلیفہ بنانے والا بهوں فرختوں نے کہا کیا ایسی ہستی کو خلیفہ بنایا جار ہا ہے جو زمین بیں خرا بی بھیلائنگی اورخون ریزی کرے گی ؟ حالا نکم ہم تیری حدوثنا کرتے ہوئے تیری پاکی و قدوسی کا اقرار کرتے ہیں اکہ تیرا ارادہ ثرائی سے پاک اور تیرا کام نقصان و عیب سے منترہ ہے) التیرنے فرایا میری نظر جس حقیقت پر ہے تمہیں اسکی خبرنہ ہیں ۔

افرارو میم چونکه فرختوں نے حضرت آدم علیه السلام کی تخلیق پرجیرت کا اظہار کیا تھا اور عجلت میں اللہ تعالیٰ سے یہ سوال بھی کرویا تھا کہ ایسی مخلوق کی غرض وغایت کیا ہے وققد لیس سے سئے موجود ہیں ؟ اللہ تعالیٰ نے اصفیں یہ جواب دیکہ فامون کر دیا تھا کہ اسک محمت میں جانتا ہوں تم کوخبز ہیں ؟

ملداول

بدایت کے جراغ

فرشتوں سے سُکوت اور اللّٰہ تعالے کے جواب سے واضح ہوتا ہے کہ فرسشتوں كى يركونى كستاخي يا قابل سرزنيش بات منه عنى ورنه الله تعالى كے جواب كا عنوان ايسا يذهبوتا بهرجال فرشتون كي نظرون بيب حضرت آ دم عليه التلام كامقام ظاهرخه مقا اوراليتم ك مشيت محتى كحضرت آ دم عليه التلام كوفريث من يرفوقيت دمي جائے اور اس كا اظار مجى كرديا جائے ، ناكہجہاں التارتعالیٰ كى پہلے شخلیق كامشاہرہ ہوو ہاں فرشتوں كااعتراب قصورمجی انہی کی زبان سے ہوجا ہے۔

اس سيليِّح حضرت آدم عليهِ السّلام كوا بيخ صُفتِ علم "سے مجھ حصّه عطا فرما ديا

جسکو قرآنی زبان میں علم الاسمار" کہا گیاہے۔ پیعلم من چیزوں کا تھا ؟ فرآنِ مکیم نے اسکی کوئی وضاحت نہیں کی ہے البت احادیث نبوی میں یہ وضاحت ملتی ہے تک پیلم موجودات " کاعلم مخفا۔ عالم میں جو تھے مجی تضافس كانام اورحقیقت بتلا دی گئی كه اس كایه نام ہے اور كام پیاہے بحضرت آدم علیالسلام اس علم سے حامل ہو سکتے اورصفت علم ہے سرفراز مفتخر ہوئے ۔ اس کے بعد حضرت آوم م كو فرشلتوں سے سامنے لا ياكبا اور سوال مياكباكداً ہے فریت تو بتاؤ اِن اِن چیزوں سے كیا نام ہیں اور اِن کی غرض وغایت کیا ہے ؟

الترتعالي كايسوال بعينه وبي سوال مقاجسكو فرشتوں نے الترتعالیٰ سے كيا تھا۔

میعنی تخلیق آ دم کی غرض وغایت کمیا ہے ؟ فرشتوں سے لئے یہ بات بالکلِ بنی بھی اور وہ اِن چیزوں سے قطعاً 'اواقف فرشتوں سے لئے یہ بات بالکلِ بنی بھی اور وہ اِن چیزوں سے قطعاً 'اواقف مخفے فوراً بول و تھے یاالی اِتو ہرعیب سے یاک ہے تمہیں توصر ف اتنا ہی علم ہے جو تونے

ہمیں بخشاہے۔ تو ہی ہربات پر فدرت والا اور محمت والا ہے۔ اس کے بعد تمام فرشتون نے حضرت آ دم علیہ التلام کو سجدہ کیا اور حضرت آ دممٌ ی فضیلت کا اعتران مجھی فرشتوں ہے یہ اعتراف کروا نا ویلیے بھی بغیر صبی حجست وآ زمائش کے مکن تھا،لیکن یہ بات سوال وجواب سے حدو د بیبِ آگئی تھی اس کئے حضر آدم علیدات ام کی فضیلت کو دلیل وقر بان سے واضح کر دیا گیا۔

آياتِ ذيل اسي واقعه سے متعلق ہں۔

والى صمون وعَدَم الْاسْمَاء كُلَّهَا شَمَّعَ عَرَضَهُم عَلَم الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِلَةِ الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِكَةِ الْمُلْعِلَةِ الْمُلْعِلْ الْمُلْعِلَةُ وَلِي الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلِقِلِقِ الْمُلْعِلِقِلِقِ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلِقِ الْمُلْعِلِقِ الْمُلْعِلِقِ الْمُلْعِلِقِ الْمُلْعِلِقِ الْمُلْعِلَةُ الْمُلْعِلِقِيلِقِ الْمُلْعِلِقِيلِقِ الْمُلْعِلِقِلْقِلْعِلْمُ الْمُلْعِلِقِلِقِلْمِ اللَّهِ الْمُلْعِلِقِلْمُ الْمُلْعِلِقِلْعِلْمُ الْمُلْعِلِقِلْعِلْمُ الْمُلْعِلِقِلْمُ الْمُلْعِلْمُ الْمُلْعِلَقِلْعِلْمُ الْمُلِعِلِقِلْمِ اللَّهِ الْمُلْعِلِقِلْمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلْمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلِمِلْعِلْمِ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلْمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلْمُ الْمُلْعِلْمُ الْمُلِعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمِ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلْعِلِمُ الْمُلِ

اورالٹدنے آدم کوساری چیزوں کے نام سکھادیئے بھیرانھیں فرشتوں کے سامنے بیش اور الٹدنے آدم کوساری چیزوں کے سامنے بیش کیا اور فرمایا داگر تمہارا خیال صحیح ہے کہ کسی خلیفہ کے نقرر سے انتظام گرجائیگا، تو ذرا اِن چیزوں کے نام بتاؤ ؟

فرشنئتوں نے عُرض نحیا عیب سے پاک توآ بکی ہی ذات ہے ہم تونس اتنا ہی علم رکھتے ہیں جتنا آپ نے ہم کو دیا ہے جقیقت میں سب نجھ جاننے اور سمجھنے والا آپ کے رکھتے ہیں جننا آپ نے ہم کو دیا ہے جقیقت میں سب نجھ جاننے اور سمجھنے والا آپ کے

ىوا ا ور*كو*نى ئىهىپ -

اللّٰدنے آدمؑ سے تہاا ہے آدمؑ تم اِن چیزوں سے نام اِنھیں بتاؤ ؟ جب آدمؑ نے اُن سب سے نام بنادیئے توالٹرنے فرمایا (اے فرٹتو!) ہیں نے تم سے کہا نہ تھا کہ میں آسمانوں اور زمین کی ساری حقیقتیں جانتا ہوں جو تم سے مخفی ہیں ، جو تجھ تم ظامہر کرتے ہو وہ بھی مجھے معلوم ہیں اور جو کچھ تم جھیاتے ہوا سے بھی میں جانتا ہوں۔

جنت کا فیام سکونت دے دی گئی، وہ اسمیں ایک عرصہ تک راحت وسکون کی زندگی بسر کرتے رہے ۔ لیکن چونکہ انسان مقے مسلسل تنہائی و کمیمائی کی وجہ سے وحشدت

و منتی محسوس کرنے گلے۔

الترعلیم وخیرنے حضرت آ دم علیہ التسلام کے لئے ایک ہمدم وٹمونس حضرت حوّار کی شکل میں پریدا فرما دیا۔حضرت آ دم علیہ التسلام اپناٹرونس ورفیقِ حیات پاکر ہیجد مشرور ہوئے اور وہ تنہائ کی کلفت جاتی رہی ۔ اس طرح حضرت آدم علیہ التسلام سے سکونِ قلب کا انتظام ہوگیا ۔ د تخلیق حوّار کی فصیل آگے آرہی ہے)

حضرت آدم علیہ التلام اور حضرت حوّا م کوعام اجازت تھی کہ وہ جنت سے جس حضے میں چاہیں قیام کریں ،ساری آسائشیں مہتیا تھیں جسکو نہسی آنکھ نے دیجھا نہ کان نے میں نااور نہ کسی کے قلب براس کا تصور آسکتا تھا۔اس سمل عیش و فراوانی کے باوجود اسٹر تعالیٰ نے ایک خاص درخت کے قریب جانے سے منع بھی کر دیا تھا۔اور یہ بھی تنہیہ کردی تھی کہ اگر اس سے خلاف ہوا تو یہ قلم کی بات ہوگی اور آگاہ تھی کر دیا تھا کہ شیطان تم دونوں کا دشمن سے کہیں تم کونا فرمانی ہیں مبتلا نہ کردے ؟

ہدایت کے چیاغ

حضرت آ دم علیہ ایت لام الٹر تعالیٰ کے برگزیدہ بندے ہتھے ،اُن سی اراد ۃً اليسي كونيً بات مُمكن نامقي ليكن خطا ونسيان بهرجال مربب ربين فطرةً موجود عقيه، حضرت آدم علیه التلام ایک عرصه تک اظمینان وبنفکری سے جنت میں مقیم رہے، ا بلیس اسی دن سے اس تاک میں منھا کہ حضرت آدم علیہ استلام سے اپنا انتقام کے، اس بنے کسی طرح حضرت آدم علیہ التلام اور حضرت حوّار کے دل میں یہ وسوسہ ڈالا كه يشجر سنت جراة الخلد "كي وإلى كاميل كها ناكو ياجنت ميں ابدى زندگى كاضامن ہے۔ اور بیرزندگی علامت ہے اس بات کی کہ التیرتعالیٰ آپ سے ہمیشہ راضی سے اور راضی رہے گا ،اور یہ عالم،ابدی عالم ہے جوختم نہ ہونے والا ہے بیمجراس پرمزید دھوکہ دینے کے لئے اللہ تعالیٰ کی بڑی بڑی قلمیں کھانا اور ابنا خیرخواہ و مخلص ہونا نطام کیا۔ اِس وھوکہ سے حضرت آ دم علیہ التالم وحضرت حِوّاء کواس درخت تک لے آیا ،حصرت آ دم علیالسلام وقتی طور پر بیمجول گئے کہ الٹار تعالیٰ کا پیمکم امتناعی قسم کا ہے اور ندانس جانب ذہان گیا کہ یہ علم کوئی دائمی حیثیت رکھتا ہے ، مجرجنت سے دائمی تیام نی خواہش اور فرب اللی شے شُوق نے اُن سے بائے ثبات بیں لغزش پیدا کر دی ، دوِنُوں نے اُس درخت کا مجل کھالیا کھا ناتو درکنارصرف چیھنا ہی تھاکہ بشری لوازم اُنجرنے لگے۔ دونوں اپنے جسم کی اجانک ٔ بہنگی محسوس کرنے گئے،جنّت کا وہ لباس جو دو**نو**ں <u>ئے لئے</u> زینت وستر بوپنی کا کام دیتیا مقا اُ ترگیا ، گھبراکر درخت کے بیتوں سے اپنا بدن ڈھا تکنے لگے۔ بیہ حالت اُسٹ لغزش کی یادات تحتى جواس شكل بين نمو دار بهوائي-

اسپر کیود کریمی ناہونے یائی تھی کہ الٹارتعالیٰ کا عناب آمیز خطاب نازل ہوا بھتر آدم علیہ استلام سے پوچھاگیا کہ اے آدم عمیہ بنا نے تم دونوں کو درخت سے قریب ہونے سے منع ناکیا میں نے تمہیں یہ نبیدہ ناکی تھی کہ شیطان تم دونوں کا ڈیمن ہے؟ حضرت آدم علیہ استلام کو فوراً احساس ہوا کہ غلطی سرز د ہوگئی ہے اور دسمن شیطان نے اپناکام پوراکر دیاہے۔ فوری اور نغیرکسی توقف سجدہ میں گر پڑے، ندامت اور اعتراف کے ساتھ اس طرح گویا ہوئے '' اے ہمارے پر ور دگار ہم نے اپنی جانوں پرظلم کر لیا ہے اور اگر آپ نے اپنے خانوں پرظلم کر لیا ہے اور اگر آپ نے اپنی جانوں پرظلم کر لیا ہے اور اگر آپ نے اپنے خضل و کرم سے ہمیں معاف نا فروایا اور ہم پر رحم نا فروایا تو ہم خسارہ والوں میں ہوجائیں گے۔ ''

التیرتعالے جو دلوں کے بھیدوں تک کوخوب جانتا ہے۔ وحضرت حوّار کے باکی قلب کواجھی طرح جانتا تھا ، ٹمذر کی خوبی اور عزم وارا دے سے خالی خطا ولغزش کوجان کر دونوں کومعا ٹ کر دیا اور یہ بھی ظاہر کر دیا گیا کہ اس عمل میں حضرت آدم علیہ السّلام بالکل معصوم ہیں۔ دیا آیت ۱۱۱)

کین چونکے علم الہی ہیں وہ وقت آچکا تھا کہ زمین کو اُنسانی معورہ" بنایا جائے اور حضرت آدم علیہ انسانی معورہ" بنایا جائے اور حضرت آدم علیہ انسلام کو النٹر کی اس زمین پر پہلا خلیفۃ النٹر قرار دیا جائے ۔اس خوشخبری کے ساتھ حضرت آدم علیہ السلام اوراُن کی بیوی حضرت حوّا کو زمین پر آنار دیا گیا ۔اور میم مدایت بھی دی گئی کہ زمین پر بھی تمہارا اور تمہاری اولاد کا دشمن ابلیس موجود رہے گا اور تم کو اس سے بھے کرصرا فلستقیم پر قائم رہنا ہوگا۔

آیاتِ ویل انهی تذکر ول میشنن ہیں۔

وَ قُلُنَا يَا أَدَّمُ الْسُكُنُ أَنْتُ وَزُوْجُكَ الْبُحَنَّ ذَا لِحَرَّانَ الْحِ (بقره آيات ١٩١٥)

فرانی مصمون وی ایسا ہواکہ ہم نے آدم سے کہا اے آدم نم اور تہاری ہوی دونوں دونوں جنت ہیں رہو، جس طرح چاہو کھا وُہیو، امن وچین کی زندگی بسرکرو، مگر دیجو وہ جوایک درخت ہے جبی اُس نے قریب نہونا، ورنہ م دونوں حد سے جا وزکر رہے والے ہوئے ۔ دہر کیا تھا) کہ شیطان کی وسوسہ اندازی نے اُن دونوں کے قدم ڈکھا دیئے اور یہ اس کا نیجہ تھا کہ ان کو راحت وسکون کی زندگی سے مکنا پڑا۔ اللّٰہ کا بحم ہوا کہ بہاں سے چلو، تم ہیں سے ہرایک دوسرے کا دشمن ہوگا، اب مہیں زمین پر رہنا ہے ایک خاص وقت کے لئے (جوعلم اللی ہیں مقسر رہے ۔ اور جند کلمات واصل کہ لئے (جو قبولیت وُعالے لئے مفید تھے) نیس اللّٰہ نے اُن کی توبہ قبول فرمالی اور بلاسٹ وہی رحمت والا در گرز کرنے والا ہے ۔ دلین جس زندگی سے وہ کی توبہ قبول فرمالی اور بلاسٹ وہی رحمت والا در گرز کرنے والا ہے ۔ دلین جس زندگی سے وہ کی بیا کی توبہ قبول نے وہ کو اللہ کے ۔ دلین جس زندگی سے وہ کی بیا کہ نے کوئی خون وریخ نہ ہوگا۔ اور جولوگ اِس کو لئین یا درکھو) جو کا داور جولوگ اِس کو اس ہدایت کی بیروی کریں گے اُن کے لئے کوئی خون وریخ نہ ہوگا۔ اور جولوگ اِس کو اس ہدایت کی بیروی کریں گے اُن کے لئے کوئی خون وریخ نہ ہوگا۔ اور جولوگ اِس کو اس ہدایت کی بیروی کریں گے اُن کے لئے کوئی خون وریخ نہ ہوگا۔ اور جولوگ اِس کو اس ہدایت کی بیروی کریں گے اُن کے لئے کوئی خون وریخ نہ ہوگا۔ اور جولوگ اِس کو

، قبول کرنے سے ابکارکرینگے اور ہماری آیات کو حبٹلائیں گے وہ آگ میں جانے والے لوگ میں جہاں وہ ہمیشہ رہیں گے۔

سورة اعراف میں اس واقعہ کو اس طرح بیان کیا گیا ہے۔ سورة اعراف میں دیور یہ تروی کے دیات کا اس کے اس کا کیا گیا ہے۔

وَيَا أَدَمُ ۚ إِنْكُنُ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَّامِنْ حَيْثُ شِعُتُمَا

وَلَا تَقْدُونَا هَلِينَ ﴾ الشَّجَرَةَ فَتَكُونُنَامِنَ الظَّلِينِينَ - الحراان آيات ١٥ أ ٢٥)

اور ائے آدم تم اور تمہاری بیوی اس جنت میں رہو، جہاں جس چیز کو تمہارا جی چاہے کھا ؤید ،گراس درخت کے قریب نہ ہونا ور مذریا دی کرنے والوں ہی ہوجا گرگئة می چیز کو تمہارا تمجوشیطان نے اُن کے دِلوں بیں وسوسہ ڈالا تاکہ اُن کاستر جو اُن سے حُھیبا ہوا تھا اُن پر کھول دے ، اُن سے کہا تمہارے دب نے تمہیں جو اِس درخت سے روکا سے اُس کی وجسوائے اسکے اور کچنہ ہیں کہ تم فرضتے بن جا دیگے (میعنی اس کے کھا فی سے اُس کی وجسوائے اسکے اور کچنہ ہیں ہوجائے گی۔ اور اُس نے قسم کھا کر اُن سے کہا کہ ہیں تمہاراستیا خیرخوا ہ جمی ہوں ،

اس طرح وصوکہ دے کر اُن دونوں کو درخت کے قریب لے آیا، آخر کار دونوں کے اس درخت کے قریب لے آیا، آخر کار دونوں کے اُس درخت کا دمزہ ، چھاتواُن کے سترایک دوسرے کے سامنے تفکل گئے اور دونوں اپنے جسموں کو جنت سے بیتوں سے ڈھا تکنے گئے، تب اُن سے رب نے اُنہیں بیکا رَا کیا میں نے تمہیں اُس درخت سے نہ روکا تھا ؟ اور کیا میں نے بہ کہا تھا کہ شیطان تمہارا

کھُلا دشمن ہے۔

طاد من ہے۔ دو نوں (آدمٌ وحوّار) فریاد کرنے گئے۔ اے ہمارے رب ہم نے اپنے اُوپڑ ہم کیاہے۔ اگر آپ نے ہم سے درگزر نہ فرما یا اور رحم نہ کیا تو یقینًا ہم خسارہ والے ہوجا ہیں گے۔ (التُّر نے تو بہ قبول کرنے کے بعد) فرمایا۔ تم سب (مع المبیس) زمین پر اُتر جاؤ۔ تم میں بعض بعض کا دشمن ہوگا، اور تمہارے لئے ایک خاص مدت تک زمین ہی پر جائے قسرار اور سامان زمینت رہے گا۔ وہی تم کو جبیا اور وہی مرباہے اور اُسی میں سے تم کو (مرنے سے بعد اُسطا یا جائیگا)

سورة طليس اس طرح و كرفرايا. وَلَقَنْ عَيِهِ ثَالَا لِي أَدَّ هُرِمِنْ قَبُلُ فَنَسِيَّ وَلَمْ نَجِدُكَ عُزُمًا الْخ رطر آيات ١٢٢١١) اور یہ واقعہ ہے کہ ہم نے آدمؑ سے پہلے ہی عہد لے لیا تھا بھروہ بھول سے کے اور ہم نے ان بی ان میں نا فرمانی کا قصد نہیں یا یا۔ ربیعن اُن سے بھول ہوگئی) اور ہم نے اُن بی میکول ہوگئی) اور ہم نے اُن کی اور بھر حبب ہم نے فرشتوں کو بھم ویا کہ آدمؑ سے آکے مجھک جاؤ، سب مجھک گئے گرابلیس نہیں مجھکا اُس نے انسکار کردیا۔

اِسپرہم نے نمہا اے آدم پرتمہارا آورتمہاری بیوی کا ڈنمن ہے ، ایسا نہ ہو کہ یہ تمہیں جنت سے نکال کررہے مجھرتم مشقت میں طرحاؤ۔

تمہارے لئے تواب ایسی زندگی ہے کہ بہ تو اسمیں تم مجو کے رہو سے اور مذہر ہنہ

اور نہ تمہارے گئے بیاس کی ملن ہوگ نہ سورج کی نہیش ۔

الکین شیطان نے آدم کو وسوسہیں ڈالا اُس نے کہا اے آدم میں کم کوشجوۃ الخلا" ہمشکی سے درخت کا نشان بتادوں ؟ اور ایسے عالم کی خبرد وُں جو مہمی فنا نہ ہو؟ دشیطان کی اس فریب آمیز خیرخواہی پر) آدم اور حقار نے درخت کا بجل کھا لیا (کھا ٹا ہی تھا کہ) اچا نگ اُن دونوں سے ستران پر کھال گئے اور وہ دونوں باغ سے بتوں سے اپنے جسم کوڈھا بحنے گئے غرض کہ آدم اپنے رب سے سمنے پر مذھلے ۔ یس وہ (جنت کی زندگی سے) بھٹک گئے ۔

سین مجرالٹرنے اتھیں برگزیدہ کیا اور اپنی رحمت سے اُنپر متوجہ ہوا اور اُنپر علم عمل کی راہ تھولدی ۔ (جبانجہ الٹرنے اتھیں) تحکم دیا تم دونوں اسٹھے یہاں سے دنین کی طرف اُنٹر بڑو۔ تم ہیں سے ہرایک دوسرے کا شمن ہوگا داب تم بردوسری ذندگی کی راہ تھکے گی) مجراگرمیری طرف سے تمہاری دنسل کے) پاس کوئی پیام ہرایت زندگی کی راہ تھکے گی) مجراگرمیری طرف سے تمہاری دنسل کے) پاس کوئی پیام ہرایت اُکے تو داس بارے ہیں میرا قانون یا در کھو) جو کوئی میری ہدا بت پر چلیگا وہ نہ راہ سے اِنے راہ ہوگا اور یہ دُکھ ہیں بڑے گا۔

مناخ وسير

(۱) الرسخ ببیراتش لیه بات واضح بے که حضرت آدم علیه انسلام کا وجودگرامی

ماقبل تاریخ کا واقعہ ہے ۔ اس لئے تاریخ کی روشنی میں اس مسئلہ پرغور کرنے کا کوئی سوال ہی پیدانہیں ہوتا ۔ البتہ تحقیق جدید کی بنیا دیر قیاس وخمین سے کام لیا جاسکتا ہے چنا بخیر طبقات الارض سے ما ہرین نے اپنے علم وانداز سے سے چندایک قیاس قائم کئے ہیں اِنبر نہ کوئی قطعی رائے قائم کی جاسکتی ہے اور نہ کوئی قابل لحاظ ترجیح دی جاسکتی ہے ۔ اور نہ کوئی قابل لحاظ ترجیح دی جاسکتی ہے ۔ اور نہ کوئی قابل لحاظ ترجیح دی جاسکتی ہے ۔ مدینے مسلم بھی اسکی تائید

فیٹے کی گئے۔ البتہ اس ہارے بیں کرز بین وآسمان کی تخلیق کے کتنے عرصے بعد حضرت آ دم علیہ السّلام کی تخلیق ہوئی ہ قرآن حکیم اور ا حا دیت صحیحہ بالکل ساکت ہیں۔اور صحیح فیصلہ میہ ہے کرجس بات کو السّٰہ ورسول نے مخفی رکھا اُ سکے ہم بھی در بئے نہ ہوں۔ بہ ہی علم و دانش' دین و دیانت کا تقاصنہ محبی ہے۔

(۲) آدم وحوام الدم اورحوار کالفظ در اصل اس لغت سے متعلق ہے جو دنیا کی معدوم لغات میں شماری جاتی ہیں۔ اس لئے اسکے حقیقی لغوی معنی متعین کرنا دشوارہ تاہم معض اہل علم نے آدم کالفظ ادیم الارض سے ماخوذ سمجھا ہے۔ ادیم الارض سے معنی صفح زمین سے ہیں۔ مطلب یہ کھ الیب احبم جومٹی سے تیبار کیا گیا ہو۔ چونکہ حضرت آدم علیہ الت لام کوالٹر تعالے نے مٹی سے بیدا محیا اس لئے آدم نام رکھا گیا۔

ہ کو است کے ہیں۔ چونکہ وہ ہمرحی کے معنی زندہ شخصیت کے ہیں۔ چونکہ وہ ہمرحی کی ماں ہیں اس کئے اُن کا نام حوّار ہوگیا۔ والٹراعلم۔ کی ماں ہیں اس کئے اُن کا نام حوّار ہوگیا۔ والٹراعلم۔ یا اس وجہ سے کہ وہ ایک حَیّ (زندہ) بعنی آدم علیہ السّلام سے پیدا کی گئی تھیں اس ایک تفدید ہوتی ہر گا ا

اس کے انھیں حوّار کہاگیا۔ قرآن محیم کے سور ہُ نسار کی پہلی آیت میں حضرت حوّار کا ذکر اس طرح آیا ہے۔ وَخَلَقَ مِنْ اَلَّهُ اللَّهِ دَاور حوّار کوآ دم سے بیداکیا۔) یعنی بغیرماں سے آدم کی بشت سے ، کہا جا تا ہے کو آدم جنت میں سورہے تقے *بیدارہوئے تو بہلو میں حوّا کو ببیٹھا دیجھا ، فطرت خو دیخود مائل ہوگئی دونوں میں اُنس پرایکیا* دوسری تفسیریہ تھی ہوسے تی ہے کہ حوار کوجنس آدمے سے پیدا کیا گیا معنی اس مقيمتى سے جسكے ذريع حضرت آدم عليه التالام كاجسم بنا ياكيا والتا اعلم. (T) أيك شبه أورأس كاجواب سبدنا آدم عليه اب لام كوسجده نه كرنے بيرا بليس كوم دود ښاڭرجنت سے نکال دیا گیا تھا مچروہ حضرت آ دم علیہ التلام کوجنت میں اُس درخت کے قریب محس طرح لايا جبحه وه جنت سے باہر ہوجیا تھا ؟ إس كاجواب معض مفسرين في قرآن محيم كالفاظ سا فذكبا ب جسكا خلاصه يه سے کیمیکن ہے اس وقت تک ابلیس کا داخلہ جنت میں ممنوع نہیں ہوا ہو۔ آگرجہوہ امی وقت یک مردُود ومطرو دہوجیکا تھا۔ قرآن حکیم نے حضرت آ دم علیہ السلام کے زمین يراً تزنے كے لئے يەلفظ بيان كئے ہيں۔ اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِينُعًا. تم سب جنت سے نیجے اُترماؤ۔ الْهُ يُطُونًا جَمع كاصيغه، عب جوآدمٌ اورحوّاء اور المبين مينون كوشامل ہے بمكن م ابلیس ایک عاصی ومردو د کی حیثیت ہے اس کام سے لئے جنت کے کنارے آیا ہو اور حضرت آدم علیهال لام اورحضرت حوّ ارکو وصوکه دیدیا ہو۔ د وسراجواب بیرهمی دیا گیا کہ جنت ہے باہر ہی سے بذر بعہ وسوسہ حضرت آدم اور حوّاء كوأس ورخت كے قريب لے آيا ہو۔ قرآن كريم كى آيت فؤسُوسَ لَهُما الشَّيْطَانُ اللَّهِ ا مجرشیطان نے اُن کے دلول ایں وسوسہ ڈالا) آیت کامفہوم بھی اس جواب کی ٹائید کر ناہے۔ یہ ایسے ہی ہے جیسے ٹارولائلی کے ذرائعیہ آ وازکو دور دراز حصوں تک بہنیا یا جا تا ہے۔ ایسے ہی شیطان نے اپنے وسوسہ کی طاقت سے یہ بات حضرت آ دم علیہ الت آام سے دل میں بہنچا تی ہو۔

رم، المبس كفیقت البس كفظی معنی انتهائ ایوس كے ہیں بوكد به راندهٔ درگاه ہونے كے بعد تمبیشہ شمیشہ سے لئے جلداول

رمتِ النبی ہے مایوس ہوگیا تھا اس لئے اِس کا پہلفب قرار پایا۔روایات میں اُس کا اصل نام

ئَغْزِازْ بِلُ ' یا حارث بیان کیا گیا ہے۔ مورّ منتور میں سعید بن منصورٌ کا قول سورہ کہف سے تحت نیقِل کیا گیا ہے کہ ایک بار فرشتوں سے ذریعہ جنات کو اُن کی نافر مانی و مبغاوت کی سنرا دلائی گئی تھی جسمیں مہت ہے جنات قتل ہوئے۔ یہ ابلیس بحیّہ سامھا اِس کو آسمان بر لاکر رکھا گیا فرشتوں کیسا تھ جیج و تهلیل بین مشغول را کرانها نفاء

قرآن محیم نے اُس کا تنعار ف اس طرح کیا ہے۔ كَانَ مِنَ الْحِينَ فَفَسَقَ عَنُ آمْدِ رَبِّم رَكْمِف آيت.٥) وہ جتیات ہیں سے تھا بھیروہ اپنے رب کی اطاعت ہے تکل گیا۔ علم ناقص اورمزاج نایات تضاغرور ونکبتر میں مبتلا ہوگیا۔

ده) معيار خلافت الهيكا داركثرتِ وكرفيلِ يرنهي سے دميني جو ب سے بڑا عیادت محزار ہوا سکو خلیفہ بنایا جائے، بلکہ

کٹرے علم وقہم برموفوٹ ہے ،خلافت سے لئے جہاں ذکر وعبادت ضروری ہیں وہاں بنیاد^ی طور پرملم وہم میں کامل ہونا بھی ضروری ہے۔ فرشتے چونکہ سرایا ذکرو جیج شقے اس کئے زمین کی خلافت سے لئے انہیں نتخب نہیں کیا گیا بلکہ ایک ایسی مُخْلُون کوننتخب کیا گیا جو علم وقهم كى استعدا ورقعتى مقى اور وه حضرت انسان " ہيں۔

زمین کی خلافت صفت علم کے بغیر ممکن نہیں کیونکہ خلافت کی اہم ذرد اری انتظام اور عدل كاركهنا مع يحسي مجي انتظام كے لئے علم اور فہم ضروری ہيں ۔اس لئے زہبن كى خلات

کے لتے انسان کا انتخاب کیا گیا۔

انبيار بني اسرائيل مي سے ايك نبى جن كا نام حضرت شمويل عليه السلام بيان كيا ما تاہے آپنى قوم پر حَصَرت طالوت كوماكم مقرر كرنا جا باجو سارى قوم بي غربب منتعمار كے ماتے تھے۔

اس انتخاب پر قوم نے اعتراض کیا کہ و ہ تو ایک غربیب مفلوک الحال آ دمی ہیں نہ اُن سے ہاں مال ودولت ہے اور نہ شان وشوکت ، لہذا ہم میں سے کسی مالدار ذی حیثیت

آدمی کو حاکم مقرر کر دیا جائے ؟

روں وقام سردسر دیا جائے ؟ حضرت شمویل علیہ الت لام نے فرما یا کہ طالوت کو الٹر تعالیٰ نے علم و قوت تم سے زیادہ عطائی ہے وہی خلیفہ اور حاکم بننے سے اہل ہیں (سورہ بقرہ آیت عصصہ) اس آیت سے معلوم ہوا کہ خلافت سے لئے علم وقہم ضروری ہیں جو انسان کی فطرت بیں الٹرتعالیٰ نے بیدا کی ہیں اور فرشتوں کی صفت اس سے خالی ہے۔

حضرت آدم علیه استّلام صرف انسان دبشر ہی نہیں سکتے،

رد، معبار اسوة اورعصمت انبيار

الترتعالے کے برگزیدہ نبی ورسول مجی مقے۔

حضرت ابو ذرغفاری نے عرض کیا یا رسول اللہ مجھے بتا نے کیا آدم نبی کھے؟ حضوراکرم ملی اللہ علیہ و کم نے ارشاد فرما یا ہاں وہ نبی کھے اور رسول بھی ۔انھیں اللہ تو سے منٹرون تخاطب و نکم حال تھا۔ د تنفسیرابن کثیرہ اصلا

اور یقلی بات بھی ہے جب وہ پہلے انسان محقے تونسل انسانی کے لئے انہی ۔ ذریعیہ پیامِ الٰہی پہنچنا صروری تقاجبحہ وہی ان کے بادی ورہبر بھی تھے۔

حضرات انبیارگرام خطا و معصیت سے معصوم ہواکرتے ہیں، اُن پر التہ تعالے کی متقل حفاظت بھڑا تی قائم رہتی ہے۔ اگر چربشری تقاضوں کے حامل ضرور ہوتے ہیں ایکن اُن کے عمل وارا دے ہیں ہوسم کی بدی وسنسر کے ظہور کوعملاً نامکن و محال کر دیا جا گاہے تاکہ اُن کا ہر قول وعمل بلکہ حرکت وسکون تک انسانیت سے لئے مہتر بن نمونہ ہونے کی برہی بات قرآن و مدیث سے ماخو ذہے۔ البتہ بشریت وانسانیت سے متصف ہونے کی یہ ہی بات قرآن و مدیث سے ماخو ذہے۔ البتہ بشریت وانسانیت سے متصف ہونے کی وجہ سے سہو، نسیان، زنت دلغزش) کا امکان ہائی رہتا ہے۔ جو مجمعی عملی عملی اختیار کرلیتا ہے لیکن الیسی امکانی صورت ہیں بھی اُنہیں اُس حالت پر با تی نہیں رکھا جا آبا بلکہ فوراً ہی خبر وارکر دیا جا تا ہے اور وہ اس حالت سے کنار کش ہو جاتے ہی سہوا ور نسیان توکوئی خطا یا معصیت ہی نہیں ہیں جسکی وضاحت صروری ہو۔ البتہ زَلَۃ (لغزش) کی تحقیق توکوئی خطا یا معصیت ہی نہیں ہیں جسکی وضاحت صروری ہو۔ البتہ زَلَۃ (لغزش) کی تحقیق توکوئی خطا یا معصیت ہی نہیں ہیں جسکی وضاحت صروری ہو۔ البتہ زَلَۃ (لغزش) کی تحقیق

فابل ذكري بغزش بظامراتي فلان واقعمل كوكولا جأتا بجهار عمل وكردارين

بغاوت وستحتثی تو در کنار قصد دارا د سے کامھی دخل نہیں ہوتا ، بشری تقا منہ کے بیٹینے ظر

ایک ایساعمل بیدا ہموجائے جو بظا ہر خلاف واقع سمجھا جائے۔ اس عمل ہیں نیت ،قصر کو ارادہ ،قسم کی کوئی چیزے ما شہیں ہوتی۔ اسکی مثال ایسے ہے جیسے ایک و وسال معصوم ہے کے کے باتھ سے سسی ہی آئھ کھی جوٹ جائے ۔ فلا ہرہے اس عمل ہیں اُس بجے کے علم وارا ذکو ہجتے کے باتھ سے سسی ہی کو سے وضل ہے ؟ بغیر صبی نیسے مجرم اُس سے ایک ایسی بات سرز دہوی جو نہ خطا مجملات ہے نہ معصیت و جُرم ، نقر رہا ایسی ہی کیفیت انبیار کرام کے اُن واقع آئے ہیں ۔ اور یہ اُس بنتری طبیعت کا خاصہ ہوئی ۔ وراد اور یہ اُس بنتری طبیعت کا خاصہ ہوئی ۔ جوالٹ تو اُن کے فطرت سلیمہ میں شامل رکھا ہے ۔ ہاں بالارا دہ خلاف مکم کو گناہ عصیا و غیرہ کہتے ہیں جسکا صدور انبیار سے محال ہے اور اُن سے مجدول جو سے خلام کیا اُس سے ایک یہ بھی سے کہ امت سے معال ہے اور اُن سے مجدول جو سے خلام کیا ہوئی ہیں جنگو محققین نے مختل ہوئی ہے کہا ہم کیا ہم

موقل ا مام مالک کی ایک روایت میں اس عنوان کو اس طرح بیان کیا گیا ہے۔ اِتی لائنسی او اُنستی لاسٹ درموا، مجھکو محبلا یا جا تا ہے تاکہ اُمت سے ستے

سنت قائم ہوجائے۔
امام غزائی نے ایک اور لطیف محمت کھی ہے۔ فرماتے ہیں:"چونکہ انبیا ہرام سے ہاتھوں معجزات اور خرق عادات کاظہور ہوتارہتا ہے اور معجزات کی حقیقت مہی ہے کہ انسانی طاقت ایسے عمل جاری کرنے میں عاجزو درماندہ ہوجا معجزات کی حقیقت مہی ہے کہ انسانی طاقت ایسے عمل جاری کرنے میں عاجزو درماندہ ہوجا ماری کرنے امم یہ بتلاتی ہے کہ مہت سی قومیں انبیار کرا میں اور ہیت سے قائل ہوگئیں تھیں جسی کہ بعض قوموں نے اپنے نبی کو فُدا، میں اور ہوہا ہے۔ اللہ تعالی نے انبیار کرا کہ کہ نفوں کو اس گراہی و بدعقید ول سے متصف سمجھا ہے۔ اللہ تعالی نے انبیار کرا کہ کہ نفوں کو اس گراہی و بدعقید گی کے انسداد کا ذریعہ بنایا کہ آخریہ خدایا خدائی طاقتوں کے حامل ہوتے تو اِن سے لغرشیں نہ ہوتیں اور وہ اپنی لغزشوں پر بیہا ہی متنب ہوجاتے اور اُن سے ایساعمل سرز دی ہوتا۔ والنّداعلم ،

بدارت کے چراغ جاناع

بهرهال انبیارگرام می لغزشوں کی حکمت خواہ کچید بھی ہویہ نفوس قُرسِیّہ نبوت ورسالت کے سامقہ سشرتیت کے لوازم بھی رکھتے ہیں جنبیں سہو، نسبیان، لغزش بھی شامل ہیں جوگناہ یامعصیت قطعاً نہیں۔

حضرت آ دم علیه الت ام سے واقعہ پرغور کرنے سے بہ حقیقت مزید واضح ہواتی سے کہ حضرت آ دم علیه الت ام کی یا علی نگنا ہ تھی ندمعصیت بلکه ایک قسم کی تغزیش تحقی یہ سے کہ حضرت آ دم علیه الت الم کی یا علی یا گنا ہ تھی ندمعصیت بلکه ایک قسم کی تغزیش تحقی یا سور ہ بقرہ کی آیت علی یہ الفاظ ہیں ۔

فَأَذَ لَيْهُما السَّيْظُنُ شيطان في أن وونون سانغرش كرادى -

یہاں لفظ زکت استعمال کیا گیاہے جسکی وضاحت اور آجیکی ہے۔ چنور میں عمر عمال نہیں شہری است

حضرت آدمم کا پیمل لغزیش (زکته) تقاخطا یامعصیت ندمخی به اورسور هٔ طله آیت بینتله اورسورهٔ اعراف آیت منته بین اس واقعه کونقل کرتے

ہوئے لفظ وسوسہ سے نعبیر کیا گیاہے۔

فَوَسُوَسَ اللَّهِ اللَّشَّيْطَانُ (طلاآيت منا) فَوَسُوسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ (اعراف آيت منا)

شیطان نے اُن کو بھِسلادیا ریا ، مھرشکیطان نے اُن دونوں کے دلوں میں سودالا۔

مھیراسی سور ہُ طاہمیں تبیسری حَکمہ اس لغزش و وسوسہ کا سبب خود ہی ہیسان کردیا گیا کہ حضرت آدم علیہ التسلام ہرقسم کے ادا دی وعملی گنا ہ سے پاک ہے۔ وَلَقَدُ عَیهِ دُنَا یَا لِیٰ اَدَّ مَرْمِینُ قَبْلُ فَنَسِی وَلَمْ بِجَهِدُ لَیْ عَنْرُمًا رَاطا آیت ،ہے!)

اورہم نے اس سے بہلے آ دھم کو ایک حکم دیا تھا منگروہ تھول گئے اور ہم نے داس عمل بیں) ان کاکوئی عزم وارا دہ نہیں یا بابعینی آدم علیہ استلام کا درخت سے قریب ہونا قصدی وارادی عمل نہ نخا بلکہ غفلت و تعبول کا نتیجہ نخا۔

قرآن حکیم کی پینصر سیات انبیار کرام کی عصمت و پاک دامنی کو واضح کرتی ہیں کہ انبیار کرام خطاؤں معصیتوں ،اور ذنوب سے پاک ہوتے ہیں ۔ بہی سلف وخلف کا عقیدہ ہے اور اسی پرامت کا سوا دِ اعظم متفق ہے۔ البتہ بعض نا واففوں کو سور ہُ اطلم کی آیت علا

ت سنت به بواكر حضرت أدم عليه التلام معصيت كاصدور بوا اوروه كمراه بوكف.

جلداول غالبًا سنب کی یہ وجہ ہوگی کہ آیت ِندکورہ میں لفظ ٌعصیٰ " اور ْغوٰی 'ندکور مِي جِن كا عام ترجميةُ 'ما فرما ني كي" اورُّ مَمراه موسِّكَةٌ " كَلْها جا تاسيج مطلب یہ ہواکہ حضرت آ وم علیہ اکتلام نے دنیعو ذیالٹر اگنا ہ کیا اور گھراہ ہوگئے لیکن حقیقت بہ ہے کہ ہا دی النظر میں ایسے ہی تمجھا گیا مگرجب دنگیر آیات سے سکا تقوجو اس کے بیں موجود ہی غور کیا جائے تو بہت ہے الکل ہی سطی معلوم ہوگا . دراصل یہ كَيْرَكُ عَنْ مِثَالَ شَحِطُورٌ يُرْظُلُمُ كَالْفُظِ كَنَاهِ ، زيادِ في ، نثركَ شَحِمْعِني مِنْ آيا ہے ۔ اپنے بي ٌ صَلَالَة فَوْ " مَمْرابي ، منفصان ، غالب بهونا ، حيران وبريضان بونا مصعني لميراتيا م انهى الفاظ ميں لفظ مَعْصِيتِ مِنَا ورغُوّا بَيْرَ مجمى سُامِلْ بِي دان كے معنی جہال گنا ه كرزا ا در گمرا ہ ہونا آتے ہیں و ہاں مُعصِیت کے سے معنی لغزش کے بھی آتے ہیں۔ چنا سخچر لغت ى مضهوركتاب يستان العدب اور أقدب المدارد بي صراحت سي -ٱلْمُنَعُصِيَّةُ قَدُتُكُلِنُ عَلَىٰ الزَّكِّنِ عَجَازًا۔ معصیت مصدر ہے جھی مجازاً لغزش سے معنی میں تھی آنا ہے۔ اسی طرح غومی ، ضکّ یا فَابُ سے معنی میں آتا ہے بہک سکتے یا مقصان میں پڑھکتے۔ اب آیت وَعَصی ادَمُرسَ بَن فَغَوی کا ترجمہ یہ ہوا: لغرسش كھائي آدم نے اپنے رب سے حكم بيں بس و و منقصان بيں پڑگئے. لہذا آیت کا مصلب نہیں کہ آدم نے نا فرما نی کی اور گھراہ ہو گئے بلکہ بھیج ترخمہ یہ ہوگا۔ لغرسش کھا ئی اور نقصان میں پڑھتے۔ نقصان پیرجنّت جبیبی حَکَّه جِیوٹ محنی جہاں ہرقسم می آسائش مہیابھی ۔اور دنیا کی زندگی میں آگئے جہاں نفع ونقصان دونوں بیش آتے ہیں۔ د) وو وضاحت و الشجر منوعه سے کھاتے ہی حضرت آدم علیہ السّلام اور دی و وضاحت مقالتہ کی اللہ علیہ السّلام اور حضرت حوالہ کا وہ لباس جوزیب تن مقالتہ گیا اور ایک دومبرے سے سنز سامنے ہو گئے ۔ و ونوں درخت نسے بیتوں سے اپنا سنز مجھیانے کی

کی فکر میں بڑگئے

بیاس کس چیز کانها ؟ اورا جانک کیوں ^اتر پیرا ؟ بنا پیرال مدیجه کو منا پر

یہ قاوسوال ہیں جن کی وضاحت درج کی جاتی ہے۔ ابن کثیر شنے وہب بن مُنتِ السے حوالہ سے یہ جواب دیا ہے کہ یہ کوئی مادی رہا^ں

بنه تقابلكه بكان لِبُناسَهُ مَا نُؤُدًا و دونوں كالباس نوركا مقابِحويا مطلب بير يدجنت كا

خصوصی نباس بھاجوصرف اسی عالم کے لئے سزاوا رکھا۔

خضرت آدم علیہ انسلام اور حضرت حوارجس دنیا ہیں اُترنے والے مقے اُسکے مناسب منتھا اس کئے وہ لباس ایار دیا گیا۔ یہ ایسے ہی ہے جیسے بید انش کے وقت مولود کا وہ لباس جونطن ما در میں زمیب تن رہتا ہے بیدائن سے بعد اُتار دیا جاتا ہے وہ ایک باریک سی جِعلی ہمونی ہے جو بیجے سے بدن پرنسی ہموئی رہتی ہے۔

بعض مفسرین نے دوسرے سوال کی یہ وضاحت کی ہے کہ لباس کا اجانک اُترجانا درائس اُس نادانستہ لغزش کا تتیجہ تھا جو حضرت آ دم علیہ استلام اور حضرت حوار میں سرز دہوگئی تھی۔ الترتعالئے نے اپنے فضل وکرم سے جنت میں اُسلے سترویتی کا انتظام فرایا تھا ، جب اِن حضرات سے پہلغزش ہوگئی توالٹر کی حفاظت اُن نے ہٹالی گئی اور اُن کا پر دہ کھول دیا گیا اور امضیں خود اپنے نفس کے حوالہ کر دیا گیا۔ گویا اس حقیقت کا اظہار تھا کہ جب سی انسان سے عدول حکمی ہوگی تو دیریا سویراً سی کویا اور اُسلے حوالہ کر دیا جائے گا۔ حضور اکرم ملی التعلیہ وکم کا پر دہ کھن کر رہے گا۔ اور اُسے خود اُسلے حوالہ کر دیا جائے گا۔ حضور اکرم ملی التعلیہ وکم کی وعاوں ہیں یہ میں نہ کور ہے۔

اَللَّهُمَّ لَا تَكِلِّيْ إِلَىٰ نَفْسِى طَرُفَتَ عَلَيْ وَلَا تَكُنِّرَ مِنِي صَالِح مَا اَلْكُنْ فَيَ عَلَا مُعَلِي وَلَا تَكُنِّرَ مِنْ صَالِح مَا الْمُعَلِينَ فَرَا يَا مُحِكُوا يَكُ لَمُ مَكِ عَلَا مُرَفَعَ مِنَ مَعَ عَلَا مُرَفَعَ مِنَ مِنْ مَعْلَا مُرَفَعَ مِنَ لَكُ مُولِمَ مِنْ اللّهِ مَا ورمجه سابني عطا مُرفَعَ مِنَ مَنْ مُعَلَّا مُرفَعَ مِنَ لَكُ مِنْ جَعِينَ لِيهِ وَالْمُعَدِيثِ) كُونِهُ جَعِينَ لِيهِ وَالْمُعَدِيثِ)

دی ابوالیسنر حضرت آدم علیه است الم روئے زمین کے پہلے بشر ہیں اس کے الموالیسنر ہیں اس کے الموالیسنر ہیں اس کے المون کے بینے بشر ہیں اس کے المون کے بینے بشر ہیں ابوالیسٹر کہا جا تا ہے۔ البتہ طبقات الارض کے بینے میں ابوالیسٹر کی کوشش کی ہے کہ موجودہ انسانی دنیا سے بہلے بھی اس زمین برایک نے یہ تا بت کرنے کی کوشش کی ہے کہ موجودہ انسانی دنیا سے بہلے بھی اس زمین برایک

ہرایت کے چراغ ملداوّل

انسان جبیی مخلوق کا وجود را ہے جس کا زمانہ حضرت آدم علیہ انستام سے تمین ہزار سال پہلے کا ہے۔ اس مخلوق کا نام 'نتیا ندر تال' بنا یا جا تاہے۔ جو بچوکر وڑ نفوس پر مضتمل مقی نخیال کیا جا آ ہے کہ یہ نوری آبادی سی مجرم کی پاداست میں ہلاک وضائع کر دی گئی ۔ اس محقیق کی بنیاد آنار قدیمہ کی وہ بڑیاں ہیں جو زمین کی تحداثی ہیں ظاہر ہوئے ہیں جو اپنی قدوقامت ، شکل وصورت ہیں موجودہ انسانی اعضا ، سے مہت طاہر ہوئے ہیں جو اپنی قدوقامت ، شکل وصورت ہیں موجودہ انسانی اعضا ، سے مہت

حد تک مشامہت رخصتے ہیں۔

لیکن قرآن کیم آورنبی کریم کی الترعلبه و لم نے اس بارے بیں کوئی وضاحت نہیں فرمائی ۔ تذکرہ سیدنا آدم علیہ انسلام سے سیسلے میں جسقدر بھی آیات موجود بین ان سے یہی معلوم ہو تاہے کہ حضرت آدم علیہ انسلام اس زمین نے پہلے بہتر ہیں انسانیت کا آغاز انہی سے ہوا۔ یہ ہی زمین کے پہلے انسان اور نبی ہیں۔ نسل انسانی انسان اور نبی ہیں۔ نسل انسانی حضرت آدم علیہ التسالامی عقبدہ سے اور ہمارے علم ویقین کے لئے صوف اس فدر کا فی ہے جو ہم کو قرآن جیے علم مقین اور وحی الہی کے بعد حاصل ہوا ہے۔ علم ویقین کے لئے یہ قوما خذکا فی ہیں۔

و فرنتول می حقیقت فرنتول می حقیقت فرنتول کا در کزت سے آیا ہے۔ فرشتے اللہ

کی مخلوقات بیں سے ایک خاص مخلوق ہیں جو 'نور''نے پیدا کئے سینے ہیں۔ وہ ہم کو دیکھ لیتے ہیں لیکن ہم ان کو دیچھ نہیں یا تے۔

قُرْآن عَلَم فَ فُرِيْتُ مَنَّ مَنَّ مَنَّ مَنَّ وَأُوصِفات بِيانِ كَى بِي. لَا يَعْصُونَ اللَّهُ مَا أَمَّرَهُ مُو وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ اللَّهَ

الترجوا تفيل مكم ديتا ہے اُسكى نا فرانى نہيں كرتے اور جوتكم بھى المفيل ديا جا اہے اُستے جوا تفيل ميں المفيل ديا جا اہمے اُستے جدائی افتيارات سے حالل نہيں ہوتے - التر تعالیٰ اِن کے ذریعہ استِ فلیم الشان كائنات كا انتظام جلا اُسے - بيلطنت الہى كے اہل كار" ہيں اپنے فرائف منصبى سے لئے جس وقت جو ضرورت بين آئی ہے وہيں ہى صورت ہيں ۔ اپنے فرائف منصبى سے لئے جس وقت جو ضرورت بين آئی ہے وہيں ہى صورت

ملدا ول

اختیار کرسکتے ہیں معض ان میں ایسے قوی ہیں کہ تنہا ایک ایک مشہر کو تہیں نہیں كرسيحة بيي ان ميں نافرمان كاكونئ عنصر نهبيں ۔ يہ خير محض بهوتے ہيں ۔ يه ايني ذوات مين منفع يانتقصان كااختياز مُهبين رسحصنه ، جابل قومي إنكي قوت

وطاقت کامظاہرہ دیجھ کران کوخدائی میں حصہ دار ، خدا کا رسنتہ دار ،ا ورمعضوں نے

ان کوخڈا کی بیٹیاں قرار دے لیا ہے۔ اسلام نے اِن غیبی ستیوں کولیجیم کرنے اور اِن کو خدا کی مخلوق جانے کی ہر مسلمان پریابندی عائدی ہے اور اِس کو اُسلام سے بنیا دی عقائد ہیں شمار کیا ہے۔ اِن ہیں سے معض کے نام قرآن صحیم اورا حادیثِ رسول میں بیان کئے سکتے ہیں ۔ اِن کی جملة تنعدا دكاعلم صرف التكر تنعاك سي كوس-

> وَمَا يَعُلَمُ جُنُودَكَ بَلِكَ إِلَّاهُو اللَّهِ والمدرِّرَ آيت عليه) اور تیرے رب کے کشکروں کوخو داُس کے سواکوئی نہیں جانتا۔ فران محیم میں فرشتوں کا ذکر (۴۸) آیات میں ۸۸ مرتبہ آیاہے۔

دن جتاف كاتعارف الرستون كاطرح جنّات بهي إيترتعاك كاستقل مخلوق

ہیں ۔ اِن کی تخلیق میں آگ کا مختصر غالب ہے ، یہ تھی مختلف خناركرسكتے ہیں، اِن ہیں بتیب وبد دونوں قسم ہیں پشریعتِ اِلٰہی سے پیمی مكلف د پابند) ہیں۔رسول الٹیصلی الٹیملیہ ولم اِن کی طرف بھی مبغوث فرمائے سکتے ہیں اسی کتے ا في كو رسول الثقلين" رحن وانس كے رسول اللہ انا ہے ۔ آپ نے إن كے مشہرول كامجى سفر فرما یا ہے۔احادیث میں کیکٹ اُکے جِنّ "کا تذکرہ آیا ہے۔ روایاتِ حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ نے جیانج دفعہ جنان کی دعوت پران سے شہروں کاسفرفر ایاہے .اورانکے قبائل میں اسٹ لام کی دعوت دی ہے سبنکڑوں جنّات نے اسلام فبول تھیا۔ ان کے وفو د آپ کی خدمت مٰیں ماصر ہوتے تھے۔اور آ ہے سے اسلام وایمان کی باتیں معلوم كرتے تھے كتب احاديث بين جنات كمعض خاص احكام مبى مذكور ميں . قرآن يحكِّم ميں ايك تقل سوره (سورة الجن) مذكور ليے اورسورةُ الاحقاف كآآخرى رکوع مجی امہی مصنعلق ہے جس کا ترجمہ بہاں قابل ذکرہے۔ ا بنی وہ واقعہ بھی قابل ذکرہے جب ہم جنات کی ایک جماعت کو آپ کی طرف ہے آئے مجے تاکہ وہ قرآن میں مجارت کی ایک جماعت کو آپ کی طرف ہے آئے مجے تاکہ وہ قرآن مسئیں، مجرجب وہ اُس جگہ پہنچے رجہاں آپ قرآن پڑھ رہے مجھے) تو اُمھوں نے آپ ہمیں کہا فاموس ہوجاؤ، مجرجب قرآن کی تلاوت ختم ہوئی تو وہ خبر دار کرنے والے بن کر اپنی قوم کی طرف پلطے.

اُمفوں نے کہا ،ائے ہماری قوم کے لوگو ،ہم نے ایک کتاب سے جوموسی سے جوموسی کے بعد نازل کی گئی ہے ،تصدیق کرنے والی ہے ایٹے سے پہلے آئی کتابوں کی ،رہنمائی کرتی ہو

حق اور را و راست کی طرف۔

ائے ہماری قوم کے آگو، الٹر کی طرف کلانے والے کی دعوت قبول کرلوا وراس پر ایمان ہے آؤ، الٹر تمہارے گنا ہوں ہے درگزر فرمائے گا اورتمہیں عذاب الیم ہے بچا ویگا۔ اور جو کوئی الٹرکے داغی کی بات نہ مانے گا تو وہ زمین (کے کسی حصہ) میں (مجاگ کرخدا کوا ہُرانہیں سکتا اور خد اکے سوائس کا کوئی مددگار نہ ہوگا،اور ایسے لوگ صریح گمرا ہی ہی ہونگے۔ داحقات آیات عصر تا اعتصری

جنات بیں ولا دت وموت کاسلسلہ بھی ہے ،ان کی عمرین نسبتاً انسانوں سے زیادہ طویل ہوتی ہیں۔ قرآن محیم نے ان کے بارے میں یہ وضاحت کی ہے کہ وہ انسانوں محوجس طرح دیجھ لینتے ہیں انسان اُن کو دیجھ نہیں سکتا۔

اً لَنَّا يَرَا لَكُوْهُوَ وَقَبِيلُهُا مِنْ حَيْثُ لِلَا تَرَّوْنَهُمْ (اعران آیت منکا) ببینک وه اور اس کے سامقی تم کو ایسی جگہ سے دیچھ لینے ہیں جہاں سے مُانہیں

د ليونهيں سکتے۔

قرآن محیم کی (۳۱) آیات میں (۳۲) مرتبہ بن کا لفظ آیاہے۔ چونکہ فرضتے اور جنات ہم کو نظر نہیں آتے صرف اس وجہ سے اُن کے وجود کا انکارکر دینا کوئی معقول بات نہیں ہوگی ہوئنات میں آج بھی بہت سی چیزیں ایسی ہیں جو انتہائی حسّاس دُور بین وخور دبین سے بھی دکھی نہیں جاسکتی لیکن اسکے باوجود ماہسسرین فلکیات ان چیزوں کا اقرار کرتے ہیں اور الیسی غیرم شا ہداست یار کے وجود کونسلیم کرتے ہیں' مانسی قریب میں بہت سی چیزوں کا انکار کیا جا مقالیکن آج انکونسلیم ہی نہیں بلکہ دلیا سے ٹارت بھی کیا جا تا ہے اور اُن کے وجود پر دلائل قائم ہیں۔ فرشتوں اور جنات کے بارے ہداؤل میں قرآن حکیم ہم کو اِس کا مقین ولا تا ہے اور اُن کے وجود کوستقل وجود قرار دیا ہے تواب ہم کوکسی سے نظریات سے متا ترہونے کی کوئی گنجائش نہیں ہے . وَ مَنْ اَحَدُدَیْ مِنَ اللّٰہِ قِیْلًا الّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ قِیْلًا اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰ اللّٰ اللّٰہِ اللّٰ اللّٰہِ اللّٰ ا

(۱۱) ایکمننٹ خاک مینی ستیدنا آدم علیدات کام سے سیلے ہیں یہ بات میں اور ہے کہ ایک مشت خاک برجب التّر

کی عنایت و توجہ بڑی تواسی عظمت و مرتبت کہاں سے کہاں یک مینجی، وُرُ مسجود ملاکہ " ہوئے "خلیفتُ اللّٰہ"کامنصب اورصفی اللّٰہ"کالقب پایا۔معلوم ہواکہ اللّٰہ تعالیٰ کی ظرعنا " وکرم اگر کسی معمولی شک پر معبی بڑجائے تو وہ بڑے سے بڑے مرتبے اور جلیل القدر منصب پرفائز ہوجا آہے۔

بڑے کمالات پر فائز ہوکر بھی انسان اپنی بنٹری وطبعی خصوصیات سے خارج نہیں ہوتا۔ ستیرنا آدم علیہ الت لام جو کمالِ انسانیت کی علامت اور اخلاق خداوندی کے اعلیٰ نزین علم ہیں وہ بھی ابلیس لعین کے وسوسہ سے مثاثر ہوگئے۔

اخلاق وکر دار کی بلندی کے باوجود انسان انسانیت کے دائرے سے باہز ہیں ہوتا۔ وہ نہ فرشتوں کی صف میں جا ملتاہے نہ التار نہ التار کی صفات کا مہیم وسٹر یک فسسرار پاتا ہے۔

روب کی سنرے خطاکار ہونے سے باوجوداگر انسان ندامت کیسائقہ الٹری جناب میں رجوع ہوجائے تو اس کیلئے 'بابعت'

بندنہیں ہو تا اور التٰرتعالے کا یہ قانون قیامت تک سے لئے انسانوں میں ماری کر دیا گیاہے کہ خطا ادا د قاً ہو یاسہواً، جیونی ہو یا طری ، دل کی ندامت سے ساتھ التٰر سے حضور معسّا فی *جلد*ا وّل

چاہی جائے تو نہ صرف معاف ہو جائیگی بلکہ قرب الہی نصیب ہوگا۔سیدنا آ وم علیہ السلام موجودہ زمین کے پہلے انسان ہیں جن سے توبہ می سنت "نسل انسانی کو ملی۔ تذکرہ سیدنا آدم علیہ التسلام کا پنچصوصی پہلو ہے جسکو قرآنِ حجیم نے ظاہر کیا ہے۔

(۱۲۷) مذکره کا عبرت ناک بهلو ایرگاه الهی میں بغاوت، گستاخی، عدول کمی، الاس میں بغاوت، گستاخی، عدول کمی، عدول کمی، عدول کمی، عنور، تجبرایسے خطرناک نتائج پیدا کردیتے

ہیں جسکا از الم مکن نہیں ہوتا، ابلیس کا یہ واقعہ عبَرت ناک واقعہ ہے۔ ہزاروں سال کی عبادت و بندگی، مقدس فرشتوں کی معیت، آسمانی قیام اور جنّت کا قُربِ سب سے سب ایک عدول صحی" میں خاک آلو د ہو گئے۔

تذکر ہسیدنا آ دم علیہ السلام کا پیضوضی پہلو عبرت وموعظت میں ایک طبعہ درس کی حیثیت رکھتا ہے۔

ٱللَّهُ حَرَّادِنَا الْحَتَّ حَقًّا وَّ ارْزُقُنَا إِبَّاعًا۔



نسل انسانی سے مطافی فرآن علیم نے حضرت آدم علیہ السّلام سے پہلے دوبیٹوں کا تذکرہ بغیر مسینا

کی وضاحت کے آبنی اُدَّمَر" آدم کے قروبیٹے کے الفاظت کیا ہے۔ البتہ تورات اور احادیث کی معض کتب میں اِن دونوں کا نام قابتیل اور بت سر بر سر سے میں میں میں میں است کا معام کا بار سے میں اِن کے مال

ما تبیل بیان کیا گیاہے۔ قانبیل بڑا ہمانی تھا اور ناتبیل جھوٹا۔ ما بیل بیان کیا گیاہے۔ قانبیل بڑا ہمانی تھا اور ناتبیل جھوٹا۔

جب حضرت آدم علیہ است کام اور حضرت حوار زمین پراُ تار دئے گئے اور منشار الہی میں اس زمین پر انسانوں کو ببیدا کرنا تھا تو انسانی آبادی سے اضافے سے لئے ُ سنت اللہ '' اس طرح جاری ہوئی جسکا یڈکرہ ابن کثیرنے اپنی تاریخ میں حضرت عبداللہ بن سعو دوخ اور ایس طرح جاری ہوئی جسکا یڈکرہ ابن کثیرنے اپنی تاریخ میں حضرت عبداللہ بن سعو دوخ اور

وسير صحابتي روايت سفقل كياسي جبكامضمون يدسي.

مفرت حوار کو بیک وقت ایک لاکا و رایک لاک د توام) پیدا ہوتے تھاور ان بچول کے آبس میں نکاح کا یہ دستور بنایا گیا تھا کہ توام د جوڑواں) پیدا ہونے والے لاکے اور لڑک کا نکاح دوسرے مرتبہ پیدا ہونے والے توام لڑکے اور لڑکی کے ساتھ کردیا جاتا تھا۔ اس شرعی دستور کے مطابق قابیل اور ہابیل کی شادی کامسکہ بین آیا۔ قابیل عمر میں بڑا تھا اور اسکی بہن (جواسکے ساتھ پیدا ہوئی تھی) ہابیل کی بہن سے ہمت زیاد چسین وجبیل تھی، قابیل پیرچا ہا تھا کہ اپنی توام بہن سے خود ہی نکاح کرلے اور دستور کے مطابق ہابیل کو یہ موقعہ نہ دے جواسکا شرعی تی تھا۔ جب کیشکش طویل ہوگئی اور کسی طرح افہام تو تھ ہم کاسلسلہ کا میاب نہ ہوسکا تو حضرت آ دم علیہ السلام نے وی اللی کی ہدایت پر اس نامرضی قضے کا اس طرح فیصلہ دیا کہ دونوں بیٹے ابنی اپنی کائی

ہے اللہ کی بارگاہ میں قربانی پیش کریں جبکی قربانی قبول ہوجائے وہی اپنا ارا دہ یورا سحرنے كاستى ہوگا اُس زمانے بيں قربان بيبيش كرنے كايد دستور تقا كركسى بلند مقام رائني ندراور قربانی رکھ دی جاتی ، آسمان کے آگ نمودار ہوتی اور اسکو جلا دیتی تھی۔ یہ علامت نذر سے قبول ہونے کی سمجھی جاتی تھی۔اس دستور سے مطابق ہا تبیل حیو سے مھا ان نے اپنے جانوروں میں سے ایک فربہ جانورخدا کی نذر کیا۔اور بڑے بھانی قانبیل نے اپنی کھیتی کے غلے سے ردّی قسم کا کوئی انائج قربانی کے لئے بیتیس میا۔

جب د ونوں نے اپنی اپنی ندر ایک بلند میالا پر رکھدی تواسمان سے آگ نمو دار ہوئی اوراُس کے چیوٹے بھائی ہآئیل کی نذر کو جلا دیا ،اور قاتبیل کی نذرویسے ہی بڑی

رہی ۔ التُرکا فیصلہ ظاہر ہوگیا کہ ہائت ک حق پرہے اور قابت کے لکلم اور ناحق پر۔

لیکن قاہلے نے اللہ کے اس فیصلہ کو قبول نہ کیا اور البیے چھوٹے بھانی ہے ہیل کا وتمن بن گیامغض وعداوت نے قاتبیل کو اس حد تک پاگل بنادیا کہ وہ اپنے حق بریت مھانی کوقتل ترنے کی فکر میں بڑگیا۔ ہالآخر اپنی حرکات سے ظام کر دیا کہ و ہمسی نبھی وقت ہاتیل کوفتل کر دیے گا۔

باتبل کوجب اسکی اطلاع ہوئی تو و ہ اِس گنا ہ کے تصور سے کانپ گیا اوراپنے

تقویٰ ونیکی کو باقی رکھنے کے لئے اپنے ظالم مجانی سے یوں مخاطب ہوا۔

نیری جومرضی ہو وہ کرگزر، بن تواس گنا ہ بین خود کو ملوث نہیں کروں گا مطلب یہ تھاکہ اگر تومیرے قتل سے دریے ہوتا ہے تو ہو، میں تیرے قتل سے دریئے نہیں ہونگا۔ ر با قربانی والامعاملیه وه تو واضح بے که الله نیک اور حق پرست انسانوں می کی قربانی قبول کرتاہے۔ بعنی اگرتیری قربان فبول نہیں ہوئی تو برمنیرے سی قصور کی وجہ سے کہیں ہے بلکہ اسکی وجہ یہ ہے کہ تجھ میں تنقویٰ نہیں ہے۔ لہذا میری جان سے بجائے تجھ کو اپنے اندر منقوی بیداکرنے کی فکر کرنی چاہئے۔ قربانی سے اس امتحان سے تجھ کو ہدایت ونصیحت ما کرنی جاہئے۔ یہ ہی دنیا وآخرت کی فلاح کا ذریعہ ہے۔

انسان کا بہلافت ل کن ملصانہ نصیحت و ہدایت کا اُنٹا اثر ہوا اور قابیل کی ملصانہ نصیحت و ہدایت کا اُنٹا اثر ہوا اور قابیل

نے طیش میں آگرا پنے حق پرست مھائی ہا آبل کوفتل کرڈ الا۔ اس وقت ہا آبل کی عسسے بمین سال بھی۔

روئے زمین برابھی تک انسانی کا حادثہ نہیں ہوا تھا اور غالباً یہ ونیا میں ہیں موت بھی تھی۔ ہابیل مظلوم کی نعش زمین پر ٹری رہی نیسل انسانی کا یہ بہلا ناحق خون تھا۔ قابیل کا جنون انتقام جب سردیڑا تو یہ محرسوار ہوئی کہ اپنے اس ممل بر"کو کسطح

حِیمیایا جائے ؟ اور معش کا کیا انتظام کیا جائے ؟

ابتک وفن کرنی سنت جاری نمهیں ہوئی تھی۔ قابتیل اینے مظلوم ہائی آبیل کی معتقل کو اپنی آبیل کی معتقل کرنے کیے تھا تا ایک کیے تعالی نے معتقل کو اپنی گیشت پر کئے بھر تا رہا ہموئی تدبیر سمجھ میں نہ آئی جب خفک گیا توالڈ تعالی نے دستگیری فرمائی ، ایک کوتے کو دیکھا کہ وہ زمین کڑیر کڑی پر کر گرطھا کر رہا تھا۔ اسکے بعد ایک مُردہ کو سے کو اسمیں جھٹیا دیا۔

. بریم فیده این کواحسانس بهواکه محجکومهمی ایسا مهی کرنا چاہئے، چنانچه زمین کھو د کراسمیں اپنے دریم فیدہ میری کا سات میں جب جب

معانی کی معتری چھیا دیا۔اسی طرح میردہ جسم سے چھٹکارا یا یا۔

اسیمن کے بعد اپنی کم عقلی پرافسوں کونے نگاتھ ہائے افسوس ہیں اس کوتے سی مجمی گیا گزرا ہوں جو اپنے جرم کو جوبیانے کی بھی اہلیت نہیں رکھتا۔ افسوس میں ایک حقیر جانور سے بھی گیا گزرا ہوں اور مجھ ہیں اتنی بھی عقل نہیں ۔ اُسکے بعد اُس کی عقل جاتی رہی اور بدن سے بھی کمنز ہوں اور مجھ ہیں اتنی بھی عقل نہیں ۔ اُسکے بعد اُس کی عقل جاتی رہی اور بدن سے یا ہ پڑگیا اور اسی حالت ہیں وہ فوت ہوگیا۔

معج قرآن تحیم کی آیات ذیل انہی تفصیلات می^شتمل ہیں۔

ہوں، میں یوں چاہتا ہوں کہ تومیرے گنا ہ اور اپنے گنا ہ سب اپنے سر کے لے بھیسر اہل دوزخ میں سف اللہ ہوجائے، اور یہ ہی سنرا ہوت ہے للم کرنے والوں کی۔
سوا سے جی نے اسکو اپنے ہوائی کے تل پر آمادہ کر دیا بھراس نے ہوائی کوتل کر ڈوالا، جس سے وہ مقصان اُ مطانے والوں میں سف الل ہوگیا۔
مجر اللہ نے ایک کو اجھ جا کہ وہ زمین کو گھو دتا تھا تاکہ وہ اسکو تعلیم کرے کہ اپنے مھائی کی تعش کوکس طریقے سے جھیائے، تھنے لگا افسوس میری حالت پر کیا میں اس سے مھائی کی تعش کو جھیا دیا سووہ بڑا ترمند ہوا۔

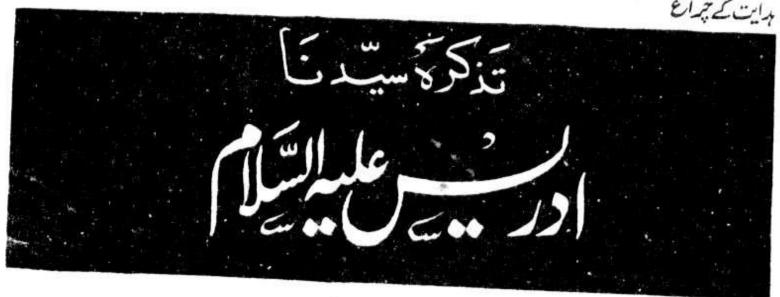
بتانج وعب سير

را) مفت من اسب الله والمك ثام كي شمال بين جال قاسيون پر ايك زيارت گاهِ عام على آر ہى ہے جُومِقتل البيل"

کے نام سے شہور ہے۔ مؤرخ ابن عساکر نے احد بن کشیرہ کے تذکرہ میں اُن کا ایک خواب میں نقل سے ہے۔ جس میں ندکور ہے کہ احد بن کثیرہ نے رسول اکرم سلی الشرعلیہ ولم کو خواب میں دیجیا آج کے سے ابھر ہائیں ہیں سکتے۔ ہائیں نے سم کھاکر کہا کہ یہ ہی میرامقتل ہے۔ اس پررسول اکرم سلی الشرعلیہ ولم نے اس بات کی تصدیق فرائی۔ والنڈاعلم۔ اس پررسول اکرم سلی النہ علیہ ولم نے اس بات کی تصدیق فرائی۔ والنڈاعلم۔ حافظ ابن سخیر نے اپنی محتاب البدایہ والنہایہ "بین اس واقعہ کونقل موسے یہ کلام کیا ہم اس سے کوئی شنری یا تاریخ بحم نابت نہیں ہوتا۔

(۱) وفرس کا باکیز وطرافیہ اس جو نکہ خدا کا مقبول بندہ تفااس گئے اُس کے بدن کی عظیم ونکر کرے گئے وفن کا پاکیز وطرافیہ رائج کیاگیا جو قیامت سے بہتر کو نُ اور طب راقیہ ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہیں۔ سے جو دیس نہ آیا۔ در اصل نیکوں کی حیات وموت دونوں ہی قابل نذکرہ مہوتی ہیں۔ سے جو دیس نہ آیا۔ در اصل نیکوں کی حیات وموت دونوں ہی قابل نذکرہ مہوتی ہیں۔

رہ، قابیل می جینیت اوابیں کے کفریا بیان سے بارے میں کوئی قابل ذكرر وابت موجو دنهيس معض مفسرين تحيته بهسكه ائس کا نا دم وسشرمندہ ہونا اُسکے توبہ واستغفار کی علامت نہیں ہے بحیو بحتہ یہ ندامت مجانی کے تیل پرنہیں تھی بلکہ قتل پر جو منقصا بات بہتی آئے اُس پڑھی ۔ بعین معش کے دفن کرنے میں حیران ہونا، اپنے کندھوں پر اُٹھا نے اُٹھا کے اُٹھا کے بچیرنا، کونے نی تعلیم کا مختاج ہونا، برحواس بوجانا ،بدن كاسياه يرجانا ،حضرت آدم عليه السّلام كاناراص بوجانا وغيره وغيره -محقّق تقانوی اس برنگھتے ہیں کہ اگریہ ندامت فلل ہی پر بیدا ہوئی ہوتو تب تھی اِسے توبہ ثابت نہیں ہوتی نخیز نکہ تو بسیلئے شرط بہے کہ ندامت سے بعدمعذرے اور فکرتدارک بھی ہو'ا وریہ قابیل سے ثابت نہیں ر ہاندامت کا پیدا ہو نامحض طبعی طور پرتھا جوعقل کا بھی تنقاصنہ ہے ۔ خلاصہ بیر کہ صرف ندامت تو بہ کی علامت نہیں ۔ ا مام احد من نے اپنی مُسند میں حضرت عبدالتّٰہ بین مسعود و سے ایک روابت مقل کی ہے کہ رسول النّہ صلی التّہ علیہ و مم نے فرمایا دنیا میں جب بھی کوئی ناحق خون ہو تاہے تواٹسکا مگنا ہ حضرت آدمہ ے بیٹے (قابیل) کی گردن برضرور ٹر تاہے ،اسلنے کہ وہ بہلاستخص ہے جس نے ظالمانہ قبل ک ابتداری ہے اور یہ نایاک طرنقیہ جاری کیا (الحدیث) انسان کواینی زندهی میں ہرگز ہرگزالیا کام نہ کرنا چاہئے جوآئیندہ بد کاروں اور ظالموں کیلئے قرانمونہ ومثال بنے ، وریذ نتیجہ بیہوگا کہ کائناٹ ہیں جو تھی تائند تحسی طلم اور بدعت کا کام کرے گا تووہ بانی ظلم و برعت بھی اس گناہ میں برا برکاحصہ دا رہو گا کِناہ بهرحال گناه ہے ہی سیکن گناه کی ایجا وطبی مؤجد کیلئے ہمیشہ ہمیشہ سا مان جہم فراہم کرتی رہیجی۔ اسليّے اصحاب رسول صلی النّہ علیہ ولم بدعت کوسخت نرین ً نیا ہ خیال کرتے تھے جھنے ٰت عبد النّہ بن عفل اینے صاحبرا دے کونا ذکے ایک مسلد پر ننبہ سرتے ہوئے فرمانے ہیں۔ بیٹا بدعت سے بچوکیونکہ ہیں نے اصحاب نبٹی ہیں ہے ہرا کیے گو دیکھا کہ وہ برعت زیاده اورکسی گناه کوشدیزنهی سمجها کرنے مقے۔ (زندی ج۲ ابواب الصلوة)



حضرت شيث بن آدم كي اولا ديب پانچويں پشت پرحضرت ادرس عاليسلا کا اسم محرامی بیان کیا گیاہے۔

حافظ ابن كثير في ألبدايه والنهاية " من ذكر كياسيح كه حضرت آدم عليه السلام اور حضرت شیث علیه السلام کے بعدیہ تیسرے نبی ہیں حضرت شیث علیه الت لام کا کوئی يذكره قرآن يحيم مين موجود أنهي ب- البته تاريخ وسيرت كي محابون بي مختصر تذكره ملتا يم حضرت اورس عليه اتسلام كاسسلسلة نسب اس طرح بيان محياتيا ہے۔ اخنوخ (ا درتیم) بن یار دبن مهائیل بن فینان بن انوسشس بن شیب

بن آ دم دعلیهانت لام) حضرت ادر سی علیهانت لام کا ذکر قرآن حکیم میں ق^نومقام پر آیا ہے ایک سورہ مریم اور دوسرے سور هٔ انبیار میں -

حضرت اورئس عليه استبلام سے نام ونسب اور زمانہ بعثت کے متعلق مؤرخین

بين سخت اختلا فات ہيں۔ تمام اختلافی امور کوسامنے رکھنے سے بعد بھی کوئی فیصلہ کن رائے قائم نہیں جاسحتی حقیقت یہ ہے کو قرآن محیم نے اپنے مقصد (رُشدو ہدایت) کے پیشین نظر باری وجغرافیا لی بحث سے اجتناب کیائے۔ اور صرف اُن کی نبوت ، رفعت مرتبت اور اُنجے صفاتِ عالیہ کا ۔ وکر کیاہے۔ اسی نشار سے بخت اماً دیث رسول بھی اس سے آگئے نہیں جاتیں۔ البتہ ضروری صروری تذکرہ کتب احا دیث سے مل جا آ ہے۔

اور استعیل اور ادر تین اور ذوالکفل ، ان بین سے ہرایک منبر کرنے والوں میں سے ہرایک منبر کرنے والوں میں سے متحا۔ اور ہم نے استحار اپنی رحمت میں داخل کر لیا تھا بلاست بہ یہ سب نیکو کاروں میں سے محقے۔ (انبیار آیت مے ۵۰۔ ملا)

منائح وسير

علم رک کی ایجا و صحیح ابن حبّان میں ایک روایت ملتی ہے کہ حضرت اور لیڑے اس کی ایجا کی سے جمال کی ایکا کی ایکا

ابک اور روایت میں ہے کہ نبی کریم ملی اللہ علیہ ولم سے کسی صحابی نے علم رکل کے بارے میں دریافت کیا کہ یہ علم کیسا ہے ؟ دعلم رکل چند مخصوص کلیروں ونشا نات کا علم سے جس سے ذریعہ معلومات حال کی جاتی ہیں) آپ نے ارتاد فرما یا بیعلم ایک نبی کو دیا گیا تھا ، بس اگر کسی شخص سے نقوش وخطوط اسکے مطابق آجاتے ہیں تو نشا نہ تھیا۔ ببیطہ جانا ہے وریذ نہیں۔ اکثر محد مین نے اس نبی سے مراد حضرت اور لیس علیہ است لام سمجھا ہے ۔ والٹر اعلم ،

بخاری و کم کی تحدیث معراج "بین اس قدر نذکره اور مکتاب که نبی کریم ملی التار علیه و کم نے سفر معراج بین حضرت اور نسب علیه الت لام سے چوشتھ آسمان پر ملاقات کی تھی۔ رضیع بخاری باب الاسرائی پی سم جرا باب لاسرائی

ابن جریرطبری نے اپنی شہور زمانہ تفسیر میں کعب احبار کی ایک روایت سند کے ساتھ مقل کی ہے۔ ہایت کے چراغ جداقل مایت کے چراغ

کین بیکو سیان ہوگئے تھے تورات اورانجیل سے واقعات بکثرت نقل کیا کرتے تھے۔ بہرطال اہل علم اِن کے روایت کردہ واقعات پر مجھے زیادہ اعتما دنہیں کرتے ہیں۔

ابن جربرظری تعب احبار کی به روایت ملال بن بسان می سندسے نقل کرتے ہیں کہ حضرت اور این علیہ استام کے متعلق کرتے میں کہ حضرت اور این علیہ استام کے متعلق اس آبت کامطلب وریافت کیا۔

وَرَفَعْنَا لَا مُكَانًا عَيليًّا - (مريم آيت عه)

اورہم نے ادریس کو بلندمقام بر اُنھالیا۔

کعب احبار ٹنے جواب دیا کہ الٹر تعالیے نے ایک مرتبہ حضرت اور نیں علیہ السلام پروی مجیجی کہ اے اور نسی تمام اہل ونیا روزا مذہب فدر نبیا عمل کرتے ہیں ہیں ہرروز اُنت اجرو ثواب تم کوعطا کر تارہوں گا۔

حضرت دراز ہونی چاہیے تاکہ نیکیوں کے بڑے بیٹ انو دل میں خواہش پیدا ہوئی گریری حیات دراز ہونی چاہیے تاکہ نیکیوں کے بڑے بڑے ذخیرے بن جامیں اور جنت سے اعلے درجات نصیب ہوں مجھرا محفول نے اپنے آیک دوست فرضتے پر اللہ تعالیٰ کی اس وحی کا اور اپنی خواہش کا اظہار کیا اور یہ جی خواہش ظاہر کی فرسٹ تی موت سے اس بارے میں گفتگو کی جائے تاکہ میری زندگی دراز ہوجائے۔

اسپر دوست فرستے نے حضرت دراسی علیہ السلام کو اپنے بازگوں پر بہٹاکر اسمان کی طرف پر واز کیا ۔ جب دونوں چو تھے آسمان سے گزررہ بھے توراہ ہمی فرشتہ موت زمین پر اُترر ہے تھے و ہیں دونوں کی ملاقات ہوگئی ۔ دوست فرشتے نے فرشتہ موت سے حضرت ادراسی علیہ السلام کی خواہش کا اظہار کیا ،اسپر فرستہ موت نے دریا فت کیا کہ ادراس کہاں ہیں ؟

دوست فرشنے نے کہامیری گیشت پرسوار ہیں! اسپر فرسٹ تاموت نے کہا ابھی ابھی بارگا ہ الہی سے حکم ملاہے کہ ہیں ا درئیں ^م کی روج کو چوشنے آسمان پرفیض محروں ۔ سی روج کو چوشنے آسمان پرفیض محروں ۔

میں سخت حیرت و متعجب میں تھا کہ یہ کیسے ممکن سے جبکہ اور لیٹ زمین پر ہیں۔ میں سخت حیرت و متعجب میں تھا کہ یہ کیسے ممکن سے جبکہ اور لیٹ زمین پر ہیں۔ اسكے بعد فرسشتهٔ موت نے حضرت اورئیں علیہ السّلام کی روح وہیں چو تھے آسمان پر

به واقعه نقل کرکے کعب احبارؓ نے حضرت ابن عباسؓ سے اللّٰرتعالے کے اس ارت و دَدَفَهُنَا ﴾ مَكَانًا عَلِيًّا اوربم في ادريش كو بلندمقام يرأ مُقاليا-

می مین تفسیر ہے۔ دانتهیٰ)

بعینبه یہ ہی واقعہ می دے ابن ابی حاتم شے اپنی تنفسیریں ایک دوسری سندے ہے بیکن دیچرمفسرین نے اِن روایات پرنتقید کی ہیں۔ ابن تثیر شنے اسکو اسرائیلی روایت کہائے۔ تاہم آبت فرآن کی تنفسیراس روایت پرموفوٹ نہیں ہے۔ آبت کاطلام يه ہے کہ التر تعالے نے حضرت اور سی علیہ التلام کو دنیا وآخرت میں بلند مقام عطا کیاہے۔ یا پہ کہ چو بختا آسمانِ اُن کی قیام گاہ ہے جیساکہ بخاری وسلم کی روایت میں مذکور ہے جہ نبی حریم صلی التّر علیہ وقم نے معراج میں حضرت ادریس علیہ السّالم سے چو تھے آسمان پرملاقات کی۔

علاوہ ازیں کعب احبار ٌوالی روایت کو تاریخی روایت تسلیم کیا جائے تواسس کی حیثیت صرف نمقل روایت سے زیادہ اور تھے منہ ہوگی ۔اور حن مفسرین نے بھی مذکورہ روایت این اپنی کتاب مین مفل کی ہیں۔ غالباً اُن کامقصد تھی نقل روایت 'سے زیادہ اور تججہ

يذبهوگا۔ والتداعلم

كامزيد نعارف ببدالش مصركا ايك قربيه منك

بیان کیاجا تاہے بعض مورضین کاخیال ہے کہ یونان کاکوئی سٹ ہر مقا۔ یونانی کوگ ابھو ُبِهِمِسِ الهِراميُّ (ما ہرین علوم نجوم کا استا ذِ اوّل *) کہتے ہیں ۔ ہرم*س یونان کا ایک شہور تنجم گزراہے۔ یونانی لوگ حصرت اورنس علیہ انسلام اور مرمس کوایک ہی جنعص کیا۔ تے ہیں۔ حالانکہ بیالیسی بات ہےجس پر کوئی دسیل نہایں۔

بعض ابل علم كاخيال ہے كر حضرت اوريس عليه است لام بابل ميں بيدا ہوئے اور وہیں جوان ہوئے۔ابتدائی عمریں حضرت شبیث بن آدم علیہٰالسلام سے عسلم <u>کہ معنی تورات اور انجیل کے بیان کروہ واقعات ۔</u> جلدادّل

ہدایت کے ج*راغ*

حاصل کیا جب سن شعور کو پہنچے نونبوت سے *سرفرا زہوئے اور اپنی قوم کی ہدایت کے لئے* جدوجهدست روع کی بیکن قوم نے ان کی سخت مخالفت کی ،البته ایک مختصر جماعت ایمان ہے آئی جضرت ادریس علیہ استیلام نے قوم کی مسلسل مخالفت سے بعد ہجرت کا ارا دہ کرنیا۔ ہے آئی جضرت ادریس علیہ استیلام نے قوم کی مسلسل مخالفت سے بعد ہجرت کا ارا دہ کرنیا۔ تومسلمان قوم يرتزك وطن تحباري كزرائحه بالبل جيسا خوبصورت سنسهر مجيركهال مليكا ؟

حضرت ادرکس علیه ات لام کی نستی اوراظمینان دلانے پر قوم نے ہجرت میں ساتھ دیا اورمصرآگئے۔ بہاں بہونمیکر بدلوگ دریا ئے نسیل کی شا دا بی سے بہت خوش ہوئے، حضرت ادرتس عليه اتسلام نے بہاں اپنے تبلیغی سیلسلے کوجاری رکھا۔ کہا جا تاہے کہ م من وقت مكم صرمي ٤٢ زبالمين بولى جانى مختين .التكرتعالے <u>نے حضرت اور نبي عليات الم</u> کو اِن تمام زبانوں کا علم عطاکیا تھا۔ ہر قوم میں انہی کی زبان کے ذریعیہ بیغام حق میجاتے مقے اِن شہروں کی تعدا دکم وہش فتوسو بیان کی جاتی ہیں۔

اسى دور بي علم فلكيات نهايت عروج پر تقاءالنّدتعالے نے حضرت اورس عليه للا

كوعلم فلكيات كيسا تفعلم طب معبى عطاكيا تضاء

رس حضرت ادريس عليالسّالم كاعليه مبارك سندى رنگ، درازقد،

خوبصورت گھنی ڈاڑھی، رنگ وروپ میں ملاحت ودکشی مضبوط بازو، عربین مونڈ سے ، حجریرا بدن ، سرگین جیکدار آبچیس ، گفتگو با وقار ، خاموشی پیند متین وسنجیده ، جلتے وقت نگامیں ييجي ، واتم الفسكر

خضرت اورئس علیدانست لام کی عمرشرلین ۸۴ سال بیان کی جاتی ہے۔ اُنگی الكوم يربيعبارت كندة تقى - الصَّابُومع الآيمان بالله يُورِث المظفر

ابيان بالتركيسا تقصبراختياد كرناكاميابي كاذربعيب

(ماخوذ از تاریخ الحکمارج ۱)

۱- خدا کی ذات اور اُسکی توحید برایمان لانا -

۲- صرف خالق کا کنات ہی کی عبادت کرنا۔

٣- عذابِ آخرت سے بیخے کے لئے نیک اعمال اختیار کرنا۔

ہم. ونیا سے بے التفاق رکھنا۔

۵- عدل وانصاف كوم معابله بي بيني نظر ركهنا.

۹۰ مقرره طربقه پرسی عبادتِ الهی بجالانا .

. ٤- ايام سيض ربرماه قمري كي سا-١١٠ و١١ تاريخ كاروزه ركهنا-

۸- جهاد کا فرنصینه جاری رکھنا۔

٩- زكوٰة اداكرنا-

۱۰ طہارت ونظا فت سے ہمیشہ متصف رہنا۔

-۱۱- هرنشه آور چیزسے پر میز کرنا۔

١٢- ندروقرباني مين الشرك نام پرجانوروں كى قرباني كرنا۔

۱۳- مجلوں اور محبولوں میں ہر موسم کی بہلی چیز صدقہ کرنا۔

اور رموز واسرار کی طرح مستعمل ہیں۔ اِن بیں بعض درج کئے جاتے ہیں۔ ۱۔ خدا کی بگیران معتول کا شکر انسانی طاقت سے باہر ہے۔

۲۔ جوعلم بین تمال اورعمل صالح کاخوام شعند ہوائیں گوجہالت سے اسباب وربدکر داری کے قریب بنرجا ناچاہئے۔ کیا تم نہیں دیجھتے کہ کاریگر آگرسینے کا ارا دہ کرتا ہے تو ۔ سوئی ہاتھ ہیں لیتاہے نہ کہ ترما۔

۳. وُنیای محلانی حسرت ہے اور مُرائی ندامت۔

۶۔ خدا کی باد اورمِل صالح تحیلئے خلوص نیتِ منٹرط ہے ۔

۔ حجوقی قسین نے کھاؤ ، اور نہ التاریخ ناموں کو نختۂ منٹق بناؤ دیمعنی قسین کھانے کہلئے ، اور نہ حجوٹوں کونسیں کھانے پر آما وہ کرو۔ کیونکہ ایسا کرنے میں تم تھی سٹر یک گناہ ہوجاؤ گئے۔

ے۔ اینے بادست ہوں کی اطاعت کرواور اپنے بڑوں کے سامنے پیت رہو۔

. ٨- بېرونت حمد اللي يې ايني زبان ترريهو ـ

. مہتروح کی زندگی ہے۔

۱۰ دوسروں کی خوش عیشی پرخسد نہ کرو،اسلنے کہ انکی پیمسٹرورزند گی چندروزہ ہے۔

ا الم جوصروريات زندگي سے زياده طالب سوا و مجمى قانع نه بوا

تاریخ الحکمار کے صفح اللہ پر ہمرس ثالث سے تذکرہ میں یہ بھی بیان کیا گیاہے کہ علماری ایک جماعت کا یہ عقیدہ سے کہ طوفانِ نوح سے پہلے و نیا میں جب قدر بھی علوم سخے اُن سب کے معلم اوّل حضرت اورلیں علیہ السّلام (ہمس اوّل) ہیں جومصر کے حصہ اعلے کے باشندے سخے اِن علمار کا یہ بھی دعوی ہے کہ فلسفہ کی کتا بول بیں جن علمی جواہر اور حرکات بخوم کا تذکر و ملتی ہے ۔ سب سے پہلے اِن کا ذکر حضرت اورلیں علیہ السلام ہمی کی زبانِ مبارک ہوا ہے ۔ اللہ تعالیٰ کی عبا دت سے لئے ہمیکوں کی تعمیر، علم طب کی ایجا و ،ارضی وساوی اشیار سے متعلق موزوں قصائد کے ورلیہ اظہار خیال بھی اُن کی اوّلیات بیں سے ہیں۔ اُن مضول نے سے متعلق موزوں قصائد کے ورلیہ اظہار خیال بھی اُن کی اوّلیات بیں سے ہیں۔ اُن مضول نے ہی سب سے بہلے طوفان کی اطلاع و سے کر بندگانِ خداکو ڈرایا تھا۔

د می حضرت اور سیملیہ استلامی بیشنگونی اسلام نے اور سیملیہ السلام نے این امت کوریمی بنایا کہ میری

طرح اس عالم میں دینی و و نیاوی اصلاح کیلئے بہت سے انبیار کرام تشریف لا نینگے اوراً نگی نمایا ن حصوصیات بہرموں گی۔

ما بیاں سوسیات بہروں ہے۔ وہ ہرا یک بُری بات سے پاک ہوں سے ،انسانی فضائل ہیں کامل وحمل ہوں سے، زمین وآسمان سے احوال سے واقف ہوں سے ،مستجام الدعوات ہوں سے ،ان کی تتعلیم کا نملاصہ کائنات کی اصلاح ہوگا۔

بتدناآدم عليه التلام مح بعرستيدنانوح عليه التلام يبل نبی ہیں جن کو رسالت سے سرفراز کیا گیا۔

رسول ایسے نبی کو کہا جا تا ہے جنگوستقل کناً ب الہی یا جدید مشریعیت دیجاتی ہے الیسے منفوس قَدسبیہ کی جملہ تعدا د (۳۱۳) بیان کی جاتی ہے۔

نبی الیسی شخصیت کو کہا جا تا ہے جنہیں الٹرنعالے نے اپنی وی اور کلام کے لئے ب کیا ہو۔ایسے نفوس قرمن یہ اپنے بنینیرورسول کی تعلیمات شے مبلغ ہوتے ہی اپر نه کونی مستقل شریعیت نازل می جانی ہے اور پیرنگاب ۔ ایسے مفوس می متعدا د ایک لاکھنگی زائد بیان کی گئی ہے۔

لحيجمسكم باب شفاعت بين حضرت ابوہر پر دھنے ایک طویل روایت بیں پرورت آنى بسى- يَا نُوْحُ أَنْتُ أَوَّلُ الرَّسُلُ إِلَى الْأَمْرُضِ (الحديثِ)

اے نوح تم زمین پر بہلے رسول ہو (جنمین قل شریعیت دی گئی)

سبيدنا إدرتس عليه انتسلام كي تيسري بُشت بين سبيدنا نوح عليه السلام كا تذكره ملتاسيء علم أنساب كے ماہرین نے بحث و تلاش سے بعد حضرت آ دم علیہ السّلام اورحضرت نوح علیہ الستالام کے درمیان ایک ہزار جیبیں سال (۱۰۲۹) کا زمانہ لکھا ہے، لیکن معض میوانخ نگارمُولفین گواس تخمینه سے سخت اختلاف ہے مران حضرات کا کہنا ہے کہ چھے یا آ کھ کیشتیں سبید نا آ وم علیہ الت لام اور سبید نا نوح علیہ السلام کے درمیان ہیں ان سے لئے اتنا طویل زبانہ مکن نہیں، بلکہ پانچ سے سان سوریال کا عرصہ قرین فیاس معلوم ان ہوتا ہے۔ یہ اس کئے کہ نیسل کی عمر آگر ایک سوسال بھی فرض کر لی جائے توجیدیا آٹھ کشپتوں میں سات آ مجھ سوسال کاعرصہ ہونا چا ہتے۔

ین میں اسکن اِن حضرات کا بہ قیاس تجھے زیادہ وزن نہیں رکھنا کیونکہ انہی مُورفین نے سیدنا آدم علیہ اسکنے متحن سے بٹیول کی عمرین نہایت طویل کھی ہیں اسکتے متحن سے بدنا آدم علیہ الت لام اور اُن سے بٹیول کی عمرین نہایت طویل کھی ہیں اسکتے متحن سے دسیدنا آدم علیہ الت لام اور سبتیدنا نوح علیہ است لام سے درمیان ایک نہار جہانی سال کا زبانہ آجا کے والٹراعلم ۔

سيدنانوح عليه التلام كاسيلسكه نسب اسطرح بيان كياكيام ميل مشيل يوج بن لاسك بن متوشاكج بن اختوع بن يارد بن مشيل ناييا بنشوش بنشد بنشد بنشد بنشوشاك بن اختوع بن يارد بن مشيل بن قيما

بن انوشش بن شيث بن آدم عليه السلام-

سیر انوج علیب لا اور شرائی میم سیر ما نوج علیب لا اور شرائی میم توایخ مقصد (جے روج قرآن کہا جاتا ہے) وُعظ و تذکیر "کے بیش نظروا قعہ کے اُن ہی اجزار تو بیان کرتا ہے جو اس مقصد سے لئے ضروری ہوتے ہیں اسلئے کہیں اختصاراور کہیں تفصیل میں یہ ہی مقصد سامنے ہوتا ہے اور یہ ہی حکمت سے ایک واقعہ کو می کئی بار سیان کرنے میں مقصو دوعظ و تذکیر ہے اس لئے ایک ہی واقعہ جا بجا بلدا ہے ۔ مہت کم ایسا ہے کہ ایک واقعہ یورا کا یورا ایک ہی جگہ آگیا ہو۔ قرآن کے اس اسلوب خاص کو ہر جگہ بیش خط

کااسم مبارک اور تذکره (۲۱۱) مجگه ملتاہے بسین اس واقعہ کی اہم تفصیلات سور ہ اعراف ، ہود، مومنون ، شعرار ، قمر، اورسور ہ نوح میں ملتی ہیں۔

اِن دمر) سورتوں کی تفصیل یہتے :-ا _ سور کا ال عسران _ ایت ۳۳

٧_ ي النساء _أيت ١٩٢

```
٣-- سورة انعام -- أيت -- سم
            ٣ - " اعراف - أيات - ٥٩ ، ٩٩
              ۵ ___ انتوب ___ أيت ___ ٥
               ٧ _ " يونس_ايت__١
م ابراهيم ايت __ه
             ٩ - " الاسراء - أيت - 14،٣
              اا -- " الانبياء --- أيت --- ا
               ١١ ١ الحج __ أيت __ ٢١
               ١١ ١٨ المؤمنون ___ أيت ____
               ١١-- " الفرتان ___أيت___
           ١١٢٠١٠١٠٥ الشعراء ___أيات ___1
               ١٧ --- العنكبوت --- أيت ---
                ١١ ١ الاحذاب أيت ١٠
             ١٨ - ١ المصّافّات ___ أيت ـ المصّافّات ___ ١٨
               ١١- ايت ١١٠ - ١٩
               ٢٠ ١٠ المؤمن - أبات - ٢٠
                ۲۱ س الشورى ___أيت____
                ۲۲ س تیت ____ایت ____۲۲
                ۲۲ س الدّاريات آيت ٧٠ ٢٣
                ٣٧ -- " النجم -- أيت -- ٢٧
                ٢٥ / القسر ايت _ ٩
                ٢٧ ___ العديد __ أيت ___٢٧
                 ٢٠ / التحريم اليت --- ١٠
           ٢٨ - " سنوح - آيات - اتا ١٨٦ رمكم
```

الوئح عليه التيلا أنحى دعوت أؤرقوم حى مخالفت

اورستيدنا آدم عليبرانسلام سے درميان ایک ہزار سال کا زمانہ محزرگیا ،اس طویل عرضے میں انسانی آبادی زمین رکھیل کی ختی ، بیشترانبیار صلحین نے سید نا آدم علیاسلام ى دَعوت وْنبانغ كوجارى ركها بخيا بسنيدنا آدم عليه السّلام كى بنيادى تتعليمات ميں ' " توحید" کی دعوت و بینج سے اہم حیثیت رقصتی ہے۔ یہ کی کام سید ناشیت علیہ الت لام اور ستیدنا ادریس علیہ ات لام اور دیچرمصلحین نے بھی انجام دیاہے لیکن اس طویل زمانے

مِن شنیاطین کے بہکانے سے تئرک وٹبت پر تی بھیل گئی تھی ۔ ستیرنا نوح علیہ انسلام کی میں منسیاطین کے بہکانے سے تئرک وٹبت پر تی بھیل گئی تھی ۔ ستیرنا نوح علیہ انسلام کی بعثت سے پہلے بہلے یک تقریباً تمام قوم بلکہ ایک قول کے مطابق روئے زمین پر منٹرک

وبت بیرتی نے ندنہب کی شکل اختیار کولی تھی ،اور انسان توحید خالص سے تیسز نا آشنا ہو چکے تھے۔ اللہ واماری جگہ سینکوں بتوں نے معبودوں کاروب اختیار کر کیا تھا، اِن

یں پانچے بت' بڑے خدا" قرار پانچے تھے ۔اورساری قوم اپنی زندگی کے تیل و نہار میل نہی

آخر کارالٹر تعالے نے اپنی صنتِ قدیمیہ سے مطابق انسانوں کی رہنمانی و ہدایت کے لئے اُسی قوم سے سیدنا نوح علیہ استلام کومبعوث فرمایا سیدنا نوخ علیہ استلام نے اپنی قوم کو تو خیدخالنس" اور اللہ واحد کی عبادت کرنے کی تلقین مشروع فر ماتی'، قوم کا جا بل طبقة حصرت نوح عليه التلام كوستانے آورز دوكوب كرنے كے در بے بہوگيا ، إور امرار وروسارِ قَوَم نے تکذیب و تحقیر کاشعارا ختیار کراییا ،ان اہلِ دولت کا بذا دّعا مختا کہ نوح کنہ تو دولت و ٹروت میں ہمہے بڑا ہے اور منہ قوت وطاقت میں ہمارا ہمسرہے ۔اور منہ وہ انسانیت سے بلند کوئی مرتبہ رکھتا ہے ، تھیرہم تحیوں اسکی اطاعت کریں اورکس وجہ سے

أس کو طراسمجھیں ؟ یہ لوگ جب مجھی کمزور وضعیف ا فرا د کوسسید نا نوح علیہ التلام کے اردگرد دیجھتے تو نہایت حقارت سے تھتے کہا ہے نوح نیرے ساتھ توصرف ایسے ہی لوگ ہیں جونہ دو وعزت رکھتے ہیں نہ قوت ونٹوکت اور نہ عقل ورا نے میں ہم سے بہتر ہیں۔مھلا ہم اِن عمر ک

آدمیوں کا ساتھ کیسے ویں ؟

نوح علیہ اتسام انہیں افہام فہیم سے ذرایے حب قریب کرنا چاہتے تو پیٹکٹرین کی جاعت یہ جواب دیتی کہ احجا پہلے تم اپنے آ دمیوں کو دور کروہم اِن سے قریب آنا نہیں میاستے اسمیں ہمادی توہین ہے۔ اسکے بعد ہم تمہاری بات سُنیں سے۔

ستیرنانوح علیہ التعام انفین کمبی تو یہ جواب دیے کہ ایسائیمی نہیں ہوسکہ یہ التدرے خلص بندے ہیں۔ اگر ہمی انفیں اپنے سے دور کر دوں تو فد اکے عذاب ہیں تمہارے سا تقدین بی ما فود ہوجاؤں گا۔ یہ لوگ التدریر ایمان لائے ہیں اور اسس کی دضاجوئی کے لئے میراس اعقادیتے ہیں۔ التدری ہاں افلاص واطاعت کی قدرہے، دولت وطاقت کوئی معیار نہیں دکھتے۔ میں تمہارے باس التدکا بیام لیکر آیا ہوں، نہیں غیب دائی کا دعوی کرتا ہوں اور نہ فرسٹند ہونے کا ، بین توالٹہ کا بیندہ اور اسکا رسول ہوں بصیحت کا دعوی کرتا ہوں اور نہ فرسٹند ہونے کا ، بین توالٹہ کا بیندہ اور اسکا رسول ہوں بصیحت وہرایت کرنا میرا کا م سے ، یہ تمزور ونا وارا فراد جو سیخے دل سے التہ ریرا یمان لائے ہیں تمہاری طسرح تمہاری نہیں ، مالانکہ یہ اچھے یا بر سے ہونے کا معیار نہیں، اللہ بی بھا ہیں وہ خص دولت وطاقت نہیں، مالانکہ یہ اچھے یا بر سے ہونے کا معیار نہیں، اللہ بی بھا ہیں وہ خص قابل عزت ہے جو اس کی اطاعت نوتا ہوا ورجس نے بی کی راہ اختیار کی ہو۔ قابل عزت ہے جو اس کی اطاعت نوتا ہوا ورجس نے بی کی راہ اختیار کی ہو۔

سیدنانوج علیه استلام کی اس بلیغ نبلیغ پر قوم کے سر داروں نے شہر بدر کردیے کی دھمکی دی اسپرسیدنا نوج علیہ استلام نے بڑے کر و قارانداز میں قوم کو نیا طب کیا۔
اے قوم میں اپنی اس خدمت پر مذہمہا رہے مال و و ولت کی نوا ہش رکھتا ہوں اور نہتم میں جا ہ ومنصب کی ہوس رکھتا ہوں۔ میری نصیحت و خیر خوا ہی کا اجرالٹر ہی کے ہاں معفوظ ہے اور وہی بہترین قدر دال ہے۔

مستیدنانوح علیهات لام کی مخلصانه دعوت اور فوم کی تھلی عداوت کا تذکرہ جو ''اریخ رسٹند و ہدایت کا زریں باب ہے۔سور و نوح سور وُاعراف اورسور وُ ہو دہیں اسطح منقول ہے۔

اَنَّا أَمُ سَلُنَا نُوْحًا إِلَىٰ تَوْمِهِ أَنُ آنُذِ مُ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنُ يَانِيَهُمْ عَنْ أَلْذِ مُ عَنَابٌ أَلِيدُهُواعُ رسوره نوح آيات مِلِتاس،

فرا فی مضمون ہم نے نوح مکو اسک قوم می طرف بھیجا راس ہدایت سے ساتھ) کہ

ہایت کے چراغ ہایت کے چراغ

اپنی قوم کے لوگوں کو خبر دارکر دیے قبل اسکے کہ اُن پر در دناک عذاب آجائے۔ نوح کئے کہ اسے میری قوم کے لوگو ، بیں تمہارے لئے داضح طور پر خبر دار کرنے والا رسول ہوں۔
کہ تم الٹرکی بندگی محروا ور اُس سے ڈروا ور میری اطاعت کرو۔ وہ نمہارے گناہ معالی کر دے گا اور تم کو ایک مقررہ بدت تک باقی رکھے گا ، بیشک الٹرکام غررہ کر دہ وقت جب آجا تا ہے تو مجر طالا نمہیں جا تا . کاش تم جانتے ہوتے ؟

كَتَنُ أَنْ سَلْنَا نُونُمًّا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يْقُومِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمُ

مِنْ إِلْمِ غَيْرُهُ الح (اعراف) يات عدد "اسلا)

۔ سی سے آہم نے نوعے کو اُس کی قوم کی طرف بھیجا، اُس نے کہا اسے میری قوم کے لوگو، الٹری بندگی کرو، اُسکے سوائمہار اکوئی معبود نہیں، میں تمہارے حق میں ایک ہولناک دن سے عذاب سے ڈرتا ہوں ۔

قوم تے سرداروں نے جواب دیا ہم کونو پرنظراتا ہے کہ تم صریح محمراہی ہیں

منبت لأنهوبه

وَ لَقَنْ آمُسَلُنَا نُوعًا إِلَىٰ قَوْمِم إِنِّ لَكُمُ نَذِيْرُ مُّبِينًا الْحُ

(ہو د آیات م<u>۲۵</u> تا <u>۱۳</u>)

ہم نے نوم کو اُن کی قوم کی طرف بھیجا انوح کے کہا) میں تم لوگوں کو واضح طور پرخبر دار کرنے والا ہوں. الٹر کے سوائسی کی عیادت نہ کر و، بیشک میں تم پر ایک در د ناک دن کے عذا

بدایت کے چراغ

کااندیشہ کرتا ہوں۔

الدیسے مرنا ہوں۔
سوائن کی قوم میں جو کا فرسر دار سے کہنے گئے ہم تو تم کو اپناہی جدیا آدمی دکھتے
ہیں اور ہم دکھتے ہیں کہ تمہاری ہیروی انھیں لوگوں نے کی ہے جو ہم میں بالکل ذکیل
ہیں اور وہ مجی محض سرسری دائے سے (پیروی اختیار کرلی ہے) اور ہم تم لوگوں کو
اپنے سے زیادہ فضیلت والا بھی نہیں یاتے ، بلکہ ہم تم کو حکوٹا سمجھتے ہیں۔
نوح شنے کہا اے میری قوم مجلا یہ تو تباؤ کہ آگر میں اپنے دب سے سید سے داستے
پر ہوں اور اس نے اپنے پاس سے مجھے رحمت عطافہ بانی ہو مجروہ تم کو مذہوجی ہوتو
کیا ہم اُس کو تم پر تصویب دمیں جب کہ تم اُس سے نفرت سے کے جلے جاؤ۔
اور اسے میری قوم ہیں تم سے اس پر کچھ مال بھی تو نہیں مانگنا میرامعا وضہ
توصرف الٹرکے ذمہ سے اور میں اُن لوگوں کو (اپنے سے) دور کرنے والانہیں جو ایمان
لے آتے ہیں وہ اپنے دب سے حضور جانے والے ہیں لیکن ہیں دیچھا ہوں کہ تم لوگ

، اور اے میری قوم!اگرمیں اِن لوگوں کو دھتکار دوں توخدا کی کیڑے مجھے کون سجائنگا؟ تم لوگوں کی مجھ میں اننی بات بھی نہیں آتی ؟

اور میں تم سے یہ نہیں مہتا کہ میرے پاس الٹرکے خزانے ہیں ،اور نہ ہیں ہہ مہتا ہوں کہ بیں غیب کاعلم رکھتا ہوں ،اور نہ بیں یہ کہتا ہوں کہ بیں فرسٹ نہ ہوں ،اور نہ بیں یہ کہتا ہوں کہ جن لوگوں کو تمہاری آنتھیں حقارت سے دکھیتی ہیں انتھیں الٹرکوئی مجلا نہ دے گا۔الٹران کے دلوں کوخوب جانتا ہے۔اگر میں الیسا کہوں توظا لموں میں میراشارہوگا۔

بے بیں اور فریاد اس وجہ سے حتی کہ قوم رحمت اللی کی آغوست یہ آجائے اور اُس عذاب سے محفوظ ہوجائے جوانہ بیار کرام سموجوٹلانے پرعموباً آیا ہے مسئر قوم پر اور اُس عذاب سے محفوظ ہوجائے جوانہ بیار کرام سموجوٹلانے پرعموباً آیا ہے مسئر قوم پر اس خیر خواہی کا کچھ بھی اثر مذہوا بلکہ بغض وعناد نے ساری قوم کواندھا بنا دیا تھا۔ یہ لوگ سید نانوح علیہ الست الم اور اُن کے ساتھیوں کی ایز ار رسانی کے درہے ہوگئے۔ اور ایک شیطانی تحریب اس طسیح شروع کی کہ جہاں کہیں بھی سیدنانوح علیہ الست الم ایک شیطانی تحریب اس طسیح شروع کی کہ جہاں کہیں بھی سیدنانوح علیہ الست الم

ا بنا کلام حق سناتے وہاں یوگوں کو یا بند کیا جا تا کہ اپنے کانوں میں اُنگلیاں رکھ لیں یا بھر انيخ چېروں پرکیڑا ڈال کر گزر جائین تاکه نوح میجان تیب نه سخیں ،اور اسکے ساتھ ساتھ قوم سے افراد کوسٹر داروں نے بیمی تاکید کرنی شرم عنج دی کے دیکھوانے پایج بڑے خرارا والیو ہر رہر کرنہ محولانا یہ ہی ہمارے سبحات دہندہ ہیں اور انہی سے ہماری زندگی قائم ہے۔ بة دنا نوح عليه التلام ا ورقوم تى تيشيكش طويل عربسة تك جارى البي جسكا ذكر قرآن عكيم بين مختلف مفايات برآيا ہے۔ سورہ عنكبوت بيں اِس طويل مختصح نظر كا عرصه سالا مطے نوسو سال بیان کیا گئیا ہے بسور ہ شعرار میں یہ وضاحت ہے کہ حضرت نوحَ عليه إلت لام كوستكسار ترديني تي معنى ومكنى وي تني تعنى سبيدنا نوح عليه الت لأم كوآخرى قطعى طور 'برجمثلا دياكيا -بيدنانوح عليه السّلام نے اللّه رتعالیٰ سے فريا د ی کرمیری قوم نے مجھے حصلا دیاہے .اب میرے اور ان کے درمیان قطعی فیصک فرمادے - ابسالحیصلہ کہ حق اور باطل واضح موجائے۔ قرآن تحیم کی آیات ذیل انہی مضامین پرتمل ہیں۔ وَاثُلُ عَلَيْهِ هُ نَبَا مُنُومٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ الْمُ الْإِلْسَ آيات مك الماك

ون اے نبی اپنی قوم کونوع کا قصہ مناتیے اُس وقت کا قصہ جب کہ نوع نے اپنی قوم سے کہا تھا اے میری قوم آگرمیرا تمہارے درمیان رہنا اور التّٰري آیات بڑھکرسنانا تمہارے نتے نا قابلِ برداشت ہوگیا ہے تومیرا بھروسہ التّٰر پرہے بتم اپنے سب مھیرا سے ہوئے شریکوں کولیکر ایک متفقہ فیصلہ کرلو، اور جومنصوب تنهارے سپشین نظرہے اس کو خوب سوچ تبجولو تاکہ اُس کا کوئی بہنو تنہاری نگاہ سے پوشیدہ نہ رہنے یا کے بھیر میرے خلات اُسکوعمل بیں لے آؤا ور مجھے ہر گز فہلت نہ دو۔ لیس تم نے میری نصیحت سے منھ موڑا (تومیراکیا نقصان کیا) میں تم ہے تھی اجر کا طلب گار نہ مخت مبراا جرتوالتٰدے ذمہ ہے اور محصے ختم دیا گیا ہے تہ بیں مسلمان بیٹر رہوں ، سوامفوں نے نوخ کو حصلایا بس ہم نے نوم کو اور اُن لوگوں کو جو ان سے ساتھ کشتی میں نقے بیالیا اور انہی کو زمین کا جانٹ بن بنایا اور ان لوگوں کوغرف کر دیاجنھوں نے ہماری باتوں سو حشلایا مقا، بس دیچه نوجنعین خبر دار کیا گیا نخا اُن کا کیا انجام ہوا ؟

سورة مومنون میں اس طرح بیان کیا گیاہے۔

وَلَقَكُ أَرْسَلُنَا نَوْحَا إِلَىٰ تَوْمِم فَقَالَ الْ رَمومنون آيات عبد المدين

اورہم نے نوح کو اُن کی قوم کی طرف پنیمبر بناکر بھیجا، سوا عفوں نے کہا اے میری قوم اللّٰہ کی عبادت کرو، اُسکے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں، کیا تم اللّٰہ سے نہیں ڈرتے؟
اُن کی قوم کے کافر سر داروں نے کہا (نوح تو) تمہاری طرح ایک بشرے ۔ وہ چاہتا ہے کہ تم میں بڑائی ماسل کرے اور اگر اللّٰہ چاہتا تو اس کام سے لئے فرست توں کو بھیجتا۔ کیونکہ یہ بات ہم نے اپنے بڑوں ہیں جب کو جنون ہوگیا ہے ۔ لہذا ایک خاص وقت تا کہ انتظار کرلو۔ نوح منے عرض کیا اے میرے دب میری مدو فرمائیے جس بات پر اُنھوں نے محمدے حسلانا ہے۔

ب معید ہے۔ سورۂ شعرار ہیں سیدنا نوح علیہات لام کی خیرخواہی اور قوم کی دھسکی میں طرح پران کے محمی سر

اس طرح بيان كُرِّمَى سيء كَنَّبَتُ قَوُ مُرْ نُوْجٍ إِلْكُرْسَلِينَ - إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمُ نُوْجٌ الْح (الشعرار آیات مصل ماسلا)

نونخ کی قوم نے رسولوں کو جھٹلایا۔ جبحہ اُنکے دبرا دری کے ، مجانی نوخ نے کہا۔ کیاتم دالٹرسے ، نہیں ڈرتے ؟ میں تمہارا امانت دار رسول ہوں ۔ سونم الٹرسے ڈروا ورمیراکہا مانو۔

اور میں تم سے کوئی برلہ نہیں مانگتا ،میراصلہ تورم العالمین سے ذمہ ہے۔الٹر

ہے ڈروا ورمیری اطاعت کرو۔ وولوگ تھنے گئے کیا ہم تم کو مان لیس البی صورت ہیں جبکہ کم درجہ لوگ تنہارے است

ت میں ہے۔ نوخ نے کہا اِن کے کام سے مجھے کیا بحث ۔ اِن سے طاب کتاب لینالبس الٹرکا کام ہے ، اگر نم سمجھو۔ اور ہیں ایمان والوں کو دا ہے سے ، وُ ورکرنے والانہیں ہوں ۔ میں توصاف صاف درانے والا ہوں۔ وہ لوگ سحینے گلے اے نوح ء اگر تم بازیذ آئے توضر ورسکسارکر دیئے جاؤگے۔ نوع نے دعائی اے میرے رب میری قوم نے مجھکو جھٹلا دیا ہے۔ مریس سے اور ان سے درمیان ایک فیصلہ کر دیجئے ، اور مجھکوا ورجو ایمان سوآپ میرے اور ان سے درمیان ایک فیصلہ کر دیجئے ، اور مجھکوا ورجو ایمان

لائے ہیں اُن کو سنجات دید بیخے۔ تو ہم نے اُن کو اور جو اُن کے ساتھ معمری شقی بیں سفے سنجات دی۔ میراسے بعد ہم نے باقی لوگوں کو غرق کر دیا۔ اسمبن بڑی عبرت ہے ، اور اکثر لوگ ایمان نہیں لاتے۔

ا در بیشک آپ کارب زبر دست مهر بان ہے۔ سور نا عنکبوت میں اُس مدن کو بیان کیا گیا جوستید نا نوح علیہ الت لام کی دعوت سور نا عنکبوت میں اُس مدن کو بیان کیا گیا جوستید نا نوح علیہ الت لام کی دعوت

بَلِيغُ كَازَمَانُهُ مَ مَا نُونُكَا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَمِثَ فِيهِ مُ اللَّفَ سَنَةِ إِلَّا خَمْسِينَ وَلَا خَمْسِينَ وَلَالْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ وَلَهُم فَلَمِثَ فِيهِ مُ اللَّهِ مَا لَفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ

عَامًا الإ دالعنكوت آیات مثلا مشل) اور سم نے نومخ کو اُن کی قوم کی طرف بھیجا ،سُو و ہ اُن بیں بیجاس کم ایک سزار سال رہے ۔ مچران کوطوفان نے آ د با یا ،اور و ہ بڑے ظالم لوگ تھے ۔ میں سم نے نوح کو اور شتی والوں کو بچالیا ،اور سم نے اس واقعہ کو نمام جہان

والوں کے لئے موجب عبرت بنایا۔ سور قاصافات میں سبید نا نوح علیہ استلام کی بارگاہ الہی میں دُعا کا اس طرح استیقیال کیا گیا۔

وَلَقَانُ نَا دَانَا نُوْحُ فَلَنِعُمَ الْمُجِيبُونَ الْح

(الصافات آیات مهد تا مهد)

اور ہم کونوع نے بیکارا پیٹو ہم خوب فریاد سُننے والے ہیں۔ اور ہم نے ان کو اور اُن کی بیروی کرنے والوں کو بڑے بعاری غمسے سخات دے دی۔ اور ہم نے ان کی اولا دکو باقی رہنے دیا۔ اور ہم نے ان کے لئے آنے والے لوگوں میں یہ بات رہنے دی۔ کہ نوح میں برسسلام ہو تمام عالموں میں۔ ہم اہل اخلاص کوابسا ہی صلہ دیتے ہیں۔

بیشک وہ ہمارے ایمان داربندوں میں سے ہے۔ بھرہمنے دوسروں کو دیا۔

اورسور ہ نوخ میں ہسیدنا نوح علیہ الت لام کی پوری دعوت وتبلیغ کا اس طرح نذکرہ کیا گیاہے۔

تَكَاكُونَ رِبِّ إِنِي تُدَعَوُثُ قَوْمِي لَيُلًا وَ نَهَاسًا الْحِ دِنُوحِ آيات عِنْ اسْتِ

نوځ نے دعا کی اہے میرے رب میں نے اپنی قوم کو دن رات دعوت دی ہے۔

محومبری دعوت نے اُن کے فرار ہی ہیں اصا فرکہا۔

اور جب بھی میں نے اُٹ کوبلایا تاکہ تُو ان کومعان کر دیے ،اُمفوں اپنے کانوں میں اُٹکلیاں رکھ لیس اور اپنے کپڑوں سے منھے ڈھا نک لیا اور (اپنی رونش پر) اڑکئے اور رہا تھے رکے ا

> تنجير من نے اُمخيب بآوا زبلند بلايا۔ تنجير کھول کھول کرعلی الاعلان کہا اور بالکل خُفيد کھی سمجھا يا۔

مجير ميں نے کہا کہ معافی چا ہوا ہے رب سے بينک وہ بڑا بخشے والاہے. وہ تم پر اسمان سے خوب بارش برسائے گا۔

اورتہائی مال واولا دسے نوازے گااور تہارے گئے باغ پیدا کر بیگاا ور تمہارے

، حینہ میں کیا ہوگیا کہ تم الٹرکے لئے کسی عظمت کا اعتقاد نہیں رکھتے ؟ حالا تحداس نے تمہیں طرح طرح سے بنایا ہے۔

کیانم دیکھتے نہیں کہ النگرنے کس طرح سات آسمان تہد بہ تہد بنائے ہیں ؟ اور اُن میں چاند کونور اور سورج کوچراغ بنا یا۔

اور الليرنے تمبين زمين سے عجيب طرح پيداكيا۔

مچھروہ تمہیں اسی زمین میں والیں کے جائیگا اوراسمیں سے تم کو تھیر داچانک) کال کھڑا کرے گا۔ اورالله نے تمہارے لئے زمین کوفرش بنایا ہے ۔ تاکہ تم اُسکے کھلے را

نوح نے کہاا ہے میرے رب اُنھوں نے میراکہنائیبیں انااور ایسے لوگوں کی پیروی کرلی جن کے 'مال واولا دنے اُن کو نقصان ہی زیادہ مینجا ۔

اور حبیوں نے بڑی بڑی دخفید، تدبیر س کیں۔

نه و ترکو نه سُواع کو اور نه کیغوث اور نه میخوق کو اور نه نسرکو اور اِن سرداروں نے مہت سارون توتمراه كردبا-

اور اے اللہ ظالموں کی تمراہی اور بڑھا دیجئے (ٹاکہ آپ کا عذاب اُنہیں جلد کیڑیے)

المخول شابي سيدنانوح عليه السلامي بياوث نصيحت وخير خواسي انتهاكومېنج تنئ اور ہروہ عنوان جوہدایت ونصیحت تحیلئے در کار تھا باتی ندر ہاتو حید کے دلائل اور حجنت جمیل پاسٹنے ، قوم سے پاس اب ایسا کونی عدر باقی ندر باجوبت برستی کی تائید میں سپیش کیا جا سکتا بھا الخرکار اُن کی قوم نے متفق بوكرسيدنا نوح عليه التلام سے مطالبه شروع كردياكدبس أب آب اپني ٰبات نتم تیجئے. ہم بہت سُن چیے، اپنی وہ دھمکی عملاً پوری کر دیجئے جو عذاب کی شکل ہیں ہم يرآنے والى ہے۔

ستدنانوح عليه استلام نے قوم کی پرجرأت اور الشرعزومل سے بیے خوفی ويجهر كهيرنهايت تخمل سيتمجها ياكهالتلامتعالي لحب جاسع كاتوبيهم سوجائ كأملين كي تم كوميري نصيحت كافي نهيس ؟ جبحه مين تمهارا خيرخوا ه او ومخلص بهول ؟

ر ما عذاب كالانامبر ي قبض كانهي ب- التدتعالے نے تو مجھے صرف اپنا رسول بناكرتمهارے پاس بھیجا ہے۔ اسی سے وست قدرت میں مجرموں كومعاف كرنا يا ہلاك سرنائے، نیکن یادرکھوجب وہ وقت آجا کے گاتو تھے کسی کے ٹالے نہ ملے گا۔ آیاتِ ذہابی يهى تذكره موجود م قَالُوا يَا نَوْحُ قَدُجَا دَ لُتَنَا فَأَكُ ثَرَتَ حِدَالَنَا الْح

(مود آیات عتلاتا معلا)

فرانی صنمون قوم نے کہا اے نوخ تونے ہم سے جھگڑا کیا اور بہت جھکڑ دیا ، اور خوتونے ہم ہے (عذاب کا) وعدہ کیا ہے وہ بے آ ؟ اگر جُتو

سچوں میں ثنا مل ہے۔ نوح کئے کہا اگر الشر جاہے گا تو وہ اُس عذا ب کو بھی صرور لے آئیگا ، اور تم اسكوعاجر كردينے والے مہیں ہو۔

اباً گرمین نمهاری نیبرخواهی کرنانهی جا هون نومیری خیرخواهی نمهین کوئی نفع نہیں دی حتی جبکہ (تمہارے ابنے فیصلے سے)الٹرہی نے تمہیں مطلکا دینے کاارا وہ کرلیا ہو۔ وہی تمہارا رب ہے اور اُسی کی طرف تمہیں لوٹا یا جائیگا۔

ستيدنا نوح عليهالت لام قوم كي بدابت واصلاح سےجب ناأميد ہوگئے اور اپنی سے ارمی جدوجہد کضتم کر چیجے . قوم کی ہٹ دھرمی اور عِنا دجب اینی آخری منزل برآگئی اور ایک طویل زمانه رجسکیٰ مدت فرآن صراحت کے مطابق ساڑھے نوسونیال کے گزرگیا، تاریخی روایات سے مطابق اس دراز مدت میں استی سے کچھ زائد ا فراد نے ایمان فنبول کیا۔ سستید نا نوح علیہ السّلام سخت ملول وآزر د ہ فاطر منظے. الترنعاكي فيتستى دى اورحضرت نوح عليه التلام كواطلاع دى تنى كراب آب كا كام بورا ہو جیکا ہے ۔ اس قوم میں اصلاح قبول کرنے والا کوئی نہیں رہا ،اِن پر الٹر کا وہ فیصلہ جاری مہونے والاہے جوسٹرشس و باغی قوموں کے لئے کیا جاتا ہے۔ حضرت نوح علیہ انت لام اس اطلاع کے بعد بارگاہ الہی میں دعا کے لئے ہاتھ

أمظائے اور البسی دُعا کی جو منشارالہٰیٰ کے مطابق مقی اور سٹا پدطبقہ انبیار ہیں کسی نبی نے نہ کی ہو۔

ے رب اِن کا فروں بیں سے کوئی تھی زمین پر بسنے والا نہ چیوڑ ،آگر تونے اِنکو حصورٌ دیا تو یہ تیرے بندوں کو مگمراہ کر دینگے ،اور اِن ٹینسل سے مجی جو پیدا ہو گاہے پیکار ا ورسخت کا فرہی ہوگا۔ (سورہ نوح آیت علا، مند)

علاوہ ازیں حضرت نوح علیہ انست لام کی یہ ڈعاکسی بےصبری یامذ ہاتی بنار ہر

بدايت مح جراغ

نہ مقی بلکہ اس آخری کمی ایک مخلص مصلح کی زبان سے بے ساختہ نکل بڑتی ہے جورشدو ہوایت کی ساختہ نکل بڑتی ہے جورشدو ہوایت کی ساختہ نکل بڑتی ہے جورشدو ہوایت کی سال اور انتھاک کوشش کرتا رہا ہوا ور قوم اُسکو قبول نہ کرنے پر محرب ہو جی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہو ایسے ہی ہے جدیا کہ حضرت موسیٰ علیہ استام نے فرعون اور قوم فرغون کے حق میں یہ دعا کی مقی (ور اصل یہ الشر بتعالے کا غیبی احت رہ وہا ہے) اسے پر ور دگار اِن کے مال غارت کر دے اور اِن کے دلوں پر مہر نبت کر دے ، یہ ایمان مذلا ئیں گے جب تک سمحہ فرد دناک عذاب اپنی آنکھوں سے منہ ویچھ کیں۔

الترتعان نے اسکے جواب میں بدارت و فرمایا تھا۔

اعموسیٰ تمباری وعا قبول کرلی گئی (یونس آیات مد، عد)

مہر مال مصلی نہ فطرت ، اور خدا و ندی شنت پرغور کیا جائے تو معلوم ہوتا ہے کہ جب
سی بنی کا پیغام اسمی فوم کو پینچ جا تا ہے اور آخری حجت پوری ہوجاتی ہے تو بھرالیسی قوم کو
صون اُس مدت کے مہلت ملتی ہے جب تک کہ اِن میں کے مجھ نیک وصالح آدمیوں نے کل آنے
کا امحان رہتا ہے ۔ جب اس قوم مے صالح افراد تکل آتے ہیں اور صرف فاسد عناصر ہی کا مجھ باتی رہ جا تا ہے تو بھراُس قوم کو مزید مہلت نہیں دی جاتی ، عدل وانصاف کا نقاضہ بھی یہ ہی کہ ایس ہو مور پر دہ کہ دار تو کو کہ کو میں ہو ہاتی ، عدل وانصاف کا نقاضہ بھی یہ ہی کہ ایسے بے صلاحیت اور بدکر دار تو کو کو تو می جاتی ، عدل وانصاف کا نقاضہ بھی یہ ہی کہ ایسے بی مسلاحیت اور بدکر دار تو کو کو تھی ہو گئے۔
کو کو لیک و خواب نہ کر دیں۔ ایسے فاسد عناصر پر دھم کرنا اور اُنھیں یوں ہی جھوڑ ہے دکھنے ساری انسانیت پڑھم کرنے سے مراد ون ہوگا۔ مجھر حضرت نوح علیہ الت الم کو وی الہٰی نے مراد ون ہوگا۔ مجھی بتلادیا تھا کہ اب جو کوگ باتی ہیں وہ ایمان مہیں اس طرح استغانہ پیش کیا۔
مجھی بتلادیا تھا کہ اب جو کوگ باتی ہیں وہ ایمان مہیں اس طرح استغانہ پیشن کیا۔ حضرت نوح علیہ الت لام نے بارگا و الہٰی میں اس طرح استغانہ پیشن کیا۔

قرافي صفرون وقال نوع من الكافورين ا

اورنوح منے کہا اے میرے رب اِن کا فروں میں سے کوئی زمین پر بسنے والا

نبر جیوڑ، گرتونے اِن کو چیوڑ دیا تو یہ تیرے بندوں کو گمراہ کر دیگے ،اور اِن کی نسل سے جو معبی پیدا ہوگا برکار اور سخت کا فرہی ہوگا ۔ ا ہے میرے رب محصکوا ورمیرے والدین کوا ورہراُسٹخص کوجومبرے گھسر میں مؤمن کی حیثبیت سے داخل ہواہے اورسب مؤمن مردوں اورمومن عورتوں کومعاف فرمانے' اور ظالموں کے لئے بربادی سے سوانسی چیز میں اضافہ نہ فرما۔

سفیبند اور قوم کا ایے تنہزا سیدنانوح علیہ السلام کی دعا قبول ہوگئی وی البی نے آگاہ کردیا کہ اسٹرکا وہ قانون جسنرا

نا فذكر ديا كيام جوسركش و باغي قوموں كے لئے ہواكر تاہے.

قبل اس کے کہ وہ فیصلہ آجائے حضرت نوح علیہ السلام کو ہدایت گی گئی کہ اپنی اور مومنین مخلصین کی بیقار وحفاظت کے لئے ایک ایسی شنتی تیار کرلی جائے جو ہم یہ گیرطو فان ہیں نجاست وسیلامنی کا ذریعہ نے !

کاٹ کر لاتے اور شقی سازی کے لئے ون رات کام ہیں مشغول ہوگئے۔
یہ ایک عجیب وغریب قسم کا کام تھا وہ قوم جوانجام سے بے خبر تھی اور جس کو فوح علیہ الت کام زاق اور جس کو فوح علیہ الت کام ناق اور ہی ہوں ہور یا تھا۔ یہ لاگ اس بھین سے قاصر بھے کہ ساحل ہمند کو مصیل یہ کام نہایت مفتحہ خیز معلوم ہور یا تھا۔ یہ لاگ اس بھین سے قاصر بھے کہ ساحل ہمند کے سے مہت دور خشکی اور صرف کی پر ایک بہاڑ جسی شنی میوں اور کیسے جلے گی ؟ اِنکے خواب و خیال میں میں یہ بات نہیں آرہی مقی کہ چند روز بعد اس زمین پر بہت ی طوفانی موجوں ہیں خیرو عافیت کے ساتھ حضرت نوح علیہ الت لام اور ان سے اصحاب کو نجات موجوں ہیں خیرو عافیت کے ساتھ حضرت نوح علیہ الت لام اور ان سے اصحاب کو نجات دے گی اور قوم کا ایک ایک فرد اس ہم گیر طوفان میں غرق ہوکر رہے گا۔

وہ لوگئے شخصی سازی کو حضرت نوح علیہ انتسام کی دیوانگی کا ایک اور ثبوت قرار دے رہے ہفتے اور قوم کے افراد سے تمہدرہے بھتے کہ نوئے کی عقل بھی جاتی رہی ۔ یہ زمین پر تخشتی چلانے کی تیاری کررہے ہیں۔اے قوم ابتو بقین کرلو کہ نوئے کی ساری باتیں ایسے ہی بے تقلی کی ہیں نعوذ بالٹرمنہ۔

خضرت نوح علیه استگام اوراُن کے اصحاب نہایت متانت وسنجیدگی سے قوم کے سرداروں کوجواب دیتے کہ وہ وقت قریب آر ہاہے جب خود تمہارا مٰدا ق آڑے گا۔ جلداول

آج ہم پرمنس لوکل ہم تمہاری سنسی کاجواب دیں گئے۔ ایک ایسا عذاب آر ہاہے جو تم کو ہرطرف نے تھیے گے اور تم کو بہاڑوں کی بلندی بھی نجات نہ دے سکیگی۔ آیات زیل اسی صورت حال کو بیان کررسی ہیں۔ وَأُوْجِي إِلَىٰ نُوْجِ أَنَّ مُن لَنُ يُؤْمِنَ مِنْ قُوْمِكَ إِلَّا مَنَ قَدُ أَمَنَ الْ (مود آیات عسی تا عص)

ممون اور نوع پروی کی تن که جولوگ ایمان لے آئے وہ لے آئے۔ اب اِن میں سے سو فی دوسرا ایمان لانے والانہیں ،لیس اِن کی حرکا ت برغم ناکرو۔ ہماری نگرانی میں ہماری وی سے مطابق سنتی تیار کرلو، اور اب مجھ سے آنج بار ہے میں گفتگو مذکرو، بلات بہ یہ لوگ غرق ہونے والے ہیں۔ نوخ كنشتى بنارہے منے اور أبكي قوم كے سرداروں بيں سيكسى جماعت كا اُن كے پاس سے گزرہو یا تو نوع كا مذاق اُڑا لتے حضرَت نوع اُس سے كہتے اگرتم ہم پر ہنتے ہو ہم بھی تم پرہینگے عنقریب تم جان لوگے کہ کس پروہ عذاب آئے گا جو اُسے دسوا كرديگا اوركس پروه دائمي عذاب اتر يرك كا؟

عداث كى آمكر الترتعالے كى حفاظت ونگرانى میں سفینہ تیار ہوگیا، تاریخی روایات ور ب کے مطالق پرسفینہ مین سوگز لمبااور میں گزاو نجاتھا۔ دابن کثیری عمرور ی مرابا صفرت نوح علیه الت لام کواطلاع دی تنی کرفیل اسکے کر زمین سے یا نی اُ بلنے گئے ہرقسم سے جانوروں کا آیک ایک جوڑاکشتی میں رکھلیں اور اپنے گھروالوں نیں ہے بھی اُن افراد کوس تقد لے لیں جومُومن ہیں ، البتہ اُن افرادِ خاندان کو اس سنتی یں جگہ نہ دیں جن پر الٹر کا فیصلہ ہو چکاہے کہ وہ طوفان میں ڈیوب مرس کے ،اسی طرح اُن لوگوں کومھی لیے لیا جائے جو ایمان لا چکے ہیں اور بیرنہا بت قلیل افراد سفے جنگی مجموعی تعداد جالبين سے استی بيان كى جانى سے والله اعلم بیدنا نوح علیہ ایسام مے افراد خاندان بیں اُن کی بیوی کے بارے میں وی البی نے بہتے ہی وضاحت کر دی محتی کہ وہ کا فرہ اور ڈوینے والوں میں شامل ہے

لہذا اسکواپنے ساتھ مندر کھا جائے۔ اور کا فربیٹا کنعان سے تعلق سے کوئی وضاحت نہھی ً حضرت نوح علیہ الت لام کو ہدایت کی گئی کہ جب شعبی میں بیٹھ جائیں توالٹر کا شکر اِن الفاظ سے ا داکیا جائے۔

۱۱) اَلْحَمُّلُ يِلْهِ الْكَذِى نَجِّنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّلِمِينَ - (مُومنون آبت مين) ساری حمدالٹر ہی کے لئے ہے جس نے ہم کو کا فروں سے نجات دی۔

ماری مدہ میرہ کے سے مسلم کا میر سکھا آئ کرتی کغفوڈ کرتے ہے۔ دہود آبت مالی الٹریکی نام سے شنی کا جلنا بھی اور اس کا مطیر یا بھی، بلانشبر میرارب بڑا عفوراور جیم ہو۔ الٹریکی نام سے شنی کا جلنا بھی اور اس کا مطیر یا بھی، بلانشبر میرارب بڑا عفوراور جیم ہو۔ ۱۳) کرت آنید لئی مینیڈ لگر میبا کرمگا قرآنٹ بھیڈرا لمائیڈ لیبن ۔ دسورہ مومنون آبت میں

ا ئے رب مجھکو مبارک مبگہ انار بئے اور تو بہترا تاریخے والا ہے۔

تیسری بات یہ بیان کی گئی کرجب عذاب کی آندسٹ روع ہوجائے نوییجیے رہ جانے والوں کا خیال نہ کیا جائے ، کا فروں اور ظالموں کے بارے ہیں رقم کی درخواست نہ کی جا اور نہ کسی قسم کی کوئی سفارش۔

ابتك جواببان لانجكے ہیںصرفُ انتخیب نجات دی جائیگی اور جوبے ایمان ہیں اُنتیب

ہاک کر دیا جائے گا۔

چنا پیدمقره وقت پرعذاب کی آ دستروع ہوئی ، حضرت نوح علیہ السالم نے اسکی پہلی علامت یہ دیمی کو مکا نات سے چولھوں سے بانی البنا نئر وع ہور اسے جوابی نوعیت میں نہا بیت مجیب وغریب بات تھی ، اسکے بعد زبین سے جابی با نی نکلنے لگا۔ حضرت نوح میں نہا بیت مجیب وغریب بات تھی ، اسکے بعد زبین سے جابی با نی نکلنے لگا۔ حضرت نوح می این ساتھ ایمان والوں کو اور ہر جانور کے ایک ایک جوڑے کوشنتی میں بھالیا ، کیونکہ بطوفان بوری نوابنی زومیں لینے والا تھا ، جب پوری طرح ہوا یات کی کھیل ہوئئی تواسٹر نعالے نے اسمان کو حکم دیا کہ برس بڑ" اور زمین کے شیعی سے میں موئی ، مکانات ، درخدت ، کے حکم سے میرسب کی میں نا دیا ہوئی کی سطح بلند ہونا سنروع ہوئی ، مکانات ، درخدت ، حجو تے موٹے شیابے بیجے بعد دیگرے ڈو ہے جائے ، کا فروں نے بلند بہاڑیوں پر بہاہ لینی شروع کی ، لیک یہ بلند و بالا بہاڑ میں اضعیں بناہ نہ و سے سے۔

حضرت نوح علیہ التّ لام کا کا فربیٹا جسکا نام کنچان بیان کیا ما تاہے باغی اور نافر ہا مقاسب سے بلند بہاڑی چونی پر جا بہونچا۔حضرتِ نوح علّیہ السّلام کے آواز دینے برجواب

برايت كيراغ

دیا کہ مجھے آئی پناہ در کارنہیں ، ہیں اس بلند و ہا لاچوٹی کی بناہ ہیں آگیا ہوں۔ حضرت نوح علیہ الت لام نے دو ہازہ متنبہ کیا کہ آج التٰر نعالے کی بناہ سے سوا رجوک تن کی شکل ہیں آئی ہے ، کوئی اور بناہ گاہ نہیں ،

تسكين ية آخرى نصيحت تعمى كام نه آئى ، بيجيے سے اچانك ايك ہولناك موج أمطى اور

اسكو تنكي كل طرح بهاك يحكى اوروه فووس والول بن شامل بوكيا-

کی حفاظت میں طبنی رہی ، زمین کا ہرا یک متنفس غرق آب ہوگیا۔ آیاتِ ذیل طوفان کی نوعیت انہی ہدایات اور حضرت نوح علیہ استلام سے کا فر

> بیٹے سے متعلق ہیں۔ بیٹے سے متعلق ہیں۔

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمُونَا وَفَارَ التَّنَّوُرُقُلُنَا احْمِلُ فِيهُا الْحَ (ہود آیات مند اسلام

فرا فی صفه و در ایسان کی کرجب ہمارا محم آگیا اور تنور اُبل پڑاتو ہم نے (نوسے) کم مولی کہا ہوت کہ جا ہوت کے جانوروں کا ایک جوڑا کشتی میں رکولو ،اوراپ گھروالوں کو بھی اور اُن لوگوں کو بھی جو ایمان لا چیچے ہیں ،سوائے اُن افراد کے جن کی نشان دہی کی جاچی ہے ،اور (سوار مہونے والے) مقورے میں لوگ مقے جو نوط کے کیسا کھ ایمان لائے مقع ۔اور نوح نے کہا (اے لوگو) سوار مہوجا و اس سے تی میں ،الٹر ہی کے نام سے ہے اس کا چلنا بھی اور اس کا کھیرنا بھی، بیشک میرارب بڑا غفور ورحم ہے۔ اور وہ شتی اُن لوگوں کو لئے جی جارہی تھی ایسے موجوں میں جو بہاڑوں کی طرح تھیں اور نوح نے بیٹے کو میکارا اور وہ علیحدہ مقام پر تھا ، بیٹا ہمارے ساتھ سوار ہوجا کا فروں کے ساتھ سوار ہوجا کا فروں کے ساتھ سوار ہوجا کا فروں کے ساتھ شوار ہوجا کا فروں کے ساتھ شوار ہوجا کا فروں کے ساتھ شوار ہوجا کا فروں کے ساتھ شد دو۔

اُس نے جواب دیا! میں انھی کسی بلند بہاڑی پناہ لے بوں گاجو مجھ کو طوفان سے بچاہے گا، نوح نے کہا آج کون چیزالٹر کے حکم کورو کنے والی نہیں ،سوائے اسکے کہ الٹرہی نی پررخم فرمائے،اننے بیں ایک موج وونوں سے درمیان حائل ہوگئی اور وہ (بیٹ) بھی ڈوینے داکوں میں شامِل ہوگیا۔اور حکم ہوااے زمینِ اپناسارا یا نی نگل جا اور اے ۔ ٱسمان يقم ما، دچنانچه، یا نی گفت گیا اور فیصلهٔ مچکا دیا گیا، منشنی جُودنی بهاڑ بر ٹک گئی، اوركهديا كيا وورسوني ظالمون كي قوم-

سورہ الفمرس اس طرح بیان کیا گیا ہے۔

كَنَّ بِنَدُ قَبْلُ مُ مَ قُومُ إِنَّ حِ فَكَدَّ بُو اعْبُدَ نَا الْح (الْقُرْآيات، وْنَامِكُ) اِن لوَّ لُوں ہے بہلے نوم جمٹلا چی ہے ۔اُن مفوں نے ہمارے بندے (نوم ج سر حَبُومًا قرار دیا اورکها که به دلوانهٔ ہے اور (انکو) دھمکا یاگیا۔

آخراس نے اپنے رب کومیکارا کہ میں عاجز ہوچکا ہوں اب تو اِن سے بدلہ لے تنب ہم نے موسلا وھار بارش سے آسمان سے دروازے کھول دیئے اور زمین سے چینے ہے

جاری کرد ہئے۔

یس بیارا یان اس کام کوبورے کرنے کے لئے ل گیا جومقدر ہوچکا مقا، اور نومخ کو ہم نے ایک شختوں والی اور کیلوں والی شتی پر سوار کرا دیا۔جو ہماری محرا نی ہیں جِل رہی معنی ، یہ تھا برلہ اس شخص کی خاطر جسکی ناقدری کی گئی۔ اور اس شنتی کوہم نے ایک نشانی بنا دیا۔ پھر کو تی ہے نصبیحت قبول کرنے والا ؟ دیچھ لو کبیسا تھا میراعذا ب آور کیسی تقیس میری تنبیهات ۔ اور ہم نے اس قرآن کونصیمت کے لئے آسان ذرابعہ بنا دیا مجركها ہے كونى نصيحت فبول كرنے والا ؟

سورهٔ مومنون میں حضرت نوح علیہ الت لام کوخدا و ندی ہدایات المطرح دی تیں۔ قَالَ رَبِ انْصُرُنِيُ بِمَا كَذَّ بُونِ - فَأَوْحَيْنًا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ أَعَ

(المومنون آيات علايم ٢٠١)

نوح سنے کہا پرورد گاران لوگوں نے جومیری تکذیب کی ہے اُس پراب توہی میں مدو فرما بہم نے نوح پر وخی کی کہ ہماری نگران میں اور ہماری وحی کے مطابق تخشنی تنیار کروا معجر حبب ہمارا کھم آجا نے اور نتور اُبل بڑے تو ہرفسم سے جانوروں بیں سے ایک ایک

ہ ایت کے چراغ میں ایک جائی ہے۔ مہارت کے چراغ

جوڑا کے کراسیں سوار ہوجا و اور ا ہنے اہل وعیال کو بھی ساتھ لے لو، سوائے اُن کے جن کے خلاف فیصلہ ہو جکا ہے ، اور ظالموں کے بارے میں مجد سے کچھ نہ کہنا یہ اب عسر ق ہونے والے ہیں۔ بھر جب آب اپنے ساتھیوں سمیت شخصی میں سوار ہوجا ہے تو بول کہنے سکر ہے اُس الٹر کاجس نے بیا ظالم لوگوں سے بنجات دی۔ (اور یہ بھی کھیئے) پروردگار معجمکو برکت والی حکمہ آزیئے اور آپ بہترین جگہ دینے والے ہیں۔ اس قصد میں فری نشانیا مجملو برکت والی حکمہ آزیئے اور آپ بہترین جگہ دینے والے ہیں۔ اس قصد میں فری نشانیا ہیں اور آز ماکش تو ہم کر کے ہی رہتے ہیں۔

ہ یں اور ارزا کی وہ ہم رہے ہی رہے ہیں۔ سورہ ہو دہمیں حضرت نوح علیہ استلام کی پرری شفقت اور الن^اعزوجل کی تنبیہ اور بچرحضرت نوح علیہ الت لام کی توبہ وا نابت کا ذکر اسطرح ملتاہیے۔ وَ نَا دَى نَخُحُ مِنَّ بِتَا فَقَالَ دَبِّ إِنَّ ابْنِيُ مِنْ اَهْلِیُ الْح

(سوره بود آیات عصمتاعهم)

اور نوح ٹنے اپنے رب کو پیکاراکہا اے میرے رب میرابیٹا میرے تھے والوں ہیں۔ ہے اور تیرا وعدہ سپاہے اور توسب سے بڑا صائم ہے۔

الٹارنے فرمایا اے نوح وہ تیرے گھروالوں میں سے نہیں ہے وہ توایک نباہ کار بچہہے ۔ لہذاتم اس بات کی مجھ سے درخواست نہ کرنا جسکاتمہیں علم نہیں ، میں تم کونصیحت سریت

کرتا ہوں کہ تم نا دان نہ بن جاؤ۔ نوخ نے عرض کیا اے میرے رب میں آبی بناہ مانگنا ہوں اس سے کہ وہ حبیبے ز آپ سے مانگؤں حس کا مجھے علم نہبیں اور اگر آپ نے مجھے معان نہ کیا اور رحم نہ فرما یا تو ہیں آپ سے مانگؤں جس کا مجھے علم نہبیں اور اگر آپ نے مجھے معان نہ کیا اور رحم نہ فرما یا تو ہیں

نقصان اُتھانے والوں نیں ہوجا وُں گا۔

محم ہواا ہے نوح سلامتی سے انرجاؤ اور ہماری برتسی ہیں تجھ پر اور ان جائز ہائی ہیں تجھ پر اور ان جاعتوں پر جو نیرے ساتھ ہیں ،اور تجھ جاعتیں ایسی بھی ہیں جنکو ہم تجھ برت تھلئے سامان زندگی دینگے ، بچرانفیں ہماری طرف سے درد ناک عذاب بہنچے گا۔ دا سے حمد سل اللہ علیہ ولی کے دیا ہے جمہ سل اللہ علیہ ولی کے دیا ہے جہ ہیں اس سے پہلے نہ آپ علیہ ولی کی جانے ہے اور نہ آپ کی قوم ،لیں صبر تیمیجے ،احجھا انجام النارسے فور نے والوں کیلئے ہوئے ۔ ان کو جانبے سے اور نہ آپ کی قوم ،لیں صبر تیمیجے ،احجھا انجام النارسے فور نے والوں کیلئے ہوئے۔

انجام سفين كشتى يس حضرت نوح عليه السلام كرسائق أن كرمسلمان بالأعلا

ہایت کے چراغ جلداقل

ُ صراحت خود قرآن ملیم نے کی ہے۔ باقی لوگوں سے بارے میں اجمالاً یہ کہدیا گیا کہ اہل ایمان کے علاوہ اور وں کو ہم نے ڈبودیا۔بعد کی سلیں انہی سجات یا فیۃ کی اولا دہیں جوسشتی میں موجود تھے۔

طوفان کامقصد جب پورا نہوگیا تعنی نبٹی کی تنعلیمات کو حبیٹلانے والوں کوجب ہلاک کر دیا گیا توالٹیرتعالے کا حکم اسمان وزبین کوملا،اے آسمان برسا بند کردے ،اور

ائے زمین آیٹا یا فی مکل ہے۔

بین زمین میں جذب ہوگیا اور فیصلہ جبکا دیا گیا ہمشتی جُودی پہاڑ پر کیک گئی،
وہاں سے حضرت نوح علیہ استلام اور اُن کے اصحاب زمین پر اُنز آئے۔ یہ ایک نئی دنیا
معنی جو ہم گیر ہلاکت خیزی سے بعد از سرنو آباد ہوئی ،اسی بنار پر حضرت نوح علیہ استلام
گو آدم نانی "کہا جا تا ہے۔ اور غالباً اسی اعتبار سے اِمغیں مدیث بخاری پی اُوّل اکر سُلُ

كباكيا له والتراعلم-

یہ جو دی بہاڑ کر دستان (عراق) کے شمال مشرقی جانب واقع ہے جو آج بھی جو دی
بہاڑ د جَل جو دی) نے نام سے معروف ہے ، قدیم ناریخوں میں بھی بحث ہے تھیے نے کی جگہ
یہ بہان کی گئی ہے ، حکیم ارسطو کا ایک شہور زمانہ شکا کر دابیڈ نیوس بھی اپنی تاریخ
میں اسکی تصدیق کر باہے ۔ نیزوہ اپنے زمانے کا حال بیان کر باہے کہ عراق میں بہت سے
تو کوں کے پاس اس شنی کے کرے معفوظ ہیں جنہیں وہ تعول کھول کرم بیضوں کو بلاتے
ہیں اور مریض شفا پاتے ہیں۔

والتنزاعلم.

منانج وعبر مخر

انبیار کرام کی پوری تاریخ یہ بوت پیش کرنی ہے کہ ہرنبی کی قوم نے تقریباً ایک ہی اعتراض دہ رایا ہے ،اور وہ یہ ہے کہ ہم اسیسے

دن ایک قدیم بین الاقوامی ممرایی اور این کا ازالهٔ اور این کا ازالهٔ

شخص کونبی سیسے سیم کرلیں جو ہماری ہی قوم سے ہے۔ ہماری طرح کھا تاہے، جلتا بھرا ہے، سوتا جاگتا ہے، بال سیخے رکھتا ہے، مجبوک پیاس کا متحاج ہے۔ وہ تو ہماری طرح ایک بیشتر ہے۔

نبیوں سے بارے میں قوموں کی یہ جہالت بہت قدیم زمائے سے طبی آرہی ہے،
غالباً حضرت نوح علیہ السلام پہلے رسول ہیں جنگوائی قوم نے سب سے پہلے یہ ہی طعنہ
دیا تھا۔اسی جاہل قوم کی اتباع میں ہرزمانے سے جا ہوں نے اپنے اپنے بی سے بارے ہیں
یہ عقیدہ گھڑلیا تھا کہ!

جوبشرہے وہ رسول نہیں ہوسکتا اور جو رسول ہو تاہے وہ بہت نہیں!

قوم ك كافرسروارول في كما داك نوع المم تم كوابنا بى جيبالشرو يحقية بن
وَقَالَ الْمُلَوُّ الَّذِينَ مِنُ فَوْمِهِ مَا هٰذَا الَّا بَشَرُ مِثَلُكُمُ يُرِيدُ أَنْ

يَتَفَظّلَ عَلَيْكُوُ وَ لَو شَاءً اللهُ كَ نُوْلَ مَلْ فِكَ مَا سَمِعْنَا بِهُ ذَا اللهُ الله

ہدایت کے چراغ مبلدا ول

بِس اُن کی دنوع کی قوم میں جو کا فررئیں نقے کہنے گئے کہ بیٹنخص دنوع کی سچھ نہیں ہے متکرایک بہشرتم ہی جیسا ،اسی غرض پیہے کہ تم پر برنزی حاصل کرے ، ایٹر كواگررسول بھیجنا ہوتا توِفر کینے كو تجیجتیا، بہ بات توہم نے اپنے آبار واجدا دہیں بھی نہیں مصنی (کربیشتر رسول بن کر آئے ہوں) تجینہیں اس آدمی کو ذراجنون لاحق ہوگیا ہے کچھ مدت اور دیچھ لو (شاپر صحت یا ب ہوجا ئے)

نوح عمیے کہا پر ور د گار اِن لوگوں نے جومجھکو حجسٹلا یا ہے اس پر اب تو کہی مبری

خود حضرت نوح غلبيرات لام ايني قوم كواس طرح خطاب فرماتے ہيں۔ ٱوِعَجِبْتُمُ أَنْ جَاءَكُمُ ذِكُرٌ مِنْ تَرَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلِ مِنْكُمُ لِلبِّنْذِ مَاكُمْ وَلِتَنَّقَتُوا وَ لَعَلَكُونَ تَرَحُمُونَ. (الاعراف آيت ١٣٨)

کیاتمہیں اس بات پر معجب ہوا کہ تمہارے یاس خود تمہاری ہی قوم کے ایک آدمی (نوخ) کے ذریعے تمہارے رب کی نصیحت آئی کہ تمہیں خبردار کرے اور ٹاکہ تم الٹیرسے ڈرواورتم پر رحم نحیا جائے۔

قوم عاد نے تھی سبیدنا ہو دعلیہ الت لام کے بارے میں بہہی بات وُصرائی ' وَقَالَ الْمُلَاُّ مِنْ تَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَدَّ بُوا بِلِقَاءِ الْإِخِرَةِ قَ اً ثُرَنْهَ كُونِ الْحَيوْةِ الدُّنْيَامَا هٰذَا أَلَّا بَشَرُ مِنْلَكُمُ يَأْكُلُ مِنَا يَأْكُونَ وَ يَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ. وَلَبِينَ أَظَعُتُكُو بَشَرًا مِثْلَكُكُوا تَكُولُاذًا تَخِيمُونَ -

د المؤمنون آیت ع<u>۳۳ - عه۳</u>)

اُن (ہود) کی قوم سے جن سر داروں نے ماننے سے انکار کیا اور آخر ہے کی بینٹی کوجیٹلا یا اورجن کو ہم نے دنیا کی زندگی میں آسود ہ حال کررکھا تھا تھنے لگے کیے خص ر ہود) کھ نہیں ہے مگرایک بنت رتم ہی جیسا ،جو کھے تم کھاتے ہو وہی یہ کھا تاہے اور جو کچھتم بیتے ہو وہی یہ بیتا ہے۔

قوم ثمو د نے بھی سبید ناصالح علیہ ابت لام پریہ ہی اعتراض کیا کہ صابح توایک بشرید. مجلاتهم اسکی کیسے اطاعت کرلیں ؛ نبی انسانوں میں سے نہیں ہوتے ، وہ تو

ماورار بشرہواکرتے ہیں **۔**

عَاكُوْ آلِنَّا آنَتُ مِنَ الْمُسَجِّرِينَ. وَمَا آنُتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّ ثُلُنَا فَأْتِ دَيْ يُوْ آلِنَّا آنَتُ مِنَ الْمُسَجِّرِينَ. وَمَا آنُتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّ ثُلُنَا فَأْتِ

یایتیان گنت مین الصلیافین . (انشعرار آیت سام اسما) یا بیتیان گفت مین داسے صالح) ایسامعلوم ہوتا ہے کہ تو ایک سحرز دفتی سے میں میں میں میں ایک میں گار تاہی ایسا میں تاریخ کو دی ذیرانی کریں ،

اورتُوسرِ فَ مَهُم مِيبِ الْيَك بِشرِمِ عِلَى تُوسِيائِ تُومِجْرِ كُونَى نَشَانِ لِهِ آجَ كَذَيْبِ تُحَدِّيِثُ ثَنُودُ إِللنَّانُ مِن فَقَالُوُ ابَشَرًّا مِّنَّا وَاحِدًا اتَّبِعُ مُ إِنَّا إِذًا لَقِف بِهِ مِنْ مِنْ مِنْ ثَنْهُودُ إِللنَّانُ مِن فَقَالُوُ ابَشَرًّا مِنَّا وَاحِدًا اتَّبِعُ مُ إِنَّا إِذًا لَقِف

ضَلْلٍ وَسُعْدٍ (القرآيت علله علله)

قوم ثمود نے رسولوں کو حبط لایا۔

بیں سمنے لگے کیا ہم اپنے میں سے ایک بیٹری بیروی کرلیں ؟ تواس صورت میں ہم بڑی غلطی اور جُنون میں پڑجائیں سے۔ میں ہم بڑی غلطی اور جُنون میں پڑجائیں سے۔

یں ہم برن کی ہوبہ بین ایک قریبہ رسمال کا حال انتھاہے کہ و ہاں تھی اللّٰہ رِتعالے سور ہ کیس میں ایک قریبہ (گاؤں) کا حال انتھاہے کہ و ہاں تھی اللّٰہ رِتعالے نے چند ایک نبی بھیجے تھے۔ اُس کبتی والوں نے تھی اِن ببیوں کے سابھ وہی معالم سمیا جو سخز سنٹ نہ قوموں نے اپنے اپنے نبیوں سے ساتھ کیا تھا۔

یہ قریب منسریں کی تحقیق سے مطابق ملک شام کاستہرا نطاکہ تھا۔ اس سٹہریں میلی دفعہ دیونبی تبلیغ سے لئے بھیجے سکتے تو گاؤں والوں نے اٹھا اٹھا۔ کر دیا۔ مجرالٹر تعالیے نے اُن دونوں کی ہدو کے لئے تمیسر۔ بن کو تھیجا ،اسپر اُن کستی والوں نے بیمیکر اِن بینوں کا ایکار کر دیا کہ

ن استری متر تو ہم جیسے ہی بیشر مہوا ورالتارنے کسی کبنٹر کو رسول نہیں بٹایا۔ ہم تم کو حدیث میں میں بایا۔ ہم تم کو

آياتِ ذيل اسي وا قعه سي تعلق بي -

وَّا خَبُرِبُ لَهُ مُ مَّنَدُلُا مَعْدَ الْفَرُيّةِ الْأَجَاءَ هَا الْمُرُسَلُونَ وَالْمَا الْمُرُسَلُونَ وَالْمَا الْمُرُسَلُونَ وَالْمَا الْمُرْسَلُونَ وَالْمَا الْمَا الْمَا الْمُرْسَلُونَ وَمَا الْمُرْسَلُونَ وَمَا الْمَرْسَلُونَ وَمَا الْمَرْسَلُونَ وَمَا الْمَرْسُلُونَ وَمَا الْمَرْسُلُونَ وَمَا الْمُرْسُلُونَ وَمَا اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَمُنْ اللّهُ وَمُنْ اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَاللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَمُنَا وَمَا اللّهُ مُنْ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْمُنَا وَمُنَا وَمَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْمُنْ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْمُنْ اللّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَاللّهُولُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالمُولِمُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّه

(ایے نبٹی) ان سے ذرا اُن بستی والوں کا قصہ بیان سجیجئے جبکہ سم نے اُن کی

جلد اوّل

جانب سہلے دونبی بھیجے سواُ مفول نے انکو جھٹلا دیا ، تھیر ہم نے تمیسرے نبی کو اُن کی بدد کے لئے بھیجا۔ اِن سب نے کہا ہم نم لوگوں کی طرف الٹد کی جانب سے بھیجے گئے ہیں۔ لبستی والوں نے کہا تم لوگ کچھ نہیں ہومگر ہم جیسے بیشراور التررمن نے ہرگز تم پر کوئی چیز نازل نہیں تی سے تم صرف خصو کے لوگ ہو۔

بہم ہو ستا دوں کے اُلٹر کے ان مینوں فرستا دوں کو حبٹلادیا۔ اہلِ مُدُیّنُ نے مجی ستید ناشعیب علیہ استلام سے انہی الفاظ ہیں کلام کیا کہ بيب تمَ ايك احِصِ بنجيده آدمی مقے تم كوا چانك كيا ہوگيا كرتم نے نبی ہو كے كا

امعلوم ہوتاہے کہتم رحسی نے جاوُو وغیرہ کر دیا ہو ؛ بھلا تم بننر ہوکر نبیء ہونے کا دعویٰ کیوں کرتے ہو۔ آگرانیا ہے تو تم نقیناً حجو تے ہی ہو۔

قَالُوْآ إِنَّكَا آنُتَ مِنَ الْمُسَجِّدِينَ . وَمَا آنُتَ إِلَّا بَشَرُ مِنْكُ أَنْ

إِنْ نَظَنُّكَ لَمِنَ الْكُذِبِينَ. والشعراء آيت عنه عيمِه

توم شعیب نے سمبا اے شعیب یقینًا تم سحرز د ہ ہوگئے ہو۔ اور تم توصر ف ہم جیسے بشربوا ورمم غلين كرتے ہيں محة محبوطے ہو۔

قوم آبراہیم نے بھی سبیدنا ابراہیم علیہ است لام کے بارے ہیں یہ ہی ہے۔ · طاہر کیاکہ وہ ٹوصر ف ایک نوجوان لڑکا ہے جو ہمار سے بنوں کے بار سے ہیں اکثر فیری گفتگو

محرّما دہتا ہے۔ قَالُوْا مَنُ فَعَلَ هٰذَا بِالِهَتِنَّا إِنَّهُ لَمِنَ الظّلِمِيْنَ الْخ سندار آت مه

(الانبيار آيت <u>موه</u> - <u>منلا)</u>

رقوم نے میلے سے والیں آکر حب اپنے بنوں کا یہ حال و بچھا کہ مکڑ ہے مكرے ہوكر كر بڑے ہيں) تو تھنے لگے ہمارے خداؤں كا بيرحال تس نے كرديا وبيتك وه کوئی بڑا ظالم ہی ہوگا۔

بعض لو گوں نے کہا ہم نے ایک نوجوان کوان بتوں کا ذکر کرتے سنا تھا جسکا

نام ابراہیم ہے۔ فرعون اور قوم فرعون نے تھی سسیدنا موسیٰ علیہ است لام وستیدنا ہارون عللِیسلا

جلدا دّل

کو حفارت سے انداز میں بشرہی تھتے رہے اورکسی طرح اِن دونوں نبیوں کوسلیم نہ کیا۔ فرعون توآخروفت تک پہنی کہتار ہا کہ موسی نے تو ہمارے گھر رپر ورمشس یا تی ہجواتی سے حتی سال ہمارے گھر میں گزارے ۔اوراب و ہنبی ہونے کا دعوی کرتاہیے۔ قَالَ ٱلمُونُرُ بِلِكَ فِينَا وَلِيْدًا وَلِينَا وَلِينَا وَلِينَا وَلِينَا مَا لَا لَيْنَا مِنْ عُمُرِ لَا يَن (الشعرار آبت مه)

فرعون نے کہا کیا ہم نے بچھ کوا پنے ہاں بچیسا نہیں پالا تھا ؟اور تو نے ا بنی عمر سے حتی سال ہمارے ہاں نہیں گزارے ؟

قوم فرعون نے بھی بیہی اعتراض محصرا یا کہسسید ناموسیٰ و بارون رعلیہاالسلام)، بشرہیں اور صرف نبوت کے نام پراقتدار جا ہتے ہیں۔

قَالُوْ آاِنْ هَٰذَانِ لَلْحُرْنِ يُرِبِّيَ انِ أَنْ يَغِرُجُكُمُ مِّنَ أَرْضِكُمُ لِبِحُرِهِمَا

وَيَنْ هَمَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثَلِّلُ. (طدآيت ١٣٠)

آخر کارلوگوں نے کہا کہ یہ دونوں (موسیٰ ٹو ہاروٹ) تومحض جا دوکر ہیں۔ اِن کا مقصدیہ ہے کہ اپنے جا دو سے زورسے تم کو تمہاری زمین سے بے وخل کردیں اور تمہارے رسم ورواج کا خاتمہ کردیں۔

م خرکار قوم نے بشریت کا ازام لگا کرسے پر ناموسیٰ اور بارون علیہا انسلام

کی نبوت کا انکار کر دیا۔

تُعَرِّ آرْسَلْنَا مُوسِىٰ وَإِخَاءُ هُرُونَ بِأَيْنِنَا وَسُلُطِنِ مَّبِيُنِ - إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَا بِهِ فَاسْتُكُبَرُوُا وَكَا نُوُا قُولُمًّا عَالِيْنَ - فَقَالُوُا ٱنْؤُمِنُ لِبَنْتُرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمَهُمَّا لَنَا عَبِهُ وُنَ - كَلَّدَّ بُوهُمُمَّا فَكَا نُوْامِنَ الْمُهُلِكِينَ -

(المؤمنون آیت م<u>صمی ملاتا به میمیم مرمیم)</u>

مهرهم نے موسی اور اُن سے مجائی ہارون کو اپنی نشانیوں اور کھی دلیل عضا) کے ساتھ فرعون اور اُن سے ساتھیوں کی طرف ہمبیا منٹر اُتھوں نے تکبر کیا اور وہ مغرور قوم ہی کھی۔ مجر تھنے گئے کیا ہم آپنے جینے دونبٹر پر ایمان سے آئیں ، خاص طور کر البیلی صورت بنی سنجه ان دونول (موسیء وبارون) کی قوم ہماری غلام ہے۔ سیں اُن نوگوں نے و و نوں کو حجشلا دیا ، مجروہ ہلاک مونے والوں ہیں سے مو گئے۔

قوم عیسی نے سیدناعیسی علیہ استلام کو ایک بالکل دوسری حیثیت سی دیھا۔ بیشترا توام نے تو اینے اپنے نبیوں کو صرف بشرخیال کیا اور نبوت کا انکار کر دیا لیکن قوم عیسی نے ستیدنا عیسیٰ علیہ الت لام کو بشریت سے ایک قدم آگے بڑھا کر آلو ہیت بین واخل کر دیا بھی یا بیٹ مرنے کے لئے قطعاً آما دہ نہ ہوئے۔ اس لیاظ سے اس قوم نے سابقہ اقوام سے بالکل مختلف نظریہ قائم کر لیا کہ نبی بنٹر نہیں ہوتے۔ حضرت عیسیٰ میقیناً نبی ورسول مقالیکن بیشر نہ صفے۔ دراصل یہ وہی افراط موتے دحضرت عیسیٰ میقیناً نبی ورسول مقالیکن بیشر نہ صفے۔ دراصل یہ وہی افراط و تفریط کے منظا ہرے ہیں جو جہالت اور اند صفے بین کی وجسے پیدا ہواکرتے ہیں۔ الشریع النے نے قوم عیسیٰ کی اس گر ایک کو اِن الفاظ سے رَد فرادیا۔

الشریع النے نے قوم عیسیٰ کی اس گر ایمی کو اِن الفاظ سے رَد فرادیا۔

الشریع النے نے قوم عیسیٰ کی اس گر ایمی کو اِن الفاظ سے رَد فرادیا۔

الشریع النے نے قوم عیسیٰ کی اس گر ایمی کو اِن الفاظ سے رَد فرادیا۔

باز آجاؤ به تمهارے لئے مہترہے۔

سورۂ آل غمران میں حضرت نیسی علیہ اسٹلام کی حقیقت کو ایک مثال سے جھائی گئی اوریہ تایا گیا کہ حضرت عیسی علیہ استلام انسان ولبٹ رہی تھے جیسا کہ و گیرانبیار کرام انسان ولبٹ رکھے۔ رہا اُن کا بے باپ سے پیدا ہوجانا یہ کوئی دلیں نہیں کہ و ہ خدا یا شریک فکدا ہو جائیں۔ اگر بغیر باپ سے الٹر تعالیٰ می قدرتِ خاص سے وہ پیدا ہوکر فکدا یا نشریک فکدا ہو سکتے ہیں تو حضرت آدم علیہ الت لام جو باپ اور ماں سے بغیر پیدا ہوئے ہیں اُن کو کہا کہا جائیگا ہ

آور حضرت حوّار مضی توبغیر ماں سے پیدا ہوئی ہیں، حالانکہ اُن کو کوئی بھی خدا باشریکِ خُدا ماننے کے لئے تیار نہیں ۔

میراگر حضرت عبیای علیہ انتسام بغیر باب سے پیدا ہوگئے ہوں تو انہیں طح مُدَا یا سُریکِ خدا کہا جا سِکا ؟

اَلَّهُ تِعَالِے نَے حَصَرَتَ عِنِي عليه السّلام كَ حَقِقت اس طرح سمِحا كَيْ ہے۔ إِنَّ مَثَلَ عِينُهِ عِنْدَاللهِ كَمَثَلِ الْهُ مَحَلَقَدُ مِنُ تُرَابِ ثُحَّاقًالُ لَهُ كُنُ فَيْكُونُ وَ اَلْحَقَ مِن مَنْ مَرَ بِلْكِ فَكُلُ ثَكُنُ مِنَ الْمُدُورِينَ -

بینک عیسیٰ کی مثال الترکیے ہاں آدم کی سی ہے کہ التر نے آدم کومٹی سے پیدا کیا مجرم دیا کہ ہوجالیں وہ انسان ہوگئے۔ بہاصل حقیقت ہے جو تمہارے رب

ہمیں عظرت میں طوفیا قیا۔ قرآن تھیم سے مزید مطالعہ سے معلوم ہوتا ہے کہ اس قدیم گمراہی وجہالت کا اثر قرم عرب پرمیں ٹراجب خاتم النہین صلی الشرطلیہ وئم محد مکرمہ بین مبعوث ہوئے تو مشر کوبین سختہ نے بھی تہوت کو یہ مہد کر حبشالا دیا کہ مشر کوبین میں رسول ہے جو کھا تا بیتیا اور بازاروں بین خرید و فروخت کرتا ہے ؟ آگر یہ رسول ہوتا تو اسکے سابھ ایک فرسٹ ندمجی ہونا چاہئے تاکہ وہ علامت ہے داسمے رسول

بدایت کےچراغ

ونبی ہونے کی ؟) یہ توتم مبیبا ہی ایک بشرہے ۔ مشرکتین متحرک اس خام خیالی کو قرآن بحجیم نے غفلت اور جہالت سے تعبیر کیر سروں اس مفر دون نیامہ نیرال کوئٹی ہیں ۔۔۔ بندیا ہیں قریب کی میں میں ا

ک ہے اور اس مفروصنہ خام خیالی تو گراہی اور اندھا بن قرار دیاہے۔سور ہُ انبیا میں مضمون موجود سربہ میں مضمون موجود سربہ

يَّنَ الْمَا ال

دالانبيار آبت عيل

اُن کے قلوب نمفلت ہیں پڑے ہیں اور یہ ظالم لوگ آلیس ہیں سرگوشیاں کرتے ہیں کہ پیشخص رمحدٌ) آخر نم جیسا ایک بیشر ہی تو ہے۔ تھیر کیا تم آنکھوں دیکھتے جا دو کے مصندے میں بھینس جاؤگے ؟

. وَقَالُوْا مَانِ هَلَ الرَّسُوُلِ يَا كُلُ الطَّيْوَلِ يَاكُلُ الطَّعَامَرِ وَيَنْشِي فِي الْأَسُواتِ

لَوْلَا أَنْذِلَ إِلَيْدِ مَلَكُ نَيْكُونَ مَعَدُ نَيْنِيرًا. الإ

د الغرقان آبت سے، ہے، ہو)

مکتر کے مشرکین نے کہا یہ کیسارسول ہے جو گھا نا گھا تا ہے اور بازاروں بیں جلتا بھرتاہے بحیوں نہ اِس کے پاس کوئی فرسٹند بھیجا گیا جو اسکے ساتھ رہت اور (نہ ماننے والوں کو دھمکا یا)

اوریااس کی طرف کوئی خزانه آثار دیا جاتا، یااسکے پاس کوئی باغ ہی ہوتاجی سے یہ کھاتا بیتا،اور ظالموں نے (بیہاں تک) تحمہ دیا کہ اے نوگڑ! تم توصرف ایک سحرز دہ شخص تی پیروی کریسے ہو۔

سرورہ کا جیروں رہے ہوئے۔ دیکھو دا ہے محد!) یہ لوگ تمہارے لئے کیسی کسی مثالیں بیان کر دہے ہیں' یس پر گمراہ ہوگئے ہیں انہیں اب سیرطی راہ سوجھانی نہیں دیتی۔

الترتعاك نے منشر کنین متحرکی اس جہالت اور عداوت کا جواب معبی انہی کے

انداز پر دیا اور آن سے سوالیہ انداز بین کہاگیا۔

تبہلے کوئٹ ایسانبی آیا ہے جو کھانا نہ کھا تاہمو ؟ بازاروں میں جلتا بھر مانہ ہو ؟ تم لوگ اور تمہارے آبار واجدا دحضرت نوح ،حضرت ابراہمی،حضرت اسمعیل ،حضرت ملداة ل

مرسیٰ عنین علیہم التلام اور بہت ہے دوسرے انبیارے ضرف واقف ہی نہیں بلکہ ان حضرات کی رسالت و نبوت موجی کیم کرتے ہیں۔ یہ سب ببوی ہے والے عظے ۔ کوانا پینا، بازاروں بیں جلنا بھرنا، شجارت وزراعت کرنا، غم وخوشی کے حالات پیش آنا، سب مجھواب آریدرسول پیش آنا، سب مجھواب آریدرسول رحم سے ان مقااور تم خود اسکے قائل ہو بھراب آریدرسول رحم سے ان مقال اور تم نبیتے اور بازاروں میں خریدوفروخت کرتے ہیں نوآخ تعب کی بات ہے ؟

"أسى ظيم خفيفت كوسورة الفرقان بن اس طرح ظام كياسي . وَمَا آرُسُلُنَا قَبُلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنْهُ مُرْكِياً كُلُونَ الطَّعَامَ

وَيَمُشُونَ فِي الْأَسُواتِ الْحَ الْعَرَاقِ الْحَ الْفَرْقِانَ آيت مناً)

ا کے محد رصلی اللہ علیہ ولم ہم سے پہلے جورسول بھی ہم نے بھیجے سختے وہ سبب کے سبب کھانا کھاتے ہفتے اور بازاروں بیں (خرید وفروخت کیلئے) چلتے بھر ذکتی۔

ایک اور موقعہ پر اللہ تعالے نے ہی کریم سلی اللہ علیہ ولم کی زبانِ مبارک سی اعلان کروا یا کہ آپ کی جنبیت بیں کسی سی اعلان کروا یا کہ آپ کی جنبیت بیں کسی سی کوئ پوسٹ یدگی باقی ندرہے اور سالبقہ امتوں کی طرح بہ آخری است اس تمراہی ہیں مبتلا منہ ہونے یا کے کہ رسول بسٹر نہیں ہوتے ایکوفرسٹ تہونا چاہیے یا بھر خدا سے آئی رشتہ داری ہو۔

میں حصہ داری ہو۔

میں حصہ داری ہو۔

الترتعالے کے کلام کا یہ برحقیقت اعلان جوخاتم النبیین سلی الترعلیہ ولم کی

زبان مبارك سے كروايا كياكتنا واضح اور كفلا ہوا ہے۔ قُلْ إِنَّمَا آنَا بَشَرَّ مِثْلُكُو يُوْحَى إِلَى آئَمَا الْهُكُو الْهُ كُوْراكُ وَّاحِدُ فَكُو كَانَ يَدُجُو الِقَاءَ رَبِّم فَلْيَعَمُ لَ عَمَلًا صَالِحًا وَ لَا يُشْرِكُ بِعِبَا دَةِ رَبِهِ

اے محد دصلی الٹرعلیہ ولم) کہو کہ میں بشر ہوں تم مبیا، میری طرف وحی کی جاتی ہے اے محد دصلی الٹرعلیہ ولم) کہو کہ میں بشر ہوں تم مبیا، میری طرف وحی کی جاتی ہے کہ تمہار امعبود ہیں ایک ہی معبود ہے ، نبیں جو کوئی اپنے رب سے ملاقات کا امید وار ہواسی چاہئے کہ نیک عمل کرے اور بندگی میں اپنے رب سے ساتھ تحسی کو بھی مشر بیک

رز کرے۔

اسکے علاوہ قرآن حکیم کی اور بھی وضاحتیں موجود ہیں جن سے معلوم ہوتا ہو کہ ہرز مانے میں لوگوں کی جہالت کا یہی حال رہاہے اور تنقر بیاً ہرایک نبی کواس دوچار ہونا پڑا اور اسی جہل نے بہت سی قوموں کو نبیوں کی روشن ہرایات ہے محروم كر ديا - يا تورسولوں كوصرف بنسر سمجھا گياجس كى وجہ سے اطاعت نہيں كى تئى يا بھر فوق اتبیشرجانا ا درگمراه *هوگئے۔ یہ دونوں نظریے جہ*ل ا وربے عقلی کی ببیدا وار ہیں بہو^د ونصاری کوانسی جہل و کے قلی نے راہ حق سے دور کر دیا ہے۔ سور ہُ ابر اہیم میں مزید

الْأَنْ ضِ يَنْ عُوْلَكُوْرِلِيَغْفِرَ لَكَ عُوْلِكُوْ لِيَغْفِرَ لَكَ عُرْمِنَ ذُنُوْ بِكُوْرُو يُؤَخِّرُكُوْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مَّسُسِمٌ قَالُوْا إِنْ أَنْتُوْ إِلَّا بَشُرُ مِّتُلُنَّا تَرُبُ لُوْلَ أَنُ تَصُلُا وُنَاعَمًا كَانَ بَعْبُكُ أَبَا وُنَا فَأَتُو نَا بِسُلُظِن مُّبِينِ. قَالَتُ لَهُ مُورُسُلُهُ مُرانُ نَحُنُ إِلَّا بَشَرُ مِثْلُكُمْ وَلَكِرِ اللَّهِ اللَّهُ

يمن عَلَامَن يَسَاءُ مِن عِبَادِهِ - (ابراسي آيت عنا، ملا)

(انبیار کے پیغام کونہ ماننے والوں سے) اُن کے رسولوں نے مهاکیا الٹرکے بارے میں شک ہے جو آسمانوں اور زمین کا خالق ہی وہ تم کو دعوت دے رہا ہے تاکہ تمہارے گناہ معان کردے اور تم کو ایک مدت مقررہ کک مہلت دے۔ اُن لوگوں نے جواب دیا تم توہارے جیسے ہی بیشر ہو، تم ہم کو اُن معبود وں کی عبادت سے روکنا چاہتے ہو جنگی ہمارے باپ وا دانے عبادت کی ہے ؟ احصا تو کونی واضح دسیل پیش کرو؟ اُن سے رسولوں نے اُن کوجواب دیا ہم تو تم ہی جیسے بشرہب لیکن الٹراپنے بندوں میں سےجس کو چاہتا ہے د نبوت

ورسانت) سے سرفراز کرتاہے۔ سور ہُ تغابن ہیں اس طرح بیان کیا گیاہیے:

المُورِيَا يَكُورُ بَهِ فَمُ اللَّهِ فَيْنَ كَفَرُوا مِنْ قَبُلُ فَذَا قُولًا وَبَالَ أَمْرِهِمُ وَلَهُمُ عَنَاكُ أَلِيمُ وَلَاكَ بِمَا نَقَامُو كَانَتُ تَالْنِيْهِمْ مُرْسُلُهُ مُورِ بِالْبِيَّنَتِ فَقَالُوْ آبَشُرْ بَهُ لُو أَنَازَفَكَفَرُوْ آوَ تَوَلَّوْا وَاسْتَغَنْ اللهُ مُواللهُ غَنِي حَيِيلًا لَهُ اللهُ عَنِي حَيِيلًا اللهُ اللهُ عَنِي حَيِيلًا اللهُ عَنِي حَي

کیا نم کو اُن لوگوں کی خبرنہ ہیں بہنچی جنھوں نے اس سے پہلے
کفر کیا بھرا بنے شامتِ اعمال کا مزہ چھ لیا ؟ اور اُن کیلئے دائے)
در دناک عذاب ہے۔ اس انجام کے شخق وہ لوگ اس لئے ہوگئے
کہ اُن کے پاس اُن کے رسول کھی گھی نشانیاں لیکرا تے رہے گرانھوں نے
کہاکیا ہم کو بشر ہرایت دیں گے ؟ بیں انھوں نے انکار کیا اور نھر بھیر لیا بب
النٹر بھی اُن سے بے پر واہو گیا ، اور النٹر تو بے نیاز ہے بنراد ارحمد ہے۔

سورهٔ پوسف میں مبھی بوری وضاحت کے سانظ کہاگیاکہ جننے تھی رسواغ ڈنسیا میں آئے ہیں وہ سب کے سب انسان ہی تھے اوران ہی بستیوں کے رہنے والوں پی تھے کیا یہ بات ان مشہرکین متح کومعلوم نہیں ؟

وَمَا آرُسُكُنَا مِنْ قَبْلِكَ آلَادِجَا لَا نَوْمِي آلِيْهِمْ مِنْ

اے محد دصلی الٹرعلیہ ولم) تم سے پہلے ہم نے جتنے بھی پیغیبر بھیجے ہیں وہ سب کے سب انسان ہی تھے اور انہی بستیوں کے دہنے ملدں ہیں سریخ

مشرکین مگدگا به خیال تھاکہ محد ڈھلی الترعلیہ ولم ، رسول نہیں ہو سکتے کیونکہ وہ انسا ہیں۔ قرآن مکیم نے کفار محد کے اس جا ہلانہ خیال کی تر دید کرتے ہوئے بتلایا کہ بیہ کوئی نئی جہالت نہیں جو آج بہلی مرتبہ ان لوگوں سے ظاہر ہودہی ہے زمانہ قدیم سے نمام جہلاء اسی غلط فہمی ہیں مبتلار ہے ہیں کہ جولبشر ہے وہ رسول نہیں ہوسکتا اور جورسول ہے وہ بشرنہیں۔

اسی جہالت نے ہرز مانے کے لوگوں کو ہدایات انبیار سے محروم رکھا ہے ور وہ نبیوں کی واضح وروشن ترین تعلیمات کو بحض یہ کہہ کر دیکر دیگر کے تقے لہ تم تولبشر ہورسول کیسے ہوسکتے ہو ؟ رسول یا تو فرسٹ تہ ہوگا یا بچر کوئی اور مخلوق ، لین انسان تورسول ہوہی نہیں سکتا۔ الیے انسانوں کی ہوایت سے محرومی کا سبب فرآن مکیم نے یہی بیان کیا ہو۔
و مَا مَنعَ النّاسَ آن یُؤُومِنُوْآ اِذُ جَاءَ مُعَوَّا لَهُ لَاکَ وَمَا مَنعَ النّاسَ آن یُؤُومِنُوْآ اِذُ جَاءَ مُعَوَّا لَهُ لَاکَ وَمَا مَنعَ اللّهُ بَشَدًا مَّ سُوُلًا ۔ رہنی اسرائیل آیت میں اللّهُ بَشَدًا مَّ سُولًا حَد رہنی اسرائیل آیت میں لوگوں کے پاس جب نبیوں کی ہوایت آئ توکوئی چیز انہ میں ایمان لانے سے روکے والی ندیقی سوائے اسکے کوانھوں نے کہا"کیا

التُرنِ بِشِر کورسول بناکر بھیج دیا ؟" مالا کمہ التُرتعالے نے مہر زمانے میں انسانوں ہی میں سے کسی ایک کورسول بنایا ہے انسان کی ہدایت کے لئے انسان ہی رسول ہوسکتا ہے نہ کہ کوئی فرشتہ یا بشریت سے بالا ترکوئی اور بہتی ،اس حقیقت کوسور و انبیار میں اس طرح واضح کیا ہے:۔ کے میکا کہ سُکٹا فیکاک اِلگر رجالاً نوجی ایک کے فیکٹے آئی کُونا

وَمَا الرَّسَانُ عَبِلُكُ إِلَّ الرَّبِ وَمَا الرَّسَانُ عَبِلُكُ إِلَّ وَجَالًا عَوْمِي الْبِيهِ مَرْسَعُ وَا اَهُلُ الدِّ كُولِ إِنْ كُنْتُهُ وَكَا نَعْلُكُونَ . وَمَاجَعَلْنَا هُوجَسَلًا الْأَ مَا كُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا كَا نُوا خَلِدٍ بِنَ . رَالانبيارِ آبت مِكَ، مِنَ

ہم نے تم سے پہلے انسانوں ہی کورسول بناکر بھیجاہے جن پر ہم وحی کرتے محقے۔ لہذا جاننے والوں سے دریافت کرلو آگر تمہیں نہ معلیم ہوا در نہ ہم نے اُن رسولوں کے جسم ایسے بنائے محفے کہ وہ کھا نانہ کھا

ہوں اور نہ وہ ہمیشہ زندہ رہنے والے تھے۔ اور بیکلام الہٰی کی انتہائی شفقت ہے کہ وہمشرکین مکہ کی خام خیالی کامجی جواب دیاہے :۔

-قُلُ لَوْكَانَ فِي الْكَرْضِ مَلَّعُكَةٌ يَّمُشُوْنَ مُطْكَتِّلِيْنَ لَنَذَكَنَا عَكِيْهُ مُرْقِنَ السَّمَاءِ مَكَكًا رَّسُوُلًا

د بنی اسرائیل آیت م<u>ه ۹</u>)

اے نبی اِن لوگوں سے کہو کہ اگر زمین پر فرشتے اطمینان سے میں کورسولٹے بناکر نازل کرتے۔ میں بھررہے ہوتے توہم اِن پر فرشتے ہی کورسولٹ بناکر نازل کرتے۔ قرآن مکیم کی مُرکورہ بالا آبیت نے مسئلہ کو اور آسان بنا دیا کہ انسانوں کی ہرابت کیلئے انسان ہی صروری ہے نہ کہ کوئی فرسٹ نہ یا کوئی اور مخلوق ؟

فَكَا ذَا بَعُدُ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ-حَق ظاہر ہوجانے کے بعد قبول نہر ناسوائے مراہی کے اور کیا

ہوسکیا ہے؟ اور یہ عجیب تربات ہے کہ جن لوگوں نے بتھروں اور درختوں میں اُکوہیت کو تسلیم کیا ہے آخروہ کبشریت میں نبوت کومحال کیوں سمجھ رہے ہیں ؟ آفکلا تَعُقِلُوٰنَ۔

کیاعقل و فہم سے محروم ہوگئے ہیں ؟ یہ السرکے کلام کا اعجاز و تفوق ہے کہ اُس نے نبیوں کی بلند ترین عظمت و تقدیس سحو صرف د ولفظوں سے اواکر دیاہے :-سمجہ صرف د ولفظوں سے اواکر دیاہے :-سمہ و ہ اُلٹر کے بندے اور اُس کے رسول ہواکرتے ہیں ''

(۲) فوم نوم کوم کے معبود اسیدنانوح علیہ استلام جس وقت اپنی قوم میں مبعوث ہوئے ہیں اُس وقت ساری قوم میں مبعوث ہوئے ہیں اُس وقت ساری قوم ہیں ہیں مبتلا تھی، شرک اُن کا زمیب تھا جھوٹے بڑے سینکڑوں معبود بنا گئے تھے جنی پرتش کی جاتی تھی۔ اُن میں آئے بڑے بڑے بنت تھے جو"بڑے فدا" کے نام سے پوجے جاتے تھے۔ بعد سے زمانے میں میہ می بنت عرب کے جا ہوں میں جی پوجے ما نر گئے۔

ا۔ و قریب: یہ بت قبیلہ بنو کلب کامعبود تھاجس کامندرمقام دومۃ الجندل میں بنایا گیا تھا۔ یہ بت نہایت بلند قامت مردانی جُنّہ (بدن) تھا۔ قراشِ محرجی اسکومعبود کیم کرتے تھے اور اُمفوں نے اِس کانام وُدّ رکھا تھا اور اپنی اولاد کے نام جمی اسی نسبت پر رکھ دیا کرتے تھے۔

اولاد کے نام جمی اسی نسبت پر رکھ دیا کرتے تھے۔

اولاد کے نام جمی اسی نسبت پر رکھ دیا کرتے تھے۔

اولاد کے نام جمی اسی نسبت پر رکھ دیا کرتے تھے۔

اور ایس کامندر تھا۔

میں سے قریب اس کامندر تھا۔

۔ کے قریب اس کامندر تھا۔ ۳۔ یغوث: یہ فبیلہ کئے کائٹ تھا۔ جاز اور ئین سے درمیان مقام مجرش پراس کا مجتمہ نصب کیا گیا تھا اس کی شکل سنے بری طرح تھی بھویا پیطاقت وفوت کا ہالک تھا جس کے دستِ قدرت میں کائنات کی ساری طاقتیں سمجھی جاتی خیں' قرلیش سے لوگ بھی اسی ثبت سے نام پرا پنے بچوں سے نام رکھ لیا کرتے تھے۔ م. يعوق: كمن سے علاقے ميں فبيله بمدان لما بمغبور تصورے تحال ير تھا جس كى بوجا عرب ہیں بھی کی جاتی تھتی۔

ہ۔ نسس : حمیرے علاقے میں قبیلہ حمیر کا یمعبود گیدھ کی شکل پرتھا۔شہر سا (بن) ے قدیم خنبوں میں اِس کا نام نسور تکھا ہے۔ اسکے مندر تو بیت نسور اور اسکے ستجاد أيضلبنون كوابل نشوركها لجامفا عرب سي بعض آثار قد تميهي جومندر ظاہر ہوئے ہیں اُن میں مندر کے دروازوں برگیدھ کی تصویر ملتی ہے جواسی معبود کی علامت ہے۔ وَ لِاحَوْلَ وَلَافَةً وَ إِلَّا مِاللهِ .

دس، حربی حقی النید طوفان کے آغازہے قبل سبیدنا نوح علیہ انسلام کوو^{ح کے} ذرابعہ مدایت دی گئی کرجب عذاب سفروع ہوجا کئے تو ظالموں کے بارے ہیں ہم سے شفارسش نہ کرنا یحیونکدان کو ڈادِ دیئے جانے کا فیصلہ

كالمتمل بيغام حببكسي قوم كوپہنج جا ناہے اور اسكی حدیوری ہوجاتی ہے مرخرقوم اسكوسليم كرنے برآما دہ نہيں ہونی تو تھے سنت الٹر دالٹری غادت ہے رہی ہی كەأس توم كوصرف أس وقت تك مهلت دى جانى ہے جب تكر أس بي كچھ تھلے آ دمیوں کا وجود کا فتی ہو۔ مسکر جب اُس قوم سے نیک افرا دسب مکل تھکتے ہیں اور ما باقی صرف فاسدعناسر کاہی مجموعہ رہ جا تاہے تو تھے رائس قوم کو النیرمہلت نہیں دیتا۔ اُنکی ہلاکت میقینی ہوجا تی ہے اور انفین محسی مفی کی میں تیا الحردیا جا تا ہے : نیز اسے جست كاتقاضهم بيهي بوتام كرابيع فاسد مادّے كوضائع كرديا جائے، جنائج قوموں پرجوعذاب آیاہے وہ اسی نقطہ انتہا کے بعد آیاہے۔ فوم نوح کا انجام مجمی اسی شنت الٹرکے مطابق غرقابی کی سنگل ہیں

رم، وانشمندی بابے دانشی ستدنانوج علیہ استلام دریاہے سترنانوج علیہ استلام دریاہے

محقے اُسوفت لوگوں کو بیمل نہا ہت مضحکہ خیز معلوم ہوا اور نہیں ہمنس کراسگا مزاق اُڑا یا گیا کہ کیا کیٹن نر منے کے باسمندر سے سینکڑوں میں دُور کیا زبین کا یہ خطہ یا نی بین تبدیل ہوجائے گا ؟ اور کیا صرف نوخ سے جائے گا اور مسلم سب

ڈوب جائیں گے ہ

ر بین جو شخص حقیقت کاملم رکھتا ہے اور جسے معلوم تھا کہ کل بہاں فینے کی ضرورت بیش آئیگی وہ اِن نا دانوں کی اس نہی دلگی برکس قدرتعجب وحیرت محرّیا ہوگا کہ بیکسقدر نا دان اور فریب خور دہ ہیں کہ شامت اِن کے سر پر کھٹری ہی گرمطئن بیچھے ہیں اور اُلٹا مجھے دیوانہ سمجھ رہے ہیں۔

ابل دنیانے عقامندی اور ہے وقوقی کاجومعیار قائم کیاہے وہ اِس واقعہ سے کس قدر مختلف ہے ؟ نبیوں کی تعلیمات پر حلیا دانشٹندی ہے یا ہے دانشی ؟ اللہ ہم جیٹیم بھیرت عطاکر ہے اور توفیق عمل مھی!

ده) طوفان کی عالمگیری طوفان نوخ کے بارے ہیں مفترین کی دو رہے ہیں :-آول یہ کہ پیطوفان عالمگیر تھا

جو پورےخطہ ارضی کو اپنی گرفت میں لے آبیا تھا۔ دوتم: ۔ پیکہ پیطوفان اُس خساص علاقة تک محدود تھا جہاں قوم نوځ آبا دھی۔

تاریخی روایات ہر ذکو خیال کی تائید ہیں ہیں۔
لین قرآنی این ارات بہلی رائے سے قریب ہیں، اگرچہ قرآن کیم ہیں کسی مگراہی کوئی وضاحت نہیں ملتی جس سے طعی طور پر کوئی فیصلہ معلوم ہوجائے بہرطال واقعہ کا انحصار اس پرنہیں کہ بیطوفان عالمگیر تھا یا محدود بالبین بیحقیقت تھی کہ بیطوفان مہابت ہولئاک اور نحضیناک مم کا تھاجس کی مفصیل آگے آرہی ہے۔
ہابت ہولئاک اور نحضیناک مم کا تھاجس کی مفصیل آگے آرہی ہے۔
جبیباکہ کہا گیا قرآنی اسٹ ارات مفسرین کی پہلی رائے کے زیادہ قریب ہیں جبیباکہ کہا گیا قرآنی اسٹ ارات مفسرین کی پہلی رائے سے زیادہ قریب ہیں

ہدایت کے چراغ مبلد اوّل

کہ پیطو فان عالمگیر تھا اور زمین کے پورےخطہ کو اپنی گرفت میں گئے ہوئے تھا سوائے اہل شنتی سے ہر جاندار اسمیں ہلاک ہوا۔

مندرجه وغوماتِ قرآن إسكى تائيد كرتى بن :-

وجہاوال : سورہ بنی اسرائیل کی آیت علا سے معلوم ہوتا ہے کہ طوفان کے بعد کی انسانی نسلیس حضرت نوح علیہ التسلام اور اُن لوگوں کی اولا دہیں جن کو الٹرتعالی نے شتی میں نجات دی تھی۔

ذُيرَيَّة مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نَوْجٍ إِنَّهُ كَانَ عَبُكًا أَشَكُوْرًا

(بنی اسرائیل آیتِ علا)

دا بے لوگو) تم اُن لوگوں کی اولا دہوجنہ بیں ہم نے نُوخ کے ساتھ مخشق ہیں سوار کیا تھا، بیشک نوح ایک مشکر گزار بندہ تھا۔

اس آیت ہیں اہل متے کو بنی اسرائیل کی تاریخ سے عبرت دلائی جارہی ہے کہ اللہ تعالیٰ کی طون سے کتاب پانے والے دیہو دونصاری ہنے جب رسولوں کے مقابلہ بیش آبا ؟
رسولوں کے مقابلہ بین کسرامطایا تو دیکھوان کے سامھ کیا معابلہ بیش آبا ؟
لہٰذا نوع اور اُن کے سامھیوں کی اولا دہونے کی حیثیت سے تمہار ہے لئے بہی لازم ہے کہ تم صرف اللہ واحد ہی کو اینا معبود بناؤ، کیونکہ جن کی تم اولاد ہووہ اللہ واحد ہی کو معبود بنائے کی بدولت طوفان کی تباہی سے اولاد ہووہ اللہ واحد ہی کو معبود بنائے کی بدولت طوفان کی تباہی سے منہ

ہے ہے۔ الغرض آیت کے الفاظ سے معلوم ہو تا ہے کہ میہو دونصاری اور قرآن کے دگیر مناطب دجس ہیں ساری اقوام شامل ہیں) طوفان نوئع سے سجات یا فتہ

> افراد کی اولاد ہیں۔ والٹراعکم۔ پر پر سریقہ میں موجود کی مان کی تاریخ کا ت

وجه دوم : سورة مريم كي آيت عده مجى عالمكيرطوفان كى تائيدكرتى ہے۔

أو لله الله الله الله عدالله عكيم من الله عليم من الله عن الله عليم من الله عن الله عن الله الله عن الله الله عن الله عن الله الله عن الله الله عن الله الله عن الله الله عن الله عن

اور اُن لوگوں کی نسل سے ہیں جنہیں ہم نے نوح کے سب بھرکشتی ہیں سوار کیا تھا۔

اِس آیت میں اولا دِ ابراہیم اور اولا دِ مِعقوبُ کا بھی نذکرہ ہے لیکن میہ سب حضرت نوح علیہ التام کے بعد ہی کے ہیں اس لئے میتی تحدیدی کے ہیں اس لئے میتی تحدیدی کے ہیں اس لئے میتی تحدیدی تحدیدی کے ہیں اس لئے کے میتی تحدیدی تحدیدی اولا دیے میلیں معلوم ہواکہ الم کشنتی کے علاوہ سارے انسان ہلاک ہوگئے تحقے۔ علاوہ سارے انسان ہلاک ہوگئے تحقے۔

وجه سوم : قرآ بی صراحت سے مطابق الٹرنعالے نے حضرت نوح علیہ التلام کو ہرایت فرمانی کرششتی میں ہر جاندار کا ایک ایک جوڑ ارکھ لیا جائے ۔"

(سورهٔ مومنون آیت عطم)

اس ارت دکی واضح اور بلا تکلف توجیهه به ہی مکن ہے کہ طوفان عالمگیر تھا ور نہ نسل جیوانی سے تخفظ کا کوئی اور معقول مطلب نہیں ہوسکتا ۔ چونکیطوفان عالمگیر تحقا اس لئے نسل جیوانی کی مقا وسلامتی سے لئے ہر جوارا محضنیٰ میں رکھا گیا۔

وجہ چہارم : حب مجنی قو موں پر نبیوں کی آگا ہی کے بعد عذاب آیا ہے ، آغازِ عذاب سے قبل نبی اور اُن کے اصحاب کو ہجرت کر جانے ، مشہرے ہا ہر ہوجانے' یاکسی خاص خطرت میں آجانے کا حکم دیا گیا ہے جبکی وضاحت فرآن تحیم ہیں یاکسی خاص خطرت میں آجائے کا حکم دیا گیا ہے جبکی وضاحت فرآن تحیم ہیں

موجودہے۔ کین ستیدنا نوح علیہ است ام کوطوفان سے قبل جو کم دیا گیا وہ اِن تمام صورتوں سے بالکل مختلف ہے یعنی حضرت نوح علیہ الت الم تو اپنے ہی ملک میں اپنی ہی قوم کے اندر اُسی خِطراضی پرمضتی میں پنا ہ لینے کی دایت گئی۔ اگرطوفان عالمگیر نہ ہو تا تو یع صوص صورت اختیار کرنے کی کوئی قابلِ ذکر وجہ معلوم نہیں ہوتی ؟ ورنہ زمین کے کسی مجی خطہ میں پنا ہ لینے کی ہوایت ملتی ، یا دیگر انبیار کی طرح ہجرت کرجا نے کا حکم دیا جاتا ، والٹراعلم ۔ معلوم ہواکہ طوفان عام مخا پورے خطہ ارتبی تو محیط سخات ہی توکشتی میں پنا ہ

لینے کی ہرایت کی گئی۔

وجہ پیجہ : طو فان کی نوعیت کوجن الفاظ اورجس عنوان سے قرآن حکیم نے ذکر کیا ہے وہ اس بات کی تائید کرتے ہیں کہ بیطوفان عالمگیر ہی تھا۔

سورهٔ قمرآیت ملا ، ملا کے الفاظ یہ ہیں :-فَفَتَحُنَّا أَبُوابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنهُمِيرِةً فَجَدُكَ

الأكرض عيونا دالقرآيت علا)

یس کھول دیئے ہم نے آسمان کے دروازے موسلا دھار

بارسش کے ساتھ اور زمین سے چینے جاری کر دیئے۔

یا نی کے آسمانی دروازوں کا کھول دیاجا نا اور زمین کوجیٹ تہ آب میں تبدیل فرد باجانا عالمی طوفان ہی کی نشان دہی کرتاہے اور عقلی طور بر بھی یہ ہی

مفہوم ہوتاہے۔ اسی آیت میں فیتکھناکی ایک قرأت فَتَکُمناً (بالتشرید) بھی مٰدکورہے جیکے معنی بوری طرح کھول دینے سے ہیں معنی یا بی سے آسمانی دروازے یوری طرح محصول دیتے سکتے ۔ خطا ہرہے بیعنوان مسی معمولی طوفان سے لئے

سور کُو ہود آیت <u>مہم</u> ہیں اس طوفان کے اختیام کا تذکر ہ اسطرح کیا گیاہی۔ وَقِيْلَ يَآ أَرْضُ الْبُلِيهِ مَآءً لِهِ وَ يَاسَمَاءُ أَقَلِعِهُ الآية

حکم دیا گیا،اے زمین اپنا سارا پانی نگل جا اور اے آ سمان

ان الفاظ کاسپیرھا سادھامطلب بیہی سمجھ میں آتا ہے کہ طوفان پورے خطهُ ارضی کومحیط تھا۔ نیز سور ہُ الصّفت (آبت علیے) کے الفاظ بھی ا س بات کی تائید کرتے ہیں تحرکھوفان سے بیچنے والے ہی آئندہ سیل انسانی کا سبب بے ہیں۔ آیت یہ ہے بہ وَجَعَلْنَا ذُرِیَّتَ مُ هُمُ الْبَاقِانُنَ. الآیة

اور ہم نے نوع اور اہلِ سفینہ کی فریت ہی کو آئندہ بافی رہنے

والابن دیا۔ اس عبارت سے بھی عالمگیر طوفان کی تائید ہوتی ہے۔ نیز سور ہ نوح آیت عالا سے الفاظ بھی یہ ظاہر کرتے ہیں کہ یہ عنداب عمومی قسم کا تھا۔ حضرت نوح علیہ التالام النہ تعالے کا اذن پاکریہ دعاکرتے ہیں :-دَیتِ لَا تَنَ دُعَلَے الْاَئْمُ ضِ مِنَ الْکَافِدِیْنَ دَیتَ اللّا

اے میرے رب ان کا فروں میں سے کوئی زمین پر کینے والا

نہ چپوٹر رسب کو ہلاک کر دے)
الٹر تعالے نے حضرت نوح علیہ التلام کی یہ دُما قبول فرمائی اور حضرت
نوح علیہ التلام کوئٹتی میں اہل ایمان کے ساتھ پنا ہ لینے کاظکم دیا۔ نیب نہ سور کہ ہود کی آیت مہم میں الشرتعالے نے حضرت نوح علیہ التلام کی دُما قبول فر ماکر قوم کا یہ انجام ان الفاظ سے بتلایا۔
قبول فر ماکر قوم کا یہ انجام اِن الفاظ سے بتلایا۔
وَقِیْل بُعُنْدًا اِللَّفَاءُ ہِدِ الظَّالِمِینُ ،

اور سمہ دیاگیا کہ ڈورہوئی ظالموں کی قوم۔ معلوم ہواکہ زمین سے سارے کا فرہلاک ہوسے تھے۔ والتراعلم۔

(۱) شبر کا از الے استحقیق پرجواو پر بیان کی گئی کی طوفان عالمگیری استجاری سب کی از الیم سوائے اہل سفینہ زمین کا ہر شفس غرقاب ہو گیا ، اوی النظرین پریٹ بیش آتا ہے کہ بیمذاب قوم نوع کی بغاوت و سرحتی کی بنا پر آیا تھا لیکن زمین کی دیچر قومیں اسمیں میوں غرقاب مردی گئیں ؟ یہ تو بے قصور تھے ، آیا تھا لیکن زمین کی دیچر قومی اسمیں میوں غرقاب مردی گئیں ؟ یہ تو بے قصور تھے ، ملاوہ ازیں زمین کے دیچر جا نداروں کو اسمیں میوں ہال کیا گیا ؟ جبکہ جانور عرف کو اسمیں میوں ہیں ؟

. میں ہوں ہے ۔ حقیقت یہ ہے کہ یہ شہر صرور پیدا ہوتا ہے خاص طور پر ان قوموں کے ہارے میں جوزمین سے دُور دراز علاقوں ہیں موجود تھیں اور مکن ہے جہاں حضرت ہارے میں جوزمین سے دُور دراز علاقوں ہیں موجود تھیں اور مکن ہے جہاں حضرت حلدا ول

نوح علیہ ایت لام نبلیغ کے لئے تنشہ ربین بھی نہ لے گئے ہوں ؟ نتين جيباكه بيسينجسبزظا مرىء ويسهري نها ينسطى فتسم كانجى يرينت لت بعنی قانون الہی کو سمجھنے میں اکثر لوگوں کو علطی ہوئی ہے اور بیسٹ کیہ بھی اسی علطی کی وحیہ پیدا ہوا ہے" سنت اللہ" کو مجھنے سے لئے مفوری سی تفصیل جان لینی فنروری ہے۔ سمارامث ب**ره ہے تحرجب تھی زمین پر امراض، و ہائیں مجبوٹ پڑتی** ہیں یا طوفا^ن اور زلز لے یا ایسے ہی کوئی دوسرے حوادث سینٹ آتے ہی تو وہاں می آبادی ہیں نیک و بد، کا فروسکم، مجرم وغیرمجرم سب ہی اِن کی لبیٹ میں تا جائے ہیں۔جب حسی شهر می زلزله آتا ہے تونیک و بد دونوں پر نکیساں اثر کرتا ہے۔ حب کو بی و باتھیلتی ہے تونیک محرداراور بدکر دار دونوں ہی اسی زد میں آتے ہیں اور و ہ دونوں کے رشتَه حیآ

کیلئے کیساں مہلک ثابت ہوتی ہے۔

البته آخرت کے لحاظ سے دونوں ہیں زمین آسمان کا فرق ہوتا ہے۔الدُعزوب کے باغی ونا فرمانوں کے لئے بہ حوادث عذاب الہٰی بن جاتے ہیں اور مطبع وٰما نبردارو^ں کے لئے موجب سعادت اور درجات کی بلندی کا ذریعہ بنتے ہیں۔ موت توہر جاندار کو بهرمال آنی ہی ہے اُن سے مفسوم میں اسی طرح موت مقدّر کی تھی محتی الین جوعد اب نبیوں کی آگا ہی کے بعد آتا ہے اسمیں اللہ تعاکے کی سنت اس طرح رہی ہے تھ نبی کو بدرایعہ وحی وفنت سے ہیلنے اطلاع دیری جات ہے اور اُنصیں سنتھ ہڑے موُ ور جلے جانے کا محم کیا جا تا ہے۔ اسکے بعد حبشلانے والوں کو عذاب میں محرفت ار

نخرلیا جا تاہے۔' میعنی''سنت اللیہ''نئی کی حیات میں بدل جاتی ہے ،اچانک اورغیرمتوقع نامیسی البار ''مرتا ہے ملکہ نیکولہ طور پرعذاب ٹوشنہیں بڑتا اور نہ ہی نیک وید دونوں بریکیاں آثر ہو تاہے بلکہ نیکوں کونبٹی سے سامخفوظ کر دیا جا ناہے۔انبیار کرام کی پورٹی 'ناریخ ہیں' سنت الٹر'' کا به ہی معاملہ ریا ہےجس کی صراحت فرآن حکیم مل جا بجاموجود ہے۔لہذا طوفانِ نوخ مين ونيات كفركا وه سب حصه بربا دكر ديا گياجو نبغاوت و نا فرما في شيرانجام ميس آنے والے عذاب سے دوجار ہوتاہے۔

اب بہمعاملہ الٹرننعالے کے شیردے کہ جن عافل بالغ انسانوں نے

جلدا وَلُ

ہات کے جاغ نبیوں کی بغاوت کی بھی اُن کے حق بیں پیطو فان دائمی عذاب بنا اور جومعصوم وغیر عافل عضے وہ آخرت کے عذاب سے مامون ومحفوظ قرار پائیں گے۔ ایک دوسرا جواب یہ بھی دیا گیا جیسا کہ تفسیر رُوخ المعانی میں ابن عَسا کر کی روایت سے نقل کیا گیا ،طوفان نوعج سے جالیش سال قبل قوم یں ولادت کا سلسلہ قدر تا بند بہوگیا مضا جو ہے تھے وہ عافل و باننج ہوگئے اور طوفان کے وقت کوئی مجھی غیر بائغ نہ مقا اور سب سے سب ظالم و باغنی تھے، لہذاسب کو ہلاک کر دیا گیا۔ رہی جانوروں کی ہلاکت وہ اِن سے حق میں مبنزلہ موت طبعی تابت ہوئی۔ موت کے لئے آخر کوئی نہ کوئی سبب تو بنتا ہم اِن جانوروں سے حق میں ایساموقعہ اِنی طبعی موت کا ذریعہ بنا جو غرفا ہی کی شکل میں ظاہر ہوا۔

(۵) ایک اور تشبه کا ازالک حب تیار ہو کی توالنگر تعالے نے اسس کشتی میں جیاں اہل ایمان کو سوار ہونے کا

حکم فرما یا و ہاں سر جانور کے ایک ایک جوڑے کو بھی سٹ تقد کھ تینے کا امر فرما یا تھا۔اس پرسٹ بہ ہوتا ہے کہ ایک شخص میں اتنی بڑی تعدا د کیوں کرسمائنگی جبکہ اسکے لئے ایک بڑا پرسٹ بہ ہوتا ہے کہ ایک شخص میں اتنی بڑی تعدا د کیوں کرسمائنگی جبکہ اسکے لئے ایک بڑا

جنگل بھی ناکافی ہے ؟ پیسٹ بھی محض سنت اللہ "کو نہ بھنے کے نتیجے میں پیدا ہوتا ہے۔ عذا کی پیٹگی اطلاع ، طوفان کی نوعیت ، تنوّر سے پانی اُ لمنا ، اسمان کا بھٹ جانا ، زمین کا سرایا چیٹ مدین جانا ، حشتی کا پہاڑوں جیسی موجوں میں سلامتی سے ساتھ علیت ، بھر محفوظ مقام براتر پڑنا ، اہل ایمان کا باقی رہ جانا ، سارے باغیوں کا ہلاک بہوجانا، ہر ایک خود اپنی ذات میں نہایت ہی تعجب خیزا ورنا قابل فہم ہے۔ لیکن پیسب واقعات ایک خود اپنی ذات میں نہایت ہی تعجب خیزا ورنا قابل فہم ہے۔ لیکن پیسب واقعات

ہیں جو بیس اسے۔ اسی طرح شنتی میں جانوروں کا سما جا ناتھی ایک واقعہ ہے اسپر تعجب سمیوں ؟ حقیقت یہ ہے کہ بیرسب امور خرقِ عادات "کے طور پر پینیں آئے اور "خرقِ عادات" ایسے ہی اُمور کو کہا جا تا ہے جسکے سمجھنے میں انسانی عقل عاجب زو در ماندہ ہے معجزات کی حقیقت بھی یہ ہی ہوتی ہے وہ حقیقتاً پینیں آتے ہیں ایک مولدا وَل

انسانی طافت اسکو بیش کرنے یا سمجھنے ہیں ہے بس ہے چونکہ اسمیں خارجی اسباب کار فرمانہیں ہوتے۔اس لئے ظاہر بین کوسٹ ہے ہوتا ہے کہ یہ میوں کرمکن ہے ؟ اور عادةً ایسے اُمور بیش بھی نہیں آتے اس لئے تنعجب وحیرت کا پیدا ہونا صروری ہے خرقِ عادات اورمعجزات میں اسباب کی صرورت نہیں بڑتی۔

علاوه ازین عقلی طور پرتھی ایک بڑی شت تی نیں حیوا نان کا سما جا ناکوئی امر محال نہیں ،موجودہ زمانے میں بڑے بڑے جہازوں نے اس حیرت و بعجب کوسرے ہی سے غلط و باطل کر دیا ہے ۔ لاکھوں ٹن سامان جہازوں کے ذریعیہ اِدھرسے اُ دھر

، رب با ہے۔ مخت تی نومنے کو اگر اس نظر سے دیکھیں تو منعجب وحیرت کی کو ٹی وصانظر نہیں آتی۔ علاوہ ازیں سٹٹسبہ اس لئے بھی بیدا ہوا کہ ٹہر ہر جانورے ایک ایک جوڑھے ہے'' ہوتسم کے جانور سمجھے گئے ، حالا نکہ ایسانہیں ہے۔ ملکہ جانوروں کی ایک خاص نوع اور مخصوص تعدا دمرا دے جس کاکشتی ہیں سما جا ناممکن ہے اور سکی انسان کوضرورت تھی تنفصیل

، لمہ حیوانات کو تمین طبقات میں قسیم کر دیا جائے۔ شکیائے جانور سے بیانی سے جانور سے فیضا کے جانور

انہی کے مجموعہ کو عالم حیوا نات کہا جا تاہے۔ میفیناً انکی تعدا د انسانوں کی تعداد سے تہیں زیادہ ہے جب کا تصور مطی مشکل ہے۔

ظاہرے شنتی ہیں بیسب جانورسپوارنہیں مقے اور نہ اسکی ضرورت تھی۔ یا نی کے جانوراس سے خود بخور خارج ہیں۔انگوششی میں رکھنے کی قطعاً ضرورت نہ تھی' یا نی خود ان کامسکن تھا۔

فضّا کے جانور مھی اسمیں شامل نہیں ہیں کیونکہ اس عالمگیرطوفان سے انہیں كوفي خطره نه تقاجب سع الحك حفاظت كي جاسكه

اس طرح مُجَلِمه عالم حيوا مَات كا ﷺ دِووتها بنُ حصّه خارج ہوگیا جنگوکشنی مِس ر تھنے کی ضرورت نہ تھی اور اِن کی ہلاکت کا کوئی اندیشہ نہ تھا۔ اب رہے صرف خشکی کے جانور اگرجہ اِن کی تعداد تھی بہت زیادہ سے کیکن

مِايت <u>معيراغ</u> ملداوّل

ان میں وہ جانور جومحاج تناسل نہیں ہیں اُن کومحفوظ کرنے کی ضرورت نہ تھی وہ لیج مجھی بیدا ہوسکتے ہیں، کہذاا یسے جانور تھی اسمیں شامل نہ ہتے۔ ان کے علا وہ جو اقسام ہاتی رہ گئے ہیں اُن میں سے صرف وہی جانور سوار کر لئے گئے ہوں جن سے البانی حاجت والب تہ تھی تا کہ طوفان کے خاتمہ کے بعد مقید افرادِ انسانی کو دشواری بیش آئے ' سوا یسے جانور مہت قلبیل ہیں۔ اِن میں سے ہرایک کا ایک ایک جوڑاک تی ہیں رکھ لینا کچھٹ کی خاتمہ ورند سے انسانی عاجت والب تہ نہیں جیسے درند سے اور غیر غذائی جانور اُن کو شبی میں رکھانہ گیا ہو۔ اور لبعد میں اللہ تعالے نے اپنی قدرت سے دوبارہ بیداکر دیا ہو۔ جنیا کہ میا کہ میں میں اُنسانی عاجت اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہوئی جس سے سٹ ہو بیدا کیا تھا۔ اس طرح کشتی کے جانوروں کی تعداد غیر عمولی نہ ہوئی جس سے سٹ ہو کہ ایک کیا تھا۔

معرور برای میں بربات بھی بیش نظر رہنی چا ہئے کہ عالمگیرطو فان سے سجات یا نت علاوہ ازیں یہ بات بھی بیش نظر رہنی چا ہئے کہ عالمگیرطو فان سے سجات یا نتہ افراد کی تعدا داستی مرداورعور توں سے کچھے زیادہ نہ تھی جیسا کہ تاریخی روا بات کی صراحت ہے ۔اتنی مختصرانسانی دنیا کیلئے کتنے جانور درکار بھے ؟ اسکا جواب خوداس شئیہ کوختم کر دیتا ہے کہ ایک شتی ہیں ہر جانور کا ایک ایک جوڑ اسکیے سماگیا ؟

رم، آزمار شن النكرة سيدنانوح عليه التلام مين قرآن عليم نے ايک موقعه پر اس طرح تنبيهه کی ہے:ايک موقعه پر اس طرح تنبيهه کی ہے:ايک موقعه پر اس طرح تنبيهه کی ہے:ايک موقعه پر اس طرح تنبيه کی ہے:ایک موقعه پر اس طرح تنبيه کی ہے:ایک موقعه پر اس طرح تنبيه کی ہے:-

دالمؤمنون آیت ﷺ بیشک اس قصے میں بڑی نشانیاں ہیں ، اور آزمائش توہم

کرکے ہی رہتے ہیں۔
بینی اس واقعہ میں عبرت آموز سبق ہیں جو یہ بتا تے ہیں کہ توحید کی دعوت دینے والے حق برسخے اور شرک پرا صرار کرنے والے حق برسخے اور شرک پرا صرار کرنے والے کفار باطل پر،اور آج وہی صور سے حال دربین ہے جو کسی وقت حضرت نوح علیہ السلام اور ان کی قوم کے درمیان تھی اور بہ کہ مجربین کو جائے کتنی ہی طرحیل لے لیکن فیصلہ آخر کا رہو کر رہتا ہے اور وہ لاز مااہلِ تی کے خلاف ہوتا ہے۔
سے حق میں اور اہلِ باطل کے خلاف ہوتا ہے۔

آیت ندکورہ میں اس کے بعدیہ جبلہ کہ

"آزمائٹ توہم کرتے ہی رہتے ہیں!"

اس حقیقت پرخبردار کرتا ہے کہ التارتعالے تھی قوم تو بھی اپنی زمین اور اسکی بیشار معتوں پرافتدارعطا کر ہے بس یوں ہی اسکے صال پرنہیں جھوڑ دیتا بلکہ اسس کی آز مائٹن کرتا ہے اور بیہ دیجھتا رہتاہے کہ وہ اپنے افتداراورعطا کردہ متوں کوئس طرح ارتد مال کی سے میں میں

استعمال کررہی ہے۔ قوم نوئے کے ساتھ جو کچھ ہوااسی قانون کے مطابق ہوااسکو قوت طا^ت زمین کا قبدار ، مال و دولت کی کثرت ،خوت حالی اور جبین وسکون جبیبی عمت ب دی گئی تھیں اور ایک طویل عرصہ تک یہ سامان عیش وعشرت باقی رہا ،کیکن التّد کی اس آبی تہدات نے ایمفیں اور غافل کر دیا جس کا انجام ملاکت خیزی کی سنسکل میں آیا۔ اسی طرح کوئی تھی قوم الیبی نہیں کہ اسکولیس یوں ہی حجود دیا جائے معتوں برآز مایا جا تا ہے اور اس معاملہ میں ہرایک تولاز ما سالقہ پیشس آتا ہے۔

(۹) میرمی صحبت کا انجام انری صحبت زمیرسے زیادہ مہلک ہوتی ہے جسکا انجام ذلت ورسوانی کے سواا ورکھنہیں

ہوتا ،اسی طرح نیک صحبت تریاق ہوتی ہے جو سینکاٹو وں مُرائیوں سے حفاظتُ تکا نہ یہ نہتر یہ

زرایی بنتی ہے، ۔ عقلہ بدانسان کو جیسے سکی کی تلاش رہتی ہے ویسے ہی بری سے اجتناب رہتا ہے۔ انسان کے لئے جس طرح نیکی کی ضرورت ہے اُس سے کہیں زیادہ نیاب صحبت کی ضرورت ہے اور جس طرح بدی سے بچنا ضروری ہے اُس سے کہیں زیادہ خطراک بروں کی صحبت ہے ۔ حضرت نوح علیہ انسلام کا بیٹا جس نے آغوش نبوت میں پرورشس پائی ہے اور بیوی جوزندگی تھررفیقہ حیات بن حرکا فروں کی صحبت اختیار کرتی ری دونوں نے کا فروں کا ابنجام پایا۔

سنسيخ سعدى رحمة الشرعليه الخياس قرآن مضمون كوابني رَباعي بي بري خوبصورتي كياسيا مخد السرطرح اداكيا ہے:- را) بیرنوع بابدان بنشست خاندان نبوتش گم شکر (۲) سگیاصحاب جهف روز سے چند ہے نیکان گرفت مردم سشکر (۳) صحبت صالح نرا صالح کئند صحبت طالح نرا طالح کمند

(ترجيم)

(۱) حضرت نوع کا بیٹا بُروں کاسائقہ دیا تو خاندان نبوت سے جُدا کر دیاگیا (۲) اصحاب مہمن کا گتا کہف والوں کاسائق ہیا تو وہ انسانوں بیں شمار کیسا گیا (۳) نیکوں کی صحبت تجھکو نیک بنا دیتی ہے بُروں کی صحبت بُرا بنا دیتی ہے

(۱۰) شکر گراری خضور است دی ہے کہ وہ شکر گزاد بندے بقے ۔ طبرانی کے شہادت دی ہے کہ وہ شکر گزاد بندے بقے ۔ طبرانی نے ایک روایت نقل کی ہے کہ آنحضور ملی الشرعلیہ و لم نے ارت او فرمایا : ۔

دوزہ رکھا کرتے بھے ، اور حصرت داؤد علیہ التسلام برماہ بین روزہ رکھا کرتے بھے ، اور نصف سال افطاد ، حضرت اراہیم علیہ السلام برماہ بین روزہ کے اسلام جو ایک میں میں روزہ رکھا اور مال جراوزہ دکھا اور مال جراوزہ کے اسلام برماہ بین روزے دکھنا میں مدین کی تنت رہے ہوں کی گئی ہے کہ مرروزہ دس روزوں کے برابرہ اسلام سال جم اور افطار بھی علیہ السلام سال جراوزہ دس اور افطار بھی کیا۔

پورے ماہ روزے دیجھنے کے مماثل ہوئے ۔ اس لی ظریب ابراہیم علیہ السلام سال جراوزہ در سے اور افطار بھی کیا۔

دوزہ در ہے اور افطار بھی کیا۔

ردره رسب ورام ملی الترعلیه و ام کامجة الوداع بین جب وادی عسفان برگزر موا توآپ نے ارث اوفر مایا که اس وا دی سے حضرت نوع ، حضرت مود، حضرت ابراہیم علیه الت لام مج سے لئے گزر ہے ہیں ، ابن جریر شنعض تابعین سے قل کیا ہے کہ حضرت نوح علیہ الت لام کی قبر مشریق سمجد حرام دمکة مکرمہ) کے اندر ہے۔ والنّداعلم ۔

(تصص الانبيار ابن كثيرره)

(۱۱) ایک اور قدیم جامل مرض حضرت نوح علیه استلام کی مخلص نه داراس طرح داراس طرح داراس طرح

سوال کرتے ہیں: "اے نوع کیا ہم تمہیں ہیں جبکہ تمہاری پیروی کرنیوائے

م در بچلوگ ہیں " (شعرار آیت اللہ)

نبیوں اور حق کی دعوت دینے والوں اور سلمین پر ابتدار آیان لانے والے اور انکی
دعوت قبول کرنے والے زیادہ ترغریب غربارغوام الناس ہی ہوتے ہیں جو اِن
داعیان حق کی دعوت و تبلیغ کا دروازہ ثابت ہوتے ہیں حضرت سے علیہ اسلام پر
ایمان لانے والے ابتدار یہ ہی غرب مجھیرے لاما ہی گیر استھے ۔اورخود ہمارے
رسول محریم سی الٹی علیہ وہم کی دعوت پر لبیک سمنے والے اہل نزوت سے مہیں زیادہ
نویب عوام ہی تھے۔ منفریباً ہرئی ورسول سے سامق مہی معاملہ بین آیا ہے ۔ قوم نوح
کے سرواروں سے سوال سے معلوم ہوتا ہے کہ انسان آبادی سے ایک حصہ کوئیے اور

احبوت فرًار دینے کا مرض مشرک جاہلی قوموں نیں نشرف سے جلا آر ہا ہے۔

"ا عرب میرابیطا دوب رہا ہے ، یہ میرے اہل سے ہے اور نیرا وعدہ سیّا ہے کہ تومیرے اہل سے ہے اور نیرا وعدہ سیّا ہے کہ تومیرے اہل کو بجات دے گا، تو ہر فیصلے پر قادر ہے "
لیکن بارگاہ خدا وند می سے بجائے استجابت یہ نبیبہہ دمی جاتی ہے :اے نوئے یہ تیرا اہل نہیں کیونکہ یہ برعمل "ہے ۔ آئدہ الیاسوال نہرا ہم تم کو نصیحت کرتے ہیں کہ نا دانوں جیسے نہوں "
جلیل القدر باب می نسبت بھی برمل بیٹے کو عذا ب سے بچا نہ سکی ۔

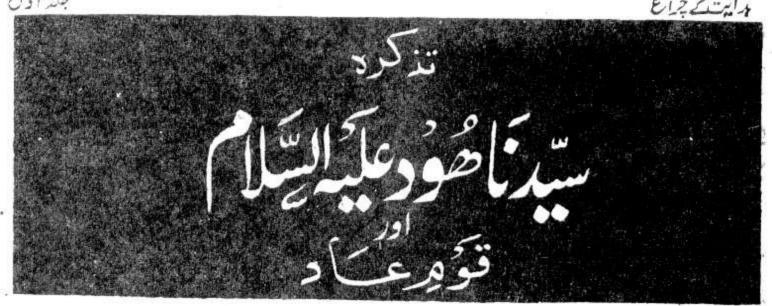
مسرکین مجاہد کے اسلام علی اسی خام خیالی میں ستھے کہ ہم حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد اور بیت النہ کے متو تی و مجاور ہیں ،ہم پر النہ کا غضب ہنہیں سکتا ۔

یہود و نصاری بھی اسی زعم و بندار میں ستھے کہ ہم بیوں کی اولا داور النہ کے بیٹے ورشتہ دار ہیں۔ ہمیں اگر عذاب ملاجی توجید ایک دن کا ہوگا۔ اور آج بھی اس طرح بہت سے غلط کار و لیے عمل مسلمان اس حجو نے و کھو کھلے بھر وسوں پر تکیہ کئے ہوئے بہت سے غلط کار و لیے عمل مسلمان اس حجو نے و کھو کھلے بھر وسوں پر تکیہ کئے ہوئے بہت میں کہ ہم فلال کی اولا دہیں، فلال بزرگ کی نسبت رکھتے ہیں، فلال سلسلے سے والستہ بیں ، فلال درگا ہ کے ستجا دہ نشین ہیں، فلال قبر شریف کے مجاور ہیں، ان سلسلول کی نسبت ضائع نہ جائیگی اور النہ ان سبول کی لاج رکھ ہی لے گا وغیرہ وغیرہ وغیرہ و خری دور سی سی سرب لگا تا ہے ۔

حضرت نوح علیہ الت لام کا یہ نگر ہ ایسے تمام مراہ کن منظریات برس زور سے صغرب لگا تا ہے ۔

صفر ب لگا تا ہے ۔

صفر ب لگا تا ہے ۔



جصرت ببود علیه الت لام شهور زمانه قوم عا دی معزّز ترین شاخ بنیم س علود "کے رکن رکین ہیں۔ حضرت نوح علیہ الت لام تے ایک صاحبزا دے سام کی اولا دہیں شاتویں يشت پرحضرت ہود عليه التلام کا تذکرہ ملتاہے۔ ب نامداس طرح بیان کیا گیا ہے:-ہود بن عبدالٹرین رباح بن خلود بن عاد بن عوص بن ارم بن سام بن نوح عليه السلام. حضرت ہو دعلیہ الت لام نہایت سے خ وسفید رنگ والے وجہید، دراز قد، نہایت تین وسنجيده اورئير وقارشخصيت رتصة عقه رئين مبارك درازا ورخوبصورت عقى -كاات كرالمي سآت جيد آياہے بسورة بهو دمیں یا نیخ جگه اورسور هٔ اعراب بین ایک جگه اورسور هٔ شعرار بین ایک جگه -سورة اعراف آيت- ٧٥ 1914.101.04.0. -- 11 سورځ هو د آیت-۱۲۴ حضرت ہود علیہ التالم جس قوم می طرف بھیجے گئے ہفے اُس کا نام ما عاد متھا۔ قومِ عاد كا تذكره قرآن حكيم كى وشل سورتون كب مكتاب-

اعْرَان - هوَد ، موَمنون . شعَراء - فصَّلت . الحقاف - الذارُّيات . اللهر الحاقة ، الفخر.

اِن سورِ توں میں حضرت ہود علبہ الت لام اور قوم عاد کے تذکر ہے تمفصیلاً اور کہبیں اختصاراً موجود ہیں ۔ فرآن محتبم روئے زمین کی میلیٰ آسمانی کتاب ہےجس نے توم عاد کا تذکرہ کیا ہے۔ اور سابقہ آسمانی کتب اس واقعہ سے خالی ہیں ۔اس لیے اظ سے اِس قوم کے حالات کا پہلا اور آخری ماخذیہ ہی محتاب متبین ہے جنیزاس کے بیان کردہ تفصیلات کی تا تیرطبقات الارض کے ماہرین کی تحقیقات سے ہی ملتی ہیں۔ تاہم جونکہ پہلا ذریعی طعی اور تقبین ہے اس لئے قرآن تحیم سے بیان کردہ واقعات کو قطعیت حاصل ہوگی ۔لہذا فرآن حکیم سے بیان کر دہ منفصیلات ہی قوم عا دی تاریخ کا إباسى سرمايه ببيء البتة إس كا دورسرا ذريع يعبني ما هرين طبقات الايض كى تلحقيقات جونكه تخمینی اور قباسی ہیں جیسا کہ خود اُن کا اعتزاف بھی ہے اس لئے اِن کے بیان کر و ہ وا تعات کی حیثیت ظن وتخمین ہے آگے نہیں جاتی ۔

حضرت نوح علیہ انت لام کی طرح حضرت مہود علیہ انت لام کی تبلیغی زندگی مجمی نہابت صبر آزیا ورطوبال شمکش سے دوجار رہی ہے۔

حضرت ہودعلیہ انت لام می تبلیغی جدوجہدے بیان کرنے سے پہلے قوم عاد كاتعارف ضرورى ہے جس سے اُس قوم سے مزاج و مذہب پردوشنی بڑت ہے۔

قوم عاد "عاد" عرب کے قدیم قبیلہ کے صاحب فوت واقتدار افراد کی جماعت کا نام ہے۔ عرب کے قدیم باشندئے اپنے وطن سے نکل کر شام،مصر، بأبل كى طرف ہجرت كرنتے بختے اور و ہاں اپنا قيام كرىيا مختا اسكے بعد غلبہ ونسلط كرسے و إل ا بني حَكُومتين تهي قائم كرل تقبيل ـ انهي في مختلف جماعتوں كو مثاد " "ثمود" تطسم جركيں" تحماجاتنا تھا۔ قرآن حکیم نے انہی اقوام کو عادِ اُولیٰ تمہا ہے۔ عادعربي زبان كالفظ ہے جليح معنی بلند و بالاسے ہیں جونکہ یہ قوم اپنی قدوقا میں نہایت دراز آور قوی تن تھی اس لئے اِس کا نام عا دیر گیا۔

فرآن عليم نے لفظ عا د کے ساتھ اِرَمْ کا لفظ مجی استعمال کیا ہےجس کے

معنی بھی بلندوشہور سے ہیں۔اس لحاظ سے قوم عاد آمم سابقہ بیں نہا بت معرون ومشہور قوم گزری ہے قوم عاد کا زمانہ حضرت سے علیہ التلام سے تقریباً وتو مہزار سال قبل كالسبح. قرآن محيم نے قوم عاد كو ُمِنَ بَعْدِ نَدْهِم نَوْجٍ "كَهْ كَرْقُوم لُوح كَخْلُفًا م میں نثمار کیا ہے .عاد کا مرکزی مقاممُ ارضِ احقات "ہے۔ بیمین کے علائے حضر موت کے شمال میں واقع تھا جسکے سٹ رق میں عمّان اور شمال میں 'ربع الخالی'' واقع ہے (طویل وعربین صحرا) متحرآج بہاں رہت سے ٹیپلوں کے سوا اور کچھنہیں۔ قوَم عاد كا مُذهب مت برستى تها . به قوم أنهى معبو د ون تو يوحتى تهى جو قوم نوع میں رائج تھے ۔اِن سے علاوہ صمود ، ہتار ،صدائعیٰ ان سےمعبو دانِ باطل ہیں ممناز

چونکہ عادسنسروع ہی ہے قوت واقتدار کے مالک رہے ہیں اس کئے وہ ابنی اس نفرنی وجسسانی طاقت سے محصنٹر میں التّروا مدکی خفیقی قوت واقت رار کو مُغِوُّل بِیجُھے اُوراُن کی زبانوں سے مین اَشکا مِیٹَا قُوَّ لاَّ

كون ہے ہم سے زيا دہ طافت والا جسے نعرے بلند ہونے كيے۔ انضين الثيرتعالے نے جہاں دنياوي اقتدار ديا مقا و کان خوت حالی اور بارغ البالى تعمى عطاكي مقى ، قوت أور اقتذار تے اسى اخساس نے المفیں مست اور مغروركرد بانفا.

ستمزوروں پرظلم کرنا ، جن کی مخالفت کرنا ،الٹرکے رسولوں کو حجشلانا ،نصیحت وخیرخوا ہی کرئے والوں کو اینا قیمن مجھنا ،اپنی قوت وطاقت براترا نا ،متکبروسٹ امرارکی بیروی کرنا ، بیباڑوں تو کاٹ کاٹ کرنشان وشوکت سے لئے اویخی اونجی عارثیں بنا ناءان کی زندگی سے بیاسی سیل و نہار تھے۔

اس بجڑھے ہوتے ماحول میں اللہ تعالے نے اسی قوم کے ایک معزز فسرد حضرت ہود علیہ الت لام کو ایک رشدو ہدایت سے لئے مبعوث فرایا۔

سيرنابرود عليه التلام كي تبليغ حضرت برود عليه التلام نے اپني قوم

کوسب سے پہلے اللہ واحد کی عبادت کرنے اور کمزوروں پڑللم نکرنے کی نصیحت شروع کی اورسا تھ سے اتھ بیکھی فرماتے مصفے تحداے قوم میں اپنی اس نصیحت پڑٹم سے توئی اجروعوض کاخوا ہاں نہیں ہوں ،میرا اَجرتوالٹر ہی کمے پاس محفوظ ہے۔ حضرت ہود علیہ است لام کی تبلیغ کاخلاصہ یہ تھا :۔

الترکات کرا داکر و که اُس نے تم کو ینعمت بختی ہے، قوم نوح م کی الترکات کرا داکر و که اُس نے تم کو ینعمت بختی ہے، قوم نوح م کی تناہی کے بعد تم کو اس زمین کا مالک بنایا ہے، خوش حالی اور فارغ البا دولت و نروت عطاکی ہے۔ لہذا اُسکی ان معتوں کو بذمجولو، اور خود مائت معبودوں کی پرستن سے باز آجاؤ، جو نہ تم کو نفع بہنچا سکتے ہیں نہ فقصان! موت و حیات، نفع وضرر، سب التارہے ہا تقہے ؟

ائے میری قوم کے لوگو! تم نے عرصے بک الناری نافرانی کی ہے آج تو بہ کرلوا ورثبت بیت سے باز آجا ؤ ، الناری رحمت وسیع ہے وہ تم کو اپنی رحمت سے معاف کر دیگا ، اس کی مغفرت چا ہو وہ بخش دیگا ۔ النارے ڈرو و ہ تم کو مزید قوت وطاقت دے گا ، مال وا ولا د میں برکت دے گا ، آسمان سے تم پر بارسٹس نازل کرے گا ۔ یا در کھو! برکت دے گا ، آسمان سے تم پر بارسٹس نازل کرے گا ۔ یا در کھو! بیس اپنی اس نصیحت و خیرخوا ہی پر تم سے کھا اجر وصله نہیں مانگتا . میراا جرالنارکے کا ل محفوظ ہے ۔"

قوم عادین باصلاحیت افراد توصرف چند ایک ہی مقے وہ توایمان کے آئے باقی تمام سرشس اورمتمرّد انسانوں کامجموعہ مقاجن برحضرت ہود علیہ السلام کی بہہ خیرخواہی نہایت شاق گزرنے لگی۔ پہلے توانھوں نے حضرت ہو د علیہ السلام کا نداق اُڑا یا، مچرد حمکیاں دیں ۔ تمہنے لگے: ۔ اے ہوڈ! " تمہادا نصحت کرنا نہ کرنا ہم رکوئی اثر نہیں کرے گا، گزشتہ زمانے ہیں

"تنہارانصیحت کرنا تہ کرنا ہم برکوئی اثر نہیں کرے گا، گزشتہ زمانے ہیں اس میں کرے گا، گزشتہ زمانے ہیں ہمیں لوگ ایسی باتیں کرتے آئے ہیں۔ اس میم کی بے وقوقی نہ کرو ،ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہمارے معبود وں ہیں سے کسی معبود کی تم پر مار پڑگئی ہے جس سے تنہاری عقل خراب ہوگئی ہے ۔کیا ہم ایک ہی خدا کے تجاری

ہوجائیں اور اُن معبود وں کوجھوڑویں جنہیں ہمارے آبار واجدا دپو جنے
آئے ہیں ؟ مجلا ایک فُد اہماری ضرورتیں کس طرح پوری کرے گا؟
اے ہود! اب بس کروہم اپنے معبود وں کوجھوڑنے والے نہیں ، اور نہ
تم پر ایمان لانے والے ہیں۔ اے ہود! اگرتم سیجے ہوتو اپنے فدا کا
وہ عذاب جسکی تم دھمی دیتے آئے ہولے آؤ؟ ہم تم سے مجھرا یک بار
کہتے ہیں کہ ہمارے معبود وں کا ذکر کرنا جھوڑ دوہم کو یہ بات سخت
ناگوارے "

حصرت ہو دعلیہ الت لام ان سے جواب میں فرمایا کرنے :-اُ ے ٰقوم کے لوگو اِینہ میں بے وقوف ہوں نہ مجھ رکسی آسیب كا اتر ہے۔ بیں بلاسٹ الٹرواہ ركا فرستادہ اور اسكا بندہ ہوں، میں اللہ کے سامنے ویسے ہی مجبور ہوں جیسے تم ہو، مجھکو بھی وہی بشری تقاضے بیش آتے ہیں جوتم کو بیش آتے ہیں ، 'میں نم ہی جیسا بہشر ہوں۔الپٹرتعالے نے محبکوا کیے کلام اور وحی کے لئے نتخب کیاہے. میں تم کو اُس کی مرضیات اور اخکام سے آگاہ کر تا ہوں، میرابستر شہونا تمہارے لئے تعجب کی بات بن گیا ہے۔ حالانکہ مجھ سے میلے جتنے بھی رسول آئے ہیں وہ سب بنشر ہی محقے اور اپنی ہی قوم سے محقے جبیساکہ میں تمہاری قوم سے ہوں ، میں اپنے خگرا اور تم سب سطو گوا ہ بناكرسب سے يہلے اعلان كرتا ہوں كەبس اس اعتقادسے برى ہوں کہ خدا کے سوا کوئی مجھے منفع یا نقصان بینجا سکتا ہے۔ اگر تمہارے بتوں میں البی کوئی قدرت ہے تو وہ مجھے نقصال پہنچا نے میں جلدی کریں ، میں اہنے خدا ہی پر معروسہ کر ناموں جیکے قبضۂ قدرت میں کا تنات کے تمام جا ندار وں می موت وحیات ہے۔ ا ہے میری قوم سے لوگو! تم بجیلی قوموں سے حالات سے عبرت ماصل کرد، ان کی تباہی وبڑیادی سے سبق لو۔ اور یہ یاد وكهوكه جب الترتعالے كا فيصله موجائے كا تجيرتمهار آكوني عذر كام

نہ وے گا۔

قوم عاد نے جب یہ باتیں سنی تو حیرت میں پڑگئے اِن کی سمھ میں نہ آیا کہ ایک خدا کی پر ستن کے کیامعنی ؟ آبار واجداد کے قدیم طریقوں کو ایک نوجوان کے تینے برکیوں کر حیوڑا جاسکتا ہے ؟ یہ توہمارے بزرگوں کی سخت توہمین ہوگی ۔ ہم اپنے معبود وں کو کئی مال برجی حیوڑنے والے نہیں ۔ یقینًا ہو دکوہمارے معبود وں کی مار ٹرکر ہی رہے گی یار ٹرکر ہی رہے گی ۔

اس طرح قوم کی مخالفت وسرکشی طرحتی رہی مجبران کاغیض وغضب مطرک اسطا -حضرت ہو دعلیہ السلام کی تکذیب و تذلیل کے دریے ہوگئے۔ اُن کومجنون اور خبطی سجینے لگے۔ آخر کارحضرت ہو دعلیہ الت لام نے اُن کی سسل بغاوت وسرمشی

کے خلاف بیرا علان کر دیا کہ:۔

"اگر قوم کا یہ ہی حال رہا اور اُکھوں نے اپنے ہیں کوئی تبدیلی پیدانہیں کی تواُن کے لئے ہلاکت مقینی ہے ،الٹرتعالیٰ اِنہیں ہلاک کرتے دوسری قوم کو زمین کا مالک بنا دے گا ، اے قوم عقل وہوشس سے کام لیے خدا کے فیصلے کا وقت قریب آگیا ہے ، اس وقت نا دم ہوئے سے کام سے خدا کے فیصلے کا وقت قریب آگیا ہے ، اس وقت نا دم ہوئے سے کام رہے ، رہے ، رہے ،

ہے کچھ فائدہ نہ ہوگا ."

قوم نے حضرت ہود علیہ الت ام کی سلسل اور بار بارنصیحت کا غلط فائدہ اُ کھا یا اور وہ سرکش و بمیاک ہوگئے ۔ گرکر حضرت ہود علیہ الت لام سے تھنے لگے :۔ اُنے ہوڈ تونے ہم کو اپنے خدا کے عذاب کی دھمکی دی ہے، اب ہم سے تیری روز روز کی صیحتیں نہیں سنی جانیں ،اگر تو اور تیرا

خداسپائے تووہ عذاب جلدلے آتاکہ یہ حجگڑافتم ہو'' حضرت ہود علیہ التلام نے مجبر مجھی خیرخواہی کے انداز ہیں جواب دیا کہ اگر اسکا تم کو اسٹ تیاق ہے تووہ دن مجھے زیادہ دورنہ ہیں ،اب تم تعبی انتظار کروا ور میں بھی انتظار کرتا ہوں۔

ع**زاب کی آمر** چنانچه عاد کی انتها نی بغاوت وسرکشی اور اینے مخلص وخیرخوا ہ

ہادی وڑہبری سلسل مخالفت وعنادنے ؓ قانون جزار ؓ کو قریب ترکر دیا۔ ِ مقطع آغاز کے طور پر پہلے خشک سالی کی شکل میں عذاب آیا جو اُن سے

تعمتوں کے چین لئے جانے کا باعث ہوا۔

یه غذاب چونکه کوئی نیا نه تخا قوم نے اسکو توادثِ زمانه "خیال کیا حضرت مود علیه استلام نے تھے تھے تھے خیرخواہی جاری رکھی بیمجھا یا کہ به تمہاری محمل ہلاکت و بربادی کا مقطر کا غازہے ۔ اب بھی باز آجا و مجھ پرایمان ہے آؤ۔ یہی راہِ نجات ہے لیکن بےنصیب قوم پورٹی کچھ اثر نہ ہوا۔ تب وہ غذاب آیا جو عالم کی تاریخ میں شاید

' سائت رات آتھ دن سل نیزوتند بادِصَر کاطوفان آیا، ہوا کا ہرا یک جھٹکا پیچھلے جھٹکے سے مث دید تر مقاجس نے سامے شہر کو تنہ و بالا کرکے رکھ دیا۔ قوی ہمبکل فدو قامت والی قوم جو اپنی جب سانی طاقت کے گھنڈ میں بدمست ہو جی تفقی اس طرح بیجس و حرکت چوطرف بخری بڑی تھی جس طرح آندھی وطو فان کے بعد تنا ور درخت اکھڑکر کر ٹرتے ہیں نوبھورت ہرا بھراسٹ ہر و بران و کھنڈ ربن کررہ گیا۔ اُن کے فلعنما مکانات جو پہاڑوں کو تراسش تراسش کربنا کے سکتے متھے رہت کے تو درج بن گئے ۔ مائی زندگی آنے والی نسلوں کے لئے عبرت بنا دی گئی۔

ہزار ہا برس گزرجانے کے بعد تمجی آج اُن کے نباہ شدُہ آ ٹارنبیوں کی تعلیمات مذرب :

سے روگر دانی سے عواقب و نتائج سے خبر دار کر رہی ہیں۔ ہلاک مث کہ ہ افراد کی تعداد رُوح المعانی سے مفسر نے چار ہزار لکھی ہے بہین بنو سام کی قدیم تاریخ سے بہتہ چاہا ہے کہ بہ تعداد اس سے کہیں زیادہ تھی۔ والتُّراعلم، یہ ہے عاد اُولیٰ کی وہ داستانِ عبرت جوابنے اندر چیم بصیرت کے لئے بیشمار پندونصائح رکھتی ہے۔ اور التُّراعلے و بر ترکے احکام می تعمیل اور نبیوں کی اطاعت سے

رُیزےعواقب و نتائج سے خبردِ ارکز تی ہے۔ حضرت ہو دعلیہ الت لام اور قوم عاد کا بہ ندکرہ قرآن حکیم کی مختلف سور توں میں مار میں دور

وران مضمون إِدَالَىٰ عَادٍ أَخَاهُوْدًا قَالَ لِقَوْمِ

اغبد واالله الخ داعراف آیات مطا تا مدین

اُور عاد کی طرف اُنکے مجالی ہو دکو بھیجا گیا ،امخوں نے کہا اے میری قوم الٹر کی بندگی کر و اُسکے سواتمہار اکوئی معبود نہیں ، پھر کیا تم دانکار وبڑملی کے نتائج سے نہیں ڈرتے ؟ اُن کی قوم کے سرداروں نے جو بود کی بات مانے سے انکار کردہے مقے جوا با کہا اے بودیم نوتمہیں بعقلی میں مبتلا سمجھتے ہیں اور ہم کو میقین ہے کہ تم حجو لے ہو! ہو ڈنے کہا اے میری قوم میں بے عقلی میں مبتلانہیں ہوں بگلہ رب العالمین کا رسول ہوں. تم کو اینے رب کے پیغامات پہنچا تا ہوں اور تمہارا امانتدا ر خیرخوا ہ ہوں کیاتم کواس بات پرتعجب ہوائح تمہارے پاس خودتمہاری ابنی قوم سے ایک آ دمی کے ذراعی تمہارے رب کی نصیحت آئی ہے تاکہ وہ تم کو خبردارکرے ؟ خدا کا بیاحسان یا دکروکہ قوم نوع کے بعدتم کو زمین كاجالت بنايا اورتمهي قدو قامت بي يعيلا وتمي زياده ديا بس خرا

كى إن معتول كو يا دكرو أميد كه تم فلاح ياؤ.

قوم نے جواب دیا اے موڈ کیا توہمارے یاس اس لئے آیا ہے کہم صرف ایک التّر ہی کی عبادت کریں اور اُن معبودوں کو چیور دیے جہیں ہمارے باپ دادا پوجے آئے ہیں ؟ احتیا تو بھرلے آ وہ عذاب جنی توہمیں وحملی دیتا آیاہے، اگر توسیّاہے۔ ہو دمنے کہا تمہاری رب کی بھٹکارتم پر بڑگئی ہے اور اُس کاغضب ٹوٹ پڑاہے ،کیاتم مجدے اُن فرضی ماموں پر حبگر اکرتے ہوجونم نے اور تہارے باپ وا دانے ر کھ لئے ہیں جن کے لئے التّرنے کوئی سند نازل نہیں کی ہے ، احتیا توتم تھی انتظار کروہیں تھی تمہارے ساتھ انتظار کرنے والوں ہیں ہوں۔ آخر کارہم نے اپنے کرم سے ہوڈ اور اُن کے ساتھیوں کو بچالیا اور اُن لوگوں کی جڑکا ہے دی جو ہماری آیات کو جھٹلاتے تھے اور و ہ ایمان لانے والے نہ تھے !

وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمُ مُورُدًا قَالَ يَا قُومِ اعْبُدُ مِا

اللهَ مَا لَكُو مِنْ إِلْهِ عَنْدُهُ إِنْ أَنْتُكُو لِآكُمُفْتَرُونَ - الخ

د سود آیات م^{ده} تا عنل

اورعادی طرف اُن کے بھانی ہود کو بھیجاگیا اُن مخوں نے کہا اے میری قوم سے لوگو اِ اللّٰہ کی بندگ کرواُ سکے سواتمہارا اور کوئی معبور نہیں بڑے نام صنی فرض معدی ہے ہیں کھی میں

نہیں تم نے محض فرضی معبود گھڑر کھے ہیں۔ اے میری قوم سے لوگو! میں تم سے اِس کام برکوئی اُجرت نہیں جاہتا،میراصلہ تو اُسی کے ذمہ ہے جس نے مجھے پیدا کیا ہے کیا تم عقل ہے کام نہیں لیتے! اور اے میری قوم کے لوگو! تم اپنے رب نے مغفرت چاہو تھے اُسکی طرف رجوع ہوجا وُ وہ تم پرآسمان کے در وازے تھول دے گا برسنے والے با دلوں سے ، اور ننہا ری موجود ° قوت پی_مزید قوت کا اصا فه کردے گا اور تم مجرموں کی طرح من نہ بھیرو۔ قوم نے جواب دیا: اے ہود! تولیمارے یاس کونی واصح دلیل لیکرنہیں آیا اور تم تیرے کہنے پر اپنے معبود ول کو چیوڑ کی والے نہیں ہیں اور نہ تھے یر ایمان لانے والے ہیں. ہم تو بیہ مجھتے ہیں کہ تیرے او پر ہماریے معبود وں میں ہے کسی ایک کی مار ٹرگئی ہے ۔ ہود عنے کہا میں اللہ کو گوا ہ کرتا ہوں ا ورنم گوا ہ رہو کہ بیر حوثم نے الله ہے سوا دوسروں کوخدانی میں شریک تطیم ایا ہے اس سے میں بیزار ہوں ۔ تم سب ملکرمیرے خلاف اپنی تدبیر میں کوئی کسر نہ جیبوڑ و بھر مجهے ذرائجی مہلت بنرد و بمبرائجروسہ توالٹریہ ہے جومبرائجی مالک ہے اور تمہارامجی مالک ہے کوئی جاندار ایسانہ بیں جس کی پینیانی التر کے قبضے میں نہ ہو۔ بیٹک میرارب سیدھی را ہ برہے۔ مجرآگر تم من مپیرتے ہو (تو بھیرلو) جو بیغام دے کرمھے تمہارے پاس بھیما گب مقاوہ میں نے تم یک پہنچادیا ہے اور میرا رب تمہاری جگہ دوسری قرم کو زمین کا خلیفہ بنائے گا اور نم اسکو تجید تعبی ننفصان نہ بہنچاسکو گئے بیشک میرارب سرچیز برنگرا ں ہے۔

اورجب ہمارامکم آگیا تو ہم نے اپنی رحمت سے ہوڈاوران

اورجب ہمارامکم آگیا تو ہم نے اپنی رحمت سے ہوڈاوران

اور کی جوان کے سے انھا کیاں لائے سطے نجات دیدی اورایک

سخت ترین عذاب سے انھیں بچالیا۔ اور بیہ ہیں عاد جنھوں نے اپنے

رب کی آیات کا انکار کیا اور اُسکے رسولوں کی بات نہ مانی اور ہر مشکت و

وسر شن سے حکم کی پیروی کی۔

وسر شن سے حکم کی پیروی کی۔

اخر کار اس فرنیا ہیں بھی اُن پر بھٹے کار پڑی اور قیامت کے

اخر کار اس فرنیا ہیں بھی اُن پر بھٹے کار پڑی اور قیامت کے

اخر کار اس فرنیا ہیں بھی اُن پر بھٹے کار پڑی اور قیامت کے

آخرکار اس تونیا بمیں بھی ان پر تھیٹ کارپڑ کی اور قیامت سے روز تھی را بے لوگوں مسن لو عاد نے اپنے رب کا انکار کیا۔آگاہ ہوجاؤ پلاکت میونی عاد کے لئے جوہوم کی قوم ہے :۔

الكت بوئى عادكے لتے جوہوگ قوم ہے:-ثُمَّةً آنشَانًا مِنُ كِعَدِهِ هِمُ قَدُّنًا أَخَدِ مِنَ عَالَمُ سَلَنَا فِيْ هُورَسُولًا مِنْ أَنْ اعْبُلُ وا الله مَا لَكُمُ مِنْ إلْسِلِمِ

علیدہ اور مصوبی اسلمہ و موری ایک دوسراسلمہ سروع کیا ہے۔ بھر اس کی قوم کارسول بھیجا کہ اللہ کی بندگی کر و سروع کیا ہے۔ بھر ان میں انہی کی قوم کارسول بھیجا کہ اللہ کی بندگی کر و تہارے کئے اسکے سواکوئی معبو ذہبیں کیا تم ڈرتے نہیں ؟

مین کو جشل تے بھے جن کوہم نے دنیا کی زندگی میں آسو دہ حال کردھا محا، سمینے کئے بیشخص ہوو کھی نہیں گر ایک بنسرے تم ہی جلیا ہو کہ تم کی اطاعت قبول کر لی تو گھائے اور اگر تم نے اپنے ہی جیسا ہو اور جو کھی تم بیتے ہو وہی یہ بیتا ہے۔ اور اگر تم نے اپنے ہی وہی یہ بیتا ہے۔ اور اگر تم نے اپنے ہی جو ایک بشری اطاعت قبول کر لی تو گھائے اور اگر تم نے اپنے ہی جو اگلاع دیتا ہے کہ جب تم مرکز مٹی ہوجاؤ کے بھی میں رہو گے۔ بیتم کو اطلاع دیتا ہے کہ جب تم مرکز مٹی اور کوئی نہیں بھی اور ایک اور کوئی نہیں میں گر اس یہ ہی و عدہ جو تم سے کیا جا رہا ہے۔ زندگی اور کوئی نہیں میں اور ہم دوبارہ مرکز زندہ نہیں کئے مائینے کے نہیں یہ ایک الیا آوی اور جینا ہے۔ اور ہم دوبارہ مرکز زندہ نہیں کئے مائینے کے نہیں یہ ایک الیا آوی اور جینا ہے۔ اور ہم دوبارہ مرکز زندہ نہیں کئے مائینے کے نہیں یہ ایک الیا آوی اور جینا ہے۔ اور ہم دوبارہ مرکز زندہ نہیں کے مائینے کے نہیں یہ ایک الیا آوی اور جینا ہے۔ اور ہم دوبارہ مرکز زندہ نہیں کئے مائینے کے کہ نہیں یہ ایک الیا آوی اس ہے جو النٹر بر جھوٹ بولیا ہے ہم اسٹر میں بھین کرنے والے نہیں ہیں۔ اور نہیں ہیں۔ والٹ بر جھوٹ بولیا ہے ہم اسٹر میں بھین کونے والے نہیں ہیں۔

ا سپر ہوڈنے دُعا مانگی خدا یا میری مد د فرما کیونکہ انفوں نے محبکو حبشلاقا ہے۔ علم ہواکہ عنقریب ایسا ہونے والاہے کہ یہ اپنے کئے پرشرمیار ہونگے۔ جنائجه في الحقيقت ايك بولناك آوا زنے اُنہيں آيكڑا اور ہم نے اُنہيں نخس وخاشاک کی طرح یا مال کر دیا ۔ سوبر با دی ہوئی ظالم قوم کے لئے۔

كُذَّبِّتُ عَادُ لِالْتُوْسَلِينَ. إذْ قَالَ لَهُ عُوا خُوْهُ مُر

هُود أَلَّ تَتَقُونَ. أَنَ الْمُعَارِآيات سَلا مَا مِنْ اللهِ قُوم عاد نے اللہ کے رسولوں کو جھٹلایا جبکہ ان سے بھائی ہو ڈنے اُن ہے کہا کیا تم الٹرسے نہیں فورتے ؟ میں تمہارے لئے ایک امانتدار رسول ہوں۔ لہذاتم الشرسے ڈرواور میری اطاعت کرو۔ میں تم سے اس کام پر کوئی بدلہ طلب نہیں کرتا ہوں میراا جرتورم العالمین کے ذمے ہے۔ یہ تمہاراکیا حال ہے کہ ہراو پنچے مقام پر لاحاصل عارت بنا ڈایتے ہوا وربڑے بڑے قصرتعمیر کرتے ہو تو پاکٹم کو یہاں ہمیٹ رہنا ہے . اور حب محسی پر ہاتھ ڈالتے ہو تو ظلم کا پنجہ ہی مارتے ہو۔ سو التُرے ڈرو ادرمبراکہا مانو۔اور ڈرواس الترسے جس نے تہبیں وہ کچھ دیا جوتم جانتے ہو تمہیں جانور دیئے ،اولاد دی، باغات دیئے ، جیشے دیئے . بنتیک میں ڈرتا ہوں تمیرا یک بڑے عذاب والے دن ہے ، قوم نے جواب دیا تونصیحت کریا نہ کر ہمارے لئے سب کیاں ہے۔ یہ باتلیں تو الگلے وقتوں سے یونہی ہوتے میلی آرہی ہیں۔اور سم عذاب ہیں۔ مبتلا ہونے والے نہیں ہیں۔

آخرکار انفوں نے ہود کو جھٹلا دیا اور ہم نے معبی انہیں ہلاک كرديا. بيشك اسميں أيك عبرت ہے متحر إن بيں سے أكثر لوگ ماننے والے نہیں ہیں۔ اور حقیقت یہ ہے کہ تیرارب وہی زبر دست ہے

رم والات . قَامِمَا عَادُ فَاسْتُكُبُرُوا فِي الْأَمْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ قَامِمَا عَادُ فَاسْتُكُبُرُوا فِي الْأَمْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ قَالُوْ الْمَنْ أَشَكُّ مِنَّا قُوَّةً - الْح رَحْمَ التَّحِده أيات مُصْ تَامِلاا) عاد کا یہ حال تھاکہ وہ زمین پربغیریسی استحقاق بڑے بن بیٹھے اور کمنے گئے کون ہے ہم سے زیادہ زُور آور؟ اُنھوں نے یہ غور منہ کیا کہ جس خُدانے اُنہیں پیدا کیا وہ اِن سے زیادہ زُور آور ہے، اور وہ ہماری آیات کا انکار ہی کرتے رہے۔

آخر کاریم نے اُن پر بادِ صَرِیم کاطوفان ایسے دنوں پی بھیجا جو رعذاب کی وجہ سے اُن کے حق بیں منحوس سفقے تاکہ ہم اُنکو اسس مُنیوی ڈیات میں رُسوائی کے عذاب کا مزہ حکھا دیں۔ اور آخرت کا عذاب تو اس سے بھی زیادہ ُرسواکن ہے۔ و ہاں اُن کی کوئی بھی مدد کرنے والا نہ ہوگا۔''

وَ اذْكُرُ آخَاعَادٍ إِذْ أَنْذَ رَقَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ الْحُ

" اے نبی ذرا اسمی عاد کے قومی بھائی ہودکا قصة سناؤ جبہ اُس نے مقام احقات ہیں اپنی قوم کو خبر دار کیا تھا اور ایلے خبر دار کرنے والے اُس سے بیلے بھی گزر چکے تھے اور اُس کے بعد بھی آتے رہے کہ اللہ کے سواحسی کی بندگی نہ کر دہ بھیے تمہارے حق میں ایک بڑے ہولناک ون کے عذاب کا اندیشہ ہے۔ قوم کے لوگوں نے کہا کیا تو اس لئے آیا ہے کہ ہمیں بہکا کر ہمارے معبود وں سے برگشتہ کر دے ؟ تو بھر لے آ اپناوہ عذا میں سے تو ہمیں ڈرا آ ہے اگر واقعی تو سی ہے ہودئے کہا اس کا محمد بھی جب ہودئے کہا اس کا محمد بھی گرا ہے میں تمہیں صرف وہ پنیام بہنچار ہا ہوں جسے دیچر محمد بھی گرا ہے میں تمہیں مرف وہ پنیام بہنچار ہا ہوں جسے دیچر محمد بھی جب اُن لوگوں نے اُس بادل کو اپنی وادیوں کی طوف آتے دیچھا تو سیمنے گئے یہ بادل ہے جو ہم کو سیراب کر دے گا، نہیں، بلکہ یہ وہ چرے جبکے لئے تم جلدی مچارے محمد بیہ ہوا کا طوفان ہے جس سے در ذاک عذاب ہے۔

اپنے رب کے حکم سے ہر چیز کو تباہ کر ڈوالے گا۔ آخر کار ان کا حال بہرہوا کہ ان کے رہنے کی جگہوں تے سوا و ہاں کچھ نظر نہ آٹا تھا۔ اسی طب رہے ہم مجرموں کو بدلہ دیا کرتے ہیں .

ان کوہم نے کان دیئے آنھیں اور دل ، مگرنہ وہ کان اُنکے کسی کا اُن کوہم نے کان دیئے آنھیں اور دل ، مگرنہ وہ کان اُنکے کسی کا آئے نہ آنکھیں نہ دل ، کیونکہ وہ الٹرکی آیات کا انکار کرتے سکھے اور اُسی چیز کے بھیریں آگئے جسکا وہ ندان اُڑاتے بھے ۔" وَنِی عَادٍ إِذْ اَرْسَلُنَا عَلَیْہِمُ اللّٰہِ یُحَ الْعَقِیلُمَ۔ الح

اور قوم عاد کے ہلاک ہونے میں خالق کا 'نات کی بہت سی نشانیاں ہیں جبکہ ہم نے اُن پرایک منحوس آندھی چلادی جس چیز ہوکر وہ گزرتی تھی اُسکو بوسسیدہ ہڑی کی طرح چور اکئے بغیر نہ جھوڑتی'' گنڈ بیٹ عاد' فکیفئے کان عَدا آبی وَ مُکنْ مِیں ۱۶

(الفمرآيات عشا تاعيي

تجھٹلایا عاد نے رسولوں کو بھرکیسا ہوا میراعذاب اور کیسی مقی میری بنیہات ؟ ہم نے ایک کسل نخوست والے دن سخت طوفانی ہوائان پر بھیج دی جولوگوں کوا بھا اُٹھاکراس طرح میمینک رہی تھی جیسے وہ جوسے اُکھوٹے ہوئے تھیجور کے تنے ہوں ایس میری بنیہات ؟ ہم نے اس دیجھلوکیسا مقامیراعذاب اور کیسی تھیں میری بنیہات ؟ ہم نے اس قرآن کونصیحت کے لئے آسان ذراعیہ بنایا ہے۔ تجھر کمیا ہے کوئی نصیحت قبول کرنے والا ؟

وَ أَمَّا عَادُ فَأَهُ لِكُوا بِرِيْحٍ صَرُصَرِ عَانِيَةٍ الْحَادُ الْحَادِ الْحَدُو الْحَادِ الْحَادِ الْحَادِ الْحَادِ الْحَدُ الْحَدُ الْحَدُ الْحَدُ الْحَدُ الْحَدُ الْحَدِي الْحَدُو الْحَدُ الْحَدُو الْحَدُو الْحَدُو الْحَدُو الْحَدُو الْحَدُ الْحَدُو الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُونِ الْحَدُ الْحَدُونِ الْعَلَالَ الْحَدُونُ الْعُلُونُ الْحَدُونُ الْحَدُونِ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُونِ الْعُلْمُ الْح

اُور عاد ایک بڑی سٹ دیدطوفانی ہواسے ہلاک کر دیئے گئے ۔ التٰرنے اُس آندھی کومسلسل شات رات آمٹھ دن اُن پرمسلط رسی دخم و بال ہوتے تو) دیجھتے کہ وہ و بال اس طرح بھاڑے گئے ہیں جیسے تھجور سے بوسیدہ تنے ہول۔ اب کیا اُن ہیں سے تو نگ تہہیں باقی بچانظرا آ ہے ؟ اور اسی جُرم کا ارتبکاب فرعون اور اسس تہہیں باقی بچانظرا آ ہے ؟ اور اسی جُرم کا ارتبکاب فرعون اور اسس سے پہلے لوگوں نے اور ش ہوجانے والی بستیوں نے کیا تھا۔ اُن سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سختی کے سب نے اپنے رسولوں کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کو بڑی سنے کہا تھا کہ مانے کی بات نہ مانی تو السّر نے اُن کی ساتھ کی بات نہ مانی تو السّر نے کی بات نہ مانی تو السّر نے کی سے بیاتے کی بات نہ مانی تو السّر نے کی بات نہ مانی تو السّر کی بات نہ مانی تو السّر نے کی بات نہ مانی تو السّر کی بات نہ بات نہ مانی تو السّر کی بات نہ بات نہ ہو بات نہ بات نہ ہو بات نہ بات نہ بات نہ ہو بات نہ ہو بات نہ بات نہ ہو بات نہ ہو بات نہ ہو بات نہ بات نہ ہو بات ہو

وَ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ

الیعسماید ۱۶ (الفجرآیات علاماید)

المیعسماید ۱۶ (الفجرآیات علامید)

ستونوں والے عادِ ارم کے ساتھ اس جیسی قوم وزیا کے ملکوں میں پیدا نہیں گئی تھی ۔ نمود سے ساتھ جنھوں نے وادی میں چٹانیں پیدا نہیں گئی تھی ۔ نمود سے ساتھ جنھوں نے وادی میں چٹانیں تراستی تھیں بیخوں والے فرعون کے ساتھ ۔ یہ وہ لوگ سطے جنھوں نے دنیا کے ملکوں میں بڑی سرکھنی مچیبلارکھی تھی ۔ اور اِن میں بہت فساد میار تھا تھا ۔

'' '' '' آخر کارتیرے رب نے اُن پر عذاب کا کوڑا بیسا دیا ۔ حقیقت یہ ہے کہ تیرادب گھات لگائے ہوئے ہے''

والتح عجب تر

(۱) احقاف والے صرت ہود علیہ الت لام جس شہری طون مبعوث کئے سے اس کا نام قرآن تھیم نے احقاف بیان کیا ہے۔ احقاف بیان کیا ہے۔ احقاف جی دیتے اونچے ٹیلے سے ہیں۔ یہ جمرائے عرب (الربع الخالی) سے جنوب مغربی حصے کا نام ہے۔ ہزار وں سال قبل یہ سرسنروٹ واب علاقہ تحت ہماں ایک طاقتور متمدن قوم آباد تھی لیکن آج میہاں کوئی آبادی مہیں ایک تق و دق جہاں ایک طاقتور متمدن قوم آباد تھی لیکن آج میہاں کوئی آبادی مہیں ایک تق و دق

رکیستان ہے جس کے اندرونی حصے ہیں جانے کی کوئی ہمت نہیں کرتا سے ہوئے ہیں ایک سیاح اس رکیستان کے جنوبی کنادے تک پہنچ گیا تھا وہ کہتا ہے کہ حضرموت شہر کے شمالی سطح مرتفع پر معطرے ہو کر دیکھا جائے تو یہ صحرا کم وبیش ایک ہزاد فیٹ نشیب میں نظرا تاہے ۔ اسمیں جگہ جگہ ایسے سفید قطعات ہیں جن میں اگر کوئی شے گر جائے تو وہ رہت میں غرق ہو تا ہے ۔ عرب مے صحرا نشین وہ رہت میں غرق ہو تا ہے کہ میں ہمت کر کے جسی ان علاقوں میں جانے ہے گھراتے ہیں ۔ وہ سیاح کہتا ہے کہ میں ہمت کر کے وہ ان تک بہنچا و بچھا کہ رہت نہایت باریک اور نرم ہے ۔ میں نے دور سے اس قطع میں ایک ہتیا دیو کا کوئی اور اس رہتی کا سرا ایک ہتیا دیو کہتا ہے کہ میں منٹ کے اندر اندروہ رہت میں غرق ہوگیا اور اس رہتی کا سرا ایک ہتیا دیو کیا ہو اس رہتی کا سرا ایک ہتیا دیو کیا تا کہ اس رہتی کا سرا گل گیا جس کے ساتھ وہ بندھا ہوا تھا۔

قوم عاداسی علاقے میں آباد تھی،موجو و پہشم مُرکلاً سے نقریباً ہوہ میں کے فاصلے برشمال کی جانب حضرموت میں ایک مقام پرحضرت ہود علیہ الت لام کام۔زار معروف مشہور ہے۔جسکی لوگ زیادت کیا کتے ہیں۔اہل حضرموت کا دعویٰ ہے کہ عاد کی ہلاکت کے بعد حضرت ہود علیہ الت لام حضرموت سے شہروں کی طرف ہجرت کر آئے مصح اور و ہیں وفات یانی'۔

حضرت علی شیسے بھی ایک اثر منقول ہے کہ حضرت ہود علیہ السلام کی فرشون حضرموت میں کثریب احمر (سرخ شیلہ) پر ہے اور اُن کے سر ہانے جھاؤ کا درخت ہے۔ لیکن اہل فلسطین کا اقعار ہے کہ حضرت ہو وعلیہ است لام کی فبرلسطین میں ہے۔ والتراعلم۔

ری کے حقیقت نام کے افراد نے آن کو بیوقوت اور حجوثا کہا، قوم کی تجھیں کے ان کو بیوقوت اور حجوثا کہا، قوم کی تجھیں نہیں آیا تھا کہ الشروا صدی عبادت سے کیامعنی ؟ صرف ایک ستی اسٹے بڑے نظام کا نات کا انتظام کیونکر کرسکتی ہے ؟

کا انتظام کیونحرکرسکتی ہے ؟ ان لوگوں کا خیال تھاکہ کا کنات کے لاکھوں شعبوں کے لئے ایک خداکی کارماز ممکن نہیں ،اس لئے انتھوں نے ونیا کے مختلف امور کیئے الگ الگ مجود قرار دے لؤتھے اور آئی ختلف الم بھی تھڑ ہے جفرت ہوڈنے انکی اس تجویز پر بارہ اعتراض کیا کہ اے قوم کیا تم مجھ سے اُن اموں پر چھکڑتے ہوجوتم نے اور تمہارے باپ دا دا دانے رکھ لئے ہیں جن کے لئے الٹرنے کوئی سندو دلیل نازل نہیں کی ہے۔

کوئی طاقت واقتداز مہیں نام ہیں جنی تم عبادت کرتے ہوان ناموں کے پہتھے کوئی طاقت واقتداز مہیں، تم نے سی نام کو بارشس کارب اور کسی کو ہوا کا ، کسی کو یان کا ، کسی کو دولت کا ، تسی کوصحت و بیماری کا خدا کہتے ہو۔ حالا نکہ ان میں سے کوئی مجمی فی الحقیقت کو سیم کرنے پر فطعاً آبادہ مذہبوئ انھیں تھی رہنہ ہیں ہے بیکن قوم اس حقیقت کو سیم کرنے پر نظام کا مُنات کو بحون کر انتے ہوئے جی بیکائنات کے لئے تقسیم کار ضروری ہے ، یہ قوم اللّٰہ تعالیٰ کے لئے اہل کارتجویز کرتی تھی مگر اللّٰہ کے وجود کا انکار نہیں کرتی تھی۔ قوم اللّٰہ تعالیٰ کے لئے اہل کارتجویز کرتی تھی مگر اللّٰہ کے وجود کا انکار نہیں کرتی تھی۔ کا کنات کے لئے اہل کارتجویز کرتی تھی مگر اللّٰہ کے وجود کا انکار نہیں کرتی تھی۔ کا کنات کے لئے اللّٰہ کا وجود جانتے و مانتے ہوئے جبی چند فرضی ہستیوں کو حاجت روائی استخاب و فریاد تھی ۔ اُن سے وکھ در دمیں استخاب و فریاد تھی کرتے تھے ، اورخوشی و مسترت میں اُن کے نام کا وظیفہ تھی پڑھتے کے لئے بران کی نیٹ تیں گزر حمیں مقیں۔ طریقے پر اِن کی نیٹ تیں گزر حمیں مقیں۔ طریقے پر اِن کی نیٹ تیں گزر حمیں مقیں۔

، مُوجِودٍه زبانے میں تھی بعض لوگ کسی انسان کومشکل ک^ی سہتے ہیں ۔ حالانکہ

مشکل کشان کی کوئی طاقت اِس کے پاس نہیں ہوتی ہے۔

مشکل کسی کو بختے بخش کے نام سے یاد کرتے ہیں۔ مالانکہ اُس کے پاس کوئی گئج

نہیں کہ کسی کو بختے بحسی کو داتا "کالفظ ہولئے ہیں مالانکہ وہ سی شی کا مالک ہی نہیں

کہ داتا بن سکے بحسی کو غریب نواز "کہا جاتا ہے ، مالانکہ وہ غریب اُس اقتدار میں

کوئی حصۃ نہیں رکھتا کہ کسی غریب کو نواز سکے بحسی کو غوث " (فریا درس) کہا جاتا ہی
مالانکہ وہ خود بندہ ہے، بندگی کے بندھنوں ہیں کسا ہوا بحسی کو "بندہ نواز" سجھا جاتا ہی
مالانکہ وہ خود وست بھی تھا کسی کی کیا دست گیری کرتا ؟ درحقیقت یہ اور السے سب
باوجو دیکہ وہ خود وست بھی تھی کوئی اقتدار، قدرت، اورطاقت نہیں جوان کے لئے جھگڑا کرتا ہے وہ دراصل صرف ناموں کے لئے جھگڑ تا ہے نہ کہ سی حقیقت کے لئے!

تيدنا بهود عليه التلام نے اپنی قوم کومیں حقیقت سمجھانی چاہی کیک اتنی کھی حقیقت

یہ دنیا کاعجوبہٰ ہیں تو اور کیاہے کہ مجبور اور بے بس انسانوں نے اپنے ہی وہم وحمان سے خدائی کا جننا حصہ جس کو جایا دے ڈالا ا وراسکو اینا ندسہب وایان تجى بناليا - فَسُبْعَانَ اللهِ عَمَّا يُشُرِكُونُ .

را اخرمی مهلت اقوم می بغاوت وگریزے حضرت ہود علیہ ات لام قطعاً ما یوس نہیں ہوئے بلکہ مسلسل ا فہام تفہم کاسلسلہ جاری رکھا

ا ورمختلف طریقوں سے پیحقیقت سمجھا تے رہے کہ اے قوم اپنی اُس محنی گزری حالت پر بھی اپنے رب سے معافیٰ جا ہو،اُسکی طرف پلٹ آؤ وہ تم پرارخمت کی بارش سے لئے آسمان کے دروازیے تھول دیے گا، تہاری موجودہ قوت میں مزیداضا فہ کر دیگا اور

تم کواچیا سامان زندگی عطا کرہے گا۔ بیحقیقت قرآن بحیم نے کئی مقامات پر ظاہر کی ہے کہ جب ایک قوم کے

پاس بنی کے دربعہ الٹیخظیم کامکمل بیغیام آجا تا ہے تو اُس قوم کی قسمت اُس بیغام کے سائقہ والبستہ ہوجاتی ہے، اگروہ قوم اُسکو قبول کرلیتی ہے توالٹر تعالیٰ اُس پر اٰپنی نعتوں وبرکتوں نے در واز کے کھول دایتاہے ،اوراگراس پیغام کو قوم رَ ڈکریتی ہے

توکچہ مہلت کے بعد اُس قوم کو ہلاک کر دیا جا تا ہے۔ انبیار کرام کی پوری تاریخ یہ ہی نیتا کج پیش کر تی ہے۔ الٹوتعالیٰ کی یہ سنت ہر قوم کے ساتھ بول ہی رہی ہے۔البتہ خاتم النبیین صلی التی علیہ ولم کی قوم کے ساتھ التُرتِعالے کی بیسنت اس سے مختلف ہے۔التُرتِعالے نے اپنی حکمتوٰں کے بیشِ نظ اِس کا اس طرح اظہار فرمایا ہے:۔

اللهُ مُعَينَ بَهُمُ وَهُمْ يَسْتَغِيْفِرُونَ - دانفال آيت عتما اورالٹرتعالے ایسا نہرینگے کہ ان میں آپ کے ہوتے ہوئے اُن کوعذاب دیں ،اور الٹرتعالے اُن کو عذاب نہ دیں گے جس حا^{کت}

میں کہ وہ استغفار کھی کرتے رہتے ہیں۔

زبنی وفکری ارتداداور ۱۰ بارید پڑھتاہے کہ فلاں قوم نے اپنے ۱۰ بارید پڑھتاہے کہ فلاں قوم نے اپنے ۱بی کوجھٹلایا تواسکو تباہ کر دیا گیا، فلاں قوم ابیات سنب کا ازالہ

نے نبئ کی مخالفت کی جسکے سبب ہلاکت سے دو چار ہوتی کسی کو زمین میں وصنسا دیاگیا محسی قوم پر آسمان سے آگ برس پڑی بھسی قوم کو زلزلہ نے تباہ تحر دیا بھسی کواصافہ مجلی کی کڑک نے آد بایا بحسی قوم کوغرق کر دیا گیا۔ تو دل بیں یہ سوال ببیدا ہوتا ہے کہ اس قسم سے واقعاتِ اب کیوں نہیں ہوتے ؟ جبکہ لبغاوت وسرکشی ، خدا ببزاری'

آخرَت فراموستی مُفروستُرک ، فسق وفجورانتها بی عروج بر ہیں ؟

اسکا جواب نہایت آبان ہے۔ در اصل بغاوت وسر متی کی قرومختلف صورتیں
ہیں۔ ایک بغاوت وہ ہے جو نبی ورسول کی موجود کی ہیں رُونما ہو، جس قوم ہیں نبی موجود
ہیں۔ ایک بغاوت وہ ہے جو نبی ورسول کی موجود کی ہیں رُونما ہو، جس قوم ہیں نبی موجود
ہوتا ہے وہ قوم نبی کی راست مخاطب ہوتی ہے اور السر عظیم کا پیشام اس قوم کو برامات
ملتا ہے۔ نبی کی زندہ شخصیت جو اپنی وات ہیں صدافت و دیانت اور امانت و ہراہ
کا سرج شد ہوتی ہے و والسر تغالے کی حجت کا زندہ ممونہ ہوتا ہے۔ حق پر واضح کہ بال وجب سے اس طرح اس موجود کی اسے اس طرح اس موجود کی معدرت بوم کے ایک حجت پوری ہوجاتی ہے۔ اس سے بعد اس قوم کیلئے معذرت بوم کے بعد وہ قوم اسکی سنحق ہوجاتی ہے۔ اس کا حیاب برسر موقع کیکا دیا جائے سالھ

اقوام انہی بنیاد وں پر ہلاکت سے دو چار ہوئی ہیں۔ بغاوت کی دوسری شکل جس پر اس طرح کے واقعات بیش نہیں آتے ہی کی صورت سے مختلف ہے ۔ حن قوموں کے پاس النٹروا حد کا پیغام براہ داست نہ آیا ہو بلامختلف واسطوں سے پہنچا ہوا ن کامعا ملہ ویسانہیں جیسا کہ نبی کی موجودگی ہیں بغافہ ومخالفت کا ہوتا ہے۔ اس کئے کہ حضرت محد صطفے صلی النٹرعلیہ ولم کے بعد نبوت ورسا کاسلسلہ ہند ہوگیا ، وی الٰی قیامتے سے لئے روک لیگئی ،معجزات کا سلسلہ مھی باقی مذر ہا، نبی کا وجود جو نور و ہرایت کا چلتا تھرتا نمونہ ہوتا ہے مکن مذر ہا، ان حالات میں بغاوت در کوشی وہ سائج پیدا نہیں کرتی جونبی کی موجود گئی ہیں بغاوت پرمرتب ہوا کرتے ہیں اسلے محتم نبوت کے بعد قوم کی سرکتنی و بغاوت پر اب اگر ایسے حوادث پیش نہیں آتے تو کوئی تعجب کی بات ہوسکتی ہے تو بیر کہ اسلی قوم پر اسسی شان کا عذاب آیا جساکہ اندیار کرام کوئی بات ہوسکتی ہے تو بیر کہ اس میں توم پر اسسی شان کا عذاب آیا جساکہ اندیار کرام کوئی و حصالا نہ والی قدم پر سی بیزا

شان کا عذاب آنامیساکد انبیار کرام کو دُو بروجشلانے والی قوم پر آنا تھا۔
لیکن اس کا پیمطلب بھی نہیں تداب مُجُرم قوموں پر عذاب آنے بند ہو گئے ہوں۔
آج بھی ایسی گمراہ قوموں پر حبوٹے بڑے تنبیبی عذاب آتے رہتے ہیں بنبین غور وفکر
کے زاوئے بدل گئے ہیں۔ خُدا بیزار اور آخرت فراموش اذبان نے ایسے حوا دث
کو تحادثہ اتفاقی "کا نام دیے لیا ہے" یا گردشیں زمانہ"کا نام رکھ دیا ہے یا مجرحسی
اسباب ظاہری کی طرف نسبت کردی ہے ورنہ جرائم پر جو حوادث آتے ہیں وہ وراصل
عذاب "ہی ہوتے ہیں۔

یہ ذہنی وفکری ارتدا دہے جو الٹر نعالے کی زات اور اُسکے قوانینِ فطرت کو تسلیم نہ کرنے کے بینچے میں پیدا ہوا ہے ۔

(۵) با و صرصر اقوم عادیر جوعذاب آیا اسی نوعیت نهایت دلدوزی۔
ایک طوفانی ہوائی جسے لئے قرآن کیم نے 'رُیج صرص' کالفظ استعمال کیا ہے۔ اسکے معنی ایسی ہوا کے ہیں جسکے چلنے ہے سخت شور بریا ہو۔ یشور خودہوا کی آوازے پیداہوتا تھا یا بھراطراف واکناف کی چیزوں سے حکرانے پر پیدا ہوتا ہو۔ بہرحال پیلفظ نهایت تُندو تیز ہوا کے لئے استعمال کیا جاتا ہے۔
پیوٹا ہو۔ بہرحال پیلفظ نهایت تُندو تیز ہوا کے لئے استعمال کیا جاتا ہے۔
پیوٹا ہو۔ بہرحال پیلفظ نہایت تُندو تیز ہوا کے لئے استعمال کیا جاتا ہے۔
لوگ مرمرکر گریڑے۔ چونکہ پیلوگ بڑے قدآ وراور بڑی ٹویل ڈول کے تھے۔ اسلئے ایسامعلوم ہوتا تھا گویا فیمور کے تئے گریڑے ہیں جس چیز برسے پیہوا گزرتی گئی آئو جورا چورا کرکے رکھ دیا۔ جس وقت پر ہوگا وار خوشیاں منانے چورا چورا کرکے رکھ دیا۔ جس وقت پر ہوگا اور خورا کے ایش ہوگی اور کیلئے باہر کل پڑے کہ ایک طویل عرصے سے بعد گھٹا گھرکر آئی ہے۔ بارش ہوگی اور کیلئے باہر کل پڑے کہ ایک مرکز جب وہ آئی تواس طرح آئی کہ اُن کے پورے پورے

ہریسے پروں در کرکے رکھ دیا۔ سورۃ الذّاریات ہیں اس بادِ صرصر کیلئے الدِّیجُ الْعَقِیمَ علاقے کو زیر وزہر کرکے رکھ دیا۔ سورۃ الذّاریات ہیں اس بادِ صرصر کیلئے الدِّیجُ الْعَقِیمَ کالفظ بانجھ وراصل عقیم کالفظ بانجھ وراصل عقیم کالفظ بانجھ وراصل عقیم کالفظ بانجھ وراصل عقیم کالفظ بانجھ والی سے لئے بولا جا تاہے جو اولا دسے ناامید سوچی ہو مینی وہ الیسی ہواتھی جو اپنے اندر کوئی مجھیں تھی مجھیں تھی منہی بارسٹ لانے والی ، اور نہ درختوں کو بارآور کرنے والی ، اور نہ درختوں کو بارآور کرنے والی ، مجھیراس ہے خبری کے ساتھ نہایت شدید آندھی کی سکل دیا۔ میں آئی محقی جس نے لوگوں کو اُمطا اُمطاکر بیک دیا۔

ر) آبام نحسات وم عادير ركي صرص ياري عظيم كاعذاب سورة قمسر بين اس طرح بيان كيا گيا به:-اِمَّا آدُسَنْ عَلَيْهُ هُرِينِعًا صَرُّحَمَّا فِي أَيْهُمْ مَعَيْبِ

مَسَنَیْسِدِ۔ دائیت مقا) "توہم نے اُن پر ایک سخت آندھی روانہ کر دی جو دائمی نحوست سے دن واقع ہوئی''

اورسورة مخم التعبده مين اس طرح آيا ہے۔ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ رِنْعِنَا صَرْصَدًا فِي آسِيَا مِد

تَجِسَاتِ إلى رآيت علال

ت تنجیر ہم نے روا نہ کر دی اُنپر بادِ صرصر خوس دنوں ہیں '' الح منہوریہ ہے کہ یہ عذاب بُرھ کے دن آیا تھا اس کئے قدیم زمانے سے لوگوں ہیں یہ خیال بھیل گیا کہ برھ کا دن شخوس دن ہے ۔ اور اس پر ہرزمانے ہیں مختلف عقید سے قائم ہوتے جلے گئے کہ اس دن کوئی اچھا کام نہیں کر ناچا ہئے ۔ برھ کے دن سفر کو نا عموماً نامبارک ہے ۔ کوئی بڑالین دین اس دن نہ ہونا چا ہئے ، برھ کے دن ناخن نہ کاٹنا چا ہئے ، مریض کی عیادت نہ کرنا چا ہئے ، اور یہ کہ مرض جذام و برص اسی روز شروع میں تا نہیں مغدہ ، غدہ

ہوتے ہیں وغیرہ وغیرہ ۔ اِن تو ہمات سے بیجھے جند ضعیف احا دیث بھی نقل ہوتی علی آرہی ہیں جس سے بدھ سے دن می نخوست کاعفیدہ عوام الناس ہیں رائج ہوگیا۔ علم حدیث کے محققین نے ایسی تمام روا یات کو نہایت ضعیف مہل موضوع رحبونی) قرار دیاہے کوئی ایک حدیث بھی ایسی نہیں جو تھیج کہی جا سکے . ا مام المحدثمن حافظ سخاویؓ کہتے ہیں کہ جننے طریقوں سے بھی ببر وا پات منقول ہیں سب کی سب غیرستند ہیں ۔ بیرہی بات علامہ ابن رحب منبائی ، علامہ ابن جوزی ہ علامه آلوسی سے منقول ہیں محقق منا وی نے بہاں یک لکھ دیاہے کہ برھ کے دن کو منحوس بمحفر كرحميولا دينا اورنجوميون جيب اعتقادات اس باب بين ركهنا حرام اورسخت حرام ہے۔ لہذا برھ کی تحوست کاعقیدہ بے بنیاد بات ہے۔

حقیقت یہ ہے کہ ہفتے سے سارے دن کیساں ہیں کونی دن اپنی ذات ہیں نەنمفع بېہنجا نے والاسے نەنمقصان ـ رات دن میں بھی کونی تحکیری ایسی نہیں جوایک كے لئے اچھي ہواور دومسروں كے لئے بري إحب الترتعالے جاتبے ہي توكسي كيلئے موافق اورکسی کے لیئے ناموافق حالات ببیداکر دیتے ہیں. نادان آدمی اسکو نحوست پر

محمول كرليتات وحالا نكه نحوست كوني چيزنهين -

بنا ہے ہوں میں رسک وی ببیرم. یں۔ تحکیم الامیت مولا نااسٹرف علی صاحب تھا نوی اپنی کسی کتاب میں تکھتے ہیں بے "أمم سابقة بين كونى دن منحوس اور كونى نامنحوس ربا بهو گا بسكن خاتم النبيين صلى التُرعِلية ولم حبس دن اس جهاں میں روِنق ا فروز ہو آ سارے جہاں سے خوست قیامت تک سے نئے اُنھا لی گئی "

حدیث بخاری و لم سے بھی یہ تا ئیدملتی ہے آنخضور ملی النٹرعلیہ و لم کا ارشا دیے :۔ لَاعَدُ وَى وَلَاطِيرَةً وَلَاهَامَّت المديدِ

نہ کوئی مرض متعدی ہے نہ کوئی برسٹ گوئی درست ہے اور

نہ کونی آ وازمنحوس ہے۔

نیزایک اور مدیث ہیں صراحت کے سابھ کہا گیا :۔ ٱلطَّيْرَةُ شِرْكُ الدين.

بدسشگونی سٹرک ہے۔

اس ساری قصیل سے قطع نظر بالفرکش بدھ کے دن کومنحوس ہی فرار دیا جائے توسارے مفتے کے دن تھی منحوس قراریاً میں سے بھیونکہ دوسری آیت میں آیا ما تھے سانیے

' پیاہے۔ تعنی یہ عذاب والے دن سات رات اور آٹھ دن تھے توگو یا سارا ہفت منحوس قرار پایا، بلکہ ایک دن اسپر مزید اضافہ کے ساتھ۔ تھیرآ خرکو نسادن غیر نحوس موگا۔ ؟

' میں اس لئے مرادِ قرآئی ہرگز ہرگز یہ نہیں ہے کہ وہ دن اصلاً منحوس تقے جقیقت یہ ہے کہ بیا تھ دن نموس جو قوم عا د پرمسلط رہے اس قوم کے لئے بوجہ عذا ب منحوس محقے نہ کہ اپنی ذات بین نموس تھے ۔

دے، ملخی کا جوائی شیر سی کلامی اصف حضرت ہود علیہ اسّلام کو آئی قوم اس طرح خطاب کرتی ہے:۔

وبينك بهم تجه كوبيو تؤف انسان مجهة بي أورميقيناً توجعوها

حضرت ہود علیہ استام اِسکا اس طرح جواب دیتے ہیں :-آے میری قوم میں بے وقوی نہیں ہوں، البہت ہیں رتبالعالمین کا فرستادہ ہوں ،اپنے رب سے پیغامات تم تک پہنچا آ

ہوں اور ہیں تمہارے لئے نہایت خیرخوا ہ اور ا ما نتدار ہوں '' یہ گفتگو ہمیں یہ درس عظیم دیتی ہے کہ اللہ عظیم کے برگزیدہ بندے جب سسی کی نیکی اور خیرخواہی کرتے ہیں تو مخالفوں کی بے ہود ہ گوئی اور استہزار و تحقیر کی پروا نہیں کرتے اور منت کستہ ول ہوتے ہیں اور مذمالیس ہوکرا ہنے فرض منصبی سے منھ موارت ہیں ، اپنی خیرخواہی و مصیحت جاری رکھتے ہیں اور اسی ہیں اپنی کا میا بی و کا مسرانی متعجھتے ہیں کہ اللہ کا پیغام بہنچارہے خوا ہ کوئی مانے یا نہ مانے۔ انبیاء کرام کا پیطر لیم امرت کے لئے بہترین اُسوہ سے کہ بلیغ و پیغام می کی راہ ہیں بدی کا بدلئی سے اور تلخی کا جواب شیریں کلامی سے دیا جائے۔

(۸) فرم جرنوم المحاصل عضرت ہود علیہ التلام اپنی قوم کوالٹر کی لا زوال معتبی یاد دلاتے ہیں اور آئندہ کے لئے وعدہ

فرماتے ہیں کہ اگرتم لوگ اینے پر ور دگار کی جناب میں مغفرت طلب کرتے *یہو*اور اُسی کی طرف رجوع تحرتے رہو تڑ وہ تم پر برسنے والے باول بھیجے گااور تمہاری قوتوں ہیں اصنا فہ

عقیدہ تفاکرہم اپنے باپ دا دا کےطور طریقے کو کیوں چھوٹر دیں جو کشت ہائے کپٹنت سے چلا آرہا ہے ؟ کیا ہمارے آبارِ واجدادسب کے سب ممراہ تصفے ؟ اور کیا اُن کے پاس نُونَىٰ دلبل ومُربان نه مقى ۽ اور کياوه سب سےسب جاہل بختے ۽ وغيره وغيره ۔ به مهلک عفیده محونی نیا نه تفا تقریباً هرنبی و مصلح کواسی قوم نے بہی جواب دیا۔ یہ جُرَتُومہ اقوام کی روحانی زندگی سے لئے ہمیشہ نباہ کئن اور سعا دتِ ابدی سے لئے بلاكت آفرين ربائے ۔ وُنيا كےعظیمُ المرتبت رسولوں كى قوميں اسى جہالیت واندھے بن ى وجه مع خروم بدايت رسى بين ، انبيار كرام كم معجزات اور آيات نسي هي انهي كوني منفع پذہروا ۔ اور آج تھی جن جن قوموں اورجماعنوں میں یہ جراتیم موجود ہیں وہ اینے تصبحت کرنے والوں اورخیرخوا ہوں کے سابخہ و بیبا ہی سلوک کرنے ہیں جیبہ آکہ قوم عا د،قوم ثود اور قوم نوح کے نذکروں میں ملتاہے۔

من المالح على السالم من المسالم على السالم على السالم على السالم على السالم المالم على المالم المالم المالم المالم المالم المواقع الم

سورهٔ شعرار بین ایک جگه آیت علالا، اورسورهٔ النمل ثبن ایک جگه آیت عفیه و حضرت صالح علیه الت لام جس قوم بین پیدا بهوئے اسکا نام نمود ہے اور فوم نمود کا ذکر قرآن حکیم کی دس سورتوں بین آیا ہے:-اعراف، بهوری جیز النمائے، فصارت ، النجلے القمرۂ الحاقی، الفجر ، الشخش و اعراف، بهوری ججر النمائے ، فصارت ، النجلے القمرۂ الحاقی، الفجر ، الشخش و

سیلسازس این تیرانے حضرت صالع علیہ الت لام کانسب نامہ اس طرح سان کیا ہے:-

صالح بن عُبید بن آسف بن ماشند بن عُبید بن عادر بن نمو د بن عامر بن ادم بن سام بن نوح علیه الت لام به

بن کے علاوہ مشہور تابعی حضرت وہب بن منتی خضرت صالح علیہ السلام اور ثمود کے درمیان صرف ڈو واسطے نقل کرتے ہیں۔ صالح بن عبید بن جابر بن ثمود۔ چونکہ یہ سب ما قب ل تاریخ کی شخصتیات ہیں اس گئے ایسے ف دیم نسب ناموں میں اختلاف کا یا جا آ کچھ عجب خیز تہمیں۔ حضرت ہو دعلیہ التسلام کی قوم عا دا ولی کی ہلاکت کے بعد جوا فراد نیج 177

منمور کی بیت تنبال فران عمیم نے قوم نمود کامقام دادی حجر بیان کیا ہے جو حجاز اور ملک شام کے درمیان و بیچ وعریض میدان کی شخط میں موجود ہے . اور بیعلاقہ آجکل فیج اُلٹاقہ "کے نام سے شہور ہے ۔ اسمیں شمود کی بیتیوں کے آثار و تھنڈرات آج تک موجود ہیں عرب کامشہور ذیانہ مورخ

مسعودي لکھتا ہے:۔

محمور کاریان کے جو کہ یہ قوم بھی اُن اقوام میں سے ہے جو ماقبل تاریخ اپنا وجود کمرور کاریان کاریخ اپنا وجود کاریان کاریکا بینا وجود کاریان کاریکا ہے کہ مورکاز مانہ طاہر کرنے سے تاریخ عاجر ہے۔ البتہ یہ بات قطعی طور پر کہی جاسکتی ہے کہ تمود کا زمانہ حضرت ابراہیم علیہ التلام سے پہلے کا ہے اور اُن کی معشت سے بہت پہلے یہ قوم ہلاک بھی ہوچی تھی ۔ پہلے کا ہے اور اُن کی معشت سے بہت پہلے یہ قوم ہلاک بھی ہوچی تھی ۔ فرآن تکبیم نے یہ تصریح کی ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ استلام کو جب قوم فرعون نے جھلایا تھا تو آپ فرعون ہی ہیں ہے ایک مردمومن نے یہ کہہ کر اپنی قوم کو تنبیمہ کی کہ اے جھلایا تھا تو آپ فرعون ہی ہیں ہے ایک مردمومن نے یہ کہہ کر اپنی قوم کو تنبیمہ کی کہ اے

نه ثمودی ہیں اور نہ اُن کا یہ زیانہ ہے۔ مصرکامت ہورمؤرخ جرجی زیدان اپنی کتاب العرب قبل الاسلام "میں اُہی آثار سے بارے بیں لکھتا ہے ۔ اِن ہیں سب سے زیادہ اہم وہ تھنڈر ہیں جوقصر بنت ' قبر پانیا، قلعہ، اور ٹرج سے نام سے موسوم ہیں ،ان پر جو کچھ تخریر ہے وہ بطی زبان قبر پاشیا، قلعہ، اور ٹرج سے نام سے موسوم ہیں ،ان پر جو کچھ تخریر ہے وہ بھی زبان

میں گفندہ ہے ۔ اِن بین سب سے ملتہ ہور دمعروف وہ کتنبہ سے جوبطی حروف میں لکھا میں گفندہ ہے ۔ اِن بین سب سے علیہ اتسام سے قریب زیانہ کامکتوب ہے ۔ مہوا ہے اور وہ ولادت سے علیہ اتسال مسے قریب زیانہ کامکتوب ہے ۔

سندہ عبارت کامضمون یہ ہے :
و مقبرہ کمکم بنت وائلہ بنت حرم نے اور کم کی بیٹی کلیب نے

اینے لئے اور اپنی اولاد کے لئے بنوایا ہے ۔ اس کی بنا بہت المجھے

مہینوں ہیں شروع کی گئی ہے ۔ یہ بنطیوں کے بادشاہ حادث کی

مہینوں ہیں شروع کی گئی ہے ۔ یہ بنطیوں کے بادشاہ حادث کی

تخت نے بین عمی دوالشری وعرث ، لات، عمند، منوت اور فیس کی اُس کے سی

ر سے ۔ بین عمی دوالشری وعرث ، لات، عمند، منوت اور فیس کی اُس کے سی

ر بین عمی دوالشری وعرث میں اس کی بیٹی اور اُس کی اولاد کے علاوہ

خسم کو یا عضوکو نرکا ہے ، یا مکم اس کی بیٹی اور اُس کی اولاد کے علاوہ

کسی کو ذفن کرے۔

اور جو شخص بھی اس پر تکھے ہوئے کی مخالفت کر ہے۔

اور جو شخص بھی اس پر تکھے ہوئے کی مخالفت کر ہے۔

اور جو شخص بھی اس پر تکھے ہوئے کی مخالفت کر ہے۔

اُس پر ذوالسّری ، سبل ، منوت کی بیانج لعنتیں ہوں ، اور جوساحر اس کے خلاف کرے اُس پر ایک ہزار در مہم حارثی کا ناوان واجہ ہے۔ مگریبرکہ اس کے ہاتھ بین کم کلیبہ یا اسکی اولا دیس سے کسی کے ہاتھ کی مخریبر کہ اس کے ہاتھ بین مجر کیا ہے گئے صاف وصریح الفاظ بین اجازت موجو د ہوا ور وہ انسلی ہوجعلی نہ ہو۔ موجو د ہوا ور وہ انسلی ہوجعلی نہ ہو۔

اس مقبرے کو وہب اللاق بن عبادہ نے بنایا۔"

اس عبارت سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ تھنٹرات اور فبریں قوم نمود کے بقایاا فراد کی ہیں جونمود کی ہلاکت کے ہزاروں سال بعدیہاں آکریس سے کے شخصے، قوم نمود کا زمانہ اِن سے بہت پہلے کا ہے۔

قوم کا اسکار ایم دکو به جیرانی تھی کہ بہ کیوں کڑمکن ہے کہ ہم میں کا ایک انسان الٹرکا بیٹمبرین جائے اور الٹرکے احکام سنانے گئے۔ وہ نتعجب ہارت کے بیاغ یہ کہا کرتے نقے کیا ہماری موجو دگی ہیں اس پر الٹر کی نصیحت اُ ترتی ہے جمعنی اگر ایسا ہی ہونا تھا تو اسکے ہم ستحق تھے نہ کہ صالح ہ ایسا ہی ہونا تھا تو اسکے ہم ستحق تھے نہ کہ صالح ہ اور کبھی قوم سے کمزور افراد کو جومسلمان ہوئے تھے خطاب کرہے کہتے۔

"کیاتم کونیکین کے مضالح اپنے پروردگار کارسول ہے'؟ مسلمان جواب دیتے بیشک ہم تو اسکے لائے ہوئے بپیغام پرایمان رکھتے ہیں۔ سیر فدمہ سریدمتک عصر میں محنتے :۔

"بلات بهم تواس بات كاجسيرتمهارا ايمان سے اسكار

رسے ہیں ۔ علیہ الت لام قوم کو بار بارنصیحت کرتے کہ اے قوم التہ تعالیے کی دی ہوئی منعمتوں رم خرور نہ ہو۔ یہ تمہاری ظاہری شان وشوکت ، مال و دولت، سرسزو شا داب باغات ، سیم وزر ہی فراوانی ، بلند و بالاعمارات کی رہائش ، میوہ و بھیوں کی خرت جینسوں و نہروں کی آبیاری ،صحت وطاقت کی مہتات سب التہ کرکم کی عطا ہے شخص ہے ۔ اس کا شکرا داکروا وراس کواپنے رب کی طرف سے محبور اور اس کواپنے رب کی طرف سے محبور اور اس کا آگے اینا سرخم کر دو۔ یہ سابان زندگی تمہاری ہلاکت کا فرایو ہوسکما ہے ۔ کسی مجبی وقت تم سے جین لیا جا سکتا ہے ۔ اسکے ماصل ہونے پرشنی وغرور نہ کرو۔ یہ جھنا سخت فلطی ہے کہ سابان زندگی تمہاری طاف اور اس کا خرا والی التہ تعالیٰ کی رضا و خوشنو دی کا تمرہ ہے ۔ التہ تعالیٰ خوشنو دی کا تمرہ ہے ۔ التہ تعالیٰ مارک نے بہت سی قوم والی یہ محبوب الشرے ور والی اس کا حق ادا کرو ، تمہاری طرح المفوں نے بھی فرور و کبر کہا تھا ای کے انجام کا نذکرہ تم سنتے آئے ہو۔

عرور و تنبر کیا تھا ان کے البیان کا میں اس نصیحت وخیرخواہی کا قوم برکچہ اثر نہیں ہوا، بلکہ ان کامغض وعناد ترقی کرتا گیا اور مخالفت بڑھتی ہی رہی وہ کسی طف رح بت پرستی سے باز نہیں آ کے صرف ایک مختصر محمز ورجماعت ایمان ہے آئی۔ توم کے سردارا ورسر باید دار اس طرح باطل پرستی پر قائم رہے الٹر تعالیے کی دی ہوئی ہر قسم کی خوش عیثی کا شکرا داکرنے شے بجائے کفرانِ نعمت کو اینا شعار بنالیا جفرت صالح علیہاںتلام کا مٰداق اُڑاتے ہوئے کہاکرتے کہ اگرصالح حق پر ہوتا اورہسم باطل پرتو بچبر ہم کو بیٹ ن وشوکت ،عزت وقوت کیوں کر حاصل ہونی اجبکہ صالح ء اور اُن کے ماننے والے محزور اور بے قدر ہیں ب

حضرت صالح علیہ الت لام ان کوسمجھاتے کہ دنیا کی نیمتیں عارفنی اور فائی
ہیں۔ بین و باطل کا کوئی معیار نہیں ہیں الٹر تعالے کے باں اُن کی کوئی قیمت نہیں۔
کیا معلوم بل بھر ہیں بیسب کچھ فنا ہوجائے۔ تمہارے سامنے اسکی مہت ہی مثالیں
موجود ہیں۔ آخر کارمغرور ورکش قوم نے حضرت صالح علیہ الت لام کی دعوت ونصیحت
کوسلیم کرنے سے انکار کر دیا اور الٹر کی نٹ ٹی بیٹ کرنے کامطالبہ شروع کر دیا کہ
اے صالح اگر تم سیچے ہوتو اپنے رب سے کہہ کر اس پہاڑ سے کوئی اوٹینی پیدا کر دکھاؤ
جوگا بھن ہوا و رفا ہر ہوتے ہی بچے جنم دے ؟

> محہ النگر ہے ہوہ۔ قرآن کیم نے اس کی بین خصوصیت کے ساتھ یہ بھی وضاحت کردی کہ ''س نٹ ن کو کوئی ضرر نہ پہنچا یا جائے ورنہ عذاب الیم تھیر کے گئے۔ چنا بچہ قوم نے اس نٹ ان دا ذہنی کو ہلاک کر دیا ا و ربھیر النگر سے میں بیٹے۔ چنا بچہ قوم نے اس نشان دا ذہنی کو ہلاک کر دیا ا و ربھیر النگر

کے عذا بسے خوٰ دنمی ہلاک ہوگئے '' ابن کثیر شنے اپنی تنفسیر میں ناقتے الٹر کے سلسلے ہیں نیفصیل بیان کی ہے جو 'ناریخ اور معض روایات معیمہ ٹیمل ہے۔ رد بغ الحل العلم ا

واقعہ کی تفصیل یہ ہے کہ قوم ٹمود جب حضرت صالح علیہ التلام کی تبلیغ سے اُکتا گئی تو اس کے سنجیل اور سربر آور دہ افراد نے قوم کی موجود گل میں یہ مطالبہ کیا۔ اُکتا گئی تو اس کے سنجیل اور سربر آور دہ افراد نے قوم کی موجود گل میں یہ مطالبہ کیا۔ اے صالح اگر تو واقعی خدا کا رسول ہے تو کوئی نشانی پیش کرتا کہ ہم تیری

صداقت پرایمان لے آبیں ؟ حضرت صالح علیہ الت لام نے فرما یا کہ ایسا نہ کوکہ نشان آنے کے بعد بھی سریو

انکار وسرکشی بر فائم رہو؟ توم شے سرداروں نے وعدہ کیا کہ ہم فوراً ابمان لے آئیں گے ! تب حضرت مسالح علیہ الت لام نے ان سے دریافت کیا کہ تم لوگ سسم کانشان چاہتے ہم ؟ قوم نے مطالبہ تویا کہ سامنے والے بیہاڑیں سے ایک الیبی ا فٹنی کلا ہر کر و تو گائین ہواورظام

ہوتے ہی بچیر بھی دید ہے۔ موتے ہی بچیر بھی دید ہے۔

اسپر حضرت صالح علیہ الت لام نے بارگاہِ الہی ہیں دُعاکی معاً پہاڑے

ایک بلند قامت قوی الہیل اوشی ظاہر ہوگئی اور اُس نے بچر بھی جہم دیا۔

یعیب وغریب منظر دیجھ کر اُن سرداروں بی سے ایک جندع بن عمرواسی و

ایمان لے آیا اور دوسرے سرداروں نے بھی اسکی پیردی کرنے کا ارادہ کیالیکن مندرو

کے بچار یوں نے اُن کو بازر کھا۔ اسی طرح دوسروں کو بھی ایمان لانے سے روکا۔ اس پر
حضرت صالح علیہ الت لام نے قوم کے تمام افراد کو تنبیہ کی کہ دیجھو یہ نشانی تمہارے

طلب رجیجی بھی ہے۔ النہ تعالے کا یہ فیصلہ ہے کہ پانی کی باری مقرر ہو۔ ایک دن اس
اوٹلنی کا ہوگا دوسرا دن قوم کا اور ان سے جانوروں کا۔ اور خبر دار اس اوٹلنی کو کوئی اذبی نہیجے۔ اگر اس کو کوئی آزار بہنچا تو مجر مجھ کو کہ تمہاری بلاکت یقینی ہے۔ ہر

نہ بہنچے۔ اگر اس کو کوئی آزار بہنچا تو مجر مجھ کو کہ تمہاری بلاکت یقینی ہے۔ ہر

آمسته يه بات تحطيخ ملى اور آپس بين صلاح ومشوره ہونے لِگا كِه اسِ اونٹنى كا خاتمب کر دیا جائے تو اس باری والے قصتے کا بھی خاتمہ ہوجا ہے ۔کیونکہ ایک پورا دن ہما^{ہے} کئے اور ہمارے جانوروں کے لئے یا نی کا فراہم کرنا دشوار ہوتا جار ہاہے ۔ یہ باتیں اگرجہ ہوتی رہتی تخفیں سکن تھٹی کواُ سکے فٹ ل کر نے کی جرائت یہ ہوتی تَحْقَى بَيُونِكُهُ ٱسْ كُأُمْعِجِزَهُ "بهونا ثابت بهوجِيكا مقاا ورقلوب اسكا ا قرار كرچكے بِطَحَهِ

ِ آخر کارصدوقُ نامی ایک بین ونبیل عورت نے اپنے آپ کو قوم کے ایک بد کا رمردمصدع کے سامنے بیش کیا اور ایک مالدارعورت عُنیزہ نے اپنی ایک خوبصورتِ لڑکی کو قدارنامی بربخت کے سامنے یہ کہ کرمیش کیا کہ اگر تم وونوں اسس

ناقة التُذكو ہلاك كردونويه دونوں تمهاري مِلك ہن إنكوا بني بيوي بنالبنا۔

استحسین بیشکش پر قُدارا ورمصترع د ونوں آباد ہ ہوگئے .اورسطے یا یا کہ رات کی تاریجی میں اونٹنی کو ہلاک کر دیں ۔اسپر چند دوسرے آ دمیوں نے بھی میڈ د کا

رض ایسا ہی کیا گیا اور ناقة الینر کواس سازش سے ہلاک کر دیا گیا۔ اونٹنی كابچة يمنظر دنيجه كربها گا اور بهار پرجره گيا اور چنياجيلا تا پهارون بي غائب بهوگيا ـ حضرت صالح عليه التالم كوجب معلوم بهوا تو آبديده بهوكر فرمانے لكے:-اً ہے بےنصیب فوم آخر تھوسے صبر نہ ہوسکا اور وہی سانحی بیش آیاجس کامجھے خوت تھا۔ اب الٹرکے عذاب کا انتظار کرو، تیس روز کے بعد نہ طلنے والا عذاب آئے گا جوتم سب کو نہ و بالا کر کے د تنفسيرابن كثيرسورة اعران)

رط رات ہا۔ تفسیرر وح المعانیٰ کے مصنف علامہ آلوسیؓ نے اس عذاب کی تیفصیل ککھی ہے کہ أثنود برعذاب آنيكي علامات الكلے صبح بهى سے مشروع ہوگئيں

يهك روز أن سب كے چہرے اس طرح زرد بڑكے جياكہ خوف كى ا بتدائی مالت میں ہواکر تاہے. دوسرے دن سب کے چہرے سُرخ محقے بھو یاخون و دہشت کا یہ دوسرا درجہ تھا۔ تبییرے روز اُن سب سے چیرے سیاہ مقے اور تاریجی چیائی ہوئی جگو یاخون مہر کا تیسراورجہ ہے جس کے بعد موت ہی باتی رہ جاتی ہے۔ تین ون
کی اِن علاماتِ عذاب نے آگرچہ اُن کے چہروں کو واقعی زرد،
سُرخ اورسیاہ بنادیا تھالیکن اُن کی ظاہری شکل یہ صاف بماری
مُقی کہ اُن کے دلوں کوحفرت صالح علیہ التسلام کے سیتے ہونے کا
یقین تھالیکن عناد و کبتر نے حق کی پیروی کرنے ہے اُمغیں بازر کھا۔
میں حضرت صالح علیہ التسلام ہے عذاب کی ہولناک خبر شنی توائن پر
میں حضرت صالح علیہ التسلام ہے عذاب کی ہولناک خبر شنی توائن پر
توب کی علامات نہ تھیں۔ بہر حال ان تین دن کے بعد وہ وقت آگیا
جس نے صبح ہوتے ہوتے سب ہوتیا ہ وبر بادکر دیا اور آنے والے
انسانوں کو "ماریخی عبرت" کا سبق دیا۔ عذاب والی رات سخت تاریک
مقی اچا تک ایک بینیناک آواز نے ہر شخص کو اُسی حالت ہیں موت

قرآن علیم نے اس مہلک ترین آ دازکو ایک آیت بی صاعقہ دکڑک دارجلی) اور ایک دوسری آیت میں رَجُفَهٔ دزلزله ڈالدنجوالی) اور ایک نمیسری آیت میں صنیحہ " دجیج) کے عنوان سے تعبیر کیاہے۔ دراسل یہ تمام تعبیرات ایک ہی حقیقت سے مختلف

اوصاف میں جو خدائی عذاب کی ہولناکیاں ظاہر کرتے ہیں ، معنی ایسی مہیب آواز جو گرحتی ، حجیتی ، کوندتی ، لرزتی ، لرزاتی رات کی الری میں اچانک ٹوٹ بی تو جو شخص جس حالت میں تھا اس نے وہیں دم نوڑ دیا۔ آواز کے بھیا تک شور سے حکر بارہ بارہ ہو گئے۔ انسان ہی میا بورام بورام

ایک طرف نمو دیریہ فیامت ٹوٹ بڑی دوسری جانب اللہ تعالیے نے حضرت صالح علیہ الت لام اور ان کی جماعت کو اپنی حفاظت میں لے لیا۔ اور اُس موسواکن عذاب سے بچالیا۔ دوسرے ون حفرت صالح علیہ الت لام نے إس تک پٹ شدہ شہر کے نا پاک مُردوں کو اس طرح خطاب کیا :۔

ا پاک مُردوں کو اس طرح خطاب کیا :۔

اے قوم بلاسٹ میں نے اپنے پرور دگار کا بین ام تم یک بہنیا یا اور نصیحت کرنے والوں کو تم یک بہنیا یا اور نصیحت کرنے والوں کو پہندہی نہ کیا :"

ہم بہر سب کے بعد اسے معلوم ہوتا ہے کہ نمود کی ہلاکت و تباہی کے بعد حضرت صالح علیہ السلام اور اُن پر ایمان لانے والی جماعت کا قیام مسطین ہیں ہوا، مقام اور شہر کے ناموں میں مؤرضین نے مختلف نام سیان سور ہوتا ہوں ہیں مؤرضین نے مختلف نام سیان سور ہوتا ہوں ہیں مؤرضین ہے مختلف نام سیان

قرآن علیم نے قوم ٹمو دکو انسحائ الحجر" کہا ہے۔مقام حجرفلسطین سے قریب تھا اور جو نکفلسطین اُس زیانے میں سرسبزو شاداب مقام تھا اس لیے عین ممکن ہے کہ وہ حضرات اسی علاقہ بیں آکربس گئے ہوں ۔

یا تھ سخات یا ئی۔ اور ہلاک ہونے والوں کی تعداد ڈیٹر ھے ہزارخاندانوں بشتمل تقيس انغرض إن مختلف تنفاصيل كے بعد أس كلام بلاغت نظام قرآن حکیم کی آیات کامطالعہ میجئے جو اِن وا نعات کاحقیقی سرحیثیمہ ہیں اور جوعبرت وموعظت کا ہے مثال درس ہیں۔ وَإِلَىٰ نَكُودُ أَخَاهُمُ صَالِحًا الْح ر اعراف آیات ع<u>ت</u>ط تا <u>عط</u>ی)

صمون اور ثمودی طرف ہم نے اُن کے مجانی صالح کو بھیا۔ اُنفوں نے کہا اے میری قوم الٹرکی بندگی کرو اُ سکے سوا تمیاراکوئی معبو دنہیں ہے۔ تمہارے یاس تمہارے رب کی تھلی دسیل آسمی ہے۔ یہ اللہ کی اوٹین تہارے نئے ایک محلی ن ان ہے۔ لبذا اسكوآزاد حيور وكرالتركى زبين ببال جائ عجرے چرے. اسكوكسى بُرے ادا دے سے ہائف ندلگاؤ. ورندایک دردناک عذاب تمہیں کیٹائے گا.اوریا د کرو وہ وفت جب الٹیرنے قوم عاد کے بعب کہ تنهبیں اِس کاجانشین بنایا۔ اور زمین میں بیمنزلت شخنٹی کہ آج تم اُ سے ہموارمیدانوں میں عالی ثنان محلات بناتے ہو ،اور اسکے سارو كومكانات كى شكل ميں تراشتے ہو۔ بيں اللّٰر كى معتيں ياد كرو اور زنين میں نساد بر مان*ہ کرو*۔

م آن کی قوم کے سرداروں نے جومتک تر بھے محزو رطبقہ کے لوگوں سے جو اپیان لے آئے تھے کہا کیا تم واقعی بہجانتے ہوکہ صالح اپنے رب کا پنجیرہے ؟ امھوں نے جواب دیا بیشک جس پیغام کے ساتھ وہ بھیجے گئے ہیں اُسے ہم مانتے ہیں ۔اُن سرداری کے دعویداروں نے مجاجس چیز کونم نے ماناہے ہم اسکا انکار کرتے ہیں۔ مجراً معوں نے اونٹنی کو کاٹ ڈالا اور بوری سرکشی کے ساتھ ابینے رب سے محم کی خلاف ورزی کی اورصالے عنہے کہدیا لے آوہ عذات جسکی تو ہمیں دمی دیا ہے اگر تو واقعی پیغیروں میں شامل ہے ؟آفزکار
ایک دہلا دینے والی آفت نے اُنہیں آگھیراا ور وہ اپنے گھروں میں
اُوندھے کے اوٹدھے پڑے رہ گئے۔ اورصالح یہ سجتے ہوئے اُن بتیاں
سے نکل گئے کہ اے میری قوم میں نے اپنے رب کا پیغام تھے بہنچا دیا اور
میں نے تمہاری بڑی خیرخوا ہی کی مگریں کیا کروں کہ تجھے اپنے خیرخوا ہ
پ ندہی نہیں ہیں ''

وَالْيُ تَنْكُورُهُ أَخَاهُمُ وَصَالِعًا قَالَ الْح

امفوں نے کہا اے صالح اِس سے بیطے تو ہمارے درمیان ایساشخص مقاجس سے بڑی تو قعات واب نہ تھیں کیا تو ہمیں اُن معبودوں کی عبادت سے روکتا ہے جن کی پرستش ہمار سے باپ دادا کرنے مقع ؟اور تو جس طریقے کی طرف ہمیں دعوت دیتا ہے اس کے بارے میں ہم کوسخت سف ہے جس نے ہمیں خلجان میں ڈال رکھا ہم ممالئے نے کہا اے میری قوم ہم نے کچھ اس بات پر مجی غور کیا ہے کہ اگریں اپنے پروردگار کی طرف سے ایک روشن دلیل پرقائم ہوں اور اُس نے اپنی رحمت مجھ عطا فرمانی ہے ۔ تو مجر کون سے جوالٹ کے اُس نے اپنی رحمت مجھ عطا فرمانی ہے ۔ تو مجر کون ہے جوالٹ کے مقابلے میں میری مدد کر سے گا۔ اگریں اسے حکم سے سرتابی کرون تم مقابلے میں میری مدد کر سے گا۔ اگریں اسے حکم سے سرتابی کرون تم مقابلے میں میری مدد کر سے کیا وائٹنی تمہار سے لئے ایک نشانی ہے ہو۔ اور ایک میری قوم کے لوگو دیکھو یہ الندگی اونٹنی تمہار سے لئے ایک نشانی ہے ایک میری قوم کے لوگو دیکھو یہ الندگی اونٹنی تمہار سے لئے ایک نشانی ہے ایک میری قوم کے لوگو دیکھو یہ الندگی اونٹنی تمہار سے لئے ایک نشانی ہو۔ اور ا

اسے اللہ کی زمین میں جَرنے کے لئے چپوڑ دو . اور اسکو مُرا نی سے ہاتھ نہ لگانا ورنہ فوراً عذاب آپڑے گا.

مگرامفوں نے اونٹنی کوفتل کرڈ الا ۔اس پرصالع نے اُن کو خبردار کر دیا کہ بس اب تین ون اینے گھروں ہیں اور رہ بس لو ۔ یہ ایسی میعادیے جوجھوٹی ثابت نہوگی ۔

ا تحرکارجب ہمارے نیصلے کا وقت آگیا توہم نے اپنی رحمت سے صالح اور اُن لوگوں کو جو اُن کے ساتھ ایمان لائے بیچے بیجا لیا اور اُس دن کی رُسوائی سے اُن کو محفوظ رکھا۔ بیٹیک تیرارب ہی درال طافتور اور بالا دست ہے۔

د الحجرآيات عند تا يهيد)

اور مجرکے لوگ (قوم نمور) بھی رسولوں کو مجھٹلا مجے ہیں بہم نے اپنی آیات کونظراندازی بے اپنی آیات کونظراندازی کرتے رہے۔ وہ لوگ بہاڑوں کو تراش تراش کرمکانات بناتے کے کھے کہ محفوظ رہیں دبیحفاظت کچھ بھی کام ندآن ایک دن صبح کو اٹھے تو ایک ہولناک آوازنے آپٹرانھا اور جو مجھ انمھوں نے اپنی سعی وعمل سے کما یا تھا وہ کچھ کھی گان سے کام ند آیا۔

دالشعراد آیات علی "ناع<u>وه</u>ا)

جھٹلایا تمودنے الٹرکے رسولوں کو، جب کہا اُن ہے اُنکے معانی صالح نے کیا تم ورنے الٹرکے رسولوں کو، جب کہا اُن سے اُنکے معانی صالح نے کیا تم ورنے نہیں ہو۔ میں تمہارے کتے ایک اہا نتدار

رسول ہوں ۔ لہذاتم النترے ڈرواور میری اطاعت کرو۔ بین اس کام کے لئے تم سے سی اجرکا طالب نہیں ہوں ۔ میرااجر تورب لعالمین کے فرمتہ ہے ۔ کیاتم اُن سب چیزوں کے درمیان جو بیہاں ہیں بس یوں ہی اطبیان سے رہنے دیئے جاؤگے ۔ ان باغوں اورجنسوں میں ۔ اور تم اِن کھیتوں اور خلسانوں بیں جن کے خوشے رس مجرے ہیں ۔ اور تم پہاڑوں کو تراش کرفحزیہ اُن میں عمارتیں بناتے ہو۔ النتر سے ڈرو پہاڑوں کو تراش کرفحزیہ اُن ڈیاں کارلوگوں کی اطاعت نہ کرو جو زمین میں فساد ہر پاکرتے ہیں اور کوئی اصلاح نہیں کرتے ۔ اُن فیاد ہر پاکرتے ہیں اور کوئی اصلاح نہیں کرتے ۔

ایک سخرز ده آدمی ہے۔ نو انگھوں نے جواب دیا تو محض ایک سحرز ده آدمی ہے۔ نو توایک ہم جیسا ہی انسان ہے بیں لاکوئی نشانی اگر توستیا ہے۔

'صالخ نے کہا یہ انٹنی ہے۔ ایک دن اُ سکے پینے کا ہے اور ایک دن تم سب کے پانی لینے کا ۔اُسکو بُرے ارا دے سے ہاتھ نہ لگا یا ور نہ ایک بڑے دن کا عذا ب تم کو آ لے گا۔

ے ہورہ ہیں برت رق ہات ہو ہوں ہو ہوں اور آخر کاریجیتا تے مگر انتخاب نے اسٹی کونجیں کاٹ دیں اور آخر کاریجیتا تے رہ گئے ۔ عذاب نے انتخاب پرٹر لیا یقیناً اسمیں ایک نشانی ہے۔

مگران میں سے اکثر ماننے والے نہیں ۔اور حقیقت یہ ہے کہ نیرا رب زبر دست بھی ہے اور رحمے بھی ۔

ربروس بن من بررس بن بن برود من بروس بن بروس بن بن بروست بن برود من بن برود بن بن برود بن بن بن بن بن بن بن بن ب اغْدِلُ واالله الخ دالنس آیات ۱۵ تا ۱۳۵۰ با ۱۳۵۰ ب

اور ٹمو دکی طرف ہم نے اُن کے بھائی صالح کو دیہ پیغیام دے کر مجیبے کہ الٹرکی بندگی کروتو میکا یک وہ قراع حکالانے والے فرلتی بن گئے ۔ صالح نے کہا اے میری قرم کے لوگو محلائی سے پہلے برائی کے لئے کیوں حبلائی سے بہلے برائی کے لئے کیوں حبلای مجاستے ہو۔ کیوں نہیں الٹرسے مغفسرت طلب کرتے شاید کرتم فرمایا جاوے ۔ اُمھول نے کہا ہم فلیس کرتے شاید کرتے مامھیوں کو برسٹ کوئی کا نشان یا یاہے۔

صالح نے جواب دیا تمہاری بدسٹ گونی کاعلم تو الٹرکے پاس ہے۔ اصل بات یہ ہے کہ تم لوگوں کی آز انش ہورہی ہے۔ اُس سنہ راجی میں نواجھے دار مخے جو ملک میں فیاد بھیلاتے مخت سے دراں و راب و میراں نمید کے تاریخ

مخفے اور کوئی اصلاح کا کام نہیں کرتے مخفے ۔ اُمخوں نے آ بس بیں مہا دا سے لوگو) خدا کی قسم کھا کرعہد کرلو ہم صالح اور اُس کے گھر

والوں پرشب خون ماریں کے اور بھرانکے سر ریست سے کہدینگے

كه بم اس كے خاندان كى ہلاكت كے موقع پرموجود نه مقے اور تم مالكل سچ كيتے ہن ۔ مالكل سچ كيتے ہن ۔

بری سے ہے۔ اور انتخوں نے ایک خفیہ تدبیر کی اور ایک خفیہ تدبیر ہم نے کی جس کی منتخیں خبر نہ تھی درات سے پہلے پہاڑ پر ایک تچرانپر لڑھک آیا اور وہ سب دب کرمرگئے۔ دالدرالمنثور)

آب دیچھ لو کہ اُن کی چال کا کیا انجام ہوا۔ ہم نے تباہ کرکے رکھ دیا اُن کو اور اُن کی پوری قوم کو۔ دیکھو وہ اُن کے تھر خالی پڑیے ہیں اُس ظلم کی یا داسٹ ہیں جو وہ کرتے ہتھے۔ اِس ہیں ایک نشان عبر ہے اُن لوگوں کے لئے جوعلم رکھتے ہیں۔ اور سجالیا ہم نے اُن لوگوں کو جو ایمان لائے متھے اور نا فرمانی سے بہتے متھے ؟

وَأَمَّنَا نَهُوْدُ فَهِلَ يُنْهُ مُ فَاسْتَحَبُّوا الْعَيْمِ الْحَرْمَ بَدُايَاتُ اللَّهِ

اُور رہے تموہ تو اُن کے سامنے ہم نے سیدھی راہ بیش کی گرامھوں نے راستہ دیکھنے کے بجائے اندھار ہنا سپندگیا۔ آخرا نکی کر تو تو س کی بدولت ذکت کا عذاب اُن پر ٹوٹ پڑا، اور ہم نے اُن لوگوں کو بچالیا جوالیا ان لائے منے اور بڑمی سے بچتے تھے۔"

وَفِي نَمُودُ الْمُرْتِيلُ لَمُعْ تَمَنُّ عُوا حَتَّ عِينِ الح

(الذريات آيات عتد تاعدى)

اور نمہارے لئے نٹانی ہے نمود کے واقعہ میں جبکہ اُن سے کہا گیا تفاکہ ایک خاص وقت بک مزے کرلو ،مگراس تنبیہ پر بھی اُم صفوں نے اپنے رب کے حکم نا فرمانی کی ۔ آخر کار اُن کے دیکھتے دیکھتے ایک اجانک ٹوٹ پڑنے والے عذاب نے اُن کو بکڑ لیا بھر نہ اُن میں اور نہ وہ اپنا بچاؤ کرسکتے ہتھے ۔ اور اِن سے پہلے ہمے نوح کی قوم کو ہلاک کیا میونکہ وہ لوگ فاسق سجھے ۔ ''
ہم نے نوح کی قوم کو ہلاک کیا میونکہ وہ لوگ فاسق سجھے ۔''
میں میں ہے ۔'' نامور کی بالنے نامور کی اُنٹان کے ایک کیا گئی کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے اُنٹان کے اُنٹان کے ایک کیا گئی کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے اُنٹان کے اُنٹان کے اُنٹان کے اُنٹان کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے اُنٹان کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے ایک کیا گئی کے اُنٹان کے اُنٹان کیا گئی کے اُنٹان کیا گئی کیا گئی کیا گئی کیا گئی کے اُنٹان کیا گئی کئی کرنا گئی کیا گئی کیا گئی کیا گئی کرنا گئی کیا گئی کیا گئی کئی کرنا گئی کرنا گئی کیا گئی کرنا گ

(القمرآيات عتلاتا علي)

تمود نے پیغمبروں کو جھٹلایا۔ اور تھنے لگے ایک اکسال آدمی جو ہم میں سے ہے کیا ہم اب اسکے پیچھے جیلیں ،اس سے معنی پر ہمو سکتے کہ ہم مہاک سکتے ہیں اور جنون میں پڑ گئے۔ کیا ہمارے درمیا بس مہی ایک خص مقاجس پر خدا کا ذکر نازل کیا گیا ؟ نہیں! بلکہ یہ پر لے درجے کا حجوٹا اور بڑائی جنانے والا آدمی ہے۔

رہم نے اپنے بیغیرصالۓ ہے کہا) کل ہی انہیں معلوم ہوجائیگا کہ کون پر نے درجے کا حجوانا اور بڑائی جنانے والاے بہم اوٹمنی کوان کے لئے آزبائش بناکر بھیجے رہے ہیں۔ پس اِنکو دیکھتے رہوا ور ذراصبر سیحیے کہ دکدان کا کیا ابنی م ہو گاہ در ہرایک اپنی باری کے دن پائی اِن کے اور اوٹٹنی کے درمیان تقسیم ہوگا اور ہرایک اپنی باری کے دن پائی اِن کے برآئے گا۔ آخر کار اُن لوگوں نے اپنے آدمی کو پکار ااور اُس نے اس مام کا بیڑا اُسٹا یا اور اوٹٹنی کو قتل کر ڈالا۔ بھر دیکھ لوکیسا تھا میسرا عذاب اور کمیسی تھیں میری تبدیہات ۔ ہم نے اپنرلیس ایک ہی جنگھا ڈسکا کو دیا۔ بھروہ اس طرح ہو گئے جیسے کا نٹوں کی باٹر لگانے والے مسلط کر دیا۔ بھروہ اس طرح ہو گئے جیسے کا نٹوں کی باٹر لگانے والے کا چورا۔ اور ہم نے اس قرآن کو نصیحت سے لئے آسان فرابعہ بنا دیا ہے کا کورا۔ اور ہم نے اس قرآن کو نصیحت سے لئے آسان فرابعہ بنا دیا ہے اب ہے کوئی نصیحت قبول کرنے والا ؟"

كَنَّ بَتُ تُمُودُ وَعَادُ فِي الْقَارِعَةِ ١٠٤

 جھٹلایا توٹمو دایک سخت آ وازے ہلاک کئے گئے .ا ور عا دایک مشدید طوفانی آندھی سے تیاہ کر دیثے سکتے۔

كَنَّ بَنَّ نُمُوْدُ يُطَعُولُهَا لِذِانْبُعَتُ أَشُقًاهَا - الخ

رائشمس آیات ملاتا میں مرشی کی بنا پر دصائع کو، جھٹلایا۔ جب اُس تمود نے اپنی سرشی کی بنا پر دصائع کو، جھٹلایا۔ جب اُس قوم کاسب سے زیادہ شقی آدمی دارافٹری اوٹٹنی کو ہاتھ نہ لگانا اور اسکے پانی پینے میں جامل نہ ہونا۔ محراً محراً محراً محراً نے اُسکی ہات کو جھوٹا قرار دیا اور اوٹٹنی کو قتل کر ڈالا۔ آخر کار اُن کے جُرم کی پاداش میں اُن کے رب نے اُن پر ایسی آفت نازل کی کہ ایک ساتھ سب کو پروند خاک رب نے اُن پر ایسی آفت نازل کی کہ ایک ساتھ سب کو پروند خاک کر دیا۔ اور الٹرکو دائے اس فعل کے اسی بھی نتیجے کا کوئی خوف نہیں ہے۔ اُن کے دائی سے "

في المج وعب مر

جوبحہ قوم کے مطالبہ پریہ اونٹنی بلاکسی ظاہری ہے۔ کے پہاڑسے پیدا ہوئی اِس کئے اِس کانام ناقۃ اللہ ہوگیا۔ یہ ایسے ہی جیسے حضرت حوار بغیر ماں کے، اور حضرت عیسی علیہ استلام بغیر باپ کے، اور

قوم می آزمائش ۱۱) ماور نافستهٔ الله

آ دم علیہ التلام بغیر ماں باپ کے پیدا کئے گئے۔ پیدا ونٹنی جہاں حضرت صالح علیہ التلام کی رسالت پر دلیل وثبوت اورایک علامت تھی و ہاں فرآن مکیم کی تصریح ہے کہ وہ قوم نمود کے لئے آز ماکش اور امنحال جھی تھی جو اُن کی تباہی کانٹ ان ٹابت ہوئی ۔

ہرز مانے میں الٹر تعالیے کی پیسنت وعادت رہی ہے دجسکو قرآنی الفاظ

یں" سنتہ الٹر" کہا جا تا ہے ۔ جب سجی و وکسی قوم کی طرف اپنا رسول بھیجیا ہے اور قوم أسكى ہدایت ونصیحت پر کان نہیں دھرتی توضرورٹی نہیں کہ وہ قوم اس نا فرما نی کی یا داسٹس میں فوراً ہی ہلاک کردی جائے ۔الیبی مہت سی فو میں ہیں طخصوں نے اپنے نبیوں کا انکارکیالیکن اُنہیں زمین پر التیر کی دِی ہوئی مدّت بوری کرنے کاموقعہ ملا۔

انہیں مسی ایا نک عذاب سے ہلاک نہیں کیا گیا۔

البنترجس قوم نے اپنے نبی سے اسکی صداقت کے لئے کوئی نشانی طلب کی اور اسيريه وعده كيا كياكه أكروه مطلوبه نشان ظاهر موكيا توان برضرور المان لائيس كے تجبروً ہ ایمان نہیں لائے توانس قوم کی ہلاکت بقینی ہوجا تی ہے۔ قوم نوع ، قوم عاد ، قوم ثمود ، قوم فرعون وغیرہ کی ہلاکتیں اسی وجہ سے ہوئیں کہ انھوں نے اپنے نکبوں سے معجزات طلب کئے تھے بھرا بیان نہیں لائے .

البنہ پوری تاریخ انبیار ہیں صرف ایک قوم (قوم پونس) الٹر تعالے کے اس قانونِ بإداش سے مستشنیٰ رہی جسی منفصیل یہ ہے:۔

سوری یونس ایت عده کا ترجمه به هے:

تميركيا كونى اليبي مثال ہے كه ايك بستى عداب ويكيكرامان لا فی ہوا وراُس کا ایمان اسکے لئے نفع بخشس ٹابت ہوا ہو؟ پونسٹ کی قوم سے سوا داستی کوئی منظیر نہیں) وہ قوم ریونس) جب ایسان ہے آئی توہم نے اُسپرسے ونیای زندگی بین رسوائی کا عذاب ال یا اور ایک مترت تک اُس قوم کو زندگی سے بہرمند سونے کاموقعہ ویا "

اِس آیت میں وضاحت کے ساتھ پیحقیقت ظاہری گئی کہ اللہ کے قانون 'یا داش مل' سے کوئی قوم بیجے نہ سکی ۔ عذاب آنے کے بعد اگر کوئی قوم ایمان لے آتی ہے تو اُس کا یہ ایمان لانا اُنٹے تعالے کے ہاں کو ٹی قیمت نہیں رکھتا اور نہ وہ عذاب ہے بیج سکتی ہے۔ فرعون بھی تو زولِ عذاب کے ساتھ ہی ایمان لے آیا تھا بھی اس کا یہ ایمان لاناً الشرتعالے نے پر کہ کرر دکر دیا کہ اب تو آیمان لا تاہے ؟

·· الغرض عذاب کے وقت تحسی کا اہمان مقبول نہیں ہوتا ۔ ایک اورصرمِن ایک قوم پونس اس سنت التار "مے ستنتی رہی ہے۔ اسکی وجو ہات سے قرآن بھے بیم ہات سے چراغ ساکت ہے اس لئے مقین سے ساتھ یہ نہیں کہاجا سکتا کہ یہ قوم اس قانون سے شکا ساکت ہے اس لئے مقین سے ساتھ یہ نہیں کہاجا سکتا کہ یہ قوم اس قانون سے شکا سیوں می گئی تا ہم مفسرین کرام نے احادیث اور قرآنی اثنارات سے جو کچھ مجھا ہے۔ سمیوں می گئی تا ہم مفسرین کرام نے احادیث اور قرآنی اثنارات سے جو کچھ مجھا ہے۔

ہ یہ ہے :
'' قوم نے آثارِ عذاب و بچھ کراور بیمعلوم کرکے کہ حضرت

یونس علیہ الت لام بنتی سے بحل سے بین ڈرگئی اور استغفار کرنے

نی یو بچر عذاب واقع نہیں ہوا تھا اس لئے بچا گئے ۔''

رخفیل ندکرہ سیدنا یونس علیہ السّلام میں مطالعہ فرائیں)

رخفیل نذکرہ سیدنا یونس علیہ السّلام میں مطالعہ فرائیں)

ری ایک شبیم از الکے "اداش عمل" کا قانون اگرچه مهزنبی کی قوم کے ساتھ غیاں رہا ہے لیکن اس سنت النّد سے بی کرم کی لائد علیہ و کم کی امّت تشنیٰ رہی ہے اور اس کی تصریح خود آنخضور کی التّدعلیہ وقم سے علیہ و کم است کا بیت ہے ۔۔۔ میں زیاں نیا و فیا اکر بس نے التّر تعالیے سے وعیا

اور قرآن مکیم میں اِس وُعاکی مقبولیت کی تصدیق بھی موجود ہے۔ وَمَا کَانَ اللّٰهُ لِیُعَدِّ بَهُ هُو دَ اَنْتَ فِیْ هُوَ۔ د الانفال آیت ﷺ

اے رسول اس حال بیں کہ آپ اُن میں موجود ہیں الترتعر (ان کا فروں) پر عام عذاب مسلط نہ کر پیگا ؟

رس) انسانی خود فریسی ابعض دفعه انسان کوخوش عیشی اور دنسیا وی جاہ وجلال دیجھ کرین علط فہمی پیدا ہوجاتی کہ جس سحسی قوم یا فرد سے پاس مزنیا وی آسائش کی فراوانی ،صحت وقوت تی بہتات موجود جلداول

تو وہ یقیناً الٹرتعالے کے سایۂ رحمت میں ہے اور اسکو الٹرتعالے کی خوشنو دی

س مُهلک نظریه اورغلط فهمی نے بہت سی قوموں کو انبیار کرام کی تنعلیمات اور ہدایت سے مخروم رکھاہے .حالانکر بعض مرنبہ زیادہ سے زیادہ رِفالہیت اور

خوش میشی زیادہ سے زیادہ عذاب وہلاکت کابیٹ خیمہ نابت ہوئی ہے۔

نوم نمود کے خوشن عیشوں کو بیہی دھوکہ بیش آیا۔ وہ حضرت صالح ء اور اُن کے ساتھیوں کو بیر کہہ کرطعنہ دیا کرنے نتنے کہ کیا صالح جیسے غریب و کیے طاقت آدمی کورسول بنایا گیانیے۔انضیں اپنی قوت وطافتت پر گھمنٹر تھا۔ وہ لوگ تحسی طرح بهى حضرت صالح عليه التلام اور ابيب ن والوں كو خاطرين نہيں لاتے مضے إل خود فیریبی نے قوم کے آکٹر ا فراد کو حضرت صالح علیہ الت لام کی اَطاعت سے ڈور رکھا جسے نتیجے میں وہ عذاب آیا جو تاریخ عالم کاعبر تناک حادثہ ہے۔ اُنھوں نے اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی برقسم کی نعمت اور فرا وائی کا ایک کرا داکرنے سے بجائے حصرت صالح ع

اور اُن کے سائقیوں کا نداق آٹرائے ہوئے کہا:-

أے صالح أكر ہم باطل پرست ہوتے اور التركی خوشنودي ا ور رضا تهمیں ماصل نہ ہوتی تو آج پیعزت و د ولت ، قوت وطا فت' سرسبزوث داب باغات سبيم وزركي بهتات، بلندو بالامحلات یانی ونهرون کی کنرت مهین حاصل نه موق ، په سب معتین الترکی رضا وخوسٹنودی کی علامات ہیں جو ہمیں میشر ہیں اورجس سے تم

حضرت صالح عليه السّلام أن لوگوں سے فرماتے:۔ تبیشک پیلسب تجھ التارتعالے کی معتبیں ہیں بشرطیکہ اُن کو یانے والے اُس کاسٹ کربھی اداکریں ا درا سکے آگے سرمجیکائیں اور بلاست به به به ما ما نعیش وعشرت عذاب ولعنت کا ذرکیجه بھی ہے جبكه إن كومشيخي وغروركے ساتھ برتا جائے۔اس لئے يہمجھنا سخت غلطی ہے کہ ہرسا مان عیش اسٹر تعالیے کی رضا وخوشنو دی کا تمسیرہ

ہوتا ہے ؟ بلکہ آز مائش کا ذریعہ بھی بن جاتا ہے ۔ فرآن کیم نے صرا سے یہ بھی بیان کیا ہے کہ کفروسٹرک کرنے والوں کو بھی اس ونسیا میں سامانِ عیش دیا جاتا ہے کہ کئرت کی زندگی تمام نعمتوں سے خالی رستی ہے ۔ دبقرہ آیت عظال)

رس) جند عبر سی اسر عالیہ وقع ہر نبی کریم میں السرعلیہ وہم کا گزر مقام جند عبر سی کریم میں السرعلیہ وہم کا گزر مقام جی ایک جماعت نقام جی رہوا۔ اس سفر میں صحابہ حرام کی ایک جماعت فیل الشرعلیہ ولم کو جب علوم ہوا تو یانی بہا دینے اور ہانڈیاں اُلٹ دینے اور آٹا ور یہ ارش و نفل یا کہ یہ وہ بتی ہے جس پر السر کا فاروں کو کھلا دینے کا حکم فرمایا اور یہ ارش و فرمایا کہ یہ وہ بتی ہے جس پر السر کا عذاب آیا۔ یہاں نہ قیام کرواور مذیبہاں کی احت بیار سے فائد وا تھا ہو۔ آگے جیل کر پڑاؤ ڈالو الیانہ ہو کہ تم جی صی بلا میں مبتلا ہوجا ہے!

پڑاؤ ڈالو الیانہ ہو کہ تم جی قسی بلا میں مبتلا ہوجا ہے!

ایک اور روایت میں یہ جبی ارشا وضا کے!

ایک اور روایت میں یہ جبی ارشا وضا کی است یوں سے گزرو توامیں اسے گزرو توامیں

اے لوگو اگرتم اصحاب مجرکی بستیوں سے گزرولوا میں اللہ تعالیٰ سے ڈرتے ہوئے مجزوزاری اور روئے ہوئے داخل ہو۔ ورنہ ان بستیوں میں واخل ہی نہ ہونا۔ اور جب خود نبی کریم سلی اللہ علیہ ولم جریں داخل ہوئے فرما یا کہ اے لوگو اللہ تعالیٰ سے علیہ ولم جریں داخل ہوئے فرما یا کہ اے لوگو اللہ تعالیٰ سے صالح علیہ التلام کی قوم نے حضر صالح علیہ التلام کی قوم نے حضر صالح علیہ التلام کی قوم نے حضر کی تھوسے پہاڑ جیسی اوٹمنی پیدا کیا۔ وہ اپنی باری بیں کھائی کروہیں واپس میلی جائی اور جو اسکی باری کا ون نہ تھا اس میں قوم نمود کواپنے دودھ سے سیراب کرتی تھی مگر تمود نے آخر سرکتنی کی اور ناقہ اللہ دودھ سے سیراب کرتی تھی مگر تمود نے آخر سرکتنی کی اور ناقہ اللہ ان پرچیخ کاعذاب مسلط کردیا اور وہ اس عذاب سے گھروں کے اندرہی ممردہ ہوگئے۔ صرف ایک شخص ابور غال نامی باتی بھی اور بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بی ان بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی بیا ہی باتی بھی بی ان برچیخ کا عذاب مسلط کردیا اور وہ اس عذاب سے گھروں کے اندر بی ممردہ ہوگئے۔ صرف ایک شخص ابور غال نامی باتی بھی بی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی بیا ہی باتی بھی بیا ہی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بھی بیا ہی باتی بیا ہی باتی بھی بیا ہی بیا ہی باتی بھی بیا ہیا ہی باتی بیا ہی ہی بیا ہی

حرم شریف (محتم) گیا ہوا تھالیکن جب وہ حدود حرم سے با ہر آیا فوراً أنسى عذاب كا شكار بوگيا . (تاريخ ابن كثير مبلد ما صها)

ره، نا باک مردول سے خطاب عذاب کے اختتام پر صنب صالح علبه اِت لام اینے شہر والیس لو کے

تباہ حال بستی کے کھنڈرات پر کھڑے ہوکراُن نعشوں موجو بچھری ہوتی حالت ہیں پڑی تھیں اس طرح خطاب کیا :۔

> آکے قوم! بلاست میں نے اپنے رب کا پیغام تم تک پہنجاذ ا ورنم کونصیحت بھی کی سکن تم تونصیحت کرنے والوں کویینڈ ہی نہیں كرتے تھے " (اعراف آیت عاف)

حضرت صالحے علیہ الت لام کا یہ خطاب اُسی طرز کا تھاجس طرح بدر ہیں مشرکین مگہ کے سرداروں کی ہلاکت کے بعد مردہ نعشوں کے گڑھے پر کھڑے ہوکرنبی کربم صلی الشرعلیہ وسلم نے خطاب فرمایا تھا :۔

اً کے فلاں ابن فلاں کیا تم کوالٹرنغالے اورا کیے رسول کی اطاعت بیسند آئی ؟ بلاست مبهم نے وہ سب کچھ یا لیاجو ہمارے رب نے ہم سے وعدہ کیا تھا۔ کیا تم نے بھی وہ یا یا جو تمہارے رب نے تم سے وعدہ کیا تھا ؟ (بخاری)

اس صم کاخطاب انبیارعکیہم انسلام کی خصوصیات میں شمیار کیا گیا ہے۔ یہ کوئی عام حالت نہیں ہوتی کہ ہرشخص مردوں ہے اس طرح خطاب کرسکے۔ النزنعالیٰ انبیارکرام کاخطاب مرد د ں کوسنوا دیتاہے آگرجہ وہ جواب دینے سے قاصر ہیں ۔ یہ ہی وجہ ہے کہ جب نبی کرئم صلی الشرعلیہ ولم نے مفام بدر میں سے رکین کی لاشوں کو اس طرح خطاب فرا چیج توحضرت عمر بن الخطا لِن نے تعجب سے پوچیا. یا رسول الله کیا پیشن رہے ہیں ؟ آت نے فرایا ہاں ! تم سے زیادہ محرجواب دینے سے عاجز ہیں۔ قرآن تحمیم میں اسکی مزیر صراحت موجودے. وَ مَا یَسُنَوِی الْآعْمٰی وَالْبَصِیدُو کَلَا الظّلُمانِ

ہدایت سے جیراغ

وَلَا النَّوُرُ وَلَا الظِلَّ وَلَا الْحَرُورُ وَمَا يَسْتَوِى الْآحَيَاءُ وَلَا الْآمُواتُ وَإِنَّ اللهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ وَمَا آنسَتَ بِمُسْمِعٍ مِّنْ فِي الْقُبُورُوانُ آنْتَ اللَّانَذِيْرُ

دالفاطر آیت ملاتا تا سام)

اندهااور آنکهوں والا برابرنہیں ہے، نہ تاریکیاں اور رونی کی بیسی ہے۔

اور نہ زندے اور مردے مساوی ہیں السّرتعالیٰ جے چاہتا ہے منوانا ہے اور الے نبی تم ان توگوں کو نہیں ساسکتے جو قبروں میں منوانا ہے ۔ اور الے نبی تم ان توگوں کو نہیں ساسکتے جو قبروں میں مذون ہیں آپ توصر من خبر دار کرنے والے ہو۔ (میعنی السّری مشیت کی بات ہی دوسری ہے وہ چاہے تو پتھروں کوسماعت بخش وے اور اہل سماعت کو بہر ہ کر دے ، جمادات کو متحرک کردے اور حیوان کو بے می وحرکت بنا دے)

رو) معجزات كى حقيقت أناقة الله صفرت صالح عليه التلام كى يه اوللني بغيرت ظاهري اسباب كے دجود

یں آئی تھی اس لئے اسکوحضرت صالح علیہ الت آم کا معجزہ قرار دیا گیا۔
معجزے کی حقیقت کیا ہے ؟ اسپراہل علم حضرات نے مہت تفصیل کیساتھ
حپوٹے بڑے مضامین تھے ہیں۔ یہاں اسکا خلاصہ پنیں ہے ناکہ معجزہ عربی کی حقیقت
معلوم ہوجائے معجزہ عربی زبان ہیں عاجز کر دینے اور تھکا دینے والی چیز کو کہا
جا آ ہے۔ اسلامی بول چال ہیں ایسے عمل کا نام ہے جو بغیر کسی اسباب سے وجود
ہیں آجائے ۔ چونکہ ایسی چیزاچا نک اور بغیر کسی اسباب سے وجود
ہیں آجائے ۔ چونکہ ایسی چیزاچا نک اور بغیر کسی اسباب سے وجود
انسانی عقل اِسے سمجھنے سے عاجز ہوتی ہے کہ یہ کیوں کر ظاہر ہوگئی اس گئے اس میل
کو معجزہ (معنی انسانی عقل وہم کو تھکا دینے اور عاجز کر دینے والی بات) کہا گیا ۔ یا میعنی
کر اس جسے عمل کو انسانی طاقت پیدا کر دینے سے عاجز و بے بس ہے۔ اسلتے انبیار ہرام
کر اس جسے عمل کو انسانی طاقت پیدا کر دینے سے عاجز و بے بس ہے۔ اسلتے انبیار ہرام
کے معجزات انسانوں کو یہ باور کرانے پر محبود کر دینے ہیں کہ پیمل "انسانی طاقت سی

باہر کسی الیبی سبتی کا ہے جسکی طاقت و قدرت سب پرغالب اور بالاترہے إور وہ البَّرْعليم و قدريه كا دستِ قدرت ہے۔اس ليځ تمام اہل مخقيق إسپرتنفق ہيں تُرمجزهُ الشرتعاكے كاعمل ہوتا ہے جوانبیانر ورشل كى صداقت اور دليل كے طور پر إنكے مفدّس ہا تھوں جاری کیا جا تا ہے جو نکہ ایساعمل عام قانون فطرت سے بظاتھ خلاب معلوم ہوناہے اسلے بیسوال قدر تا پیدا ہوجا تاہے کہ کیا قانونِ قدرت میں تبديلي مكن ہے ؟ جبحد قرآن محيم نے نهايت تأكيد كے ساتھ بحي مقامات بريد سرحت كى ہے كہ اللّٰر كى سنت ﴿ قَانُون ﴾ كو بدأتا ہوا نہ يا ؤكے اور اُسميں تبديلي منكن كے ۔ اس سوال کاجواب پیهیے که مجیزے کی پتیعریف شحرنا که و ه قانونِ فطرت یا قانونِ عاد کے خلاف ہو تا ہے غلط فسنم کی تعبیر ہے۔

دراصل التلزنعالے توانین و وقسم کے ہیں :- عادتِ عام ،عادتِ خاص۔ عادتِ عام سے الشرّنِعالے کے وہ قوانین مراد ہوتے ہیں جو کے لسلہ اسباب میں چکڑے ہوئے ہیں۔مثلاً: آگ جلاتی ہے، یانی خٹکی و مصندک بیہنجیا تاہے ، زہر

ہلاک کر ناہے اور سنت مهد شفا بخشتا ہے وغیرہ وغیرہ۔

اِن چیزوں کے درمیان جورسٹ نہ ہے وہ اینا انرکر دکھا اسے آگ مجبور ہے کہ جو اسمب آگرے گا اُسکو جلائے ۔ایسی جیزوں کو فانونِ فدرت کی عا د نِ عامّہ کہاجائے گا۔

دوسری قسم فا نون قدرت کی عادتِ خاص "ہے جب کا مطلب یہ ہے کہ سبب اورمستب ببن تعلق ورسشته بيدا كرنے والے فالق نے كسى خاص مقصد کے لیے اس درمیانی دشتے کو الگ و مُداکر دیا ہو یا د وسرے الفاظ بیں بغیرسبہے مبب کو بیداکر دیا ہوجیساکہ جلنے کے اسباب موجود ہوں اورکوئی جسم نہ جلے، یا دوچارانسانوں کے قابل خوراک سے تناو دونتنو انسان شیم سیر سوجائیں اور تھر اپنی اصلّ مفدار باقی رہ جائے۔ یہ رونوں بانیں چونکہ عام نگاہوں میں قانونِ قدرت ہے خلاف ہیں اس لئے جب یہ یا اس طرح کی کونی اورشی رونما ہوجا تی ہے تو پر کہاجا تاہے كرية فانونِ قدرت أياسنت التر كي خلاف م

مَالاَ نَكُهِ السِانَهِينِ ہے . حقیقت یہ ہے کہ ایسی چیزیں پہلی قسم بعنی ٌعادیام"

کے خلاف تو ہیں لیکن ووسری قسم عادت خاص"کے خلاف نہیں ۔ اورائیسی خلاف عادت چیزیں قانونِ قدرت ہی کی ایک کڑی ہوتی ہیں جوعام حالات سے الگ کسی خاص مقصد کو پوراکر نے کے لئے ظاہر کی جاتی ہیں ۔ اب اگر آگ ہو اور کسی جیم کو نہ جلائے یا ذہر کھالیا جائے اور ہلاکت نہ ہوتو یہ کہا جائے گاکہ یہ چیزیں عادتِ عام کے خلاف تو ہیں لیکن اللہ کی عادتِ خاص کے خلاف نہیں ۔ اور اس کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ اس طرح اللہ تعالے اپنے نبی ورسول کی صداقت کی تصدیق فرما تا ہے اور شک کرنے یا جھٹلا نے والوں کو یہ باور کروایا جاتا ہے کہ آگر یہ برعی رسالت اپنے دعوے ہیں سی نہ ہوتا تو خدا کی یہ ذربر دست تائید تھی مجی اس کے خاص ہوتا ہے کہ آگر یہ برعی رسالت اپنے دعوے ہیں سی نہ ہوتا تو خدا کی یہ ذربر دست تائید تھی ہی اُسکے ساتھ نہ ہوتی ۔ لہٰ دااللہ تعالے کا فیصل جو اسکی عادتِ خاص کی شکل ہیں نبی کے ہاتھ ظاہر ہوا ہے معجزہ کہلا ناہے اور نبی کی صداقت پر دیا گی قراریا تا ہے۔

نبی کی صداقت پر دسیل قرار یا تاہے۔ معجزہ نبوت ورسالت کا نبوت فراہم کر تاہے علامت یا معیار نہیں ہوتا ، بعنی آگر کسی نبی سے کو ئی تھبی معجزہ جا رس نہ ہوا تو یہ نہیں کہاجا ئیگا کہ بہ نہی ورسول نہیں ہیں۔حقیقت بیں نبی کی خود اپنی ذات اپنے بے شمار سمالات وفضائل کی بنار پر سرین مقدمہ تا معدد میں نہ

ایک جلتا مهر تامعجزه هو تاہے.

ی بخیل امتول بی ایسے انبیار بھی گزرے ہیں جنگے ہا تھوں کوئی بھی معجزہ ظاہر نہیں ہوائیکن وہ الیٹر کے فرستارہ نبی ورسولِ سطے۔

خلاصہ پر ہے کہ اگرنبی اور رسول معجزہ نہ دکھلائے تونبی کی صدافت ہیں کوئی کمی نہیں ہوگی بسکن اگرمُنگرین سے مطالبہ بریا ازخود رسول معجزہ کا اظہار کرے تو میقیناً معجزہ نبوت کی دلیل اور ثبوت فرار پائے گاا ور اُسکا انکار صداقت کا انکار ہوگاجو

فالص لفرقی قسم ہے۔ البتہ یہ حقیقت بھی فراموش نہونی چا ہیے کہ شخص سے صرف اس قسم کے خارق عادت کوئی عمل صادر ہونے کا نا م مجزہ نہیں ہے اور بحض اس عمل کے بروئے کارلانے سے وہ نبی بارسول نہیں ہوست تا اس لئے کہ نبی اور رسول کے لئے سب سے مسلے بیصروری ہے کہ اسی تمام زندگی اس طرح آزبائش وامتحان کی کسوئی پراتر چی ہوئی اسکا کوئی شعبہ زندگی ناقص اور قابل اعتراض نہ ہو بلکہ اسی تمام زندگی میں اخلاق کی بلندی، گناہوں سے معصومیت، صدافت گفتاد وکر دارا ورپاکیس نرہ معلی اخلاق کی بلندی، گناہوں سے معصومیت، صدافت گفتاد وکر دارا ورپاکیس شعلیمات اپنے درجۂ کمال کو بہنچے ہوئے ہوں اسکے بعد علمی وقلی دلائل و برا ہمین سے علا وہ الند تعالیٰ وہ بی ہے۔
کے علا وہ الند تعالیٰ کی آیات (معجزے) بھی بہنس کرتا ہوتو بلاشیہ وہ نبی ہے۔
کے لئے نخر پری تحکیں ہیں ورنہ حتم نبوت کے بعد نہ اسکی ضرورت سے اور نہ کسی کو اس سولی پر جانبے اور کر تھنے کی صرورت ہے۔ اب فیامت تک پیلسلہ بند ہوگیا ہو۔
اس کسوئی پر جانبے اور کر تھنے کی صرورت ہے۔ اب فیامت تک پیلسلہ بند ہوگیا ہو۔
البتہ اگر اس قسم نے یا اس جیسے امور سمی نیک وصالح اور تقی انسان سے سے زد ہوجائیں تو وہ کرامت "کہلائیں گے۔ اور اگر یہ امور کسی ہے دین ، بے ممل واہی ہی انسان سے جاری ہوں تو انکو است دراج " سحر، شعبدہ ، وغیرہ کہا جائی احسمیں مخفی ذرائع کار فرما ہوتے ہیں۔

الغرض معجزہ در اصل نبی کا بیاعمل نہیں ہوتا بلکہ وہ التّرتعالے کا فعل ہے جونبی کے ہاتھوں ظاہر ہوتا ہے۔ یہ اس لئے کہ نبی ورسول بھی ایک انسان اور بشر ہوتا ہے ایہ اس لئے کہ نبی ورسول بھی ایک انسان اور بشر ہوتا ہے اور کسی انسان کی قدرت ہیں یہ نہیں کہ وہ التّرتعالے کے قوانین عام وفاص میں دخل اندازی یا تغیر کرسکے۔ لہذا معجزہ صرف التّرعزوب کافعل ہوتا ہے جونبیوں کے باتھوں جاری کیا جاتا ہے غزوہ بدر ہیں جبکہ بنت سونیرہ مسلمانوں کے مقابلے ہیں سازوہ ما التّر علیہ وہ م نے التّر ہے سامے ایک ہزاد دسمنوں کا استکر بلغار محرف آیا تھا تو آنحضور میں التّرعلیہ وہ م نے التّر کے می فرد کی آنکھ میں فاک کے دیزے بہنچے اور وہ بیجین ہوکر آنکھیں ملنے لگا۔ قرآن کی م نے اس واقعہ میں فاک کے دیزے بہنچے اور وہ بیجین ہوکر آنکھیں ملنے لگا۔ قرآن کی م نے اس واقعہ کام عجزانہ انداز میں ندکرہ میا ہے۔

وَمَا رَّمَيْتَ إِذْ مَ مَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَى .

دانفال آیت کے ا آنے بی جب تم نے مٹھی مجرخاک چینکی مقی تو تم نے نہیں مجینکی بلکہ اللہ نے مجینی مقی " معجزے کی اصل حقیقت کے لئے قرآن حکیم کی یہ آیت بہت کا فی ہے۔ ایک مشت خاک کو میقیناً نبی حرکم صلی الٹرعلیہ ولم سے با مقدنے بچینکا نفا ہدایت کے چراغ جلدادّل

جوانسانی حدطافت کے لحاظ ہے تھے و و تو تو گرکے اصابے میں تھیں سکتے ہیں لیکن اسکا یہ حیرت انگیزا ٹرکہ دشمن کے محاذ کی دُوری اور اننی بڑی نتعداد میں ہونے کے باوجود ان سب کی آنکھوں ہیں بہنچ جانا ایک انسانی ہاتھ کے لئے ناممکن ہے۔ یہ درحقیقت اللہ کو افعل تھاکہ اُس کے دستِ قدرت نے اِن تمام د شواریوں کو بیلخت ختم کر کے نکریوں کو دشمنوں کی صفول کے اندر پہنچا دیا۔ اور دشمنوں نے اس خدائی خاکی طوفان سے بچنے کے لئے منھ مھیرد یا اور شکست کھا جیٹے۔

كرامت تى بحث تذكره تسبيره مريم " بين آئيگى ـ والتراعلم وعلمهٔ اتم ـ

(2) آنارِعبرت المجارِ المحرِد الم المحرود الم المحرور المحرود الم المحرود الم المحرود المحرود المحرود المحرود المحرور المحرود المحرور المحرود المحرود المحرود المحرود المحرود المحرود المحرود المحرور المحرود المحرود

ایک بہار می کے درتے کو دکھا کر فرمایا کہ اِس درّے سے وہ اونٹنی پانی ہینے کے لئے آئی تھی۔ کے لئے آئی تھی۔ کے ان کھنڈرو کے ان کھنڈرو میں جو لوگ سے کے ایک سے شہورہے۔ ان کھنڈرو میں جولوگ سیر کرتے میمررہے منظمان کو آٹ نے جع کیا اور اُن کے سامنے ایک خطبہ دیا جبیں نمود کے انجام رہے میں دلائی اور فرما یا کہ یہ اُس قوم کا علاقہ ہے جس پر التنزیجا کی ا

کاعذاب ازل ہوا تھا، اہذا یہاں سے جلدی گزرجاؤ۔ یہ سبرگاہ نہیں بلکہ رونے کامقام ہے۔ الجریح گردوسٹ یا بی جاتی ہے۔ آبادی برائے نام اور روئیب رگ مہت ہی جات ہی گر سے ایک تنویس کے بارے ہیں مقامی مہت ہی گم ہے۔ یہاں چند کنویس ہیں انہی میں سے ایک کنویس کے بارے ہیں مقامی آرہی ہے کو حضرت صالح علیہ الت لام کی اوٹمنی اس کنویس ہے یہ دوایت میں آرہی ہے کو حضرت صالح علیہ الت لام کی اوٹمنی اس کنویس ہے یہ ایک تاریخ کھی ۔ یہ ایک کرتی تھی ۔ یہ دوایت کرتی تھی ۔ یہ دوایت کی اوٹمنی اس کنویس ہے یہ کرتی تھی ۔ یہ دوایت کا کرتی تھی ۔ یہ دوایت کرتی تھی ۔ یہ دوایت کا کرتی تھی ۔ یہ دوایت کا کرتی تھی ۔ یہ دوایت کرتی تھی دوایت کرتی تھی اور دوایت کرتی تھی دوایت کرتی تھی دوایت کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی دوایت کرتی تھی دوایت کرتی تھی دوایت کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی دوایت کرتی تھی تھی کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھی تھی کرتی تھی تھی کرتی تھی کرتی تھی کرتی تھ

پاں پیاری ہی۔ اس علاقے کے اطراف میں ہرطرف ایسے پہاڑ نظراتے ہیں جو بالکل ثاخ ثلخ ہوگئے ہیں صاف محسوس ہوتا ہے کہسی سخت ہولئاک زلزلے نے انھیں سطح زمین سے چو دفی کے جنجو کر کر قاش قاش کر رکھا ہے ۔ یہ پہاڑی سلمشرق میں خیبر جاتے ہوئے مقریباً د. ھی مبیل بک اور شعبال کی طرف ریاست اُر دن کے حدو و میں (۲۰ - بم) مسیل اندریک چلاجا تاہے۔ اسکے معنی یہ ہیں کہوئی تین چارسومیل لمبا اور دس امیل چوڑا ایک علاقہ تھا جے ایک عظیم زلزلے نے ہلاکر رکھ دیا۔

آللهُ مَدَّا حُفِظُنَا مِثُ لَاءَ

(۸) ایک منتر کان نظریم حضرت صالح علیه التلام نے اپنی قوم کوالٹر تعالے کی کیائی اور فرماروائی کی سلیغ بین اس طرح خطاب فرمایا: "اے میری قوم کے لوگو با انٹر کی بندگی کرو،اسکے سواتمہارا کوئی بھی اِللہ نہیں ہے۔ یہ وہی ہے جس نے تم کو زمین سے پیدا کیا اور یہاں تم کو بسایا، ہذاتم اس سے مغفرت چاہوا و راسی کی طرف پلیٹ آؤ، یقیناً میرارب قریب ہے اور دعاؤں کا جواب دینے والا ہے "

(بود آیت عالا)

قوم کے مشرکوں کو حضرت صالح علیہ التلام پیلفین کرتے ہیں کہ جب تم خدداس بات کو تسلیم کرتے ہیں کہ جب تم خدداس بات کو تسلیم کرتے ہوکہ تمہارا خالق صرف النٹر ہی ہے اسمیں اس کا تحویٰ شریک و دخیل نہیں تو مجھر النڈ کے سواا ورکس کی خدائی ہو گئی ہے جاسک ہوسکتا ہے کہ تم اس کی بندگی کرو؟ یہ قوم اینی مشکلات وحاجات ہیں ان مشہور بتوں سور کہ تا مقدم نوح میں رائج متھے اور اِن کو وہ وسیلہ و ذرایع سمجھا کرتے متھے۔

یہ ایک عام غلط فہمی ہے جس نے ہرز مانے ہیں انسان کو شرک میں مبتلا کیا ہے۔
یہ لوگ اللہ تعالیٰ کو اپنے راجوں مہاراجوں اور بادیٹ اموں پر قیاس کرتے ہیں جو
رعیت سے دور اپنے محلات میں بیٹھ موحکومت کرتے ہیں جن کے در باریک عام رعا یا
میں سے یسی کی رس ای نہیں ہوسمتی جن سے حضور ہیں تو نی درخواست بہنجانی ہو تو
مقر بین بارگاہ میں سے یسی کا دامن تھامنا پڑتا ہے اور مچراگر خوش صیب سے یسی کی
درخواست اُن کے آستانے پر بہنچ جاتی ہے تو اِن کا بندار خدائی یہ گوارانہیں کر اگہ خود
اس درخواست گزار کو جواب ویں بلکہ جواب و بنے کا کام مقربین میں سے یسی کے شہر د

ہو اسے ۔
فریب قریب یہ ہی طرز عمل مشرکوں نے اللہ واحد کے لئے اختیار کرلیا ہے
اور لوگوں کو ایساسمجھانے کی کوشش میں کی ہے کہ خدا وندعالم کا آسا نہ قدس عسام
اندانوں کی دسترسس سے دور مہت دور ہے۔ اس سے دربا یظیم کا بھلائسی عام
آدمی کی چہنچے کیسے ہوسکتی ہے ، وہاں تک دعاؤں کا پہنچنا اور محفر اُسکا جواب ملٹ انو
کسی طرح ممنسکن ہی نہیں ہوسکتا۔ جب یک کہ پاک دوخوں کا وسیلہ نہ ڈھونڈ اجاک
اور اُن ذرہبی منصب داروں کی خدیات حاصل نہ کی جائیں جوا ویر تک نذریں نیازیں
ہمنچانے طور وطریقے جانتے ہیں۔ یہی وہ خت علطی ہے جس نے بندے اور الندواجد
ہمنی نے درمیان مہت سے چھوٹے بڑے معبودوں اور سفار تیوں کا ایک جم عفیر کھڑا کر دیا ہمنے ورمیان مہت سے چھوٹے بڑے معبودوں اور سفار تیوں کا ایک جم عفیر کھڑا کر دیا ہمنے ورمیان مہت سے چھوٹے بڑے معبودوں اور سفار تیوں کا ایک جم عفیر کھڑا کر دیا ہمنے مناصب
اور جسی عملی صورت میں مہنت گری ، آست نگی ، مجاور کری ، سبجادہ نشین کے مناصب
اور جسی عملی صورت میں مہنت گری ، آست نگی ، مجاور کری ، سبجادہ نشین کے مناصب

ائم ہوتے چلے گئے۔ حضرت صالح علیہ الت لام نے جا دلیت سے اس قدیم فلیفے کوصرف قطع م

لفطوں سے رُوُکر دیاہے :۔ ایک یہ کہ اللّٰہ قریب ہے دوسرے یہ کہ وہ مجبب ہے۔ بعنی تمہارا یہ خیال بھی غلط ہے کہ وہ تم سے دُور ہے اور یہ بھی غلط ہے کہ تم براہِ را اسکو بکار کر اپنی و عاوُں کا جواب حاصل نہیں کر سکتے ، وہ آگر جہ بہت بلندو ہر ترہے مگر اس سے باوجو د وہ تم سے بہت قریب ہے۔ تم میں سے ہرا یک شخص اپنے پاس ہی اسکو پاسکتا ہے۔ اس سے سرگونٹی مرسکتا ہے۔ فلوت وجلوت میں اپنی عرضیاں خود برایت کے چراغ ملد اوّل

ا سکے حضور سپش کرسکتا ہے اور تھیرو ہ براہِ راست اپنے ہربندے کی دعاؤں کاجوا^ب مجی خو د دیراہے .

تیں جب سلطانِ کا ننات کا در بارِ عام ہروقت ہر خص کے لئے کھا ہے اور وہ ہر خص کے قریب ہی موجو دہے تو تم کس حماقت میں پڑے ہوکہ اسکے لئے ویلئے واسطے ڈھونڈتے بھرتے ہو ؟

سور و بقره آیت علام میں اس حقیقت کو مزید وضاحت کے ساتھ ار ثناو

فرمایاگیاہے۔ارشادہے :۔

وَ الْمَدَّ اللَّهُ عِبَادِی عَیِّیْ فَایِّ فَو نُیْبُ اللَّهِ۔ اُوراے نبی میرے بندے تم سے آگرمیر مے تعلق پوچیس تو اِنفیس بنادوکہ میں اُن سے قریب ہی ہوں ، پکارے والاجب مجھے میکار تاہے میں اُسکی میکار سُنٹا ہوں اور جواب دیتا ہوں ۔ لہذا انہیں چاہیے کہ میری دعوت پرلیک مہیں اور مجھ پر ایمان لائیں ، یہ بات

انہیں سنادوشاید کہ وہ را ہِ راست پالیں ہے۔
معنی آگرجہ مجھے دکھ نہیں سکتے اور نہ اپنے حواس سے جھ کو محسوس کر سکتے ہو، لیکن یہ
خیال نہ کرہ کہ ہیں تم ہے دُور ہوں نہ ہیں ! ہیں اپنے بند سے سے آنا قریب ہوں کہ
جب وہ چاہیے مجھ سے عرض معروض کرسکتا ہے۔ حتیٰ کہ دل ہیں دل ہیں وہ جو کھ مجھ
جب کر ارسش کرتا ہے ہیں اسے بھی سن لیتا ہوں اور صرف سنتا ہی نہیں فیصلہ بھی ضاور
سے گزارسش کرتا ہے ہیں اسے بھی سن لیتا ہوں اور مرف سنتا ہی نہیں فیصلہ بھی ضاور
کرتا ہوں جن بے جان اور بے اختیار ہستیوں کو تم نے اپنی نا دانی سے قاضی الحاجا
اور محمد بھی نہ وہ تہہاری شنوائی کرسکتے ہیں اور نہ اُن ہیں یہ طاقت ہے کہ تہہاری
مطلق ہوں ، تمام اختیارات اور تمام طاقتوں کا مالک ہوں ، تم سے اتنا قریب ہوں کہ
مطلق ہوں ، تمام اختیارات اور تمام طاقتوں کا مالک ہوں ، تم سے اتنا قریب ہوں کہ
مخود بغیر سی واسطے و سیلے اور سفارش کے برا ور است ہر وقت اور ہم جگر بھی تم خود بغیر سی بہنچا سکتے ہو۔ لہذا تم اپنی اس نادائی کو چوڑد و کہ بے طاقت و بے اختیار
اپنی عرضیاں پہنچا سکتے ہو۔ لہذا تم اپنی اس نادائی کو چوڑد و کہ بے طاقت و بے اختیار
ہستیوں کے در پر مارے مارے مارے میری دعوت پر لبیک مہوا و رہیر اور امن

*ج*لد اوّل برایت سے جراغ پکڑلو،میری طرف رجوع کرو، مجھ پر مجروسه کروا درمیری بندگی کرو،ا طاعت ہیں آجاؤ۔

چاہلین اور اسلام صرت صالح علیہ استلام کی بے در بے اور کسل چاہلین اسٹام میں مصرت صالح علیہ استلام کی بے در بے اور کسل دعوت ونصيحت پرقوم نے حیرت واستعجاب سے مرلاك يون خطاب سيا :-

اے صالح اس سے پہلے تو ہمارے درمیا

ایساشخص بھاجس سے بڑی توقعات وابستہ بھیں بھیا تو ہمسیں اُن معبودوں کی سیشش سے روکنا جا ہتاہے جن کی سیشش ہمارے باپ وادا (بود آبت سا۲)

یہ کو یا دلیل ہے اس بات کی کہ بیمعبود تحیوں عبادت سے ستحق ہیں ؟ اور اِن کی یُوجیا ں لئے ہوتی رہنی چاہئے ؟ یہاں جا ہلیت ا ور اسسلام کے طرز استدلال کا فنسرق بالكل واضح طور برنظراتا اس حضرت صالح عليه التلام نے فرما يا كه البتر تعاليے كے سواکونی معبو دنہنب ہے اور اس پریہ دلیل دی کدالٹر تعالے ہی نے تم کو پیدا کیا اور

زمین میں آیا د کیا ہے۔

اسکے جواب میں ابھی مشرک قوم کہتی ہے کہ ہمارے بمعبود تھی تحق عباد ن ہں اور اِن کی عیادت ترک نہیں کی جاسکتی یحیونکہ ہمارے باب وا داکے زیانے ہے اِنْ مِي عبادت ہونی علی آئی ہے بغینی تھی مرکھی صرف اس لئے ماری جاتی رہنی جا ہتے کہ ابتدار بین تحسی بیوقوٹ نے اس جگھ مکھی ہار دی تھی اور اب اس مفام برکھی ہار کئے رہنے سے لئے استحسوا محسی معقول وجد می ضرورت ہی نہیں ہے کہ بہا ک مدتوں سے مکھی ماری جارہی ہے۔

سبحان النُّر! اس آیت میں اسسلام ا ورجا طبیت کا طرز استدلال اورزاویه مُظرواضح اورعيال ہے۔ أَللَّهُ هُمَّ أَيْرِنَا الْحُقَّ حَقًّا وَّارُزُقُنَا اِبْبَاعًا.

و جود ہیں بوسفاہے پر اسے والوں ویں مردھ دیں ہے۔ کئیں حضرت صالح علیہ اتسالم نے بغیر مسی لاکولٹ کراور بغیر مسی نفسری طاقت تنہا اسھ کریے جبیلنج اپنی قوم کو دیے دیا اور قوم نے نہصرف بہ کہ اُسکو کان لگاکر مرب میں میں میں موسلے میں میں میں تعمیا بھاس دیں یہ

منا بلکہ بہت دنوں تک ڈرکے مارے وہ اسکی تعمیل کھی کرتی رہی۔ انبیار کرام کا یہ عزم وحوصلہ دراصل اسی قوتِ اعتماد کا نتیجہ ہے جواُن کے قلوب میں النزنعالے کے وعدوں پر پیدا ہوتاہے۔ ایسے موقعوں پر وہ النٹرنعالے کا امریاکر اسباب ظاہری ہے بے نیاز ہو کروہ سب کچھ کرجاتے ہیں جسکا اُنہہیں

ہم ہوتا ہے۔ برین سری علامت اسی است و است کی علامت است است است است کی علامت است است کی تایان کی تایان است کی تایان کی تایان

خصوصیت یمقی که وه اُونچ اُونچ ستونوں والی عمارتیں بناتے تھے اسی طسرج قوم ثمود کے تمدن کی سب سے زیاد ہ نما یا ن خصوصیت جسکی بنار پر و ه عاد نانیه کے نام سے موسوم ہوئے یہ تھی کہ وہ بہاڑوں کو تراش تراش کر ان کے اندرعارتیں بناتے تھے۔ چنا پنج سور ہ فجر میں جس طرح عاد کو ذات العمادِ (ستونوں والے) کا لقب دیا گیا ہے اسی طرح ثمود کا ذکر اس حوالے سے کیا گیا ہے۔ اُلگیٰ بین جَا بُوا الصَّحْدَ بَا لُوَادِ اللهِ اِللهِ اللهِ الله

وہ جنھوں نے وا دی میں چٹانیں تراننی ہیں۔

ا سکے علاوہ قرآن حکیم نے بہ مھی بتا یا ہے کہ وہ آپنے ہاں میدانی علاقوں بین ہی بڑے بڑے قصرتعمیر کرنے مطفے۔

تَتَخِنُ وْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قَصُورًا . (اعراف آيت علا)

اوران تعیرات کی غرض و غایت کیا تھنی ؟ قرآن تکیم اسپرلفظ فیے هیئی سے روشنی فرانت میں اسپرلفظ فیے هیئی سے روشنی فرانت ہے معینی بیسب کچھ اپنی بڑائی اپنی دولت وقوت اور اپنے کمالاتِ فن کی نمائش کے لئے تھا۔ کوئی خفیقی صرورت ان کے لئے داعی نہ تھی ۔ نمائش کے لئے تھا۔ کوئی خفیقی صرورت ان کے لئے داعی نہ تھی ۔ ایک بگڑھ ہے ہوئے تمدن کی شان یہی ہوتی ہے۔ ایک طرف معاشرے ایک بگڑھ ہے ہوئے تمدن کی شان یہی ہوتی ہے۔ ایک طرف معاشرے

میں غریب لوگ سَرحیبانے کے لئے معمی کوئی ڈھنگ کی جگہ نہیں پاتے دوسری طرک امرام اور اہل تروت رہنے سے لئے جب صرورت سے زیادہ کا بنا جکتے ہیں تو بلا صرورت نمائنتی یا دگاریں تنعیر کرنے گلتے ہیں ۔

إِنَّا يِسْ وَ إِنَّا إِلَيْهِ مَا إِجْعُونَ -

(۱۲) فالون ممكافات کوم نمو د کی ہلاکت کے بعد اُن کے شہروں کی قسمت کا لفٹ ہے بعد اُن کے شہروں کی قسمت کا لفٹ ہے اس طرح بیان کیا ہے:۔

اُب دیچھ لو اُن کی چال کا انجام کیا ہو؛ ہم نے تباہ کر کے رکھ دیا اُن کواور اُن کی پوری قوم کو۔ نیس اُن کے تھرخالی و بران پڑے ہیں اُن کے تھے۔ اس ایں ایک پڑے ہیں اُن عبرت ہے اُن لوگوں کے لئے جوعلم دکھتے ہیں۔ اور بچالیا ہم نے نان لوگوں کے لئے جوعلم دکھتے ہیں۔ اور بچالیا ہم نے نان لوگوں کے لئے جوعلم دکھتے ہیں۔ اور بچالیا ہم نے

اُن لوگوں کو جو ایمان لائے تھے اور نا فرمانی سے پر ہیز کرتے تھے۔ دانغل آیت عا<u>ہ</u> تا ہے)

موجودہ زمانے بیں بعض ناواقف لوگوں کو یہ کہتے مُنا گیا کہ فیاغظانہ آئیں ہیں کہ فلاں شہریا فلاں علاقہ فسق وفجورسے مھرگیا مقا اس لئے اسپرسیلاب آگیا یا زلزلے نے اسکی بستیاں السط میں انجیسی لا میں زائر ان ان اس کی سے تاہیں طرح سابی نامی نامی ہوئی۔

دیں یائیسی بلائے ناگہانی نے اسے تُل بیٹ کردیا۔ وغیرہ ۔
لیکن جولوگ علم وبھیرت رکھتے ہیں وہ جانتے ہیں کومشرکین کے معبودوں کی طرح کوئی اندھا بہرا خدا اِس کا مُنات برحکومت نہیں کررہا ہے بلکہ ایک تکیم ودا نا صاحب اقتدا رہتی ہیاں قوموں کو گوانے صاحب اقتدا رہتی ہیاں قوموں کو گوانے اور اُسطانے کے فیصلے اندھا وُھند نہیں کئے جاتے بلکہ خمت اور عدل کے ساتھ کئے جاتے ہیں۔ اور ایک قانون ممکا فات بھی اس کی کتا ہے آئین ہیں شایل ہے جس کی روسے اضلاقی بنیا دوں براس وُنیا میں بھی ظالم کیفر کر دار کو مینوائے جاتے ہیں۔

روسے اصابی بنیادوں پر اس دنیا ہیں بی طام پیر تر دار تو پہچا ہے جائے ہیں۔
ان حقیقتوں سے جولوگ باخبر ہیں وہ قوم نمود کے زلز لے کو اسا ہِ بنی کا نتیجہ کو کہ رنہیں ٹال سکتے وہ اسے اپنے حق میں نبیبہ کا کوڑا اسمجھیں گے اور عبرت ماسل کریں گے۔ وہ اُن اسباب کو مجھنے کی کوششش کریں گےجن کی بنار پرخالق نے اپنی پیدا کی ہوئی ایک مکیلتی بھولتی قوم کو غارت کر کے رکھ دیا۔ وہ اپنے طرز عمل کو اُس راہ سے سٹا کیں گے جو اُس کا غضب لانے والا ہے اور اُس راہ پر ڈالیں گے جو اُس کی رحمت سے ہمکنار کرنے والا ہے۔ اَکٹھ تھے اُھید نَا وَسَید دُنا۔

۱۳۱) اطاعت کر بزری کے اسباب کی پیروی ہے انکارکر ناتین وجوہ

سے مختا: ۱- بیرکہ وہ بشرہیں انسانیت سے بالا ترنہ بیں کو ہم اُنکی بڑائی ماں کیں۔ ۲- بیر کہ وہ ہماری اپنی ہی قوم کے ایک فرد ہیں ہم پر اِن کی فضیلت کی کوئی وجنہ ہیں۔

۳- یہ کہ و ہ اکیلے ہیں کوئی بڑے سردا زمہیں جس کے ساتھ کوئی بڑاجتھا ہو،لاؤکٹ کرمہو۔ ملداوّل

ہاں کے ہیں جب کے میں ساب خود قرآن کیم نے بیان کئے ہیں جب کی فصیل گزشتہ اوراق
میں آجی ہے۔ یہ ہی وہ جہالت بھی جس میں کف اِمکۃ مبتلا تھے۔ نبی کریم کی الترعلیہ
میں آجی ہے۔ یہ ہی وہ جہالت کھی جس میں کف اِمکۃ مبتلا تھے۔ نبی کریم کی الترعلیہ
سام کی رسالت ما ننے سے اِن کا انکار بھی اسی نبیاد پر تھا کہ:و کم کی رسالت ما ننے ہے اِن کا انکار بھی اسی نبیاد پر تھا کہ:و کم میں ہے ہیں۔ یہ رہے امر آدمیوں کی طرح بازار وں جس چلتے پھر

دوہ چاہئے۔ مام آدمیوں می طرح بازار وں بیں چلتے بچر ہیں بحل ہمارے ہی درمیان پیدا ہوئے اور آج یہ دعوی کررہے ہیں

کہ تجو کو اللہ نے نبی ورسول آبایا ہے۔ دانفرقان آبت ہے)

یہ لوگ یہ چاہتے تھے کہ نبی یا تو کوئی فوق البشر سہنی ہو، یا اگر و ہ انسان ہی ہوتو ہمالہ

ملک یا قوم میں بیدا نہ ہوا ہو بلکہ اوپر سے انزکر آئے یا با ہر سے بھیجا جائے ، اور اگر یہ
مھی نہیں تو تم از تم آسے توئی رئیس ہونا چاہئے جبی غیر عمولی شان وشوکت کی وجہ سے
مین نہیں ان بیاجائے کہ رہنمائی سے لئے اللہ کی مظرانتخاب اس پر ٹری ہے۔
اسی جا ہلانہ نظروف کر سے تقریباً ہر نبی تو ما بقہ پڑا ہے ۔ ندکر ہ سیدنا نوح علایسلام
میں انٹیونسیل سے ساتھ بحث آبی ہے۔
میں انٹیونسیل سے ساتھ بحث آبی ہے۔

رمهر) مبرافت رارسے بالائر انمود کے توگوں نے حضرت سالح علیہ ات لام کی نبوت کوچٹلاد باجوان کی ہدایت کے لئے

مجھیجے گئے تھے اور اس جھٹلانے کی وجائن کی سرحتی تھی کہ وہ اُس جور کے چھوڑنے کو ہے تھے۔
تیار نہ تھے جس میں وہ مبتلا ہو چکے سمنے اور اُس تقوٰی کو قبول کرنا گوار ا نہ تھا جسکی طرحضرت صالح علیہ الت لام انفین دعوت دے رہے سمنے ۔ آخر کار قوم نے حضرت صالح علیہ الت لام کوچیلنج دے دیا کہ اگر تم سیج ہوتو کوئی نن نی (مفجزہ) پین کرو؟ اسپر حضرت صالح علیہ الت لام نے ایک اوٹلنی کو مفجزے کے طور پر بین کردیا اور ساتھ ہی یہ حضرت صالح علیہ الت اور ساتھ ہی یہ بوجاؤ گے ۔ اس وار ننگ پر وہ گوگی تھے نہ کو گانا ور نہ سخت ترین غذاب سے دوچار ہوجاؤ گے ۔ اس وار ننگ پر وہ گوگی تھ تہ تک ڈرتے رہے تھرا پے سب سے زیادہ سر پر وسرکش سردار کو پرکارا کہ اس اوٹنی کا قصة تمام کر دے ۔ وہ اس کام کا ذمہ ہے کہ شریب سے زیادہ سے ریادہ بار وسرکش سردار کو پرکارا کہ اس اوٹنی کا قصة تمام کر دے ۔ وہ اس کام کا ذمہ ہے کہ گوئی اور مزے کراوا سے بعد وہ عذاب آجائیگا

جلداول

ہایت کے جراغ

جوساری بستیوں کو اُلٹ پلٹ کر رکھ دیے گا۔ آخر کار اِس گناہ کی یا دانش میں اُن کے ر رب نے اُن پر البی آفت توڑی کہ ایک سائف سب کو پیوند خاک محر دیا۔ اور النٹر کو اپنے اس فعل کے کسی بھی بنیجے کا کوئی خوف نہیں ہے۔"

(الشمس آيت علا. علا)

یعنی الشرتعالے و نیا کے با دست ابوں اور بہاں کی حکومتوں سے فرمانر واؤں کی طسرح نہیں کہ و وسی قوم سے خلاف کوئی قدم اُنتھانے کے وقت یہ سونجھنے پرمجبور بہوتے ہیں کہ اس اقدام کے کیا کیا تائج ہوتے ہیں یا کمیا کمیا ہوسکیں سے ؟

الیکن النٹر تعالے کا افتدار مبرا قتدار سے بالا ترہے اُسکو اس بات کا کوئی اندیش نہیں تھا کہ تمودی تباہی وہر با دی برکسی ما فوق قوت وطاقت کا اندیشہ ہو کہ وہ اُسکی مددا ور مدا فعت کے لئے ظام رہوگی۔ قصتہ کا اختتام اس آیت برکس قسدر بلیغ ترہے۔

 سلسله نسب تورات میں ستیدنا ابراہیم علیہ اتسلام کانسب نامہ اس طرح نہ کورہے: ابراہیم بن تارخ بن ناحور بن سروج

بن رعو بن فالح بن عامر بن شالح بن ارفكشاد بن سام بن نوح عليه السلام.

یقصریح تورات سے علاوہ کتب تاریخ سے مطابق ہے۔ قرآن تکیم نے سیدنا ابراہیم علیہ التلام سے والد کا نام آزر بنایا ہے اور تاریخی میں تارخ لکھا گیا ہے۔ اہلِ علم نے اِس کا یہ جواب دیا ہے کہ دونوں نام ایک ہی شخص سریں تارخ اسمی نام سے اور اُن جسفی نام۔

سے ہیں۔ "مارخ اسمی نام ہے اور آزر وسفی نام۔ ازرعبرانی زبان میں محب شم کو کہاجا تاہے۔ چونکہ تارخ ہیں بُت تراشی اور منت بیتی دونوں وصف موجود محقے اس کئے اُسکو آزر نہاگیا۔ قرآن محیم نے اُس کے بت بیت میں دونوں وصف موجود محقے اس کئے اُسکو آزر نہاگیا۔ قرآن محیم نے اُس کے

وصفی نام ہی کو بیان کیاہے۔ مضہورا مام تفسیر مجا ہڑا کمتوفی ستانے نے لکھاہے کہ آزر دراصل اس بُت کانام تفاجسکا وہ پچاری رہاہے۔اس نسبت سے اس کانام بھی آزر بڑگیا۔ قدیم زمانے میں بت پرست لوگ اپنے بچوں سے نام بتوں سے نام پر رکھ دیا کرتے تھے۔ دابن کمٹیریا میں بت پرست لوگ اپنے بچوں سے نام بتوں سے نام پر رکھ دیا کرتے تھے۔ دابن کمٹیریا

فعارف استدنا ابراہم علیہ ات الم کونبی کریم ملی اللّه علیہ ولم نے "ابوالانبیا المی اللّه علیہ ولم نے "ابوالانبیا المی اللّه علیہ ولم نے "ابوالانبیا اللّه اللّه علیہ اللّه علیہ اللّه اللّه علیہ اللّه اللّه علیہ اللّه اللّه علیہ اللّه اللّه اللّه اللّه علیہ اللّه ال

ہدایت کے چراغ

علیہ ولم سے قربانی کے بارے بین دریافت کیا تھا۔ ماھلاند الائضاجی یا دسول الناف

یہ قربان کیا جیسے زہے ؟

آپ نے ارمشادفسرمایا:۔

سَنَّتُ أَبِيكُورًا بُرَاهِ يُمَرِد عليه الله)

تمہادے ہاپ ابراہیم کی سنت ہے! قرآن صمیم نے ستید نا ابراہیم علیہ الت لام کا تعاد ف اس طرح کر وا یا ہے :۔

م صحبيد البرا ، يم تليد السم العارف البرا مرح الروايات رات إبره يم تكان أصّة قانتًا بلاء حديثًا وَ لَمُرُ يك مِنَ الْمُشْرِكِينَ. شَاكِرًا لِلاَنعُرِم إِجْتَبِكُ وَهَدِيهُ (إلى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمُو وَاتَيْنَهُ فِي الدَّنيُّا حَسَنَةً وَ

إِنَّا فِي الْاَخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ . نَمُرَّا وَحُيْنَا إِلَيْكَ السَّالِحِينَ . نَمُرَّا وَحُيْنَا إِلَيْكَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِلْكَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ . أَنِ البِّعُ مِلَّةَ إِبْرُهِيهُ مَرَحَنِيفًا وَآمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ .

د النحل آيات عنداتًا عندار)

"واقعہ یہ ہے کہ ابراہیم اپنی ذات میں ایک پوری ہمت الکی چنیت کے کہ ابراہیم اپنی خار کے خرا نبر دار تھے بالکل ایک رخ مقے اور شرک کرنے والوں میں سے نہ مقے۔ الٹر کی منعمتوں کا ٹنکر اداکرنے والے تھے۔ الٹرنے انہیں منتخب کر لیا تھا۔ اور اُنہیں سیرھا راستہ دکھا یا تھا۔ اور دُنیا میں اُن کو مجلائی دی اور آخرت میں وہ یقیناً صالحین میں ہوں گے۔ بھرہم نے تمہاری طون (اے نبی) وجی مجیمی کہ کیسو ہوکر ابراہیم کے طریقے پر جیلوا ور وہ مشرکوں میں ہونہ تھے۔"

ایک اور مقام پر ارت او فرمایا بله ده سرد به سرد سروی به سرد

ُ مَا كَانَ إَبْرَاهِيمُ يَهُوُدِ يَّا وَلَانَصْرَانِيًّا وَالْكِنْ كَانَ حَنِيْقًا مُنْسُلِمًا مِ رَالِ عَمِرانِ آيت مِنْ)

مرابع من تو میهودی منقے اور منزلفهرانی .البته وه ایک خدا کی طرف مجھکنے والے مسلمان محقے اور وہ مشرکین میں سے نہیں منظے " ایک دوسرے مقام پر ارت اوہ:-وَاذْ کُونِ فِي الْكِتَابِ إِنْدَاهِيْمَ الْكَانَ صِدِيْنَا

نَّبِيتًا - اللَّه دمريم آيت عاله) وأوراب نبي اس كتاب بي ابراسيم كا دُكركرو ببينك وه

مجتهم ستياني التركي بحقي"

وَكَقَدُ أَتَيْنًا إِبْرَاهِيمُ مُن شُدَّةً مِنْ قَبُلُ وَكُنَّا

يب غيليين الآيه دانبيار آيت عله)

یم عیلیتین اور بلات به را ببیاد ایک مند "اور بلات بهم نے ابرا میم کورنند و ہدایت شروع ہی سے بخشی تھی اور ہم ہی اُسکو جاننے والے ہیں "

تورات میں حضرت ابراہیم علیہ استلام کا تنعارت اس طرح آیاہے :- _

میں اس میں اس میں ملیہ الک الام عراق کے فصیداً در کے باشندے اور اہلی فقر اس کے فصیداً در کے باشندے اور اہلی فقر اہلی فقر ان میں سے مصلے۔ اُن کی قوم مبت پرست تھی اور انجیل میں تصریح ہے کہ اُن کے والد نجاری کا بیشہ کرتے محقے اور اپنی قوم کے مختلف قبائل کے لئے لگڑی کے مبت بناتے اور فروخت کرتے ہے۔

عظے، مگر الله تعالیے نے حضرت ابراہیم علیہ التسلام کو شروع ہی ہے۔ حق کی بصیرت اور رشد و ہرایت عطا فرمانی تحقی اور وہ بیقین رکھتے

مقے کے ثبت نہ من سکتے ہیں ، نہ دیچھ سکتے ہیں اور نہ کسی کی پیکار کاجوا '' سکتا ہدی نفعہ منتہ ان سرائین سرکہ فئی ماسوما ''

دے سکتے ہیں اور ند نفع و نتقصان کا اُن سے کوئی واسطہ !

چونکه ملتِ ابراسمی کا پیغام قرآن مکیم نی رشد و ہرایت کا پیغام ہے۔اسکے قرآن مکیم میں جگہ جگہ سید ناا براہ ہم علیہ استلام کا ندکرہ ملتا ہے قرآن کیم علیہ استلام کا ندکرہ ملتا ہے قرآن کیم

ستیرنا ابراہیم علیہ است لام ور رادر سے پیم قریس ران سے پیم

کی پیش سور توں میں نرکشیرہ آیات کے سمن میں یہ تذکرہ موجود ہے۔

٢- ألَّعُوان _ أيات _ ٣٣، ١٩٨، ١٩٨، ١٩٨، ١٩٥٠)

٣- أَلْنَسَاء _أيات _ ١٩٥،٥٢٥ ١٩٣٠-

٧٠. الانعام __ أيات _ ٣١، ١٢، ١٢١٠ ١١١٠

. ه. التوبة _ أيات _ . ١٠٨١ -

٠٠٠ هـ د سایات ١٩٠٠م١٥٥٠٠٠٠

. م. ابراهیم _ أیت __ 0.

مر النحل _ أيات _ ١٢٣٠١٠.

٩- الانبياء _ أيات _ ١٥١٠١، ١٢، ٩٠-

مر الشعراء _ أيت _ 49.

١١. الاحزاب_أيت__،

١٢٠ ص - أيت - ٥٧٠

١٣٠٠ الزخرف أيت ٢٧٠٠

١١٠٠ النجم ايت ٢٠٠٠

١٥٠ الستحني ايت ٧-

١١٠ يوسف ايات ٢١٨٠٠.

١٤٠ الحجر _ أيت _ ١٥٠

- ۱۸. مريع_ايات_۱۲،۲۷،۸۵.

.19. الحسج _ أيات _ ٢٩، ٣٧، ١٨.

. بد العنكبوت أيات _ ١٩، ١٧ ـ

١١٠ ألصافات أيات ١٠٩٠١،١٠١، ١٠٩٠

. ۲۲ - آکشوری __ أیت__ ۱۲۰

٢٠٠ آلذاريات أيت ١٠٠

٢٠- اكديد _ أيت _ ٢٧-

مجموعه (۲۵) سورتيس (۹۳) آيات ـ

قوم ارراسیم ایر اسیم ایرین بیات و میوی قوم بوگ جس کا سرکاری ندید بیات و میں ایک جاتی ہیں درجے اس قوم میں یائی جاتی ہمتی اسکی مثال بھی دشوار بوگ ۔ ایسے گھناؤنے احول میں سیدنا ابراہیم علیہ السلام بیدا ہوئے ۔ آبھے کھولی توسنم پرست ماحول کو بچھا مگر السرتعالے نے علیہ السلام بیدا ہوئے ۔ آبھے کھولی توسنم پرست ماحول کو بچھا مگر السرتعالے نے عطافر مائی ہمتی اور وہ میقین رکھتے سے کھ کہت نہتوشن سکتے ہیں، نہ دیکھ سکتے میں اور وہ میقین رکھتے سکتے ہیں۔ وہ صبح وسنا مراپنی آنکھوں سے میں اور نہ کسی کی پکار کا جواب دے سکتے ہیں۔ وہ صبح وسنا مراپنی آنکھوں سے رہیا تھا اور شام کو اسی برات کے اس حقول سے بنا نا اور گھڑ تا رہیا تھا اور شام کو اسی برات کے سرحھکا تاہے ۔ بینجیب وغریب کیفیت رہتا تھا اور شام کو اس کے میا جو بیت اپنی ذات ہی ہیں وہ سے حالت کو قبول کرنے کے لئے قطعاً آما دہ نہ ہونا تھا ۔ جو بت اپنی ذات ہی ہیں وہ بات حالت کو قبول کرنے کے لئے قطعاً آما دہ نہ ہونا تھا ۔ جو بت اپنی خال میں ہونی کے وہی لائق ہوں کو رہا تھا ہونے ہیں وہ بات کے وہی لائق ہوں کو رہا تھی ہونے میں وہ بات کے وہی لائق ہوں کو رہا تی وہ ایک ہونا ور جو ساری مخلوقات کی پرورش کرتا ہو۔

سورة انبيارى آيات اسى عنوان مضعلق بين :-وَ لَقَلُ الْمَيْدَا إِبْرُهِيْ حَرَّمَ مَنْدُكَا لَا مِنْ قَبُلُ اللّهِ

دالانبيارآيت، الانتهار المائية من المائية كواول بي سے دائد و برآت علاق المنت الله في مضمون الور بلاست بهم نے ابرائيم كواول بي سے دائد و برآت علاكى تقى اور بم اسكے جاننے والے تقے، جب المحفول نے اپنے اپ اور اپنی قوم سے كہا يہ مجستے كيا ہيں جن كوئم لئے بيٹے ہو؟ كہنے باپ اور اپنی قوم سے كہا يہ مجستے كيا ہيں جن كوئم لئے بيٹے ہو؟ كہنے باپ وا داكو إن بى كى پُوجاكرتے پايا ہے! ہو؟ كہنے بم نے كہا، بلاست بم اور تمہارے باپ دا داكھى گمراہى بين ابراہيم نے كہا، بلاست بم اور تمہارے باپ دا داكھى گمراہى بين

ہیں ۔ اُن لوگوں نے جواب دیا کیا تو ہمارے لئے کوئی دا بیجے علاوہ) حق بات لایاہے یا یوں ہی نداف کرنے والوں کی طرح کہتا ہے ؟ ا براہیم نے کہا (یہ قبت تمہارے رب نہیں ہیں) بلکه تمہارا پروردگار زمین وآسمانوں کا پرور دگار ہےجس نے اِن سب کو بیدا کیا ہے اول میں اسی بات کا قائل ہوں^ی'

مے **کو دعوت توحیر** سیدنا ابراہیم علیہ انسلام نے اپنے ارد کرد جب یہ ماحول دیکھا کہ قوم بوری کی بوری بنت سیرنی

تباره پرستی اورمنظا ہر سرستی میں اسقدرمنہک ہے کہ النُّرواحد و ٹرزر کی قدرُت مطلقه اورأس كى برترى كأنونئ متصورتهي قوم سے قلوب ہيں باقی ندر ہا تو محمر ہمت چست کی اور ذاتِ واحد کے بھروسہ پر اُن سے سامنے توحید کا پیغام رکھ دینے

اوراعلان كروينے كافيصله كرلسا-

تے پہلے اپنے تھے رینظرڈالی خودان کا اینا تھرشرک کا سے بڑا مرکز منظر آیا۔ باب آزر کی مبت سازی پوری قوم سے لئے مرجع ومحور بنی ہونی ہے فطر نے آواز دی کہ دعونِ حق کی ابتدا اپنے گھرہی سے ہونی چاہئے ۔اس لئے سبید نا ابراہیم علیہ است لام نے سب سے بہلے آپنے والد آزر تہی تو مخاطب کیا اور فرمایا: ورائے باب خدا پرستی کے لئے جوطریقیہ آب نے اختیار

بیاہے اور حبکو آبائو اجدا دیما قدیم طریقے کہاجا تاہے ۔ بیضریج گمراہی اور باطل برئتی ہے صرا طمت تقیم وہی ہے جبتی میں دعوت دے رہا ہوں۔ ان نے جان مورتیوں ہیں جنگی حیثلیت کھلونوں سے ممنہیں عبادت وستت کے لائق کوئی بات نہیں نہید دیجھ سکتے ہیں نہشن سکتے ہیں ا ورندسی کے کام آتے ہیں ۔ مجلا ایسے بے جان ویے حرکت خدا یا ستریک خداکیوں کر ہو سکتے ہیں ؟ اے باب مجھکوعلم کی روشنی س چی ہے اس روشنی میں آپ جبکر دیجھئے آ بیو حق ^وباطل صاف نظر آئے گا۔ شیطان نے آبکی را ہ ماری ہے آور آبچو غلط را ہ پر گا مزن

کر دیاہے۔ مجھے سخت اندیث ہے کہ نہیں شیطان کی طرح آپ بھی خدا کے عداب میں بتایا نہ ہو جائو ؟''

سیدنا ابراسم علیه استلام کی اس مخلصانه پندونصیحت کا باپ پرکوئی اثر نه ہوا فبول حق کے بجائے آزر نے سبیدنا ابراسم علیه استلام کو دهمکا ناشروع کر دیا بہتے لگا ابراسیم اگر تو بنوں کی بُرائی سے باز نہ آیا تو بیں تجھے سنگساد کر دوں گا۔ سیدنا ابراسم علیہ استلام نے جب دیجھا کہ معاملہ مدسے آگے بڑھ گیا ہے اور ایک جانب اگر باپ کے احترام کا مسئلہ ہے تو دوسری جانب ادائے فرض ، اور امراہی کا سوال تو انحفول نے سوچا اور آخروسی کیا جو ایسے برگزیدہ انسان اور النگر کے جلیل القدر پینمبر کے شایانِ شان تھا۔ باپ کی سختی کا جو اب سختی سے نہیں دیا بلکہ زمی ، حکمت اور اخلاق کر بمانہ کے ساتھ پہنجواب دیا ہے

اُک باپ اگرمیزی بات کا بہی جواب ہے تو آج میں را اس کا بہی جواب ہے تو آج میں را اس کا بہی جواب ہے تو آج میں الٹر تعالیٰ کے بیتے دین اور اسکے بیغام کو نہیں چوڑ سکتا اور کسی حال بھی بتوں کی پرشش نہیں کرسکا، بیں آج بجھ سے جُدا ہو تا ہموں، مگر غائبانہ آپ کے لئے درگاہ الہی بی بیٹ شن کی دُعاکر تا رہوں گا تاکہ آپ کو ہدایت نصیب ہو "
سور ہ مریم میں اس گفتگو کو اس طرح بیان کیا گیا ہے :۔

وَا ذَکُو فِی الْکِنَتَا بِ اِبْدُ هِینُحَرِ اِنْ کَانَ صِلِ اِنْدُ اِنْ کُانَ صِلِ اِنْدُ اِنْدُ کُو اِنْ اللّٰ اللّٰ تا عَدَى اللّٰ تَا عَدَى نَعِیْدُ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ تا عَدَى اللّٰ تا عَدَى نَعِیْدُ اللّٰ الل

قرا فی مضمون اور اسے بنی اس کتاب میں ابراہٹم کا ذکر کرویقیناً وہ مجسم ستجانی النٹر کے نبی تھے۔ اس وقت کا ذکر کروب انتخوں نے اپنے باپ دازر) سے کہا! ابّا جان آپ کیوں ایسی جنرکی پوجا کرتے ہوجو نہ شنتی ہے نہ دیجھتی ہے اور نہ آپ کے کچھ کام اسکتی ہو۔ آبا جان علم کی ایک رفی مجھ مل میں ہے جو آپ کو نہ بیں حال ہے۔ لہذا آپ میرے پیچے چلئے آبکوسیدھی راہ دکھا دوں گا۔ آبا جان شبیطان کی بندگی نہ کیجئے شبیطان تو خدائے رحمٰن

آیا جان بین ڈرتا ہوں کہیں ایسا نہ ہوکہ خدا نے رحمٰن کی طر سے کوئی عذاب آپ کو گھیرلے إور شیطان آپ کا ساتھی ہوجائے۔ باب نے دیہ باتیں مصنکر ہی کہا ابراہیم بر کیا تومیر ہے معبود ے بھر گیائے ؟ یا در کھ اگر توالین اُ باتوں سے بازنہ آیا تو تحقّے سنگار كرد و س كا اور داگرا بني خير چا ښا ہے تو اپني جان سلامت ہے كر ، مجھ سے ہمیشہ کے لئے الگ ہوجا! ابر اہم شکر نے کہاا جہامیراسلام ۔ اب میں اپنے رب ہے آبی بخشش کی دُعامِریا رہوں گا وہ مجھ بر بڑا ہی مہربان ہے۔ ہیںنے تم سب کوجیوڑاا ورامضیں تمجی جنھیں تم التُّركِ سِوامْپِكاراكرتے ہو . ہيں اپنے زب كو بِكارتا ہوں ، امبدكه ا برور دگار کومیکار کرمیں محروم نابت نه ہوں گا۔

باب اوربیٹے ہیں جب اتفاق کی صورت نہ بنی اور زرنے کسی طرح تمجی سستید نا ابراہیم علیہ انسلام کی رشد و ہدایت کو قبول نہ کیا توستیدنا ابرائیم علیہ استلام نے باپ آزرہ جدانی اختياد كرلى اورابني دعوت توحيد اوربيغام رسالت كومزيروسيج تركرديا ابصرف باب اوراہل خاندان ہی مخاطب مذرہے بلکہ لیوری قوم کومخاطَب بنا لیا مگرقوم ا سینے باب دا دا کے طریقے کوکب جیوڑنے والی مھی اُس نےسبدنا ابراہیم علیہ الت کی ایک نہشنی اور توحید کی اس دعوت سے سامنے اپنے باطل معبود ول کی طرح گونگے، اندھے، بہرے بن گئے ۔ اُن کے کان موجو د تنظم منٹر توحید کی آ واز کے ۔ ' بهر منظے آنکھوں بنی بینا نی ضرورتھی لیکن حق کی بصارت سے مخروم ، زبان میں گویا نی كَى طَا قت مَقَى لَكِينَ أِقِرارَ توحيدَ مُحْ لِيَ مُنْكَ مِقَى ءايك موقع برسورَ لَمُ اعْرَا فَ بِي اسْي مَعْ مِنَ مَنَ مِنَانَ كَمَا كَمَا كَمَا كَمَا كَمَا مَنَ مَا مَانَ كَمَا مَا مُنْ مَا مُنْ مِنَا وَلَهُ مُو اَعُلِيثُ كَا مَا مُنْ مُنْ فَعَهُونَ بِهَا وَلَهُ مُو اَعُلِيثُ كَا مَا مُنْ مِنَا وَلَهُ مُو اَعْلَيْثُ فَي مِنْ اللّهِ مِنَا وَلَهُ مُو اَعْلَيْثُ فَي مِنْ اللّهِ مِنَا وَلَهُ مُو اَعْلَيْثُ فَي مِنْ اللّهِ مِنْ اللّهُ وَلَهُ مُو اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ مُنْ أَمِنْ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ أَنْ مُنْ أَلّهُ مِنْ أَلّهُ مُنْ أَلّهُ مُ

لإيبصرون بها الخ 'اُن کے دل ہیں پرسمجھتے نہیں ،اُن کی آنکھیں ہیں پر دیجھتے نہیں اور اُن کے کان ہیں پُر اُن سے سنتے نہیں، یہ لوگ چو یاؤں کی طرح ہیں بلکہ اُن سے بھی زیادہ بے راہ ہیں، یہی ہیں جو (الاعراف آیت عام) إبراميم علَيه انتبام نے زور دے کر پوچھاکہ یہ بتاؤ کہ جن کی تم بیش تے ہو یہ تم کوکسی تھی قسم کا مفع یالمقصان بہنجاتے ہیں ؟ تو کھنے کے کو ان باتوں سے حجا کڑے میں ہم طرنانہیں جا سنے بہم تو جانتے ہیں کہ ہمارے باپ وا وامہی کرتے چلے آئے ہیں۔ لہذا ہم منی وہیں کریں۔ - تبدنا ابراہیم علیہ اب لام نے ایک خاص اندا ذخطاب اختیار فرمآٹرسوال کیا آھیا بنهارے اُن سب بتوں کوا'ینا قیمن جانتا ہوں اور اُن سے اعلانِ جنگ کرتا ہوں باگر بیمبرا کچھ مبگاڑ سکتے ہیں تواپنی حسرت نکالیں ؟ ہیں اپنے خالق و مالک پراعتماد یہ ایک ایسا چیلنج تفاجو قوم کوغور کرنے کے لئے کافی تھا۔ ٹکر آزرا ور قوم نے کے کریا تھا کہتیدنا ابراہیم علیہ انسلام کی کوئی بات مشی خانیگی اس طے سرح ان کاانکار بڑھنا ہی رہا۔ تبدنا ابراسم عليهالت لام كي نصيحت وموعظت كے اس مُؤثر اندازكو

سورہ تعرار میں فصیل سے ساتھ بیان کیا گیاہے:۔ وَاثُلُ عَلَيْهُمْ نَبَا إِبْرًا هِنُهُمَ إِذْ قَالَ لِأَبِيلِهِ وَقَوْمِهِ (الشعرارآيات ع<u>19</u> تاع<u>تانا</u>)

ون اوردام بني سناد يخ أن كوا براسيم كي خبر جب كها انحون نے اپنے باپ اور اپنی قوم کو تم کس کو پُوجتے ہے ؟ وہ بولے ہم یوجے ہیں موز تبوں کو نجیر (سارے دن) انہی سے یاس لگے بیٹھے رہتے ہیں.ابراہیم نے کہا کیا وہ سنتے ہیں جب تم میکارتے ہو؟ یا مجھ

مھلاکرتے ہیں تمہارا یا کھے ٹرا ؟ بولے نہیں، پریم نے یا یا اپنے با دادوں کو یہی گام کرتے شکھے۔ ابراہیم نے کہا بھلا دیکھتے ہوجن کو ہوختی رسے ہوتم اور تمہارے باپ دادا اگلے زمانے کے سووہ سارے بُت میرے ٰ دشمن بنیں مگررب العالمین جس نے مجھکو بیدا کیا سو وہی مجهکوراه دکھا تاہے،اور و ہ جومجھکو کھلا ناہے بلا ناہے اورجب بیں بیمار بہوتا ہوں تو وہی شفا دیتاہے اور وہ جومجھکوموت دیے گا اور بھیر مجھے زندہ کرے گا۔اورجس سے مجعکو آمید ہے کہ مبرے قصورکو معا ر دیے گا انصاف والے دن ۔اے مبرے رب مجھکو حکمت عط فرما اورمجھکونیکوں ہیں سٹامل کر دے۔ اور بعد سے آنے والوں میں مجھکوسچتی ناموری عطاکر، اورمجھکوجنت معیم کے وار ثوں ہیں ٹیال فرہا اورمیرے باپ کومعاف کر دے کہ بیٹک ٰو ہ گمراہ لوگوں ہیں ہے ہے ا در مجعکو اُس دن رُسوایه فرما جبکه لوگ سب زنده کریے اُتھائے جا ک<u>ینگ</u> جبكه نه كونيّ مال فائده دے گائه اولاد، بجزاسكے كه كوني شخص فليب ليم کے ہوئے النگر کے حضور حاضر ہوجائے۔ اُس روزجنت بر ہنرگاروں سے قریب ہے آئی جائیگا۔ اور دوزخ میکے ہوئے لوگوں ہے سامنے محصول دی جائے گی اور اُن سے پوچھا جا کے گا اب کہاں ہیں وہ جنگی تم خدا کو چھوڈ کرعبادت کرتے نقے ؟ کیا وہ تمہاری مجھ مدد کرینگے ياخود اينا بچاؤ كرسكتے ہى ؟

مجروہ معبود اور یہ ہے ہوئے لوگ ادرابلیں سے اٹ کر سب کے سب اس جہتم ہیں اوپر سلے دھکیل دیئے جائیں گے، دہا سب کے سب اس جہتم ہیں اوپر سلے دھکیل دیئے جائیں گے، دہا یہ سب آلیس ہیں جھکڑیں گے اور یہ بہکے ہوئے لوگ (اپنے معبود و سے اللہ کی قسم ہم نوصر سے گھرا ہی ہیں تھے جب کہ نم کو رب العالمین کی برابری کا درجہ دے دے دے مقے۔ اور وہ مجرم لوگ ہی سے جنموں نے ہم کو اس تھراہی ہیں ڈالا۔ اب نہ ہما راکوئی مفاری ہے اور نہ کوئی جگڑی دوست۔

اے کاش اِنہیں ایک دفعہ بھریلیٹے کا موقع مل جائے توہم مومن ہو

تارہ برتی ابت پرست قوموں کے عقیدوں بیں کھے ٹھہراؤنہیں ہوتا وہ ہرائس چیزے خالف ہوجاتے ہیں جس کے ذریعیہ نفع یانتقصان ہوجا تا ہو۔ یہ ہی وجہ ہے کہ ہمت سی قوموں کے معبود جبگل کے درندے اور پانی کے جانوریک پائے

جاتے ہیں۔ قوم ابراہیم ہیں جہاں ثبت بیستی تھنی و ہاں سننارہ بیسنی بھی موجود تھی۔ اِن کاعِقبیدہ تھاٰ کہ انسانوں کی موت وحیات ،اِن کا رزق ہمُفع ومُقْصان ،خشک^{یا}لی' نُعَ وشکست،غرض کارخانۂ عالم کانظم نوشق سے تاروں اور آبی حرکات کی تاثیر بر جل رہاہے۔اس کئے اِن سے تاروں کی خوشنو دی ضروری ہے ۔اور یہ اُنکی پرستش

یه خام خیالی اور باطل عقیده ایسانهبیں تھاکہ قوم اسکوانے ولوں سے نکال دے ۔ وہ اپنے خود ساخنہ بتوں سے خود اشنے خالف سنتھے کہ اُن کو مُرا کہنے والے کے لئے ہرآن پرتصور کرتے تھے کہ وہ اُن کےغضب ہیں آکر تیاہ و ہرباد ہوجائے گا توالیہے او ہام برستول کے دلوں ہیں بلند سناروں کی پرستش سے خلاف جذبه ببيراس أنجيرا كأنان كام ندمقاء

ستیدنا ابراہم علیہ انسلام نے اس ستارہ بیر تنی کے خلاف مجی اپنی جدوجہد جاری رکھی اور قوم کے د ماغوں کے مطابق ایک جیب و دلحیب برایر نبان اختيار فرمأيا بهتارون بهري رأت مين ايك سنناره خوب دومثن بمقارسنتيد نآا براتتهم

علیدالت لام سے فرما یا ہے

لیکن حبب وه اینے مفررہ وقت پرمظروں سے آوجیل ہوگیا توسید نا ابراہم

علیہ التلام نے فرا با ہے۔ ملیہ التلام نے فرا با ہے۔ میں جُھِپ جانے والوں کو پہند نہیں کرتا ؟ میں جُھِپ جانے والوں کو پہند نہیں کرتا ؟ لجھ دیرکے بعد جاند آب و تاب کے ساتھ نمو دار ہوا دیچھ کر فرمایا :۔

حب بحرکا وِقت ہونے لگا تو جاند بھی ماندیٹرنے لگا اورجس قدرطلوع آفتاب کا وقت قرب ہونا گیا جاند کاحبم دیجھنے والوں کی آنکھوں سے اُوجبل ہونے لگا توسیرنا ابراہیم علبيه التبلام ننزا بك ايساج لمبر فرما ياجس سے جاند كے رتب ہونے كى مفى كے ساتھ ساتھ التُدوا مدى سِنى كى جانب قوم كى تُوجه بوجائے. فرما يا :-

" انحر میراحقیفتی پر ور در گار میری رہنمانئ نه کرتا تو بین بھی ضرور

محمراه قوم ہی میں ہے ایک ہوتا "

صرف به که کرخاموش ہوگئے ۔ تاروں تھری رات کا پیقصیہ ختم ہوا دن نکلا تو آفتا ب عالمتّاب ظاہر ہوا اور بوری آب و تاب کے ساتھ جیجنے لگا۔ کتبدنا ابراہیم علیہ انسلام نے اُسپرایک نظر دال کر فرمایا:-

ئیہ میرارب اور پیسب ہے بڑاہے؟'

بھرون بھرجیلنے و مکنے کے بعد سورج مھی روپوش ہونے لگا اور آ ہستہ آ ہننہ نظروں سے غانبُ ہوگیا توسیدنا ابراہیم علیہ التلام نے اپنی براُت کے ساتھ ساتھ اس طیقت کابھی اظہار تحرد یا کہ طلوع وغروب ہونے والے بھلا الٹر کیوں کر ہوسکتے ہیں ؟ اُکے قوم میں ان مشرکا نہ عقائد سے بری بہوں اور مشرک کی زندئی سے بیزار، بلاسٹ میں نے اینا اُنے صرف اُسی ایک ذات کی جانب کرلیا ہے جو آسمانوں اور نین کا خالق ہے۔ ہیں حنبیت ہول

منترک مہیں ؟'

اس كا اعلان كرنا ہى مخفاكہ قوم كاغيض وغضب ســـتيدنا ابراہيم عليه السّلام پراً بل پڑا،اب باضابطیر بیزنا ابراہیم علبہ ات لام سے جھکٹرنے لگے اور طرح طرح ^{جو س}ی وضمكياں دینے لگے اور اپنے معبوروں ہے، فہر ولحضب سے ڈرانے لگے گرعنقریب وہ تیری توہبن کا بچھ سے ضرورانتقام لیں گئے ۔سبیدنا ابراہم علیہات لام نے ہے خوفی کے نیا تف کہا کہ تم مجھے آپنے بتوں ہے کیا ڈراننے ہو ؟ حالانکہ البترنے استھے بنجیج را ہ دکھانی ہے ' محصے تنہار نے بتوں کی کچھ بروا ہنہیں ۔ تمہارے ثبت کچھ مجھی مہیں کر سکتے ، ہیں خدا کے واحد کا ماننے والا ہون جسکے دستِ فدرت ہیں نہ مین

ہوایت کے چراغ

' سمان کی طاقت ہے۔ وہی میرارب ہے اُسی پرمیرااعتمادہے۔ انٹر تعالے کی یہ و عظیم الث ان مجت تھی جوائس نے سیدنا ابراہیم علیہ اللم کی زبان سے ثبت برستی سے خلاف ہرایت ونبلیغ سے بعدستارہ پرستی سے کہ دمیں ناریہ فرانیٔ

> مروق انعام كى آيات اس السلمين قابل غوري :-وَإِذْ قَالَ إِبْرُهِيمُ لِرَبِيْدِ أَذَرًا تَتَخِذُ اصَّنَامًا إِلَّهُ الْحَ دانعام آيات عف تا عند)

ضمون اور ابراسم كا واقعه يادكر وجبكه أمفول نے اپنے باپ آزر سے کہا، کیاتم بتول کو خدا بناتے ہو؟ بینک میں تو تہیں اور تمہاری قوم کو کھلی محمراہی میں دیجھتا ہوں ، ابراہیم کوہم نے اسی طرح نظام سلطنت دکھا کے تحقے اور اس لئے دکھا کے تحقے تاکہ وہ کامل بقین کرنے والوں میں سے ہوجائیں بینانچہ جب ایک رات ان برطاری ہونی تو اعفول نے ایک تارہ ونچھا جہایہ میرا رت ہے امترجب وہ ڈوب گیا تو بولے ڈوجے والوں کامیں گرویده نهبین ہوں . مجرحب جاند حمیکتانظرآیا توکہا پیہے میرا رت المحرجب وه محمی فووب محیا توکها که انترمیرے رتب نے میری رہنمانیؑ نہ کی ہوتی تو ہیں تھی گھراہ لوگوں ہیں شامل ہوگیا ہوتا۔ تجھر جب ہورج کو روشن دیجھا تو کہا یہ ہے میرارت، بیسب سے بڑاہے. متحرجب وه مجى دوبا توابراسم ميكاراً مطفى السه برا دران قوم! مي ان سب سے بیزار ہوں خبیں تم الٹرتعالے کا شریک تحفیراتے ہو یں نے تو بچیو ہوکر اینا رفع اس بہتی کی طرف کر لیاجس نے زبین اولاً سمانوں کو پیدا کیاہے اور میں ہرگزشرک محرتے والوں ہیں سے اُن کی قوم اُن سے حجگڑنے لگی توکہا کیاتم لوگ الٹر کے

معاملے ہیں مجھ سے جھگڑتے ہو؟ عالا نکہ اُس نے مجھکو سیدھی را ہ دکھادی اور ہیں نہاں ہے میں معاملے ہیں مجھ سے جھگڑتے ہو؟ عالا نکہ اُس نے مجھکو سینہ میں ڈرتا۔ البتہ میسرا دت جو کچھ جاسے تو و ہ ضرور ہوسکتا ہے ۔ میرے رت کاعلم ہر چیز ر جھایا ہوا ہے ۔ کیا تم مجھر بھی خیال نہیں کرتے۔

اور آخر میں تمہارے کھہرائے ہوئے شریکوں سے کیسے ڈروں جبکہ تم النرکے ساتھ اُن چیزوں کو خدائی میں مشریک بناتے۔ ہوئے نہیں مشریک بناتے۔ ہوئے نہیں مشریک بناتے ہوئے نہیں مشریک بناتے ہوئے نہیں کا بنان کا بنی سے کون زیادہ بے خوفی واطمینان کا بختی ہے۔ یہم دونوں فریقوں میں سے کون زیادہ بے خوفی واطمینان کا بختی ہے۔ یہم دونوں فریقوں میں سے کون زیادہ بے خوفی واطمینان کا بختی

ہے ؟ بتاؤ اگرتم کچھلم رکھتے ہو ؟

حقیقت میں امن تو انہی کے لئے ہے اور راستی پر وہی ہیں جو ایمان لائے اور جھوں نے اپنے ایمان کوظلم (سٹرک) کیساتھ آلودہ نہیں کیا اور دیکھویہ ہماری مجت ہے جو ہم نے ابراہیم کو اس کی قوم بردی تھی ،جسکے ہم مرتب بلند کرناچاہتے ہیں اسکوعلم و دلیل کا برہان دیکھر بلند کرناچاہتے ہیں اسکوعلم و دلیل کا برہان دیکھر بلند کر دیتے ہیں اور میقیناً تمہارا پرور دگار حکمت والا علم رکھنے والا ہے۔

 ملداوّل

دایت کے تراغ ہی کیوں نہوں رت مجلانے سے قابل نہیں جوڈوبتا ہوزوال پذیر ہووہ کس طسرح

اب بیہاں بتوں می ہے بسبی اور ہے جارگی کا آنکھوں دسکھامنظر قوم کے

رامنے پیش کرتے ہیں۔

قوم نے جب ولائل و براہین سے بعد تھی وعوتِ اسلام قبول نہ کی اوراصنام ہے اور کواکٹ پر تی ہیں اُسی طرح میتلارہی توسید نا آبراہیم علیہ اِنسلام نے ایک پر سی اور کواکٹ پر تی ہیں اُسی طرح میتلارہی توسید نا آبراہیم علیہ اِنسلام نے ایک ذن اینی قوم کے بعض افرادے یہ کہ دیا کہ ہیں تمہارے بتوں کے ساتھ ایک خفیہ تدبیر م ون گا. چۈنکه بات نجه صهاف و واضح نه محتی اس لئے قوم نے اِس جانب کچھ توجہ نہ گی۔ م حَن اتفاقِ كِوقربِ بنى زمانه بن قوم كاليك ندى ميله بينياس آگيا . حب سب أس كے لئے چلنے گلے تو تحجہ لوگوں نے سیدنا ابراہم علیہ اتلام سے بھی اصرار کیا کہ وہ بھی ماتھ جلين، ستدنا أبراسم عليه التلام في الول توانكار فرما يا مجرجب أس جانب اصرار برصنے لگا توستاروں کی جانب نگاہ کی ۔ یہ ایسے ہی مقاجیسا کر بسی شدید تردّ د کے وقت آ ومی کوئی فیصلہ کرنے سے پہلے فطری طور پر ایک نگاہ آسمان کی طرف انتظام لیتاہے۔اس طرح اس کا یہ ویجھنا تھسی خاص مقصد سے پخت نہیں ہوتا۔ا سکے بعد معاً تیدنا ابراہیم علیہ استرام نے فرایا ہیں تچھ بیمار ساہوں جو یکہ قوم کواکب پرستی ہیں ریمتن دید مبتلا تفیٰ اس کئے وہ یہ مجھے کہ سبیر ناا برانہ یم علیہ الت لام تحسی کننا رے نیے اثرِ بد مین مبتلا ہیں۔ یہ سوچ کربغیر محسی اصرار سے سیدنا ابراہیم علیہ ٰالت لام کو حیور کرمیلے

بس جلے سکتے اب جبکه ساری قوم ، بادست ه ، کانهن ا ور ندیبی پیشوا میلے میں مصروف اور بشراب و کباب میں شغول تھے، حضرِت ابراہیم علیہ التبام نے سوچا کہ وقت آگیاہے کر آینے نظام ممل می بیل محروں اور مملی طور پر قوم پریہ واضح کر دوں تحران دیو تا وُں کی مناب نظام مل می بیل محروں اور ملکی طور پر قوم کریہ واضح کر دوں تحران دیو تا وُں کی حقیقت کیائے ؟ موقع پاکرجب که میجاری اور مجاور موجود نہ ننظے حضرت ابراہیم علیہ السلام اُن سے مرکزی مثبت خانے میں گھٹس سکتے دیکھا تو و ہاں دایر تا وُں کے سامنے قسم کے حلووں ، پھیکوں ،میووں اورمٹھائیوں سے چڑھا دے رکھے مقے حضرت ابراہم عالیا نے طنزیہ لہجہ میں چکے چکے ان مورنیوں سے خطاب کرسے کہاکہ بیسب کچھ موجود ہے

اِن کو کھانے کیوں نہیں ؟ پھر کہنے لگے ہیں بات کر د ہا ہوں تم جواب کیوں نہیں و پتے ؟ اسے بعد اُن سب کو توڑ مچوڑ ڈالا اورسب سے بڑے بُت کے کا ندھے برنبرر کھ کر والبس لوط كئے۔

جب لوگ میلے سے واپس آئے تو مندر میں بتوں کا یہ حال یا یا ہیخت برہم ہوئے اور ایک دومرے سے دریافت کرنے سکے کہ یہ کمیا ہوا؟ کس نے کہا ؟ اِن میں وہ لوگ تھی متھے جنکے سامنے حضرت ابراہیم علیہ است لام مجھی مجھی بنون کے سائقا اپنی خفیہ تد بیر کا تذکرہ کر دیا کرتے تنفے۔ اُمفوں نے فوراً کہا کہ یہ اُس خص کا کاکام ہے جس کا نام اُ براہیم 'ہے ۔ وہی ہمارے دیو ناؤں کا قیمن تھی ہے کا ہنوں اور سرداروں نے جب بیرٹ ناتوعم وغضتہ ہے سُرخ ہو گئے اور کہنے لگے اُسکو مجمع کے سامنے بیکڑلاؤ تاکہ سب دیجیب مجرم کون ہے؟

پیگو باحضرت ابرامنیم علیه الت لام نی منھ مانگی مراد تھی۔ کیونکہ و وہجی یہ ہی

جاہتے تھے کہ بات صرَف بجاریوں ، مجاوروں اس سے سامنے نہ ہوبلکہ عام لوگ بھی موجود نہوں اورسب دیچولیں کہ بہ بہت جو اُن کے فاصی الحاجات بناکر رکھے گئے ہیں گننے دیس ہیں اورخود یہ بجاری خضرات اِن کو کیا سمجھتے ہوں سے۔ اس طرح اِن بجار ہوں سے تعبی

وہی حماقت سرز د مہونی جو فرعون سے سرز دہونی محتی اُس کے معنی جا دوگروں سے حفرت موسیٰ علیہ السلام کا مُفا بلہ کرانے کے لئے ملک بھری خلفت جمع کی مفی ۔

اس طرح حضرت لموسیٰ علیہ استبلام کوسب سے سائنے یہ ٹا بن کرنے کا

موقعہ مل گیا کہ وہ جو کچھ لائے ہیں جا دونہیں ہے بلکہ مجزہ ہے ۔ اور بہاں حضرت ابراہیم علیہ التلام کواُن کے ونشمنوں نے آپ ہی آپ یہ موقع فراہم کر دیا کہ وہ عوام کے سامنے اُن کسے مکروفریب کاطلعم نوڑ دیں ۔الغرض جب حضرت ابراہیم علیالتلام سامنے لائے گئے توبڑے رعب واب سے ان لوگوں نے بوجھا :۔

"کیوں ابراہیم تونے ہمارے دیو تاوُں نے ساتھ یہ سب کھیے

حضرت ابراہیم علیہ التلام نے دیجھاکہ اب وہ موقعہ آگیاہےجس کے لئے ہیںنے یہ تد بیراختیار کی تھی مجع موجود ہے عوام ویچھ رہے ہیں کہ ان سے دیو ّاوُں کا کیاحیرّ ملداول

ہرایت کے جراغ ہوا ہے۔اس لئے اب کا ہنوں اور ندمہی پیٹیواؤں کوعوام کی موجو دگی ہیں اُن کے باطل عقیدے پر نا دم کر دینے کا وقت ہے تاکہ عوام کو آنکھوں و پیھنے معلوم ہوجائے س آج بک ان دیو تا وُں سے متعلق جو تھے ہم سے یہ بچاری اور مجا وروں کی جماعت

مبلکہ بیسب تجھ اِن سے اِس بڑے سروار نے کیاہے انہی سی

حضرت ا برانہم علیہ است لام سے اس مجلہ کامطلب (اِن سے اس سروار نے کیا ہی، کااتَارہ بڑے بنت کی طرف بھی ہوسکتاہے اورخودحضرت ابراہیم علیہ التلام کی

أكربهلي بات ہوتو پیرحضرت ابراہیم علیہ انسیلام کی طرف سے اُن کے عقائد

پرایک طنز کاہم معنی ہے معینی اگر َان سے نز'دیک واقعی میہ خُداً ہمیں نوابھیں ا بنے بڑے خدا کے متعلق پرسٹ بہونا جا ہیئے کہ ن ید بڑے حضرت اِن جھوٹے حضر نول ى بات يرتكر سطحية بهول ا ورسب كالجوم بنا فالأبو . اور اكر دوسرام فهوم مرا دليا جا

توحضرت ابراسم علیهات لام کایه منشا اس کارروانی سے یہ تھا کہ اینے بتول کا بیرحال دیچھ کرنے ایران لوگوں کا زہن میری ہی طرف منتقل ہوجائے گا اور یہ مجھ سے

پوچیں گے تو مجھ کو بھران سے صاف صاف بات کرنے کا موقع مل جائے گا۔ گویا

يحضرت إبرامهم عليه السكام كي منهد مانتگي مرادعفي -الغرض خضرت ابرانهيم عليه التسلام مى اس يقينى حجّت اور دليل كاإن كام نو اورمجاوروں کے پاس کمیا جواب ہوسکتا تھا وہ ندامت میں ڈوب سکتے اور اُن بر

ا ك نكنة جيا كما يتوجنے لكے كه إسكاكيا جواب ديں ؟

آخر كار اپنے ضمير كى طرف يليے اور دائيے ولوپ ميں) كہنے لگے واقعى تم خود ہی ظالم ہو۔ بعد از ال اپنے سروں کو نیچے جھکا کر تھنے لگے اے ابراہیم توخوس جا تا ہے کہ یہ بولنے واسے نہیں ہیں.

کے نے اپنے اُس مفصد کو لیر راکر لیا جسکے اس طرح حضرت ابراسم عليه أت ملدادل

المفوں نے قوم کے مرکزی بُتِ خانے ہیں اتنا بڑا خطرہ مول لیا مقا۔ علاوہ ازیں بُنٹ کنی کے اس فعل کو بڑے بُنت کی طرف منسوب کرنا اس کا مقصد حجوً ط بولنا منه مقيا بلكه ابنے مخالفين پر حجت قائم كرنا مفاتاكر به لوگ خود اپني زبان سے اقراد کرلیب کہ ان کے معبود بالکل بے نس ہیں جوائیے ذاتی نقصان تک کو دوزہیں کرسکتے تو بھردوسروں کے مفع ونقصان کے مالک کیونخرہو سکتے ہیں۔ اس طرح حضرت ابرامهم علیه الت لام می حجت و دلیل کامیاب ثابت ہوئی اور قوم نے اعترات کر لیا کہ طالم ہم ہی ہی اور ان کو زبان سے افرار کرنا پڑا کہ ہمارے یہ دیو ٹاجواب دینے یا بولنے کی قطعاً طاقت نہیں رکھتے جہ جائیکہ نفع ونفضان کے ہالک ہوں ،اس طرح حضرت ابراہم علیہ التلام نے بنوں کی کیے تھی اور بے بسی کو قوم کے

سامنے نہایت نحوش اسلوبی کے سامخدمث ہدہ کر وا یا اور قوم نے سر حیکا کر اسکوت بھی کرلیا۔ فرآن محیم نے استفصیل کواس طرح بیان کیا ہے:۔ وَ لَقَدُ أَ تَيُنَا إِبُرَاهِيمُ وَرُشُكُ لَا مِنْ قَبُلُ وَكُنَّا بِهِ

غَلِمِينُ ۔ (انبيار آيات اه تا عه)

ون آورہم نے دریانہ موسوعی، سے بہلے ابراہیم علیہ التلام کو اُن کی دشان کے مناسب، خوسٹس فہمی عطا کی تھی اور ہم اُن کے کمالات کوخوب جانتے ہتھے۔

جِب کہا اُمفوں نے اپنے باب اور اپنی قوم سے کہ بیمورتیں کیبی ہیں جنگی عبادت پرتم لوگ جے بیٹے ہو؟ اُمفول نے جواب دیا ہم نے اینے باپ دا داکو ان کی عبادت کرتے یا یا ہے ۔ ابراسم علیہ السّلام نے کہانم بھی مجمراہ ہواور نہادے باپ دا دامھی صریح مگراہی ہیں ہیے۔ موے مطعے استفوں نے کہاکیا تو ہمارے لئے کوئی سی بات لایاہے یا نداق كرنے والوں ميں سے سيقون ابرامهم عليه التلام نے جواب دیا نہیں بلکہ فی الواقع تمہارارب وہی ہے جو زبین اولاً سمان کارہے اور ان کا پیداکرنے والاہے۔اس بریس تنہارے سامنے حواہی

دیتا ہوں ، اور السری قسم میں تمہاری غیر موجودگی میں تمہارے بتوں کی ضرور خبر لوں تکا ؟ جنائجہ اُنمخوں نے اُن سے محرابے محرابے کر دیئے اور صرف اُن کے بڑنے کو خیبوڑ دیا تاکہ شاید وہ اِسکی طرف رجوع کریں۔ رجب آگراُ مفوں نے اپنے خدا وُں کا بیر حال دیکھا تو ، کہنے لگے، ہمارے فیداؤں کا بہ حال کس نے تحردیا ؟ بڑاہی طالم ہے وہ شخص، رمعض لوگ، بویے ہم نے ایک نوجوان کو اِن کا دُکر کرتے سٹنا تھا جس کا ن^{ام} ا براہیم ہے (علیہ التلام) اُنمخوں نے کہا نو کیرالاؤ اُسے سب کے سلمنے یا کہ لوگ دیجھولیں داسکی کیسی خبرلی جائیجی، دا براہیم علیہ اتلام سے آنے پر، اُن لوگوں نے پوچھا کیوں ابراہیم تونے ہمارے خدا وُں کے سائقہ پہ حرکت کی ہے ؟ ابراہیم علیہ الت لام نے جواب دیا بلکہ بیب تجھے اُن کے اِس سردارنے کیاہے ؟ اِن ہی سے بوجھے لو آگریہ بولتے ہوں ؛ پیمنکروہ لوگ اینے ضمیر کی طرف یکٹے اور داینے ولو ل بیں) كينے لگے واقعي تم خو د ظالم ہو بھيرائيے سروں کو نيچے جھا کر کہنے لگے داے ابراہیم علیہ اتلام ، تم خوب جانتے ہوکہ یہ بولنے والینہ سام، ابراسم علیه ات لام، نے کہا تھے کیاتم التیرکوجیوڑ کر اُن چیزوں کو پوج رہے ہوجو نہمہیں نفع پہنچائے پر قادر ہیں نو نقصان ۔ تُفُ ہے ئم پراور تمہارے اِن معبوروں پرجنی تم الٹرکو چیوڈ کر لئے جا کررے ہو۔ ۔ مائم تحميم عقل نهيس ركھتے ؟

کیا مم چھر بی مسل میں دھے ؟ نوگوں نے کہا کہ مبلا فوالو ابراہم دعلیہ السّلام ، کوا ورحایت

كرواني خداؤل كى الرّمهي كچوكرنائ، وَإِنَّ مِنْ شِيْعَتِهِ لَالْبُرَاهِيْمُ لِإِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ

سَلِيْهِمِ الْحُ والسافات آيات علا تامه ا

ادر نوخ سےطریقے پر جلنے والوں ہیں سے ابراہیم (علیہالسلام) مجی ہفتے۔ جبکہ وہ اپنے رب کی طرف صاف دل سے متوجہ ہوئے جب کم انتخوں نے اپنے باپ سے اور اپنی قوم سے کہا، تم کس چیز کی عبادت انتخوں نے اپنے باپ سے اور اپنی قوم سے کہا، تم کس چیز کی عبادت کرتے ہو۔ کیا النّہ کو چھوڑ کر جوٹ موٹ کے معبود وں کو چاہتے ہو؟ آخر
السّررب العالمین کے بارے میں تمہار اکیا خیال ہے ؟

دیکھاا ور کہدیا کہ میں بیمار ہوں۔ غرض وہ لوگ اِن کوچھوڑ کر چلے گئے۔
دیکھاا ور کہدیا کہ میں بیمار ہوں۔ غرض وہ لوگ اِن کوچھوڑ کر چلے گئے۔
تھریہ اُن بتوں لاکے گھر) جا گھسے دا ور بتوں ہے ، کہنے گئے آپ حصرا کھاتے کیوں نہیں ؟ کیا ہو گیا و لئے بھی نہیں ہو؟ اسکے بعد وہ اِن پر بیل پڑے اور سیدھے ہا تھے نے وب ضربیں لگائیں۔ سو وہ لوگ بیل پڑے اور اسیدھے ہا تھے ہوئے آئے۔ ابراہیم علیہ السلام کیا تھی مالی کر واور اور تمہاری اِن بنائی ہوئی چیزوں کو السّر، بی نے پیدا کیا ہے۔ اُن موں نے را اُن جیزوں کو السّر، بی نے پیدا کیا ہے۔ اُن موں نے داور اُن ماکو در آپ ہیں کہا کہ ابراہیم علیہ السّلام کیلئے ایک آتن فانہ تیا دکرواور در آپ میں بوئی آگ میں بھینک و و۔
در آپ میں بھی کو ایس بھی میں میں بھینک دو۔
در ناچاہی تھی می می میں کو نیجا دکھا دیا۔

رعایا کو برکٹ نہ کر دبیگا اور اس طرح باپ دا داکے ندیہب سے سابھ سا بھے پیلطنت

مجی زوال بین آجائیگی اس لئے اس کا قصتہ کی تمام کر دینا چاہیئے۔ یہ سوچ کراس نے محم ویا کہ ابراہیم دعلیہ استلام کو ہمارے دربار میں پیش کیا جائے جضرت ابراہیم منظم و دربار میں حاضر کئے گئے تو نمرود نے حضرت ابراہیم علیہ التلام سے پوچھا کہ تو بات وارمجھ کورب ماننے سے کیول انکاروا سے وجھا کہ اس کے مطاور کسی کو اس کے علاوہ کسی کو اس کے علاوہ کسی کو اس کے مال کا میں کی مخلوق ہے اور وہی ان سب کا خالق و مالک ہے ، تو بھی اُسی طرح ایک انسان سے جس طرح ہم سب انسان ہیں۔ بھر تو کس طرح رب یا خدا ہو سکتے ہیں و انسان ہیں۔ بھر تو کس طرح رب یا خدا ہو سکتے ہیں و کشری کے میں کو شکل کے میں اس کے در ایک انسان ہیں۔ بھر تو کس طرح رب یا خدا ہو سکتے ہیں و کشری کے میں و کسی کی در ایک کا کورکس طرح یہ کو نکھ جم رہ کا کری کے خدا ہو سکتے ہیں و

نمرودنے حضرت ابراہیم نلیہ است ام سے دریافت کیا کہ آگر میرے نماوہ تیرا کوئی غدا ہوسکتا ہے تو اُس کا ایساوصف بیان کوشی قدرت مجھ میں نہو۔ نب حضرت ابراہیم نلیہ الت لام نے فریا یا میرارت وہ ہے جس سے فیضے میں موت وحیات ہے۔ وہی

موت دلیتاہے اور ولہی زندگی بخشیّاہے .

وحیات میرے فبہم نمرو و موت و حیات کی حقیقت سے ناآسٹنا کہنے لگا اس طرح توموت وحیات میرے فبضہ و فارت بن بھی موجود ہے۔ یہ کہکر اُسی و قت ایک بے قصور آ دمی کے بارے میں جلّا دکو حکم ویا کہ اسٹی گر دن مار دمی جائے۔ جلّا دنے فوراً حکم کی تعمیل کی۔ اور ایک قبل سے سنرایا فنہ مجرم کوجیل سے مبلاکہ حکم دیا کہ جاؤہم نے تمہاری جان بخشدی۔ ایک جدد حضرت ابراہیم علیہ الت لام کی جانب متوجہ کوکر کہنے لگا دیجھا میں کسطرح

موت وحیات کا مالک ہوں ؟۔

و حضرت ابراہیم علیہ الت الام کومسوس ہوا یا تو یہ برفہم ہے یا رعا یا کو دھوکہ دینا کے حضرت ابراہیم علیہ الت الم کومسوس ہوا یا تو یہ برفہم ہے بارعا یا کو دھوکہ دینا ہا ہا ہے بہوت وحیات سے معنی ہی نہمجھ سکا ۔اس سے ہاسکم توسیجاعقل بک نہیں ہے ۔ ابداعقلی دلیل اسکے لئے مفید نہیں ہے کوئی مشاہداتی بات ہی اسکو فائدہ و سے سکتی ہے ۔ اس لئے دوسرا عنوان اختیار فرما یا اور الیسی ولیل پیشس کی جسکا سبح و مشام ہر شخصی اس سے منا ہرہ کرتا ہے اور شب وروز کی زندگی ہیں اس سے سابقہ پڑتا رہتا ہے جصر ابراہیم علیہ الت لام نے فرما یا ہیں اُس مینی کو النگر کہتا ہوں جوروز آنہ صبح سور مجے کومشرق

لاتا ہے اور مغرب کی جانب ہے جاتا ہے۔ لیں اگر تو بھی خدائی کا وعویٰ کرتا ہے نواسکے خلاف سورج کومغرب سے نکال اور منٹرق بیں چھیا ؟ بیٹ نکر نمرو دمبہوت اور لاہوا ، بوگیا۔ اسطرح حضرت ابرا ہم علیہ است لام کی مجتت پوری ہوگئی۔ کیونکہ نمرود کو اِسکاجوا ، ویٹے کے لئے بین ہی صورتمیں مقییں :۔ ویٹے کے لئے بین ہی صورتمیں مقییں :۔

آول بہر وہ مجہ سکتا مطاکہ ہاں مغرب سے سورج بکالنے کی مجھے قدرت ہے۔

دِيوم يه كه أفتاب برميري قدرت نهيس ب

سوم به که اسی وفت مغرب سے سورج نکال کر د کھادیا۔ بیکن یہ ساری صور بیں السی تقیں جسکا و ہ خود قائل نہ تھا۔ اس لئے اپنے آپ کہ خاموش رکھنا ہی مناسب سمجھا۔

بعض غیرمسلموں نے حضرت ابراہیم علیہ اُست لام کی دلیل پریہ اعتراَض کیا ہے۔ کہ آگر نمرو دید کہہ ببیضیا کہ ابراہیم تو ہی ابنے خداسے بہ کام کرو کھا ؟ نوابراہیم دعلیہ السّلام)

کے یاس اس کا کیا جواب ہوتا ؟

کین بیا عتراض می نہایت کم ور اور طی ہے۔ دراصل بیا عتراض می شست
اورگواہ بیست والوں کا ہے۔ نمرود جانیا تھا کہ بن فوت واعتماد سے حضرت ابراہیم علیاتسلام
نے بیٹ جت پیش کی ہے اُس کا مقاصلہ بیہی نظاکہ اگروہ ایسا کہہ دیتا تو ابراہیم علیاتسلام
اسکو پورا بھی کر دکھاتے۔ کیونکہ وہ حضرت ابراہیم علیہ الت لام سے ساتھ بیشار تائیدات
ویچھ چکا تھا۔ اس لئے ایسی ہمت نہ کرسکا۔ علاوہ ازیں اُسکو خود اپنی عاجری اور بیچاری کا شدید احساس بھی مقا۔ لہذا اس اعتراض کا موقعہ ہی نہ تھا۔ فاموشی ہیں ہی اپنی نجات ہمھا۔
فرآن تھیم کے سورہ بقرہ ہیں اس گفتگو کو مختصر پیرا یہ میں اسطرح بیان کیا گیاہے:۔
فرآن تھیم کے سورہ بقرہ ہیں اس گفتگو کو مختصر پیرا یہ میں اسطرح بیان کیا گیاہے:۔
اکھ تقرآن جیم کے سورہ بقرہ ہیں اس گفتگو کو مختصر پیرا یہ میں اسطرح بیان کیا گیاہے:۔
اکھ تقرآن جیم کے سورہ بقرہ ہیں اس گفتگو کو مختصر پیرا یہ میں اسطرح بیان کیا گیاہے:۔

قرائی مضمون کیا تونے نہیں دیجھا اُس مخص کا وا تعجب کو السرنے اس کے اور ناہت ہے اُس کے اور ناہت ہے اُس کے اور ناہت بنتی تھی اُس نے کس طرح ابراہیم سے اُس کے پروردگار کے بارے میں مناظرہ کیا ؟ پروردگار کے بارے میں مناظرہ کیا ؟ جب کہا ابراہیم نے میرا پروردگار توز ہرگی بخشا ہے اور

موت دیتا ہے۔ بادمشاہ نے کہا میں بھی زندگی بخشتا ہوں اور موت مجھی دیتا ہوں۔

ابراہیم نے کہا بلات بالمترتعالے سورج کومشرق سی کالتا ہے لہذا تو اُسکومغرب سے بکال ؟ لیں وہ کا فرد بادشاہ) مبہوت اور لاجواب ہوگیا اور المٹر تعالے ظلم مرنے والوں کوراہ یاب نہیں کرتا ؟

یا نا ڈکو بی برد او سکرما حضرت ابراہیم علیہ اتلام نے سب سے پہلے اپنے باب آزر کو توحید کی دعوت دی اسکے بعد قوم کو

اس دعوتِ عام بیں شریک کیا اور اُنھیں بیغام حق سُنایا اور فطرت کے سید سے ساد کھے اصول و دلائل بیش سکتے بیخمت وشیری کلامی سے اُن پرحق بات کو واضح نحیا اور کھر آخریں بادست و قت نمرو د کویہ دعوت بہنچائی ۔ اس منزل برحضرت ابراہیم علیالسلام کی شہروں ہے۔ یہ سامی کی سات ہے۔

کی دعوتی جدوجہد کا مرحلہ محل ہوجا تاہے۔

انهام وتفہیم سے سارے سلسلے یکے بعد دیگرے تم ہوگئے۔ باوٹاہ وقت سے رعایا تک سب نے متفقہ فیصلہ کرلیا کہ دیوتاؤں کی توہین اور باپ وا وا کے دین کی مخالفت میں ابراہیم علیہ التلام کو دہمتی آگ میں جلا دینا چاہئے کیوبحا لیے سخت مخالفت میں ابراہیم علیہ التلام کو دہمتی آگ میں جلا دینا چاہئے کیوبحا لیے سخت مجرم کی سنرایہی ہوئتی ہے اور دیوتاؤں کی تحقیر کا انتقام اسی طرح لیاجا سکتا ہے۔ اسطرح مادی قوت وطاقت نے مظاہرہ مشروع کر دیا۔ ہرطرف مخالفت ، وثمنی ، نفرت وحقادت کا سامان مہیا ہونا سنروع ہوا۔

منظر خضرت أبرانهيم عليه السلام كونه اسكى پرواه تفتى نه كسنى قسم كاخوف واندليثه

آئِ اسى طرح دعوتِ توحید کاکام انجام دینے رہے۔
اِدھر بِادستٰ ہ کے تم سے قوم نے ایک وسیع وعربین مبکہ آگ مبلانے کا انتظام
سروع کردیا اور مسل کئی روز تک آگ جلائی گئی۔ اس زعم میں کہ یہ بہت بڑا کا رخیہ توم کا ہر فرد ا بناحصہ لگا نا اسمیں اپنی سعادت وزیک بختی سمجھنا تھا کئی ون کے بعد جب اسمح شعلے آسمان سے باتمیں کرنے گئے حضرت ابراہیم علیدالت لام کو ایک گوجون بی بیشا کر تیزی سے تھایا گیا اور دُور ہی ہے اس دہتی آگ میں بھینک دیا گیا۔

اس وقت النّركا و ہ واحد المام آیا جوائے نیک بندوں کی آخسہ ی وستگیری کے لئے ہواکرتاہے آگ کوئم دیاگیا کہ اسرائی کا برائیم پر تھنڈی اور سلائی بن جا۔ سورہ صافات میں فربا با گیا کہ ہم نے اُن کی کارروائی کو نیجا کر کھا یا۔
حضرت ابرائیم علیہ انسلام کچہ دیر کے بعد اس خوفناک آگ سے صحیح وسلا بار ہیم علیہ انسلام کے دیر کے بعد اس خوفناک آگ سے صحیح وسلا بار ہیم علیہ انسلام پر ایمان لائے اور قوم کی اکثر سے صبیبی نمرود اور اسکے جمایت سے ابرائیم علیہ انسلام پر ایمان لائے اور قوم کی اکثر سے صبیبی نمرود اور اسکے جمایت سے ہما یہ بستورائی سٹرک وحفر پر باقی رہے جوائن کے آبار واجداد کا ند میب نھا۔

اس واقعہ سے یہ وہ جب چاہے می می خاصیت کو بدلی سکتا ہے معمول کے مطابق آگ کا عمل میں ہے کہ وہ وہ لائے اور سرآتش نید پر چیز اس میں گر کر جل جائے ۔ لیکن آگ کا معمول این انسان کا پیان معمول النہ کا پیان معمول النہ کا پیان معمول النہ کا پیان معمول النہ کا پیان خور اس معمول کے مطابق آگ کا معمول این نہیں ہے کہ وہ جائے دیکن آگ کا معمول این نہیں ہوا ہے۔ النّد معمول کے مطابق آگ کا ہوا ہے۔ معمول النہ کا پیان خور اس معمول کے ایکن آگ کا ہوائی کیا ہوا ہے کہ آگ اینا عمل چوڑ و کے النّد معمول کے میں ایسا بھی ہوا۔

چنا نجہ اللّہ معمول کا پیابند نہیں بھی وقت بھی وہ حکم دے سختا ہے کہ آگ اینا عمل چوڑ و چنا نجہ اس واقعہ میں ایسا ہی ہوا۔

قرآن محیم نے اس پُراع مازوا قعد کو اس طرح بیان کیا ہے:-وَإِبْرُاهِ بِنُمَرِاذُ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبِدُ وَاللّهِ وَالْقَوْلَا كَا لِللّهِ وَالْقَوْلَا لِهِ والعنكبوت آیات علاتا مِصْلًا

قرآئی مضمون الٹر کی بندگی کرواوراس سے ڈرو۔ یہ تمہارے کے بہتر ہے اگرتم مبانو تم الٹر کو چھوڈ کرجنہیں پُرج رہے ہو وہ توقعض بُت ہیں اور تم ایک جھوٹ گھڑد ہے ہو۔ درحقیقت الٹرکے سواجن کی تم پرتش کررہے ہو وہ تمہیں کوئی رزق بھی دینے کا افتیار نہیں دکھتے ۔ الٹرسے رزق مانحوا وراسی کی بندگی کروا وراس کا مشکرا داکر و ، اس کی طرف تم پلٹائے جانے والے ہو۔ اور اگرتم جھٹلاتے ہوتو تم سے بہلے بہت سی قوموں نے جھٹلا یاہے ۔ اور رسول پر توصر ف صاف صاف بیغام

پہنیا دینے کے سواکونیؑ ذمہ داری نہیں کیااِن لوگوں نے کبھی دیجھ ہی نتہیں کہ اللہ کس طرح خلق کی ابتدار کرتاہے۔ بھراُس کا اعادہ کرتاہے۔ مِقْیناً یه (اعاده تو) النُّدِ کے لئے آسان ترہے ۔ اِن سے مہوکہ زمیں میں جبوتھیرو اور دیکھو کہ اُس نے کس طرح خلق کی ابتدار کی ہے تھیرالیٹردور بارتھی زندگی بخنے گا۔ یقیناً التر ہر چیز بر فا درہے۔ جسے چاہے منزا دے اور جس پر چاہے رحم فرمادے ۔ اسی کی طرف تم بھیرے جانے والے ہو۔ نتم یہ زئین میں رہم تی عاج کرنے والے ہونہ آسمان میں ،اور الترسے بچانے والا کوئی سر برست اور مدد گارنمہارے لئے نہیں ہے. جن لوگوں نے الترکی آیات کا اور اُس سے ملاقات کا انکارکیا ہے وہ میری رحمت سے مایوس ہو چکے ہیں اور اُن کے لئے در د ناک عذا ہے۔ بجرأسي قوم كاجواب إس تتحسوا كجديذ تقاكه أتمضون نے كهافت ل كردويا جلاد الواس كو. آخر كار الترني أسه آگ سے بجاليا . يفيناً اسيس نشانیاں ہیں اُن لوگوں کے لئے جو اہما ن لے آتے ہیں۔ اور ابراہیم نے کہاتم نے دنیا کی زندگی میں تو الٹرکو جھوٹ کر بتوں کو اسینے درمیان محبت کا ذرایع بنالیاہے منگر فیامت کے روز تم ایک دوسرے کا انکار اور ایک دوسرے برلعنت محرو سے ۔ اور آگ تمہارا ٹھ کا نہ ہوگی اور کونی تمهارا بددگار نه ہوگا۔

أُ وَمَا لَا يَنْفَعُكُمُ شَيْعًا لَا يَنْفَعُكُمُ شَيْعًا

وَ لَا يَضُوُّ كُولَا عِنْ إِلَا بَهِا رِآيَاتُ عِلا تَا عِنْكِ الْمِ

ابراسیم نے کہا گیا تم الترکو جھوڈ کر اُن چیزوں کو پوج رہے ہوجو نہ تہیں مفع پہنچانے پر قادر ہیں نہ نقصان ۔ نفٹ ہے تم پراوز تمہار معبو دوں پرجبی تم النٹرکو جھوڈ کر ٹوجا کر رہے ہو۔ کیا تم کچھ بھی عقب ل نہیں رکھتے ؟

اُنفوں نے کہا جلاڈالو اِسکوا ورحمایت کروا پنے خدا وں کی آ اگرتمہیں کچوکرنا ہے۔ ہم دالٹرانے کہا اے آگ کھنڈی ہوجااور سامتی

بن جا ابراسيم پر۔

وہ چاہتے ہے کہ ابراہیم کے ساتھ بڑائی کریں مگر ہم نے انکو بری طرح ناکام کردیا اور ہم ان کواور لوط کو بچاکر اس سرزمین کی طرف نکال نے گئے جسمیں ہم نے دنیا والوں کے لئے برتیں رکھی ہیں ۔ اور ہم نے ابراہیم کو اسلحق عطاکیا اور تعقوب اس پر مزید عطائے گئے ۔ اور ہم نے ابراہیم کو صالح بنایا ۔ اور ہم نے انکو امام بنا دیا جو ہمارے حکم سے اور ہم ان گا کو مالی کو مالی کا موں کی اور وہ ہمارے اور نماز قائم کرنے کی اور زکواۃ دینے کی ہدایت کی اور وہ ہمارے عیادت گزار بندے ہے ۔

قَالُوا ابْنُوا لَمَا بُنْيَانًا فَأَلْقُولُ فِي الْجَحِيْمِ. الخ

دالصافات آیت <u>عو، مرو)</u>

اُن لوگوں نے آبسیں کہا ابراہیم کے لئے ایک آتن خانہ نیار کرواور اُسے دہکتی آگ میں بھینک دو۔ اُبھوں نے ابراہیم کے خلان ایک کارروائی کرنی چاہی تھی مگر ہم نے اُنہی کو نیجا دکھا دیا۔"

ہمجرت ابراہ بمی گرختہ سطور ہیں یہ بات آجی کہ حضرت ابراسی ملیہ اسلام انہام تھے۔

ابنی قوم کی ہدایت کے لئے کس درجہ مضطرب اور بے مہیں ہفتہ افتہار افہام تفہیم کی وہ کون سی صورت نہ تھی جو انھوں نے قوم کو سمجھانے کے لئے اختیار نہیں ہو اسب سے پہلے اپنے باپ آزر کو سمجھایا بھرعوام کے سامنے توجید کی روشنی بیش کی ۔ اور آخریں بادش و نہیں جا نہ اور ہر لمحریبی سب کو تلقین کی کہ النہ واحد کے کو مہتر سے بہتر اسلوب کے ساتھ اواکیا ، اور ہر لمحریبی سب کو تلقین کی کہ النہ واحد کے مطلوہ تھی کی پیش کی درست نہیں ہے اور اصنام بیستی اور کواکب بیستی کا تتیجب مطلوہ تھی کی پیش درست نہیں ہے اور اصنام بیستی اور کواکب بیستی کا تتیجب مشرک سے باز آنا چا ہئے ۔ تہ جنفی میکی وصراط سقیم مجھنا چا ہیے ۔ تہ جنفی اساس صرف توحید اللی پر قائم ہے ۔ مگر بہنے توم نہی کی درست اور میں طرح و شد و ہدایت کو قبول نہ کیا اور حضرت ابرا سمی علیہ استلام کی نے کچھ مذمنا اور مسی طرح و شد و ہدایت کو قبول نہ کیا اور حضرت ابرا سمی علیہ استلام کی

ہیں۔ بیری ستیدہ ساراً اور برا درزا دے حضرت لوط علیہ التلام کے سوا غالباً کوئی اور ایمان نہیں لایا۔ اور قوم کے اکثرا فراد نے ستیدنا ابراہیم علیہ التلام کو جلاد بینے کا فیصلہ کر لیا۔ اسکے بعد وہمتی آگ میں ڈال بھی دیا۔

تجب التُّد نَعا لِے فَ وَتُمْنُول شِي ارا دوں کو ذلیل وُرُسُواکر دیا اور حضرت ابراہیم علیہ الت لام سے حق بیں آگ کو'' بَرُ دًا وَسَلَامًا '' بنادیا تواب حضرت ابراہیم نے ارا دہ کر لیاکہ کسی دوسری مجگہ جاکر پیغام الہی سُنائیں اور دعوتِ حق بہنچائیں ۔ بیہوج سُرُ فَدَّان آرام ''سے رہائی دعراق) کامٹ ہور شہر جمیں سیدنا ابراہیم علیہ السّلام پیدا ہوئے شخص ہجرت کا ارا دہ کر لیا۔

وَقَالَ إِنَّ وَاهِبُ إِلَّىٰ سَرِقَ سَيَهُ دِينَ -

دانصافات آيت عدو)

اور ابراہیم نے کہا ہیں جانے والا ہوں اپنے برور دگار کی

طرف عنقریب و دمیری رمهمانی کرے گا:" بعنی اب محیصے مسی اتبی آبادی میں ہجرت کرنا چاہئے جہاں النٹروامد کی صدائشی جاتی ہو۔ خدا کی زمین تنگ نہیں میرا کام پہنچا اہے۔ النٹراپنے دبین کی اشاعت کا سامان خود پیدا کر دمیگا۔

مہر قال سیرنا ابراہیم علیہ استلام اپنے باپ آزرا ور قوم سے مُکدا ہوکر دریائے فرات کے غربی کنارہ کے قریب ایک بستی ہیں چلے گئے جو"ا ور کلدا نیبن " کے نام سے شہور ہے۔ یہاں کچے عرصہ قیام کیا ہمراہ ستیدہ سارہ "ا ور برا در زادہ حضرت لوط علیہ الت لام سے ۔ بھر کچے و نوں کے بعد یہاں سے قرآن یا ماران کی جانب روانہ ہوگئے اور و ہاں توحید کی دعوت بہنچاتے رہے مگر اس عرصہ ہیں اپنے باپ آزر کے لئے بارگاہِ الہی ہیں وُعا اور استغفار کا کاسلسلہ جاری رکھا اور ہوایت کیلئے وُعاکرتے رہے۔

یرسی پیسب کچھاس لئے کہتید نا ابراہیم علیہ اتسام نہایت رقبق القلب، رحیم وکریم صفت اور بہت ہی نرم و بُرد بار نظے۔

باپ آزر کی جانب سے ہرفسم کی عداوت اور شدت سے باوجود انجوں نے

چلتے دقت یہ وعدہ کر لیا تھا کہ اگر جہیں آپ سے بجد ا ہور ہا ہوں تا ہم ہیں آپ کے لئے برابر دُعا کرتا رہوں گا۔ اسی وعدہ کی یا بندی ہیں باپ کے لئے دُعا اور استغفار کررہ بخفے۔ آخر کارحضرت ابراہم علیہ ات لام کو وحی الہی نے مطلع کیا کہ آزر ایمان لانے والانہیں ہے ، اور یہ اُن افراد ہیں شامل ہے جبھوں نے اپنی نیک فطرت کو فنا کر کے خود کو اس کامصدا ق بنا لیا ہے۔

تحضرت ابرانہیم علیہ اُنت لام کوجب بیمعلوم ہوا تو آپ نے اپنے باپ آزر سے اپنی بر اُنت کا صاف صاف اعلان کر دیا اور استعفار کا سلسلہ مجمی بند کر دیا۔

سور ہ تو ہر ہیں اس براُت کا اس طرح بیان کیا گیاہے:۔ مما گان لِلنّبِی و الّذِین اُمنو اَن یکن آمنو آن یکننغفوں فرا لِلْمُنْدِی کِینَ وَلَوْ کَا نُو آ اُو لِی قُرین الخے۔ (سورہ تو ہر آبت عللا، عملا) "نبی اور اُن لوگوں کوجو ایمان لائے ہیں یہ بات زیبانہیں کہ مشرکوں کے لئے دُعائے مغفرت کریں جاہے وہ ان کے قری رشتہ دار می کیوں نہ ہوں دالیبی صورت ہیں) جبحہ اُن پریہ بات کھک جی سے کہ وہ جہنم سے سحق ہیں۔

دامے مسلمانی ابراہیم دعلیہ التلام) نے اپنے باپ دآزر) کے لئے جو دُعائے معفرت کی تھی وہ صرف اُس وعدہ کی وجہ سے تھی جو اُمخوں نے اپنے باپ سے کیا تھا ، سخر جب ابراہیم دعلیہ السلام) پر یہ بات کھک گئی کہ اُن کا باپ الٹر کا وشمن ہے تو وہ اس سے بے تعلق ہوگئے ۔ حق بات یہ ہے کہ ابراہیم دعلیہ السلام) بڑے دفتی القلب مرکبے ۔ وقیق القلب مرکبار مرکبے ۔

محبرت سبجانب المحسطين المحضرت ابراهيم عليه السلام شهر باگل كے مختلف علاقوں ميں تبليغ سرتے كرتے فلسطين پہنچے ،اس سفر ميں آپ ہے ہمراہ و وجر محترمہ ستيدہ سارة اور برا درزا و ہ حضرت لوط دعليه السلام) اور اُن کی بیری بھی تختیں ۔ اور اُن کی بیری بھی تختیں ۔

سورهٔ عنكبوت بين اس بجرت كا تذكره اس طرح ملتا ب بـ فَا مَنَ لَـهُ لُوْظُ وَقَالَ إِنَّ مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِي اللَّهِ اللَّهُ اللّ

'' بین لوط (علیه السلام) ابراہیم (علیه السلام) پرایمان لائے اور مجہنے لگے میں اپنے پر در دگار کی جانب ہجرت کرنے والا ہوں

بیثک وہ غالب ہے حکمت والاہے '' روا بات مدیث میں یہ وضاحت ملتی ہے کہ حب حضرت عنمان نے نے اپنی بیوی ستیرہ رقیۃ ہنت رسول النٹر صلی النٹر علیہ و کم کے سائقہ مسلمانوں کی پہلی ہجرت میں شہر مسحہ مکر مہسے مک صبشہ کی طرف روانہ ہوئے توہم کر مے صلی النٹر علیہ و لم نے ارشا د فرمایا تھا :۔ یات عُشہ مکان اُوَّلُ مُنْھاً جِدِ بِاَهْلِهِ بَعْدُ لُوْطُ دعلیہ السلام)

(الحديث)

تصرت ابراہیم علیہ اسلام کے بعدعثمان مہلے مہاجر ہیں ۔ حضوں نے اپنی بیوی ہمیت الترکے گئے ہجرت کی ہے '' حصرت ابراہیم علیہ استلام نے فلسطین کے غربی اطراف میں سکونت اختیار کی ۔اس زمانے میں یہ علاقہ کنعانیوں کے زیرِاقتدار تھا۔ تھرجب قریبی شہر نا بلس چلے گئے اور وہاں کھے عصد قیام کیا۔ اس کے بعد میہاں بھی زیا وہ مدت قیام نہیں کیا یہ بینے کے سلسلے میں آ گے بڑھتے ہی چلے گئے حتیٰ کہ مصریک جا پہنچے۔

مجرت بجانب صصر احضرت ابراہیم علیہ الت لام جب شہر ناگلس سے میکر ملک مصر بہنچ تو بخاری و کم کی روایت کے مطابق اُن کو وہاں ایک ظالم بادث ہے سابقہ بڑا جس کی تفصیل یہ ہے:"خضرت ابراہیم علیہ الت الم کومعلوم ہوا کہ بہاں کا بادثا ہم نے بنایت برطینت آدمی ہے بشہریں جو کوئی بھی نیا سافر آجا ہا ہے اگر اُسکے ساتھ اُسکی بیوی بھی ہوتو بیوی کو اپنے حرم میں دافل کرلیا ہے اور شوہر کوفتال کر وا دیتا ہے ،اور اگر سافر کے ساتھ اُسکی بہن .

یا ا در کوئی عزیزہ ہو تومسا فرکو حپوٹر دیا جا تاہے۔

حضرت ابراہیم علیہ ات آم کوجب یہ صورت حال معلوم ہوئی تومتفکر ہوگئے۔ بھرا بن بیوی سیدہ سارہ شہبے فرما یا کہ اس مصیبت سے بخات پانے کے لئے تد بیر کرنی چاہئے۔ چونکہ تم میری دینی بہن مجمی ہوا در اس سرزمین پر میرے اور تمہارے علاوہ دوسرا کوئی مسلمان نہیں ہے۔ اس لئے اگر وہ ظالم تم کو پکڑلے جائے تومیرے بارے میں اس سے کہہ دینا کہ یہ میرا بھائی ہے۔

چنائج ایسے ہی ہوا۔ اس طالم کے کارندے حضرت ابراہیم علیہ الت لام اور ستیرہ سارہ کو بچڑنے کئے۔ ستیرہ سارہ نے نے ستیدنا ابراہیم علیہ السلام کے بارے میں فرما دیا کہ یہ میرا بھانی ہے۔ ایک روایت میں بہجی آیا ہے کہ یہ کلام خو دستیرنا ابراہیم علیہ السّلام نے فرمایا تھا کہ بہ خاتون میری بہن ہے " دبخاری)

کارندوں نے حفرت ابراہیم علیہ السلام کو توجیوڑویا اور سیدہ سارہ کو اُس ظالم نے بال پہنچا دیا گیا۔اورجب شب بین اُس ظالم نے ارا دہ ہی کیا تھا کہ اچانک اس کا ہاتھ سٹل ہوگیا۔ اور وہ کسی طرح بھی سیدہ ساڑہ کو ہاتھ نہ لگا سکا۔ یہ دیچھ کر اُس نے سیدہ ساڑہ کو کہا اے بندی تو اپنے خداہے دُعا کر کہ وہ میرا ہاتھ درست گردے بیں بچھ کو رہا کر دول گا۔ سیّدہ ساڑہ نے اُسی وقت دُعا کی ہاتھ ورست گردے ہیں بچھ کو رہا کر دول گا۔ سیّدہ ساڑہ نے اُسی وقت دُعا کی ہاتھ ورست گردے ہیں بھی کو رہا کہ دول گا۔ سیّدہ ساڑہ نے اُسی مرتبہ بھی اور او و بارہ اس کا ہاتھ اور زیادہ شل ہوگیا۔ تغییری مرتبہ بھی میں اسکو مبدرخصت کر دینا چا ہیے کہیں ہوگیا۔ تغییری مرتبہ بھی ہوتا ہی ساڑہ کو اُسی وقت کر یہ جانکے جیا بخے سیدہ ساڑہ کو اُسی وقت الیا نہ ہو کہ کو کہی حوالہ کر دیا ہوتا کہ کہ بیا ہوتا کو کہی حوالہ کر دیا۔ اس کا جرفہ کو سیّدہ سارہ کے دین سے مختلف، شاید اسی وجہ سے رہواسی بنٹی تھیں اور باپ سے دین سے مختلف، شاید اسی وجہ سے رہواسی بنٹی تھیں اور باپ سے دین سے مختلف، شاید اسی وجہ سے رہواسی بنٹی تھیں اور باپ سے دین سے مختلف، شاید اسی وجہ سے سیدہ ہاجوٹہ کو سیّدہ وسارہ کے حوالہ کر دیا ہوں

ستده مارهٔ ،ستده باجرهٔ کوانے ماتھ
کے رحضرت ابراہیم علیہ اسلام کے پاس پہنچیں اور سارا قصت
بیان کیا اور مبارکبا دبھی دی کہ النّر تعالیٰ نے اپنے فضل وکرم
سے ہم کو اس طرح اُس ظالم سے بچایا اور ساتھ ہی ایک بندی ہاجرہ و کوبھی ہم اہ کر دیا حضرت ابو ہریرہ رہ جو اس مدیث کے راوی ہیں
یہاں تک بیان کرنے کے بعد فرمایا اے شریف النسب اہلِ عرب
یہ ہیں وہ ہاجرہ رہ جو تم سب کی مال ہیں۔

بخارى جه صابع د بخارى جزر م صاعامصرى

تورات کی روایت بیہتی ہے کہ فرعون مصرفے سیدہ سارہ سے اس واقعہ کو کرامت سمجھاا ورحضرت ابراہیم علیہ استلام پر بیعتاب میا کہ امضوں نے شروع ہی سے سمجھاا ورحضرت ابراہیم علیہ استلام پر بیعتاب میا کہ امضوں نے شروع ہی سے بیمیوں نہ بیادیا محسستیدہ سارہ ان کی بہن نہیں بیوی ہیں۔ اور مجر بڑے اکرام وانعا

سے ساتھ آن کومھرے رخص کردیا۔

ہر حال بخاری و کم کی روایت ہویا تورات کی معنی و فہوم کے اعتبارے

دونوں روایتوں کے درمیان کوئی نبیا دی اختلاف نہیں۔ البتہ ان تمام روایات سے

دونوں روایتوں کے درمیان کوئی نبیا دی اختلاف نہیں۔ البتہ ان تمام روایات سے

اس قدر بقینی معلوم ہوتا ہے کہتے نہ اابراہیم علیہ التلام اپنی بیوی سیّدہ سارہ اور اپنے برا درزادہ حضرت اوط کے ساتھ مصرت شرفیف کے بیخے مقے اور یہ وہ زمانہ

اور اس طرح وہ حضرت ایسے خاندان کے ہاتھ میں ہے جو سامی قوم سے تعلق دکھتا تھا

اور اس طرح وہ حضرت ابراہیم علیہ التلام سے نسبی سلامیں وابستہ تھا بہاں

ہر ہنچکہ حضرت ابراہیم علیہ التلام اور فرعون مصر کے درمیان ضرور کوئی ایسا واقعہ

پہنچکہ حضرت ابراہیم علیہ التلام اور فرعون مصر کے درمیان ضرور کوئی ایسا واقعہ

پہنچکہ حضرت ابراہیم علیہ التلام اور فرعون مصر کے درمیان ضرور کوئی ایسا واقعہ

فدا کامقبول وبرگزیدہ خاندان ہے۔ یہ دیچھ کراس نے حضرت ابراہیم علیہ السلام

اور آئی بیری سیّدہ مالوا کا آخریں بہت اعزاز واکرام کیا اور ان حضرات کی ہر

اور آئی بیری سیّدہ مالوا کا آخریں بہت اعزاز واکرام کیا اور ان حضرات کی ہر

فدا کامقبول وبرگزیدہ خارمت کی اورصوف اسی پراکھا نہیں کیا بلکہ اپنے قب کیم

فائد انی رشتہ کومضبوط و تعکم کرنے کے لئے ابنی بیٹی ہاجرڈ کو توجی حضرت ابراہیم کی اور جسی بیوی

فائد انی رشتہ کومضبوط و تعکم کرنے کے لئے ابنی بیٹی ہاجرڈ کو توجی حضرت ابراہیم کی اور جسی بیوی

مِلدا وّل کی خدمت گزار قرار پائیں۔ جنانچہ اس ناریخی قیاس کی سہے بڑی شہادت خود یہود کے ہاں بھی موجو دینے . اس طرح بہور کی معتبر روایات سے بھی بیٹ کا صاف ہوجا یا ہے کہ سبیدہ ہاجر ہے سے اومصر فَرعون کی بیٹی تقیس ۔ نورات کا ایک معتبر مفستر رہی شاہ ملو اسحاق كتاب ببيدائش باب ملا آيت ملكي تنفسيريس لكمتا ہے:-

مجب اس د شاہ مصرانے سے ارقا کی وجہ سے حرا مات کو د بیجا توکہا،میری بیٹی کا اس تھے میں بونڈی دخادمہ) ہوکر رہنا دوسرے

محمر مل ملکه موکر رہنے سے بہتر ہے " (ارض القرآن جلد علا صالا)

استفسيراور تورات كى آبت كوممع كرنے سے به حقیقت آشكارا ہوجا نی ہے كه تورات میں ستیدَه ہاجرُه کوصرف اس لئے یونڈی کہا گیا کہ ٹنا ومصرنے انکو ستیدہ سارہ اُ اور حضرتِ ابراہیم علیہ الت لام کے سپرد کرنے وقت بہ کہا تھا کہ و ہ سارہ کی خدمت گزار رہے گی۔ بخاری میں حصرت ابو ہر رہے ہے ملک جباری جور وایت ہے اس میں بھی یہ جُمْلِهُ مُوجِودِ مِي دَأَخْدُمَهَا هَاجَرَى أورستيره باجرُّه كوستيده سارة كحوالهُ كردياكه اِن کی خدمت گزار رہے۔

مشابره حيات بعدالموت إسيدنا ابراسيم عليه التلام كوجبيا كرَّزت:

سطوريس بيان لحيا تيابجين لى سالترتعاك نے رشد وہدایت ،علم وفکر عقل وشعور، طلب وجبتجوئے حق کاطبعی ذوق عطا فرما یا تھا وہ ہرنتے کی حقیقت تک پہنچنے کی سعی کو اپنی زندگی کا خاص مقصد سمجھنے تھے تاکہ اُس کے ذر لیے التّیرِ واحد کی سبتی و انتی و مدانیت اور اسکی قدرت کا ملہ کے متعلق علم الیقین کے بعدِ حَيْ اليقين عاصل كرسكين - باب آزرا ورقوم اور بادے و قت نمرو دكيبا مخدمناظروں اور گفتگو میں اُن کے اس طبعی ذوق کا پتہ حیلتا ہے۔

وعوت وتبليغ كحانهي ايام نين خصرت ابراسيم عليه ابت لام نے حيات بعدالما يعني مرنے سے بعد جی اُنطخے کے متعلق التارتعا کے سے یہ سوال کیا کہ وکس طرح ووبارہ زندہ کرے گا ؟ الٹرتعالے نے حضرت ابراہیم علیہ السلام سے فرمایا :۔ اُکے ابراہیم کیا تم کو اس سلم پریقین وایمان نہیں ؟ '''' حضرت ابراہیم علیہ ات لام نے فوراً جواب دیا کیوں نہیں میں بلا ترد داس پر ایمان رکھتا ہوں البتہ میں چاہتا ہوں کہ قلب کو وہ کیفیت محسوس ہوجا کے جوانکھوں پر ایمان رکھتا ہوں۔البتہ میں جاہتا ہوں کہ قلب کو وہ کیفیت محسوس ہوجا کے جوانکھوں

سے دیکھنے پرماسل ہوتی ہے۔ سیدنا ابراہیم علیہ التلام کا بیسوال درائسل آنکھوں سے مشاہرہ کرنے سے متعلق تھا کہ مرنے کے بعد زندہ ہونے تی کیاشکل ہوگی۔ چونکہ بیمٹ کہ عقید سے سے بھی وابستہ تھااور ہرملت ہیں ہرنبی نے مرنے کے بعد دو ہارہ اٹھا کے جانے کی للقین کی ہے۔ اور اس ملت ہیں بھی عقید ہُ آخرت کی حیثیت ایسے ہی ہے جیسے کی للقین کی ہے۔ اور اس ملت ہیں بھی عقید ہُ آخرت کی حیثیت ایسے ہی ہے جیسے

التراوراسي صفات پرايمان لانے کی ہے.

حضرت ابراتہیم علیہ السام جیسے اُولوالعزم رسول جواس عقیدے کے مبلغ مبھی ہیں تک وسٹ برکی وجہ سے یہ مثنا ہدہ کرنانہیں چاہتے بھے تحرموت کے بعد حیات کیوں کر ہوگی ۔ بلکہ التٰرتعالے سے یہ سوال کر'اا پنے طبعی فروق وُرجانُ جبتجوز فق' سیضمن میں تھا۔

یہ ہی وجہ ہے کہ جب اللہ تعالے نے بوجھا اے ابراہیم کراتم کو بقین نہیں ؟ جواب میں فوراً فرمایا اِنگیوں نہیں ضرورہے ، م

مقصود فرف یہ مقاکہ علم ویقین کے باوجود حقیقت اور مشاہرہ بھی ظاہر ہوجا چنانچہ اللہ تعالیٰے نے حضرت ابراہم علیہ الت لام کی درخواست قبول فرمالی اور موت نے بعد حیات کامشاہدہ کروایا۔معلوم ہوا کہ سوال در اصل عینی مشاہرہ کا تھاجوکم وقیبن کے جلاف نہیں ہواکرتا۔

کے حلاف ہیں ہوا رہا۔ اس بارے بیں مختصر سی وضاحت مزید مفید ہوگی۔ علمی اصطلاح بیں کسی بھی شکی کو جاننے بہجاننے کے بین دریعے ہوا کرتے ہیں۔ آول علم الیفین ۔ بعنی ایساعلم جو توی اعتقاد کی حدیک آجائے جو کسی ہی حالت بیں شک وسٹ ہو کی را ہ سے متزلزل نہ ہو سکے۔ ایسی حالت کوعلم الیفین کہا جا تاہے۔ بیں شک وسٹ ہو کی را ہ میں الیقین ۔ آگر یہی علم محسوس واور آک کی حدیک ہوجائے اسکومیوالیقین کہا جائے گا۔ دیمینی اتنا تو ہی اور بختہ ہو کہ محسوسات کی طرح ہوجائے) سوم حق الیقین بھین الیقین سے آگے کی کیفیت جبی وج سے علم اور مشاہرہ

ابك، وجأليس ابسى كيفيت واليقين كهلائيكي - اس على اصطلاح كوا يك محسو تمتيل سيمحها جائے -مثلاً: زمزم ایک مقدس اور با برکت یا نی ہے اسکے جاننے اور معلوم کرنے کا بہلا درجہ یہ ہے کہ عوام وخواص ، ثنقہ وغیر شقہ آ دنمی سے شہرتِ عام کی حدیث اس کے و و اور اسکی تنعریف کوسٹنا ہے جبی وجہ سے انمکار یا شک وشبہ کی گنجائش باقی نہ رہی

اليني كيفيت كوعلم اليقين كهاجا كے كا۔

بهرهشن اتفاق سے مکۃ المکرمہ جاکر جا و زمزم کو اپنی آنکھوں ہے دیچے لیا توار علم کابہ درجہ پہلے درجے سے زیادہ قوی اورمضبوط ہوگیا البیں محیفیت کو عین البقین کہا جا اسعكماليقين اورعين اليقين كيعداس زمزم كوشكم سبربهوكربي بياا ورأسح ذاكفه كي لطا وملاحت كوقلب كى كرافى في محسوس كرايا - اس كيفيت كولحق البقي كها جائم كا -علم کا بہ وہ آخری درجہ ہے جو قطرتِ انسانی سے تقاضا کے نشیجی کی سیرا بی کے لئے کا فی ہوجا تاہے۔ یہ ہی مرحلہ انسان کی طلب جبنجو یاطمانیت کی آخری معسراً ج سمجهاجا باہے بسبید نا ابراہیم علیہ التبلام بھی اپنے رب سے اسی مرحلے کیلئے سوال کرتے ہیں کہ اے رب مجھے یہ بات و کھلا د کے کہ تؤمرنے کے بعدکس طرح زندہ کرتاہے۔ بعنی میری نمنا ہے کہ میں اپنی آنکھوں ہے منزا مرہ اگروں کھنے بعد کمات کی کیاشکل ہو گی بھ تب التيرنعائيے نے فرما يا احتِما اگرتم كو اس منابرہ كى طلب ہے نوچار عدد برندے بوا ور اُن کو ذبح کر کے اُن سے فکڑے کڑے کرے سامنے والے یہاڑ بر ڈال وواور

تجفر تحجه فاصلے بر تھٹرے ہوکراُن کو آ واز دو۔ حضرت ابراً ہیم علیہ التلام نے ایساہی کیا اورجب اُن کو آواز دی تو وہ سب اجزارعلیجده علیجده موکر فوراً اپنی این شکل پرآئے اور زنده موکر حضرت ابرامیم علیہ التلام کے پاس اُڑتے ہوئے آئے

وَإِذْ تَكَالَ إِبْرُاهِيهُمْ رَبِّ أَدِينُ الْحِ. (بقره آيت منالا)

ممون آوروه واقعهم پیشِ نظریب جب ابراسیم نے کہاتھا کہ اے رب میرے مجھے و کھادے آپ مرووں تو کیسا زندہ کرتے ہیں ؟ الٹرنے فرمایا کیا تم ایمان نہیں رکھتے ؟" مبلداوّل

ہایت کے چراع ابراہیم علیہ ات لام نے عرض کیا ایمان تورکھتا ہوں مگر دل کو اُس محیفیت سے مثایرہ سے بعد سکون ہوجا ہا۔

ے کے ہوں کہ اور ان کو اپنے سے مانوس کرلو۔ بھراُن کا ایک فرما یا حقیا تو جار پرندے لوا ور اُن کو اَ جاز دو و ہ تمہارے پاس دوڑے جلے ایک جُز ایک ایک بہا تو پر رکھ دو ، بھراُن کو اَ واز دو و ہ تمہارے پاس دوڑے جلے بیتے سے بیانہ برا کا ایک نیارت یا اقتدار او تکسم ہے۔

آئیں گے۔ اورخوب جان کے کہ النٹرنہایت باا قیدار اور تلیم ہے۔ مفسیرروح المعانی میں محدث ابن المنذر نے حضرت مسن سے ایک روایت مقل کی ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ است لام نے پرندوں کو ذبح کرکے اُن کے مکٹروں کو قریب سے مہاڑوں پر رکھ دیا اور بھر آواز دی آنا فانا ٹری سے ٹہری اور پُرسے پُرسب مل ملاکر اپنی اصلی شکل پر اُڑتے ہوئے آگئے۔ النٹر تعالے نے فرطایا اے ابر اہیم قیامت سے دن انسانوں کو اس طرح زندہ کیا جائیگا۔ قیامت سے دن انسانوں کو اس طرح زندہ کیا جائیگا۔

رے ہے وق ات وق وہ ق رق تربی ہو ہیں۔ سلف صالحین سے اس آبت کی یہ ہی تنفسیر ٹابت ہے اور روایاتِ حدیث رک میں رہے ۔ تابید

مجمی اسکی تائید کرنی ہیں۔

منانج عب

اببرارام کی ایمانی کیفیت اولین کس مضرات نے اس واقعہ کی عجیب وئیب اس میں ایکن انبیار کرام کے ساتھ اللہ تعالیٰ کا جو معاملہ ہے اُسے اگر انجی طرح زسن نشین کر لیا جائے تو نہ کسی تا ویل کی ضرورت پڑت ہے نہ ہی شک وشعبی گنجائش باتی رہتی ہے۔

ایک مسلمان کے گئے یہ بات کافی ہے کہ وہ قرآن و حدیث کے واقعات کو جس طرح وہ بیان کئے گئے ہیں نیم کرتے ۔ یہ ہی ایمان کا تفاضہ بھی ہے اور اسی کا مطالبہ بھی بیکن انبیار کرام کو جو خلافت النہ تعالیٰ نے شیرو کی تھی اور وہ جبکی وعوت مطالبہ بھی بیک ایمان کا تعالیٰ وہ ابنی آنکھوں سے مطالبہ بھی بیک ایم وہ ابنی آنکھوں سے کئے بیکے شیح اُس کیلئے ضروری مظاکہ وہ ابنی آنکھوں سے کے لئے اس دنیا میں بھیجے کئے بیکھے اُس کیلئے ضروری مظاکہ وہ ابنی آنکھوں سے

وہ تمام حقیقتیں دیچھلیں جن پر ایمان لانے کی دعوت ُانھیں دنیا کو دینی تھی ۔ اُنہہیں ساری انسانیت کو کامل اعتماٰ دیے ساتھ یہ کہنا تھا کہ تم لوگ قیاس وخمین سے سہارے چلتے ہو، مگرہم انکھوں دیکھی بات کہدرہے ہیں، نمہارے پاس صرف محمیان ہے اور ہمّارے یاس علم ہے۔ تم اپنی آنکھوں سے ضِرف دیوار تک دیکھ سکتے ہوںکین ہم دلوارکے پیچھے بھی وٹیچھ کینے ہیں ۔ یہ بنی وجہ ہے کہ انبیار کرام سے سامنے فرشتے عیاناً آئے ہیں۔ اُن نُواَسمان وزبین کے نظام حکومت دملکوت کامشایدہ کروا پانگیا۔اُن کو جنست و دوزخ آنکھوں سے دکھلانی ملحئی۔ قبری زندگی اُن پر کھول دی گئی۔ اسی طرح حیات بعدالموت کا اُن کے سامنے مظاہرہ کرکے دکھا یا گیاہے۔ نبیوں کے ایمیا ن بالغیب کی حالت ،نبوت سے پہلے کی ہوتی ہے .نبی ہونے کے بعد اِن کو اپیان بالشہادة کی نعمتِ دی جاتی ہے اور پیمعمتِ صرف انہی کے سامقہ مخصوص ہوتی ہے کیونکہ ان حضرات کوایک ایسے عالم کی تبلیغ کرنی ہے جو انسانوں سے بالکل جیسا ہواہے ۔ اب أكران حصرات بربيرعالم منكشف نهرو توان كى دعوت ونبليغ ميں وہ زورسمهاں جو انجھوا سے دیکھنے کے بعد ہوتا ہے۔

یہ اُسی قوتِ بقین کا زورہے کہ اس اُمت ہیں ایسے حضرات تھی پیدا ہوئے

كُشِفَتِ الْحِجَابُ مَا ازْدَادَتُ إِيْمَانِيْ دغیب کے پر دے اُنٹھ مجھی جانبیں تومیرے ایان ویقین

میں تجھ بھی زیاد تی نہوگی) یہ بُرِاعتما و کیفیٹ دراصل انبیار کرام کی اُسی دعوت ونبلیغ کانتیجہ ہے جسکو انھوں نے این آنکھوں سے دیچھ کرا ور کانوں سے مسکنکر انسانوں تک پہنچا یا ہے۔

> حي**ات بعد الموت كا** التُفسير وح المعاني بي بروايت عاكم حضرت علي^خ ا و رحضرت ابن عباس وحضرت عبداللرين عود سے یہ وضاحت بیان کی گئی کہ ایک دفعہ حضرت تخزيرعليه التبلام كالخزرايك ايسى بستى يربهواجو

اپی حجیتوں پر اُوندھی گری پڑی تھی اور سب انسان مرے پڑے تھے۔ حضرت عُزید علیہ استام نے اپنے دل میں کہا کہ یہ آبادی جو ہلاک ہو چی ہے اسے التٰہ تعالیٰے کس طرح دو ہارہ زندگی بختے گا؟ اس سوال سے یہ عنی نہ تھے کہ حضرت عُزید علیہ استال م حیات بعد الموت کے منگر تھے یا انتھیں اسمیں شک و شبہ تھا بلکیے وہ حقیقت کاعینی مشاہرہ چاہتے تھے جیساکہ انبیاء کرام کو کروایا جاتا ہے حضرت عُزیر علیہ استلام سے اس خیال پرالٹر تعالیٰے نے اس کی دوح قبض کرلی اور وہ پور سے تشویرس تک مُردہ پڑے دہے۔ مجرالٹر تعالیٰے نے اُسمیں دو بارہ زندگی بخشی اور اُن سے پوچھا بتاؤی تنی گرت پڑے رہے ہو؟

حضرت عُزیرعلیہ استلام نے فرمایا ایک دن یا اُس سے ہی کہے کم ، اللہ تعالیے نے فرمایا تم پر تتو برس اسی حالت میں گزرگئے ہیں اب تم ذرا اپنے کھانے یا تی کو دیجیو دجو اس سفر میں اُن سے ساتھ تھا) اسمیں درّہ برا برجمی تغیر نہیں آیا جوں کا توں تازہ رکھا ہواہے ، دوسری جانب ذرا اپنے سوا ری کے خیر کو دیجیو دکہ اسکی ٹریاں تک بوسیدہ ہوگئی ہیں)

مجرالٹرتعالے نے حضرت عُزرِعلیہ اسلام سے فرمایا یہ ہم نے اس کئے کیا ہے کہم آبکو لوگوں کے لئے ایک نشانی بنا دیسا چاہتے ہیں دمینی آبک ایسے شخص کا زندہ پلٹ آنا جسے دنیا نشورس پہلے مُردہ سمجھ حکی تحقی خود اسکوا پنے ہمعصروں ہیں ایک جستی جائمی نشانی بنا دینے کے گانی تھا) مجھ فرمایا اے عُزیر تم دیکھوا پنے خوانی بنا ویسے بیں۔ چنانچ آناً فاناً خچرزندہ ہوکرسامنے آگیا اسپر چڑھا دیتے ہیں۔ چنانچ آناً فاناً خچرزندہ ہوکرسامنے آگیا ہے دیکھ کرحضرت عزیر علیہ استلام نے کہا ہیں کامل بیقین رفعتا ہوں السّر جرچیزیر قادر سے " دبقرہ آبت موہ یا

7.4

دایت کے چراغ مبلداول مبلداول

بنی قطورہ اسیدنا ابراہیم علیہ اتلام نے سیدہ سارہ اورسیدہ ہاجرہ رہز کے علاوہ ایک اور بھی نکاح کیا تھا۔ اِن خاتون کا نام قطورہ رہزتھا اِن کے بطن سے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے چھ بیٹے پیدا ہوئے۔ تورات میں اِنجے

نام بھی تکھے گئے ہیں۔ انہی اولاد ہیں سے برین یا بریان کی نسل نے اپنی آبادی شہرِ یَدُینَ سے نام سے بسانی اور یہ بعد ہیں اصحاب برین کہلائے جن کا تذکرہ فرآن حکیم میں موجود ہے۔ اسی طرح حضرت ابراہیم علیہ التسلام کے پوتے وُ وَ ان کی سل اصحاب لا یکہ کے نام سے شہور ہونی َ انہی دونوں قوم کی جانب حضرت شعیب علیہ السلام مبعوث

کے یام سے منہور کہوگا ۔ انہی دولوں قوم کی جانب حضرت شعیب علیہ السلا کئے سکتے منظے میشنہ در مفتر قرآن حضرت فنا درخ کی یہی رائے ہے۔

مہلی دعار ابرائمی کی وضاحت اسرہ شعرار میں بیشترانبیار کرام کی دعوت و ہدایت کا ذکر آیا ہے

اسی ہیں حضرت ابراہیم علیہ است لام کابھی تذکرہ ہے۔ حضرت ابراہیم علیہ انتسام اپنی قوم کو توحید کی تلفین اور مشرک و محفر سے بیزاری و نفرت کی ترغیب دیتے ہوئے یک بیک التّٰہ واحد کی جانب دست بدعا ہوجاتے ہیں عرض کرتے ہیں :۔ گئی بیک التّٰہ واحد کی جانب دست بدعا ہوجاتے ہیں عرض کرتے ہیں :۔ وَ لَا نَهُ حُدِدِیٰ یُورِی اِیکُ مَدِیدُ کُنُونُ کَا اِنْہُ اِیکُ مَدِیدُ کُنُونُ کَا ۔

پرورد گارجس روز لوگ د وباره اُنطائے جائیں گے تو

اُس دن مجھکورُموا نہ کرنا۔ (شعرار آت ہنے) اس آیت کے بخت ایام بخاری نے اپنی کتا بشصیح البخاری" میں حضرت البوہر رزہ سے ایک روایت نقل کی ہے جو کتاب التفسیر میں مختصرا و دکتاب الانبیار بین تفصیب ل کے ساتھ موحو د ہے .

> کتاب التفسیر میں منقول مدیث کا یہ ترجمہ ہے :۔ ''خصرت ابراہیم علیہ است لام قیامت سے دن اپنے دکا فری باپ کو نہایت پرآگندہ مالت ہیں روسیاہ دیجییں سے توعب رض کریں سے برور دیگار دنیا ہیں تونے میری اس دُعا کو قبول فرمالیا تھا

وَلَا تُعْذِذِن يُوْمَرُ مِيْعَتُونَ رَمِهِرِيهِ رَسُوا فَى كَيْبِ كَهُ مِيدَانِ حَشْرِينِ اپنے ہاپ كواس حال میں دیجھ رہا ہوں) السّرتعالے ارشاد فرما مینگے ابراہیم امیں نے كا فروں پر جنت كوحرام كردیا ہے ؟

(بخارى جلدعة صوسا)

اور کتاب الانبیار میں یہ روایت اِن اضافات کے ساتھ ندکورہے:۔
"قیامت میں جب حضرت ابراہیم علیہ الت لام ا پنے
باپ کو پراگندہ حال اور رُوسیاہ دیکھیں کئے تواپنے باب سے
مخاطب ہو کر فرہائیں گے کیا میں نے بار ہا آپ سے بہ نہیں کہا تھا
کرمیری راہ ہرایت کی مخالفت نہ کہ نا ؟ آزرجواب دے گاجوہوا
سوسہوا آج کے دن سے بیں تیری مخالفت نہیں کروں گا ۔ تب
حضرت ابراسیم علیہ الت لام درگاہ الہٰی میں عرض رسا ہوں گے
مرور دگار تونے میری اس دعا کو قبول کر لیا تھا۔ وکل تخفی نو کی گئی تو کے
برور دگار تونے میری اس دعا کو قبول کر لیا تھا۔ وکل تخفی نو کی گئی تو کہ گئی تو کہ گئی تو کہ گئی تو کہ گئی تو کی گئی ہو کا اور کیا ہوگی کہ میرا باب را آزر)
آپ کی رحمت سے انتہائی دُور ہے ۔ اللّٰہ تعالیٰے فرمائیگا میں نے بلاشہ
کا فروں پر جنت کو حرام کر دیا ہے ۔

ہ سروں پر بیت و طرام سرویا ہے۔ مجبرایک فرست ہ آواز دے گا اور بعض روایات ہیں ہے کہ اللّٰر تعالیٰے خو و فرمانیں گے ابراہیم قدموں کے نیچے دیچھوکیا ہی ؟ حضرت ابراہیم علیہ السّلام دیچھیں گئے کہ گندگی ہیں لتھٹرا ہوا ایک ریجو بیروں ہیں پڑالوط رہا ہے۔ تب فرشتے اُسکی ٹمانگیں کیڑکرجہنم ریجو بیروں ہیں پڑالوط رہا ہے۔ تب فرشتے اُسکی ٹمانگیں کیڑکرجہنم

میں بھینک دیں گے۔ دبخاری جلد ملاصفظا) حافظ ابن مجرع سقلانی اس حدیث کے اجزار پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ التکر تع آزرکو اس لئے مسخ کر دیے گاتا کہ حضرت ابرانہ ہم علیہ الت لام کا حزن وملال جاتا رہے جو آزر کا بشکل انسان رہنے کی صورت میں پیدا ہوا تھا اور وہ اس کی نہایت قابل مفرت شکل دیچے کرمتنفر ہوجائیں اور فطرتِ ابرانہ ہمی اس سے بیزار ہوجائے۔ چنا بچہ اس حالت میں دیچے کرحصرت ابرانہ ہم علیہ الت لام کا وہ حزن وملال جوفطرت

برابرت کے پڑاغ

انسانی کا تقاضا تھا دور ہوگیا.

بعض محذین جن بین منتہ در است میں استہ در است میں اس مدیث کو با وجود صحب سند کے سقم درا بت "کی بنا پر قبول نہیں کرتے ہیں کیو کا اس روابت ہیں یہ دفیاحت ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ التسلام اپنے باپ کی حالت شرک پر موت کو جانتے ہوئے اللہ تفالے سے اُسکی مغفرت کی دُعاکر رہے ہیں جبکہ خود و قرآن حکیم میں یہ مراحت موجود ہے کہ جب حضرت ابراہیم علیہ السلام کو وخی اللی سے معلوم ہوگیا کہ ان کا باپ عُد قرالت ہے وہ المیان نہیں لائے گا تو اعفوں نے اُسکے لئے دُعام معفوت تو گیا تعلق رکھنا بھی ہے مدیث ترک کر دیا تھا۔ اس لحاظ سے یہ حدیث قرآن حکیم کی وضاحت کے فلان بھی ہے لہذا بخاری کی تیف سیلی روایت مجروح اور لائق طعن ہے ۔ اور یہی بات مشہور محدث ابن تیز شرک کر دیا ہوں ہو کہ الزام لگایا ہے۔

نے بھی فر ان ہے اور اس حدیث پر تفر د کا الزام لگایا ہے۔

نے بھی فر ان ہے اور اس حدیث پر تفر د کا الزام لگایا ہے۔

محدث کرمالی کے جی اس عم کو د ورکرنے کے لیے بحث کی ہے جو اپنی جگہ قابلِ مراجعت ہے۔

دفتح البارى جلد مركتاب الانبيار)

نیکن ان ساری تمفصیلات سے قطع نظرخود وعائے ابراہیمی پرغور کیاجائے تو نہ بیشہ پیدا ہوتاہے اور نہ روابت بخاری رشفم اور تفرّد کا الزام عائد ہوتاہے تمفصیل اسکی بہے: صفرت ابراہیم علیہ انتہام کی اس وعاکا تذکرہ سور ہ شعرار ہیں اس طہرح

اکے میرے رب مجھے حکمت عطا فرما اور مجھے نیکون بین شال کر دے ، اور میرا احجھا تذکرہ آنے والے انسانوں میں مقرر کر دیے اور مجھے جنت النعیم کا وارث بنا، اور میرے باپ کی مغفرت فرما، محیونکہ وہ گمراہ لوگوں ہیں سے ہے۔ اور جس دن لوگ دوبارہ اُٹھائے جائیں سے مجھے موارہ اُٹھائے جائیں سے مجھکورسوانہ کر، " دشعرار آیات عید تاھیے ،

ان آبات بیں وضاحت موجو دہتے کہ یہ وُعا دنیا وی زندگی بیں کی جارہی ہے اور یہ مجمی صراحت موجو دہتے کہ یہ وُعا دنیا وی زندگی بیں کی جارہی ہے اور یہ مجمی صراحت ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ التلام باپ کی مغفرت سے لئے وُعاکر رہے ہیں اور سور وَ توبہ آبیت علا بیں النارنعالے نے حضرت ابراہیم علیہ السلام سے

بارے میں فرمایا :-.

اورابراہیم نے اپنے باپ کے لئے مغفرت کی دعا مانگی تھی وہ ایک و عدہ کی وجہ سے مانگی تھی جوانمفوں نے اپنے باپ سے کر لیا تھا مجرحب اُن کومعلوم ہوگیا کہ یہ دشمنِ خدا ہے تو باپ سے دست بردار مجرحب اُن کومعلوم ہوگیا کہ یہ دشمنِ خدا ہے تو باپ سے دست بردار

ہونے بیشک ابراہیم بڑے بڑم دل و بُرد باد تھے۔" اس آیت سے معلوم ہوا کہ باپ سے لئے مغفرت کی دعا کر نا ابتدائی دور کی بات ہے جبکہ باپ کا دسمن خدا ہونا معلوم نہ تھا اور جب معلوم ہوگیا تو دُعا کر نا بند کر دیا اور بب نرار ہو گئے۔ اور حد ببنی اری میں جو واقعہ بیان کیا گیا ہے اسمیں باپ کی مغفرت طلبی کا کوئی ہو گئے۔ اور حد ببنی کی مغفرت طلبی کا کوئی شہوت ہو گئے۔ اور حد ببنی سے موان کیا گئے کہ محتفرت ابراہیم علیالسلام نے قیام کے دن لینے بائیٹ بری شہور یا دی ۔" اے رب بے محقد سے فرما یا تھا کہ قیامت کے دن اُرسوا میں فرما یا جو سے فرما یا ہوگی کہ میرا با ب

ہیں روں ماہ مراہ ہے۔ ہزرجورحمت سے دورہے (میرے سامنے موجودہے) ً۔

مدیث شربین کے بہالفاظ قابل عور ہیں :-یا رَبِ اِنَّكَ وَعَدُتَانِي اَنَّ لَا تَعَدِّنِي بِوَمَ يَبَعَنُونَ

فَأَيُّ خِذْيِ آخُذْكَى مِنْ آبِي الْكَبْعَكِ الْجُ دِبَارِي جِمْ صَالِكِ)

کائی جائی الدین اس مدیت میں باپ سے لئے طلب مغفرت کا کوئی لفظ نہیں ہے اور نہ صنمونِ مدیت ہیں اس مدیت میں باپ سے لئے طلب مغفرت کا کوئی لفظ نہیں ہے اور نہ صنمونِ مدیت ہی بیعدوم ہوتا ہے کوئیٹر کے لئے دنیا کی زندگی میں حضرت ابراہیم علیہ الت لام نجاب کے لئے مغفرت کی دُعا سے حسب دواری کرتی محق اور عملاً اس کا نبوت بھی دیا تھا۔ اس حقیقت سے پیش نظر مدیت بخاری سے میمفہوم پیدا کرنا کہ حضرت ابراہیم علیہ الت لام قیامت سے دون مشرک باپ سے لئے مچرمغفرت کی دُعاکر رہے ہیں اور الٹر نعالے کو ایفائے عہد مشرک باپ سے لئے مچرمغفرت کی دُعاکر رہے ہیں اور الٹر نعالے کو ایفائے عہد مشرک باپ سے لئے مچرمغفرت کی دُعاکر رہے ہیں اور الٹر نعالے کو ایفائے عہد مشرک باپ سے دون ہیں مقلقت یہ ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ الت لام اپنے باپ آزر کی اس بُری صا رہنی رسوائی سے بنا ہ بانگ رہے ہیں کہ اے میرے رب میری اس رسوائی سے بڑھکر اپنی رسوائی میر گی اپنے باپ کو فیامت کے دن بُرے حال سے سامتر دیجھنا عام اور کمیار سوائی میر گی اپنے باپ کو فیامت کے دن بُرے حال سے سامتر دیجھنا عام اور کمیار سوائی میر گی اپنے باپ کو فیامت کے دن بُرے حال سے سامتر دیجھنا عام

جلدا دّل

نگاہوں میں رسوائی کا باعث ہے چنانچہ التّرتعالے نے اس رسوائی کو اس طرح و و ر کر دیا کہ باپ آزرکو حیوانی محروث کل بجو میں تبدیل کر دیا جوانسانی شکل ہے کوئی مناسبت نمہیں رکھتا ،اب جبکہ آزرانسان ہی نمہیں رہاجس سے حضرت ابراہیم علیہ استلام کے باپ ہونے کا امکان ببیدا ہوجائے تو عالم حشریں رسوائی کا قطعاً امکان نہ رہا ورالٹاتو کا وعدہ بھی پورا ہوگیا اور حضرت ابراہیم علیہ السلام بھی رسوائی سے محفوظ ہوگئے ۔ لہذا دعائے ابراہیمی کا خلاصہ یہ ہوگا :۔

اے اللہ قیامت کے دن یہ دسوائی مجھے نہ دکھا کہ میدان صفر میں تمام اولین وآخرین کی موجو دگی میں ابراہیم دعلیہ السلام سما ہاپ آزرسنرا بار ہاہواور ابراہیم دعلیہ السّلام ، کھڑا دیجھ رہا ہو'' آزرسنرا بار ہاہواور ابراہیم دعلیہ السّلام ، کھڑا دیجھ رہا ہو''

اس تشریج کے بعدروایت سخاری کامطالعہ کیا جائے توحدیث پرشقم درایت جیساکہ محدث آملیلی کا الزام ہے یا تفرد کا اطلاق جیسا کہ محدث ابن کتیرٹنے کیا ہے جومعقول نظر نہیں آیا۔ والتراملم۔

دوتسری دعار ابراہمی کی وضاحت کی دُعاوں بیں آگ مختر دُعایہ

مجى موجود ہے بد وَاجْعَلُ لِيْ لِسَانَ صِدُ بِنَ فِي الْآخِدِ بُنَ .

(الشعراء آیت ۱۲۸)

آوربعد کے آنے والوں پی مجھکوسی ناموری عطافرہا۔"
یعنی بعد کی نسلیں مجھکو ذکر خیر کے ساتھ یا دکریں جسٹنا خلاصہ یہ ہوا کہ دنیا ہیں مجھ سے
وہ کا دنامے ابنجام یائیں جن کی بدولت رہتی دنیا تک میری زندگی خلق خدا کے لئے
روشنی کا بینار بنی دہ اور مجھکو السانیت کے محسنوں ہیں شمار کیا جائے۔ ندیہ کہ بیں
دنیا میں وہ کام کرجاؤں کونسل السانی میر سے بعد میرا شمار اُن ظالموں میں سرے
جو خو د بجر ہے ہوئے محقے اور دنیا کو بھی بگاڑ کر چلے سکتے۔

بیمحض شہرت یا ناموری کی دعانہیں ہے بلکہ سچی شہرت اور حقیقی ناموری کی وعاہے جولاز ماسمحوس اور بیش بہاخدمت سے تنبیجے میں عصل ہوتی ہے مقصو در دنبی جلداوّل دایت کے جراغ

خدمات کی بچا آوری ہے جوانسا نبیت سے لئے نوراور ہدایت ثابت ہو، جیسے نبی کریم صلی الشرعلیہ و کم کی وعاؤں میں ایک دُعا اس قسم کی ملتی ہے۔

وَاللَّهُ عَمْ اجْعَلْنِي فِي عَيْنِي صَعِيْزًا وَفِي أَعُيْنِ النَّاسِ

سَبِيْدًا. 'أے التٰر مجھکو میری نگا ہوں میں حفیر و محتر بنا رکھ اور لوگوں

کی نتگا ہوں میں بڑا و بزرگ تر۔'' تحسی شخص توسحی ناموری وغزت کا حاسل ہونا اپنے اندر دو فائد ہے رکھتا ہے۔ اوّل بہری اُس سے نیک کارناموں سے آنے والی نسلوں کو نیک مثال ملتی

ہے جس سے وہ مجلائی کاسبق ماسل کرتی ہیں۔

و اللہ ہے کہ آ دمی کی حیوٹری ہوئی نیک مثال سے قیامت تک جینے لوگوں کو ہرایت نصیب ہوگی اُن سب کا تُواب اُسٹ خص کوبھی تلے گاجس نے نیک مثال حچوڑی ہے۔ علاوہ ازیں قیامت سے روز کروڑوں بناگان الہٰی کی پیگواہی جمی اُسکے جق ہیں موجود ہوگی کہ وہ دنیا میں محلائی اور خیرے جیشعے رواں کرکے آیاہے جس سے نسل پرنسل سیراب ہوتی رہی ہے ۔ یہی سیدنا ا براہتم علیہ انتسلام کی مُوعا کامقصد ہے كه و ه زمهتی دنیاتیک اپنے لئے خیر سے حیث مئر رواں طلب حرر ہے ہیں۔ التر تعالیے نے آبٌ کی دعاکو اس طرح قبول فرمایا که اسسلام کو جوآخری دین ہے مکتتِ ابراہیم" قرار ديا أورخو دسبيرنا ابراتهم علبه السلام كوابوالانبيار ذببول تحييجتراعلي كالفب عطائحیپا گیا۔

تنسري دعامر ابراتهمي كئ وضاحت سورة متحذيب حضرت إبراتهم عليبه استسلام كى أيك َ خاصُ دعماً

كا نذكره موجود ہے ۔ و ہ بارگا ہِ الٰهي بين دستِ طلب دراز كئے عجزونياز شےسا تقريب عُضِ كررب مِي بـ رَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَتَّا لِلَّذِينَ كَفُولُوا الْحُ

د المتحنة آيت <u>۵۵)</u> اُے ہمارے پرور دگا رہمیں کا فرکوگوں کا فتنہ ریختہ مشق،

فِتنهٔ فَتَن ہے مِاخوذ ہے۔جب سونے کوآگ پر تیا کر کھوٹ اورمبل کو دور کیا جا تا ہے توايسے موقعہ بر کہا جاتا ہے فَتَنَ النَّا هَبْ سُونا خانص ہوگیامینی مقصان سے محفوظ ہوگیا۔ لیکن اصطلاح میں امنحان وآز مائش اور پر تھنے کو کہتے ہیں ۔اس لئے انسان پر جومضائب وشدا ئد آتے ہیں و ہ اسی مناسبت سے فتینہ کہلائتے ہیں بحبو تکہ و ہ انسان گو سریا بےصبری ہے دوجار تردیتے ہیں ۔ قرآن حکیم نے مال ،اولا د، اور جاہ ومنصب کواسی معنی سے بیٹ نظر فتنہ کہاہے۔

حضرت ابراہیم علیہ انت لام کا فرول کے لئے اہل ایمان کے فتنہ بنے سے پناہ طلب کررئے ہیں فتنہ بننے کی متعد دلصورتئیں ہوسکتی ہیں جن سے ہرمومن کوالٹرتعالے

کی پناہ مانتئنی چاہتے۔

مثال سےطور پراسی ایک صورت پر سکتی ہے کہ کا فراُن پر غالب آجائیں اور نے غلبے کو اس بات کی نیل قرار دیں کہ ہم حق پر ہیں اور ایل ایمان برسر باطل ، ورنہ پنے غلبے کو اس بات کی نیل قرار دیں کہ ہم حق پر ہیں اور ایل ایمان برسر باطل ، ورنہ كيتے ہوئتنا مظاكد إن لوگوں كوالله كى خوست نورى خاصل ہوتى اور تبجير بھى سمبي إن يفلب حصل ہونا ؟ یہ ایک بڑا فتنہ ہے جو اہل ایبان کے ایبان کو متأ ٹر کرسکتاہے.

د وسری صورت پیروسحتی ہے کہ اہل ایمان پر کا فروں کاظلم و تنم اُن کی حد بر دانشت سے بڑھ جائے اور آخر کار وہ اُن سے دب محرائے دین الورا خلاق کا سودا سحرنے پر اُتر جائیں۔ بیصورت مؤنیا تمجریں مومنوں کی جگ ہنٹانی کی موجب ہوگی اور کافروں کو اس سے دین اور اہل دین کی ندلیل کاموقعہ ملیگا. یہ فتنہ پہلے فتنہ سے زیادہ

ری صورت یہ ہوئیتی ہے کہ گمراہی سے عام غلبہ اورتسکط کی حالت میں جب کچھ لوگ حق کی دعوت لیکر اُعظتے ہوں تو انہیں مختلف قسم سے ظالموں سے سابقہ پڑتاہے. ایسے موقعہ پر الٹرنعالے ہے وُعاکی جانی ہے کہ الے الٹریم برایسا فضل فرماکہ ہم ظالموں کے لئے صرف آزبائش بن کرندرہ جائیں اور ہماری وعوت بیجھیے نہ

تبدأ الراسم عليه ات المم كى دعوت وتبليغ جن مراهل سے گزرى أسميل

ہدایت کے جہائے

ہدایت کے جہائے

ہدایت منہوم آجاتے ہیں۔ یہ دُعا بڑے وسیع منہوم کوا داکرتی ہے۔

حضرت ابراسم علیہ ات لام کی دُعا کا یہ بہلو ہمارے کئے صدم زارسامان عبر
وبصیرت رکھتا ہے بغیر اسلامی حکومت ومعاشرت نے ہم کواس درج حقیر و ذلیل بنا دیا

حکہ ہمنے اپنے عمل سے علا وہ سوچنے سمجھنے کے زاویے بکب بدل دیے ہیں۔

النڈ سے مقدس رسول سیدنا ابراہیم علیہ السّلام النّہ تعالیٰ کی جناب ہیں

عجز وزاری کے ساتھ اس نا پاک زندگی سے محفوظ رہنے کے لئے دست طلب دراز کیا

عجز وزاری کے ساتھ اس نا پاک زندگی سے محفوظ رہنے کے لئے دست طلب دراز کیا

عبر کہم پر وہ وقت مجمی نہ آئے کہ کفروشرک کی طاقت وحکومت توحید کے ماننے

والوں کواس آز ماکش ہیں مبتلا نہ کر دے کہ حق و باطل کا انتیاز بھی ہم کھو ہیڑھ ہیں۔

نائی کزیات اسیدنا ابراہیم علیہ اتلام کے واقعات بیں اُس موقعہ پر جبکہ حضرت ابراہیم علیہ اتلام اور قوم کے بعض افراد کے ورمیان میلے کی شرکت سے لئے گفتگو ہور ہی تھی ۔ فران محیم نے حضرت ابراہیم مسکل پر فول مقل تحیا ہے :۔

فَقَالَ إِنَّ سَيْقِيدُ هُو وصافّات آيت عك)

اِلَّا ثَلُكَ كَذِي بَات الخ (بخارى جلد وصليه)

ملداؤل

بدایت سے جراغ

' تو وہی ہیں جن کا ذکر فرآن صحیم میں آجکاہے۔ تمیسری بات اپنی زوجہ مطہرہ سیدہ سارہ مو تو وہی ہیں جن کا ذکر فرآن صحیم میں آجکاہے۔ تمیسری بات اپنی زوجہ مطہرہ سیدہ سارہ سے تعلق سے جبکہ مصرکے طالم بادست او کے کارندوں نے حضرت ابراہیم علیہ السلام پوچھا تھا کہ بیغورت کون ہے ؟ سسیدنا ابراہیم علیہ التسلام نے فریا یا تھا کہ یہ ممیری بہن ہے۔ زبخاری ج سے صلا) تاب بررائلق :

، نیز بنجاری میں کتاب انتفسیر کے نہمن میں سورہ ببقرہ کی تنفسیراور اسی طرح کتاب التوحید میں مذکور ہے۔

کتاب التوحید . مَامِنْهَا کَذِبَتْ إِلَّامَاحَلَّ بِهَاعَنْ دِینِ اللّٰهِ د ابن کثیری

''سول کریم صلی التی علیہ ولم نے فرایا ابراہیم علیہ التلام کے اِن بینوں حبوث بیں سے ہرایک صرف التی تعالے کے دین کی حایت ویدا فعت ہی کیلئے بولا گیا ہے دجوصورۃ محبوٹ ہے حقیقتاً نہیں) اس وضاحت سے بعد نبی کریم صلی التی علیہ و لم نے اس موقعہ پر گذب سے مراد عام عنی نہیں گئے ہیں اور نہ گذب سے وہ عام عنی یہاں مراد ہوسکتے ہیں جو بول چال ہیں بیب اور گناہ شمار کیا جا تا ہے بلکہ اسکے عرکس یہ واضح کیا ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام جلداً ول مدابت تح حراغ

نے پر بینوں یا تیں نداینی زاتی اغراض کے لئے کہی ہیں اور نہ دُنیا وی مصلحت کے پیش نظر بلکه مخالفین حق سے مقابلہ میں خالص الٹیرتعاتے سے دین تی حمایت میں مہی ہیں۔ لہذاایک لمحہ کے لئے بھی اسمیں تروّد کی گنجائٹ نہیں کہ گذب حضرت ابراہیم علیہ الت لام ہے اسی طرح و ورہے جس طرح دن سے رات اور روشنی سے تاریجی ۔ یهی وجه ہے کہ قرآن صحیم نے حضرت ابراہیم علیہ الت لام کوان اِنتیازی صفات کے سابھ وکر کیا ہے ۔صدیق ، مجنبی ،مہدی ،نبی ، رسول ، صنیف ،جو 'نسرا یاصدق

وصفا" والے اوصات ہیں۔

علاوه ازیں مفسیرین کرام کی ایک جماعت اِن وا نعات کو توریه " کی تعل قرار ویتی ہے ۔ توریہ کامطلب بیہ ہے کہ الیا ڈومعنی لفظ بولاجائے جسکے ڈومعنی ہوں اور سننے والا اُسکے قریب اورمتبا درمعنی مراد لے لیکن تنکلم کی نیت اُسکے دوسرے معنی کی ہو۔ مثال سے طور پر آبی کریم صلی الٹرعلیہ ولم نے ایک موقعہ پرایک بوڑھی عورت سے فرما بإحقا ـ بوڑھی غورت جنات میں بنجائیگی ۔ ایصنتخرخا نون رونے گئی ۔ آپ نے ارتثاد فِرِأَيا : إِنَّا أَنْشَأْنًا هُنَّ إِنْشَاءً الله مطلب يه كه جنت تجبي جس كامجي وأخله بوكاجواني

كى حالت بيس بوگار (بوڙها كوني نه بوگا)

ظاہرے آپ کے ارمن و بوڑھی عورت جنت میں نہ جائیگی سے و ومعنی نظے اس برصیانے قریبی معنی سمجھالیکن نبی کریم صلی الله علیہ و کم نے اُسکے دوسرے معنی مراذ کئے بھے اس طرح اور بھی بہت سی مثالیں قرآن وحد لیٹ ہیں موجو دہیں ۔ توریہ' علم بدیع می ایک سم ہے جو کلام بیں نمررت اورشش پیدا کرنے سے لئے اِستعمال یا جا آہے۔ آب اس وضاحت سے بعد حضرت ابرا ہم علیہ التلام کے گذیات پر غور كيا جائے تو ان ميں سے ايك بھي حقيقي حجوظ نہيں صور قام حجوظ معلوم ہوتا ہے. سلے وا تعدیس مبیا کہ تفصیل آچکی ہے قوم سے لوگ اپنے کسی زمہی سیلے ہیں جارہے تھے حضرت ابراہیم علیہ التلام سے خاندان والوں نے اُن سے بھی جلنے کو ریندہ میں میں ملیہ التلام سے خاندان والوں نے اُن سے بھی جلنے کو بها اسپر حضرت ابراسبم عليه الستالام نے فَنظَرَ نَظُرَةً فِي النَّحِوْمِ فَقَالَ إِنَّ شُقِيمٍ ؟ اک نگاہ تاروں پر ڈائی اور کہا ہیں بیما رہوں ۔

آسمان کی طرن نگاہ اُمٹھانا ایک محاورہ ہے جب آدمی کسی بات برغورکرکے

جواب دینا چاہتا ہے اُس وقت فطری طور پر آسمان کی طرف ایک نگاہ اُٹھالیتا ہے مجرجواب دیتا ہے بس ایسے عمل کی یہ ہی حقیقت ہے بسکن مخاطب خاص طور پر جبکہ وہستارہ پرست آدمی ہواسکوئسی اور معنی میں سمجھا ہے۔ یہ اُسکی اپنی سمجھ ہے۔ دیجھنے والے کی غرض اس سے بالکل مختلف ہوتی ہے۔ کھرسقیم"کالفظ جہاں شدید بیمار پر اولاجا تا ہے۔ سبید نا ابرا سمجم علیہ است لام اُس وقت توزیادہ بیمار نہ ہوں لیک فلیست سے متاثر ہوں گے۔ اسی وجہ سے سقیم کے دوسر کے طبیعت کی کسلمندی یا خفیف علالت سے متاثر ہوں گے۔ اسی وجہ سے سقیم کے دوسر کے بیمار نہ جھوٹ بات بعید معنی مراد لیے لیکن قوم نے بہلا اور قریبی معنی مراد لیا ہے۔ اس طرح حجود بات نہ رہی ۔

دوسرا واقعہ جسمیں حضرت ابر اسم علیہ الت لام قوم کے مرکزی ثبت خانے ہیں داخل ہوگئے اور سارے بتوں کو توڑ دیا اور قوم نے جب پوچھاکہ آے ابر اہیم کیا تونے ہمارے بتوں کے ساتھ بہرکت کی ہوً؟ سبدنا ابر اسم علیہ الب لام نے جواب دیا :۔

سیدنا ابراہیم علیہ السلام نے جواب دیا :-قال کِلْ فَعَلَمُ کِیدُوْهُ مُرِهُ لَا فَسُعُلُوْهُ مُرْدِ ''کہا یہ سب کھوان کے اس بڑے سردارنے کیاہے. انہی

(کیکٹوٹھٹو) دان کے بڑے) کا اضارہ بُت کی طرف بھی ہوسکتاہے اورخود حضرت
ابرائیم علیہ الت ہام کی طرف بھی جو اُن سب کے بڑے ہیں ۔
اگر پہلی بات ہے تو یہ حضرت ابراہیم علیہ الت ام کی طرف سے اُن کے عقائم
پرایک طنزوا عزا ص کا ہم معنی ہے تعینی اگر ان کے نز دیک واقعی یہ خدا ہیں تو انہیں
اینے بڑے نمد اکے متعلق یہ ضبہ ہونا چا ہیئے کہ شاید بڑے حضرت اِن جھوٹے
حضرت ابرائیم علیہ الت پر بھڑگئے ہوں اور سب کا یہ حشر بنا دیا ہو۔ یا بھر بڑے حضرت
صفرت ابرائیم علیہ الت لام نے دوسرے معنی مراولیا اور
حضرت ابرائیم علیہ الت لام نے دوسرے معنی مراولیا اور

تنمیسرا وا تعه ظالم باد شاہ کے کارندوں سے اپنی بیوی حضرت سارہ رہ کے

بارے میں یہ کہنا کہ یہ میری بہن ہے۔ کوئی حجوثی بات نہیں ہوسکتی ۔ ایک عورت بہن بھی ہوا وربیوی بھی بہوابسامکن ہے ؟ ستیدہ سے ارفظ حضرت ابراہم علیہ است لام کی دہنی مہن تھی تضیں ، بیوی سے رشتہ ہے اسلامی اُنوت كارست نه ختم نهبين مهوجا تا . غلاوه ازي ابن كثيره اور دنگيرموُرْضين كي تحقيق ہے كہ حضر سارة حضرت ابراتهبم عليهاب لام سے جياحاران کی بيٹی مخيس اسلئے جيازا دبہن همی مخيس اس لحاظ سے بیوی کوبہن کہنا جھو طے بھی منہیں ۔ دبنی بہن ہونے کی صراحت خود بخاری ہ

كى نكوره روايت مين موجود ہے :-قَالَ يَا سَارَةٌ لَيْسَ عَلَے وَجْهِ الْكَرُضِ مُؤْمِنُ غَيْرِي وَغَيْرُكُ وَإِنَّ هِذَا سَأَلَئِي فَأَخَبُرُنَكُ أَنَّكِ أَخُتِي أَخُتِي مَا لَكِيْ فَأَخَبُرُنتُ أَنَّكِ أَخُتِي .

د بخاری جزر دا بع صل^ی امصر)

آے ساری اس وفت روئے زمین پرمیرے اور تمہارے سو اکوئی مومن نہیں اور اس ظالم نے تمہارے بارے ہیں یوجھا ہے ہیں نے اُسے بتایا ہے کہ تم میری بہن ہو!'' بہرجال یہ بنجاری مسلم کی دونوں روایات ہیں جو ہرتسم کے تقیم روایت سے پاک صاف ئى آگرچە يەروايات سىيدىلا برائېم عليەات لام جيے جليل القدر رسول كى جانب کزی تی نتیت تحرر ہی ہیں لیکن انہی روایات میں یہ روایت میں موجود ہے کہ نبی کریم

صلی النہ علیہ ولم نے اس موقعہ پر کذب سے وہ عام معنی مراد نہیں لئے جواخلاقی و دینی احول بين كناه محصے جاتے ہيں۔ مّنامِنهُمّا كيّن بَـيّا كے الفاظ موجود ہيں۔

أن بيں سے كوئى ايك بھى حجوث نہ تھا!"

درواه ابن ابی حاتم دابن کثیر، الغرض" ثلث كذبات" ہے مراد ایسا كلام جوشجیج اور پاک مقصد سیلئے بولا گیا ہو ليكن مُنغے والا اُس كا وہمطلب نه مجھے جومتنگم كى مراد ہے بلكہ إِن الفاظ كو اپنى د مہنى مراد سے مطابق سمجھے۔

إِنْ أُرِيْكُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا الْسَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيْقِى

قرآن ملیم کا ارت و ہے کہ حضرت ابراہیے علیہ الت لام اپنے والد کے ظلم سے ننگ آگر جب گھرسے نکلنے لگے تورخصت ہوتے ہوئے فرمایا تھا:۔ سَلَا مُرْعَلَيْكَ سَاسُتَغُفِدُ لَكَ مَ بِي أَنْ نَكَانَ بِي حَفِيًّا. "آب كوسلام ہے ميں آپ سے ہے كے اپنے رب سے بخشش كى وعاكرون كاوه مجھ پرمہت مہر بان ہے! اسی وعدیے کی بنا پرسسید نا ابر اہیم علیہ است لام حوعا ئے مغفرت یہ صرفِ اپنے ہاپ سے لئے کی بلکہ ایک ووسرے مقام پر بیان ہوا ہے کہ ماں اور باپ وونوں تھیلئے کی ہو۔ رَبِّنَا اغْفِرْ لِي كُورُلُوا لِلدَّى دَابِرَاسِمِ آيت علا) أثب رب میری اورمیرے والدین کی مغفرت فرما !" یلن بعد ہیں انھیں خو واحساس ہو گیا یا النگر کی وحی سے ذَرابعیمَعلوم ہواکہ باپ حق کا دسمن ہے چاہے و ہنبی کا باب ہی *حیول نہ*و دعائے مغفرت کا شخت نگہیں گئے۔ وَمَا كَانَ اسْنِغُفَارُ إِبْرَاهِ بُيْرَ لِأَبْتِي إِلَّا عَنْ مَّوْعُدُة وَّعَدَ هَا إِيَّا لَا فَكُمَّا تَبَيَّنَ لَنَ أَنَّنَا عَدُّوَّ لِللَّهِ تَبَرَّأُ مِنْكُ. د تو به آی<u>ت مهما</u>ا) آبراسيم عليدات لام كااب بإب كي لئے وعائے مغفرت كرنا محض اس وعدیے کی وجہ سے تھاجو انھوں نے اس سے کیا تھا بگرجب یہ بات اُن پر کھل گئی کہ وہ خدا کا دستن ہے تو ابراہیم زعلیہ اللام)

نے اُس نے اظہار بیزار کی کر دیا ؟

یہاں یہ بات اور سمجھ لینی چاہئے کہ (مشرک) اللّٰرکے باغیوں کے ساتھ جو ہمدروی منوع ہے وہ صرف ایسی ہمدر دی ہے جو دین سے معاملہ میں فعل انداز ہوتی ہو۔ البيته انسانئ ہمدر دى اور دنيوى متعلقات جيسے صلەرحمى ،كبين دين ،رحمت وشفقت كا برتاؤ تو یمنوع نہیں ہے بلکرپندیدہ عمل ہے۔ رشتہ دارخوا ہ کا فرہویا مومن اُ سکے دنیوی حقوق صروراً دا کئے جائیں سے مصیبت زوہ انسان کی مہرحال ہمدر دی

کی جائے گئی ۔ حاجت مندآ دمی کو بہرحال سہارا دیا جائے گا۔ بیمار اورزحمی سے سے انقر ہمدر دی علاج معالجہ میں کوئی کسرا مٹھا یہ رکھی جائے گئی۔ تیم کے سر پر یقیناً شفقت كا باعقد كها جائے كاراس قسم كے معاملات ميں ہركزيدانتياز كذبر تاجا بھے گا كہ كون

مشرکوں اور کا فزوں کے لئے جس ڈعا کی ممانعت ہے وہ آخرت کی معافی و نجات ہے تعلق ہے کہ ان گے لئے مغفرت یا نجات کی ڈعاکر ناسخت ترین جُمرم ہے اللّٰہ تِعالیے کو یہ بات قطعاً گوارہ نہیں کہ مشرک کے لئے زندگی ہیں یا بعدمِ وتِ مغفرت

كى دُعا كى جائے بيونكہ اللہ تعالے نے بيطعی فيصله كر ليا ہے كہ جو لوگ سٹرک كی حالت یر فوت ہوجاتے ہیں وہ کسی تھی قیمت معان نہیں گئے جائیں گے۔

زر ان میمنی به وضاحت اس آیت میں ملنی ہے:-فرآن میمنی به وضاحت اس آیت میں ملنی ہے:-إِنَّ اللَّهَ لَا يَغُفِرُ أَنُ يَتُشُرَكَ بِهِ وَيَغُفِرُمَا

ذُ لِلْكَ لِمَنْ يَكْنَاءُ الآية

''بیٹک الٹرمعان نہ کرمیگا شرک کرنے والوں کو اور اسکے علاوہ جاہے تومعان کر دےجسکو میاہے "

إِنَّا مَنْ يُشُرِكُ مَا لِيْنِ فَقَلُ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْ إِلَّيْ الْجُنَّةَ "برحقیقت ہے کہ جس نے نثرک کیا اُس پر الٹرنے جنّت

حرام کردی ہے ۔"

بیدنا ا براہیم علیہ است لام سے تذکر ہے ہیں یہ جو بیان تحیا می کرجی رات طاری ہوئی تو انتفوں نے ایک تارا دیجهاا ورجب وه و و پی تنها تو کها کرین و و بنے والوں کوالٹرنہیں سمجھتا۔ بجرجاند دبجها اورجب وهمجي ووب محياتويه بي فيصله نحيا ، مجرسورج ديجها اورجب وہ بھی دوب گیاتو فرمایا کہ اے قوم میں ہراس معبود سے بری ہوں جس کی تم عبادت كرتے ہو۔ مجرالتروا مركی حقیقت كو پہچان لیا۔ اس واقعہ پر ایک عام شخص کویت بست بہونا ہے کہ کیا بچین سے آبھ

ہدا ت بدات سے جراغ

محھو تتے ہی روز آنہ حضرت ابراہیم علیہ است لام پر رات طاری نہ ہوتی رہی تھی ؟اور کیا وہ ہرروز چاند، تاروں ،سورج کو طلوع وغروب ہوتے نہ دیکھنے بھے ؟ مجھریہ قصہ اس طرح تحیوں بیان تحیاگیا ؟ گویا اس کا مطلب بہ ہواکہ اسس

مجھریہ فصہ اس طرح کیوں بیان خیالیا ہو تا اس کا مصلب واقعہ سے پہلے اسمنیں اِن چیزوں کے دیجھنے کا اتفاق ہی نہ ہوا تھا ؟

بھر ہوا۔ بالکل صاف ہے اس سے لئے پہلے بطور مثال میشہور بات ذہن

ں کے ایجے :-نیوطن دمشہورلسفی) کے بارے میں یہ بات عام ہے کہ اُس نے باغ میں ایک سے میں میں میں میں اور کے اور کے میں ایک مارین

سیب کو درخت سے گرتے دیجھا اور اُس سے اُس کا ذہن اجا نک اس سوال کی طرف متوجہ ہوگیا کہ اسٹ بارآخر زمین پر ہی کیوں گرا کرتی ہیں ؟ تورکروہ اُوپر کیون ہیں جوز

يهان بك و وغور كرتے كرتے "قانون جذب وشش" كى حقیقت بك پہنچ گیا۔

سوال یہ بیدا ہو تاہے کہ کیا اس واقعہ سے بہلے نیوٹن نے کہفی کو ٹی جیسے ز

زمین برگر تے نہیں تنجیمی تھی ؟ جواب طاہرے بار ہا دکھی ہوگی ! مجرکیا وجہ ہے کہ اُسی خاص تاریخ کوسیب گرنے سے مِشاہدے سے نیوفن سے زہن میں وہ حرکت بیدا ہوئی جواس سے پہلے روزم ّرہ

کے ایسے بینکڑوں مثاہرات سے نہ ہوئی تھی ؟ اس کاجواب یہ ہی ہے کہ غور وفیکر کرنے والا ذہن ہمیشہ ایک طرح سے

ا مناہرات سے ایک ہی طرح مثا تر نہیں ہوا کرتا۔ مناہرات سے ایک ہی طرح مثا تر نہیں ہوا کرتا۔

بار ہا ایسا ہوتا ہے کہ آدمی آیک چیز کو ہمیشہ دیجھتارہتا ہے اوراُس کے ذہن میں میں کوئی حرکت پیدا نہیں ہوتی گرایک وقت اُسی چیز کو دیچھ کر بھایک ذہن میں ایک کھٹک پیدا ہوجا تی ہے جس سے فکر کی قویم ایک خاص صنمون کی طرف کام کرنے آگئی ہیں ۔ یا پہلے سے سی سوال کی تحقیق میں ذہن اُنچھ رہا ہوتا ہے اور برکا یک روز مرہ ہی سے من ایک چیز پرنظر بڑتے ہی تحقی کا وہ سرا ہا تھ لگ جا تا ہم جس سے ساری انجھنی سے میں ایک چیز پرنظر بڑتے ہی تحقی کا وہ سرا ہا تھ لگ جا تا ہم جس سے ساری انجھنی سے میں جاتی ہیں ۔

بسلط می این بین بین بین بین بین بین بین بین این این بین این بین آیا بهوگا تقریباً ایساسی نجومعا ماحصرت ابراسم علیه استلام کے ساتھ مین آیا بهوگا جبکه و ه کفرا ورینزک سے عام ماحول میں اپنی نٹرک بیزار فطرت کموانس ماحول سی علیجدہ مبلدادل

بدایت کے چراغ

سر یینے کے لئے ایک دات چاند، ستاروں کا سہارالیا اورغور کرتے کرتے بالآخسر "توحیدالا" کی مرکزی حقیقت تک بہنچ گئے۔ حالانحہ را بیں روز آتی تقییں، چاند، سورج ستارے سب ہی ہردات دن ڈو بتے اُنجر تے رہنے مقے بسکن وہ ایک خاص دن مقاجب ایک تارے سے مشاہب کے ذہن کو اُس راہ پر ڈال دیا اور الٹرتو کی توفیق نے اُن کے ذہن کو اُس راہ پر ڈال دیا اور الٹرتو کی توفیق نے اُن کے ذہن کو اُس راہ پر ڈال دیا اور الٹرتو کی توفیق نے اُن کے دہن کو اُس راہ پر ڈال دیا اور الٹرتو کی توفیق نے اُن کے دہن کو اُس دا ہے کہ بہنجادیا۔

سورہ انعام کی آیت عظ میں حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بارے میں اسی طرح کہا گیاہہ:-''ور ایسے ہی ہم ابراہیم کوزمین وآسمانوں کانظام ''سربہ تا میں اس سے میں تا مقاس

سلطنت دکھاتے تھے ۔اوراس کئے دکھاتے تھے کہ وہ کامل بقین کرنے والوں میں سے ہوجاً میں ''

د انعام آیت <u>مهه</u>)

یعنی جس طرح عام انسانوں کے سامنے آٹار کا تنات نمایاں ہیں، اور السّر کی نشانیاں دکھلائی جاتی رہتی ہیں اسی طرح حضرت ابراہیم علیہ استلام سے سامنے بھی یہی آٹار تھی اور یہی نشانیاں تقییں مگڑ عام لوگ اصفیں دکھنے سے باوجو دھی اندھوں کی طرح کچے نہیں دکھنے اور حضرت ابراہیم علیہ السّلام نے اسفیں آنکھیں کھول کر دیکھا۔ یہی چاند، سورج، دکھنے اور حضرت ابراہیم علیہ السّلام نے اسفیں آنکھیں عام انسان کی نسگاہ میں کوئی اہمیہ سے نہیں رکھتے ہیں عام انسان دابراہیم) نے دیکھا تو انہی نشانات سے وہ حقیقت مک بہنچ گئے۔

و و گوگوگ بات اسیدنا ابراسیم علیه استلام اینے بت ساز باپ کواس طسرح مخاطب کرتے ہیں :-مخاطب کرتے ہیں :-اُبراسیم کا واقعہ یا د کروجبکہ اُس نے اپنے باپ آزرہے کہا مفاکیا تو بتوں کو خدا بنا تا ہے ؟ میں تو تھے اور تیری قوم کو کھئی گمراہی میں یانا ہوں ۔ دانعام آیت میں حضرت ابراہم علیہ استام کا اتنا گھل کرصاف صاف کہ دینا کیا تا گئی ہیدا
کیا ہوگا ؟ اور اُسکے نتائج وعواقب سے مس طرح دوچار ہونا پڑا ہوگا ؟
اس جرات و بیبائی پر باپ اور قوم کا جوش وخروش کس طرح ہیج وخم کھا یا ہوگا ؟
اس کا کچھا ندازہ بالکل ایسا ہی ہوگا جیسے کوئی سنسیخ عبدالفادر جیلانی پسنے معتقد وں اور
قادری النسب پیرزادوں کے سامنے حضرت نیخ ہی اسل تعلیمات اور اُن کی زندگی کے
واقعات پیش کر سے یہ کہہ دے کہ جن بزرگ کے تم نام لیوا ہو، تمہار اا بنا طریقہ اِ بھے
بالکل خلاف ہے ۔ اور تم نے آج ان ہی گھراہ لوگوں کی روشش اختیار کرلی ہے جن کے
خلاف تمہارے مقتدا نے تمام عمر جہاد کیا ہے۔ اسی طرح سید نا ابر اسمیم علیہ السّلام

المرضى تعلُّب راسورة شعرار آیت منف تاعملان کامضمون پیشِ نظریت :-وَأَذُ لِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ اللهُ

اس دوزجنت پر مهرگاروں کے قریب نے آئی جائے گی اوران اور دوزخ بہتے ہوئے لوگوں سے سامنے کھول دی جائے گی اوران سے پوچیا جائے گاکہ اب کہاں ہیں وہ جن کی تم النّرکوچیوا کرعیادت کرتے بعضے ہی یا وہ تہاری کچھ مدد کررہے ہیں یاخود اپنا بجاؤ کرسکے ہیں ہمجیروہ معبود اور یہ بہتے ہوئے لوگ اور ابلیس کے نشکرسب سے اس دوزخ میں او پرتلے وصحیل دیئے جائیں گے۔ وہاں بیسب اس دوزخ میں او پرتلے وصحیل دیئے جائیں گے۔ وہاں بیسب آپ میں جھگڑیں گے اور یہ بہتے ہوئے لوگ داپنے اپنے بینے وامقد السب اس حجم ہوئے کوگ داپنے اپنے بینے وامقد السب کی برابری کا درجہ دے رہے تھے۔ اور وہ مجرم کوگ ہی دہتے جمعوں نے ہم کو اس گراہی میں ڈالا۔ اب نہماراکوئی سفارشی ہے اور نہ کوئی جگڑی دوست۔ کاش ہمیں ایک دفعہ مجر طبطنے کا موقع ہم اور نہ کوئی جگڑی دوست۔ کاش ہمیں ایک دفعہ مجر طبطنے کا موقع مل جائے توہم مومن ہوں "

یہ بیروی کرنے والے معتقدین کی طرف سے اُن لوگوں کی تواضع ہورہی ہوگی جنہیں

یہی لوگ دنیا میں اینا بزرگ ، بیشوا اور رہنما مانتے رہے مقے ،جن کیے ہاتھ یا وُ ں جُوُمے جاتے تھے، جن کے قول عمل کوسندما نا جاتا تھا، جن کے حضور نذرین گزرانی جاتی تقبیں ،جوخو دمھی گمراہ تھے اور دوسروں کومھی گمراہ کرگئے۔ آخرت ہیں جاگرجیب حقیقت تصلے کی اور پیچھے جَلنے والوں کومعلوم ہوجائے گاگرآگے چلنے وَ الْحِیْخُور کہاں آئے ہیں اور ہمیں کہاں کے آئے ہیں تو یہی معتقدین اِن کو گمراہ ومجرم مظیراً ہیں گئے اوران پرلعنتیں جیجین کے قرآن حکیم ہیں جگہ جگہ عالم آخرت کا یہ عبرت کا کمنے خشہ " تھینجا گیا ہے تاکہ انظی تقلید کرئے والے دنیا ہیں آنکھیں تھولیں اورکسی کے بیچھے طیخ سے جیلتے دیجھ لیں کہ وہ چھیک بھی جارے ہیں یانہیں۔ سورهُ اعراف مِين فرما يأكبيا :-كُلّمَا دَخَلَتُ أُمَّتُ لَكَنَتُ أُخْتَهَا الح

د اعراف آیت عث ت

"ہرگروہ جبجہنم میں داخل ہوگا توانے ساتھ کے گروہ پر ں ان جائے گا یہاں تک موجب سب و ہاں جمع ہوجائیں گے تو ہربعدوالا گروہ پہلے گروہ کے متعلق تھے گاکہ اے ہمارے رب یہ ہیں وہ لوگ جنھوں نے ہمیں گمراہ کیا تھا،اب اُمضیں آگ کا دوہرا عذاب دے ۔ السّٰر فرمائیکاسب ہی کے لئے دو ہرا عذاب ہے مگر تم جانتے نہیں ہو۔

ور ہ حمّ انسجدہ ہیں اس طرح ارث او ہے:۔ وَقَالَ الَّذِي يُنَ كَفَرُوا مَرَبَّنَا آدِ نَا الَّذَيْنِ أَضَلْنَا الْحَ د آیت ملایا)

''ور کا فراس و تت کہیں گئے کہ اے ہمارے بیرور د گاران جِنوں اور انسانوں کو ہمارے سامنے لائیےجنھوں نے ہمیں گمراہ کیا تمتا تاكه ہم ُ انھیں یا وُں تلے روند ڈوالیں تاكہ وہ بست و ذلیل ہوكر ہمں'' اور بہی مضمون سورة احزاب بیس اس طرح ندکورے :-وَ قَالُوا رَبِّنَا إِنَّا أَطَعُنَا سَادَ تَنَا الْحِ (آيت عند عند)

آور وہ کہینگے اے ہمارے ربہم نے اپنے سرداروں و ٹروں کی اطاعت کی اور اُمھوں نے ہم کوسید ھے را ستے سے مجھٹکا دیا ۔ اے ہمارے رب اُن کو دُوگنا عذاب دے اور اُن پر سخت لعنت کر''

سورة ابراسيم بب اس طرح مُدكورت: وَبَوَدُوْ اللهِ جَدِينِيًّا فَقَالَ الضَّعَفْوُ الحَ

(ا براہیم آیت علا)

اُور یہ لوگ جب سب کے سب اللّٰہ کے حضور پین ہونگے

تواس وقت اُن بیں سے جو دنیا میں کمزور تھے وہ اُن لوگوں سے جو

بڑے بنے ہوئے تھے کہیں گے دنیا ہیں ہم نہارے تابع عظاب
کیا نم اللّٰہ کے عذاب سے ہم کو بچانے کے لئے بھی کچھ کہ سکتے ہو؟

وہ جواب دیں گے اگر اللّٰہ نے ہمیں بخات کی کوئی راہ
دکھائی ہوتی تو ہم ضرور تہہیں بھی دکھا ویتے ۔اب تو کیاں ہے خواہ
ہم جَزَعُ فَرَعُ کریں یاصبر، بہرطال ہمارے بچنے کی کوئی صورت نہیں "
سورہ سبا ہیں اس طرح بیان کیا گیا:۔
وگوئی آئی یا ذا لظلیا ہوئی مؤفوفون عِندگ کہ ہے۔ ا

رآیت ماس، مستا، مستا)

کاش تم دیجوان کا حال اُس وقت جب یہ ظالم اسپے
رب سے حضور کھڑے ہوں گے۔ اُس وقت بہایک دوسرے برالزام
دھریں گے۔جولوگ دنیا میں دباکر رکھے گئے تھے وہ بڑے بننے
والوں سے کہیں گئے کہ اگر تم نہ ہوتے توہم مُومن ہوتے۔ وہ بڑے
بننے والے إِن دیے ہوئے لوگوں کوجواب دیں سے ،کیا ہم نے تہہیں
اُس ہدایت سے روکا تھا جو تمہارے پاس آئی تھی بجنہیں! بلکہ تم
خود مجرم تھے۔ وہ دیے ہوئے لوگ اِن بڑے بنے والوں سے کہیں گئے
نہیں بلکہ تمہاری رات دن کی تدبیروں نے روکا تھا۔ جب تم ہم کو

برایت میراغ

برائ فرائش کرتے رہتے تھے کہ ہم الترکے ساتھ کفرکریں اور اُسکے لئے شریب قرار دیں اور وہ لوگ بیٹ ہمانی کو مخفی رکھینگے جبکہ عذاب وسمیں گے۔ اور ہم اُن منکروں کے گلوں میں طوق ڈال دیں گے۔ کیا لوگوں کو اسکے سواا ورکوئی بدلہ دیا جاسک ہے کہ جیسے اعمال اُسکے مختے وسی ہی جزا وہ پائیں ہے۔ وہ میں در میں جود دیں ہے۔

مخے ولیں ہی جزاوہ پانیں ؟ اِذْ تَابِرًا لَیْنِ یُنَ البِعُوامِنَ الَّذِیْنَ البَعُوا الح اِذْ تَابِرًا لَیْنِ یُنَ البِعُوامِنَ اللّٰهِ یُنَ البِعُوامِنَ اللّٰهِ یُنَ البَعُوا الح

"اس وقت کیفیت یہ ہوگی کہ وہی پیشوااور رہنماجی دنیا ہیں پیروی کی گئی تھی، اپنے پیروی کرنے والوں سے بے علقی ظاہر کریں گے اور اُن کے رہیں گئے۔ اور اُن کے رہیں گئے۔ اور اُن کے رارے اسباور وسائل ٹوٹ جائیں گے۔ اور وہ لوگ جو دنیا میں اُن کی پیروی کرتے ہتے تھیں گئے کاش ہم کو ایک موقعہ دیاجا یا میں اُن کی پیروی کرتے ہتے تھیں گئے کاش ہم کو ایک موقعہ دیاجا یا توجس طرح آج یہ ہم سے بیزاری ظاہر کرر سے ہیں ہم اُن سے بیزار ہوگر دکھا ہیں گئے۔ یوں النّران لوگوں کے وہ اعمال جو یہ دنیا میں ہوکر دکھا ہیں گئے۔ یوں النّران لوگوں کے وہ اعمال جو یہ دنیا میں کرر ہے ہیں ان کے سامنے اس طرح لائے گا کہ یہ حسرتوں اور پشیانیو کر رہے ہیں ان کے سامنے اس طرح لائے گا کہ یہ حسرتوں اور پشیانیو کے سامنے ہاتھ ملتے رہیں گئے۔ اُن کے سامنے ہی کوئی راہ نہ پائیں گئے۔ کے سامنے ہاتھ ملتے رہیں گئے۔ گئے سے سامنے ہی کوئی راہ نہ پائیں گئے۔ کے سامنے ہاتھ ملتے رہیں گئے مگڑ آگ سے سمانے کی کوئی راہ نہ پائیں گئے۔ کے سامنے ہاتھ ملتے رہیں گئے مگڑ آگ سے سمانے کی کوئی راہ نہ پائیں گئے۔

کے ماتھ ہمھ سے رہائے کے سرائی کے سرائی کے دور کے دور کے دور اور ان کے مذکورہ بالاآیات ہیں خاص طور پر گمراہ کرنے والے رہنماؤں اور کیڈروں اور ان کے نادان پیروی کرنے والوں کا انجام اس کئے ذکر کیا گیا ہے کہ جب غلطی ہیں مبتلا ہوکر کا دان پیروی کرنے والوں کا انجام اس سے مسلمان ہوست یار رہیں اور رہبروں اور رہزنوں ہیں بحیلی امتیں مجھی امتیاط رہیں۔ انتہاز سیھیں اور غلط پیروی کرنے والوں سے احتیاط رہیں۔

علم ومقین کی ایک علامت روشنی میں قائم کرلیتا ہے اور وہ عقیدہ اسکے قلب میں جاگزیں ہوجا تا ہے اور اسکی روح میں بیوست تو ایسے شخص کا نکر وخیال، طور وطرافیہ اس درجه زبر دست اور ثابت وراسخ ہوجا تا ہے کہ کا نتات کا کوئی حادثہ، دنیا کی کوئی سخت سے سخت مصیبت بھی اُسکو اس عقیدے سے نہیں ہے گئی وہ اس کے لئے آگ ہیں بےخطر کودیٹر تاہے ، تختۂ دارپر بےخوٹ چڑھ جا تاہے ، دہتمنوں کے ہجوم میں اپنے آپ کو تنہا مہیں سمجھا۔ ستیڈنا ابراہیم غلیبانت لام کونمرود کی عدالت نے آگ ہیں ڈ الدینے کا فیصلہ کیا حضرت ابراہیم علیہ اٹ لام سے عزم و نیات میں کوئی فرق پیدا نہوا۔ بے دھوک عمود بڑا آئشِ نمرو دہیں عشق علم ومقین کے اُس گھرے عقیدے نے آگ کو باغ و بہار کر دیا. آج مجنی ہوجو براہیم سا ایماں پیدا آگ کرسختی ہے اندازِ گلتاں ببیرا ملوك الرائب لم كے ماں باب مشرك وكا فرہوں اور وہس طرح مشرک سے بازنہ آتے ہوں تواُن کی مشرکانہ زندگی سے بیزار وعلیجدہ رہنتے ہو ئے بھی اُن کے سائفرمعا ملات اورشن سلوک ہیں توسی ک ختی یازیا د تی روانهبی تمجمی کئی۔ سسيدنا ابراميم عليهانت لام كااينے باب آزر کے ساتھ اوب واخلاق كامعالم كُرْسَتْ تصفحات بين آجِكائے. باپ كي وهمكي أورختي كاجواب سَلاَ هُزَّعَلَيْكَ كَهِ كرديا. خودنبي كريم ملى النترعلية ولم كاطريق عمل البين محسن چيا خواجه ابوطالب كے سساتھ اس مسئله في طلعيٰ شهادت ہے دسترخوان کی وسعتِ وکشادگی اگر ریا و نام ونمود سے پاک ہوا ور طری تنقاصے سے پیش نظرمہماں نوازی ہیں 'وسعتِ قلب اور بلند حوصلی یا نی جاتی ہوتو یہ بات اخلاق کریمایہ میں قابلے سین شماری جاتی ہے اسک سُخارِ مُفَسُ " اورٌ جِرِ دو کرم " کے نام سے موسوم کیا جا تاہے۔ يه وصف محرامي سيدنا الراسيم عليه التلام ي حقيقت مفس بن چيکا تف،

مهمان نوازی، دسترخوان کی وسعت ،آنے والوں کا الحرام ایسے اوصاف سنقے جو

ہرایت کے جراع

تيدنا ابراسم عليه السّلام مُي مَثُلُ الْاعْلَىٰ "كي حدّتك بهنج كُے منظے . تاريخ كي معض كتا بول بين ايك عجيب واقعه منقول سيح كهتيج بين كه ايك مرته حسب دستور حصرت ابراہیم علیہ ات لام تحسی مہمان کے انتظار بین کھڑے تھے، کیونح بغيرمهمان ندأن كادسترخوان لجيتا مقاإورنه وة تنهامها ننه مظه سامنے آیک مہرت بورها اومي نظر براجبكي تمرجبي تمان هوكئي مقى اور لكثرى بيے سهار بے بنتكل مبل رہا تھا حضرت ابراہم عُلیہ اتلام آگے بڑھے اورمسترت سے سابھ اُسکو شہارا دیمرگھرلائنے۔ دسترخوَان بجها يا اور معبت وبيار سے أسے خوب كھلا يا جب كھانے سے فارغ ہو گئے تو حضرت ابراہم علیہ التلام نے فرما یا اُس الٹروا حد کاسٹ کرا واکرجس نے ہم سب کو بیہ معتیں دیں ہیں۔ بوڑھے مہمان نے غصے میں کہا میں نہیں جانتا کہ تیرا اللہ واحد کون ہج؟ یں تواہے معبود کا سکرا داکرتا ہوں جومیرے تھھ میں موجو دہے۔ یہ جواب حضرت ابراہیم علیہ ات لام پرمہت ثناق گزرا اوراُسکو اپنے گھ ہے فوراً رخصت محرد یا لیکن کچھ دیر نہ ہوئی کہ حضرت ابراہیم علیہ الت لام کے دل پر اپنے اس طرز عمل كا شدت ہے احساس ہوا۔ خیال آیا كرتب اللّه واحد كائے رأیس اس بوڑ تھے سے کر وانا چاہتا بھا اُسکی شان تو یہ ہے کہ اُس نے اس بوڑھے کی اس طویل عمر کے۔ اپنی عمتیں برقرار رکھیں اور اُسکی بُت بیت و کفروشرک سے نارائن ہوکر ایک وقبَّت بھی اُس پرانے رزق کا دروازہ بندنہنیں کیا۔ بھیر مجھکو کیاحق تھاکہ اگراس نے میری بات بنرمانی اور کلمهٔ حق کوقبول نهرکیا تومین اسکو تھے سے زخصت کردوں ؟ اس حقیقت کیند احساس نے بے جین کر دیا اور اسکی تلاش میں خور گھرسے نکل بڑے اور اسکو پاکر ندامت ومعذرت بيش كي اوراكرام سے ساتھ مجرانے گھرلے آئے دخماجا تاہے كہ وہ فہمان فرشته تحاجواز مائش محطور 'برستيدنا ابرا بنيم عليه التلام مح محقراً يا تحا) بہرحال یہ واقعہ تاریخی حیثیت سے قابل قبول ہویا نہ ہولیکن اس حقیقت کا ضرور اعلان كرتاب كحضرت ابرامهم عليه التلام سحاخلا قِ كرِيما نه كى وه بكندى جو مثل الاعلىٰ يك مينجي بهوني تحقَى ضرب المتشكَّل ا ورزبانُ ز د خلائقَ بنَّ تَحْتُى -

طروں کا بجین اللہ تعالے جن ہتیوں کو اپنیام ورسالت کے لئے جُن لیتا م

ہرایت کے چراغ فیل

اُن کے فلب و دماغ کواپنے نورسے اس درجہ روشن کر دیاہے کہ ان سے یا سنے حق وصدافت سے ماسواکوئی اور چیز باتی نہیں رہتی ۔ اُن میں ابتدائی عمر ہی سے یہ استعدا د وصلاحیت پر ورش پاتی ہے ۔ وہ اپنے بچین ہی میں اپنے ہم عمروں میں ممتازاد رستعدا د وصلاحیت پر ورش پاتی ہے ۔ وہ اپنے بچین ہی میں اپنے ہم عمروں میں ممتازاد رستا بال نظراتے ہیں ۔ را وحق میں ابتلارا وراز رائشن کوخوشی سے سہنا ہے مورضا کا اسوش میں بیشن کرنا انکی فطرت بن جا تاہے۔

پیش کرنا آئی فطرت بن جا تاہے. سید نااسمعیل علیہ ات لام کا تم عمری بیں ذیج سے لئے آماد ہ ہوجا نااسس حقیقت کاسٹ اہر عدل اور باعث صدم زارعبرت وعظمت ہے۔

نَذِكُولَا ذَبِيجُ اللّهِ سَيْرُ السِّمُ عَمُّ عِمْ اللَّسِولِ أَسْمُ عِمْ اللَّسِولِ أَسْمُ سَيْرُ السِّمِ عَلَى اللَّسِولِ أَلْمَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اور-تعديم كِعديدُ

وگرولاوت فرکرولاوت فرکرولاوت کے بیان کردہ واقعات ہیں یا بھر تاریخی روایات ، تورات کے بیان کردہ واقعات ہیں یا بھر تاریخی روایات ، اکثر مؤرفین نے ولادت کی تفصیلات انہی ذرائع سے حاصل کی ہیں ،البت ، سورۂ صافات ہیں یہ وضاحت ملتی ہے کہ جب نمرود نے سیدنا ا براہیم علیہ الت الام کوآگ میں ڈولوادیا تھا اور الٹر تعالیے نے اُسٹی اس تدبیر کو ناکام کر کے ان کو صحیح وسالم ارادہ کرلیا اور چلتے وقت اپنے دب سے وُعا مانگی ، ارادہ کرلیا اور چلتے وقت اپنے دب سے وُعا مانگی ،

"اللی مجھے بیب وصالح لوکاعطافرما!" (صافات آیت عظا) اس دُعا پر اللہ تعالیے نے انتھیں ایک "برد بار لڑکے کی

بنارت دی " دصافات آیت ملا اس لڑکے سے مراد حضرت اسمعیل علیہ الت لام ہیں جیسا کہ تفصیل آگے آرہی ہے۔ تورات اور دیگر تاریخی کتب میں اُنکی ولادت کا تذکرہ اس طرح ملتا ہے:-'خضرت ابراہیم علیہ الت لام کی عمر منٹریف اسٹی سال سے اوپر ہو حکی تھی لیکن گو داولا دسے خالی تھی۔ ایک غلام کوفا نہ زاد بنالیا تھا جسکے ساتھ اولا د جیسا معاملہ کیا کرتے تھے۔ اسوقت حضرت ابراہیم علیہ الت لام کی دو بیویاں تھیں۔ بڑی بیوی کا نام سیدہ سارہ (عراقیہ)

اور حچوٹی کا نام سـتیدہ ہاجرہ رمصریہ) ستیدہ سارتھ اپنی عمرطبعی کو پہنچ چلیں تھیں اس کئے اولاو سے نہونے سے بےجین رہا کرتی تھیں۔ أيك دفعه انخول نے حضرت ابراہم علیہ الت لام سے عرض كياكيا بمارك تحركوني اولا دنه بوگى ؟ اوركيا بيهي خانه زاد بهارا وارٹ ہوگا ؟ آئے الٹرتعالے سے کیوں نہیں دُعا فرماتے ؟ حضرت ابراسم عليه التلام نے وُعاکی ، اکٹرنعالے نے فرشتے کے ذرایعہ پیخوشخبری بہنیانی کەعنقریب تم کو ایک لڑاکا ہوگاجس كانام المنعيل ركهنا الجهوع صه بعدحضرت باجرة يراميد بيوكمنس احضرت سارةً كوجب اس كاعلم ہوا توانہیں بہ تمقاضا ئے بینٹریت حضرت ہاجرً ہے رشک بیدا ہوگیا۔ ہانت بڑھتی تھئ ۔ آخرحضرت ہاجرہ جسے رعب ہے پیداہوئی حضرت ہاجرہ مجبورہوکر ایک د فعہ گھرسے در ورمآی گئیں درمیا راہ فرشتے سے ہمکلامی ہوئی ، فرشتے نے خوشخبری دی اوٹسٹی کے کلمات کچے،حضرت ہاجرہ اپنے گھروالیں آگئیں،مچروقت مقررہ پر بشارت کے مطابق لڑکا بیدا ہواا ور آئس کا نام آشعیل رکھا گیا۔ اسمعیل اسمّع " اور ایل " د و لفظون سے مرکب ہے عبرانی زبان ہیں اُلیل " کے معنی الترکے ہیں اور عربی میں اِسْمَع محصفی ہیں آ چونکہ اسمعیل علیہ الت لام کی ولادت سے بارے میں الب^{ار} نے حضرت ابراہیم علیہ ات لام کی ڈعاشن کی اورحضرت ہاجرہ کو فرشتی سے بشارت ملی اس کئے ان کا یہ نام رکھ دیا گیا۔عبرانی میں اسکا تلفظ 'شماع إبل"ہے۔ شماع سے *عبرا*نی ملعنی میں شن سے ہیں ۔''

کا تعارف ٰاس طرح محروا یاہے:۔ وَاذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِسْلَعِيْلَ إِتَّ فِي كَانَ صَادِ قَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولُا

سيدنا اسمعيل عليه السلام قرآن عليم نحضرت المعيل علالتلام اورقب رآن تحكيم

"ورآپ اس کتاب د قرآن ؛ بین اسمعیل کا ذکر کیمیے. بیشک وہ وعدہ کے بڑے سیتے اور الٹرکے نبی اور رسول محقے ۔اور وہ کم کرتے منظ اپنے گھروالوں تونماز اور زکوٰۃ ا داکرنے کا اور وہ اپنے رب سمے معیل علیہ استلام کا وکرخیز نذکرہ ستیدنا ابراہیم خلیل الٹرعلیہ الشلام کے قرآن محكمه كي مندرجه ذبل سورتوں ميں موجود ہے ہے

واجری غایر فیری زرج جیسا که اویربیان کیا گیاستیده باجرهٔ کے بطن سے حضرت المنقيل كاپيدا ہوجانات تيدہ سَارُ اُ كے لئے باعثِ رشک تھا اور شدہ شدہ بیعالت رنجش کے مدو دیں آگئی ۔ سیدہ سارہ کا اعرار تخاكه باجرة كومجه سے دوركر دياجائے۔ان سے ساتھ قبام كرناميرے لئے تكليف وہ ہو گیا ہے۔ (فصص الانبیا فیابن کثیرہ) حضرت ابراسم عليه استبلام كي افهام ففهم اس نه ہوئی اور سیکسلہ بڑھتا ہی رہا۔ سبید الابراہیم علیہ التسلام کوسیدہ ساز گا کا یہ اصرار یہ ہوں اور بیا سے برطان کی کہ ہو جوعلیم حکیم مجس ہے سے سیدنا ابرانہیم علیہ انسان مو بیجد ناگوار تھا منگرالند تعالیے نے جوعلیم حکیم مجس ہے سے سیدنا ابرانہیم علیہ انسان مو

جلداول

اسوقت سسيدنا اسمعيل عليه التسلام شيرخوا ربجترين تحقح اورسبيرنا اسلخقء انجبی پیدا نبہوئے محقے۔ اگر جبر تورات اور بعض تاریخی محتب کی صراحت کے مطابق ستیدنا اسحٰق پیدا ہو تھے تھے۔ نیکن کتاب بخاری اوربعض دیگر کتب تاریخ میں

بخاری بیں خضرت عبد النٹر بن عباس شے تیفصیلی روایت ملتی ہے :۔ يحضرت إبراسيم عليه التبلام اينه شيرخوار بيخيج المعيل اور بیوی ستیرہ ہا جرق کولیکر اپنے وطن سے جلے اور جہاں آج خاندُ کعبہ ہے اُس جگہ ایک بڑے درخت کے نیچے زمزم سے موجودہ مقام سی بالا ٹی جصے بر اُن کوجیوڑ گئے۔ یہ جگہ اُس وقت غیر آبادا ور دیران تحقى بياني كالمجي دُور دُوريك كوني نشان بنه نظاءاس ليّرسيدنا ا براہنم علیہ التلام نے ایک مٹ کیڑہ یانی اور ختیلی کھجور تھی اُنکے یاس رکھ دیا اور بیٹھ کھیرکر دوانہ ہوگئے بستیدہ ہاجرہ اُن کے بیجی پیچے پر کہتی تہوئی چلیں اے ابراہتم ہم کو اپنی وا دی ہیں تنها کمان جھوڑے جارہے ہو؟ جہاں نہ آدم ہے بذآ دم زاد، نہ کو تی مونس وعمخوا ر بوستیده باجرهٔ مسلسل پیمهتی جاتی گھیں اور حضرت ابراہیم علیہ التالم خاموشن چلے جارہے بھے . آخر مقك كرحضرت بإجرة نے پوچھا ابرائتم كيا يہ النار كاعلم ہے ؟ تب حضرت ابراہیم علیہ اتسلام نے جواب دیا ہاں یہ الٹرکا کھم ہے۔ تيره بإجره تشني حبب يبرطسنا تو محنے لگی تھيرتو وہ بہيں ضائع وبرباد نه کرے گا۔ بہ کہ کروالیں لوٹ آئیں اور اپنے بیچے ہے آملیں ۔ حضرت ابراتهم عليه السلام جلتے جلتے جب ايك طبلے پر البیی جگه پہنچے جہاں اُن کا شیرخوار بچہ اسمعیلؑ اور بیوی ہاجڑہ نگاہ ہے اُوجیل ہو بھتے تو اُس جانب جہان کعبہ ہے رُخ کیا ہے اور ہاتھ أتفاكريه دُعا فرما تي :۔

رَبَّنَا ٓ اَنِيْ اَسْكَنْتُ مِنُ ذُرِي تَيْتِي بِوَادٍ غَيْرُ ذِي

نَدُعِ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَدَّمِ الْحِ (ابرائيم أيت ٣٠٠٣)

در بروردگادا بمين نے ايك ہے آب و دانه وا دى بن ابنی اولا دمين سے
ایک کوتیرے عزم گھرکے پاس بسایا ہے (بیمین نے اسلئے کیا ہے) کرپروردگاد

بدلوگ بیاں نماز قائم کریں ۔ للذا تولوگوں کے قلوب کوان کی جانب توقیہ فرمااور آئیں

مانے کو تھیل عطافر ما مشاید کہ بیش کر کرنیوا لے بنیں ۔ بروردگار تُوجانا ہے جو
کھانے کو تھیل عطافر ما مشاید کہ بیش اور واقعی النّد سے کی حجوجہ با ہوائیں

کھیے ہے جہا تھیں اور جو کھی ظاہر کرتے ہیں اور واقعی النّد سے کی حجوجہ با ہوائیں

بعد نذمین میں نہ آسانوں میں " (ابراہیم آت ہے ﷺ ، ۴۳)

سیدہ ہاجرہ جندروز کی تومشکیزہ کا پانی بیتی اور تھیلی کے مجور کھاتی اور اسلیما کو دوروہ میلاتی

پای برابر ابلتا دہا ۔ بیال مک بیان مرومرہ کیا گا، سریہ کا سامی کردہ اور کردہ کا سامی کا بیاری بہر ہوتا ؟

در اللّٰد اُمِّم المعیل رسیرہ ہا جرہ کا بررم فرمائے اگروہ نفرم کو سطرے ندروی تووہ آج جادی بہر ہوتا ؟

سیدہ ہا جڑہ نے پانی بیا بھر المعیل کو دودھ ملایا۔ فرشتے نے سیدہ ہا جرہ سے کہا یخم و نوف نہ کرو۔

اللّٰد تعالیٰ بچھ کواور بیجے کو صابعے نہ کرایگا۔ یہ مقائم بیت اللّٰد کے بیاری تعمیر اس بیجے اور اسمی باب کی قسمت

اللّٰد تعالیٰ بچھ کواور بیجے کو صابعے نہ کرایگا۔ یہ مقائم بیت اللّٰد کے باب کی قسمت

بیں م قدّر ہوجی ہے۔ اس لئے اللّٰہ تعالیٰ اس نما ندان کو ہلاک نہیں کر ایگا ''

رایت کے جیراغ مبلد اوّل

"سیت النین"کی بیر جگه قریب کی زمین سے نمایاں مقی مگر یانی کا بہاؤ وا ہے۔ حقد سے سال میں میں

بأنين اس حصه كوبرا بركزنا جار بالحقاء

انهی د نوں میں قبیلہ بنی جُریم کا ایک فافلہ اس وادی کے قریب گزررہا تھا دیجھا کہ محفوظ ہے فاصلے پر برندے آڈر ہے ہیں ۔اہل جُریم نے کہا کہ بیر یا فی کی علامت سے وہاں یا نی ضرور ہوگا ۔ جنانچہ بیدلوگ وہاں ہنچے اورستیدہ ہاجرہ طسے اجازت۔ طلب کی کہ ہم بھی مہاں تیا مرکز نا جاہتے ہیں ۔

طلب کی کہ ہم بھی بہاں قیام کرنا جانتے ہیں۔ مستیدہ باجرہ نے کہا کہ قیام کر سکتے ہولیکن یا نی کی ملکیت سے حصہ وارینہ

ہوگے بھر ہمنے یہ بات بخوشی منظور کرلی اور تقیم ہوگئے ۔ دسول اکرم صلی التیر علیہ وقم نے ارسٹ و فرایا اجراہ خو دمجی ہامی انس ورفا سر لئے۔ دائیتی بحقد کس کائر لیا سے مقیم میں

ہے جہ جہاری معین فرنوی بہاں اگر میم ہو۔ ایستے بعد تجربم نیے کچھ دمی تجبیجکراہنے باقی ماندہ اہل خاندان کو بھی ُ بلایا اور

یہاں مکا نات بناکرر سنے لگے۔ اُن ہی ہیں آمنیل بھی رہتے اور تھیلتے اور اُن کی زبان مستجھتے ، جب اسمعیل علیہ الت لام بڑے ہوگئے تو اُن سے عا دات واطوار اور مرکز نہ دور نور پر مرسم

ان گی خوبصور تی جرمیم کو ہوت پہند آئی اور امنعوں نے اپنے خاندان کی ایک لڑکی ہو منگی مٹنا دی کردی اسکے کچھ عرصہ لعدستدہ ماح کھ کا انتقال ہوگیا۔

انگی شادی کردی استے کچوعرسہ بعدستیدہ ہاجڑہ کا انتقال ہوگیا۔ حضرت ابراہم علیہ استلام وقفہ وقفہت اپنے اہل وعیال کو دیکھنے آیاکر فی تحصیموں کے مطابق ایک مرتبہ تشریف لائے تواسمعیل علیہ استلام گھر بر موجود نہ تحقے ۔ ان کی بیوی سے دریافت کیا توامھوں نے جواب دیا کہ روزی کی تلامش میں باہرگئے ہوئے ہیں ،حضرت ابراہم علیہ استلام نے انجانے میں مہوے دریا کیا تمہارے گھرکا کیا حال ہے ؟ وہ تھنے گئیں سخت مصیبت و پریشانی ہے اور ہمارا مُرا مال ہے۔

عضرت ابراہم علیہ الت ام نے فرمایا کہ اجھا جب اسمعیل آجائے تو میرا سلام کہ دینا اور یہ بھی کہنا کہ اپنے دروازے کی حوفظ تبدیل کردو۔ یہ کہ کر واپس ہوگئے بچھ دیر بعد جب حضرت اسمعیل علیہ الت اور یکھ تھے دیر بعد جب حضرت اسمعیل علیہ الت اور کھھ آئے گھھ میں نور نبوت سے اثرات مسموں نجھ کو چھاکہ کیا کوئی سنتھ میں یہاں آیا تھا ؟

بی بی نے سارا قصتہ بیان کیا اور پیغام بھی ویا۔ میں بی نے سارا قصتہ بیان کیا اور پیغام بھی ویا۔

حصرت اسمعیل علیہ است لام نے فرمایا کہ بی وہ میرے باپ ابراہیم علایسلاً محقے اور اُن کا پیمشور ہے تو میں تم تو طلاق دے دوں ۔ نہذا میں تجھ کو مجدا کرتا ہوں۔

اسے بعد حضرت اسمعیل علیہ استال مے دوسری شادی کرلی جسم مول

حضرت ابراہیم علیہ السّب لام ایک تمرتبہ بھیرتشاریف لائے ،اُس وقت بھی حضرت سلمعہ کے مار الا کی الام تھے۔ یہ مرجہ من مقر

المعیں علیہ الت کام تھر کر موجود ہے۔ خیریت سے بعد اسی طرح سے سوالات کئے نیک بی بی نے کہا خدا کا سکر واحیان ہے اچھی گزر رہی ہے۔ دریافت کیا کھانے کو کیا ملتاہے ؟ نیک خاتون نے جواب دیا کوشت! پوچھاا ور چینے کو ؟ جواب دیا میٹھا یاتی! حضرت ابراہیم علیہ السلام

نے اس موقعہ بردوعا مانٹی ب

آللُّهُ مَّ بَارِكُ لَهُ وَفِي اللَّحْيِمِ وَالْمَاءِ.

اب الله ان کے گوشت و پائی میں برکت عطا فرا۔

عهرجب جلنے لگے تو فرمایا کہ اپنے شوہر کومیرانسٹلام کہنا اور پر پیغام بھی دیناکہ اپنی روازے کی جو کھٹ کومحفوظ اکھنا ۔

معنی حضرت اسمعیل علیه الت لام جب گھرتشریف لائے تو بی بی نے سارا ت

ر اسپر خضرت اسمعیل علیہ اتسلام نے فرما یا کہ وہ میرے باپ ابرا ہمیم علیہ انسلام تحقے اور اُن کے پیغام کا میطلب ہے تم زندگی تھرمیری رفیقہ خیات رہویہ الخ

رہو۔ الم پہطویل روایت بخاری کتاب الرویا اور کتاب الانبیار " دونوں جگہ موجود کے۔ دونوں روایت ہے بہی ثابت ہوتا ہے کہ حضرت اسمعیل علیہ السلام وادی غیر ذی زرع د بن صبتی کی وادی میں دیعنی محمرمہ) بحالت شیرخوارگی مہنچے مقے۔ غیر ذی زرع د بن صبتی کی وادی میں دیعنی محمرمہ) بحالت شیرخوارگی مہنچے مقے۔ آگر جہ قرآن تھیم نے صفرت اسمعیل علیہ التلام کی ولادت سے متعلق ان کا امر کے کرمیاف مولی کو گرنہ ہیں گیا ، البتہ بغیر نام کئے ان کی ولادت کی بشادت کا تذکر دکھا ہے۔ کا تذکر دکھا ہے۔

کی گود انھیں تکبِ اولا دیسے خالی تھی اس لئے بارگاہِ الٰہی ہیں ایک نبیک وصالج فرزند کے لئے دُعا ما نگتے ہیں اور التُرتعالے نے اُن کی دُعا کو شرفِ قبولیت بخیا اور لڑکے کی ولادت کی بشارت دی۔

رَبِّ هَبُ لِي مِنَ الصَّا لِحِيثَ. فَبَشَّرُنَا لَا بِفُكَا مِ

حَلِيكُونِ (الصافات آيت عنا)

اُ ہے رہے مجھکو ایک نیک لڑ کاعطا فرما، بیں ہم نے اُسکو

ایک بر و بار لڑکے کی بٹ ارت دی !"

نون سے نو وہی اسمعیل علیہ التلام جوستیدہ ہاجر^ہ کے بطن سے ہ قرآن حکیم نے اس بٹارت کے بعد میں آیت مثلا میں حضر<u>ت</u>

ة وَبَشَّرُنَّاهُ بِالشَّحِلَّ يَبِيًّا مِنَى الصَّالِحِيْنَ. وَبَارَّكُنَا

عُطِیٓ اِسْمُعٰق ۔ ` (الصافات آیت ۱۳) ور بنارت وی ہم نے ابر اسٹم کو اسٹی کی جو بلہ نے اور بنارت وی ہم نے ابر اسٹم کو اسٹی کی جو بلہ ن نیکو کارنبیوں میں سے ایک نبی ہوگا۔ غلام طبیم ٹی بٹ ارت کیے بعد اسخق علیہالت لام کا نام ہے حربت ارت دینا تھیلی دلیل ہے کہ پہلی بٹ ارت سے مرا دحضرت اسحق علیہ الت لام ہونہیں سکتے۔ سوائے اسکے کہ اسمعیل علیہ انسلام مرا دیہوں بھیج بحد حضر سنس ا براہیم علیہ استلام کے دیو ہی لو کئے تھے۔

تِ ابراہیم علیہ الت لام کی حیاتِ طیبہ ہیں کم از کم تین وا تعا^ت سخت ترین امنحان کی حیثیت رکھتے ہیں۔ الترك نيك بندون خصوصاً باركاه النبي كے مقرّبین كے ساتھ اللّٰہ تعاليٰ کا وہ معاملہ نہیں ہوتا جوعام انسانوں کے ساتھ ہے۔ اُن کو امتحان وآز مانسس کی سخت سے سختِ منزلوں سے گزرنا بھی پڑتا ہے جسکے تنجے میں اُن کی زید گی میں قدم قدم برسلیم ورضا کے مظاہرے ظاہر ہوتتے ہیں جسے تتیجے ہیں رہتی ونیا تک انسان اور

ملداول

انسانیت کے لئے بہترین نمونہ اور مثال قائم ہوجاتی ہے۔ نبی کربیصلی الترعلیه و لم نے ایک موقعہ پرارٹ و فرمایا تھا۔ ''ہم انبیار اپنے اپنے مراتب سے لحاظے امتحان کی صعوبتوں یہں ڈالے جاتے ہیں ''

حضرت ابراہیم علیہ ایت لام مجھی چونکہ اولو العزم انبیار ہیں شمار ہوتے ہیں اسی قانونِ الہٰی کے شخت مختلف آز ہائشوں سے دوجیار ہونا پڑا۔ اور وہ ہرد نعہ امتحان میں

کامل و محمل طور پر ثابت قدم رہے ہیں ۔ حب ان کو آگ میں ڈ الاگیا تو اُس وقت جس صبرواستقامت اور سلیم ولٹ

کا تبوٹ دیا ہے وہ تاریخ انبیار کا انموآل اور نا دروا قعہ ہے۔

آسے بعد اپنے شیرخوار بیجے آملعیل اور نیک بیوی ستیدہ ہاجڑہ کو فاران رمکہ، کے بیا بان میں حیور آنے کا حکم ملا و ہمبی تجمع حلی امتحان نہ مقا۔ آز مائش اور سخت آزمائٹ کاوقتِ تھا ، بڑھا لیے اور پیری کی تمنّا وُں کےمرکز ، دن رات کی دعاؤں کے تمراور گھرکے شم و خِراع استغیاع کوصرف خوا بی حکم کی تعمسیل اور ا تتثال میں ایک ہے آب کو دانہ وا دی کمیں حیوثرا نا اور اس طرح کے پیجھیے مطرکر مھی نہ دیجھا کہ مہیں پدری شفقت جوش میں آجائے اور تعمیل حکم میں لغزیش پیدا ہوجائے۔ بيه دُونُوں امتحان کچھے کم یہ محقے کو تمیسرے امتحان کا آغاز ہوگیا۔ ان ہی ایام ہیں جب کسیدنا ابراہیم علیہ الت لام بیوی آور بیچے کی خیرجب لینے سے لئے محرکمہ آیا کرتے ہے تین شب کسل خواب و سیجھتے ہیں کہ انڈرتعالے ارث د فرما یا ہے کہ :۔

آے ابراہیم اپنے بیٹے کوہماری راہ میں قربان کرو "

انبياير كرام كاخواب بمجى وحي البي كا ايك حصه بهوناسه اس ليخ سيدنا ابرامهم عليالتلام رضاً وتسليم كا بيكربن كرتيار ہو گئے كہ اللہ تعاليے كى اس مرضى كوجلد ہے جلير پورا دیں ، مطرحو بحرمعا ملہ صرف اپنی ذات کے متعلق منہ تھا بلکہ اس آزمائش میں مج میٹا تھی سٹریک تھا اس لئے بیٹے تو اینا یہ خواب مٹنایا اِور الٹکری مِرْنی کوظا ہر کیا ین صاجزادے نے فوراً سرتسلیم خم کر دیا اور تحینے کگے آبا جان اگر الترتعاکے

مفسرین نے تیر آبال اور معض نے تجوزیا و ہکھی ٹہیں نیکن مستندروا بہت میں اس کا کوئی واننے نبوت نہیں ملتا۔ قرآن حکیم نے اس عمر کو اس طرح بہان کیا ہے :-

ت جہیں مکمیا۔ فران صبیم کے اس ممر نواس طرب بریار . فَکَمَیّا بَکُعَ مَعَدُنَ السَّنْعَی الآیة (انصافات آیت عندا) " مناسب مارس رہیں مارس میں الاست سے مات جانبہ سے

'جب وہ لڑکا ابراہیم دعلیہ السلام) کے ساتھ چلنے بھیرنے کے وگیا۔"

ا ورمعض نے یہ ترجمتر کیا ہے:-

روي. . سوجب وه لاكاليى عمركوپېونچاكدا برامېم دعنيه السّلام)

کے رائھ جلنے تجرنے لگا۔"

اور معض نے یہ ترجمہ کیا ہے !-

السوجب وہ لڑکا ایسی عمرکومپونچاکہ ابرامیم کے ساتھ

عِدوجهد كرك.

دراسل قرآن علیم نے آنسٹی کالفظ استعمال کیا ہے جیے مٹنی جہاں چلنے اور دوالہ کے آتے ہیں و ہاں جدوجہدیں شرک ہوں ہیں بینی باپ کے ساتھ جدوجہدیں شرک ہوا، غالباً اسی وجہ سے بعض حضرات نے تیر اللہ سال عمرات ہے ۔ والتٰداعلم ۔

الغرض دونوں حضرات التٰر تعالے کے حکم کو پوراکرنے کے لئے کعبة التٰر ہے ور چلے گئے معض تاریخی وفسیری دوایات سے معلوم ہوتا ہے کہ در میان راہ شیطان نے تین مرتب میں مرتب مرتب محضرت ابراہیم علیہ الت لام کو بہکانے کی کوشش کی ہیان ہر مرتب حضرت ابراہیم علیہ الت لام کو بہکانے کی کوشش کی ہیان مرم تب حضرت ابراہیم علیہ الت لام کو بہکانے کی کوشش کی ہیان مرم تب معاجو مہاڑ ہوں کے درمیان واقع ہے۔

مقاجوً بہاڑیوں کے درمیان واقع ہے۔ الترتعالے نے حضرت ابراہیم علیہ الت لام کے اس ممل کو قیامت تک مجے کے مناسک میں داخل فرما دیا۔ ہرسال منی کے تینوں جمرات پر لاکھوں مجاج اسی پسندیدہ عمل کی یادگار میں کنگریاں مارتے ہیں۔ بالا خرجب دونوں باپ جیٹے ہے برایت کیجیراغ جلداقل

بے شال عبادت انجام دینے سے لئے مینی کی قربان گاہ پہنچے توسید نا آسمنعیل علیا اللہ اللہ کے فرمایا آباجان! و بج سحر نے سے پہلے مجھے ذرا اچھی طرح باندھ دیجئے تاکہ ذبح سے عمل میں تاخیر مذہو نے پائے اور آپ التٰر تعالیٰے سے منشا کوجلد پورا فرما دیں جنانجہ ابراسی علیہ است لام نے اسی طرح تیاری کی اور بیٹے کو آخری بوسہ دیا اور بیٹانی کے بل خاک پر لٹا دیا۔ قرآن صبح نے اس محیفیت کو اس طرح بیان کیا ہے:-

وَ تُلَمُّ لِللَّهُ لِمُعْدِينِ مِ وَالصَّافَاتِ آيت عِينًا)

اُور باپ نے بیٹے کو پیشانی کے بل خاک پر لِٹا دیا۔'' اُس میں میں مارین میں میں میں میں میں میں میں مارین میں مارین

لین حضرت ابن عباس نے اس کامطلب اس طبرح منقول ہے کہ ابر اہم علیہ الت لام نے اس طرح کروٹ نشادیا کہ

پیشانی کا ایک کنارہ زلمین سے چھو نے لگا۔ ر تنفسیر مظہری)

لغت کے لیاظ سے یہ فسیرزیادہ قریب ہے اس لئے کرجبین عربی زبان میں پیشانی کی دونوں کروٹوں کو کہاجا تا ہے۔ اور پیشانی کا درمیانی حصر جُبُہُ کہانا اسے۔ چنانچہ حضرت ابراہیم علیہ استلام نے اس طرح بیٹے کو لٹاکر گردن پر ٹھیری چلانی مشہروع کی۔ مفسرین تکھتے ہیں تحاس موقعہ پر النہ تعالیٰے نے اپنی قدرت سے پیشل کا ایک مسکڑا، بیچ میں جائل کردیا۔ اچانیک آواز آئی آئے ابراہیم بس کروتم نے خواب کو سے کردکھایا،

بیٹٹ یہ مہت سخت آزمانٹ کھی۔ حضرت ابراہم علیہ است لام نے ہاتھ زوک لیا،آسمان کی جانب نظے۔ ''مٹانی دیجھاکہ حضرت جرنیل ابین ایک فربہ مینڈھا کئے تھڑے ہیں بعض روایات سے انتھائی دیجھاکہ حضرت جبریل ابین ایک فربہ مینڈھا کئے تھڑے ہیں بعض روایات سے

معلوم ہوتا ہے کہ یہ وہی مینڈھا تھا جس کی قربانی حضرت آدم علیہ التلام کے صاحبزادی بابیل نے بیش کی تھی ۔ والتداعلم ۔ بابیل نے بیش کی تھی ۔ والتداعلم ۔

ہ بین سے پیش کی میں دوالا کر میں علیہ استلام کوعطا ہوا تھا۔ آپ نے الٹرتیا لے کے حکم سے اس کواپنے بیٹے اسمعیل سے عوض ذبح کر دیا۔ التدتیا اسکو قرآن حکیم نے اس طرح بیان کیا ہے :۔ اسکو قرآن حکیم نے اس طرح بیان کیا ہے :۔

وَ فَكُ يُنَا لَا يَبِي بَعُ عَيْظِيْمِ وَالْصَافَات آيت عَنْ) "أورتهم نے ابراسم كوا يك عظيم ذبيحه اسكے عوض دے ويا" اس ذبیحہ کوعظیم اس وجہ سے کہاگیا کہ یہ الٹرتعالے کی طرف سے آیا تھا۔سورہ الصا قات میں اس واقعہ کو مفصیل سے بیان کیا گیا ہے۔

> قرافي مضمون وقال إنى ذاهب إلى مربى سَيَهُ دِينِ. مرب هب لى مِن الصَّالِحِينِ ١٠٤

دالصّا فات آمات ع<u>99</u> ثاعثلا)

آورا براہیم نے کہا میں جاتا ہوں اپنے رب کی طرف (ہجرت کرکے) وہ مجھے سیدھی داہ دے گا دچنانچہ ملک شام سینچے اور یہ دُعا کی) اے پروردگار مجھے ایک نیک لڑکا عطا فرا۔ کیں ہم نے بشارت دی اُسکو ایک بُرو بار لڑکے کی دلینی حضرت اسمعیل علیہ ات لام کی) کھر جب وہ الیسی عمرکو پہنچا کہ ابراہیم دعلیہ الت لام) کے ماتھ چلنے مجرفے گئے۔ ابراہیم دعلیہ الت لام) نے کہا اے میرے بیٹے میں نے مواب دیجھا میں نے کہا اے میرے بیٹے میں نے کواب دیجھا ہے کہ میں مجھوکو ذیج کر رہا ہوں سوتم بھی سوچ لو تمہاری کیا رائے ہے ؟ وہ بولے آبا جان آپ کوجومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو دہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو جومکم ہواہے وہ کرگزر بیکر انسار اللہ آپ کو کومکر کے والوں میں بائمن گے۔

انٹ رائٹر آپ مجھکو صبر کرنے والوں میں پائیں گئے۔
عرض حب دونوں نے الٹرتعائے کے مکم کوت کیم کردیا اور
باپ نے بیٹے کو دیج کرنے کے لئے بیٹانی کی کروٹ لٹادیا۔ اور ہم نے
اُن کو آواز دی کہ اے ابراہیم (علیہ السلام) تم نے خواب کو خوب
سیج کرد کھایا (وہ وقت بھی عجیب تھا) ہم خلصین کو ایسا ہی صلہ دیا
کرتے ہیں ۔ حقیقت میں یہ تھا بھی بڑا امتحان ۔ اور ہم نے ایک عظیم
ذبیحہ اُسکے عوض دے ویا۔ اور ہم نے آئی والی نسلوں ہیں اُسکے متعلق
ذبیحہ اُسکے عوض دے ویا۔ اور ہم نے آئی والی نسلوں ہیں اُسکے متعلق
ابتک علیہ السلام کھا اور بُولا جار ہا ہے) اسی طرح ہم نیکو کاروں کو
بدلہ دیا کرتے ہیں۔ بیشک وہ (ابراہیم علیہ استلام) ہمار سے مؤمن
بدلہ دیا کرتے ہیں۔ بیشک وہ (ابراہیم علیہ استلام) ہمار سے مؤمن
بدلہ دیا کرتے ہیں۔ بیشک وہ (ابراہیم علیہ استلام) ہمار سے مؤمن

ہوگا اورنیکو کاروں میں سے ہوگا۔ اور برکت دی ہم نے ابراہیم اور اسخی پر اور آئی اور اسخی پر اور آئی کی اور اسخی پر اور آن دونوں کی نسلوں میں بعضے اچھے تھی ہیں اور بعضے ایسے بھی جو صریح اپنانقصان کررہے ہیں۔"

ز بیج الند آیات ندکوره میں ذبیج کا نام نہیں لیا گیا صرفٌ غلامٌ ملیمٌ کہا گیا کہ وہ — نہایت تعل ،صاحبِ برواشت ،صابر وسٹ کر لڑکا تھا۔ سیا نہایت تعل ،صاحبِ برواشت ،صابر وسٹ کر لڑکا تھا۔ باب نے ابھی مشورہ ہی کیا تھا کہ وہ آما دُو تعمیل ہو گیا۔ اس طرح سخت ترین امتحان بیں بورا اُترا، اللہ نے اُسکے اِسْ سیم ورضا کو قبول فرما نیا اور آسمان پُرُ ذیج عظیمٌ نازل كيا اور وه أسكا بدل قراريا يا . حضرت ابراسيم عليه التلام مومباركبا و دِي مُنَى اور اُن کے اس عمل کو بادگار بنا دیا سکیا د جنا بخہ ہرسال ڈی الجہ کی اُدس تاریخ کو لاکھوں حاجی ا ورسحرور و مسلمان اسی ذیج عظتیم کی یا ذہیں اکٹر تعالیے سے حضور قربانی بیش کرتے ہیں) حضرت ابراہیم علیہ اتسالام کر التبر کاسلام آیا اورحضرت اسمحق کی بشارت دی تکئی مضمون تی ترطیب اور بیان واضع طور برظا امرترر ما ہے تحد غلام حلیم" حضرت اسلحق بیسے علاوہ تو تی دوسرا ہی تڑکا تھا ،ا ورظا ہر ہے کہ وہ حضرت اسمعیل علیہ السلام ہی ہو سکتے ہیں،کیونکہ حضرت ابراہیم علیہ الت لام سے دوسی لڑنے مقے۔ سورة بهوديس مزَيد وضياحت ملتي بطيحة حضرت اسخق عليه التلام كو ذبح كرنے كا حكم نہيں و ماكراً مقاتنفسيل استى يه كے كة قوم لوط يرحب عذاب سے فرضتے آئے توان میں مہتی ملاقات حضرت ابرا تہم علیہ الت لام سے ہوئی۔ دریافت کرنے پرمعلوم ہوا کہ قوم نوط پر عذاب نازل کرنے آئے ہیں اور ساتھ ساتھ آپ کو بشارت نفبي دينا ہے كەعنقرىب آپ كواسخى نامى لۈكا يىيدا تبوگا ـ اور اسخى ئىسے نىقوم بيدا ہوگا (عليهم التلام) حضِرِتْ ابراہیم علیہ الت لام کی بیوی جوعم طبعی کو پہنچے گئی تقیں اس بشادت

حضرت ابراہیم علیہ التلام کی بیوی جوعمطبعی کو پہنچ گئی تھیں اس بشارت پرتعجب کرنے گئیں ۔ فرشتوں نے جواب دیا کہ بیٹم پرالٹر کی رشنی و برشنیں ہیں اس ہیں تنعجب کی کوئی بات نہیں ہے ۔ آیتِ ندکورہ اس طرح ہے :-منابع بیٹ کی کوئی بات نہیں ہے ۔ آیتِ فائے تنظیم کے شاخت کے ناکا بیا شخت وَمِنُ وَرَآءِ إِسْمَعَقَ يَعْقُونُ . رَبُود آيت عِنْ)

کویوں ورایو ما میں بیسوں کھڑی تھیں بیس ہنس پڑیں ہوہم نے اور ابراہم کی بیوی کھڑی تھیں بیس ہنس پڑیں ہوہم نے اُن کو بٹ ارت دی اسحٰیٰ کی اور اسحٰیٰ کے بعد معقومے کی ''

اس آیت میں جب حسرت آسی علیہ ات کام کو صاحب اولاد ہونے کی بشارت ہو گی تو مجرحضرت اسلحق علیہ الت کام کو ذیج کرنے کا کوئی مطلب نہ ہوتا اور نہ یہ حضرت ابر اہیم علیہ الت کام سے لئے عظیم امتحان قرار ہا تا۔ اس لئے بہلی بشارت ہیں غلام حلیم سے مراد حضرت آملعیل علیہ الت کام ہی ہیں اور مخبصوں نے باپ حضرت ابر انہیں گے۔ علیہ الت کام سے مشورہ کرنے پر کہا تھا انشار الشر آپ مجھے صبر محرنے والا پائیں گے۔ سور ہ مربم میں حضرت اسم عیب ل علیہ التسلام کا یہ ہی وصف بیان کیا گیا ہے۔ جوسور ہے ہود والی آیت ہیں موجود ہے:۔

وَا ذُكُونَ فِي الْكِتَابِ إِسْمَعِيْلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِ تَ

ا ٹوعید۔ انوعید۔ اُوراے نبی اس کتاب میں اسمعیل کا ذکر کرو بلاست ہوہ سے سے میں ،

وعدہ کے سیخے تھے "

یہ وہی وعدہ تھاجو اُمخوں نے اپنے والد بزرگوار حضرت ابراہیم علیہ التلام ہے۔
سیا تھا کہ وہ آپ کے امتحان میں ٹابت قدم ہوں گے اور وعدہ پوراسر دکھا میں گے۔
قصص الانبیار کے مؤلف علامہ عبد الوہاب نجار نے ایک اور قسر آنی
استدلال بھی سیش کیا ہے ۔ وہ لکھتے ہیں کہ النّر تعالے نے ذیجے عظیم کا یہ واقعہ
بیان کرکے آخر میں اس بات پرقصے کو حتم فرمایا ہے : ۔
بیان کرکے آخر میں اس بات پرقصے کو حتم فرمایا ہے : ۔
بیان کرکے آخر میں اس بات پرقصے کو حتم فرمایا ہے : ۔

د القتافات آیت عتلا)

اُورہم نے برکت نازل کی اُسپراوراسخی پر'' عَلَیْهِ کی ضمیر کا مرجع فربیج قرار و یا ہے اور یہ ترجمہ کیا ہے ۔ ''اورہم نے برکت نازل کی اُس ذبیج پر اوراسخی پر''۔ اسکے بعد بیہ دعویٰ کیا ہے کہ پوراقصتہ بیان کرنے سے بعداسخی علیہ الت لام کی اِشار 441

جلداول

ہایت کےچراغ

ہ کے در اس بات سے لئے قطعی صراحت ہے کہ صاحبِ قصہ لڑکا حضرت اسمٰی کے علاوہ سے اور وہ صرف حضرت اسمٰعیل علیہ استلام ہی ہو سکتے ہیں۔
علا وہ ازیں یہ بات بھی طے شدہ ہے کہ یہ واقعہ مکہ شخرمہ کے فریب منیٰ کے میدان ہیں پیش آیا۔ اس لئے اہل عرب ہیں زمانہ قدیم سے جج سے دوران قربانی کا طریقہ دائج ربا ہے۔ چنا بخہ دومینڈھا جنت سے ذیح سے لئے آثاداگیا تھا اُس کے مینٹک سالہا سال تک فانہ کعبہ سے اندر لیکے رہے ہیں۔ حافظ ابن کشیر شنے اس کی سینٹک سالہا سال تک فانہ کعبہ سے اندر لیکے رہے ہیں۔ حافظ ابن کشیر شنے اس کی تائید میں کئی ایک روایا تنقل کی ہیں۔

حضرت عامشعتی کا یہ قول تھی منقل کیا ہے :-کنس نے اس مینڈھے سے مینگ کعبہ کے اندرخو د دیجی ہیں؟

کے اس میٹند سفے سے سبباب تعبہ کے انگرامو و دیجی ہے دابن کشریج ہم صفہا

مشہور محدث سفیان نوری فرماتے ہیں کہ اس سینڈھے کے سیاک اس سینڈھے کے سیاک سل خانہ کعبہ ہیں لئے دہے ہیں کہ اس سینڈھے کے سینگ سل نمانہ کعبہ ہیں لئے دہے میں ایس کی جب جماج بن ایک کہ جب جماج بن ایک کہ جب جماج بن ایک کے دیا ہے کہ اسٹ کو میہ سینگ بھی جمل گئے۔

ایس کثیر جماعت کا سینگ جماعت کا بن کثیر جماعت کا سینگ بھی جمل گئے۔

(نومسلم عالم) سے منقول ہمیں۔ اس کئے کہ جب وہ حضرت عمرہ کی خلات میں بیہو دیت حیوڈ کراسلام قبول کیا تھا تو حضرت عمرہ کو اپنی گرانی کتابوں کی باتیں سئے نایا کرتے تھے ، بعض اوقات حضرت عمر ان کی ہاتیں سُن لیا کرتے تھے ،اس سے اور لوگوں کو مھی گنجائش ملی اور

أمضون نے مجبی کعب احبار سے روا بات مسئکر انتفین نفل کر نا منر وع کیا۔ ان روایات میں ہرطرح کی رطب ویالیں باتیں جمع تنھیں ،سیکن اس امّت کو ان با توں میں سے ایک حرف کی بھی ضرورت نہیں ہے۔ والسُّراعلم؛ٌ

د تفسیر ابن کشید ۶۶ صفطن) الغرض قرآن حکیم نے حضرت المعیل علیه الت لام کا وکر ببیت الله کا تعمیری تذکر ہ ، تنعمب تحرتة وقئت حضرت ابرائيم عليه التلام اورحضزت اسمعيل عليه التلام كي دُعا ومناجاً أ ا قامتِ صلوٰة كا استمام، مناسك ج كابيان اوربيت النُّر كا مركزِ توحيد سون في كاعلان، نہایت وضاحت ہے۔اُنھ کئی جگہ بیان کیا ہے۔ ذیل کی آیات انہی تذکر وک تیل ہیں۔

> مُرْأَ فَيْ مُضَمُّونَ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِسُكَّ تَ مُلِرَكًا وَ هُدًى لِلْعُلَمِينَ ١٠٤

بیٹک بہلا گھرجو انسانوں سے لئے دخدا بیٹنی کامرکز) بنایا سمیا وہ مہی (عبادت میں ہے جو مکترمیں ہے برکت والا اور نمام انسانو سے لئے سرخینۂ ہدایت۔ اسمیں د دین حق کی) روشن نشانیاں ہیں ا اُن میں سے ایک مقام ابراہیم ہے دمینی حضرت ابراہیم علیہ السلام) کے کھڑے مہونے اور عباوت کرنے کی جگہ جو اُس وقت سے لے کر آج تک بغیر کسی شک وسٹ مشہور ومعین رہی ہے) اور جو کوئی اُسکے عدو د میں دافعل ہوا و ہامن وحفاظت میں آگیا اور الٹر کی طرف سے لوگوں کے لئے یہ بات صروری ہوگئی ہے کہ اگر اس گھڑ کک پہنچنے کی استطاعت یائیں تواس گھر کا جج کریں اور جو کوئی اس حقیقت سے ا نکارکرے تُو یا درکھوالٹر کی زُدات تمام دنیاہے ہے نیازے '' وَإِذْ جَعَلُنَا الْبَيْتَ مَتَابَتُهُ لِلنَّاسِ وَآمُنَّا لِهِ

(بقره آیات ۱<u>۳۵ تا ۱۲۹</u>)

'اور (و ہ وقت تھی قابلِ ذکرہے)جس وقت ہم نے خانہ کعب

ہدایت کے جراغ

كولوگون كامعبدا ورمقام امن مقرر كبا دا ورآخريس امت محديه كومكم ديا کہ برکت سے لئے) مقام ابراہیم کونماز پڑھنے کی جگہ بنالیا کرواور ہم نے ابراہیم اور اسمعیل کی طرف ملم بھیجا کہ میرے اس گھرکو خوب پاک رکھا کر و بیرونی اورمقامی لوگوں کی عبا دت سے لئے اور رکوع وسنجدہ كرنے والوں كے واسطے ، زاور وہ وقت بھى بادكرنے كے قابل ہے ، جس وقت ابر اسیم نے عرض کیا اے میرے پر ور د گار اس مجگہ کو ایک آبا دہشتہر بنا دیجئے امن وامان والا اور و ہاں کے لینے والوں کو مجلوں ى قسم ہے بھى عنايت كيجئے اُن كوجوكہ التّريرا ورر وزِ قيامت پر ايمان ر محصتے ہوں ، اللہ تعالیے نے فرمایا اور اُسٹ خص کو بھی جو کا فررہے البیر شخص کو مخور ہے روز بعنی دنیا میں توخوب آرام روں گا، مجراً سس کو كشاں كشاں عذاب دوزخ ميں بہنجا دوں گا اور وہ مُرى مَكَمَه ہے رہنو كى . اور حب أعظار ہے مقے ابراہم دعلیہ السّلام) دلواریں خانہ کعبہ کی اور اسمعیل دعلیہ انسلامی تھی داور پیر کہتے جاتے تھے ، اے ہمارے پروردگاراہم سے قبول فرمائے بلاٹ بہآپ خوب سننے والے اورجاننے

والےہیں۔ اے ہمارے پرور بگارا درہم کو اپنا اور زیا دہ مطیع بنا کیجئے اورہما ہی اولا دہیں سے بھی ایک الیبی جماعت پیدائیجئے جو آپ کی فربا نبردار ہواور ہم کو ہمارے جج کے احکام بھی بٹادیجئے اور ہمارے مالَ پرِ توجہ فرمائیے اور فی الحقیقت آپ ہی 'ہیں توجہ فرمانے والے اور

اے ہمادے پروروگار اور اُس جماعت کے اندر اُن ہی میں کا ایک ابسا رسول بھی مقرر سیجئے جوان لوگوں کو آپ کی آ بیت بیں پڑھ پڑھ کرسنایا کرے اور اُن توکتاب دالہی) اور دُانا کی تعلیم پڑھ پڑھ کرے اور اُن کو پاک کردے بلات بہ آپ ہی ہیں بڑے زبر د وَإِذُ بَوَّانَا لِإِبْرَاهِينُو مِكَانَ الْبِينُتِ اَنُ لَرَّ إِنْ تُشُولِهُ شَيْئًا وَّطَيِهَ رُبَيْتِي لِلتَّطَائِفِينَ. 1 مِ

دالج آیات میسی است.

اور وہ وقت بھی قابل ذکرہے، جب ہم نے ابر اہمیہ کے لئے خانہ کعبہ کی جگہ مقرر کردی اور حکم دیا کہ میرے ساتھ کسی کونٹر کیا نہ کڑنا، اور میرا یہ گھران کوکوں سے لئے پاک دکھنا جوطوان کرنیوا کے ہوں، عبادت میں سرحرم رسنے والی ہوں. رکوع سجدہ کرنے والے ہوں۔ (اور حکم دیا کہ) کوگوں میں مج کا اعلان کردے لوگ تمہارے پاس دنیا کے تمام دور دراز راہوں سے آیا کریں گے پاپیادہ اور ہر طرح کی سوار یوں پر جوشقت مفرسے تھی ہوئی ہوں گی۔ وہ اس لئے گرائی کہ اپنے کہ اپنے کہ اپنے فائدہ پالے کی جگہ میں حاضر ہوائیں اور چندمقرر دنوں میں ان جانوروں پر الٹرکا نام لیس جو اس نے انتھیں بخشے ہیں۔ بھر اس میں سے نور تھی کھائیں۔ بھر اس میں سے نور تھی کھائیں۔ بھر اس میں سے نور تھی کھائیں۔ بھر اینا میں کہیل دور کریں اور اس قدیم گھر اپنامیل کی اور اس قدیم گھر اپنامیل کی اور اس قدیم گھر

دیہ تھاتع پر کعبہ کامفصد) اور جو کوئی الٹرکی قائم کر وہ حرمتوں کا احترام کرے تو یہ اسکے رب سے نز دیک خود اس کے لئے بہتر ہے اور بہارے گئے ماسوا اُن چیزوں کے جو اور بہارے گئے ماسوا اُن چیزوں کے جو تمہیں بتائی جاچی ہیں بس بتوں کی گندگی سے بچوا ور جبوئی با توں سے بہتر کرو۔ یکسو ہو کر الٹر کے بندے بنواس کے ساتھ کسی کوشر یک بہر کروا ور جوکوئی الٹر کے بندے بنواس کے ساتھ کسی کوشر یک نہر کو اور جوکوئی الٹر کے ساتھ سٹرک کرے توگو یا وہ آسمان سے گرگیا اب یا تو اُسے پر ندے اُلیک لے جا کہنے یا ہوا اُسکوکسی دُوردراز جگہ بھنے کہ ہوا اُسکوکسی دُوردراز جگہ بھنے کہ دگی۔

یہ ہے اصل معاملہ داسے سمجھ لو) اور جو السرکے مقرر کروہ . شعائر دیادگار گبکہ کا احترام کرے تو یہ دلوں کی تقویے کی بات ہم تہمیں ایک وقت مقرر تک اُن د قربانی سے جانوروں) سی فائدہ اُ تھانے کاحق ہے بھیراُن د سے قربان کرنے) کی جگہ اسی قدیم سے سے رہیں۔ یہ

مُحَمِرِ عِي سِي ہے۔ وَالْبُنُ نَ جَعَلُنْهَا لَكُثُرِ قِسَ شَعَا يُمِرِ اللهِ الْحَالِمَ الْحَالِمَ اللهِ الْحَالِمَ الْحَالِمَ ال راج آبات علاتا اعظ

آور قربانی کے اونٹوں کوہم نے تمہارے گئے شعائر السر میں شامل کیا ہے ۔ تمہارے گئے اُن ہیں تعبلانی ہے ۔ بیں اُنہیں کھڑا کر ہے اُن پر السرکا نام لو اور جب قربانی کے بعد اُنی پُشتیں زمین روٹ وائیں دمعنی پوری طرح ذبح ہوجائیں) نو اُن ہیں سے خود مھی کھاؤ اور اُن خییں بھی کھلا وجو قناعت سکتے ہیں اور اُنکو معی جو اپنی حاجت سینیس کریں ،ایسے ہی ہم نے اِن جانوروں کو تمہارے لیے مستخری ہے تاکہ تم شکراد اگرو۔ تمہارے لیے مستخری ہے تاکہ تم شکراد اگرو۔ بٹین دق اندوں سکو شت السرکو مستحتے ہیں اور نہوں

مها دسے سے محرب ماہ کے گوشت اللہ کو پہنچتے ہیں اور نہ خون بنہ اُن دقر بانیوں) کے گوشت اللہ کو پہنچتے ہیں اور نہ خون مگر اُس کو تمہا رانتقولی پہنچیا ہے۔ ایسے ہی اُس نے اُن دجا نوروں) سو تمہارے کئے منحر کیا ہے تاکہ اُس کی بخشی ہوئی ہدایت پرتم اُسکی تکبیرکر واور اے نبٹی بن رت دیدونیکو کا دوں کو ''

سیرنا المعیل عابر السالم کی اولاد الدنا المعیل علیه السلام کی اولاد الدی المعیل علیه السلام کی اولاد الدین المعیل علیه السلام کی بیان کی بین تورات سے قول کے مطابق سیدنا المعیل علیه السلام کے بار الا لائے اور یہ ہی قبائل عرب سے جداعلی بنے بین سردار کہلائے اور یہ ہی قبائل عرب سے جداعلی بنے بین مصروار کہلائے اور یہ ہی قبائل عرب سے جداعلی بنے بین مصروا المعیل علیه السلام کی ایک لائی کا نام بن امہ یا محقاق بھی بیان محسوب المعیل علیه السلام کی ایک لائی کا نام بن امہ یا محقاق بھی بیان کریا جاتا ہے۔ تورات کی تصریح کے مطابق ان لائوں کے یہ نام بین: میاجاتا ہے۔ تورات کی تصریح کے مطابق ان لڑکوں کے یہ نام بین: میاجاتا ہے۔ تورات کی تصریح کے مطابق ان لڑکوں کے یہ نام بین: -

ہدایت کے چراغ

تیماً ، یطوّر ، نافیش قبراً ا جاعندا سریار میس تقد

یہ اپنی جاعنوں کے بارہ رنگیں تھے۔ سرد سلے طور مطرف ہوں اور ان فران کے اس میں خدید

ان میں وٹو بڑے بیٹے ناتِت اور قیداً دیے مہت شہرت یا نیُ ،عرب مُورِ فین کے مجب ان کے حالات بیان کئے ہیں ۔ مجبی ان کے حالات بیان کئے ہیں ۔

بی ان سے مالات کی اولاد اصحاب الحجر کہلائی اور قیدار کیسل اصحاب الرس کے نام سے شہور ہوئی اِن ہر دو کا ذکر قرآن محیم میں موجو دہے۔ نام سے شہور ہوئی اِن ہر دو کا ذکر قرآن محیم میں موجو دہے۔

ستیرنا اسمعیل علیه الت لام کا ذکرمبارک قرآن حکیم میں متعدّد بار آیا ہے ، ان میں ایک جگه ذریج عظیم" والی آیت ہے اور ڈومقام پر اس بنے ارت کے موقعہ پر

سيدنا اسمعيل عليه التلام ويدان عليه السريم قران عين

ذکرآیا ہے جبمیں حضرت ابراہیم علیہ التلام کو اولا دکی بٹارت دی گئی ہے اور سورہ مریم میں اُن کا نام لے کراُن کے اوصاف جمیلہ بیان کئے گئے ہیں :۔ کواڈ کے دُین انکتابِ اِسْلَمْعِیْلَ اِنْکَانَ صَادِ قَ

الْوَعُدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِينًا.

وَكَانَ يَامُرُا هُلَدُ بِا الصَّلُوةِ وَالزَّكُوةِ وَكَانَ عِنْدَرَ بِهِ الصَّلُوةِ وَالنَّرِكُوةِ وَكَانَ عِنْدَرَ بِهِ مَنْ مِنْ مِنْ الْعَلَى الْعُلَى الْعَلَى الْ

''آوریادکروکتاب سی اسمعیل کا ذکر ، بلاسٹ وہ وعدہ کے بڑے سیخے اور رسول ونبی سکھے اور وہ حکم کرتے کھے اپنے گھر والوں کونماز کا اور زکوٰۃ کا اور وہ کھے اپنے پرور دگارکے نزدیک پیسندیدہ ''

والوں میں سے بھے۔ اور اُن سب کوہم نے اپنی رحمتِ خاص میں شامل سر رہا ۔ بلا شبہ وہ سب نیکو کاروں میں سے ہیں یُ

سیرنا اسمعیل علیه السلام کی وفات ایک سوچیتیں ماہ اسلام نے کی عمرین وفات یائی ،اس وقت اُن کی اولاد کاسلسله دوردراز علاقوں ہیں جیس کی عمرین وفات یائی ،اس وقت اُن کی اولاد کاسلسله دوردراز علاقوں ہیں جیس گیا تھا جس میں حجاز ، شام ،عراق فلسطین اور صریک شامل ہیں ۔
عرب مؤرضین سے میان سے مطابق حضرت اسمعیل علیه استلام اپنی مال حضرت ہاجرہ سے میادی میں ،والٹراعلم ، حضرت ہاجرہ شریف میں مذفون ہیں ،والٹراعلم ،

مانج وعبكر

۔۔۔ بہرا وہ گھر خدا کا بیت اللہ کی ستقل تعمیر سے بہلے گونیا کے مختلف حصوں میں بتوں اور ستاروں کی پرسش کے لئے ہیں اور مندر موجود تھے اور اُن ہی کے نام پر طری بڑی عماریں بنائی جاتی تھیں۔ مقر روں کے بہاں سورج دیوتا اور عبل دیوتا کے ہیں اور مندر تھے، کنعانیوں نے مفہور قلعہ بعلبہ میں اسی بعل کامشہ ہور ہیں بنایا تھا جو آج یک یا دگار طلا آد ہا ہے عزبہ کے مندر پرچڑھا وے چڑھا تے تھے ہے عزبہ کے مندر پرچڑھا وے چڑھا تے تھے جسکی شکل انسان کی اور حبم مجھلی کا تھا۔ حکم مندر پرچڑھا وے چڑھا تے تھے جسکی شکل انسان کی اور حبم مجھلی کا تھا۔ حکم ختر پر ایسی میں بناکر پوجا ہے اور اسکے حتر بڑا ہم کی تعمیر کیا۔ اور اسکے عزبہ کے ساتھ جاند کو بھی دیوی بناکر پوجا ہے اور اسکے لئے بڑا ہم کے تعمیر کیا۔ حق میں بنائی جو ایسی میں بنائی ہو جانے اور اسکے ساتھ جاند کو بھی دیوی بناکر پوجا ہے اور اسکے ساتھ جاند کو بھی دیوی بناکر پوجا ہے اور اسکے ساتھ جاند کو بھی دیوی بناکر پوجا ہے اور اسکے ساتھ جاند کی بیا کہ بیا ہے کہ بیا کہ بیا ہے کہ بیا کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہی بیا ہی بیا کی بیا کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہی بیا کہ بیا ہیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہو کہ بیا ہی بیا ہی بیا کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہی بیا ہے کہ بیا ہی بیا ہے کہ بیا ہی بیا ہی بیا ہی بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہی بیا ہی بیا ہی بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہی بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہو کہ بیا ہو کہ بیا ہے کہ بیا ہو کہ بیا ہ

یں سیریں۔ فارس نے آگ کی تقدیس مان کر آت کدے تیار کئے۔ رومیوں نے حضرت سیج اور پاک دامن مربم سے ثبت بناکر کلیساؤں برایت کے چراغ

کوزبنت دی به بندیوں نے مہاتما بدھ ، رامچندر ،مہاویر ، اور مہادیو کو دیو تا اور او تار مان کراور کالی دیوی ،سبتا دیوی اور پارتی دیوئی سے ناموں سے ہزاروں بتوں کی بیت شکے گئے بڑے بڑے مندر شمیر سخئے ۔

ں پر سے برت برت برت میں اسے ہوئے۔ گران سب کے بڑکس صرف خدائے واحد کی پرتش اور اُسکی کیتائی کے اقرار ہیں سپر نیاز حفکانے کے لئے دنیا سے بتکدوں ہیں پہلا اور سب سے پہلا تھر جو النّہ کا گھر کہلا یا دہ بہی ؓ خانۂ کعبہ "ہے۔

َ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْ وُه دِنيا مِين تَصْرِسَتِ بِبِهِ لأخدا كاللّٰ خليل ايك معمار تضاجس بنهاكا"

تعمید کوسی است مشرفه کا وجود انسانی تاریخ سے بہت پہلے بیان کراجا تا ہے۔

زمین پیدا بھی نہ ہوئی تھی اس خطہ پرصرف پائی ہی پائی خطا اسوقت
موجودہ خانہ کعبہ کی جگہ پائی پر ایک کشیف قسم کا حھاگ رہا کر زاسھا ۔ یہ ہی جگہ کعبۃ اللہ
کی تھی ۔ کہا جا تا ہے کہ ملا کئۃ اللہ اسکے اطراف طواف کیا کرتے ہے ۔ پھر جب اللہ
نے زمین بیدا کرنی جاہی تو اسی جھاگ والے حصتے سے زمین کا آفاز ہوا اور پائی
کے تا جصے پر زمین آگئی ۔ کعبۃ اللہ و لیے ہی اُنھراہوا برقرار رہا جو جھو لیے طبیلے
کی تا جسے پر زمین آگئی ۔ کعبۃ اللہ و لیے ہی اُنھراہوا برقرار رہا جو جھو لیے طبیلے
کی تاکل میں تھا۔

جب حضرت آدم علیہ الت لام زمین پراُ تارے گئے تو التُرتعالے نے اُنھیں براُ تارے گئے تو التُرتعالے نے اُنھیں بدرایعہ وحی اُس جگہ کی نشان دہی گئی حضرت آدم علیہ السالام نے اینے ہوئے مختوں ہے اُسکو کچھ او سنجا کیا۔اور وہ اور اُن کی اولا د التّرتبعالے کے حکم سے اس کا طواون کرا کر تر مختر

بنى بيت رب العرش عشرٌ فَكُنُ هُمَر ملائِكة الله الكوام و أدَّمُ فَتَيَتُ فَا بَرَاهِ يعِرُ تُمُ عِمالِتِ فَتَيتُ فَا بَرَاهِ يعِرُ تُمُ عِمالِتِ قُصَى وَتُريشٌ قَبُلُ هذين حَبُ رُهَمُ وعبد الله بن الزبير بَىٰ كَنَا بناءُ حَجَّاجُ وَهُلذًا مُسُتَّسَمُ

التدكا يهجهر دمنل مرتنبه ازمير نونتعمير كبياكيا-

(۱) فرستوں نے (۲) حضرت آدم علیہ التلام نے (۳) حضرت شیث علیہ التلام نے (۳) حضرت شیث علیہ التلام نے (۵) قوم عمالقہ نے (۴) قبیلہ کرھم نے (۵) قضی نے (۸) قریش نے (۹) عبدالترین زبرشنے (۱) جاج بن یوسف کی کھم نے (۵) قضی نے (۸) قریش نے (۹) عبدالترین زبرشنے (۱) جاج بن یوسف کی کہا ہے۔ وہ اور اُن کے صاحبزا دے حضرت اسمعیل علیہ التلام اسکے معمارا آول شمار کئے گئے ہیں۔ آگر جو کھبتہ التہ کا وجود دنیا کے دوز اقل ہی ہے تسلیم کیا گیاہے نیکن اس کی با قاعدة معمہر وعمارت سازی حضرت ابراہیم علیہ التلام سے قبل وجود میں نہ آئی تھی۔

بنها جا آہے کہ جس پتھر پر کھڑے ہوکر حضرت ابراہیم علیہ التا ام کعبتہ التہر کی دیوار آٹھا رہے منفے و ہ غیر محسوس طور پر بلند ہوتا جا تا تھا یہاں تک کہ کعبتہ التہر کی دیوارس ابنی بلندی تک آگئیں۔ یہ ہی پیھر آج 'مقام ابراہیم'' کے نام سے معروف ہے جنتے پتیجھے طواف کی دورکعت ا داکی جاتی ہیں ۔

جب تعمیراس مدیر پہنچی جہاں آج تجراسو دنصب ہے تو جبرئیل ابین نے اُن کی رہنمانی کی اور تجراسو دجو قریب کی پہاڑی ہیں منجانب الندمحفوظ تھے۔ 'کال کر دیا۔ یہ جنت سے نازل شدہ بچھرتھا گاکہ وہ کعبۃ اللّٰہ میں نصب کر دیا جائے۔

تعبہ اللّٰہ کی موجودہ تعمیر کے بارے میں نیفصیل کھی ٹاریخی جیٹنیت رکھتی ہے۔

نبی کر بم صلی اللّٰہ علیہ ولم کی عمرشریف ۲۵ یا ۳۵ سال کی تعنی اُس وقت کسی
طرے سیلاب کی وجہ سے عمارت کعبہ منہ دم ہوگئی تھی 'یہ وہ زمانہ تھا جبکہ قریش اُ سکے
متولی اور گراں کا دیھے۔ سیلاب سے اختتام پر قریب سے سرداروں نے اسس کی
از سرنو تعمیر کرنی جاہی اور اسکے لئے انھوں نے یہ طے کیا کہ اِس تعمیر میں حلال ویک
روبیہ استعمال کیا جائے۔

اس طرح تنعیبر شروع کی گئی کیکن سرمایه کم نابت ہوا اور حلال روبیہ فرا ہم نہ ہوسکا منٹورہ کے بعد امھنوں نے طے کیا کہ جسفدر بھی تعمیر ممکن ہوسکے کر دی جائے چنانچہ اساس ابراہیمی کا کچھ حصتہ رجسکا نام حطیم کعبہ ہے، تعمیرے رہ گیا بنعمب رکی اساس بیں دوسرانغیریہ کربائحہ خانہ کعبہ کے قود دروازوں ہیں سے ایک فرق دروازہ بند

کر دیامتثر فی در وازہ باقی رکھا۔ "بیسراننغیر یہ کیا کہ خانہ کعبہ می چوکھٹ کو اپنی انسلی حالت سے تبدیل کرکے میں تنازیز ان میدا

نواعد آبراہیمی میں یہ تبدیلی اپنے اپنے مفادات کے بخت کی گئی تھی اسلام وہ جسکو چاہتے مقے خانہ تعبہ کے اندرجانے سے روک دیتے بخے ۔ انار شرک سے پاک کیا گیا اور اسمیں داخلہ کو عام کر دیا گیا۔ نیکن آخروقت بعبی چراہ خ نبوت گل ہونے تک تعمیری شکل وہی ہاتی رہی جسکو قرتیش نے قائم کی تھی ۔ نبوت گل ہونے تک تعمیری شکل وہی ہاتی رہی جسکو قرتیش نے قائم کی تھی ۔ خلافت راہ شدہ میں جبکہ اسلام مکہ مکرمہ وید بینہ منورہ سے نکل کر عرب وعجم میں جیل گیا تھا اُسوقت تھی اس جانب توجہ نہ دی گئی ان او وار میں خانہ کعب ہے۔ کے یہ تینوں تغیرات بیستور باتی رہے بسے چر ملب شام میں حضرت معاویہ وہ کی ۔

حضرت معاویہ بن سفیان نے اپنی وفات سے قبل اپنے بیٹے بزیر بن معاویہ کو اپناجائٹین وخلیفہ نا مزد کیا۔ جنانچہ و فات سے بعد بزید بن معاور ثبری بیعیت لوگوں نے قبول کر لی کئی اسمی بیعت سے مہت سے لوگوں کو اختلاف بھی تھا۔

بعض اسلامی ریاستوں ہیں اسمی مخالفت بھی ہوئی کیان اسکو قوت سے دبادیا یا فاص طور پر مدینہ منور ہیں اس بیعت کا استقبال نہ کیا گیا۔ مکہ مکرمہ ہیں جو دار الاسلام و دار الایمان کی چنیت رکھتا تھا اسمیں بھی اس بیعت کو کوئی اہمیت نہیں دی گئی اور لوگ کے سی چنے چے فلیفہ کی تالش ہیں تھے۔ حضرت عبدالٹرین زبیر اس وقت قریش کے لوگ کے سی بیا عتما دا ورصاحب علم تقوی بزرگ کی چینیت سے معروف تھے مکمکرمہ میں لوگوں نے اصراد کر ہے ابخے بیعت کرلی اور اسمیس اینا خلیفہ نا مزد کرلیا۔

اس بیت کی اطلاع جب پزید بن معاویٌ کو ہوئی تو وہ غضبناک ہوا اور ابت دائد مصالحت و بات چیت کے لئے اپنے فاصد کو مکہ مکر مر دوا نہ کیا ، لیکن یہ بات چیت ناکام رہی ، آخر کاریزید بن معاویُّ نے اپنی فوج کے ایک سروار مسلم بن عُقبہ کو حضرت ابن زبیرہ کی گرفتاری کے لئے ایک بڑی فوج دے ریک مکر مہنی طوف روا نہ کیالیکن درمیان راہ مسلم کی وفات ہوگئی ۔ وفات سے قبل اُس نے اپنی فوج کے ایک اور سروار قصین بن نمیر کندی کو اس مہم کے لئے نامز دکر دیا اس نے مکہ تحرمہ پنچگر سخت مملہ کیا ۔ حضرت عبدالنہ بن زبیر نے چند دن اس کا مقابلہ کیا بھر بعد مشورہ حرم شریف ہیں اپنے اصحاب کے ساتھ بن زبیر نے خوش نے ابن زبیر اور اُن کے ساتھیوں کا محاصرہ کر لیا اور اپنا دباؤ سخت تر دیا ۔ کہا جا تا ہے کہ حصین اور اُس کے ساتھیوں نے پہاڑ کے اوپر سے خبین دیو تی) میلائے جس سے خانہ کو بہا اور اُس کے ساتھیوں نے پہاڑ کے اوپر سے خبین دیو تی) علائے جس سے خانہ کو بہا در کو بی) علائے جس سے خانہ کو بہا در کو بی)

اسی طوفان برتمیزی بین حصین کو ملک شائم سے خبر ملی که بیزید بن معاویہ رہ کا انتقال ہوگیا ہے۔ اس خبرسے فائدہ آٹھا کر حضرت عبدا لیٹر بن زبیر شنے قربیش کے جبنہ بااٹر افراد کو حصین کی طرف بھیجا یا کہ گفتگو کریں ان بین شہور صحافی رسول حضرت عبدالتہ بن عمرور پھی سٹر یک تھے اُتھوں نے تحصین کو ملک شنام والیس ہوجانے پر راضی کرلیا اس طرح یہ نامرضی فضیہ افتتام کو میہ ہجا۔

ہ ما مرت بیرہ مرق تسیبہ مسام کو پڑھیا۔ اسکے بعد حضرت ابن زبیررہ نے قرایش کے باا ترافراد کو جمع کیا اور اُنھیں اپنی خالہ اُم المومنین عائث مصدلیقہ کی وہ روایت بیان کی جسکو وہ اکٹرسناکرتے تھے۔ ماکٹہ صدلیقہ رہز فراتی تھیں کہ رسول کریم صلی التّرعلیقِم کو بہ خواہ شن کھی کہ خانہ کعبہ کو ابراہمی بنیاد پر پورا کر دیا جائے، قرائی انے خرج می کمی کے باعث حطیم کوخانہ کعبہ سے نعارج کر دیا تھا لیکن اسکو گراکر از سرنو تعمیر کرنے میں بعض نومسلموں کے فلوب میں شکے شبہ اسکو گراکر از سرنو تعمیر کرنے میں بعض نومسلموں کے فلوب میں شکے شبہ رہے۔ بہدا ہوجانے کا اندیث متھا اس لئے آپ نے اپنا ارادہ ترک

کر دیا۔ اب جبکہ کم محرمہ میں خلافت کمل ہوگئی ہے تو مجھر رسول کرمے میلی الٹرعلیہ ولم کی نواش کو پوری کر دینا چا ہئے اور الٹرکے گھر کا حق بھی مہی ہے کہ اسکواپنی قدیم بنیا دول پر قائم کردیا جانا چا ہیئے۔ اس رائے کی اگرچہ اکٹر صحابہ نے تائید ٹی سیس معفس نے خاص طور پر حضرت عبد الٹرین عباس نے نے مخالفت می کہ اگر سیاسا جل پڑا تو م آنے والا ضلیفہ اپنے پیشروئی مخالفت میں خانہ کھیہ کو تھیل کا میدان بنالے گا۔

آخرکاریہ طے ہوا کہ خانہ کئیہ کو بنارا براہمی پر قائم کردیاجائے۔ اسکو گراکر قوا عدِ ابراہمی پرازسرنو قائم کردیا گیا۔ یہ خانہ کعبہ کی نویں منعمیہ تھی جوجفرت عبدالنّدین زبری کے ہا تقول پوری ہوئی۔

اس طرح خانه محعبہ کئے وہ تینوں تغیرات ختم کرد ئے گئے اور خانہ کعبہ اپنی ہملی حالت پرلوٹ آیا۔ بھر ملک سٹ م بیں پزید بن معا ویٹے کی وفات کے بعد لوگوں نے اسکے بیٹے معاویہ بن پزید کو اپنا خلیفہ تسلیم کو لیا لیکن اِس خدا ترس بیٹے نے تین ون کے بعد یہ محمد کو ملافت سے دستبرواری کرلی کہ بیں ایسی خلافت پر رہنا نہیں جا ہتا جسکی بنیا دظلم اور فسا دیر رہی ہے ۔

ا ملے بعدلوگوں نے عبدالملک بن مروان کو اپنا خلیفہ بنالیا عبدالملک بن موا
نے مدینہ منورہ کی گورنری کے لئے حجاج بن یوسف کو نا مزد کیا اور کم دیا کہ بڑیر بن مواقی کی ناکام مہم کو پوراکرنے کے لئے مکہ مکر مہ روانہ ہوجائے ۔ حجاج نے مکہ مکر مہ بہنچ کے حملہ کیا اور شدید معرکہ کے بعد مکہ مکر مہ پرقبضہ کر لیا ۔حضرت عبداللہ بن نر بیرہ اور ان کے بہت سادے ساتھی اس معرکہ ہیں شہید ہوئے ۔ یہ واقعہ سائے جم کا ہے ۔ ان کے بہت سادے ساتھی اس معرکہ ہیں شہید ہوئے ۔ یہ واقعہ سائے جم کا ہے ۔ اس اس نے بعد حجاج نے اپنے امیرعبدالملک بن مروان کو لکھا کہ ابن زبیرہ نے بہمارے آبار واجدا و قربیش کی بنار کر دہ تعمیر کو بہومنہ دم کرنے خانہ کعبہی تعمیر جدید

خليداتيل ہرایت کے تیراغ کی ہے اس بارے میں امیرالمومنین کی کیا را سے ہے و عبدالملك بن مروان نے حكم دیا كہ خانه كعبہ تو ابنے آبار واجدا د كی بناكروہ بنیاد وں پر دوبار ہ معیرکر دیا جائے ۔ جنا شخہ حجاج بن پوسٹ نے خا نہ کعبہ کومنہ دم کرکے بناية قريش پرازسپرنوشعمير کرديا اور استعميري وه بينوں امور شامل کرد ہے گئے۔ (۱) حطيم كوخانه كعبه سے جُداكر ديا گيا ۲۷) خانبرگعبہ کے دونوں درِ واز وں میں سے ایک مغربی دروازہ بند کر دیا گیا۔ رس كعبه كي جو كهط كوسابقة كى طرح بلندكر ويأكبا . بہ خانہ کعبہ کی وٹٹویں تعمیر خدید مقی جومشہور زبانہ گور نرجیاج بن یوسف کے اصفول عمل میں آئی اور آج سے بہالھ مطابق سے واء بین بنیا دوں پر قائم ہے۔ بمهاجا تاہے کہ استعمیرے بعد عبد الملک بن مروّان عمرہ ا داکرنگی غرفر مكه مكرمه آیا. نبیت الشرکے طوا ف سے بعد پرکلمات محے:۔

قَاتَلَ اللَّهُ ابنَ الزّبيرحيثُ يَكُذِبُ عَلَى أُمِمْ

الْمُؤُمِنِينَ عَالِمُسْتِهِ.

" التارابن الزبير كالمراكرے اس نے ام المؤمنين حضرت عالُثَةٌ برحبون بات ننسوب كردى كه دسول التُنصلي التُرعليه ولم نے تعمير كعبہ <u> شحسکسلے</u> میں اپنی خوام ش کا اظہار فرمایا مخا ؟

سکن مارث بن ابی ربیعہ ﴿ نے جومو قعہ برموجود صفحے فوری اسکی تردید کر دی اور فرمایا کے میں نے خو دمھی حضرت عا کنٹہ رہز سے بیڈ عدریث سنی ہے .

اسپرعبدالملک بن مروان نے افسوس کا اظہار کیا اور تحینے لگا اگریہ بات محجه يهلي معلوم بوجاني توبين اس تنغيري جرأت بذكرتاً ي

جنانج جب یہ واپس ملک شام پہنچا تو وہاں کے علمار سے مزید مشورہ لیا كەكىيا ئىس تىھىرتىجىدۇلىقى اسلى ھالت پرتىمىركىردۇن ؟

لیکن تحسی نے بھی اسکواس بات کی اجازت نہیں دی. وہ ہمیشہ اسس پر

ا پنے دورِ مکومت میں امام مالک بن انس سے فتویٰ لینا چا ہاکہ فانہ کعبہ کو بنا پر قریب سے تبدیل کرکے قوا عدِ ابراہیمی پر پوراکر دیا جائے؟
اسپرامام مالک نے نے سختی سے منع کر دیا اور اس عمل کو خانہ کعب کی توہین اور تحقیر قرار دیا۔ اسکے بعد سے لسلہ ہمیشہ کے لئے فتم ہوگیا۔
د تعیص الاند ارقیان کشیں

اور آج خانه کعبہ بنایہ فرنیش ہی پر قائم ہے مغربی دروازہ بندہے بعطب م خانه کعبہ سے باہرہے ۔ اور کعبہ کا دروازہ بلند چوکھٹ پر قائم ہے ۔ فانه کعبہ سے باہرہے ۔ اور کعبہ کا دروازہ بلند چوکھٹ پر قائم ہے ۔ ویڈیو النُحَهُ ٹی فی الاُدُی والاُخِدَۃِ ۔

إسعادت حضرت ابراتهم عليه التلام كأعمر شريف جب نتثو برس کی ہوئی توالن^یرتعالے <u>نے فرشتوں نے ذرایعہ</u> الهضين بث ارت بهنها ني كه حضرت سارة كيطن مسيم مهمين أيك اورلا كالهوكا اس کا نام اصحٰق رکھنا۔ اسوقت حضَرت سارہ کی عمر شریف نوے سال تھی ۔حضر سے اسخق عليه التسلام البيخ بڑے مھانی حضرت اسمعیل علیہ التسلام سے ممریس تیراہ سال حجو ہے تھے ۔ کھنرت ابراہیم علیہ اتکام کوحضرت اسحٰق کی بٹ ارت مجھی حضرت اسمعیل علیه ات کام می طرح ملی حب حضرت اسمعیل می بشارت ملی مفتی تو غُلاَ هُرُ جَلِيْهُ ﴿ ايك بُرُو بِارْلِوْكِ) كِ الفاظ سِيلِي بَهِي . اورحضرت اسخق كى بثارت غُلاَهٌ عَلَيْهُ وَعَلَمُ وَالْالرُّكُا) كِ الفاظ سِيمَا حِلَى حَلَى مَعْصِيل يرسے :-تحضرت ابراهيم عليهالتبلام اورحضرت لوط عليه انسلام كا تاریخی زباینه ایک ہے حضرت لوط علیہ انتسلام ستید نا ابراتہم علیالسلام مے بھتیج ہوتے ہیں جو شہر ساروم کی طرف مبعوث کئے گئے سے قوم لوط كى سرحتى ولغاوت حب اُس حد كو پہنچ گئى جوعلم الله لميں کسی قوم سے تباہ و برباد کرنے کی آخری حدمہونی نے توالٹر تعالیے نے اُس ے ہے ہے کواوندھاکر دینے کے لئے چند فرشتے بھیجے اور ساتھ ساتھ حضر اسخِق علیہ التلام کی بٹ ارت بھی حضرت آبراہیم علیہ التلام کوٹانے کا کلم دیا۔ فرضتے ان ان شکل میں حضرت ابرالہم علیہ انسلام کے

مرآئے جو نکہ ابندارً انتخوں نے اپنا تبعار ف نہیں کرواہا تھا اسلنے

حضرت ابراہم علیہ الت لام نے خیال کیا کہ یہ کوئی اجنبی مہمان ہیں۔ مہمان ہیں۔ سلام کاجواب دے کر فوراً ان کی ضیافت کے انتظام میں مشغول ہوگئے ،اور کچھ دیرنہ گزری تھی کہ ایک بھنا ہوا بچھٹوا ان کی ضیافت کے لئے لئے آئے ، لیکن مہمانوں نے دسترخوان پر ان کی ضیافت کے لئے لئے آئے ، لیکن مہمانوں نے دسترخوان پر اپنا ہاتھ نہیں بڑھایا اور کھانے ہیں تاتل کیا ، حضرت ابرا ہم علیہ الت الم کوان پرسٹ ہونے لگا اور بیا ندیشہ ہوا کہ کہیں یہ علیہ الت الم کوان پرسٹ ہونے لگا اور بیا ندیشہ ہوا کہ کہیں یہ کھنے ون میں کچھ خون میں اسے دل میں کچھ خون ما بھی بردا ہوا .

آس زمانے کا دستور تھا کہ جب کوئی شخص کسی کی ضیافت قبول کرنے سے انکار کرتا تو یہ مجھا جاتا کہ وہ مہمان کی حیثیت سے نہیں آیا ہے بلکہ قتل وغارت کی نیت سے آیا ہے .حضرت ابراہیم علیہ السّلام نے فرمایا کھانے کیوں نہیں ؟

مہمانوں نے اس استقبال کا یوں جواب دیا:۔ ورونہیں ہم تیرے دب سے بھیجے ہوئے فرسننے ہیں راسلے محانے پینے کی ہمیں ضرورت نہیں بڑتی ہم تو قوم لوط پر عذاب۔ نازل کرنے آئے ہیں "

اسپرحضرت ابراہیم علیہ استام کا وہ خوت دورہوا جو دل میں بیدا ہوا تھا، اسکے بعد فرست توں نے حضرت ابراہیم علیہ الم کوایک لوٹے کی بین ارت دی جو ذی علم ہوگا مطلب یہ تھا کہ وہ دیگر انبیار کی طرح نبی ہوگا کیونکہ انسانوں میں سہنے زیادہ کم انبیار کرام ہی کو ہو اے اس لوٹے سے مراد حضرت اسحٰق علیہ السّلام ہیں ۔ کرام ہی کو ہو اس حالت میں اوٹے کے کیا تم مجھکو اس حالت میں لوٹے کی بین ارت دیتے ہو جبکہ مجھ پر بڑھا یا آگیا ہے ؟ ایسی مالت میں بوٹے کی بین ارت دیتے ہو جبکہ مجھ کو اس حالت میں اوٹے کی بین ارت دیتے ہو جبکہ مجھ کو سے میں کو اوٹے کی بین ارت دیتے ہو ؟ فرشتے بولے ہم آپ کو مالت میں مجھکو کس چیز کی بین ارت دیتے ہی ہو ؟ فرشتے بولے ہم آپ کو اس حالت میں میں کو ایسی میں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لائد کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لائد کا میں اس کو ایک کو لائد کا میں اس کو ایک کو لوٹ کا اس کو ایک کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لائد کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کو لوٹ کا امر واقعی کی بین ارت دیتے ہیں عنقریب تمہاری بیوی سارٹ کیا تھوں کو اس کو اس کو اس کی بین کا دیتے ہیں عنقریب تمہار کی بیا کیا تھوں کیا تھوں کی بین کی بین کیا تھوں کی بین کی بین کی بین کیا تھوں کی بین کی بین کیا تھوں کی بین کیا تھوں کی بین کی بین کیا تھوں کیا تھوں کیا تھوں کیا تھوں کی بین کیا تھوں کیا تھوں کی بین کی بین کی بین کیا تھوں کیا تھوں کی بین کیا تھوں کی بین کیا تھوں کیا تھوں کی بین کی بین کیا تھوں کی کی بین کیا تھوں کی کیا تھوں کیا تھوں کی بین کیا تھوں کیا تھوں کی کیا تھوں کیا تھوں کیا تھوں کی کیا تھوں کیا تھوں کی کیا تھوں کی کیا تھوں کی کی کی کیا تھوں کیا تھوں کی کیا تھوں کی کی کی کی کیا تھوں کی کی کیا تھوں کی کیا تھوں کی کیا تھوں کی کی کیا تھوں کی کی کی کیا تھ

بهو گاآپ ناآمید پنه موں۔

حضرت ابراسميم عليه ات لام في فرما يا يجلا اين دب كي رحمت سے کون نا اُمید ہوسکتا ہے ؟ سوائے گمراہ توگوں سے جب پیگفتگو مهور سی تعنی توستیده سارهٔ قریب می کھڑی مین رہی تھیں اولا دی خبرسنگر حیرت سے بولتی پیکارتی آئیں با نکھے اس تعجب کو د ورکرنے سے لئے فرشتوں نے اِنھیں بھی میں خوشخبری من ای که تمهارے بال اسلحق نامی حلیل القدر بدی بروگا بلکه مزیدیه مجعی خوشخبری دی کہ اس بیٹے کے بعد یو نامجی لیفوع نامی عالیشان بنی برگا۔ اس وہری بن ارت پرستیدہ سارہ نے فرط حیرت اور

تعجب میں اپنے مامقے پر ہاتھ مار ااور سحینے لگیں ہائے میری محم بختی کیا اب میرے ہاں اولا دہوگی جبکہ میں بڑھیا اور بانجھ محمی ہوں اور

یہ میرے میاں تھی تو بوڑھے ہو چکے ہیں ؟ قرشتوں نے کہا تعجب نہ کرو التّٰرکا یہی نشاہے اور

التركافضل وكرم توتم ابل خاندان پر تهمیشه بی رباسج.

فرشتوں نے سبیدہ سارہ کو پنوشخبری اس کئے بھی سانی كراس سے بہلے حضرت ابراہم علیہ اتبام كى دوسرى بيوى سيده المجراة معضرت المليل بيدا بوطيح تنظ مكركتيده ساراة التوقت یں ہے اولا دمخیں اور اس وجہ سے وہ ہمیشہ ملولی خاطب ریا

كرتى تقيں " فرشتوں می آید، حضرت ابراہیم علیوات لام می ضیافت، سیدہ سارہ کا تعجب ، اورُ فرستوں کی بٹ رُت کا ذکر ذیل کی آیات میں اس طرح موجو دہے :-وَلَقَدُ حَاءً ثُنَّ مُ سُلِّنًا إِبْرُهِ يُعَرِباً لُبُشُرِي قَا لَوَا

سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِتَ أَنُ جَاءً بِعِجُلِ حَنِيدٍ ﴿ الْحُ د مود آیات ع<u>۹۶ تا ۱۳۲</u>۵)

قرافی مضمون اور بلاست بهارے فرشتے ابراہیم سے پاس بشار

كے كرآئے أنحفوں نے ابراہيم كوسلام كيا اور ابراہيم نے سلام کا جواب دیا محفوری دیر کے بعد ابراہیم مجیرے کا مجنا توشت لائے، اورجب اُنھوں نے دیکھا کہ مہمانوں سے بانقراُس طرف نہیں بڑھتے توا براہیم نے اُن کو اجنبی محسوس کیا اور اُن سے خوف کھا یا۔ مہمان تھینے لگے نوٹ نہ کر وہم لوظ کی قوم پر غداب تیلئے بھیجے گئے ہیں۔ اور ا براہیم دعلیہ السّلام) کی بیوی دسارہ) جو قریب بیں تہیں تھری خیں ہنس پڑیں بیسہم نے اسکوانتخیٰ کی اور اسکے بعد اسکے بیٹے بعقوب

ے رہ ساریخ تھنے لگیں ہائے میری کم بختی کیا میرے اولاد ہوگی جبکرمیں بڑھیا ہوں اور بیمبرے شوہر ہیں بالکل بوڑھے، واقعی بیمھی

عجیب بات ہے۔ فرسٹنوں نے کہا کیا تم خدا کے کاموں میں تعجب کرتی ہو؟ سخر کرتہ میں اس خاندان کے لوگوں برتو اُلٹر د شعالے ، کی رحمت اور اسٹی برکتیں ہیں۔ بیشک وہ تعربین کے لائق بڑی شان والاہے ."

هَلُ أَتَلْكَ حَدِيثُ صَيْفِ إِبْرَاهِيتُمَ الْمُكُرُمِينَ الح

ل الذادبات آبات شکا تا شنتا)

كيا ا براتبيم دعليه السلام) كم معززمها نون د فرشتون) كي حکایت آپ یک پہنی ہے <u>ہ</u>

جب کہ وہ اُن کے پاس آئے بھراُن کوسلام کیا ،ا براہم د علیه السلام، نے تھی کہاسسلام دا ور تھنے گئے کہ، نتم انجان لوگس معلوم ہوتے ہو؟

مجرابراتهثم ابيغ تحفركى طرن جلياورايك فربه تجيزا تجهنا ببوا لائے اور اُس کو اُن کے یاس لاکر رکھا کہنے لگے آپ لوگسے کھاتے کیوں نہیں ؟ دجب بچرمجی نہ کھایا) تواُن سے دل بین خون پیدا ہوا۔اُ بھوں نے کما نم ڈرونہیں (ہم انسان نہیں بلکہ فرسٹتے ہیں) اور یہ (محہسکر)

بدایت کےجراغ

ان کو ایک فرزندگی بن ارت دی جو بڑا عالم دمیعنی نبی) ہوگا۔ اتنے ہیں ان کو ایک فرزندگی بن ارت دی جو بڑا عالم دمیعنی نبی) ہوگا۔ اتنے ہیں ان کی بیوی دحضرت سارہ جو کہیں کھڑی کسن رہی تخلیں اولا دکی خبر سنگر) بولتی پرکارتی آئیں تھے دحب فرشنوں نے ان کوتھی یہ ہی خب رسنگر) بولتی پرکارتی آئیں تھے پر ہاتھ مارا اور سمنے لگیں کہ دا قال تو المجھیا سنائی تو تعجیب سے ماتھے پر ہاتھ مارا اور سمنے لگیں کہ دا قال تو المجھیا

د تھی باتخوتھی ہوں ۔ فرشتے تھینے لگے تمہارے پروردگارنے ایسے ہی فرما باسے اور تجھ شک نہیں کہ وہ بڑا حکمت والا بڑاجاننے والاسے ڈیعنی اگرجہ یہ بات تعجب کی ہے مسکر تم تو خاندانِ نبوت بیں رستی ہوتم کو تعجب نہ

بهوناچاہیے)

. وَنَيِّهُمُ مُ عَنْ صَيْفِ إِبْرُهِ يُحَدِ الْحُ دالحِ آبات الله آبات الله

کہاہم تو تم سے خالف ہیں۔ ایھوں نے کہا کہ آپ خالف نہ ہوں کیو کہ ہم دفر شتے ہیں)

آ کوایک فرزندگی بشارت ویتے ہیں جو ٹراعالم ہوگا۔ ابراہیم محبنے گلے کیاتم مجھ کو اس حالت پر دفرزندگی ابشار ویتے ہوکہ مجھ پر مرمطا یا آگیا ہے سُو دالیسی حالت میں مجھکو انسی ویتے ہوکہ مجھ پر مرمطا یا آگیا ہے سُو دالیسی حالت میں مجھکو انسی

كى بنارت ديية برو ؟

وه بولے کریم آپ کوایک بقینی بات کی بشارت دیتے ہیں

رمیعنی آبیجے ہاں ایک لڑکا ہونے والا ہے ، سُوآپ نا امید مذہوں دمراد حضرت اسمٰق علیہ السلام ہیں ، ابراہیم نے کہا کہ مجملا اپنے دب کی رحمت سے کون نا امید

ہوتاہے بجر محمراہ تو گوں سے "

مثائج وعبستر

(۱) منت ابرائیمی حضرت اسخق علیه الت لام جب آمدیوم سے ہوئے تو حضرت ابراہیم علیہ الت لام نے ان کاختنہ کروایا۔

اسخت کا اصلی تلقظ تصحق ہے ۔ بیعبرانی زبان کا لفظ ہے جسکا عربی ترحمہ تیفئیک د . بین

ہے جیکے معنی دہنستاہے،

التُّدِتُعا لے کے فُرِتُتُوں نے ستیدنا ابراہیم علیہ التلام کوئٹوبرس کی عمر اور ستیدہ ساڑھ کونوے سال کی عمر بیں جب بیٹا ہونے کی بیثارت دی توحضرت ابراہیم علیہ الت کام کونوے سال کی عمر بیں جب بیٹا ہونے کی بیثارت دی توحضرت ابراہیم علیہ الت کام کونوجب و اچنبھا ہوا تھا اور ستیدہ سارٹھ ہنس پڑی تھیں اسلئے بیٹے کا نام اسحق بجویز ہوا۔ یا اس لئے یہ نام رکھا گیا کہ ان کی پیدائش ستیدہ سارٹھ کی مسرت و شا دمانی کا باعت بنی۔ والٹراعلم۔

(۲) س**یرنا اسخق کا نمکاج** قرآن کیم میں استعلق سے کوئی ذکرنہیں اور نہ احادیث میں ایسا کوئی قصر ملت کے اور میں ایسا کوئی قصر ملت ہے جیسا کہ حضرت

اسمعیل علیہ اتسلام کا تذکرہ آیا ہے۔البتہ تورات ہیں حضرت اسحٰق علیہ انسلام سے نکائے کا ایک طویل قصہ مذکور ہے جسکا خلاصہ درج کیا جا تا ہے :۔

"خضرت ابراہیم علیہ السّلام نے اپنے منھ بولے بیٹے الیت زر کوشقی سے فرایا کہ بیں نے طے کمیا ہے کہ اسمٰق کی شادی اپنے خاندان اور باپ دا دا کی نسل میں کروں ؟ اس کئے توساز دسا مان لیکر جا اور شہر فدّان آرام میں میرے بحقیجے بتوئیل بن ناحور کو یہ بیغام دے کہ وہ اپنی بیٹی کا نکلے اسمٰق سے کردے۔ آگر دہ دامنی ہوجائے تو اُس سے یہ بھی کہدیا کہ ہیں اسمٰق کواپنے پاس سے جُدا کر نانہیں چاہتا، لہذا اپنی لڑکی کو میرے ساتھ فرصت کردے ، الیتحرد صفرت ابراہیم علیہ السّلام کے مکم سے مطابق فدّان آرا روانہ ہوگیا، جب آبادی سے قریب پہنچا تو اپنے اونٹ کو سٹھایا ماکہ حالات

رس حضرت استحق علیه السلام کی اولاد اسیده رُفقی مصرت استحق علیه السلام کے توام دولائے علیہ السلام کے توام دولائے علیہ السلام کی حمر شرایت علی الترام کی المرشریت استحق علیہ السلام کی حمر شرایت سامٹ سال می اور بعض نے چانیس سال کھی ہے۔ والتنداعلم ،

تذكرة سير الوظ عليه السيلام الم

تعارف ونوں کا اصلی و طن عراق سے سندا ابراہیم علیہ التلام سے بھتیج ہوتے ہیں و ونوں کا اصلی و طن عراق سے سفر بھرہ کے قریب ارض بائیں "کے نام سے معروف مختا بشہر بائیل کا ندکرہ سورہ بھر ایس موجود ہے۔
حضرت ابراہیم علیہ التلام کا گھراند ثبت برستی و بت سازی بیں مشہور مختا اور ساری قوم ثبت برست مختی ۔ اس قوم کی ہدایت کے لئے حضرت ابراہیم علیہ السلام کومبعوث کیا تحیا تھا ، حضرت ابراہیم علیہ التلام کے سندوجہد ، وغوت و تبلیغ کے تیجے بیں قوم نے ، ماں باب نے ، با در شاہ وقت نے اپھی شہر بدر کر دیا تھا ۔
تیجے بیں قوم نے ، ماں باب نے ، با در شاہ وقت نے اپھی شہر بدر کر دیا تھا ۔
تیجے بیں قوم نے ، ماں باب نے ، با در شاہ وقت نے اپھی شہر بدر کر دیا تھا ۔
تیجے بیں قوم نے ، ماں باب نے ، با در شاہ وقت نے اپھی شہر بدر کر دیا تھا ۔
کو بعد النہ تعالے کے حکم سے حضرت ابراہیم علیہ الت لام علاقہ کنوان میں جاکر تھیم ہوگئے کے بعد النہ تعالی کے کو کو ک کہ در میان شہر سکہ دوم کے کو گو ک کہ دایت کے لئے مامور کے گئے ۔
سے در میان شہر سکہ دوم کے کوگوں کی ہدایت کے لئے مامور کے گئے ۔
سے در میان شہر سکہ دوم کے کوگوں کی ہدایت کے لئے مامور کے گئے ۔
سے در میان شہر سکہ دوم کے کوگوں کی ہدایت کے لئے مامور کے گئے ۔
سید دم کا علاقہ پانچ بڑے سٹہروں میشمل مخاجن کے یہ نام بیان کئے جافہ ہیں ب

ابل سدوم اسدوم ، عموره ، اومد ، صبوبیم ، آلع دیا) صوغر۔ ان شهروں کے مجبوعہ کو قرآن حکیم نے مُحدُّ تفِکہ ، مُحدُّ تفِکہ ت مُحدُّ تفِکہ استرال کیا ہے۔ شدہ بستیاں) کے الفاظ سے حمی ایک جگہ بیان کیا ہے۔ شدہ بستیاں) کے الفاظ سے حمی ایک جگہ بیان کیا ہے۔ سدوم اِن شہروں کا دار السلطنت اور مرکزی حیثیت رکھتا تھا۔ حضرت لوط علیا ہما کا

ہدایت کے جراغ

نے یہیں قیام فرمایا تھا۔ زمین نہایت سرسبزو شاداب تھی۔ ہرطرح سے غلتے اور پھلوں

اِن سنبروں پر اللہ تعالیے نے اپنی نعمتوں کے در وازے کھول دیے ہتھے، دولت وٹروت کے نَث بیں بتکا ہو کریہ لوگ عیش وعشرت ہوا وہوس کے اس کنارے یک پہنچے گئے تھے جہاں انسان غیرتِ وحیاراور اچھے و بُرے کی فطری تمیز بھی کھوبیٹھیا ہج ا پسے خلاف فطرت فواحش میں مبتلا ہو گئے جو حرام و گن ہ ہونے سے علّا و ہ فطرتِ سسلیمہ تے لئے باغث منفرت ہیں۔ اور ایسے گھناؤ نے کام کرنے لگے جوجانوروں بیں تمیں غالباً

رائج نهیں ہیں۔

م. په لوگ خیا ثت میں دوب گئے تھے، بات صرف اس مدیک ہی نہیں رہی بلکہ و و فطرت اور یاکیزگی کی را ہ ہے ہٹکرایک گندی خلانِ فطرت را ہ پر میل پڑے ستھے۔ نوبت ئیہاں تک مینچ گئی تھی کہ اِن کی سارمی رغبت اَورتمام دلینی اَب اسی گندی راہ ہی ہیں تھی ۔ یہ اخلاق کے زوال اور فنس سے برگاڑ کا انتہائی مرتبہ ہےجس سے فسیرو تر سى مرتبه كاتصور نهبين كميا جاكتا - يه قوم البين عبوب وفواحَثْ نے علاوہ ايك خبيث عمل می موجد مقی معینی اپنی نفسانی خواہشات کو پور آکرنے کے لئے وہ عور توں کے بجائے نوعمر لڑکوں سے اختلاط رکھتے تھے۔ دنیا کی قوموں میں اِس عمل کا اُس وقت تک قطعاً کوئی روا ج منه تھا۔ میں بریخت قوم تھی جس نے اس نا پاک عمل کوا بجاد کیا ہے ۔ وہ ا بنی اس بد کرداری کو کوئی عیب ہی نہیں سمجھتے سقے علی الاعلان فحن رہے ساتھ اس

كوكرتے تتے۔ ملكأر دن جهال آج بجرميت يا بجربوط واقع ہے يہى وہ جگہ ہے جس ميں سدُوم اورعامور و کی بستیاں آباد محتیں ایکے قریب بسنے والوں بی آج مجی بداعت قادیم میلے وہ تمام حصتہ جواب سمندر نظرا آیا ہے جسی زمانے ہیں خشک زمین تھی اورائس پرسٹ ہر آباد متفي بيمقام مشروع سے سمندر نه مقابلکه توم لوط پرعذاب آیا اور اس سرز بین محا تخنة ألط وياكيا اورسخت زلزك اورمجونجال آئے جسكے نتیجے ہیں یہ زمین تقدیمیاً چار سومیر سندر سے نیچے جلی تک اور پانی انجرایا ۔ اسی لئے اس کا نام بحرمتیت د بجرمروار ا

اور بحر توطب-

منت فومی جرائم اہل سدوم سے معاشرے میں بیشمار جرائم کی فہرست ملتی ہے لیکن اس معاشرے سے تین جرائم ایسے ہیں جنکو تاریخی حیثیت سے معاشرے سے تین جرائم ایسے ہیں جنکو تاریخی حیثیت سے

اعتبارے اُم الخبائث کا نام ویا جائے۔ اعتبارے اُم الخبائث کا نام ویا جائے برفعلی ۔ ڈوم مسافروں کو لوٹ لینا ۔ تکوم اپنے مجالسِ اقرِل مرد کی مرد سے سِامقہ برفعلی ۔ ڈوم مسافروں کو لوٹ لینا ۔ تکوم اپنے مجالسِ

عام بیں اعلاناً سیب سے سامنے گناہ کرنا۔

قرآن علیم نے ابتحے ہیلے قرار گناہ کی تصریح کی ہے لیکن تیسرے جرم کی تعیین نہیں کی کہ ووکس قسم کا تھا ؟ اجمالاً یہ وضاحت کی ہے کہ وہ اپنی مجالس عام سے کی الاعلا گناہ کرتے تھے۔

ان تین گنا ہوں ہیں سب سے بدترین گناہ پہلاعمل ہے جوان سے پہلے وُنیا میں کسی نے نہیں کیا تھا اورجنگل کے جانور بھی اس سے پر ہمزکرتے ہیں بصنف روح المہ فا نے لکھا ہے کہ پیرگناہ ہاتفاق امت زنا سے زیادہ شدید ہے.

ا سے علا وہ اِن کی بداعمالیوں ہیں آیک عمل یہ بھی بیان کیا جا تا ہے کہ وہ باہر سے آنے والے تاجروں اورسوداگروں کا مال ایک نئے اندازسے لوٹ بیا کرتے ہے جنانچہ اِن کا پیر لیقہ تھا کہ جب کوئی سوداگر ہا ہرسے آکرشہر سدوم میں آگر مقیم ہوجا تا توال سے مال کے ویچھنے کے بہانے سے ہر شخص تھوڑی تھوڑی چیزیں اُٹھا تا اور لے کر چل دیں اور تاجر چیران ویربیٹان ہوگر رہ جا تا ،اب آگر وہ اپنے مال کا شکوہ کرتا اور کہ دورت وہوئے گئا توان کیٹروں ہیں سے ایک آتا اور کوئی ہوئی دوایک چیزیں دکھلا کر کہنے لگنا کہ مجائی ہیں توصرف اتنا لے گیا تھا تو تمہاری یہ چیز موجود ہے۔ وہ تا جررنجیدہ آواز ہیں کہنا کہ میائی ہوئی دوار آتا اور وہ بھی اسی طرح کوئی آفاز ہی اسی کھے جب یہ معالم ختم ہوجا تا تو دوسرا آتا اور وہ بھی اسی طرح کوئی معمولی چیز دھا کروہ کے بیا تھا اور سوداگر ریخ وغم میں اس سے بھی پہلی بات معولی چیز دھا کروہ کا جہا کہ کہا تھا اور سوداگر ریخ وغم میں اس سے بھی پہلی بات معولی چیز دھا کروہ دیا اسی طرح سب لوگ اُس کا مال ہفتم کرجاتے۔

اشی طرح ایک اور وا قعہ مجمئ نقل کیا گیا ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ التسلام اور حضرت سارہ ننے ایک مرتبہ حضرت لوط علیہ التسلام کی خیروعا فیت معلوم کرنے کے لئے ہایت کے چراغ جداقل

ا پنے خانہ زاد الیعرز دشقی کو سدوم بھیجا جب یہ اس بستی سے قریب بہنچا اسکواجنبی سمجھکر
ایک سدومی نے اسکے سر برایک بچھر مار دیا۔ الیعرز کے سرسے خون جاری ہوگیا ، مچر
آئے طرحکر وہ سدومی کنے لگا کہ میرے بچھری وجہ سے تیرا سرسُرخ ہوگیا ہے لہذا مجھے
اس رنگریزی کا معا وضعاد اُنحر؟ اور اس مطالبے پراسکو کھینچتا ہوا سدوم کی عدالت
میں ہے گیا۔ حاکم سدوم نے مدعی کا بیان سنگر کہا کہ بیٹنگ الیعرز کو سدومی کے بچھسے مانے کی اُوت دمنی جاسئے۔

الیعرزیونیک استر کردی است کو خصه میں آگیا اور ایک پنجفرا کھاکر حاکم سے سر بروی مارا اور حاکم کا سریشنج محردیا اور بھر کہنے لگا کہ میرے پنچفرارنے کی جو اُجرت ہے وہ تواس سدوی کے میں بران سریم کے سال میں مرکا ہے ۔

کو دیدے اور یہ کہد کروہاں سے تھاگ آیا۔

یہ واقعات اسرائیلی روایات سے ماخوذ ہیں صمیح ہوں یا غلط نسکن اِن سے پیضرور بیتہ جلتا ہے کہ اہل سد وم کس قدر فحش نظلم ، ہے حیانی ، بداخلاقی اورنسق وفجور بیس مبتلا مقفے کو اُس زمانے میں قوموں نے اُن کی جانب اس قسم کے واقعات عام طور پر منسوب کئے ہیں۔

 ہدایت کے جراغ جلداقال میں جلداقال میں اس میں اس

نیک انسانوں اور نیکی کی طرف بلانے والوں اور بدی پر ٹوکنے والوں کا وجود ٹک گوارہ نہ نفا، وہ مخش کاری بیں یہاں تک آگے بڑھ گئے تھے کہ اصلاح وخبرخواہی کی آ واز کو بھی برداشت نہ کرسکتے تھے اور پاکی وطہارت سے اس تھوڑے سے مقدس عنصر کو بھی نکال ہام من نہ سے مقدس کو گئی میں نہ نابعہ افراق کے اس تھوڑے

کرنا چاہتے تھے جوان کی گندی فضا ہیں ہاتی رہ گیا تھا۔
ایسے تباہ کن حالات ہیں الٹر تعالے کی طرف سے انکو دی گئی مہلت ا پنے آخری حدی ہے تباہ کن حالات ہیں الٹر تعالے کی طرف سے انکو دی گئی مہلت ا پنے ہوئی حدی ہے تباہ کی اور علم الٹر ہیں وہ وہ طبیل جو مجرم قوموں کو دی جاتی ہے پوری ہوئی تواب استیصال کا فیصلہ صادر ہوا بجیونکے جس قوم کی اجتماعی زندگی ہیں پائیرگی کا ذرا سابھی عنصر ہاتی نزرہ سکے مجراً سکے زبین پرزندہ رہنے کی کوئی وجہ ہاتی نہیں رہتی۔ مطرب ہوئے جی کوئی وجہ ہاتی نہیں رہتی۔ مطرب ہوئے جیلوں کے ٹوکرے ہیں جب تک چندا یک اچھے جیل موجود ہوں اس وقت میں تو بھراس

ملائکۃ الندکی آمد اہل سدوم اپنی خرستیوں میں منہک منے ادھردوسری جانب حضرت ابراہیم علیہ است کام کے ساتھ جوشہر سدوم سے بارہ

و کرے کا کوئی مصرف اِ سے سوانہیں رہتا کہ اس کوئسی تجیہ کی جگہ پر اُلٹ دیاجائے۔

پندر ہ سیل پرمقیم تھے یہ واقعہ پیش آیا:۔
حضرت ابراہیم علیہ استلام شکار کے لئے جنگل کی سیرکر رہے تھے کہ دیکھا کہ
ثمین آر می کھڑے ہیں بحضرت ابراہیم علیہ استلام نہایت متواضع دمہمان نواز بھے اور ہمیشہ
اُن کا دسترخوان مہما نوں سے لئے وسیع تھا۔ اس لئے ان بینوں کو دیکھ کر مہت مسرور ہوئے
اور ان کو اپنے گھرلے گئے اور ایک فر ہہ بجیڑا تل بھون کرمہمانوں کے سامنے رکھ ویا۔ مگر
مہمان کھانے کی طرف کچھ مائل منہ ہوئے ۔ یہ دیکھ کرحفرت ابراہیم علیہ استلام نے سمجھا کہ
شاید یہ دیمن لوگ ہیں جو عام رواج کے خلاف کھانے سے انسکار کر رہے ہیں۔ بھر ان سی

بہت مہمانوں نے جب حصرت ابراہیم علیہ التلام کا اصطراب دیجھا تو اُن سے ہنس کر کہا کہ آپ گھبرا میں نہیں ۔ ہم اللہ تعالیے کے فریضتے ہیں اور قوم لوط کی تباہی کے لئے بھیجے گئے ہیں۔ اور مہاں سے شہر سدوم جائیں گے۔

اور آب کو ایک فرزند کی بٹ ارت تھی دینے آئے ہیں جوعنقریب آپ کے ہاں پیدا ہوگا۔اس وضاحت پرحضرت ابراہیم علیہ التبلام کو اطبینان ہوگیا کہ بیکونی قشمن نہیں ہیں بلکہ اللّٰہ کے فرستادہ فرشنے ہیں تو اب انتحالٰبی رقت اور محبت ونتفقت جو ا یک نبی کوامت سے ہوتی ہے اُمجرانی اور اُمھوں نے فرشتوں سے قوم لوط کے بارے میں جھکڑنا مشروع کردیا فیرمانے لگے تم اس قوم کو کیسے بر بادکرنے جارہے ہوجس میں لوط دعلیه السلام) جیسا برگزیده بنده موجود ہے۔ وہ تومیرا برا درزاد همیں ہے اور وہ مجھ پرایمان بھی لاچکاہے تعملائم لوگ الیسی قوم کوئس طرح ہلاک کر و کے جبکہ وہ اُن

فرشتوں نے جواب دیا،ہم پیسب کچھ جانتے ہیں گرالٹے تھالے کا فیصلہ یہی ہے کہ قوم لوط اپنی سرحشی ، بغاوت ، بے حیانی اور فواحش پر اصرار کی وجہ سے

ہلاک کردی جائے

بإن لوط دعليه السلام) اور اُن كا خاندان اس بلاكت سے محفوظ رہے گا۔ البنة لوط دعليه السلام أمي بيوى اپنی قوم کی حمايت اور اُن كا سائھ دينے برقوم كے سائقه عذاب كامزه هيكفي في

قرآن حکیم کا پیمضمون ذیل کی آیات ہیں تفصیلاً موجود ہے:۔

قرآن مضمون فكتا ذَهَبَ عَنْ إِبْرُهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتُهُ الْبُشُرَى يُجَادِ لُنَا فِي ثَوْمِ لُوُطِ الْحُ

(مود آیات پیم^ی تا ملے)

تجبرجب إبرامهم دعليه السلام) سے خوت جاتا رہا اور اُن کو ہماری بٹ رت (ولاوتِ اسخی) کی پہنچ گئی تو وہ ہم سے قوم لوط کے

بیشک ا براهیم د علیه السلام) مُرّد بار ، نهایت نرم ول اور مر طال میں ہماری طرف رجوع ہونے والے محقے۔ د آخر کارہمارے فرشتول نے آن سے کہا) اے ابراہیم دعلیہ السلام) اس معاملے ہیں نہرو بلاتشبہ رب کا محکم آ چکا ہے اور بلاسٹ بہ اُن پر عذاب آنے والا ہے جوٹل نہیں سبکتا ۔

سورة الذاريات مي بهي تذكره موجود ہے: -قال فَسَاخَ ظَلْكُ ثُرُايتُهَا الْسُرُسَلُوْنَ. قَالُوْآ إِسَّا اُدُسِلُنَا إِلَىٰ قَوْمِ مِنْجُدِمِ بِيْنَ. الخ اُدُسِلُنَا إِلَىٰ قَوْمِ مِنْجُدِمِ بِيْنَ. الخ

د الذاريات آيات ملا تا ميس

ابراہیم دعلیہ السّلام ، نے کہا آ ہے السّرے بھیج بوئے فرشو ا می کس لئے آئے ہو ؟ انتخوں نے جواب دیا ہم مجرم قوم کی جانب بھیجے گئے ہیں: اگد اُن پر پیخروں کی بارش کریں ، دایسے بیخر ؛ جونٹ ان کردیئے گئے ہیں تیرے دب کی جانب سے صدسے گزرنے والوں کیلئے (جو اُن کو ہلاک کر دیں) مچر ہم نے جننے ایما ندار مقے سب کو و ہاں سے علیٰحدہ کر دیا ۔ بجر مسلمانوں کے ایک گھرکے اور کوئی گھر ہم نے نہیں بایا دمینی پوراشہر تہیں نہیں ہوگیا) اور ہم نے اس واقعہ میں ایسے بایا دمینی پوراشہر تہیں نہیں ہوگیا) اور ہم نے اس واقعہ میں ایسے بایا دمینی پوراشہر تہیں نہیں ہوگیا) اور ہم نے اس واقعہ میں ایسے

سورة عنكبوت بس مجى يبى تذكره لمثا ہے:-وَ لَمَتَاجَاءً تَ وُسُلُنَا إِبُرْهِ يُمَدَ بِالْبُشُرِى قَالُوْ؟ إِنَّا مُهُلِكُوُ ؟ أَهُلِ هٰدِ فِا الْقَدْيَةِ إِنَّ اَهُلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ. دالعنكبوت آیات مات تا منت)

اُورجب ہمارے فرشنے ابراہیم دعلیہ انسلام ، کے پاک بٹارت داسخق ، لے کرائے کہنے گئے بیشک ہم ہلاک کرنے والے ہیں اس دسدوم ، شہر کے بسنے والوں کو بلاسٹ بہ اس کے باشندے کل لم ہیں۔

ابراسم دعلیه السلام) نے کہا اس شہریں تولوط دعلیہ السلام) د پنجیبر) موجودہے ؟ بولے ہمیں خوب معلوم ہے جو اس بستی ہیں آباد ہے۔ البتہ ہم لوط د علیہ السّلام) اور اُن کے خاندان کو بنجات و بیکے مگر انکی

بیوی کونہیں کہ و ہمی شہریں رہ جانے والوں سے ساتھ ہے !"

ملاً مکھ العد اورسیدنا کوط علی السلام حضرت بوط علیه السّلام السُرتوالے ملا مکھ العد السّلام السُرتوالے دے تیاں دے ہیں قوم اپنی بداخلاقیوں پر اُسی طرح قائم رہی ۔ حضرت بوط علیه السّلام نے یہاں کہ غیرت ولا علیه السّلام نے یہاں کہ غیرت ولان کو اے قوم تم اس بات کو نہیں سوچے کہ ہیں رات دن تمہاری نصیحت وفیر خواہی ہیں سنفول ہوں بھی ہیں نے تم سے اپنی سعی وکوشش کا کوئی بدلہ طلب نہیں کیا ہے اور نہیں کرتے ہیں نظر صرف اور صوف تہاری خیر خواہی اور سنگ افرائے مجرم دلوں پر کچھی نہوتا تھا۔ وہ حضرت لوط علیہ السلام خیر خواہی اور سنگ اور کی وسیح رہی نہوتا تھا۔ وہ حضرت لوط علیہ السلام کوئٹم بدر کرنے اور سنگ ارکرنے کی دھمی و بیتے رہے جب نوبت یہاں تک بہری اور ان کی سیاری خیر ہوتا ہے۔ اس قوم موجی اور ان کی سیاری خور ایک اور کی سیاری خور ایک اور اس قوم موجی ان کی سیاری خور اس قوم موجی اس قوم موجی النے سے قانون خراکا بھنی وحتی نیجہ ہوتا ہے۔ اس میں سیاری خور ابن عالی والنے میں حضرت ابن عباس ہوں النہ صل النہ صل النہ صل النہ صل بی فرستا دہ فرشتے جن سے بارے ہیں حضرت ابن عباس ہوں النہ صل النہ صل النہ صل النہ صل بی فرستا دہ فرشتے جن سے بارے ہیں حضرت ابن عباس ہوں النہ صل النہ صل النہ صل النہ صل النہ صل بی فرستا دہ فرشتے جن سے بارے ہیں حضرت ابن عباس ہوں النہ صل النہ

فرماتے ہیں کہ:۔ فخرماتے ہیں کہ:۔ فخرمنہ یہ مرام حدد میں سرنمام حدد میں اف م ست

بین کشورت جرئی ، حضرت میکائیل ، حضرت اسرافیل تھے ۔ یہ فرشتے حضرت ابراہیم علیہ الت لام سے پاس سے روانہ ہو کر شہر مددم بہنچے اور حضرت لوط علیہ الت لام سے ہاں مہمان ہوئے ۔ فرشتے حسین میل نوعمر لاکوں کی شکل وصورت ہیں آئے مقے ۔ حَصَرت لوط علیہ التسلام نے جب ان مہمانوں کو دیکھا تو گھبراگئے اور اندیث کیا کہ بریخت قوم میر ان مہمانوں کے ساتھ معلوم نہیں کیا معاملہ کرے گی ؟
ان مہمانوں کے ساتھ معلوم نہیں کیا معاملہ کرے گی ؟
اور قوم کو سزا و بنے آئے ہیں ۔ امھی اسی تر دو میں تھے کہ قوم کو خبر اور قوم کو سزا و بنے آئے ہیں ۔ امھی اسی تر دو میں تھے کہ قوم کو خبر اگسکٹی کہ لوط دعلیہ الت لام) سے گھر حینہ حسین وجبیل لوئے کے مہمان گسکٹی کہ لوط دعلیہ الت لام) سے گھر حینہ حسین وجبیل لوئے کے مہمان

ے مطالبہ کرنے گئے کہ تم اِن لڑکوں کو ہمارے حوالے کر دو۔ حضرت لوط علیہ الت لام نے اِن سے کہا کہ بیمیرے معسنزز مہمان ہیں، میں انہیں تمہارے کیوں کرحوالہ کر دوں ؟ بیسخت باسے،

كرمهمانون كى بےعزن كى جائے۔

اے قوم کے لوگو اکیوں اس لعنت میں گرفتار ہو،خوا ہشات نفس کے لئے فطری طریقہ اختیاد کرو، ملال طور پرعور توں کو ایب رفیقهٔ حیات بناؤ، قوم میں لڑ کیوں کی تمی نہیں ،اینے عقد نکاخ میں امنیں داخل کرلو بکین قوم نے اِسکا یہ ہی جواب دیا کہ اے لوطء تم کو معلوم ہے کہ ہم کوعور توں ہے کوئی کیسی نہیں ہے اور تم جانتے ہی بوكه بمارا ذوق اورمزاج كياب وحضرت لوط عليه التلام نے فرمايا كه آگراييا ہى ہے توتم كميرے مہمانوں كے ساتھ زياوتی نہ كرو الے يەمىرے مہمان ہيں مہمان اِسپر بربخت قوم نے جواب دیا اہے لوط ہم نے تم سے بار ہا کہد ویا تھا کہ نم دوسروں کی ذمہ داری قبول نیکرو۔ حضرت بوط عليه اتسلام نے فرما يا اے قوم اِکيا تم ميں کونئ سمحبدارآ ومی بھی نہیں ہے کہ کم ازکم وہ بات توسمجھے السرکے لئے مجھے رسوانه كروا ورمجهكومعاف كرويتين قوم ابنىستى ميں اندھى ہوھكى تھى۔ آخر حصرت لوط عليه التلام ميكار أعظ المي كاشس إكرآج ميرے إل كونئ قوت وطاقت بهوتی تواپنے مہمانوں کی حفاظت کرلیتا اور تہریں مزه حکیما تا . إ دهرحضرت لوط علیه استلام کی بیقراری و بریث نی دیکیوکر مهمانوں نے کہا اے لوظ گھبرائے نہیں ہم الٹرکے فرستاوہ فرنتے ہیں یہ ہر مرز ہرکز ہمادے قریب میں نہیں آسکتے جہ جائیکہ کھے برتمیزی کریں . بهماس قوم كاعذاب كي آئے ہيں -السركافيصله بهوجيكا ہے ، و و طلف والانہیں۔ انھی صبح بھی نہونے یا سے تی کہ اسکاکام تمام ہوجائے گا۔ مجرفرشتوں نے کہا اے لوظ تم اور تمہارے گھروالے صبح سے بہے پہاے شہرے ابر موجائیں اور یا در کھوکہ کوئی نبی تم میں سے بلٹ کر

مجمی نه دیچهے.البته آپکی بیوی انہی ہے حیاؤں کے ساتھ زہے گی اور تمہار اساتھ نه دے گی آپ اُسکی فکر نه کریں و ہ بھی ہلاک ہونے والوں میں شامل ہے۔

حضرت لوط علیه است لام اپنے اہل خاندان اورسلمین کولیگر گھرسے باہر ہوگئے۔ چلتے وقت بیوی نے آپی د فاقت سے انکار کر دیااور قوم کاساتھ دینا پ ندکیا۔ آخر حضرت لوط علیه الت لام نے رات ہی کوشہر چھوڑ دیا۔ جب آخر شب ہوئی تو ابتدار ایک ہمیبت ناک چیخ نے شہر والوں کو دہلا دیا اور پھر لورے شہر کو مع زمین او پر امٹھا کو انتہا تی بلندی سے المط دیا گیا اور اسکے بعد پنچھروں تی تیز بارش بھی برسانی مئی ، وہی سب کچھ ہوا جو نا فرمان قوموں کی سرسٹی کا انجام ہوا کرتا ہے ؟

صحیح بخاری کی حدیث میں آیا ہے کہ رسول النٹوسلی النٹرعلیہ و کم اس واقعہ کے متعاقبہ فیریاں تربیختا

ٱلتُرتنعك لوط (عليه ايسّلام) پررحم فرمائيس وكسيمضبوط

جماعت کی بناہ کینے پر مجبور ہوگئے '' اور تریذی کی روایت بیں اسے ساتھ یہ اضافہ بھی ملتا ہے کہ :۔ 'نصرت لوط علیہ السلام سے بعد الٹر تعالیے نے کوئی نبی لیا

نهیں بھیجاجسکا گئیہ قبیلہ اُسکا جمایتی نہ رہا ہو" دقرطبی) خو دنبی کریم صلی الٹی علیہ ولم سے خلاف کفار قرایش نے ہزار تدبیریں کیس کیکن آنچے خاندان نے آنچی جمایت کی، آگرچہ ندہساً وہ آئی سے موافق نہ سکھے۔ یہی وجہ سے کہ پورے بنی ہاشم اُس مقاطعہ میں رسول النہ صلی الٹی علیہ ولم کے ساتھ رہے جس میں کفار قرنین نے آپکا کھانا یا نی بندکر دیا تھا۔

خضرت عبدالله بن عباسٌ فرماتے ہیں کہ:-''اس وقت جب قوم لوط اِن سے گھر رپرچڑھ آئی کتی توحضرت لوط علیہ است لام نے اپنے گھر کا در وازہ بند کر لیا تھا اور یہ گفتگواس ستربر توم سے اس طرح ہورہی تھی کہ فرضتے مکان کے اندر تھے۔ اِن لوگوں نے دیوار بچاند کر اندر گھنے کا ارادہ کیا اُسپر حضرت لوط علیالسلام کی زبان بربے ساختہ یہ الفاظ آگئے اُنے کاسٹس! آج مجھے سی ضبوط جماعت کی حمایت حاصل ہوتی ''

مہمانوں نے جب حضرت لوط علیہ التلام کا اضطراب دیجھا توحقیقت کھول دی اور کہنے گئے کہ آپ در واز ہ کھول دیں اب ہم ان کو عذاب کا مزہ میکھاتے ہیں۔ در وازہ کھول او جبرئیل ابین نے اپنے ایک پر کا امن او قوم کی آنکھوں کی طرف کیا جس سے وہ سب اندھے ہوگئے اور بھا گئے۔ اسکے بعد فرشتوں نے حضرت لوط پر کہا آپ رات کے آخری جھے ہیں اپنے گھروالوں کولیکر مہاں سے نکل جائے اور ہمرایک کو ہدایت میجئے کہ کوئی ہیجھے مراکز بندویکھے ؛

بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت لوط علیہ انتہام کی بیوی مجھی ساتھ ملی مگر جب قوم پر عذاب کا دھماکہ سنا تو پیچھے مٹر کر دیجھا اور قوم کی تباہی پر افسوس کرنے لگی اسی وقت ایک بچھرآیاجس نے اس کا بنجی خاتمہ کردیا۔ دقرطبی وظہری،

اس عذاب کی کیفیت کو قرآن مکیم نے اس طرح بیان کیا کہ:"جب ہمارا عذاب آگیا توہم نے ان بستیوں کے او برکافتہ
نیچ کر دیا اور اُن پر ایسے بیتھروں کی بارش کی جن پر ہرایک کے نام کی
علامت مقی ۔ یہ چار بڑے سنہ ہر مقے جن میں یہ خبیث قوم آباد تھی ، قرآن
مکیم نے اِن شہروں کو مُؤُتَفِکاتِ "کے نام سے موسوم کیا ہے د تل پٹ
شدہ بستیاں)

انہی روایات میں یہ وضاحت مجی آئی ہے کہ:۔

ی این کے نیچے بہنیا کہ این کے اپنا کر ان سب شہروں کی زمین کے نیچے بہنیا کر سب کو اس طرح او پر اٹھالیا کہ ہر چیزا بنی جگہ قائم رہی ، پانی کے برتن نو پانی کے برتن نو پانی کے برتن نو پانی کے برتن نو پانی کرنے نہ پایا ، آسمان کی طرف سے کتوں اور جانوروں اور انسانو کی آوازیں آرہی تقییں ۔ اِن سب بستیوں کو آسمان کی طرف سیدھا اُنھا نی

برایت سے چراغ

ہ ہے۔ کے بعد اُوندھاکر کے پلٹ ویا جوان کے خبیث عمل کے مناسب مالتھا'' کے بعد اُوندھاکر کے پلٹ ویا جوان کے خبیث عمل کے مناسب مالتھا'' ملائکۃ اللہ کی حضرت لوط علیہ الت لام سے ہاں آمد اور گفتگو، قوم کا ہجوم کرنا، اور رُسواکن عذاب کی تنفصیلات ذیل کی آیات ہیں موجود ہے:۔

قرآئ مضمون فَلَمَّا جَاءَ أَلَ لُوُطِ إِنْمُوسَلِينَ. قَالَ إِنَّكُمُ قَوْمُ اللَّهِ مَعْمُونَ فَالَ إِنَّكُمُ قَوْمُ اللَّهِ مَعْمُونَ مَنْ المُحاتِدُ اللَّهُ المُعْنَا مَنْ الْمُحْرِيَاتِ مِلاَ مَا مِنْ الْمُحْرِيِّةِ فِي اللَّهِ مِنْ الْمُحْرِيِّةِ فَيْ اللَّهُ مِنْ الْمُحْرِيِّةِ فَيْ اللَّهُ مِنْ الْمُحْرِيِّةِ فِي اللَّهُ مِنْ الْمُحْرِيِّةِ فَيْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّالِمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ اللْمُنْ اللْمُنْ اللَّهُ اللْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللِلْمُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنَ

نیس جب بھیجے ہوئے فرشتے خاندان لوط کے پاس آئے۔ لوط کے کہا تم لوگ اجنبی معلوم ہوتے ہو؟ انحفول نے کہا نہیں یہ بات نہیں کا لکہ ہم تہارے پاس وہ بات لے کرآئے ہیں جس میں لوگ شک کیا کرتے ہیں جس میں لوگ شک کیا کرتے ہیں جس میں لوگ شک کیا کرتے ہیں دمیعنی ہلاکت قوم کی خبر ہما دا آنا ایک امرحق کے لئے ہے اور ہم اپنے بیان میں سیچے ہیں۔ بس چا ہئے کہ دات کے آخری حصد میں اپنے گھروالوں کو لیکرنی جا ہے۔ اور اُس کے بیچھے قدم اُن کھا کیے اور اس بات کا خیال رہے کے کہوئی بیچھے موکر نہ ویکھے اور جہال جانے کا حکم دیا گیا ہے جا جاتے کہ کہا تھے کہ کوئی بیچھے موکر نہ ویکھے اور جہال جانے کا حکم دیا گیا ہے جاتے ہیں۔ ب

ہے جاتیے۔ اورہم نے بوط اعلیہ السّلام) پر بیحقیقت ظامر کر دی کُٹہر والوں کی بیخ و بنیا دصبح ہونے ہوتے اُ کھڑجانے والی ہے۔

راور اسی اثنار میں ایسا ہواکہ اشہر کے لوگ خوشیاں مناتے لوط دعلیہ السلام ، نے کہا دیجھویہ میرے لوط دعلیہ السلام ، نے کہا دیجھویہ میرے مہمان میں تم میری رسوائی نہرو۔ اور الشرسے ڈروا ورمجھ کورُسوانہ کرو۔ مہمان میں تم میری رسوائی نہ کرو۔ اور الشرسے ڈروا ورمجھ کورُسوانہ کرو۔ وہ مجھے کیا ہم آپ کو دنیا بھر کے لوگوں سے منع نہ کرھیے محقے ، لوط دعلیہ السّلام ، نے کہا یہ میری مہمو بیٹیاں میں آگر تم کو کچھ کرنا ہی

هیرای این مربوش مخے ا اے نبی آپ کی جان کی قسم وہ اپنی مُستی ہیں مربوش مخے ، پس سورج بحلتے نکلتے اُن کوسخت آ وازنے آ د بایا ، تھرہم نے اُن بستیوں کا اور یں تزنہ نیچے کر دیا اور اُن پرکنکر کے بتچر برسانا مشروع کئے ۔ اس واقعہ بیں کئی نیٹ نیاں ہیں اہل بصیرت کے لئے۔ اور یہ بستیاں ایک آباد سٹرک پر ملتی ہیں۔ اُن بستیوں میں اہل ایمان کے لئے بڑی عبرہے ؟ وَلَمَنَا اَنْ جَاءَتْ مُن سُلُنَا لُوُظّا یہ کی بیسے وُ وَضَاحَتُ بہ حُد ذَی عًا قَالُوٰ اللَّ تَعَفُ وَلَا تَحْذَنُ الْحَدِدُ الْحَدُدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدُدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدُدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدَدُ الْحَدِدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُونُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدَدُ الْحَدُدُ الْحَدُونُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُونُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُدُ الْحَدُونُ الْحَدُدُ الْ

(العنكبوت آيات ع<u>٣٦</u> تا <u>٣٥٠</u>)

آورجب ہمارے وہ فرستادہ لوط دعلیہ السلام، کے پاسس بہنچے تولوط دعلیہ السلام، آنے آنے کی وجہ سے مغموم ہوئے دکیونکہ فرننے نہا بت جسین لڑکوں کی شکل میں آئے اور لوط دعلیہ السلام) کو اپنی قوم کی نامعقول حرکت کا خیال آیا) اور اُن کے سبب سے دل تنگ ہوا اور وہ فرشتے کہنے گئے آپ اندیشہ نہ کریں اور نہ مغموم ہوں ہم آپ کوا ور آپے فاص تعلقین کو بچا لینگے بجز آپی بیوی کے کہ وہ عذاب میں رہ جانے والوں میں ہوگی۔

ہم اس بستی سے باشندوں پر ایک آسمانی عذاب اُن کی برکاربوں کی سزا بیں نازل کرنے والے ہیں۔

اورہم نے اسب تی کے کچوظا ہری نشان دابتک رہے دیئے ہیں اُن لوکوں کے عبرت کے لیئے جوعقل دکھتے ہیں '' وَلَمَتَا جَاءً تُ سُ سُلُنَا لُوُظًا سِنِی کَی بِیھِ خُروضَاتَ ہِسِہُ ذَسُ عًا قَ قَالَ هٰ لَا اَ يَوْهُ عَصِيدِ الْحَ

(ہود آیات عفی تا عید)

اورجب ہمارے وہ فرضتے لوط (علیہ السّلام) کے پاس آئے تولوط دعلیہ السّلام) کی وج سے مغموم ہوئے اور ان کے سبب نکّ دل ہوئے اور ان کے سبب نکّ دل ہوئے اور ان کے سبب نکّ دل ہوئے اور ان کے سبب دکیونکہ قوم سین لوکوں پر فرلفیتہ مقی) اور اُن کی قوم ان کے پاس ووٹری ہوئی آئی اور وہ بہلے سے نامعقول حرکتیں کیا ہی کرتے ہتے ، لوط علیالسلام کمنے سکتے اسے میری قوم یہ میری بہو بیٹیاں رجزتہا دے گھروں ہیں میری قوم یہ میری بہو بیٹیاں رجزتہا دے گھروں ہیں

ہیں وہ تمہارے گئے پاکیزہ ہیں۔ التّرسے ڈرواورمیرے مہمانوں سے بارے میں مجھانوں سے بارے میں مجھار سے بارے میں محکورسوانہ کرو کیا تم میں کوئی مجھی مجھلا مانس نہیں ؟ وہ لوگ سحینے لگے آپ کومعلوم ہے کہ ہم کو آپ کی اِن سیٹیوں کی کوئی صرورت نہیں اور آپ کو تومعلوم ہے جو ہما رامطلب ہے۔

لوط دعلیہ السّلام ، فرمانے گئے کیا خوب ہوتا اگر میرا تمہر کچھ
زور جلیٹا یاکسی مضبوط پا بیری پناہ بکڑتا ، فرسٹنے کہنے گئے اے لوط مہم
توآپ کے رب کے بھیجے ہوئے فرشنے ہیں آپ تک ہر گزائی رسائی
نہیں ہوگی سُوآپ رات کے کسی حصہ میں اپنے گھر والوں کولیکر جلے
جائے اور ہم میں سے کوئی پیچھے مرکز بھی نہ ویکھے ہاں گر آپ کی بیوی نہ
جائے گی اُس پرتھی وہی آفت آنے والی سے جواور لوگوں پر آئے گی ،انک

روت بارت می بات می بات می بات خریب بین او برکاشخت سوجب ہماراضم آبہنچا توہم نے اس زمین کا او پرکاشخت نیجے کردیا اور زمین پرکنگر سے پیھر برسا نا شروع کئے جو لگا کارگرر ہے محصے جن پر آپ سے دب کا خاص نشان مجی متھا اور پہلستیاں اِن ظالموں دمینی میشرکین مکہ ، سے کچھ دُورنہ ہیں یہ

كَنَّ بَتُ قُوْمُ لُوطٍ لِي لَسُوسِيلِينَ. الخ

د الشعراء آیات مناتا تا مها)

و ما دوائے بینی بول کو جوشا یا۔ جیجے اُن سے بھائی لوطانطالیہ اللہ انے کہا کیا ہم دار تنے بہیں ہو۔ میں تہارا ایا نت دار بینی برپوں۔ سوتم اللہ سے در واور میری اطاعت کرو۔ اور میں تم سے اسپر کوئی صله نہیں چا ہتا۔
بس میراصلہ تو رب العالمین کے ذمتہ ہے۔ کیا تمام دنیا جہان والوں میں تم مردوں سے یفعل کرتے ہو۔ اور تمہارے رب نے جو تہارے لئے بیویاں بیدائی ہیں اُن کونظرا نداز کئے رہتے ہو بلکہ تم صدسے گزرجانے والے والے لیک ہو۔

وہ لوگ کہنے لگے اے لوط دعلیہ السلام) اگرتم بازنہیں آؤسے

توضرور نكال ديئے جاؤگے.

لوط دعلیہ انسلام) فرانے لگے میں نمہارے اس کام سے سخت شغرت رکھتا ہوں .

لوط دعلیہ التلام) نے ڈعا کی اے میرے رب مجھ کو اور میرے متعلقبین کو اُن کے اس کام سے نجات دے .

بین میں سے میں ہے۔ سوسم نے ان کو اور ان کے متعلقین سِب کو نجات دی .

بجز ایک بڑھیا بیوی کہ وہ رہ جانے والوں میں رہ گئی ۔ ریب عور سند دل سے کا فریقی اور قوم کے بدمعاشوں سے ملی ہوئی)

مچرہم نے اورسب موہلاک کردیا۔ اور ہم نے اُن پر ایک خاص قسم کی بارشس برسانی سُو کیا بُرا برساؤ تھا جو اُن لوگوں پر برسا جنکو ڈرایا گیا تھا۔

بیننگ اسمیں عبرت ہے اور اِن میں اکثر لوگ ایمان نہیں آگے اور بیٹیک آپ کارب بڑی قدرت والا بڑی رحمت والا ہے ۔" حند کِ اللّٰہ مَشَلًا یِلْلَیْ یُنَ کَفَدُ وا مُوَاْتَ نُوْجٍ وَاٰمُواْتَ

کو طِ ۱۰ التر نعالے کا فروں کے لئے نوح دعلیہ التلام ، کی بیوی اور التر یم آیت منا)
لوط دعلیہ التلام ، کی بیوی کا حال بیان کر نامے وہ دونوں ہمادے خاص بندوں ہیں سے قو بندوں کے نکاح میں تقییں سواُن عور توں نے اُن دونوں بندوں کا حی نکاح میں تقییں سواُن عور توں نے اُن دونوں بندے اللہ اُن دونوں کا حق ضا کع کیا تو وہ دونوں نیک بندے اللہ کے مقابلے میں اُن دونوں کے فراکام نہ آسکے اور تھم ہوگیا کہ اور جانے والوں سے ساتھ تم دونوں بھی دوزہے میں جاؤ یہ

مناريخ وعب

قوم وطركا وسي حضرت لوط عليه التلام حضرت إبراميم عليه التلام ك بِقِيمَ مِحْهِ. البِنے چھا کے سائھ ملک عراق سے نکلے اور سجهدت بك شام فلسطين اورمصرين خضرت ابراسيم عليه السّلَام تحسا تقالى دغوت وتبلیغ میں شغوٰل رہے ، مجرِ تقل نبوت سے سرفراز ہوئے ، التّٰرنے انہہ ہیں ہرسدوم سے باشندوں کی اصلاح سے لئے بامور فرما یا بخنمیں لواطت جیسا قابل فیر عمل رائج کھا ببقول حصرت عمرو بن دینااڑ فیعل دنیا میں اس سے پہلے تھی نے رائج نہیں کیا تھا۔ یہ قوم اسی موجد تھی تیفسیر دِ رمنثور ہیں حضرت حذیفہ رہے ایک قول یہ ہی نقل سیاسیا ہے کہ جنیا کہ اس قوم کامرد، مرد سے ملوّث مقا، اسی طرح اس قوم کی عور توں مین بھی اسی جیبا فعل دمساحقت ارائج تھا۔ یہ قوم اُس زمانے ہیں اِس علاقہ ہیں رہتی مقی جیے آجکل منٹرق اُرون کہاجا ^{ہے۔}

بائبل میں اس قرام کاصدر مقام ٌسدوم ٌ بتا یا گیا ہے جو یا تو شجیرہُ ممردار کے قریب سی قبکہ

واقع تقایا ابعجیرہ مردار میں غرق ہوجیگاہے را ہے۔ سدوم سے علاوہ اِن سے جاربڑے شہراور بھی منے جنکو قرآنِ مکیم نے

مَّوْتَ فِيكَاتِ " دَمَلْ بِي شده بستياں) كے نام سے موسوم كيا ہے: مُوَّ تَفِكَاتِ " دَمَلْ بِي شده بستياں) كے نام سے موسوم كيا ہے: ان شهروں سے درمیان کا علاقہ الساگلزار بنا ہوا تھا کمبلول تک بس ایک باغ معلوم ہوتا تھا جس سے حسن وجمال کو دیجھ کر انسان میستی طاری ہوجائے مگراج اس مُسواے زبانہ قوم کا نام ونِتِ ن ونیاسے بالکل نابید ہوچکاہے ۔ اور یہ تھی تھیک طرح رسوائے زبانہ قوم کا نام ونِتِ ن مے تعین نہیں کیا جا کتیا کہ بیب تیاں تس مقام پر واقع تخییں اب سرف تجیرہ مُردار ہی اس اس ایک یا دگار باقی رہ گیا ہے جے آج بحربوط کہا نیا تا ہے۔ اس حصے میں یا تی سے نیچے کھھ ڈونی ہوئی مبنیوں کے آٹار کا بہتہ جلاہے ۔ ماہر بین طبقات الارض کا خیال ہے یہ بستیاں قوم لوط ہی کے شہر تھے۔

ترالاً كُونا فرآن كيم اوراها ديث نبويه نے اس حقيقت كا انحثاف كيا ہے كہ حضرت لوط عليه السام جن قوم كى جانب مبعوث كئے گئے تھے وہ قوم ابنى اخلاقی گراوٹ بیں اس قدر دور جاچى تھى كہ اب اس كا بلٹ آنا ناممكن ہوگيا تھا۔ اہل جرائم نی جُرم كو جُرم ہى مجھا ہے كيكن اس قوم نے جرائم كو قومی شعار "قرار دے ليا تھا مجانس اور عام مقامات برعلى الاعلان فعش فيے جيائى كرنا إن كامحبوب شغلہ تھا۔ يہ ايساعمل تھتا جس كى ماضى ہیں كوئى منظير نہیں ملتى ۔

مردسے مروشنعول ہوجائے اورعورت ،عورت سے ملوّث ہو۔ یہ ایساعمل کھا جوعموماً جنگل کے جانوروں میں بھی نہیں یا یاجا تا۔ یہ ہی وجد بھی کہ یہ قوم اپنے میں چندنیک انسانوں اورنیکی وسٹرافت کی دعوت دینے والوں کو برداشت نہ کرتی تھی وہ پاکی وطہارت کے اس تھوڑے سے عنصر کو بھی نکال باہر کر دینا چاہتی تھی جو اِنکے کھنا وُنے ماحول ہیں فدر ارد بہاذراہ منف

قرآن حکیم نے اس قوم کے بین بڑے جرائم کا ذکر کیاہے:-دونتم مردوں سے بدفعلی کرتے ہو، مسا فروں کو بوٹ لیس کرتے ہو، عام مجلسوں ہیں علی الاعلان فحض کرتے ہو؛

(العنكبوت آيت ع<u>9</u>7)

جن بین گناہوں کا آیت ہیں وکرہے ان سب ہیں شدید ترین بہلاگنا ہ ہے جوان سے پہلے دنیا ہیں تھسی نے ایجا دنہیں کیا ۔ باتفاق امّت یہ گنا ہ زناسے بھی زیادہ شدید ہے۔

لواطت کی منبرعی سنرا قرآن کیم اور احادیث سیجہ سے معلوم ہوا ہے کہ اور احادیث سیجہ سے معلوم ہوا ہے کہ اور احات ایک بدترین گناہ ہے جبیر ایک پوری کی پوری قوم النّر کے شدید ترین عضب میں گرفتار ہوئی۔ اسکے بعدر وایاتِ حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ اس موتا ہے کہ اس موتا ہے کہ اس شامل ہے کہ اس محروم کے مرکبین کوسخت ترین ، عبرت ناک منزادی جانی چاہئے۔ حدیث منزیون میں خالف میزادی جانی چاہئے۔ حدیث منزیون میں خالف میزادی جانی چاہئے۔ حدیث منزیون میں جا

ایک روایت میں یہ الفاظ ملتے ہیں :-أَ قُتُكُوا الْفَاعِلَ وَالْمُفَعُولَ بِمِ- والحديث فَاعل ا ورمفعول دونون كوفتل كردو " ا بک روایت میں اتنا اضا فیہا ورتھی ہے ؛۔ أخصنا أو لكريخصنا. د شادی ننده مهوب یا غیرنیا دی ننده ۱ ا یک ا ورر وابت میں پیچھم بھی ملتاہے :۔ فَا رُجُهُوا الْآعُلِ عُلِيا وَ الْآسُفَلَ. دالحديث

ا و بَرِ و الا ا و رنیجے و الا د و نوں سنگسار کر د کیے جا کہیں ۔

چونکه نبی کریم صلی النّه علیه و لم سے عہد مبارک ہیں ایسا کوئی مقدمہ بیثیں نہیں ہوااسلے آب نے عملاً الیسی کوئی سزاجاری نہیں فرمانی ۔

صحابه کرام میں حضرت علی ہے مروی ہے کہ ایسے مجرم کو تلوار سے فتل کر دیا جائے اور دفن کردینے کے بچائے اُسکی لامن کوجلا دیا جائے۔

اسی رائے سے حضرت ابو بجرصد بی سے نے بھی اتفاق فرمایا تھا۔

حضرت عمراً ورحضرت عثمان كى رائے يہ ہے كه اليے مجرم كوكسى بوسيدہ عارت کے نیچے کھڑا کرکے وہ عمارت اُن برڈوھا دی جائے۔

حضرت ابن عباس كافتولى يه ہے كہبتى كى سب سے اونجى عمارت يرب اسكوسركے بل مجينيك وياجائے او پرسے پيفر برسائے جائيں ۔ بہتی قول امام الوحنيفةً كامهى ئے اكر قرآن محيم نے اس لوطی قوم پر عذاب كى جوصورت بيان كى ہے اس مماثلت پیدا ہوجائے۔

امام شافعیؓ فرما۔تے ہیں کہ فاعل ومفعول واجب القبل ہیں ا مام لشعبی ، زہری ، امام مالک وا مام احد کے بال اسکی سنراسکساری ہے۔ حضرت سعيد بن مُستيبٌ ، عطارٌ ،حسن البسريُّ ، إبرام بم تخعيمُ ، سفيان توري ره اور امام اوزاعیؓ کی رائے ہے کہ اس جُرم پر وہی سزادی جَائیگی جوزناکی سزاتے بعین غیبر شادی شدہ کونتلو کوڑے بارے جائیں سے اور جلا وطن کر دیا جائے گا اور شادی شدہ

ہ ایت کے چراغ کورخم (سسنگسار) کمیا جائے گا۔

ور بر است سار کی اختلاف کی وہ ہے جوا و پر بیان کی گئی کہ اس سلسے ہیں کوئی مخصوص حدیث میں ابت نہیں ہے۔ اسکے علاوہ اور بھی ہہت ہے ایسے جرائم ہیں جوابی نوعیت کے لحاظ سے نہایت نہیں ہے۔ اسکے علاوہ اور بھی ہہت سے ایسے جرائم ہیں جوابی نوعیت کے لحاظ سے نہایت بیجے اور بدترین قسم سے شمار کئے جاتے ہیں ، ایسے تمام جرائم پر امیرالمؤمنین کوشر لعیتِ اسلامی کی جانب سے تعزیرات جاری کرنے کا افتیار دیا گیا ہے اور تعزیرات کے لئے کوئی خاص سنرام قرنہ ہیں کی گئی ہے بلکہ جسے افتیار دیا گیا ہے اور تعزیرات کے لئے کوئی خاص سنرام قرنہ ہیں کی گئی ہے بلکہ جسے حالات و تبقاضے ہوں اُس لحاظ سے ایسے مجرم کو عبرت ناک سنرا دی جائے۔ امام ابو حلیفہ تا

ایک صروری نبیبهم ایک صروری نبیبهم و لیے ہی شدیدسزا کا بھی شخق ہے اس لئے ہرزیا نے پس ایسے مجرموں کومختلف سزائیں دی جاتی رہیں ہیں۔اور اس فعل کوکسی جی حیثیت میمھی روا نہ رکھاگیا۔

اس سنتے ہیں یہ بات قطعی طور پر ملحوظ رکھی جانی چاہیئے کہ شوم رکا اپنی بیوی

لواطت کرنا بھی حرام ہے۔ بی کریم حکی النبرعلیہ ولم کا ارشا دہے :۔ مَلْعُونَ حَنْ آتی الْمُدُونَةَ عِنْ مِنْ آتی الْمُدُونَةَ الْمُدِيدَةَ عَنْدِهَا. رابوداؤد)

''بنی بیوی سے یہ نعل کرنے والاملعون ہے''

اور ایک حدیث ہیں اسطرح بیان کیا گیاہے ہے۔

لاَينُظُو اللهُ إلى مرجُلِ جَامَعَ إِمْرَأْتُهُ فِي دُبُرِهَا.

"الله اس مردير بركز نظر دحمت نهيس كريكا جوابني بيوي كيسا تف

مَنْ أَنْ حَالِثُمَّا أَوْ إِمُّوا أَوْ أَمْ وَأَنْ فَي مُرْبُوهَا أَوْكَا هِسْتًا

فَصَدَّقَنَ فَقَدُ كَفَرَبِمَا ٱنْذِلَ عَلَى مُحَتَدِ. والعديث، تجس نے مائضہ عورت سے مجامعت کی ، یاعورت کے ساتھ عمل قوم لوط کیا ، یا کاس سے یاس گیا اور اسکی بیش گونی کی تصدیق کی ،اُس نے ان تمام باتوں کا انگار کردیا جو محد صلی الٹرعلیہ ولم برنازل

بره طریقه اورشبه کا جواب عذاب سے فرضتے جب حضرت لوط علیالسلام تح تقرمینے توحضرت لوط علیہ السلام بہت

تحصرائے اور دل تنگ ہواا ور زبان سے بیالفاظ نکل پڑے کہ:-ور آج بڑی مصیبت کا دن ہے ؛

په فرنتے خوبصورت لڑکوں کی ٹیکل ہیں تھے جو قوم کی مرغوب تربین شئے تھی ۔ اِن میمانوں کا آنا ہی مقاکہ قوم سے لوگ ہے انتیار حضرت لوط علیہ ات لام کے تھے۔ رپر توٹ پڑے بیوبحہ بہلے سے وہ ایسی ہی برکاریوں کے خِوَگر منتے .حضرتِ لوط علیالسّلام نے کہا تھائیو! یمیری بیٹیاں موجود ہیں یہ تمہارے لئے یاکیزہ ہیں ،غیرفطری طریق تحیوں افتیار کرتے ہو تھے تو خدا کاخو ف کرواور میرے مہمانوں کے معابلہ ہیں ہے جھے ذہیل ورسوا مذکرو بھیا تم بیں کوئی مھلا آدمی نہیں ؟ جوموفور ومحل کا یاس وتحاظکرے۔ حضرت لوط علیه ات لام کا پرارٹ دیمیری بٹییاں موجود ہیں " سرسری

نظرمیں پیسوال پیداکر تا ہے کہ نبی اپنی پاک اولا دکو اس نا پاک کام کے لئے محس طے رہے پیش رست ہے ؛ جب کرحضرت نوط علیہ التلام نے بیش سرویا .

پیٹ بہ دراصل قرآنی اسلوب کو نہ مجھنے کے بتیجے ہیں پیدا ہوا ہے ۔ خود آیت سے ایسا کونی مفہوم نابت نہیں ہو اکر حضرت لوط علیہ السّلام نے اپنی صاحبزا دلوں

سَوْ بُرَا نُ سَے لئے بیش کیا ہے۔ پوری آیت اس طرح ہے :-تَالَ یٰقَوْمِ هٰؤَ لاءِ بِنَایِی اُهُنَّ اَکْهُ لُکُمْ فَا تَقْوا اللّٰهُ

(ہو د آیت عشہ) وَلَا تُكُرُّونِي فِي صَّيْفِي. ' تمہا اے میری قوم سے لوگو! یہ میری بیٹیاں ہیں 'وہ تنہارے

كئے پاكيزہ ترہيں"

وہ تمہارے گئے پاکیزہ نر ہیں کا فقرہ ایسا غلط مفہوم لینے کی کوئی گنجائٹ نہیں رکھتا کیونکہ زنامجھی بھی کسی بھی ملت وجماعت ہیں پاکیزہ ترنہیں سمجھا گیا ہے بمجھرآیت کا دوسرا فقرہ 'اُکٹرسے ڈرو'' اورزیا د ہ تاکیدکرتا ہے کہ تم اپنے ادا دے ہیں الٹکرسے ڈرو۔

حضرت لوط علیہ الت لام کا منٹا صاف طور پریہ ہی تھا کہ اپنی شکہوتِ مفس کواس فطری اور جائز طریقے سے پوراکروجوالٹرنے مقرر کیا ہے اور اس سے لئے عور نوں کی محمی نہیں ،اور اس مفہوم کا واضح قرینہ یہ بھی ہے کہ حضرت لوط علیہ الت لام کی صرف ڈو ہی بیٹیاں حقیں ، ظاہرے نعوذ بالٹر بوری فوم کے لئے کس طرح بیٹس کی جانیں اور پوری قوم جو گھر پر چڑھے آئی تھی اُن کی تعداد سینکڑوں تھی ۔ لہذا آیت کا وہ مفہوم نہیں جسپر

> متنفسیر قرطبی میں ایک اورجوا بنقل کیا گیا ہے :۔

مشکل ہے توان کو سٹرے بازر کھنے کے لئے فرما یا کہتم اس سٹرونسات مشکل ہے توان کو سٹرے بازر کھنے کے لئے فرما یا کہتم اس سٹرونسات باز آجاؤ میں اپنی و ونوں لڑکیاں تمہارے سردار وں سے بحاح میں دے دوں گا۔ اُس توم میں ڈوسردار بڑتے سیم کئے جاتے ستے اور وی اس مجوم کے بانی مبانی مبھی ستے حضرت لوط علیہ السلام نے اتفاق کریا کہ اپنی صاحبزادیوں کا نکاح ان دوسرداروں سے کردیا جائے۔ اُس ملت میں مسلمان لڑکی کا نکاح کا فرسے جائز متھا۔ جنائی نہ بی کریم صلی الشر اللہ ملے ابتدائی دور میں ہی مسلم و کا فرکا نکاح جائز متھا۔ چنائی نہ بی کریم صلی الشر علیہ و کو نون کا فرکتھے۔ بعد میں وہ آیات نازل علیہ و کو نون کا فرکتھے۔ بعد میں وہ آیات نازل بوئیں جن میں مسلمان عورت کا نکاح کا فرمے سے بعد میں وہ آیات نازل ہوئیں جن میں مسلمان عورت کا نکاح کا فرمے دیے قوم سے اس طرح خطاب الغرض حضرت لوط علیہ السلام نے رفع فسا دیے لئے قوم سے اس طرح خطاب فرایا کہ یہ میری لڑکیاں موجو دہیں جو تمہارے لئے پائیزہ ترہیں۔ اور بعض دیگر مفسرین نے فرمایا کہ یہ میں یہ اور بعض دیگر مفسرین نے فرمایا کہ یہ میں یہ اور بعض دیگر مفسرین نے ایک دوسری حیثیت سے جواب ویا جس کا خلاصہ یہ سے:۔

هو الآءِ بَنَانِی سے پوری قوم کی لوکیاں مراد ہیں کیوکم پنیمبر ا بنی قوم کے لئے مثل باب " ہوتا ہے اور پوری امت اس کی اولا دہوتی ہے جیسا کہ قرآن حکیم کی آبت أَلْنَبِي أُولِي بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُيَهِ مِرْ أَنْفُي مِلْ أَنْفُومِهِ مُرَا أَزُواجُهُ دالاحزاب آیت علی نبی تو اہل ایمان کے لئے اُن کی اپنی ذات پرمقدم ہے اور نبی کی بیویاں اُن کی مائیں ہیں '' حضرت ابن مسعود کی تفسیر و هو آب آب کی هرکے الفاظ مجی ملتے ہیں جسمیں نبی کریم صلی التٰرعلیہ ولم کو اپنی اُمّت کا باپ کہا گیاہے۔ اب اس تنفسیرتے مطابق حضریت لوط عليه التسلام كمي اس قول كا يمطلب بوگاكه:-اُے قوم تم اپنی خبیث عادت سے باز آجا و ، شرافت کے ساتھ قوم کی لڑکیوں سے نکاح کر واُن کو اپنی بیویاں بناؤ، بیسب میسری بينيان ہي تو ہيں " برحضرت محا ہد^{رج}ھے منتقول ہے :۔ كُلُّ نَبِيَّ أَتُ لِآمَنِهِ -ہرنبی اینی امّت کا باپ ہوتاہے۔ (روح المعانى) اسی طرح حضرت ام سلمة (زوجة النبی) کاارشا دہے ہے أَنَا أُمُّ الرِّجَالِ مِنْكُمُ وَالنِّسَاءِ-میں تمہارے مرد وعور توں کی ماں ہوں ۔ دروح المعانی

وضاحتیں قوم بوط پرعذاب نازل ہونے سے سیلے شہر سدوم کا حال سور و الذاریات کی آیاتِ ذیل اس طرح بیان کرتی ہیں :
فَا خُرَجُنَا مَنْ کَانَ فِیہُمَا مِنَ الْنُوْمِینِیْ ، فَسَا

وَجَدُنَا فِیہُمَا عَنْ یُرَبِیْتِ مِنَ الْنُسُلِمِینُنَ ، فَسَا

دانداریات آیت عصامیتا

'ٹھیرہم نے اُن سب لوگوں کو نکال لیا جو اُس کستی میں مُون تھے دمعینی حضرت لوط علیہ انت لام اور اہل ایمان) سوہم نے اُسٹس بستی ہیں سوائے ایک گھرکے مسلما نوں کا کونی گھرنہ یا یا 'دیعنی صرف حصرت لوط علیہ التلام کا تھر؛ باقی سب کا فروں سے تھر ہنتے ، ا ـ افوام وملل سابقة بين التذرّنعاليے كا قانونِ مكافاتِ ،ٱس وقت تك كسي قوم کی کامل تباہیٰ کا فیصلہ نہیں کر تا تھا جب تک اُس قوم ہیں کچھے قابلِ لحاظ تھے۔ لائی موجو در ہی ہو۔

مگرحب حالات بہ ہوجائیں کرکسی قوم سے اندر آٹے ہیں نمک کے برا برجھی خیر ہاقی نہ رہے نوانیسی صورتِ میں اِلٹیر کا فانون یہ مخاکہ نبی اور اُن برا بیانِ لانے والوں کو اپنی قدرتِ خاص ہےکسی نیکسی طرح بجاکر نکال دیتا تھا اوڑ یا فی لوگوں سے ساتھ وہی معاملہ کیا جاتا تھاجو ہر ہوشمند تاجرانے ٹوکرے کے سڑے ہوئے مھیلوں کے ساتھ کیا کر ٹاہے کہ اچھے مجیلوں کو نکال کیٹنا ہے اورسٹرے حصے کو بھینک

دیتاہے بہی حال قوم لوط سے سانھ بیش آیا۔

۲۔مسلمان صرف اُسی امّت کا نام نہیں جونبی کریم صلی الٹیرعلبیہ ولم کی پیروہے میں سر میں است بلکہ آپ سے پہلے کے تمام انبیار کرام اور اُن کے بیرو محتی مسلمان ہی محقے اُن سب

کا دین بہی اسلام مقا۔ قرآن عکیم نے آیت ندکورہ بالایں مُؤمن اورمسلم کو ایک قرار دیاہے۔ مُؤمن ا ورَسلم کے الفّاظ اس آیت میں بالکل ہم معنیٰ استعمال ہو 'ئے ہیں جِس کا مطلب یہ ہواکرجوٰموْمن ہے وہسلم ہے اورجوسلم ہے وہ مؤمن بھی ہے ۔ ایمان اور اسلام

قرآن حکیم کی وَرَّو ہم معنیٰ اصلطلاعیں ہیں الحرجہ لغت کے لحاظ سے آپس میں تجھ ف۔ من ہوجا ئے مطحن ہے تلین قرآن حکیم کی زبان ہیں اسسلام اُس کا مل عمل دین حق کا نام ہے جونوع انسانی کے لئے آسمان سے نازل کیا گیا ہے جسے مفہوم ہیں ایمان (نصدیق)

اور اسلام داطاعت) دونوں ٹیامل ہیں۔

اُس سلسلے ہیں چندایک آیات ملاحظہ ہوں جوایمان اورا سلام کے اتحاد کو ثابت کرتی ہیں :۔

إِلَّا وَ أَنْ تُعْمِ مِنْ لِلْمُونَ. وَالْعُمَانَ آيت عِنْ ا)

الما يمان والواللرس ورومياكه ورنے كاحق باورتم كوم رزمون نه آئے مگراس حال بين كه تم مسلم ہو۔" هُوَ سَمَّا كُهُوا كُمُونِي مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هَانَ اللّهَ

هو ستما کھڑاکسیلین مین قبل ویی هذا الایة اُس الشرنے تمہارا نام مبلے مجیمسلم رکھاا ور اس کتا ہے دقرآن، میں بھی دتم کومسلمان کہاگیا)" دائج آیت ہے)

مَا كَانَ إِبُرْهِيمُ يَهُودِيَّا وَكَا نَصَمَ إِنْكُنْ كَانَ

حَنِيْفًا مُصْبِيلِمًا الآية دآل عمران آيت عظي بيا

در ابراسیم دعلیه ات لام ، نه بهرو دی محقے اور نه نصرانی ، بککه وه ن ده مسلم ممته »

یہ اور اس مضمون کی تحتی ایک آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اسلام اور ایک ایک ہے۔
ایک ہی معنی کے قرعنوان ہیں ، اور یہ خیال کچے درست نہیں کہ سلم سے مراد وہ خص ہے
جو دل سے ایمان نہ لا یا ہو بلکہ ظاہری طور پر انسلام قبول تحرلیا ہو ، اور مومن سے مراد
و چخص ہے جو دل سے تنصد بین تحریکا ہو ، اگر جے معض حضرات نے اسس تسمیم کی
تعربین کی ہے لیکن اُن کا بنشا رصرف اثنا ہے کہ لعنت سے لحاظ سے یہ درزہ ں لفظ مختلف

معنی رکھتے ہیں اس سے زیاد وا در کچے نہیں۔

ظاہرے اوپری آبات بڑھکر تون خیال کرسکتا ہے کہ اللہ کے ہاں صرف ظاہری طور پر اسلام قبول کرلینا پہندیدہ بات ہوگی ؟ اور بیکہ اللہ تعالے نے صرف ظاہری اسلام کو آسمانی دین بنایا ہے ؟ اور بیکہ صرف ظاہری اسلام فلاح کا ذریعہ؟؟ اور بیکہ دمنوذ باللہ) حضرت ابر اسم علیہ السلام صرف سلم ہی تھے ؟

اس کئے یہ خیال محر ناقطعی دارست نہیں کہ اسلام سے مراد اطاعت بلا ایمان ہم اورسلم قرآن کی زبان میں ظاہراً اسلام قبول کرنے والے کو تہتے ہیں یہ بات درست نہیں۔ البتہ یہ بات بھی پائی جاتی ہے کہ بعض مقابات پر ایمان اور اسلام سے نغوی معنیٰ مراد کئے سمجے ہیں جواینے سیاق وسیاق سے کہا ظاہر متعین کئے جا سکتے ہیں۔

خلاصہ یہ کہ قرآن حکیم کی زبان میں ایمان اور اسٹلام ایک نہی دین کا نام ہے جوآسمان سے نازل ہواہے۔لہذا اسسلام سے ماننے والے کومُومن اور سلم کہا جائے گا۔

آبٹ اللیم فرم بوط پرعذاب سے بعد قرآن کیم نے شہر سے کھنڈرات کو آیت دنشان، سے تعبیب رسیاہے:۔

وَ تَرَكُنَا فِيهُمَا أَيَدًا لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعُدَابِ الْأَلِيمَ. (الذاريات آيت المُسَا

اس عذاب سے بعد ہم نے وہاں بس ایک نشانی آن لوگوں

کے لئے چیوڑ دی جوعذاب الیم ہے ڈرتے ہیں ''
اس نشانی سے مراد بخیرہ مروار دسمندر) ہے جسکا جنوبی علاقہ آج بھی ایک عظیم تباہی کے آئار سین کرر ہاہے۔ ما ہرین آٹار قدیمہ کا خیال ہے کہ قوم لوط کے پانچ بڑے شہر شدید زلزلے سے زمین میں وہنس گئے ہوں اور اُن کے اوپر بحیرہ مردار کا پانی بھیل گیا ہو کیو کے سے جزیرہ نما کے جنوب میں واقع ہے۔ واضح طور پر بعد کی پیدا وار معلوم ہوتا ہے اور قدیم بخیرہ مردار کے جو آٹارا سال جزیرہ نما کے شمال تک نظر آتے ہیں وہ جنوب میں پائے جانے والے آٹار سے بہت جزیرہ نما کے شمال تک نظر آتے ہیں وہ جنوب میں پائے جانے والے آٹار سے بہت مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے مختلف ہیں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے میں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ جسلے میں۔ ما ہرین آٹار قدیم نے اس سے یہ بات اخذ کی ہے کہ جنوب کا حصتہ کیں۔

اس مجیرے کی سطح ہے بلند تھا بعد ہیں کسی زلزلے سے دھنس کرنیجے حلاگیا ،اسکے دھنسنے کا زیانہ تھی تڑوہزار برس قبلِ سیج شیے قریب معلوم ہوتا ہے اور یہ غیاس تاریخی طور پر حضرت إبراميم عليه التلام إورحضرت لوط عليه التلام كا زمانه سے يتفق واء بي آثارِ فائمير کی تلاش کرنے والی ایک امریکی جماعت کو اللسان جزیرہ پر ایک بہت بڑا قبریت نان ملاحبمیں بین ہزارہے زیادہ قبریں ہیں اس سے اندازہ ہنوتا ہے کہ قریب ہیں کوئی برات ہرآ با دیھا چونکہ ایسے سی شفتہ رکے آثار آس پاس کہیں موجو دنہیں ہی جس متصل إننا برًا قبرت ان بن سكتا بوراس كئے عين مكن ہے كھن شہر كايہ قبرستان ہے وہ بخیرے میں غرق ہوجیکا ہو بخیرے سے جنوب میں جو علیا قہسے اس میں اب بھی

یا آتش فشاں کا لاوا بکلنے سے یہاں ایک جہنم پھٹے بڑی ہوگی ممکن ہے قرآن سے میم کی تیت مرکورہ: - و تو کنا فیما اکستا سے مرادیمی آنار تباہی مرادیموں . (ہم نے اس شہر میں ایک نشانی جھوڑ دی)

ہرطرح تباہی کے آثارُموجو دہیں اور زبین ہیں گندھک، رال برکول نار، اور قدر ڈی گیس

ے اتنے وخائر پائے جاتے ہیں جنویں وکھے کرمقین ہوتا ہے کہ کسی وقت مجلیوں کے گرنے سے

تذكرة لوط (عليه السلام) كا قرآ في ورس السورة ببودين حضرت لوط عليه السلام کا وا تعنمقل کرنے کے بعد اسس

مذكرك كواس آيت يرختم كياكيا : - وَمَا هِيَ مِنَ الظّلِمِينُ بِبَعِيْدٍ . ربورآيت عنه) ر بتھرا وُ کا یہ عذا ب آج تھی طالموں سے تجھ دورنہیں ،

يعنی جولوگ اس قوم کی طرح ظلم و بے حیا تی پر جمے بیٹھے ہیں وہ اپنے آپ کو اس جیسے عذاب سے دور نتمجین آئج بھی یہ عذاب آسکتاہے ۔ رسول ترمیم کی النوغلیہ ولم نے ارشاد فرما یا کیمبری امت بین تھی بچھ لوگ و عمل کریں سے جو قوم لوط کیا کرتی تھی ،'جب البابوئ كَيْ تُوانتظار كروكه أن يرممي وبى عذاب آئے جوقوم لوط برآيا تھا -اعاذنااللوظ-

تذکر ہ حضرت لوط علیہ الت لام میں یہ بات آ چکی ہے کہ جب

جلد ا دِّل

فرشنتے حضرت لوط علیہ الت لام کی قوم پر عذاب لے کر آئے توان کی بہلی ملا قاست حضرت ابراميم عليه الت لام سے ہوئی ،خضرت إبراميم عليه الت لام المضيں سلام سما جواب دیجرانیے تھرلے آئے اور ایک تجھڑا ذیج کرتے ٹھنا گوشت مہمانوں سے سامنے

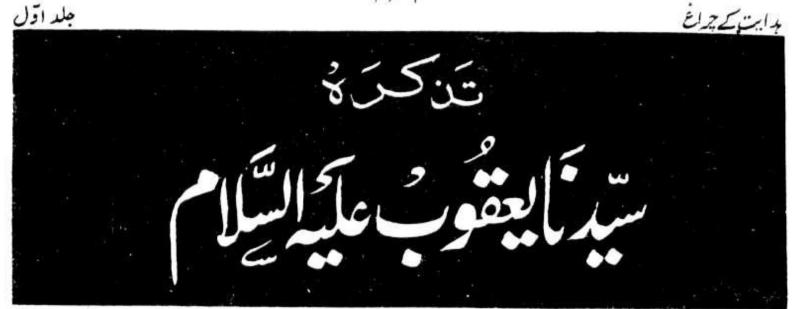
رکھ دیا اور فرما پاکیا آب حضرات کھائیں سے نہیں ؟

مفسرين بن سختيرشنے اس مختصرمعا ملے سے ميز بانی تھے جند اسم نکات بيان کئے ہمیں ۔ پہلی بات تو یہ محرمهمانوں سے پہلے یو جھانہیں کہ کیا ہیں آپ شعیلئے کھانا لاؤں آبلکہ جیکے سے چلے گئے اور اُن کی مہمانی کے لئے اپنے یاس جوسب سے اچھی چیز کھانے کی تھی میعنی

بجيطًا وْ بِحُكِمَا اسْكُومِهُونَا اور لے آئے۔ فَعَاءَ بِعِجْلِ سَمِينِ. الآية قوسری بات بیرکہ کھا نا لانے سے بعد مہمانوں تو زحمت نہیں دی کہ اُنہیں کھا^{ہے} كے لئے بلاتے بلكہ جہاں وہ مہمان بيٹے ہيں وہيں لاكرسامنے ركھ دیا۔ فَقَرَّ بَنَا إِلَيْهُمْ. الآية تمیتری بات بیکرمنر بانی کے وقت انداز گفتگویس کھانے پراصرار یہ مقابلکہ ابطح

فرما يا أكرجه آپ كوها جت ما سهى متكر بهمارى خاطر كجه نوش فرماليس . ألاَ يَتَأَكُّوكُ . الآية میزبانی کے پیاعلیٰ طورطریقے ہیں جو سنیدنا ابراہیم علیہ انسلام کی پاکبیسنرہ

نبی کریم صلی الله علیہ ولم کا ارت و ہے :۔ منجو شخص اللہ برا دریوم آخرت پر ایمان رکھتاہے اس کو چاہے کہ اپنے مہمان کا اکرام کرے " دالحدیث)



تعارف احضرت بعقوب علیہ ات مام سیدنا اسمٰق علیہ ات لام سے بیٹے اور حضرت ابراہیم علیہ ات لام سے بیٹے اور حضرت ابراہیم علیہ ات لام سے یوتے ہیں ۔ اِن کی والدہ کا نام رُفقہ کم مخفا۔ یہ اپنی والدہ سے جہنتے اور بیارے منے ۔ اِن سے حقیقی مجانی عیسُو کو حضرت بہتا ہے ۔ اِن سے حقیقی مجانی عیسُو کو حضرت بہتا ہے ۔ اِن سے حقیقی مجانی عیسُو کو حضرت بہتا ہے ۔ اِن سے حقیقی مجانی عیسُو کو حضرت

النحق عليه التلام بهت جاستے مطفے. تورات کی روایت کےمطابق دونوں مصائیوں میں ناانفاقی کے باعث حضرت بعقوب علیہ است لام اپنی والدہ سے مشورے پر جب شہر فتران آرام محطے گئے تو اِن سے حقیقی ماموں لابان نے اُن سے عہد لیا کہ وہ دسی سال تک اُن سے ہاں رہ کر اُنجی بکریاں جرائیں تووہ اس مترت کومہر قرار دے کر اپنی لڑکی سے شادی کردیگے۔ چنا پنج حضرت تعقوب علیہ السِّلام نے اُس مُریّب کو پورا کیا توْلا بان نے اپنی بڑی لیے گی لنتيه كأبياح أن سے كرنا جا با مكر حضرت بعقوب عليه أنت لام كى والده محترمه كا رجب إن حیوقی لوکی راحیل کی طرف تھا۔ لا بان نے یہ عذر کیا کہ یہاں سے دستور سے میطابق بڑی الرسى كے نكامے سے پہلے جيون لوئى كا نكاح نہيں ہوسكتا اس لئے ثم اس رشتے كومنظور تحربوا ورميعقوب سنے قيام بيں مزيد دينل سال أورا ضافه کرے اُن کوميري خدمت يں رکھو توراصل بھی بھاح ایں دیدی جائے گی دائس شریعیت ہیں ڈو بہنوں کا ایک بحاح بیں جمع کرنا جا کز تھا) چنا مخہ حضرت معقوب علیہ السّلام نے اُس مدت کوتھی ہور ا سمیاا ورراحیل معنی حیونی لڑکی نے معمی نکاح کراریا۔ اِن دونوں سے علاوہ لئیہ ﴿ بُرْی بيوتي كى كنيز زُلْفًا اور راصل كى كنيز بلها بعى حضرت يعقوب عليه السّلام كى زوجيت میں آگئیں ۔ان سب خواتین سے اولا دمھی ہوتی اور بنیامین دحصرت یونٹ کے چیو گئے

ہمائی سے علاوہ حضرت بعقوب علیہ آلت لام کی تمام اولا دا بنے اموں ہی سے ہاں زمانۂ قدیم میں پیداہوئی ۔ اورجب حضرت بعقوب علیہ الت لام وطن واپس آسے تو

بہاں بنیالمین پیدا ہوئے۔

البان نے حضرت یعقوب علیہ الت الام کو اپنے ہاں بین سال رکھنے کے بعد مہت ساراسازوسامان و کے کر رفصت کیا اور یہ و ہاں اپنے وا داسیرنا ابراہیم علیہ السلام کے دارالہجرت فلسطین بیں آکر تقیم ہو گئے اور اپنی بقیبہ زندگی و ہاں ہی گزاری . حضرت یعقوب علیہ الت لام جس زیا نے بیں شہر فدان آرام اپنے ماموں سے ہاں چلے گئے سخے اُس زمانے بیں ایکے بھائی عیشو ناراض ہو کر اپنے چاحضرت آمعیل علیہ السّلام کے پاس آب منے اور اُن کی صاحب اراض ہو کر اپنے چاحضرت آمعیل علیہ السّلام کے پاس منظے ۔ یہ صاحب ناریخی کتب بیں اُدوم سے نام سے مشہور ہیں ۔ اس عرصہ بیں دونوں بھائیو کے تعقات اُستوار ہوگئے اور وہ ایک دوسرے کو تحقے تاکن جمیبا کرتے ہتے ۔ کے تعلقات اُستوار ہوگئے اور وہ ایک دوسرے کو تحقے تاکن جمیبا کرتے ہتے ۔ قرآن مکیم اِن کے تعلقات اُستوار سول ، اور سے دانوں سے علیہ السّلام کے ملی اللہ کے ملیل لقدر سے کا ذکر کر تاہے ۔ اور اسی ضمن ہیں نام کی صراحت کے بغیر نوسف علیہ السّلام کے ہوئے کا دوسرے بھائیوں کا بھی ذکر آجا تاہے :۔ دوسرے بھائیوں کا بھی ذکر آجا تاہے :۔ دوسرے بھائیوں کا بھی ذکر آجا تاہے :۔

وَجَاءً إِخُونَ مُ يُؤْسُفَ الآية -

یزگره ستیدنا پوسف علیه است لام شخصمن میں حضرت بیقوب علیه است لام کا وکر جا بجا آیا ہے چنا بنجہ میہی تذکره حضرت بیقوب علیه است لام کامجی تذکره شمار کیا گیا ہوتا تذکرہ سبیدنا پوسف علیہ السّلام میں یہ ہائیں مطالعہ کیجئے :-

قرآن عزیز ہیں سید نایعقوب علیہ السلام کا اسم گرامی دین جگہ ملتا ہے۔ آگر جے سورہ یوسٹ ہیں جا بجا ضمائر اور اوصا میں سے لحاظ سے ان کا تذکرہ موجود ہے۔

سيّدنا يعقوبُ عليه السّلام قرآن تحصيم مين قرآن عليم مين

بدایت سےحیراغ

آیات متعلقہ کی تفصیل ہے ہے:سور گابقرہ آبات ۱۳۲۰،۱۳۲،۱۳۲۱،۱۳۲۱،۱۳۲۱
سور گا انعام آبات ۲۰
سور گا انبیاء آبات ۲۰
سور گا انبیاء آبات ۱۲۳۱
سور گا بیاء آبات ۱۲۳۱
سور گا بیاء آبات ۱۲۳۱
سور گا بیاء آبات ۱۲۳۱
سور گا بیات ۱۲۳۱
سور گا بیات ۱۲۸۳۲
سور گا بیات ۱۲۸۳۲

بنی اسرائیل ہے۔ قرآن کیم اسرائیل ہے۔ قرآن کیم اسرائیل ہے۔ قرآن کیم اسرائیل ہے۔ قرآن کیم اسرائیل ہے۔ اسرا کے معنی (عبد) اور ایل کے معنی داللہ یعنی عبداللہ وربنی اسرائیل کے معنی اولا دِمیقوب قرآن کیم نے اہل کے معنی اولا دِمیقوب قرآن کیم نے اہل تا ہیمود ونصاری کو بنی اسرائیل کہ کرمنی طب کیا ہے دمینی اولا دِمیقوب حضرت اسماق علیہ التلام کو اولا دیں حضرت یعفوب علیہ التلام کو اسم گرامی مشہور ومعروف اسماق علیہ التلام کو اولا دیں حضرت یعفوب علیہ التلام کا اسم گرامی مشہور ومعروف ہے۔ انہی کی اسل میں ہزار ہا انبیار ورسل پیدا ہوئے ہیں جنہیں انبیار بنی اسرائی ل

اولا دیعقوب علیه السلام می خوت یعقوب علیه اسلام کے بارہ لڑکے تھے۔

اُن کی ساری اولا دست ہم فدّان آرام ہیں ہی پیدا ہوئی تعقی صرف بنیا بین دحضرت نوست کے علاوہ اُن کی ساری اولا دست ہم فدّان آرام ہیں ہی پیدا ہوئی تعقی صرف بنیا بین دحضرت معقوب نوست کے حیو ٹے حقیقی بھائی) فلسطین دارض مختعان) ہیں بیدا ہوئے ،حضرت معقوب علیه اسلام کی اولاد آئی مختلف بیویوں سے ہوئی ہے جبی تفضیل ہے ہے :علیه اسلام کی اولاد آئی مختلف بیویوں سے ہوئی ہے جبی تفضیل ہے ہے :
زوجہ محترمہ لئیہ بنت لا بان سے مندرجہ ذیل اولاد ہوئی ۔

(۱) داؤ بین (۲) شمعون (۳) لاوی (۲) میہودا (۵) ویساکر (۲) زبولون ۔

زوجہ ثانیہ داخیل بنت لا بان سے دولوں کے بیدا ہوئے۔

زوجہ ثانیہ داخیل بنت لا بان سے دولوں کے بیدا ہوئے۔

a 5

200

یہ بازاہ لڑکے ابنی ابنی قوم سے سردار بنے اور اُن کی اولاد کثرت سے بھیلی۔ پینفصبل تورات سے منقول ہے اور دیگر تاریخی کتب میں بھی یا تی جاتی ہے

والتراعلم.
سیدنا معقوب علیه الت لام کا بیشتر تذکره حضرت یوسف علیه الت لام کے تذکرہ میں آرہاہے. فرآن حکیم نے بھی سبتر نا یعقوب علیه الت لام کا تذکرہ متنقل طور پر ذکر نہیں کیا البیتہ محنی ایک جگئے ان کا اسم گرامی اور ان کا اُولوالعزم رسول ہونا بیان کیا ہے تنعانبوں کی اصلاح و تبلیغ کے لئے حضرت معقوب علیه الت لام کومبعوث کیا گیا مقارساری زندگی تنعان (فلسطین) ہی میں تبلیغ فرمانے دے۔ البنة آخری عمر میں اپنے عظیم المرتبت صاحبزاوے سبتد نا یوسف علیه الت لام سے ملنے سے لئے سے لئے مصدر عظیم المرتبت صاحبزاوے سبتد نا یوسف علیه الت لام سے ملنے سے لئے مصدر تشریب لائے اور غالباً و ہیں و فات یا تی ۔

ستيدنا ابراسيم خليل الترعليه التسالم كي تيسري كيشت سے ستيدنا بوسف عليه التلام كا وجودِ باسعادت ملتائيج بسكسكة نسب الطح ي:-يوسف بن ميعقوب بن اسخى بن ابراسميم رعليهم التلام) حضرت بوسف علیه اتسلام کی والدہ محترمہ کا اسم گرامی راحیل بنت لا بان ہے ۔حضرت معقوب علیہ اتلام کوا ہے ٰبار اللہ بیٹوں ہیں حضرتٰ یوسف علیہ السّلام سے بے حداً محبت وتعلق خاطر تضا بحسى تهمى وقت اُن كى جُدانَى گوارانهيں فرماتے مطے۔ نبی حرمیمیکی الترعلیہ ولم سے پوجھا گیا :۔ أتمام انسانوں میں الٹرکے باں مکڑم کون سے ؟ آمِی نے ارسٹ و فرمایا:-"أكرمُ النَّاسِ يوسف نبى الله ابن نبى الله ابن نبي الله ابن خليل الله رعليه مرالسلام د بخاری کتاب التفسیر) ا مام احمد سطنے اپنی مشند میں ایک روایت ابن عمر شیسے نقل کی ہے کہ نبی تحریم صلی اللہ عليبه ولم نے ارمث و فرما یا :-ٱلكَرِيمُ إِبْنُ الكريم إِبْنُ الكريم إِبْنُ الكريم إِبْنُ الكريم

يُوسعن بن يعقوب بن اسطق بن ابراهيم (عليهم السلام)

بة بنا يوسف عليه التسلام مجى البينے والد ، وا دا ، 'پر دا والى طرح سن رمشد كو زرد :

پہنچ مرنبوت ورسالت سے سر فراز ہوئے اور ملئتِ ابرانہ بمی کی دعوت و تنگیغ سے مبردار

مرامی مرار مرار مرار می است. و اور است مرامی قرآن تخیم می چھبنیں آیات میں موجود ہے جس تفصیل درج ذیل ہے :-

سورة انعامر أيت ١٨٨٠

سورة يوسف أيات ١٦،٢٠، ١١،١١،١١،١١، ٢٩، ٢٩، ١٥٠

(12.10.17.1.22.24.49.01.04

-99.9019.609

سورة مومن أيت ١٦٠

تعبیرکیاہے. یہ قصہ صرف اس ایک سورت میں ملتا ہے۔ پورے قرآن ہیں تھیں اور جگہ موجو دنہیں جیسا کہ دیگرانہیا ، ورسل کے تذکرے بار بار اپنے خاص مقصد سے سخدت ملتے ہیں ۔

بیورا فصدا یک جگہ ہونے کے باعث جسقدر عبزیں جگمتیں اورموا عظونصائح اس سورت میں کیجاملتی میں کسی اور قصہ میں کیجا جمع نہیں ہیں ۔

قنتص اور واقعات کے بیان کرنے میں ضرف ایک ہی مقصد ہوتا ہے اور وہ ہے عبرت ونصیحت ، وعظ و تذکیر ، سور و یوسٹ اس حیثییت سے پورا کا پورا وعظ و تذکیر ہے ۔

ج سور فی بوسف کے شان نزول کے بارے میں روایاتِ حدیث کا خلاصہ بہرہ:۔ سور فی بوسف کے شان نزول کے بارے میں روایاتِ حدیث کا خلاصہ بہرہ:۔ سمت محمد مرمہ سے مشرکین نے ایک مزنبہ بس محرمی الشرعابیہ وسلم سے متعلق علما ریہود سے گفتگو کی اور اپنی عاجزی و پریشانی کا اظہار کیاکہ میم اِنکو حَمُواْ اُ اِنتِ کرنے ہیں ناکام ہو گئے ہیں ،کوئی الیبی تدہب بنائی جائے کہ محد رصلی اللّہ علیہ ولم ، کو حَمُولا اُ ابت کر دیا جائے اور وہ عاجز ہوجائے .

ر بہود سے علمار نے اُن مشرکین سے کہاکہ اس مرعی نبوت کو ننگ کرنے اور حبول بنانے سے لئے تم لوگ اُن سے یہ سوال کرو سومیعقوب علیہ استلام کی اولاد ملک شام سے مصر کیون تقل ہوئی ؟ اگریہ نبی نہیں نو ہرگز ہرگزنہ تبا سکے گا.

ہر میں ہو ہر دہ ہر کہ میں ہوئی ہوئی ہے۔ ایت پر نبی کریم صلی التہ علیہ وہم ہو کہ سی التہ علیہ وہم ہو کہ سی سیار برسوال کیا، اِن سے اِس مطالبہ پرسورہ پوسٹ نازل ہونی اور آپ نے وہ سب مجھ اُن کومنا دیا جوسورہ پوسٹ میں موجود ہے ۔" د ابن کشر

وہ سب جو ان وسادیا جو تورہ ہوسک یا دورہ ہوسے ہوں ہو اتعالیہ کیا تھا کہ یہ وا تعام کہ کہ ہم واقعہ کہ ہم ہوں ہوری علمار نے اس سوال کا اس کئے انتخاب کیا تھا کہ یہ وا تعام کہ کہ ہم ہور نہ تھا اور نہ ہی و ہاں کوئی بہوری یا علیائی عالم تھا جو سسی کو بتا سکے۔ ایسے حالات ہیں جبکہ خورہ ہی کرم میں السرعلیہ و کم ای لقب تھے نہ سسی مکتب ہیں ورس لیا تھا اور نہ مکے مکر مہ ہیں کوئی ورس کا ہم تی اور نہ ہی آپ نے نبوت سے بہلے مبھی یہ واقعہ سسی سے ساتھا۔ ان مخصوص حالات ہیں نہایت تفصیل اور کا مل وضاحت سے ساتھ حصرت معقوب علیہ است لام اور حضرت یوسف علیہ است لام کا طویل واقعہ بیان کروییا خور نبوت کی ایک تھی دسی ہی ہورہ کے معجزہ تھا لیکن جس کی قسمت ہیں خور نبوت کی ایک تھی دسی ہی ہورہ ہوا گئی تھی۔ جو ہرانیت کے طالب سے نہائی ہورہ کی ایک قسمت ہیں ہی ہورہ ہوا ایس سے کہاں ہرایت مل سے تھی جو ہرانیت کے طالب سے وہ تو ایمیان لائے اور مقیہ عناد و سرکشی ہی ہیں پڑے دسی ۔

جند تمہدمی بالمیں ایکرہ سیدنا یوسف علیہ استلام سے بہلے چند باہیں بطور تمہید واقعتی وضاحت کے لئے ضروری ہیں:
بطور تمہید کی ما گیا حصرت یوسف علیہ استلام حضرت بعقوب علیہ السلام کے بیٹے اور حضرت اسمی علیہ السلام کے بیٹے اور حضرت اسمی علیہ السلام کے بیٹے اور حضرت اسمی علیہ السلام کے بیٹے اور حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بیٹے ور حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بیٹے ہیں۔

حضرت بعقوب علیہ انت لام کے بار^{ہا} بیٹے تھے جواُن کی جار بیوبوں سے پیدا ہوئے . اِن ہیں حضرت یوسف علیہ الت کام اور بنیا مین ایک بیوی سے ہیں . رمیعن حقیقی ہےائی ا

حضرت بعقوب عليه التسلام كا قيام فلسطين بيب تضاجها ل حضرت اسحق عليه السلام

اوراُن سے پہلے حضرت ابر اسم علیہ است کام رہا کرتے تھے۔ تورات کی تحقیق سے مطابق حضرت پوسٹ علیہ استِ کام کی پیدائش سان فائے قبل مسيح تعنی حضرت عیسیٰ علیه است لام کی پیدائش سے تقریباً دو مزار سال پہلے بت ای ا

جب حضرت یوسف علیه است لام می عمر ننریین سوله ستره سال می بهونی مجائیو^ن نے سازش کر سے اُمضین محنوی ہیں بھینک ویا مضا ،اورجس قا فلہ نے اُمضین محنویں سے بحالا تخاوه مشرق أردن سےآر ہا مقا اورمصری جانب رواں وواں تھا۔

قا فلے نے حضرت پوسف علیہ است لام کوغلام سمجھ کر با زارمصریس فروخت كرديا مصركا دار السلطنتُ أَس زمانے بين (منف) متفالحسكے تھنڈرات آنج بھی قاہرہ کے جنوب ہیں چود ہ پندر ہسیل کے فاصلہ پر یائے جاتے ہیں۔حضرت یوسف علیالسلام ستره المطاره سال کی عمر میں وہاں پہنچے تھے . دوچار سال عزیز مصریے شاہی محل ہیں لیم رہے مھرعزیزمصری بیوی ٹی نیازششن پر آ مطانوسال جبل ہیں زندگی بسیری جب تخت مصرير بينظے َ اسوفتَ آيجي عمر سترلف تينلُ سال تھی اور اس سے بعد تقریباً اسیٰ رال يمستخن و"اج سے تنها وارث َرہے اورجس عدل وانصاف سے حکمرا نی کی وہ تاہیج

عالم کا بے مثال نمونہ ہے۔ ابنی حکومت سے نویں یا دسویں سال اپنے والدحضرت بعقوب علیہ السلام ابنی حکومت سے نویں یا دسویں سال اپنے والدحضرت بعقوب علیہ السلام اور پورے خاندان کوفلسطین سے مصنتقل کر دیا آور اپنی عمر سے ایکسورس (۱۱۰) ساك نين و فات پائى - عليه الصلوٰ ة والسَّلام -

أغاز قصة اورنرالا خواب صرت يعقوب عليه اسلام ابني تمام إولاد میں حضرت یوسف علیہ السلام سے لیے صد

محبت ویبار رکھتے ہتھے .خود نبی ہتھے ، نور نبوّت کے حامل ہتھے .اپنے علم وفراست سح تقبل قريب مين حضرت يوسف عليه التلام كى نبوت ورسالت كو ديجه رائع مقے. علاً وه ازین حضرت پوسف علیه السلام اینے دیگر مجانیوں سے اخلاق وعا دا میں بحیر مختلف ہتھے۔ ماں باپ تکا حترام، اطاعت شعاری، خلوص وخدمت بیرالیراوها مقے جوایک ہونے والے نبی کے لئے واپے بھی صروری تھے حضرت یوسف علیہ السّلام میں جمع تھے، باپ کی یہ محبت وجانبت برا درانِ پوسف کے لئے بیجد ثناق اور نا قابلِ بر داشت هدیک بینج محنی وه مېرو تت اس نکړین رستے کرکسی طرح تھی اپنے باپ کے قلب سے پوسف علیہ الت لام کی تحبت کو د ورکر دیں یا تھیرخو د لوسف علیہ انت لائم ہی کو دُورکر دیاجائے تاکہ ساراقصہ ہی ختم ہوجائے .انہی سازشوں سے دوران حضرت کوسف دُورکر دیاجائے تاکہ ساراقصہ ہی ختم ہوجائے .انہی سازشوں سے دوران حضرت کوسف علیہ السّلام نے ایک خواب دیکھا کہ گئیارہ شارے اورشمس وقمراُن سے آگے سجدہ ریز ہیں . یعجیب وغربیب خواب تضاجو دنیا ئے انسانیت نے بھی نہ دیجھا ہوگا۔ حضرت یوسف علیہ استلام نے اپنے والد بزرگوار سے پیخواب بیان کیا، حضرت بعقوب علیہ الت لام پر خواب ملی حقیقت منکشف ہوگئی۔ بیٹے سے کہا یہ خواب محسی سے آگے نہ دُھرا یاجا کے ایسا نہ ہوئد اُس کوٹ نکر تیرے مجانی گرائی سے پیشر، آئیں کیونکہ شیطان انسان سے پیچیے لگا ہواہے ۔ اس موقعہ پر قرآن حکیم نے حضرت يعقوب عليه التسلام كي تتعبير خواب تؤبيان نهبيُ كيا" المبيحة و ه نحواب حقيقت مبتكر

حضرت ابن عباین نے فرما یا کہ گیار ہ ستاروں سے مراد حضرت یوسف علیلسلا

کے گیارہ مھائی اورہس وقمرسے والدین مرادہیں . تفسير قرطبي مين مزيديه وضاحت مكتى ہے كەحضرت يوسف عليه السلام كى والده محترمه راحيل الرحيراس تحواب سے پہلے وفات یا کھی تقیں مگر انکی تبہن حضرت يعقوب عليه التهام كن بحاح بين أتحتى تقين فاله مان شخ قائم مقام ہوتی ہے خصوصاً جبكه وه والدى زوجيت بي آجائے توعرفاً استومان بى كہاجا باہے۔ نبى كريم على الشرعلية ولم كاارشاد ہے: الحالة بِمَانِزِلَةِ الْاَقِرِ الديث (خالہ مال سے قائم مقام ہے،

خوابِ پوسفی کا یہ نذکرہ قرآن مکیم ہیں اس طرح موجود ہے:-

قرآئ مضمون الله يلك أيّاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ. الْحُ روسف آيات ما تاملا)

النزد بهردشن کتاب می آیات ہیں جم نے اس قرآن کو عربی زبان میں نازل کیا ہے ناکہ تم سمجھ سکو۔

ایے نبی ہم اس قرآن کے ذریعہ سے جوہم نے تمہاری طرف محیجا ہے ایک نہایت احتما قصہ تمہیں ساتے ہیں اور تم اس سے بہلے (اس قصتہ سے) بے خبر محقے۔

جب بوسف دعلیه التلام، نے اپنے باپ سے کہا اے ابامیں نے خواب میں گیارہ سنارے اور مِورج و جاند کو دیکھا ہے، دیکھتا کیا ہوں کہ وہ مجھے سجدہ کررہے ہیں.

باپ نے کہا اے میرے بیٹے توا پنے اس خواب کو اپنی کھائیوں سے بیان نہ کریں بہیں ایسا نہ ہوکہ وہ تیرے ساتھ کوئی خفیہ چال جائیں ہلات بہ شیطان انسان کے لئے کھلا دشمن ہے ، اور اسی طرح نیسرا بروردگار بچھ کو برگزیدہ کرمیگا اور تجھ کو (تا دیلِ حدیث) خواب کی تعبیری سکھائیگا اور اپنی تعمین بچھ بر اور اولا دِمیعقوب پر بوری کرے گا۔ مسلم کے گا اس معمت نبوت کو بوراکیا تیرے اجدا دیر پہلے سے معنی ابرا ہم واسی رعلیہ مالتلام) پر بیٹیک نیرا پروردگا دیر المحمد والا حکمت والا سے بیٹی والا ہے ۔"

برادران سازس افرس الماست ترزی میں ہے کہ نبی کر بم میں اللہ علیہ ولم نے ارت اور اللہ سمار سی اللہ علیہ ولم نے ارت اور اللہ سمار سی سے ایک فرمایا سی اللہ علیہ ولم سے ایک میں سے ایک میں ہے۔ اور خوا معلق رہتا ہے جکہ میں سے بیان نہ کیا جائے۔ جب بیان کر دیا تھیا اور مینے والے نے کوئی معبیر دیدی تو تعبیر سے مطابق واقع ہوجا تا ہے۔

اس لئے خواب سرکسی سے بیان نہ کیا جائے ۔ صرف عالم سے یا تھیرا پنی خیرخواہ ان کہا جائے۔

سے بیان کیا جائے۔ الغرض حضرت یوسف علیہ الت لام نے ابنا خواب حضرت بیقوب علیہ السرلام

العرص طرح یوسف میدات استواب کے بعد حضرت یعقوب علیہ استلام کی
سے بیان کیا اور اسکومحفوظ رکھا ، اس خواب کے بعد حضرت یعقوب علیہ استلام کی
محبت اور زیادہ ہوگئی ۔ وہ حضرت یوسف علیہ التلام کواپنے سے مجدا ہونے نہیں دیتے ،
اپ کا یعمل سو تیلے بھائیوں کو اور زیادہ فتعل کردیا ، اور اب وہ اس تاک ہیں رہنے
گئے نے یوسف علیہ الت لام سے خلاف کوئی آخری کارروائی کردی جائے ، چنا نچہ حسک کی کھڑئی ہوئی آگ نے ایک روز برا درانِ یوسف کو یوسف علیہ التلام سے خلاف

سازش کرنے پرمجبورسی کردیا۔

آپ کوسم پراغتما د کرنا چا ہنئے۔

اپ وہم پراسما و مرہ چاہیے۔
حضرت یعقوب علیہ اکسام اپنی فراستِ نبوت سے جان گئے کہ اِن سو تیلے محفائیوں کے دلوں میں کھوٹ ہے اور وہ یوسف علیہ السلام کو مقصان بہنچانے کے در پر برگز آپ نے صاف صاف صاف لیا فظوں میں اس اندلیٹ کوظا ہر نہیں فرایا تاکہ حہیں وہ بحرط کر علانیہ وہمنی پر آبادہ نہ نہوجائیں۔ اس لئے بجائے واضح طور پر اینا اندلیٹ ملام کرنے کے اسٹ اوق مجھوکو یوسف علیہ السلام طام کر دے کہ واقعی مجھوکو یوسف علیہ السلام کے بارے بیں اندلیٹ ہے کہ کہیں کوئی مجھولیا اسکوا تھا نہ لے جائے اور تم کوائس کی برائے ہوئے کہ ہوئے کہ بی کوئی مجھولیا اسکوا تھا نہ لے جائے اور تم کوائس کی برائے ہوئے کہ بی برائی ہوئے کے بارے بیں اندلیٹ ہے کہ کہ بی کوئی مجھولیا اسکوا تھا نہ لے جائے اور تم کوائس کی برائے ہوئے کہ برائی ہوئے کی برائے ہوئے کہ بی برائے ہوئے کی برائے ہوئے کہ بی برائے ہوئے کہ بی برائے ہوئے کوئی بھیٹر یا اسکوائی تھا نہ لے جائے اور تم کوئی بھیٹر یا اسکوائی تھا نہ لے جائے اور تم کوئی بھیٹر یا اسکوائی تھا نہ لے جائے اور تم کوئی بھیٹر یا اسکوائی تھی برائے ہوئے کہ برائے ہوئے کہ برائے ہوئے کوئی بھیٹر یا اسکوائی تھیٹر یا برائے ہوئے کے برائے ہوئے کے برائے ہوئی ہوئے کی برائے ہوئے کی برائیں کی برائی بیٹر برائی ہوئے کوئی ہوئے کی برائے ہوئے کوئی ہوئے کی برائی ہوئے کوئی ہوئے کی برائے کی برائے کی برائی ہوئے کی برائے کی برائے کی برائی ہوئی ہوئے کی برائے کی برائی ہوئے کی برائی ہوئی ہوئے کی برائی ہ

خبرتک نہ ہو۔ سب بھائیوں نے بیک زبان کہا اگر ایسا ہوا تو میفیناً ہم نے سب کچھ کنوا دیا۔ بھلا کہیں ایسام مکن بھی ہے ؟ ہم اتنے ہوکر اپنے ایک عزیز بھائی کی حفاظت تک نہ کرسکین آباجان! آپ کوئی اندیشہ نہ کریں اور ہرطرح مطلبین رہیں ہم اسکی پوری حفاظت کریں گے۔ آباجان! آپ کوئی اندیشہ نہ کریں اور ہرطرح مطلبین رہیں ہم اسکی پوری حفاظت کریں گے۔ ۔ ور مصرت معقوب علیہ ات لام کا یہ اندیشہ اور مھائیوں کی سازشی تنفصیلا<u>۔۔۔</u> قرآن مکیم میں اس طرح موجود ہیں :۔

قرائى مضمون كَقَدُ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ 'آيَاتُ لِلَسَّائِلِينَ ١٤٠ وَ الْحُوتِهِ 'آيَاتُ الْحَالَى الْحَالَى الْحَدِيمِ اللَّهِ الْمُعَالَى الْمُعَالَى الْمُعَالَى الْمُعَالَى الْمُعَلَى الْمُعَالَى الْمُعَلِّمُ الْمُعَالَى الْمُعَلِّمُ اللّهُ الل

روسف ایات عظیمی ایست اعلی اوراً سکے مھائیوں کے قصے میں پرچھنے والوں کے قصے میں پرچھنے والوں کے قصے میں پرچھنے والوں کے لئے کر پرچھنے والوں کے لئے کر پرچھنے والوں کے لئے کر پرسف اسکام) اور اس کا بھائی (بن یا بین) ہمارے باب کو زیادہ محبوب ہے والا نکرہم ایک پوراجتھا ہیں، بلاشبہ ہمارا باپ ہریج زیادہ محبوب ہے والا نکرہم ایک پوراجتھا ہیں، بلاشبہ ہمارا باپ ہریج

خطا پرے ہوست کونسل کرڈالو یا تھی ملک میں بھینیک آؤ تاکہ تمہارے خطا پرے ہوست کونسل کرڈالو یا تھی ملک میں بھینیک آؤ تاکہ تمہارے

باپ کی توجہ و محبت تہاری طرف سمٹ آجائے اور بیرکام کرنے سے بعد بر جو بیری میں انہاری طرف سمٹ آجائے اور بیرکام کرنے سے بعد

نیک قوم بن کر رہنا۔ ر ان میں سے ایک نے کہا یوسف کوفتل نہ کروا ور اسکو کسی

ان میں سے ایک نے کہا یوسف کوفتل نہ کروا ور اسکو کسی گمنام کنویں میں ڈال دو ٹاکہ کوئی اس کو اُتھا لیجائے۔ اگرتم کو ایسا کر ٹا ہی ہے۔ دمشور ہ کرنے کے بعد حضرت یعقوب علیہ استلام سے پاس آئی کہنے گئے اے آباجان آپ کو کیا ہوا کہ آپ یوسف کے بارے میں ہم پر اعتماد نہیں کرتے حالا نکہ ہم اسکے خیرخوا ہ ہیں۔ کل اسکو ہمار سے ماتھ بھیج دیجئے کہ وہ کھا کے پئے اور کھیلے کو دے اور بلاست ہم ماتھے نگھیان ہیں۔

یعقوب علیہ استلام نے فرمایا مجھے اس سے رنج ودگر بہنچا
ہے کہ اسکو اپنے ساتھ لے جاؤ اور مجھے یہ خون وا ندلیشہ ہے کہ اسکو
معیریا کھاجائے اور تم غافل رہو دکیونکہ اس جھل میں بھیڑیے بہت تھی
سب نے کہا اگر اسکو معیریا کھاگیا جبکہ ہم سب طاقتور ہیں توبلا شہرایسی
حصورت میں توہم نے سب بچھ گھنوا دیا د بھلا ایسا کہیں ممکن ہے)"
حصورات میں توہم نے سب بچھ گھنوا دیا د بھلا ایسا کہیں ممکن ہے)"
حصورات کو ان حضرت بعقوب علیہ الت لام نے بیٹوں کی مزید انتقامی کارروائی سے

بیخے کے کے حضرت یوسف علیہ الت لام کو اُسکے ہمراہ جانے کی اجازت دے دی اسطرح برا دران یوسف نے اپنے سکر و فریب میں کامیا بی حاصل کی اور یوسف علیہ السلام کو سیر و تفریح سے مہانے جنگل لے سکے اور بھراپنے متفہ مشورے سے مطابق ایک ایسے سینویں ہو قال دیا جبیں پانی نہ تھا اور عرصہ سے خشک پڑا تھا۔ قرآن تکیم نے اسس سینویں کو قیلیت انجوب سے الفاظ سے تعبیر کیا ہے ۔ غیا بہ ہراُس چنر کو کہتے ہیں جودوس کی خیر کو چئے ایس چنر کو کہتے ہیں جودوس کے حضرت کو چئے اور غائب کر دے ۔ اسی لئے قبر کو بھی غیابہ کماجا باہے دکیونکہ وہ لاس کو چئے اور فیت ایسے کنویں کو کہتے ہیں جب کی من بختہ بنی ہوئی نہ ہو بعنی کیک الیا ویران اور ہے آپ گڑھا جو آبا دی سے دُور درختوں میں چئے ابوا ہو۔ حضرت یوسف ایسا ویران اور ہے آپ گڑھا جو آبا دی سے دُور درختوں میں چئے ابوا ہو۔ حضرت یوسف علیہ الت لام کو جبراً و قبراً اسمیں اُتار دیا گیا۔ قرطبی جی سے کہ اسوقت ان کی عمس رہنے سال تھی۔ خات سال تھی۔

امام قرطبی اورد گرمفسرین نے کنویں میں ڈوالنے کا تذکرہ اس طرح کیا ہے:۔
'جُب اُن کو کنویں ہیں ڈالنے گئے تو حضرت یوسف علیہ السّلام
کنویں کی مَن سے چہٹ گئے۔ مجائیوں نے اُن کا گر ٹا اُنارا اور اُن کے
ہم رحم کی درخواست کی بحر وہی جواب ملاکہ گیارہ سارے جو بچھ کو بجد
کرتے مقے اُن ہی کو بُلا وہ تیری مدد کریں گے۔ حضرت یوسف علیالسلام
کایہ خواب کسی طرح جوائیوں کو معلوم ہوگیا تھا جس کی وجہ سے اُن کی
آ تس غضب بھوک اُن مھی تھی۔ انغرض حضرت یوسف علیہ السّلام کو
ایک ڈول میں رکھ کرکنویں میں لشکا دیا۔ جب درمیان تک پہنچے تورتی
کا ملے دی۔ النّہ زنعا لئے نے اپنے بندے کی حفاظت فرمانی اسپر حضرت
کی وجہ سے چوٹ نہ آئی اور قریب ہی ایک چٹان نظر آئی اسپر حضرت
یوسف علیہ السّلام صحیح سالم بیٹے گئے۔ بعض دوایات میں یہ وضائت
یوسف علیہ السّلام صحیح سالم بیٹے گئے۔ بعض دوایات میں یہ وضائت
یوسف علیہ السّلام صحیح سالم بیٹے گئے۔ بعض دوایات میں یہ وضائت
کی وجہ سے چوٹ نہ آئی اور قریب ہی ایک چٹان نظر آئی اسپر حضرت

تین یوم ککنوی ہیں رہے اُن کا ایک بھائی جسکا نام یہودا بیان کیا جا تا ہے اور جواپنے بھائیوں کی اس سازش کا مخالف سخب الکن بھائیوں کی میں سازش کا مخالف سخب کین بھائیوں کی مخالف سخب کے کنویں ہیں اُن دیا کہ تا تھا بسکن اُسکی ہمت اتنی منہوئی کہ باب حضرت یعقوب علیہ التلام کویہ واقع بیان کر دے۔ اِدھر اللّٰہ تعالیٰ خضرت یوسف علیہ التلام کی تسلّی اور اطمینان کے لئے اُنہر وحی نے دھری کسی آئندہ زبانے میں بھائیوں کی ملاقات اور اُن پر بالا دستی کی خوشن جری تھی اور یہ کہ وہ لوگ مختاج وفقیر بنگر آپ سے بالا دستی کی خوشن جری تھی اور یہ کہ وہ لوگ مختاج وفقیر بنگر آپ کو بہجان بالا دستی کی خوشن ہو اُن کو بہجان کیس کے لیکن وہ لوگ آپ کو بہجان بیس آئیں گے آپ اُن کو بہجان کیس کے لیک آپ کو بہجان بیس آئیں گے آپ اُن کو بہجان کیس گے گئی ہوں گ

یہ وحی جو کنویں میں نازل ہوئی دہفول تفسیر ظہری) وحی نبوت نہ مقی کیونکہ وہ چالیس سال کی عمریں عطا ہوتی ہے بلکہ یہ وحی ایسے ہی تھی جیسے حضر موسیٰ علیہ الت لام کی والدہ کو بذریعہ وحی مطلع کیا گیا تھا یا جیسے حضرت مرکم سے کلام کیا گیا یا شہدی تھی کی طرف وحی کی گئی۔ حضرت یوسف علیہ الت لام پر وحی نبوت کاسلسلہ یا شہدی تھی کی طرف مے بعد شروع ہوا جیسا کہ اسی سورہ میں تصریح ہے:۔ مصریب نیخے اور جوان ہونے سے بعد شروع ہوا جیسا کہ اسی سورہ میں تصریح ہے:۔ وکی آبکہ آئے گئے ایڈنٹ محکمی اور عیا۔

اورجب یوسٹ اپنی پوری جوانی کو پہنچے توہم نے انہسیں

علم وحکمت (نبوت) عطائی۔
گر دگر مفسرین جیسے ابن جریر ابن ابی حاتم ان اسکو وحی نبوت ہی قرار دیا ہے۔ یہ
ایسے ہی ہے جیسے کہ حضرت عیسیٰ علیہ الت الم موجین ہیں نبوت عطائی گئی۔
الغرض حضرت یوسف علیہ الت الم کو کوئویں ہیں ڈوال کر والیبی کے وقت
ایک جانور سے خون سے حضرت یوسف علیہ الت الم کاکر تہ سُرخ کیا اور عشار کے وقت
روتے پیٹنے حضرت بعقوب علیہ الت الم سے پاس پہنچے حضرت بعقوب علیہ الت الم آئی
آواز سُن کر با ہرآئے یو چھاکہ کیا واقعہ ہے ؟ کیا تمہاری بکریوں کے گلے پرکسی نے تملہ
سر دیا ہے ؟ اور یوسف کہاں ہے ؟

سب نے یک زبان ہوکر کہاہم نے آپس میں دوڑ لگائی اور پوسف کواپنی سامان کے پاس حچوڑ سکتے تھے۔اس درمیان میں بھٹریا آیا اور پوسٹ کو کھالیا۔ دیکھئے بیداس کا سٹرنہ ہے جوہم کو مقام حادثۂ پر ملاہے۔اے آبا جان! آپ کو توبیقین نہیں آئے گاخواہ ہم

کتنے ہی سیچے کیوں نہوں ؟

قر آن حکیم نے اس خون آلو دکرتے کا وصف بدیم کیڈب دخھوٹا خون) بیان کیاہے۔حقیقتا یہ حکیوٹرا خون تو تھا ہی کیکن صورۃ مجھی حجوٹا تھا۔الٹر تعالے نے انہیں حجوٹا کا ایٹر تعالے نے انہیں حجوٹا کا ایٹر تعالے کے ان بھائیوں کو غافل اور بے عقل بنا دیا کہ کرتے پرخون لگانے کے ساتھ اُس کو جابجا سے بھاڑ بھی دیتے جس سے بھیڑ ہے کا کھا جا نا ثابت ہوتا، اُنھوں نے یوسف علیہ السلام سے بھیڑ و ریا کم کرتے پرجانور کا خون لگا کر باپ کو دھوکہ بیں ڈالنا چا با ریکن حجوٹے کو عقل نہیں بوتی) خو و دھوکہ کھا گئے کرتے کو بھاڑا نہیں بحضرت یعقوب علیہ السلام نے تھے وسالم کرتہ و کھے کرفرہ یا اُنہیں بحضرت یعقوب علیہ السلام نے تھے وسالم کرتہ و کھے کرفرہ یا :۔

أيرك بيثوا يبهجير بآكيسامكيم وعقلمند تفاكه يوسف كواسطرح

کھایاکہ کہیں سے کرنہ تک نہ چھٹنے یا ہے ؟"
اسطرح حضرت یعقوب علیہ الت لام پر ان کا تحروفریب وقعل سازی کا داز فاش ہوگیا ۔
فرما یا یوسف علیہ الت لام کو تو بھیٹر یے نے نہیں کھا یا بلکہ تمہارے دلوں نے ایک بات
گھڑتی ہے۔ اب میرے گئے بہتریہ ہی ہے کہ میں صبر کروں اور جو کچھ تم کہتے ہو اُس پر السّر
سے مدو طلب کروں چنا بخہ حضرت بعقوب علیہ الت لام سب سے الگ ہوکر کیسو ہو گئے
اور السّر تعالیٰ سے فریا دسمرنے گئے۔ اس ساری سازسٹس اور جھو گئے خون اور مکروفرین بات کا مذکرہ ان آیات میں اس طرح مذکور ہے :-

یاس وحی بھیجی کہ زائے یوسٹ غم مذکر ناہم تم کو بہاں سے نجات و بجر بڑے درجے پر بہنچا دین گے اور ایک دن وہ ہوگا کہ) تم اُن لوگوں کو یہ بات جتلاؤ گے اور وہ تم کو د بوج اسکے کہ تم ایک اونجی حالت میں ہوگے) بہجان تک نہ سکیں گئے۔

رغرض یوسف علیه است الم کا توبیقصه بهوا) اوردا دهر، وه اوگران باپ کے پاس عشار کے وقت روتے بہوئے بہنجے۔
کہنے گئے اباجان ہم سب نو آپس میں دوڑنے لگ گئے اور آپ کوہم نے اپنے سامان کے پاس چیوڑ دیا۔ اس ایک بھیڑیا (آیا اور) انکو کھاگیا اور آپ نو ہمارا کیوں مین کریں گئے گوہم کیسے ہی سیخے ہوں۔
کھاگیا اور آپ نو ہمارا کیوں مین کریں گئے گوہم کیسے ہی سیخے ہوں۔
اور یوسٹ کی شیص پر جھوٹ موٹ کا خون بھی لگا لائے (الکہ اپنے قول کی سند میں بیٹ کریں) یعقوب دعلیہ السلام، نے دوکی اوغیرہ نوکو تہ کہیں سے بھٹا نہیں چرانہیں تھاتو، کہا کہ یوسف کو بھٹریا وغیرہ نے نہیں کھایا، بلکہ تم نے اپنے ول سے ایک بات بنالی ہے سو (خیر) مبرہی کروں گا جسمیں شکایت کا نام ونشان مذہوگا اور جو باتیں تم مبرہی کروں گا جسمیں شکایت کا نام ونشان مذہوگا اور جو باتیں تم منت ہوائن میں اللہ بی مدرد کر سے "

رور غلامی است بوت یعقوب علیه است ام بیٹوں کی اس کروفریب والی گفتگو سے الحدیق الله می یا بھرالہام وفراست نبوت سے اطبینان ہوگیا کہ یوسف علیه السلام کا فراق ایک طوبی عرصہ تک برفرار رہے گا سکوت افتیاد کر لیا۔ اِدھر ملک شام سے ایک قافلہ مصر جار ہا تھا۔ راستہ بھول بر اس غیسر آباد کنویں پر پہنچا، پانی کی ضرورت و لیے بھی سفریں پیشس آتی ہے ۔ خاص طور پر جبکہ دُوردُور تک بن کو بیٹ یا نام کا ک بن وعربت یا ایک بن وعربت یا آت ہے دول کنویں میں ڈالا حضرت یوسف علیہ السلام نے خدائی قدرت کا منا ہرہ کیا۔ جا آ ہے ڈول کنویں میں ڈالا حضرت یوسف علیہ السلام نے خدائی قدرت کا منا ہرہ کیا۔ اس ڈول کی رتبی پر طلی اوپر پہنچے، اس کسی حسین وجبیل الرکے کو دیچے کروہ پر کارا کھا:۔ پہنٹری میں ڈالا جا کہ بری خوشی کی بات ہے یہ تو ایک بڑا اچھا لاگا کا آباد)

مدینِ معراج بین یہ عبارت ملتی ہے کہ نبی کریم صلی النّہ علیہ ولم نے فرمایا بیں شہر معراج بین یہ عبارت ملتی ہے کہ نبی کریم صلی النّہ علیہ ولم نے فرمایا میں شہر معراج بین یوسٹ علیہ است المام سے ملا تو دیجھا کہ النّہ تعالیٰ نے پورے عالم سے محسن وجمال میں سے آ وصاحت اُن کوعطا فرمایا ہے اور باقی آ دصاسارے جہاں ہیں جہاں بین وجمال میں سے آ وصاحت اُن کوعطا فرمایا ہے اور باقی آ دصاسارے جہاں ہیں جہاں بین

ا بتدارً تو مالک بن وُعبرنے تعجب سے بیکارا تھا گمربعد ہیں اُسکوخیال آیا کہ اِسکا چرجا نہ کیا جا نامناسب ہے تاکہ اِسکو مجھیاکر رکھا جا سکے اور تھے فروخت کر کے رقم وصو ک كُرِنَى جائے.اصل بیں فرآنی الفاظ وَأَسَدُوْهُ بِطِمَاعَةً بِعِنَى حَصِياً لَيا اِسكوايك مال تجار سمجھکر مکن ہے قافلہ سے خندلوگوں نے ایسا کیا ہو یا پیھن نفسیمنے نہ ہے کہ پوسف علالسلام کے بھائیوں نے حقیقتِ واقعہ کو حجُھیا کریوسٹ علیہ انتسلام کو ایک مال شجارت بنالیا جيباك بعض روايات ميں ہے كہ بڑا تھا ئى ميہودا روزا نہ بوسف عليہ ايت لام كو كنوبي ب رونی و یا نی خفیہ طور پر میہنیائے آیا کرتے تھے، تبیسرے روزجب اُن کو کنوٹی میں نہایا تو واپس آگرائیے دیگڑ بھائیوں سے واقعہ بیان کیا۔ بیسب بھائی جب وہاں میہو بجاؤر تحقیق کرنے پر فافلہ والوں سے ہاں یوسف علیہ است لام بر آمد ہوئے تو اُن سے كهاكه يه لاكا بمارا غلام ب بهاگ حربهان آفيا بها نم في بيت بُراكيا كه اسكواين قبصنه مين ركها به مالك بن وعبراورا سيحساتفي تهم سخيح كهم حور سمجھ جائمنيگے اسلئے بھائيوں ہے یوسف علیہ السلام کی خرید آری پر بات چیب ہونے لگی تواب آیت سے میعنی ہوتی كه برادران پوسف نے خود ہی پوسف علیہ الت لام كو ايك مال ننجارت بناليااور فرخت ر ديا : - وَ اللّهُ عَلِيمٌ بِهِمَا يَعْنَهُ لُونَ لِينِ اللّهِ تِعَالِحُ وَإِن تِي سب كَارْكُرْارِيا لَ معلوم خصیں استح بعد برا دران پوسف نے بوسف علیہ السلام کو بیج دیا (یا) تا فلہ والوں نے پوسف علیہ اتلام کو نبیت مقور ی سی قیمت ہیں خرید لیا نبعنی محنتی سے چند درہم سے معاوضه میں دونون فنسیر س منقول ہیں۔

''جھزت عبدالٹربن مسعور کی روایت کے مطابق بیش درہم ''خصرت عبدالٹربن مسعور کی روایت کے مطابق بیش درہم

میں یہ معاملہ ہوا '' دابن کثیر، ملالین) وش مھائیوں نے دود دورتم تسیم کر لئے۔ اِس معاملت کے اختیام کو قرآنی حجب لم نہابت بلیغ پیرایہ میں اواکر تاہے۔ رُدا در این یوسف اس معاملہ بیں در اصل مال کے خواہشمند نہ تھے یہ ربیعنی اِن کا اصل مقصد تو یوسف علبہ استلام کو باب سے جدا کرنا تھ اس لئے محفولا سے سے در اہم ہیں معاملہ کرلیا) قرآن مکیم بیب قافلہ والوں کا تذکرہ اس طرح موجو د ہے۔

قَرِ الْمُ مَضَمُونَ وَجَاءَتُ سَيّارَةٌ فَأَرْسَكُوا وَ إِدَهُمُ فَأَدُلْ فَكُلُ اللَّهُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ اللِّهِ اللهِ ١٠٠١) وَلُونُهُ الْمُ الْمُ (آيت ١٠٠١)

(اُوھر) ایک قافلہ آنکلا (جومھرکوجا تا بھا) اُمھوں نے اپنا آدمی یانی لانے کے واسطے (یہاں کنویں پر) بھیجا اور اُس نے اپنا ڈول ڈالا (تو یوسٹ نکل آئے مارے خوشی سے) کہنے لگا اے خوشنخبری یہ تو (خوبسورت) لڑکا ہے ادر اسکو مال سجارت قرار دیجر خوشنخبری یہ تو (خوبسورت) لڑکا ہے ادر اسکو مال سجارت قرار دیجر خوبسایا اور الٹرکو اِن سکی کارگزاریا ن معلوم تھیں اور اُن کو بہت ہی کم قیمت میں بیچ ڈالا معنی گنتی کے چند درہم کے بد لے اور وہ لوگ کم قیمت میں بیچ ڈالا معنی گنتی کے چند درہم کے بد لے اور وہ لوگ کم قیمت میں بیچ ڈالا معنی گنتی ہے چند درہم کے بد لے اور وہ لوگ کے دان کے قدر دان تو مقے ہی نہیں بی

افرارم مسرمی اعرض اسطرح حضرت یوسف علیه الت الام کو تاجروں کے قافلہ مسرکے گئے۔ سید نا یوسف علیہ الت الام بنالیا اور مال تجارت کے ساتھ اُن کو بھی مصرلے گئے۔ سید نا یوسف علیہ انتسالام کی زندگی کا یہ بہلوجو صور ہ علامی کی شکل ہیں بیدا ہوائیکن اپنے اندر نبوّت اور بخت و تاج کی عظمتیں پوسٹ یدہ رکھتا ہے۔ یہ ہی وہ بہلازینہ تھاجس نے ایخی مصرکے تختِ شاہی پر الاطحایا۔ حضرت یوسف علیہ السلام اپنی قسمت پرسٹ کر،مصائب پرصابر،اور السنرے فیصلہ پر راضی، سرنیاز خم کئے مصر سے بازار میں فروخت ہونے جارہے ہیں۔ السنرے فیصلہ پر راضی، سرنیاز خم کئے مصر سے بازار میں فروخت ہونے جارہے ہیں۔ فافلہ والوں کے ساتھ جلے اور ان لوگوں سے کہا کہ دیکھو اس غلام کو بھاگ جائے کی عادت سے کھال نہ چھوڑ نا بہاں یک کہ اسکولے کرمصر نہ ہنچے جانا۔ جب بھائیوں کوابس عادت سے کھال نہ چھوڑ نا بہاں یک کہ اسکولے کرمصر نہ ہنچے جانا۔ جب بھائیوں کوابس عادت سے کھال نہ چھوڑ نا بہاں یک کہ اسکولے کرمصر نہ ہنچے جانا۔ جب بھائیوں کوابس عادت سے کھال نہ چھوڑ نا بہاں یک کہ اسکولے کرمصر نہ ہنچے جانا۔ جب بھائیوں کوابس

<u> جلدا دل</u>

برا<u>ت کے جرا</u>غ كواس بات كااطمينان ہوگيا كە قا فلەمصرى راسستە پرجل پڑا تواپنے گھروالىپس ہو گئے مصریبہ بچر قافلہ والوں نے حضرت یوسٹ علیہ الت لام کو ہازار مصر میں فروحت حرنے کا اعلان نمیا بتفسیر قرطبی میں ذکورہے کہ لوگوں نے بڑھ بڑھ کرمیمتیں لگا ناشروع کیا یہاں تک کہ وزن یوسٹِ علیہ الت لام سے برا برسونا اور اسی سے برا برمشک

اور رہیمی کیڑے قیمت لگے گئے۔

یہ دولت اللہ تعالے نے عزیز مصر سے لئے مقدّر کی تھی ،مصری افواج کا ایک افسروث ہی خاندان کارئیں جس کا نام فوطیفار تھا مصرے بازار سے گزر رہامت پوسٹ علیہ ایسلام پرنظر پڑی توصورت وشکل سے ببجد متأکّر ہوگیاا ورمنہ بولی فیمت وے کرا ہے گھرلے آیا اور ایکی بیوی ہے کہا کہ دیجھواسکوغزت سے رکھنا بمجب نہیں کہ یہ مهم كوفائده شخشے يا بهم اسكوا پنا بنيا بناليں ُ امام قرطبي لکھتے ہيں كراسونت پيرني لاولد "مركوفائيرہ شخشے يا بهم اسكوا پنا بنيا بناليں ُ امام قرطبي لکھتے ہيں كراسونت پيرني لاولد تھا قرآن کیم نے اسکانام عزیزم صربیان کیا ہے۔ ابن کثیر نے بکھا ہے کہ بیص ملک مصر کا وزيرخزا نه تحااور با دستا ومصراس زمانے بين قوم عمالقة كا أبض ض رتبان بن ٱسبَد تحاجو بعد بین حضرت پوسف علیه الت لاَم پرایمان لا یا اور حضرت پوسف علیه السلام کی زندگی تعربی مشرک پرس ہی ہیں انتقال کرگیا۔

عزيزم مصرب نے حضرت يوسف عليبرات لام كوخريدا تھا اسكى بيوى كإنام راك یاز لیخا بیان کیاجا تا ہے اس نے اکبی بیوی سے کہاکہ بوسٹ علیدانسلام سے ساتھ علاموں جيسامِعامله نه كرِنا ،إن كى ضروريات كا اچها انتظام كزنا دقرآن عكيم نے اس عورت كوام أة العزيز

دعزیزی بیوی) کہاہے۔

اس طرح حضرت یوسف علیه ات لام شاہی خاندان میں اولاد کی طب رہے رہنے لگی اسی نا زونعمت میں سِن شعور کو ہنچے۔ حضرت ابن مسعورٌ فرماتے ہیں تحہ دنیا میں تدبیّ آدمی بڑے عقلمندا ورقیا فرشنا^س ر

شاہت *ہوتے ہیں* :-آ الله المرزم صرص نے اپنے قیاس واندازے سے اپنی بیوی کویہ ہرایت دى كەنوسى كاكرام كونا

تو مصرت شعیب علیه الت لام می وه صاحبزا دی جس نے حضرت دوم حضرت شعیب علیه الت لام می وه صاحبزا دی جس نے حضرت

موسی علیہ الت لام کے بارے ہیں اپنے باپ کومشورہ دیا کہ ابا جان ابحو ملازم رکھ لینے اسکے محربہترین ملازم وہ شخص ہے جو قوی اور امانتدار بھی ہو۔ محربہترین ملازم وہ شخص ہے جو قوی اور امانتدار بھی ہو۔ متوقع حضرت الویح صدلق فرحنصوں نراینی و فارق سے معلا حضہ و بھی ناری ہی

سوم حضرت ابو بحرصد نیق رخ جنھوں نے اپنی و فات سے پہلے حضرت عمر فاروق اللہ کو خلافت سے پہلے حضرت عمر فاروق اللہ کو خلافت سے لیے نامزو فر مایا۔ د قرطبی)

بازارِمصریس خریداری کا تذکرہ اس طرح آیاہے:۔

فرانی مضمون از گال الینی اشتراهی مفتر در مراکب م اکثر مین ۱۶ در در من میستر در مراکب مین میستر در مراکب مین میستر در مراکب مین میستر در مراکب مین میستر میس

سے کہا اسے قیام کا اچھا انتظام کرنا بعید نہیں کہ یہ ہمارے لئے فائدہ مند ثابت ہو، یا ہم اسے بیٹا بنایس دمشہوریہ ہے کہ اسے باللہ ہمارے دی فائدہ مند ثابت ہو، یا ہم اسے بیٹا بنایس دمشہوریہ ہے کہ اسکے اس اولاد نہ تھی) اسی طرح ہم نے یوسٹ کو زبین کی حکومت دے دی اور تاکہ اُن کو خوالوں کی تعبیر دینا بتلادیں اور الشر تعالے اسپنے کردی کام پر غالب سے دجو چاہے کردے) لیکن اکثر آدمی اس بات کوجانے نہیں.

سخت ترین آزمانش افارسی کا ایک مقولہ ہے مقرّبان رابیش بودجیرانی " بڑوں کی آزمائش بھی بڑی ہوتی ہے۔

چا ہِ کنعان کی مصیبت مجم نہ تھی۔ دورِغلامی سے بھی سابقہ بڑا۔ بازارمصر میں غلاموں کی طرح فروخت ہیں کر سے

اب جوانی کی وکھٹن آزمائش شروع ہوئی جیمیں صرف اور صرف خدا کی حفالت سہارا بنتی ہے بحضرت یوسف علیہ السّلام سن بلوغ کو پہنچے گئے ہیں ۔جوانی کا عالم مخا، حُسن وخو ہروئی کا کوئی ایسا بہلونہ تھا جوان سے اندر موجود نہرو ۔عزیز مصری بوی اُن پر بُری طرح فرلفتہ ہوگئی ۔ بُری طرح فرلفتہ ہوگئی ۔

قرآن كيم في اس حادثه كواس طرح بيان كيا ہے :-

وَرَاوَدَ نُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا لِللَّهِ آبِتَ اللَّا اللَّهِ آبِتَ اللَّهِ اللَّهِ آبِتَ

ور و و ت المحامل مویی بیسه سرات بیست کی است و است کے گھر میں وہ اُور نجیسلایا یوسٹ کو اس عورت نے جس کے گھر میں وہ رہتے مجتے اسکے نفس سے معاملہ میں اور دروازے بند کرد بیٹے

اور سینے لگی آجاؤتم ہی سے مہتی ہوں "

اگرچہ پیغورت عزیز مصری بیوی ہے جیسا کہ دوسرے موقعہ پر بیان کیا گیا ہے سکن آگورہ آیت میں آگینی ہو فی بینیتا (وہ عورت جس کے گھریں یوسف رہا کرتے تھے) کے بہم عنوان سے اُس عورت کا ذکر کیا گیا ہے۔ اس عنوان میں یہ نزاکت ملحوظ ہے کہ حضرت یوسف علیہ الت لام کے گناہ سے بیجنے کی مشکلات میں اس بات نے اور بھی احن فہ حردیا تھا کہ وہ اسی عورت سے مکان میں اِسی کی پناہ میں رہنے تھے۔ اس کے کہنے کونظرانداز کرنا کچھ آسان یہ تھا۔

و سراہدار مرہ چھائی کے تھا۔ حضرت بوسف علیہ اکسام خانوا د ہ نبوت کاچیٹم وچراغ بنھے ،خو دھی تھی۔ نبوت پر فائز بہو تھے بنقول حس بصریؓ اسوقت عمر شریف چالین سال ہو تی تھی۔ مجلا اِن سے یہ کیوں ترمکن تھا کہ اس نا پائی اور مخش میں مبتلا ہو جائیں ،لیکن عورت ہے قابو ہوکرجب کمرے کا در وازہ بندکر دے اور اصرار کرنے گئے تو یہ وقت ہرا یک سے لئے سخت

، در اکش کا ہوجا تاہے۔ سف ہی خاندان کی عورت ،حسن و بہار سے عمور ، محبوب نہیں عاشق بحرجب کسی کا بیچھا کرے تو کو نسا در لیے ہے جو آ دمی کو گنا ہ سے باز رکھتے۔

مفرت یوسف علیہ الت آم نے آپ کو چوطرف سے گھرا ہوا یا یا تو پنجمبرانہ انداز ہیں سب سے پہلے الٹرتعالے کی پنا ہ ناگی مکتا ذکا ملاّ دالٹنر کی بنا ہ) دمینی اپنے عزم وارادہ پر بھروسنہ ہیں کیا) اسکے بعد پھمت وموعظت کے ساتھ زلیغا کو نصیحت کرنا مشروع کیا کہ وہ بھی الٹرتعالے سے ڈرے اور اپنے ارا دے سے باز آجائے۔فرمایا :۔ توہی میرارب ہے ایس نے مجھے عزت کی جگہ دی اور مجھ کو

کہاں سے کہاں پہنچا یا ایسے محسن ومُرقِی کے تھم ہیں خیانت کروں اور اسکونظرانداز کردوں ؛ مقیناً ظلم کرنے والوں کو بھی فلاح نصیب نہیں ہوئی " قرآن مکیم نے اس نازک ترین شخصت کو اس طرح واضح کیا ہے :۔ قرآن مکیم نے اس نازک ترین و یہ دروں و وسٹرین کا دوری و داستے ہیں۔ یہ یہ دوری و دسترین کا دوری و دوری کا دوری و

وَكَتَا بَلُغُ أَشُلُهُ لا تَيُنَا لا مُحَلِّمًا وَعِلْمًا الإِلْيَا الإِلْيَاتِ ١٤ السِّن

اُورجب یوسف اپنی جوانی کو پہنچے ہم نے اصفیں حکمت و عسل عطا فر ما یا اور ہم نیک لوگوں کو اسی طرح بدلہ دیا کرتے ہیں۔ اور جس عورت کے گھریں یوسف رہا کرتے کھنے وہ اُن سے اپنا مطلب حاصل کرنے کے لئے اُن کو مخسلا نے گئی اور گھر کے سارے دروازے بند کرد ہے اور کہنے گئی بس آجاؤ تم ہی سے کہتی ہوں ، یوسف نے کہا اللہ بچائے وہ میرا مرتی ہے کہ مجھ کو اچھی طرح رکھا ایسے حق فراموشوں کو فلاح نہیں ہواکرتی اور البت اُس عورت نے یوسف سے ارا دہ کرتے اگر اپنے پرور دگار کے ہر ہاں کونہ ویکھ یا تے۔ اسی طرح ہوا تاکہ سٹائیں ہم اُن سے بُرائی اور بے حیاتی کو دیکھ یا تے۔ اسی طرح ہوا تاکہ سٹائیں ہم اُن سے بُرائی اور بے حیاتی کو میں کے دو ہمارے مخلف بندوں ہیں سے ہیں ؛

" فرہان دسے معرفی میاحب جلالین نے حضرت ابن عباس نے سے اسکی تنفسیر ینقل کی ہے کہ زلیجا کے اس بیجان خیب خرار اللہ کے وقت اللہ کی قدرت سے حضرت یوسف علیہ التلام کو البین والد محترم حضرت بیعقوب علیہ التلام اجا تک نظر آئے اور انفول نے حضرت یوسف علیہ التلام کے سینے پر ہانخد رکھا جس سے معاً قلب کے وساوس تک جاتے رہے " دجلالین)

عفظیم کامیا ہی ایجھی آیات میں یہ بیان آیاہے کہ بس وقت عزیز مصر کی ہیوئ است مسلم کامیا ہی ایک مصر کی ہیوئ مسلم کامیا ہی کوشش میں مستعول تھی اور حضرت یوسف علیہ الت لام اس سے نیچ رہے تھے کہ التہ تعالیٰ نے ایٹ بست کے لئے بطور معجزہ کوئی چیز سامنے کر دی جس سے قلب سے سارے وساوس دور ہوگئے۔
قلب سے سارے وساوس دور ہوگئے۔

اس "برہان رہ" کامٹ ہرہ کرتے ہی حضرت یوسف علیہ الت کام وہاں ہے مجاگ کھٹرے ہوئے اور با ہر نکلنے کے لئے دروازے کی طرف ووڑے ،عزیزمصر کی بیوی اُن کو کیڑنے کے لئے بیچھیے دوڑمی اور حضرت یوسف علیہ الت لام کا کڑتہ کیڑلیا

لین وہ اپنے عزم کےمطابق نہ رُکے توکر نہ پیچھے سے بچھٹے گیااور وہ با ہرسکل آ کے۔ سی خسکش میں و ہمجی ہاہر نکل پڑی جب دونوں ہا ہرآئے تو دیجھا کہ عزیز مصرسا ہے ا ہے۔ زلیخاسہم گئی اور بات نبھانے سے لئے یوں الزام تراث : ایے میرے سڑج! یٹ بھی آئی بیوی کے ساتھ مُرا ارا دہ کرے اُسکی سنرااِ سلے سواا ورکیا ہوںکتی ہے گھ پُوِ شخص آئی بیوی کے ساتھ مُرا ارا دہ کرے اُسکی سنرااِ سلے سواا ورکیا ہوںکتی ہے گھ اسکو قیدخانے میں ڈال دیاجائے یا اور کوئی سخت سنرا َ دمی جائے ۔عورت کاعشق انجبی خام تقااس کیے سمیع مال ظام کردینے پر قاور پنہوئی ۔ حضرت بوسيف عليه التبلام أينى ببغمبرانه مشرافت ا ورعفو و درگزر كى بنارمركن ہے اس کا یہ دانے بد فاش نہ کرتے مگرجب اسی نے پیش قدمی کر کے حضرت بوسف علیہ السلام پر نہی برترین نہمت کا ایسٹ ار ہ کر دیا تو مجبور نہو کر اُنمفوں نے حقیقت کا

وہ اے عزیزمصرمیمی مجھ سے اپنامطلب نمکا لنے سے لئے بھے سلا

معامله بڑا پرخطراور نازک تھا عزیزمصر سے لئے اِس کا فیصلہ کرنا بڑا دشوار تھا۔ کہ ان میں كسكوستيا تنمجه ؟ شهرًا دت ونبوت كاكونَى موقعه نه تظا متحرالتُدتعالے كى دائمى سنت إسپنے سے برگزیدہ بندوں سے بارے میں جاری رہی ہے کہ وہ جہاں اپنے نیک بندوں کو گٹ اہ سے بچالیتے ہیں ایسے ہی ان کواس و نبائی رسوانی سے بھی بجانے کا انتظام معجزانہ انداز سے فراہم کردیتے ہیں عموماً ایسے مواقع پر ایسے چھوٹے معصوم بچوں سے کام لیا گیا جوعادةً شهادت دینا تو در سنار بوننا ان سے بس می بات نہیں ہوتی مگر بطور معجزہ اُن کوکو یا تی عطا کر دی جاتی ہے تاکہ اینے مقبول بندوں کی برآت وطہارت کا انتظام ہوجائے۔ جیسے حضرت مریم پرجب لوگوں نے تہمت لگائی توصرف ایک دن سے بچے حضرت عیائی کو الله تعالے نے تھویا فی عطا فرماکراُن کی زبان سے اپنی والدہ کی پاکی ظاہر فرما دی۔ (مربیراً بسر) "بنی اسرائیل سے ایک بزرگ جُریج "براسی طرح کی ایک تمہمت ایک بڑی سازش سے ساتھ باندھی گئی تونوزائیدہ بیجے نے اُن کی برات سے لئے شہا دت **دی**؛ (بخاری)

" خب حضرت موسیٰ علیه الت لام پر فرعون کو شبه مُروا جب که و ه

صندوق سے برآ مرہوئے تھے توزوجۂ فرعون کی خادمہ کی شیرخوار بجی کو گویائی عطاہموئی اُس نے حضرت موسی کو بچین میں فرعون سے بچالیا۔ (بخاری شریف)

اسی طرح حضرت یوسف علیہ الت الام سے اس واقعہ میں حضرت عبداللہ بن عباس اور حضرت ابو ہر رہے گئی دوابیت کے مطابق ایک شیر خوار بچے کو گویائی عطائی اور وہ مجمی نہایت حکیمانہ انداز کی ، یہ چپوٹا بجتہ اسی گھرکے تہوا دے میں بڑا تھا بیٹس کو گمان ہوسکتا تھا کہ وہ زلین کی اس ناز بباحر کات کو دیچھ رہا ہے اور سمجھ رہاہے اُس نے عزیز مصر کے اس تذہرب کو اس طرح دُور کردیا ،اجا تک یوں گویا ہوا :۔

کے ہوں ہوں ہوا:۔

ایوسف کے کرنے کو دیکھواگروہ آگے سے بھٹا ہے تب تو

الیخا کا کہنا سیّجاہے اور یوسف حبوٹے ہیں، اوراگر قبیص پیچھے سے بھٹا ہے

سے تو یوسف سیّجے ہیں اور زینا حبوئی (کیونکہ جب وہ پیچھے سے بھٹا ہے

تواس میں اسکے سواکوئی دوسرااحتمال ہی نہیں کہ یوسف بھاگ رہے

مقے اور زیبا انکوروکنا چاہتی تھی اسی شکٹ میں گرنہ بھٹ گیسا)

جب بتلائی ہوئی علامت کے مطابق گرنہ بیچھے سے بھٹا ہوا مشاہرہ کیاگیا

توحضرت یوسف علیہ السّلام کی برارت ظاہر ہوگئی۔

توحضرت یوسف علیہ السّلام کی برارت ظاہر ہوگئی۔

(مسنداحمد، صحیح ابن مبان، مستدرک هاکم)

عزیزمصرنے موقعہ کی نزاکت جان کر اپنی عزت و ناموس کی فاطرمعا ملہ کو درگزر کر ہے ہوئے کہا یوسف علیہ الت لام سیخے تم ہی ہو،اس عورت کے معاطے کو درگزر کر واور اس قصہ کو میہن ختم کر و بھر بیوی سے کہا یہ سب تیرامکر وفریب ہے اور تم عور توں کا محروفریب مہت ہی بڑا ہو اسے اسے زلیجا تنہ اپنی اس حرکت بدکے لئے استغفار کر اورمعافی بانگ!

یہ میروں کا تذکرہ قرآن کھیں حضرت یوسف علیہ التلام کی کا میا بی کا تذکرہ قرآن حکیم ہیں اس طرح موجود ہے :۔

وَ اسْتَبَقًا الْبَابَ وَقَدَّتُ قَيِيْصَهُ مِنْ دُ بُوِدَّ الْفَيَا

سَيِّدَ هَا لَكَ ١١ لُبَابَ ١٠ لَا الْبَابَ ١٠ لا يوسف آيات عظ تاعظ)

اور دونوں آگے بیجھے دروازے کی طرف دوارے اوراس عورت نے اُن کا کُرنہ دلھنچ کر) میاڈ دیا اور دونوں نے دانیا قاً ﴾ ائس عورت کے شوہر کو در واز ہ سنے پاس دکھڑا یا یا،عورت دشوہر كو ديچه كرسٹ ياني اور بات بناكر) بولى كە جوشىخص تيرى بېوى کے ساتھ بدکاری کا ارادہ کرے اُس کی سنرا بجزا سکے اور کیسا ہوسکتی ہے کہ وہ جیل خانہ بھیجا جائے یا اور کوئی در دناک سنراہو۔ یوسٹ نے کہا (یہ بالکل جبون سے) یہی مجھ سے اپنا مطلب نکائیے کے لئے نگےسلانی تحتی اور دائس موقع پر) اُس عورت کے خاندان یہ ہے ایک مجواہ نے رجو کہ شیرخوار بچہ تھا) محواہی دی کہ اِن کا کرنتہ ﴿ دِیکھو کہاں سے بھٹاہے) اگرآ گئے سے بھٹا سے توعورت سجی اور ية مُوسِّے بن ا درآگر و ہ گرنہ بیجھے سے بھٹا ہے توعورت حجو بی اور بیہ سچتے ہیں۔ دغرض اس فیصلہ سے مطابق وہ کُرتہ دیجھا گیا تو پیچھے سے ميط ابوانكلا) سوجب (عزيزنے) اُن كاكرته پيچھے سے بيط ويجما دعور سے کینے لگا یہ تم عور توں کی جالا کی ہے بیشک تمہاری جالا کیا ں بھی بہت بھی ہوتی ہیں۔

ر مچر بوسف کی طرف متوج مهوکر کہنے لگا) اے بوسف میں اس بات کو جائے دو (معنی اس کاچر جائے کرو) اور (عورت سے کہا) اے عورت تو اپنے قصور کی معافی مانگ بیشک سرتا سرتو ہی قصور وارکجہ

حسن بوسقی کا آنسکارا عزیزمصرنے اگرچه رسوائی سے بینے کے لئے اس فی سے بینے کے لئے اس فی سے بینے کے لئے اس فی میک فی میک ہوں ہوں ہیں یہ جر جا ہونے لگا کہ عزیز مصری بوی کسقد شکرہ شکہ سٹ ہا کہ عزیز مصری بوی کسقد سے حیا ہے کہ اپنے غلام سے ساتھ بوگئی۔ اسٹے بڑے فاندان کی عورت غلام سے ساتھ معلق بید اگرنا چانہتی ہے۔ معلق بید اگرنا چانہتی ہے۔

جلد ا دِّل

یطعن و نیج جب عام ہوگئے توزلیجا پریہ بات سخت گراں گزری اور حیا ہا کہ اس بدنامی کو دور کردینا چاہئیے اور اسکے نئے شاہی خاندان کی عور توں سے ایسا

انتقام لينا چاہئے كه وه تقى أس بدنامى بي ستريب بهوجائيں۔

یہ نبوج تحراُس نے ایک دن سِٹ ہی خاندان کی عور توں کو ایک ٹر نسکلف عوت دے دی جب سب دسترخوان پر مبٹھ گئیں جوغالباً ہم قسم سے بھیلوں سے پُر ہوگا ^{سب} کے ہامقوں میں حیر یاں و کے وی مختب تاکہ حیل کا طام کر کھائیل عین اس موفعہ برجیب وہ بھل کاٹ کاٹ کر کھارہی تخبی عزیز کی بیوی نے حضرت یوسف علیہ اِستام کو حکم دياكه وه دسترخوان براّئين. حضرت يوسف عليه إلت لام مالكه تقعميل يحم بيس با مهر بحطے تو تمام عورتیں جمال یوسف کو دیجہ محرمبہوت رہےئیں اوراس قدریے خبر ہوگئیں کہ تھیلوں کو کا طننے سے بجائےخود ا بنے ہا تھ کاٹ لئے اور امضیں احساس تھی نہ سہواکہ یہ کیا ہور ہاہے اور ہے ساختہ زبانوں پریجله آباکہ کون کہتا ہے کہ بدانسان ہے ہفدا کی قسم یہ تو کوئی بزرگ فرسشتہ ہی ہے۔ بینظرد سچھ کرعز بزمصر کی بیوی نہایت خوسش ہوگئ اور اپنی کامیا بی اورطعن محرفے والیوں کی شکست پر فخر کرتے ہوئے کہنے لگی یہی تو وہ غلام ہے خس کے عنشق ومحبت سے بارے ہیں تم نے مجھ کو بدّنام کرر کھا ہے۔ اب تمہاراخو د کیا حال ہے ؟ بتاؤ میرافریفتہ ہو نا بیجائے یا ہجا ؟ بیشک ہیں نے اس کا دِل اپنے قالومیں لینا چا ہا تھا مگرو َہ ہے قالو نہ ہوا۔ اب ہیں تم سب ہے جہتی ہوں کہ اگر بیمبراکہا یہ ما ناتو پہ قید خانہ جائیگا یا ذلیل ورسوا ہوگا۔ قرآن حکیم نے اس دعوت کا تذکرہ اس طرح کیا ہے:۔

> قرآنى صمون وقال يسوة ين المتدينة اسرات النوين براد فَتَهَا عَنُ نَفْسِم قَدُ شَغَفَهَا حُبًّا ١٠٤

(يوسف آيات عند اعتد)

آور (حبب اس فضه کاچرجا بهوا تو) چندعور توں<u>نے جوئش</u>بہر میں رہتی مقیں یہ بات مہی کہ عزیز کی نیوی اینے غلام سے اینا (ناجائز) مطلب حال كرنے سے واسطے بيمسلاتى ہے دلحيسى ليست طبيع

بدایت کے جراغ

آدمی مرکز نمهیں یہ نوکوئی بزرگ فرسنتہ ہے۔ و ہ عورت بولی تو (دیجھلو) وہ محص یہی ہے جسکے بارے

میں تم مجھو گرامجلا کہتی تھیں اور واقعی میں نے اس سے ایپ کی مطلب حال کرنے کی خواس سے اور واقعی میں نے اس سے ایپ اگریہ آئندہ کو میرا کہنا نہ کرےگا دجیہا کہ اب نک نہیں کیا) تو میں جیل حالت کی اور ہے عزت مجھی ہوگا۔ (یہ حالت میں حضرت یوسف علیہ الت الام سے دیچے کر جب سب عور توں نے مجھی حضرت یوسف علیہ الت الام سے جو یہ تم کو اپنی محسنہ سے ایسی ہے توجہی مناسب نہیں تھی جو یہ بائیں نبی محمل کو اپنی محسنہ سے ایسی ہے توجہی مناسب نہیں تھی جو یہ بائیں نبی محمل کو اپنی محسنہ سے ایسی ہے توجہی مناسب نہیں تھی عور تیں گرون کے مور اس سے توجیل خانہ جانا ہی مجھ کو تریا دہ لیند عور تیں گار کی اور آئر آپ اے رب ان کے داؤر پیچے کو مجد سے دفع نہ کریں گے بیٹے موں گرا ور نادانی کا کام کر بیٹے موں گرا ور نادانی کا کام کر بیٹے موں گرا ور ان کا کام کر بیٹے داؤر بیچ کو آن نے دور رکھا۔ بیشک وہ د دعاؤں کی اور اُن عور توں کے داؤر بیچ کو آن نے دور رکھا۔ بیشک وہ د دعاؤں کی بڑا مسنے والا داور اُن کے احوال کی) جو اس سے نے والا داور اُن کے احوال کی) جو بانے والا داور اُن کے احوال کی) خوب جانے والا ہے۔ د مجمریوسف۔ والا داور اُن کے احوال کی) خوب جانے والا ہے۔ د مجمریوسف۔ والا داور اُن کے احوال کی) خوب جانے والا ہے۔ د مجمریوسف۔ والا داور اُن کے احوال کی) خوب جانے والا ہے۔ د مجمریوسف۔

علیہ الت لام کی پاک دامنی کی)مختلفِ نشانیاں دیکھنے کے بعداُن لوگوں کوئیم مصلحت معلوم ہوئی کہ اُن کو ایک وقت (خاص) تک قید ہیں رکھیں۔

قبیرخانے میں جب یوسف علیہ استلام نے عور توں کامتفقہ فیصلوٹنا اواریک

مہیں ساری عورتیں ہاں میں ہاں ملا رہی ہیں تو النٹر کے حضور وسبتِ برُعا برئے حضرت بوسف علیہ اتسلام کی دعا بارگاہِ الہی ہیں قبول ہوئی اوراللہ نے اُن عور توں سے سب منحر و فریب مور کر دائیے ، نسکن حکمتِ الہی ہیں یہ ہی بہتر تھا تحريوسف عليه التلام جيل خانه جليے جائيں ،حضرت بوسف عليه الت لام كوعز يزم مَهر

کے گھریں رہ کرعصمت بچانا ایک شکل کام تھا۔

أنغرض حضرت يوسف علبه إلت لام كولتيد خانه جيبجد يأكياءاس طرح ايك بے خطا كوخطاكارا ورمعصوم كومجرم بنا دياكيا تاكه عزيزلي بيوى ذتت اور رسواني سي محفوظ بوجائي تورات کی تصریح سے مطابقاً حضرت یوسف علیہ استیام سے ملی عملی جوہر قبید جانے میں مجمى حِيثُ مَنْ سَكِيمَ وَيدخانِ كا دارُ وغران كالمعتقد بهوگيا . قرآن عليم سيرهي اس بات كى تائيز كلتى ہے اس كئے كه أس زيانے كے قيدخانوں شے حالات اسے پيشِ نظر صفرت پوسف علیہ ایت لام کے پاس قید یوں کا آناجا نا اور انکی عظیت و نیک نفسی کا اعتراف تحرنا اسکو واضح کرتے کہیں کہ حضرت یوسف علیہ استلام کے باک اوصا ف کی قید خانہ میں کا فی سنت ہم ت تھی۔ حسن اتفاق سے پوسف علیہ السّلام سے ساتھ دو نوجوان بھی واخل قیدخانہ ہوکئے اِن میں سے ایک شناہی ساقی تقااور دوسران ہی باورجی خانہ کا داروغه۔

ابن کثیر نے لکھا ہے کہ یہ دونوں اس الزام میں گرفنار یہوئے کہ انھوں نے باوسشا ہ کے کھانے پینے میں زہر دینے کی کوشش کی تقی مقدمہ زیر تقیق تھا اس لئے دونوں كوجيل مين ركها كييا. بوسف عليه ات لام اينے پنجمبرانه اخلاق كے سبب سب قيد يوں كى دلداری کرتے ،جبتاؤمگین و کیھانستی دیے جوئی بیمار ہوتا توعیادت کرتے ،صبری تلقبین تحرتے، رہانی کی اُمید ولاتے اور رات کوعبادت میں مشغول رہتے۔ان کے یہ حالات دیچکرجبل کے سب قیدی غیر معمولی مثا تر تھے۔ یہ و و قیدی جو حضرت یوسف علیالسّلام

برایت کے چراغ ملدا ول

کے ماتھ جیل ہیں داخل ہوئے تھے ایک روز اعفوں نے کہاکہ آپہمیں نیک معلوم ہوتے ہیں اس کی تعبیر تائیں ایک خواب بیان کرتے ہیں تاکہ آپ اس کی تعبیر تائیں ایک فراب بیان کرتے ہیں تاکہ آپ اس کی تعبیر تائیں ایک نے بعنی شاہی ساقی نے کہا ہیں نے خواب دیجھا ہے کہ انگور سے شراب نکال ، ہا ہوں ، اور دوسر سے نے کہا کہ بیں نے دیجھا کہ میرے سر بر روٹیوں کا ٹوکر اسے اُس میں سے جانور نوچ کر کھا رہے ہیں ۔

برا و کرم انتی تعبیر بتائیں آپ بیقیناً نیک لوگوں میں سے ایک ہیں۔

حضرت یوسف علیه اکتام نے اُن سے نرمی اور محبت سے فرمایا بیشک التا تع نے جوعلم مجھے عطا فرمایا ہے ان بین علم تعبیر کے علاوہ بیعلم بھی شامل ہے کہ بین تمہار اِ مقررہ کھا نا جو تمہارے گئے آتا ہے اسکے آنے سے پہلے ہی بین ہمیں بتلادیتا ہوں کر کس فسم سکا کھا نا اور کیسا اور کشنا اور کس وقت آئے گا اور وہ تھیک اُسی طرح نکلتا ہے: دٰوِنگا مِیتًا عَلَّمَنِیْ مَی ّدِی یہ کوئی رَک یا جَفَر کافن نہیں کوئی کہانت یا شعبدہ نہیں بلکہ میرارب مجھے بذریعہ وخی علیم کراہے مگریں تم سے ایک بات کہتا ہون را ایبر بھی غور کرؤ ہے اُن لوگوں کی بلت

کواختیار نہیں کیاجوالٹر پرالیان نہیں رکھتے اور آخرت سے بھی مسئکر نہیں ، بیں نے اپنے باپ دادا میعنی ابرانہم ، اسحق ، معقوب کی ملت کی بیروی اختیاد کرلی ہے ۔ ہم کسی کو اکنر کے ساتھ نشر یک نہیں ٹھہراتے، یہ الٹر کافضل ہے جو اس نے ہم پر اور ایمان والوں پر کیا ہے لیکن اکثر لوگ اس نعمت کامشکر ا دا نہیں ہوتے ۔

اے دوستو اکیا تم نے اس پر بھی غور کیا ہے کہ کئی ایک معبودوں کا ہم نام ہترہے یا اللہ و حدوکا جو لا سٹری اورسب پرغالب ہے۔ تم اسکے علاوہ جس جس کی بھی عبادت کرتے ہو اُن کی حقیقت اس سے زیادہ کچھ نہیں کہ چند نام نہیں جنکو تمہارے باپ وا وا نے گھڑ لیا ہے ، اللہ نے اُن کے لئے کوئی سند نازل نہیں کی ہے حکوت توسرت اللہ ہے ، اللہ نے اُن کے لئے کوئی سند نازل نہیں کی ہے حکوت توسرت اللہ ہی کے لئے اُس نے بھکم دیا ہے کہ اُس کے سوامحسی توسرت ان کی عبادت نہ کی جائے ہی سبیدھا دین ہے مگر اکثر آدمی اس بات کو نہیں مانے۔

اس دعوت وتبلیغ کے بعد حضرت یوسف علیہ التلام اِن دونوں کے خواب کی تعبیر کی طرف متوجر ہوئے اور فرمانے گئے۔

دوستو اجس نے یہ دیجھاہے کہ وہ انگورنجوٹر ہاہے وہ انگورنجوٹر ہاہے وہ آزاد ہوکر بادستاہ کے ساقی کی خدمت بھرانجام دے گا۔ اورجس نے روٹیوں والاخواب دیجھاہے اسکوسولی دی جانبگی اور برندا سے سرکو نوچ نوچ کھائیں سے جس کی تعبیر تم نے جاسی ہے وہ نافذ ہوگی ہے

اورفیصلہ یہی ہے "

چنانچہ ایسے ہی ہواانھی کچھ وقت گزرا نہ تفاکہ ایک آزا دہوکر اپنی سالقہ خدمت پر بحال ہوگیا دوسرامجرم ثابت ہوکرسولی پرجڑھا دیا گیا اور پرندوں نے اسکی بوٹیاں افرادیں۔

حضرت یوسف علیه الت لام جب دونوں کی تعبیرخواب بیان کر دیئے تو ساقی سے بیمبی کہا تھا کہ جب نو در بار ہیں جائے گا اپنے بادسٹ ہ سے میرا ذکر کر دیا محاکب بے شخنا ہ قید خانہ میں بڑا ہواہے۔

نیکن وہ شخص اس بات کو مجول گیاا وراُسکویا دند رہا کہانے ایک محسن کو قید خانے سے چیڑوا نا ہاقی ہے۔ اگرچہ یہ بات قرین قیاس نہیں کہ اپنے ایسے محسن کو آ دمی محبول جائے کیکن قرآن محیم نے اسکی حقیقت یہ بتلائی کہ شیطان اُسپر مسلط ہوگیا اور اُسے یہ بات یا دکرنے کا موقعہ ہی مذ دیا اور اس پر ایک عرصہ ایسے ہی گزرگیا۔ اس طرح چندسال مزید قید خانے یں حضرت یوسف علیہ السّلام محر رہن پڑا۔

بصفرتِ بوسف علیہ الت لام کا قید خانے ہیں جانا ، و ہاں قید بوں ہیں تبلیغ کرنا ، خواب کی تعبیر دینا ، آیاتِ ذیل ہیں اس طرح موجو دہے :۔

قرانيم مضمون ودخل معن السِّخْنَ فَتَيَانِ ١٠٠.

(يوسف آيت ١٢٢ تا ٢٢٥)

اور پوسف کے ساتھ اور مھی ڈونوجوان جیل خانے میں

د افعل ہوئے، اُن میں سے ایک نے پوسف علیہ التسلام سے کہا میں ہے آپ کونواب میں دیجھتا ہوں کوشراب (بنانے سے لئے انگور کارس) نچور ر با ہوں . اور دوسرے نے تمہاکہ میں اپنے آپ کواس طبرح و بیچور با بهون که اینے سر کیر روٹیوں کا ٹوکرا لئے بہوئے بوں (اور) اُس میں سے پرندے د نونچ نوج) کر کھار ہے ہیں ، ہم کواسس خواب می تنعبیر بتلائیے آپ ہم کونیک آدمی معلوم ہوتے ہیں۔ ر حضرت بوسف رعلیه ات الم سنے دیا ہا کہ جب یہ میرے معتقد ہیں تو اِن کوا وّلاً ایمان کی دعوت دینا چاہئے ' فرمایا کہ د دیکھو ' جو کھانا تہارے یاس آتا ہے جوکہ تم کو کھانے کے لئے رجیل فانے) یں ماتاہے. میں اُس سے آنے سے پہلے اسکی حقیقت تم کو بست لادیا کرتا ہوں (کو فلاں چیزائے گی اور البنی ہوگی) اور پیتلا دینا اُس علم کی برونت ہے جومجھکومیرے رب نے تعلیم فرمایا ہے ریعنی برربیہ وحی معلوم مروجا تاہے) میں نے تو آن لوگوں کا ندسب رہیلے ہی ہے جھوڑر کھا ہے جوالٹر پر ایمان نہیں رکھتے اور چو آخرت سے مجی منگریں۔ اور میں نے اینے ان دِ بزرگواں باب وا داؤں کا ندسب اختیار کرر کھا ہے ابراہیم کا اور اسحق کا اوربیقو عب کا مہم کوکسی طرح زیبانہیں کہ الٹر سے ما تھ سی شی کوشریک عبادت قرار دیں اور یہ دعقیدہ توصید) ہمیرا ور لوگوں پرتھی خدا تعالیے کا ایک فضل ہے تیکن آکٹر لوگ زاس

۱۱ور) اُس نے حکم دیا ہے کہ بجز اُس کے اورکسی کی عبادت نہرویہی سیدھاراستہ سے کسین اکثر لوگ نہیں جانتے۔

اے قید فانے کے رفیقوا تم میں سے ایک تو (مُرم سے بری ہوکر) اپنے آفاکو (برستور) شراب پلا باکرے گا اور دوسرا دمجرم قرار پاکر) سولی دیا جائے گا اور اُس کے سرکو پرندے (نوچ نوچ) کھا مُنگِ جس بارے میں تم پوچھتے محقے وہ اسی طرح مقدر ہو چکا۔ اور دجب وہ جیل فانے سے جانے گئے تو ، جس شخص پر رہائی کا گمان تھا اُس سے جیل فانے سے جانے گئے تو ، جس شخص پر رہائی کا گمان تھا اُس سے پوسف علیہ استلام نے فرایا کہ اپنے آفا کے سامنے میرا بھی تذکرہ کر نا کہ ایک شخص بے قصور قید ہیں ہے اُس نے وعدہ کرایا) مچراسکو اپنے آفا سے دیدہ کرایا) مجراسکو اپنے وجہ سے) قید فانے میں اور بھی چند سال اُن کا رہنا ہوا۔"

خواب سلطانی اسلطانی اسلطانی اسلام اس طرح قیدخانے میں مقیم رہے اسکا اسلام اس طرح قیدخانے میں مقیم رہے اسکا بیان کیاہے۔ اسی درمیان ہیں بادت و قت جسکانام ریان اور لقب فرعون تھا ایک خواب دیکھا اور خواب کی نوعیت سے سخت پریشان ہوا دربار کے اہل علم اور کا مہنوں کو جمع کر سے تعبیر معلوم کرنی چاہی کئی میں سمھ میں نہایا سب نے یہ جواب دیا کہ یہ پریاگندہ سم کا خواب ہے کوئی حقیقت نہیں ہے اگر کوئی صحیح خواب ہوتا تو ہم میں بریاگندہ سم کا خواب ہوتا تو ہم

اسخی تعبیر بیان کردیتے .خواب بیہ تھا:۔ " شات عدد موتی گائیں ہیں اور شات دبل گائیں ، یہ دُہل گائیں موتی گائیوں کو گلئیں ۔ اسی طرح شات سرسبر و شاواب بالیں ہیں اور شات خشک دخوست ہ گندم ، اِن خشک بالبوں نے سرسبنر بالیوں کو گھا۔ بادشاہ دربار کے اِن کا ہنوں کے جواب سے طمئن نہیں ہوا۔ اسی اثناء رہاشدہ ساقی کو لوسف علیہ الت لام کی بات یاد آئی اور اُس نے آتے بڑھکر کہا اے بادشاہ اگر مجھے تجہ مہلت دیں توہیں اسمی تعبیر لاسکتا ہوں ۔ باد شاہ نے اجازت دے دی وہ اُسی وقت قیدخا نہ پہنچا اورحضرت پوسف عليهات لام كوبادث وكاخواب سنايا اوركهاكه آب اسى تنبير بيان فرمائية تكيول كه ت سے ان کے بیکیر ہیں آپ ہی اسکوحل کرسکتے ہیں اور کیا عجب سے کہ جن کوگوں نے مجھے بھیجا ہے جب میں صحیح تغبیر لے کراُن سے پاس والیں جاؤں تو وہ لوگ آپ کی

حقیقی قدر ومنزلت جان کیں سکے۔

حضرت بوسف عليدات لام محصبروت كااس سے اندازہ ہوتاہے كدما تى كو نہ ملامت کی اور نہ برسوں بھولے رہنے 'پڑیجب کیا اور نہ تعبیر علم میں مجل سے کام لیسا ،نہ بيسو چاكه بن ظالموں نے مجھے برسوں نے قصور زندان ہیں ڈاکے رتھاہے وہ اگرتب ہ ہوجائیں اورخواب کاحل نہ پاکر ہر با دہوجائیں تواجیجا ہے ان کی یہی سنرا ہونی جائے، ایسا چه همی نهیس کیا بلکه اُسی خواب می تعبیر دی اور اپنی جانب سے اس کسله مین صح

تدبیر بفی بتلادی محفواب مصطرا ثرات سے کیسے بچا جا سکتا ہے۔ ' فیرما یا اس خواب می تنعبیرا ور اس می بنار پر جونجیونم کو کرناخیا ' وہ یہ ہے کہ تم آت برس نیک لگا تار تھا تھی کرتے رہو گئے آ ور بیتمہاری خوشیالی نے سال ہیں۔ اورجب تھیتی کے کتنے کا وقت آئے توجس قدر مقدار تمہارے سال بھر کھانے سے لئے ضروری ہے اسکوالگ کرلوا ور باقی غلّه کواُن کی بالیوں ہی کمیں رہنے دو تاکہ محفّوظ رہنے گلے سٹرنے ہیں اسے بعد شات برس مسلسل قحط سالی سے ہوں سے وہ تمہار اجمع کیا ہواتمام وخیرہ ختم ہوجائے گا.ایکے بعد بھرایک سال ایسا آئے گا کہ خوب یانی سریجا

کھیتیاں ہری بھری ہوجائیں گئ اورلوگ بھیلوں اور دانوں سے عرف او تیل کثرت سے نکاکیں گے۔ بعنی مونی گائیں اور سرسبر بالیں خوشحا کی کی علامت ہیں اور ڈبلی گائیں اورخشک بالیں قبط سالی کی علامت

ہیں جوخوت حالی کی پیدا وار کو کھا جائیں گئے ؟

بادت و کے خواب میں تو بطا ہرا تناہی معلوم ہوا تھا کہ شات سال اچھی پیدا وار کے نہوں گے۔ بھر شات بال فعط کے ، گر حصرت یوسف علیہ السّلام نے اُس پر ایک اضافه بيهمى بيان كردياكه بيه

قعط سالی کے بعد بھرایک سال خوب بارش اور پیدا وارکا ہوگا مزید اطرب الله کا کہ استان کیا تاکہ اُن لوگوں کو مزید اطبیان ہوا ورتعبیرکا منجانب الله ہونا معلوم ہوجائے۔
دوسرا حکیمانہ مشورہ یہ بھی دیا کہ غلے کو خوشوں ہی ہیں رہنے دیا جائے تاکہ قعط کے سالوں ہیں کام آسے۔ یہ ایک حقیقت ہے کہ غلہ جب تک خوشوں میں رہتا ہے اسکو کھڑا وغیرہ متا ٹر نہیں کرتا۔
علہ جب تک خوشوں میں رہتا ہے اسکو کھڑا وغیرہ متا ٹر نہیں کرتا۔
الغرض جب یہ ساقی تعبیر خواب لیکر بادث ہ کے پاس آیا الغرض جب یہ ساقی تعبیر خواب لیکر بادث ہ کے پاس آیا الغرض جب یہ ساقی تعبیر خواب لیکر بادث ہ کے پاس آیا با موجہ دی ہوئے اور حضرت یوسف علیہ السلام نے علم فہم کا اعتراف کیا تو تعبیر خواب کا تذکرہ قرآن حکیم کی آیات ذیل میں اس طرح موجہ دہے :۔

وی معند میں اس بازی دیوں میں دیوں میں دیوں میں میٹوں میں میٹوں میں میٹوں میں میٹوں میں میٹوں میں میٹوں میں اس طرح موجہ دہے :۔

فرائى مصمول مَوَالَ الْمُلِكُ إِنِي اُدِى سَبُعَ بَقَرَاتٍ مِمَانِ يَأْكُلُونَ الْمُلِكُ إِنِي الْمُلِكُ إِنِي الْمُلِكُ إِنِي الْمُلِكُ الْمُلِكُ الْمُلِكُ الْمُلِكُ الْمُلَكِ الْمُلَكِ خَصْرِ وَّ الْحَرَبِيلِيدِ الْمَ

اُدن و نے کہا میں نے خواب دیجاہے کہ شات موٹی گائیں ہیں جنکوشات و بلی گائیں کھارہی ہیں ، اور اناج کی شات بالیں ہری ہیں اور داناج کی شات بالیں ہری ہیں اور دوسری طرف شات سوکھی ، اے اہل در بار محصے اس خواب کی تعبیر بتاؤ اگرتم خواب کی تعبیر بیان کرسکتے ہو۔

اُمُفوں نے کہا یہ تو پریٹان خواب ہیں اورہم اس طرح کے خوابوں کامطلب نہیں جانتے .

اُن دَو قیدیوں میں سے جو نجات پایا تھا اور اُسے ایک مدت وراز کے بعد اب بات یا د آئی کہا ہیں آپ حضرات کو اسکی تعبیر بتا تا ہوں مجھے درا دقید خانے ہیں یوسفٹ سے پاس بجیجے دیں۔ بتا تا ہوں مجھے درا دقید خانے ہیں یوسفٹ اے سرا پاصد ق مجھے اسس خواب کامطلب بتائے کہ نشات موٹی گائیں ہیں جنکوسات وہی گائیں

کھارہی ہیں، اورسات ہری بالیں ہیں اورشات سوکھی، تاکہ ہیں اُن کے یاس جاؤں داور بیان کروں) تاکہ داس کی تعبیراور اس سے آپ کا حال

أن كو تعبى معلوم سوجائ . يوسف دعليه السّلام؛ نه كهاشّات برس يك لكا مّارتم لوگ تھیتی باطری کرتے رہو گئے ،اس دوران جوفصلیں تم کاٹوان میں سے بس مخوڑا ساحصة جوتمہاری خوراک سے کام آئے نکال لواور باقی کواس کی

مالیوں ہی ہیں رسنے دو۔

مھراس سے بعد شات سال بہت سخت د قعط) سے آئیں گے جوكه أس (تمام) وخيرے كو كھاجائيں گئے . جسكونم نے إن برسوں كے واسطے جمعے کرکے رکھا ہوگا. البتہ تھوڑا ساجو دبیج کئے واسطے) رکھ چھوڑو مھے ان (سات برس) سے بعدا یک برس ایسا آئے گاجس میں لوگوں کھیلئے خوب بارش ہوگی ا ورائس میں رس نجوریں کے دلینی کترت سے پیداوار ہوگی''

میں اما قی نے حضرت یوسف علیہ استلام کی ساری گفتگو باد شاہ کو سناني اورسائق منق حضرت يوسف عليه السلام منم اخسلاق وعادات جسكامس نے قیدخانے میں مشاہرہ كيا تھا بيان كيا، باوث اس عجيب ونا درتعبير كومنكرمت أثربهو كے بغير بندرہ سكا اور اس بات كا خواہ شند مبواكدا يسے شخص كود كيفنا جائبيَّ. چنانچه اینے ایک قاصد كوحضرت يوسف علیه التلام کے ہاں تجيما اور ایے شوق ملاقات کا اظهار نحیا، حضرت یوسف علیه انسلام نے باہر انتکلے سے معذرت چاہی اور فرمایا کہ اس طرح تو میں قید خانے سے باہر آنہیں سکتا جب یک کدان عور توں كامعالله واضع منهوجات جنهول في بنودى مين أين بانه كاك لت مق آخر اليا سحیوں ہوا؟ میرا پرور دگار تو اِن کے مسکر وفریب کوخوب جانتا ہی ہے۔ اللهِ تعاليه البيار كوجس طرح وين كامل عطا فرمات بي اليه بي عقل كال

اورمعا ملہ فہمی می ہوری پوری صلاحتیں مہیا فرماتے ہیں،حضرت یوسف علیہ اتسلام نے

ایے اہم موقعہ پرجب کہ خود باد شاہ دعوت رہائی وے رہا ہو قابل توجہ نہ مجھا۔
اس وقت دانشہ ندی کا مقاصلہ ہیں مقا کہ رہائی سے پہلے جس عیب کی تہمت لگائی گئی تھی اورجس وجہ سے جیل ہیں برسول ڈالا گیا تھا اُسی حقیقت باد شاہ اورع ام لوگوں پر پوری طرح واضح ہوجائے اور عصمت یوسفی پر کوئی سٹ ہہ باقی نہ رہے۔
علاوہ از ہیں منصب نبوت کی ادائیگی کے لئے جس اعتماد کی عوام کو ضرورت ہے وہ اس تہمت کے ساتھ مفید ثابت نہ ہیں ہوتی اور دعوت و تبلیغ کا کام جو آپ کا نصب العین تھا کا کام جو کہ وہ اس تہمت کے ساتھ مفید ثابت نہ ہوسکتا تھا
جو کہ وہ سلے اُس تہمت کی حقیقت کو واضح کرے اُس کے بعد سیری رہائی کا اعلان کرے۔
کہو کہ وہ سلے اُس تہمت کی حقیقت کو واضح کرے اُس کے بعد سیری رہائی کا اعلان کرے۔
کہو کہ وہ سلے اُس تہمت کی حقیقت کو واضح کرے اُس کے بعد سیری رہائی کا اعلان کرے۔
علیہ الت لام نے فرایا ہیں نے قید خانے سے نکلنے ہیں یہ تاخیر اس لئے کی سے کرعز پڑم مور علیہ است لام نے فرایا ہیں نے قید خانے سے نکلنے ہیں یہ تاخیر اس لئے کی سے کرعز پڑم مور علیہ است لام نے فرایا ہیں نے قید خانے سے نکلنے ہیں یہ تاخیر اس لئے کی سے کرعز پڑم مور کو تی ہیں اُسے حق ہیں کوئی خیا نہ نہیں گی۔
کو بیقین ہوجا کے کہ ہیں نے اُسی غیر موجود گی ہیں اُسے حق ہیں کوئی خیا نہ نہیں گی۔
کو بیقین ہوجا کے کہ ہیں نے اُس کی غیر موجود گی ہیں اُسے حق ہیں کوئی خیا نہ نہیں گی۔
کو بیقین ہوجا کے کہ ہیں نے اُس کی غیر موجود گی ہیں اُسے حق ہیں کوئی خیا نہ نہیں گی۔

اور دوسری صکمت بیمجی ارت دفرمانی گئی که استحقیقات سے کوگوں کومعلوم بهوجائے گاکہ الٹر تعالیے خیانت کرنے والوں کے مکروفریب کو چلنے نہیں دیا۔ الغرض بادت ہے جب یہ شنا تو اگن عورتوں کو طلب کیا اور اُنہیں پابند کیاکہ حقیقی واقعات بیان کر دیں تاکہ معاملہ کی انسل نسورت سامنے آئے بصورتِ حال کچھ الیسی ہوجکی مقی کہ عورتوں کو حقیقی واقعات بیان کئے بغیر حیارہ نہ رہا، سب نے

'مُداکی بناہ اہم نے پوسٹ میں کوئی مُرائی نہیں یائی''

عزبزی بیوی نے جب بیمنظر دکھاکہ سنہ ہرتی ساری معززخوا تین یک زبان ہیں نواسی ہیں اپنی عافیت مجمی کہ مجرم کا اقرار کر لیا جائے ۔ آخروہ مجی بول پڑی کہ اب توحق بات ظاہر ہمو ہی گئی ہے ۔ واقعہ یہ ہے کہ ہیں نے ہی اُن سے اپنے مطلب کی خواہن کی تھی اور بینیک سنچے تو وہی ہیں ۔

بأدث ه أورابل دربار برجب بهحقيقت وانتح بهوني توسب في عضرت يوسف

ملد اوّل

سے ملاقات کرنے اور اُنھیں باعزت دربار ہیں تشریف لانے سے لئے آدمی جھیجے ۔الطح

حضرت يوسف عليه التلام بازارمصرسے دربارمصر پنجے۔ اس ب اعزاز واکرام کاشهره ملک مصری جسقدرهمی مهواموگااس کا اندازه اس ہے کیا جاسکتا ہے کہ تو سطنرت یوسف علیہ انسلام سے اخلاق وکر دار کے بارے بیں اس حدسے آھے ہورہے مقے جوان انی اخلاق وکر دار کی آخری حدمواکرتی ہو۔ يهي وجهب كحضرت يوسف عليه السلام كوانساني فطرت كالظهار كرنا برااور يه كه كونيّ ان الله سِيفضل وكرم اور تائيد سے بغير ٰ فلاح نهيں يَاسكتا۔ فيدخانے كى

رہائی سے پہلے بداعلان قرمارے ہیں:۔

" بُوگُو! میں اپنے تنفس کو بالذات بری اور پاک نہیں بتلا تا کیونکہ نفس تو ہرایک کامبری ہی بات بتلا ّاہے، بجزاُس نفس سےجس پر میرارب رحم کرے دیعنی میری یہ پاکداسی صرف خصدائے کریم کا

باد ثاه اور اُمرار کنے در بار میں حضرت یوسف علیہ التِلام کا ثنا ہی استقبال کیا اور بر ابحوا بنامقرّب خِاصَ قرار دیا اور اعزازُ وخطاب ہے موسوم کیا ۔ قرآن طلیم کی آیات زیل انہی تفصیلات میشتمل ہیں :-

قرآنى مضمون وقال الملك المتكون به فكتّاجًا ولا الرَّسُولُ قَال امُجِعُ إِلَىٰ مَا يَلِكَ فَسُتَكُنُّ مَا بَالُ النِّسُوَةِ الْحَتْ تَطَعُنَ آيُدِيَهُ تَ إِنَّ مَ إِنَّ إِلَّكِيدُ هِنَّ عَلِيُكُ مِا مُ

ر پوسف آیات <u>۵۰۰</u> تا <u>۵۰</u>۸)

دغرض و پخص تعبیر نیکر در باریس میویخا ، اور د جاکر بیان کیا ا بادث و نے رجومنا تومتاً ترہوا) اور حکم دیا کران کومیرے یاس لا کو مچرجب اُن کے پاس قاصد مینجا توآئی نے فرمایا توابنی سرکار کے پاس بوط جامچراس سے دریا فت سوئر ان عور توں کا کمیا حال سے جنھوں نے ا بنے اپھر کاٹ لئے تھے میرارب اُن عور توں کے فریب کوخوب جاتا ہج

﴿ چِنا کِنِہ باوستٰ ہ نے اُن عور توں کوجمع کیا اور ، کہاکہ تمہارا کیا وا فعہ ہے جب تم نے یوسف سے اپنے مطلب کی خواہش کی ؟ عور توں نے جواب دیا که حاست اینتر نیم کو اُن بین زره برا برنعبی تو بُرانی کی بات نهیں معلوم ہونی (و ہ بالکل پاک ہیں) عزیز کی بیوی دجو کہ حاصر تھی) سے نے لگی کہ اب توحق بات دسب بر) ظاہرہی ہوگئی داب چھیا نا بیکار بات سے سیج یہی ہے کہ اپس نے ہی اُن سے اپنے مطلب کی خواہن کی بھتی (مذکہ اُنهوں نے) اور بیٹیک وہی سیتے ہیں۔ (اُس وقت) یوسٹ نے فرمایا کہ یہ تمرام استمام (جو میں نے کیا)محض اس وجہ سے تاکرعز برکومعلوم ہوجائے بنقین کے ساتھ کہ ہیں نے اسکی عدم موجودگی ہیں اُسکی آبرو میں دست درازی نہبیں کی اوریہ دمجی معلوم بڑوجائے ہے التر نعالیٰ خیانت کرنے والوں کے فریب کو چلنے نہیں دیتا. اور د باقی) بیل پنے نفس کو (بالذات) بری (اور پاک) نہیں بتلایا (کیونکہ) نفس تو (ہرایک کا) بُری ہی بات بتلا تاہے بجزاُس (منفس) سےجس پرمیرا رب رحم کرے . بیشک میرا رب برطمی مغفرت والا بڑی رحمن والاہے۔ اوربادت و نے کہا ان کومیرے یاس لاؤ میں اُن کوخاص اینے كام كے لئے ركھوں گارىس حب بادسناہ نے أن سے باتيں كين داور باتوں سے اور زیادہ فضل و کمال ظاہر ہوا) تو بادشاہ نے کہاکہ ہمارے نز دیک آج ہےتم بڑے معزز اور ایا نِت وار بہو۔ بوسف علیہ الت لام نے کہا اے با دیثا ہ کملکی خزانوں برمجھ کو مامور کر دیجئے میں اُن کی حفاظت رہیں) رکھوں گا اور دحساب کتا ب کے طریقہ سے مجمی) خوب واقعت ہوں .

دمچربعد میں یہ ہی بادٹ ہوگئے چنانچہ التیرتعالیٰ کااد ثناوی اور ہم نے ایسے دعجیب) طور پر یوسف علیہ استلام کو ملک دمصر ہیں باافتیار بناد یا کہ اس میں جہاں چا ہیں رہیں سہیں ہم جس پر چاہیں اپنی عنایت متوجرکر دیں اور ہم نیکی کرنے والوں کا اجرضائع نہیں کرنے

اور آخرت کا اجر توکہیں زیادہ بڑھ کرہے ایمان اور تقوی والوں کیلئے۔

وربار بوسفی اور مجائیون کی آمر الله تعالیٰ محطاورم کایہ کیسا عدب وغریب واتعہ ہے کا مک

جوکنعان مین گلہ بانی "کرر ہاتھا وہ آج وقت کی سب سے برطی متمدن قوم کامخیار و مالک بنخر جہاں بانی "کرر ہاہے۔ باد شاہ وقت نے حضرت یوسف علیہ استلام کو اپنی تمام مملکت کا المین اور تفیل بنادیا اور شاہی خزانوں کی کنجیاں اُن سے حوالہ کر کے اپنا نحتار عام ہونے وے لیا، حضرت یوسف علیہ استلام نے سلطنت مصرکے مختار عام ہونے کے بعد خوابِ سلطانی سے تعلق وہ تمام تدا بیر سٹروع کر دیں جو چوہ ہی سے بعد خوابِ سلطانی سے تعقیق وہ تمام تدا بیر سٹروع کر دیں جو چوہ و سال سے اندر مفید کار ہوگئی تھیں تاکہ رعایا قبط سالی سے ایام میں مجبوک اور پریشان عالی سے معفوظ رہ سکے ، انہی ایام میں عزیز مصر کا انتقال ہوگیا اور زلیجا کا نکاح حضرت یوسف علیہ السلام سے انجام پایا در منٹود) انتقال ہوگیا اور زلیجا کا نکاح حضرت یوسف علیہ السلام سے انجام پایا در منٹود)

غرض جب قعط سالی کا زمانہ شروع ہوا تو یہ تعط صرف ملک مصر ہی ہیں نہ تھا بلکہ دور دراز علاقوں تک بھیلا ہوا تھا ارض کنعان جو فلسطین کا آیک حصداور حضرت یعقوب علیہ السلام کا وطن ہے داور آج بھی یہ ارض تعنان خلیل نامی ایک پُررونتی شہر کی صورت ہیں موجود سے جہاں حضرات ابراہیم واسحتی ویعقوب اور یوسف علیم السسلام کے مزارات معروف ہیں ،) یہ خطہ بھی قعط کی زوسے نہ بچا۔ حضرت یعقوب علیہ السلام کے خاند ان ہیں بے جینی پیدا ہوئی ساتھ ساتھ مصر کی پیشہرت عام ہوگئی تھی کہ و ہاں غلہ قیمتاً مل جا تا ہے۔ حضرت بعقوب علیہ السلام نے صاحبزاووں سے کہا کہ صربی باورث اور چونکہ یہ بھی معلوم یعقوب علیہ السلام نے صاحبزاووں سے کہا کہ صربی باورث اور چونکہ یہ بھی معلوم ہوگئی تھا کہ ایک آومی کو ایک اورش کے بارسے زیادہ غلہ نہیں ویا جا تا اس کے سب موائی اور فلہ نہ بیا ہیں کو جوحضرت ہوگئی محلوم میا خورد صرب سے چھوٹے بیٹے بنیا ہیں کو جوحضرت یوسف علیہ السلام سے حقیقی میائی شخے روک لیا گیا کیونکہ حضرت یوسف علیہ السلام کے حقیقی میائی شخے روک لیا گیا کیونکہ حضرت یوسف علیہ السلام

رایت کے چراغ براغ

کے گئم ہوجانے سے بعد حضرت بیقوب علیہ استلام کوان سے زیا وہ محبت ہوگئی منی اور وہ کسی وقت بھی ان کو اپنے سے جدانہیں ہونے دیتے ہنے۔

دخل مهائيوں كايە قا فلەكنعان سےمصرروا نەہوا جب دربار بیں پہنچے توحضرت یوسف علیہ انسلام شاہی نباس ہیں ٹ مانتخت و یاج سے مالک ہونے کی خیٹیست^ک سے پیامنے آئے معلوم ہوا کہ کنعان کا فافلہ نے پسرسری گفتنگو ہیں بہجان لیا کہ پیسب جانیٰ ہیں نیکن مھائیوں نے خضرت یوسف علیہ الت لام کو نہ ٹیجا ناکیونکہ ان مجائیوں نے اسپنے مجها نی کوشات سال کی عمر میں فروخت کر دیا تھا جسکواس وقت حضرت ابن عباس ہے گی روایت کے مطابق چالیس سال ہو تھیے مضے حضرت یوسف علیہ السلام سے بہجان کینے تحضعلق سے ابن کشیرہ میں مزید بیروضاخت درج ہے کہ حضرت بوسف علیہ الت لام نے اپنے مزیداطمینان کے لئے چند ایسے سوالات بھی کئے جومشت تبہانسانوں سے تعلق سے کئے جاتے ہیں ایک سوال یہ بھی مقاکہ آپ لوگوں کی زبان عبرانی ہے یہاں کیسے پہونے ؟ المحفول نے کہا بادستاہ ہمارے ملک بیں تحط واقع ہے اور ہم نے آپ ی تعریفین سُنی اسِ لئے عٰلّہ لینے آئے ہیں ہم اگرچیغیر ملکی ہیں کین مسی شمن سے جاسوس نہیں ہم لوگ کنعان کے رہنے والے ہیں۔ ہمار کے باپ التّر سے رسولوں میں سے ایک رسول ہیں جنکا نام بعقوب بن اسخی علیهم الت لام ہے ۔ بھرحضرت یوسٹ علیہ الت لام نے بھائیو سطحے بارے میں دریافت کیا کہ تمہارے والدی اور بھی کوئی اولا دیے ؟ جواب دیا کہ ہم بازاہ بھائی مقے جن ہیں سے ایک جھوٹے بھائی کو بچین میں بھیڑیے نے کھالیا تھااور ہمارے والدكوسب يسے زيادہ اُسى سے محبت بھتى اسكے بعد اُسكے حيو ٹے بھائی شے سا بھ زيادہ محبت کرنے گئے اور اسی لئے اس وقت بھی اس کوسفر بیں ہمارے ساتھ نہیں بھیج ہمیشہ اسکو اپنے پاس ہی رکھتے ہیں ۔

ية تفضيلات مشكر حضرت يوسف عليه التلام نے حكم دياكه ان كوشائ مهانخانے

میں تھیرا یا جائے اور قاعدہ سے مطابق غلّہ دیے دیا جائے۔ غلّہ کی تقسیم میں بیرضا بطہ قائم کیا تھا کہ شخص اپنا غلّہ خود طال کرے۔ امام قرطبیؓ نے اس کی مقدار ایک وَسَقُ تعینی سابط صاع تکھی ہے جو ہمارے موجودہ وزن سے لیا ظ سے ذولتو دس بیرے قربیب ہوتی ہے۔ جب مجائیوں نے غلہ لے لیا اور قیمت اداکردی توحضرت یوسف علیہ السلام
نے انھیں جانے کی اجازت دے دی اور ساتھ ساتھ بیمبی فرادیا کہ جب دو ہارہ ضرورت
پڑے تو بھر آجا نا اور اپنے سو تیلے مجائی کر بھی ضرور لانا ٹاکہ اسکا حصہ معبی وید باجائے ہم
تو تی تمی نہیں کر تا ہیں ہرایک کو پورا بورا غلہ دیا کرتا ہوں اور اکرام وہمانی میں بھی
کوئی تمی نہیں کر تا ہیں ہوایک کو پورا بورا غلہ دیا کرتا ہوں اور اکرام وہمانی میں بھی
صفرت یوسف علیہ الت ام نے اپنے غلے سے کارندوں کو خفیہ حکم دے دیا تھاکہ ان کے
صفرت یوسف علیہ الت ام نے اپنے غلے سے کارندوں کو خفیہ حکم دے دیا تھاکہ ان کے
غلے کے اندر انکی اواکر وہ قعم ت چھپاکر دکھدی جائے اسطرے کہ انتھیں خبرت نہ ہوتاکہ
جب یہ اپنے گھر پہنچ کریا مان تھولیں گے تو اپنی نقدی واپس سلنے پردو ہارہ جلد آنے کا
ادادہ کر بہتے ابن مختری نے حضرت یوسف علیہ الت الم کے اس تدہیر کی کئی ایک صلحتیں
کھی ہیں ممکن ہے بھائیوں سے کھانے کی قیمت لینا بیت ندند کیا ہوا ور اپنے پاس سے
قیمت اداکر دی ہو۔ یا یہ خیال آیا ہوکہ مکن سے ان کے پاس مزیر نقدی یا زیور نہوج بی قیمت اداکہ دی ہو۔ یا یہ خیال آیا ہوکہ مکن سے ان کے پاس مزیر نقدی یا زیور نہوج بی وجہ سے دو بارہ نہ آسکیں۔

جنانچہ ایسے ہی ہواجب اِن لولوں نے اپنا سامان فھولا لو اس ہیں اُن کی اوات کہ رقم می کہنے گئے اباجان اِمصری کارندوں کی فلطی سے ہماری نقدی ہمارے سامان فلہ میں والیس آگئی ہے اسکووایس کر دینا چا ہئے ۔ ویسے بھی اُس بادٹ ہونے ہمارا اکرام واحترام کیا ہے اور ہمیں ہرطرح کی راحت بہنچائی ہے۔ ہم اپنے چھوٹے بھائی بنیامین کوھی بحفاظت اینے سائق لے جائیں گے اور اُسکا حصتہ بھی لیتے آئیں گے۔

بیٹوں کے اصرار پراورغلہ کی قیمت والیں آجانے پر حضرتِ یعقوب علیہ السّلام نے پہی مناسب سمجھا کہ بچوں کو دوبارہ بھیجنا چاہئے۔ نگین حضرت یوسف علیہ السّلام کی گمٹ دی کا واقعہ بھی یا دی تھا بیٹوں سے فریا یا کیا ہیں تم پر الیا ہی اعتماد کروں جیساکہ اس سے پہلے اسکے مھانی یوسٹ کے بارے ہیں کیا تھا ؟

' مطلب یہ بھاکہ تمہاری بات کاکیا اعتبار ؟ تم پراعتمادکرسے ایک دفعہ ا پئے عزیز بیٹے کوکھو جیکا ہوں تم نے اُس دقت بھی یہی کہا تھا کہم اسنے ہوتے ہوئے بھی دپوسٹ، کی حفاظت نہ کرسکیں گے .

عورکرے فرمایا اچھا اب میں بھرانٹر پر ہی بھروسکر تا ہوں اور وہی بہت ر حفاظت کرنے والاہے اور سب سے زیادہ رخم کرنے والاہے بچھے اُمید سے کہ وہ میری تعیفی پر دوہراصدمہ نہ ڈالے گا۔اس طرح اپنے جھوٹے بیٹے بنیا بین کوسا تھ کرنے پر راضی ہو سکتے اور بیٹوں سے عہد و بہیان لیا کہ بنیا بین کو اپنے ساتھ رکھو گے اور اُسکو واپس لے آؤگے۔

رہ ہوں ہے بیٹے چلنے لگے توحصرت یعقوب علیہ التسلام نے شہرمصر ہیں واخل ہونے جب بیٹے چلنے لگے توحصرت یعقوب علیہ التسلام نے شہرمصر ہیں واخل ہونے سے لئے ایک خاص وصیّت کی کہ اب تم گیالاہ مجانی و ہاں جارہے ہوتو شہرکے ایک ہی دروازے سے سب داخل نہونا بلکہ شہر نیاہ کے قریب پہنچ کرمتفرق ہوجا ناا ور تھیسسر

مختلف در وازوں سے داخل ہونا۔

کے عنوان سے تعار*ف کر وایا ہے۔*

حفرت معقوب علیہ السلام نے یہ وصیت کیوں فرمائی ؟ اس کا کیا مقصد تھا؟ قران کئیم اسکی وضاحت سے ساکت ہے البتہ اسقدر تذکرہ ضرور ملتا ہے کہ یہ حضرت یعقوب علیہ السلام کی احتیاطی تد ہر تھی جوالٹرکی مشیت ہے آگے کچھ بھی کام نہ آسکی بس حضرت علیہ السلام کے ول میں ایک کھٹاک سی تھی جبکو دور کرنے سے لئے انھوں نے اپنی سی علیہ السلام کو قرانہ کئی دُو عِلْمِو کو سے ایک کھٹاک میں مقاب علیہ السلام کو قرانہ کئی دُوعِلْمِو کو ایک کے اللہ کو قرانہ کی کو اور بیٹاک وہ ہماری دی ہوئی تعلیم سے صاحب علم تھا)

یعنی بیٹوں کی مفاظت کے لئے ایک طرف تو ونیاوی تدبیراختیار کرنے کامشورہ ویا۔ دوسری طرف اس بات کامبھی اظہار فربایا کرکوئی انسانی تدبیرالٹر کی مشیّت کو نافذ ہونے سے روک نہیں سے تی اوراصل مفاظت الٹری حفاظت ہے بھروسہ اپنی تدبیروں پرنہیں بلکہ النٹر سے فضل وکرم پرہونا چا ہئے۔ تدبیرا ور توکل کا یہ توازن انبیار کرام کی سیرت ہے

بلکہ انتر شکے تھٹل و کرم پر ہو ہا چا ہیے۔ تدبیرا ور کوئل کا یہ کوارن البیار برائم کی بیرے سے معلوم ہوسکتا ہے ۔حضرت بعقوب علیہ است لام نے اپنے بیٹیوں کوسفرسے ہیلے اسی تعلیم کی تلقین فر مانی تھتی . بعن دیگرمفسرین نے مختلف دروازوں سے داخل ہونے کی ایک حکمت میہ منکھی ہے کہ یہ سب بیٹے صحت مند ،صاحب جمال ، صاحب وجا ہت ہے۔ ایسا نہ ہو کہ جب لوگوں کو بیمسول کے کہ بیسب ایک باپ کی اولا داور بھائی بھائی ہیں توکسی بدنظری نظریک جائے جس سے اِن کو کوئی تکلیف بہونے ، یا اجتماعی طور سے داخل ہونے برکھ لوگ حسد کرنے لگیں اوز تکلیف بہنچائیں ،وائٹراعلم۔

پر چھ وے سند ترکے ہیں اور تعیق بہنچ ہیں بواندائی ہے۔ حضرت یعقوب علیہ انسام نے اپٹو یہ دصیت پہلے سفر بین ہمیں کی اس دوسرے سفر کے موقع پر فرمائی اسکی وجہ غالباً یہ ہوگی کہ بہلی مرتبہ تو یہ لوگ مصر میں مسافرانہ اور شکستہ طاق میں داخل ہوئے مصفے نہ کوئی اسمنیں جانتا تھا اور نہ کسی کے توجہ دینے کا خطرہ تھا ، مگر پہلے سفر میں جب ان کا غیر معمولی اکرام واعزاز ہواجس سے ارکان دولت اور شہر کے لوگوں تک میں تعارف ہوگیا تو اب یہ خطرہ قوی ہوگیا کہسی کی نظر لگ جائے یا کچھ لوگ حسد کرنے

لگیں ، والشراعلم۔ لگیں ، والشراعلم۔

در بار یوسفی میں مھائیوں کی آمد،اورغلے کا حال کرنا اور بادشاہ سے ہمکلامی، اور غلے کے لئے دوبارہ سفر کرنا اور حضرت بیقوب علیہ التلام کا بیٹوں سے عہدو پیمان لینا، قرآن حکیم می آیات ذیل ہیں واضح طور پر موجود ہے:۔

قرائی مضمون و جاآ اِلْحُونُ یُوسُت فلک خلونا علیہ فعرف کو کھ کے اُلے کا کہ منکی کو کئی۔ الم دیست آیات عقامت ان کے معانی دمس آئے بھر یوست کے پاس پہونچ سویست کے معانی دمس آئے بھر یوست کے پاس پہونچ سویست نے تو اُن کو مہجان لیا اور اُمعوں نے یوست کو نہ پہچانا۔

اورجب یوست نے اُن کا سامان تبار کر دیا تو فرایا کرا پے علاق معانی کو بھی لانا، تم دیجھے نہیں ہوکہ میں پوراناپ کر دیا ہوں اور اُس کو میرے پاس منال کے تو نہ میرے پاس تمہارے نام کا اور) اُس کو میرے پاس تمہارے نام کا فلہ ہوگا اور نہ تم میرے پاس آنا۔

وہ بولے دیجھے ہم دا پنی مدامکان تک تون اُس کے باپ

سے اسکو ہالگیں گے اور ہم اس کام کوضرور کر دیں گے (آگے باب کے اختیاد ہیں ہے)

اور (جب وہ لوگ وہاں سے چلنے گئے تن) یوسٹ نے اپنے نوکروں سے کہ ویا کہ ان کی جمع کردہ پونجی (جسکے عوض انھوں نے فقہ مول لیا ہے) اِن ہی کے اسباب میں (جیبیاکر) رکھدو تاکہ جب ایٹ گھر مائیس تو اس کو مہم نیس شاید (یہ دیکھ کر) مجر دو بارہ واپس ایٹ گھر مائیس تو اس کو مہم نیس شاید (یہ دیکھ کر) مجر دو بارہ واپس آئیس فرض جب لوٹ کر اپنے باپ (میعقوب علیہ التلام) کے پاس مہم نے کہنے اے آبا (ہماری بڑی فاطر ہوئی اور غلہ بھی مالگر نبیا بین کے آئدہ بھی) ہمارے لئے (مطلقاً) علمہ کی بندسش کر دی گئی سو داس صورت میں صروری ہے کہ) آپ ہمارے مائی د نبیا بین) کو ہمارے ساتھ جھیجد کیئے تاکہ ہم (مجر) غلہ لاسکیس موری ہے کہ ای بیری کے والے اور ہم اُن د نبیا بین) کی پوری حفاظت رکھیں گے۔ اور ہم اُن د نبیا بین) کی پوری حفاظت رکھیں گے۔

یعقوب علیہ اسلام) نے کہاکہ بس دوں میں اس کے بارے میں ہوں ہیں اس کے بارے میں تہارا ویسا ہی اعتبارکرتا ہوں جیساکہ اس سے پہلے اسکے ہوائی دیوسوئی کے بارے میں تہارا اعتبار کردیکا ہوں ۔ سو دخیرا کرلے ہی جائے تو) المٹر دکے سیرو، وہی سب سے بڑھکر بخیبان ہے۔ دمیری بخیبان مے دمیری بخیبان ہے۔ دمیری بنان ہے۔

اور (اس گفتگو کے بعد) جب انفوں نے اسباب کھولا تو راس بین) انبی جع کروہ پوئی (بھی) بلی کہ اُن ہی کو والیس کردی گئے کہنے گئے اے آبا دینے) اور سم کو کیا چاہئے یہ ہماری جع کردہ پوئی بھی توہم ہی کو بوٹا دی گئی دائیا کریم بادشاہ ہے) اور اپنے گھروالوں کے واسطے اور غلّہ لائیں گے اور اپنے بھائی (بنیابین) کی خوب حفاظت واسطے اور فلّہ لائیں گے اور اپنے بھائی (بنیابین) کی خوب حفاظت رکھیں گے اور ایک اور شے کو بوجھ کا غلّہ اور زیادہ لائیں گے داکیو بحک جسفدر اسوقت لائے ہیں) یہ تو بھوڑ اسا غلّہ ہے۔ یعقوب (علیہ استالام) جسفدر اسوقت لائے ہیں) یہ تو بھوڑ اسا غلّہ ہے۔ یعقوب (علیہ استالام) نے کہا کہ اس وقت یک ہرگز اسکو تہارے ساتھ نہ جی بچوں گاجب ک

التّٰر کی قسم کھاکر مجھ کو پہا قول نہ دوگے کہ تم اسکو صرور ہے ہی آؤ گے ہاں اگر کہ ہیں گھر ہی جائے تو مجبوری ہے دچنانچہ سب نے اسس پر قسم کھائی) سوجب وہ قسم کھاکر اپنے باپ کو قول دے چکے توانخوں نے فرمایا کہ ہم لوگ جو کچھ بات چیت کر رہے ہیں یہ سب التّٰد کے حوالے۔ اور (چلتے وقت) یعقوب نے زان سے فرمایا) کہ اے میرے بیٹو! جب مصریبنچوتو) سب کے سب ایک ہی در وازے سے داخل نہونا جب مطریبنچوتو) سب کے سب ایک ہی در وازے سے داخل نہونا کہ علیٰ عدہ در وازوں سے جانا اور (یمحض ایک ظاہری تدبیرہے) کہ اللّٰہ می کو تم پر سے ٹال نہیں سکتا حکم تو لیس اللّٰہ ہی کا ہے ۔ داخل رکھروسہ رکھتا ہوں اور اُسی پر بھروسہ کرنے والوں کو مجھروسہ رکھتا ہوں اور اُسی پر بھروسہ کرنے والوں کو مجھروسہ رکھتا ہوں اور اُسی پر بھروسہ کرنے والوں کو مجھروسہ رکھنا جا ہیں ۔

اورجب دمصر پنجیر ،جس طرح ان سے باپ نے کہا تھ ۔ داسی طرح) شہر سے اندر داخل ہوئے تو باپ کاار مان پورا ہوگیا۔ دباقی) اُن کے باپ کو اُن سے دیہ تدبیر شاکر) خدا کا حکم بالنامقصو دینہ مقالیکن یعقوب سے جی میں دبرجہ تدبیر) ایک ارمان (آیا) مقاجس کو اُن کوعلم دیا مقالیکن اکثر لوگ اسکاعلم نہیں رکھتے یا یں وجہ کہ ہم نے اُن کوعلم دیا مقالیکن اکثر لوگ اسکاعلم نہیں رکھتے یا

وربار بوسفى اور دوسراداخله صورت يبيش آن كجب برادران يون

کنعان سے دوبارہ روانہ ہوئے توراسیہ میں بنیا مین کو تنگ کرنا شروع کیا کہی اسکو باپ کی محبت وشق کاطعنہ ویتے کہ جمی اس با برحسد کرتے کہ عزیز مصرفے خصوصیت کے ساتھ اِسکو کیوں طلب کیا ہے ؟ بنیا مین بیسب مجھے سنتے اور خاموس رہتے ۔ جب یہ منزلِ مقصو دیر پہنچے اور حضرت یوسف علیہ اسلام کے دربار میں حاصر ہوئے اور ابھوں نے دیجھا کہ یہ لوگ وعدہ کے مطابق ان کے حقیقی بھائی بنیا مین کو بھی ساتھ لے آئے ہیں تو حضرت یوسف علیہ استلام نے اپنے حصرت یوسف علیہ استلام نے اپنے حقیقی بھائی بنیا مین کو خاص اپنے ساتھ بھیرا یا ۔

ہدات کے جیاغ

امام تفسیر قیاد ہ نے لکھاہے کہ سب مھائیوں کے قیام کاحضرت یوسف کیالسلا) نے یہ انتظام کیا تھا کہ قڑو ڈوکو ایک ایک محربے میں تھیرا یا گیا۔ یہ گیارہ بھائی سفے بنیا مین تنہارہ سکئے اُن کو اپنے ساتھ قیام سرنے کا تکم دیا جب تنہائی کاموقع آباتو حضرت یوسف علیہ استلام نے اپنے حقیقی مھائی پر داز فاسٹس کردیا اور تبلایا کہ میں ہی تمہادا حقیقی مھائی یوسف ہوں اب تم کوئی اندیشہ نہ کرواب بُرائی کادور حتم ہوگیا اب یہ لوگ

تم کوئسی شم کی ایزار نہیں دیں گئے۔

ا تورات میں نتور ہے کہ یوسف علیہ التلام نے ہمائیوں کی بڑی فاطر مرارات کی نوروں کوشم دیا کہ انکوت ہی مہمان خانوں بین ایاریں اور انکے لئے گرت کلف وعوت کاسا مان ہی ، چند روز کے قیام سے بعد جب یہ زصت ہونے گئے تو بوسف علیہ التلام نے تھم دیا کہ اِن سے اونٹوں کو فلتے سے اسقدر لاد دیا جائے جت کہ بید مراشت کر سکسی مصر کے دونٹوں کو فلتے سے اسقدر لاد دیا جائے جت کہ بید برداشت کر سکسی مصر کے دونٹوں کو فلتے سے اسقدر لاد دیا جائے جت کہ بید برداشت کر سکسی مصر کے دونٹوں کو فلتے سے استعدر لاد دیا جائے ہوئے ایس مرد کر ایس کے کہ کومت مفر کے قانون میں سی غیر صری کو بغیر سی معقول وج سے اور کہ کہ کہ معتول وج سے کہ اور کو کی اس وج سے خاموش رہے اور کو کہ کہ کا کہ کہ کہ کہ کہ کہ اس وج سے خاموش رہے اور جب اور جب اور جب اور کہ کہ کہ بیا میں رکھ دیا۔

میں میں کے معالمیوں پر اسل حقیقت منکشف ہو۔ اس وج سے خاموش رہے اور جب اور بیا میں رکھ دیا۔

میں میں رکھ دیا۔

بیا یک کان کے اس فاقلہ نے ابھی تقوری ہی مسافت طے کی ہوگی کہ یوسٹ علیالسلا سے کارندوں نے شاہی برتنوں کی دیچہ مھال کی تو اس بین میتی پیالہ نہ پایا سمجھے کہ شاہی محل میں کنعانیوں کے سوا دوسرا کوئی نہیں آیا اس لئے امھوں نے ہی یہ چوری کی سے

فوراً دور ا ورجلائے، قافلے والومبروتم جور سو۔

برا در ان پوسف کارندوں کی طاف متوجہ ہوئے اور کہنے لگے ہم پرخوا ہ مخوا ہ کیوں الزام لگاتے ہو آخر معلوم تو ہو کہ تمہاری کیا چیز گئم ہوگئی ہے ؟ کہا گیا کہ بادر شاہ کافیمتی پیالہ گئم ہوگیا ہے اور اُن میں سے ایک نے آگے بڑھکر کہا کہ جڑشنخص جوری کا پینہ لگا دیگا اُس تحوایک اونٹ فلہ انعام ہیں ملے گا

اور میں اس بات کا ضامن ہوں۔

برا دران یوست نے مہاخداجا نتاہے کہ ہم مصری فساد کرنے کی غرض سے را دران یوست نے مہاخداجا نتاہے کہ ہم مصری فساد کرنے کی غرض سے

نہیں آئے اور تم لوگ جانتے ہوکہ ہم اس سے بہلے بھی غلّہ لینے آئے تھے ، یہ رس یہ میں میں میں میں اور اس اس اس اس اس اس اس اس اس میں جوری

ہم لوگ جورنہیں ہیں کا رندوں نے کہا۔ احتِیاجی سے پاس بیرچوری ٹاہت ہوجائے آئی سزاکیا ہونی جا ہئے ؟

برا درانِ توسف نے کہا وہ خو د آپ ابنی سنراہے بعینی وہ تمہارے حوالہ کر دیاجائے گا تاکہ اپنے جرم کی پاداسٹس میں کیڈا جائے اور ہم اپنے ملک میں ایسی زیادتی تحرنے والوں کو یہی سنرا دیا کرتے ہیں۔

ریاری رست در این مراید بیری سیست بی تاریخی کی تلاشی کی اورجب اُن میں پیالہ نہ نمکلا کارندوں نے بیرجواب سُسنا تو غلے کی تلاشی کی اورجب اُن میں پیالہ موجو دیتھا برکارندوں نے قافلہ کو تو آخر میں بنیا مین سے سامان کی تلاشی کی اُس میں پیالہ موجو دیتھا برکارندوں نے قافلہ کو واپس لوٹا کرعزیزمصر کی خدمت میں معاملہ پیشیں کیا۔

حضرت یوسف علیہ ات لام نے معاملہ کی نوعیت کوشنا تو ول میں ہجد مسرور ہوئے کہ میری عمولی سی تدہر رپر الٹر تعالے نے میرامقصد بوراکر دیا ، اوھر بنیا میں بھی اس واقعہ کو اپنی مرضی سے مطابق پاکرخاموش رہے ۔

برادران یوسف نے جب یہ دیکھا تو اُن کی آتشِ حسد بھڑک اُنھی اور اُن کھوں نے یہ جھوٹ بھی پولئے کی جرآت کی کہ آگر بنیا بین نے یہ جو رہی کی ہے تو تعجب کا مقام نہیں ہے اس سے چہلے اسکا بڑا بھائی یوسٹ بھی چوری کرچکا ہے دچوری کی یہ کہانی آئندہ صفی ایر آرہی ہے ، حضرت یوسٹ بلیدالت لام نے جبکہ یہ ویجھا کہ میرے منہ پر ہی جھوٹ بول رہے ہیں صنبط سے کام لیا اور بھی بھی راز فائن نہ کیا دکیونکہ بدرلیعہ وی الہی آپ پر اسکی یابندی بھی)

ہ فی پہبری ہی۔ سمبنے لگے تمہارے گئے سب سے بڑی جگہ ہے کہتم ایسا حجوثا الزام لگارہے ہوا ورجو کچھ میان کرتے ہوالٹر تعالے اسکی حقیقت کا خوب جاننے والا ہے۔ ہوا ورجو کچھ تم بیان کرتے ہوالٹر تعالے اسکی حقیقت کا خوب جاننے والا ہے۔ برا دران یوسف نے جب یہ ماحول دیکھا تو بہت گھبرائے اور باپ کا عہد و پیمان یا دآگیا آپس میں مشورہ کرنے گئے کرکس صورت سے بنیامین کو حال کویں؟ اور باپ یک پہنچائیں۔ ہم تو پہلے ہی اپنا قول ہار کیے ہیں صرف ایک صورت یہ ہائی ہے کہ ہادشاہ سے خواہش کریں اور عرض معروض کریں کوعزیز مصر بنیا بین کواپنی مہر بائی سے معاف کر دیے۔ چانچہ کھنے گئے عزیز مصر ! ہمارا ہاپ مہت بوڑھا ہے اُس کواسکے پہلے جائی لوسٹ کامجی ہی بیائی تا وہ شدت عم سے باب اگریہ حبی اُن سے جُدا ہوجا نیگا تو وہ شدت عم سے مالک ہو جائیں گئے۔

ے ہوجا یاں سے ہوگا ہے۔ اے بادیث اور آگرا بیساممکن نہیں تواسکی جگہ ہم ہیں سی کسی ایک کوسنرا کیلئے ریب ہو سے

روک لیجئے آپ رخم و کرم والے ہیں۔

عزیزمصر نے کہاالٹری پناہ! یہ بات کیے ممکن ہے؟ ہم اگرالیا کریں تو ظالم قرار پائیں گئے۔ جب سب اس جانب سے مایوس ہو گئے نواب تنہائی میں بیٹھ کر مشرک نے گا

ان بین سے بڑے نے کہا بھائیوا تم کومعلوم ہے کہ والد نے بنیا بین کے متعلق کسقدرسخت اور پخیة عہد و سمیان ہم سے لیا تھا اور اس سے پہلے تم نے پوسف کے ساتھ جوظلم وزیا دتی گی ہے وہ بھی سامنے ہے۔ اس لئے بین تواب اس جگہ سے اس وقت تک ملئے والا نہیں کہ یا والد مجھے کنعان آنے کی اجازت دیں۔ یا التّرمیرے لئے کوئی دوسرافیصلہ کروے ۔ لہذا تم سب باپ سے پاس جاؤا ورعرض کر و کہ تمہاری بیٹے بنیا بین بنیا بین نے کہ دی تھی سے۔ ہم کو کھی غیب کاعلم تو تھا نہیں کہ پہلے سے جان لیتے کہ بنیا بین سے ایسی حکت سرز دہونے والی ہے۔ اور یہجی ذکر کر دینا کہ آپ مصروا لوں سے اسکی سے ایسی حکت سرز دہونے والی ہے۔ اور یہجی ذکر کر دینا کہ آپ مصروا لوں سے اسکی سے دیسی کرایس بنیا اس قافلہ سے بھی جس سے ساتھ ہم صرسے یہاں آئے ہیں۔ اسکی سے دیسی کے باپ حضرت

یعقوب علیہ اتسلام سے سب کچھ واقعہ کہہ سنایا۔ حضرت بعقوب علیہ انستلام نے اپنی فراستِ نبوّت اور اپنے سابقہ تجربے کی بنا پر جو بیٹوں نے یوسف علیہ انسلام کے ساتھ کیا متھا شدت سے محسوس کیا کہ یہ واقعہ بھی جھوٹا ہے۔ فرما یا کہ نہیں نہیں یہ بات البیی نہیں تمہارے ولوں نے ایک بات گھڑلی ہے نکین اب صبر کے سواکوئی اور جار ہ بھی نہیں نسب جلداول

بدایت کے چراغ

کرتا ہوں مجھے التّرسے اُمید ہے کہ وہ ایک دن اِن گم کردہ گان کو بھرجمع کردیگا اور ایک سابھ مجھے ملاوے گا. بلاسٹ وہلیم حکیم ہے۔اسکے بعد حضرت یعقوب علیالسلام نے بیٹوں سے بحسونی کرلی اور رُوہتے رونے اپنی آنگھیں سفید کرلیں ۔ بیٹوں نے جب یہ دیکھا تو سمنے گئے ہمداکیا آپ اسی طرح یوسٹ کی یا دیس تھکتے دہوگے؟ اور کیا اسی غم میں اپنی جان دے دوگے ؟

میں تعقوب علیہ الت لام نے بیسٹکر فرما یا:۔ " میں تم سے توشکوہ نہیں کرتا اور نہ تم توسمجھ کہتا ہوں ہیں آپ غم وصیبت کو اپنے اللہ ہی کی طرف پیش کرتا ہوں ؟ اسکے بعد تھی بنیوں سے فرما یا :۔۔

"دیکھوایک مرتبہ تھیرمصرجاؤاور پوسف علیہ التلام اور اسکے بھانی کی تلاسٹس وجبتجوکروالٹر کی رحمت سے ناامید منہو سے اس کے کہالٹری رحمت سے ناامیدی

وہایوسی کا حروں کا سیوہ ہے۔ قرآن سیم نے در بارِ پوسفی میں مجائیوں کی دو بارہ آمدا ور باد شاہ کے پیالہ کی گمشدگی کا تذکرہ اور بنیا بین دہرا دریوسف کوعزیز مصر کے حوالہ کرنے کا ذکر اور حضرت بعقوب علیہ انسان می خدم ت میں حاضر ہونے اور بنیا بین کے حادثہ کی تفصیل اور حضرت یعقوب علیہ انسان می کا صبر وضبط اِن آیات میں بیان کیا ہے:۔

> قرآئى مضمون وكتا دَخُلُوا عَلَىٰ يُوسُفُ اَوْىَ إِلَيْهِ أَخَالُا قَالَ إِنَّ أَنَا أَخُولُو فَلَا تَبُتَيْسُ بِمَا كَا فَوُلاَ مَا كَا فَوُلاَ عَلَىٰ فَكَا لَوْنَ الْحُولُا عَلَىٰ فَك روسف آیات علا تامند)

اُورجب یہ لوگ (برا دران بوسف) بوسف علیہ استلام کے پاس پہنچ (اور بنیا ببن کوسیش کرکے کہاکہ ہم آپ کے حکم کے مطابق ایکوں ئے ہیں) یوسف علیالسلام نے اپنے ہمائی کواپے ساتھ ملالیا (اور تنهائی میں اُن سے) کہم دیا کہ میں بھائی ، پوسف ، ہوں سیور پلوگ جو کچے (بارسلوکی کمرتے ہے ہیں اسکاریج مذکر نا ر مجھر جب پوسف (علیہ الت کام) نے اُن کا سامان غلہ اور روانگی کا انتظام کر دیا تو (مطور نشانی) پانی چینے کا برتن اپنے بھائی کے اسباب میں رکھ دیا مجھر (کا رند وں کو اس کی اطلاع ہونے پر کہ بیالہ موجود نہیں ہے) ایک پرکا رنے والے نے پرکا راکہ اے قافلہ والو تم ضرور چور ہو۔ وہ ان کی طرف متوجہ ہوکر کہنے لگے کہ تمہاری کیا چیز تم ہوگئی ہے ؟

(کارندوں نے) کہا کہ ہم کو بادٹ ہی ہمانہ نہیں بلت (وہ غائب ہے) اور جوشخص اُسکو لاکر حاصر کرے اُسکو ایک تُنگر بار غلّہ دبطور انعام) ملے گا اور ہیں اُسکے دلوانے کا ذمہ دا رہوں۔

یہ لوگ کہنے لگے بخداتم کوخوب معلوم ہے کہ ہم ملک میں فسا دبھیلانے نہیں آئے ہیں اور نہ ہم لوگ چوری کرنے والے ہیں۔ اُن دکارندوں نے) کہا احجیا اگرتم حصوٹے نکلے دا ورتم ہیں ہے کسی پرسرقہ ثابت ہوجا ہے) تو اُس دجور) کی کیا سزا ہوگی ؟

مھائیوں نے دسٹر بعیت بعقونی) کے مطابق جواب دیا کہ اسکی سنرا یہ ہے کہ وہ شکی جس شخص سے اسباب میں ملے پس وہ اسکو اپنا غلام بنالے وہ اسکو اپنا غلام بنالے ہم لوگ ظالموں کو البسی ہی سنرا دیتے ہیں ۔

المجراس نے یوسف کے دھیقی) مجائی کے تھیلے کی تلاشی کے بھیلے کی تلاشی کی بھیر داخیریں) اس برتن کو اسے بھیلے ان سب کے تھیلے سے برآ مدکر ایا ہم نے یوسف دعلیہ السلام) کو اسے بھائی کے بھیلے سے برآ مدکر ایا ہم نے یوسف دعلیہ السلام) کی خاطر سے اس طرح ا نبیا بین کو رو کئے کی) تدبیر فرمائی دکیونکہ ، یوسف کی خاطر سے اس طرح ا نبیا بین کو رو کئے گئی) تدبیر فرمائی کو اس با دستاہ دمصر ہیں جو رسی می منزا تا دیب یا جمایانہ تھا) گریہ سے کہ السر ہی کومنظور تھا۔ داس سے یوسف علیہ السلام کے دل

میں تدبیرآئی اور بھائیوں کے منہ سے پیچوا بخو د نکلا) ہم جس کو عاہتے ہیں (علم میں) خاص درجوں تک بڑھا دیتے ہیں اور تمام عَلَم والول سے بڑھکر ایک بڑاعلم والا ہے دمیعنی الترنغالیٰ) د حال یہ کرجب ان کے اسباب سے وہ برتن برآ مدہوا اور بنیابین روک لئے گئے تو وہ سب بڑے شرمندہ ہوئے اور) کہنے لگے کر دصاحب) اگراس نے جوری کی تو د تعجب نہیں کیونکہ) اسکا ایک مھانی د مقاوہ) مجی داسی طرح) اس سے پہلے چوری کرچکا ہے۔ اجسكا قصنفسير درمنثوري اسطرح لكهاسي كه حضرين بوسف عليه السلام كوانكى بچوبي حضرت بعقوب عليه السّلام كى بهن پرورسش کیا کرتی تھیں جب یہ ذرا ہوست یا رہوئے توحضرت بعقوب علیہ اللام نے لیناچا ہالیکن وہ بہت چاہتی مختیں اس لئے اپنے پاس اور رکھنا چا ہا اس سے لئے بھوتی نے یہ تدبیر کی کہ پوسٹ علیہ ایس لام کی کمریں ایک پیکا کیروں کے اندر باندھ کرمشہور کردیا کہ پیکا کم ہو گیا اورسب كى تلاستى نى تويد بوسف عليه استلام كى محرس برآمد بوا ـ اس طرح قانون بعقوبی کی دفعہ سے فائدہ اٹھا کر پوسف علیہ الستام کو مزید ابنے پاس اور کھریدت رکھ لیا۔ اسی وا تعہ کی طرف مجائیوں کےاشارہ کیا کہ اگر پربنیا بین نے چوری کی ہے تو کوئی تعجب نہیں اس سے پہلے اسے بھائی یوسف نے بھی بچین میں چوری کی ہے ا

پس یوسف دعلیہ التلام) نے اس بات کو دجو آ گے آرہی اے) اپنے دل میں پوسٹیدہ رکھا اور اس کو اُن کے سامنے (زبائے) ظاہر نہیں کیا یعنی دول میں) بول کہا کہ اس دچوری کے) درجہیں تم تواور بھی زیا وہ بُر ہے ہو دلینی ہم دونوں بھائیوں سے توحقیقی سرقب صادر نہیں ہواا ورتم نے توا تنا بڑا کام کیا کہ کوئی مال غائب کرتا ہے تو تم نے توا تنا بڑا کام کیا کہ کوئی مال غائب کرتا ہے تو تم نے توا تنا بڑا کام کیا کہ کوئی مال خائب کرتا ہے تو تم نے توا تنا بڑا کام کیا کہ کوئی مال خائب کرتا ہے تو تم نے تو تو کہ ہم چور ہیں) اسکی دھنے تن کا اللہ ہی کو خوب علم ہے۔ بیان کورسے ہو ذکہ ہم چور ہیں) اسکی دھنے تن کا اللہ ہی کو خوب علم ہے۔

رجب مھائیوں نے دیجا کہ یوسف علیہ استلام نے بنیابین کو اخوذکر لیا اور اُس پر قابض ہو گئے تو براہ خوشامد) کھنے گئے اے عزیز اِس دنبیابین کا ایک بہت بوڑھا باپ ہے داور وہ اِسس کو بہت چاہتا ہے اسکا کیا صال ہوجائے) سو بہت چاہتا ہے اسکا کیا صال ہوجائے) سو آپ دالیا تیجئے) کہ اسکی جگہ ہم ہیں ہے ایک کورکھ لیجئے داور ایب غلام بنا لیجئے) ہم آپ کو نیک مزاج دیجھتے ہیں۔

یوسف (علیہ استلام) نے کہا ایسی دہانصافی) کی بات سے خدا ہجائے کہ جیکے پاس ہم نے اپنی چنر پائی ہے اُ سکے سوا دوسر شخص کو کمیڑ سے رکانیں (اگر ہم ایسا کریں تو) اس حالت ہیں ہم ہے۔ شخص کو کمیڑ سے رکھانیں (اگر ہم ایسا کریں تو) اس حالت ہیں ہم ہے۔

بے انصاف شمعے جائیں گے۔

مچرجب اِن کو پوسف دعلیه استلام) سے دا بحے صاف جواب پر ، بالکل اُمید به رمی (که بنیامین کو دیں سے) تو (اس جگه سو) علیٰجدہ ہو کر باہم مشورہ کرنے گئے ۔ اُن میں سے سب سے بڑا جو تھا اُس نے کہا دکہ تم لوگ جو واپس جلنے کی صلاح کررہے ہوتو) کیا تم كومعلوم نهبي كرتمها رے باپ تم سے التّركی قسم پر بريكا قول لے لچکے ہیں دکہ تم بنیا بین کو اپنے ساتھ ضرور لا وَسِے) اور اس سے بہلے یوسف سے بارے میں تم لوگ کو تا ہی کر ہی جکے ہو دسوان حالات میں میں تواس زمین سے ملتانہیں تا وفلیکہ میرے باب دخود) مجمکو د حاضری کی) اجازت نہ دہیں یا التٰرتعالے اسم شکل کومُنجھا دے اوروہی خو^ب سلجھانے والاہے. دلہٰدامجھکو تو میہاں چھوٹر د وا ور) تم واپس ا پنے باپ کے پاس جاوّ د اور جاکراُن سے اسمہوکہ ا باجان آپ سے صاحبرادے (بنیابین) نے چوری کی راس لئے گرفتار کر لئے گئے) اور نہم تو دی بیان سرتے ہیں جو ہم کو دمشاہرہ سے ہمعلوم ہواہے اور ہم دقول وقرار دیئے کے وقت) غیب کی خبروں سے ما فظ تھے نہیں دکہ پیچوری کرنے گا ورنہ ہم توسمی عہد و ہیمان نہ کرنے) داگر ہمارے سمجنے کا مقبن نہوتو)

اسبتی دیمعنی مصر) والوں سے پوچھ لیمئے جہاں ہم دائس وقت) موجود مقے دحب چوری برآ مد ہوئی) اور اُس قافلہ والوں سے پوچھ لیمئے جن میں ہم شامل ہوکر دیہاں) آئے ہیں اور مقین جانئے ہم بالکل سیج کہتے ہیں۔ (چانچ سب ہماتیوں نے بڑے کو وہاں چھوڑ ااور خوداً کر مہتے ہیں۔ (چانچ سب ہماتیوں نے بڑے کو وہاں چھوڑ ااور خوداً کر ماراقعۃ بیان کیا) یعقوب دعلیہ التلام) دواقعہ لوسٹ کے سبب ان سے غیر مطمئن ہو گئے تھے) فرمانے لگے (کہ بنیا ہین چوری ہیں ماخوذ نہیں ہوا) بلکہ تم نے اپنے دل سے ایک بات بنالی سے لہذا دیہ کے کہ نہیں میں میں شکایت کا نام نہوگا ، النہ سے امید طرح) میں صبر ہی کروں گاجس ہیں شکایت کا نام نہوگا ، النہ سے امید خوب واقعت حال سے) خوب واقعت حال سے) خوب واقعت حال سے) خوب واقعت حال سے)

اور دیپنجواب دیجر) اُن سے دوسری طرف دُخ کرلیا اور د بوجہاس نئے غم سے پُرا ناغم تازہ ہوگیا) تھنے لگے ہائے یوسف افسوس اورغم سے دروتے روتے) اُن کی آنھیں سفید پڑگئیں اور وہ دغم کی شدّت سے اپنے آپ) گھٹاکرتے تھے۔

میٹے تھنے کئے بخداً دمعلوم ہوتاہے) تم سدا کے سدایوسٹ کی یاد میں گئے رہو گئے بہاں یک کڑھل گھل کرجان بلب ہوجا وُ گئے یا بیکہ بالکل مرہی جا وُ گئے۔

یعقوب دعلیہ السلام ، نے فرمایا دیم کومیرے دونے سے سیابخت میں تواپنے ریخ وغم کی صرف النٹر بی سے شکایت کر تاہوں دیم ہے۔ ترکی ہیں کہتا) اور النٹر کی باتوں کو جتنا ہیں جانتا ہوں تم ہیں جانتے ہے۔ بیٹو اور النٹر کی باتوں کو جتنا ہیں جانتا ہوں تم ہیں جانتے ہے۔ میرے بیٹو اور ایک بارمچر) جاؤ اور یوسف اور اس کے مجانی کی تلاش کر و اور النٹر کی رحمت سے نا اُمید نہو بیشک النٹر کی رحمت سے نا اُمید نہو بیشک النٹر کی رحمت سے نا اُمید نہو بیشک النٹر کی رحمت سے وہی لوگ نا اُمید ہوتے ہیں جو کا فرہیں ہے۔

وربار بوسفى اورتمبرا واخله حضرت يعقوب عليه التلام ني ايك

طویل و قفه کے بعد ببیوں کو حکم دیا کہ جاؤیوسف علیہ التلام اور اُسکے بھائی کو لاش

روسی میں ہوئے۔ حضرت بعقوب علیہ ات لام نے اس سے پہلے بھی اس طرح کامکم نہ دیا تھ ور نہ اس سے قبل بھی تلاسٹس کا کام لیا جاسکتا تھا. در اُسل بیسب چیزیں تقدیر اِلہی کے تابع تقیں اس سے پہلے ایساعکم ڈیٹا یا اسکا خیال آنا مقدر پذیمقا ، آب غالبًہ التيرك علم بين ملاقات كأوقت آجكا بها اس لئے استح مناسب تد ہبرول میں ڈال دى گئى آيت ئيں دونوں كى تلاش كاڭرخ ملك مصر ہى كى طرف معلوم ہو تاہيے. بنيا بين بارے ہیں تومعلوم مقاکر انکوعز رزمصر نے روک کیا ہے مگر پوسٹ علیہ استِ الم مصربيب تلاسنس كرنے كى بظام ترحوني قابل اعتبار توجيبې معلوم نهبب ہوتی ہيكن التاتع حب محسی کام کا ارا د ہ فرماتے ہیں تو اُس سے مناسب آنباب جلع فرمادیتے ہیں اور وہ چیز حال ہوجانی ہے۔اس کے حضرت یعفوب علیہ استلام نے اس مرتبہ تلاش و فقیش

کے گئے تھے مصرجانے کی ہدایت فرمائی۔

الغرض برا دران یوسف نے تیجہ تو باپ کے اصرار اور کچھ اس لئے بھی کہ قعط کی شدت انتهائی درجه پرمپنجی تهوئی تحتی اور غلیے کا آس پاس نام ونشیان نه مقا:نمیسری بار مصرکاارا وہ کیااورجب وربارت ہی میں پہنچے تو سمنے گئے اے عزیز! ہم کواوَرہمار^ے تحمروالوں کو قحط نے سخت پرلیٹانی میں ڈال دیا ہے اور اس مرتبہ ہم یویخی (قیم'ت غلّه) مھی بہت مقوری لائے ہیں جوجاصرہے ۔ اب معاملہ خرید فروخت کانہیں ہے ہم ہے قیمت ا دانہیں ہوسکتی اس لئے آپ کی خدمت میں یہ درخواست ہے کہ ازراہ کرم ہم غلّے کی پوری مقدار دے دیجئے اور تہمیں صرور تمندجان کر اپنی جانب سے احسان فرمائيے، الترتعالے صدقہ وخیرات مخرنے وائے کو نیک بدلہ دیتا ہے۔

مهائیوں کی اس درخواست میں مین گزارشیں نمیایت ہی رقت آمیز تقیں جس کو فرآن مكيم نے ان الفاظ سے اواكيا ہے ب

يَا يُهَا الْعَذِ بُذُكُمَ تَسَنَا وَاهْلَنَا الْضَرُّدُوجِشُنَا بِبِضَاعَةٍ

مُّزُجِلةٍ فَأُونِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقَ عَكَيْنًا. دآيت مث)

اے سردار باا قتدار، ہم اورہمارے اہل وعیال سخت مصیبت

میں مبتلا ہیں ،اور ہم کھ حقیرسی پونجی لے کرآئے ہیں یمبیں تھر پور غلّہ عنایت فرمائیے اور ہم کوخیرات دیجئے بعینی ہماری اس گزارش پرجو کچھ آپ دیں گئے وہ گویا آپ کاصد قد ہوگا۔ پیحقیرسی یونخی کیامقی قسنسرآن وحذبث میں اسکی کوئی وضاحت نہیں ملتی البته مفسرین کے اقوال مختلف ہیں بعض نے کہا کہ یہ کھوٹے دراہم تصفے جو ہازا رہیں رائج نہ تھے۔ بعض نے کہا کچھ گھریلوقسم کا سامان مقا۔ یہ لفظ من جنہ کا ترجمہ ہے۔ اسكے اصل معنی ایسی چیز کے ہیں جو خود نہ جلے بلکہ اسکوز بروستی جلایا جا حصرت بوسف عليه التسلام نے جب مھائيوں كا يەنگياگزرا عال دیجها تو دل مجرآیا ،طبعی طور پر قوتِ کُسبط ٹوٹ رہی تھی اظہار حقیقت ى جريا بندى منجانب التكرمقر رحقى غالباً أسكے خاتمہ كا وقت بھى أجيكا تھا۔ تفسیر قرطبی اورتفسیر مظہری ہیں حضرت ابن عباس رہ سے ایک رو ایت درج مع که اس موقعه پرمیعقوب علیه السلام نے عزیر مقر کے نام ایک خط لکھ کر دیا تھاجس کامضمون بیرتھا :۔ منجانب ليعقوب صفى التُرابن اسخق نبىّ التُرابن ا برا ہسيم خليل التّبر،

بخدمت عزيزمصر!

آمابعد، ہماراً پورافاندان بلاؤں اور آزمائشوں ہی معروف رہاہے، میرے دا دا ابراہیم خلیل اللّٰه کا نمرود کی آگ سے اسخان لیا گیا، بھرمیرے والداسخی کا شدید اسخان لیا گیا۔ اسکے بعدمیرے ایک لڑکے کے ذریعے میراامتحان لیا گیا جومجھ کوسب سے زیادہ مجبوب تھا، یہاں تک کہ اسکی مفارقت ہیں میری بینائی جاتی رہی، اس کے بعد اسکا ایک چھوٹا بھائی مجھ نمزدہ کی تسلی کا سامان تھاجس کو آپ نے بعد اسکا ایک چھوٹا بھائی مجھ نمزدہ کی تسلی کا سامان تھاجس کو آپ نے بوری کے الزام میں گرفتار کر لیا ہے، اور ہیں بتلا تا ہوں کہ ہم نہیوں بوری کی ہے نہماری اولاد میں کوئی چور بیدا ہوا ہے ؟

ہداق^ک جبراغ ہدات کے جبراغ

مفرت یوسف علیہ ات لام نے جب یہ خط پڑھا تو ہے ساختہ رونے گئے،

کھنجل کر بھائیوں سے سوال کیا تم کو کچھ یہ بھی یا دہے کہ تم نے بوسف اور اُ سکے
مھائی کے ساتھ کیا برتا وُ کیا تھا جبکہ تم لوگ جہالت میں سرخار منظے ؟

برا دران یوسف نے یہ سوال سُنا تو چکرا گئے کہ عزیز مصرکواس قصہ سے کیا
واسطہ ؟ مجر کچھ غور و تا مل کیا تو بچپن سے کچھ علامات محسوس ہوئے، شک وسٹ ہے کے
انداز میں کہا :۔

سميا سيج کمچ تم ہی يوسف ہو ؟

حضرت یوسف علیہ ات آم نے فرمایا ہاں ہیں ہی یوسف ہوں اور یہ بنیا مین میسرا حقیقی مھائی ہے ۔ اللّٰہ تعالے نے ہم پراحسان فرمایا اور جو شخص بھی برائیوں سے بچے اور ثابت قدم رہے تو اللّٰہ تعالے نیک لوگوں کا اجرضائع نہیں کرتے ۔ اب برا دران یوسف کے ہان سوائے ندامت اور اعتراف جرم کے اور کوئی سہارا نہ تھا۔ اپنی ساری حاسد انہ حرکتوں کا نقشہ سامنے آگیا جس کوکل مختانیوں سے منویں میں بچینکا تھا وہ آج مصر کے تخت و تاج کا مالک ہے ۔ سترم سے سرحجا کر سمجھنے تھے :۔

> 'بخدااس میں ٹک نہیں کہ الٹرنے آپ کو ہم پرفضیلت بختی ہے اور واقعی ہم خطا کار ہیں ''

حضرت یوسف علیه ات لام نے اپنے خطاکار مصائیوں کی خستہ حالی اور پشیمانی کو دیجھا تو اپنی عالی ظرفی اور پنیمبرانہ اخلاق کے مطابق وہی کہا جو تمام انبیار کی سنت یہ

ائے تم پر کوئی گرفت نہیں ، الٹر تمہیں معاف کرے اور وہ

سب سے بڑھ کر رقم قرمائے والاہے؛ یعنی جو کچھ مہونا تھا و ہ ہو جبکا اب مجھلی باتوں کو فراموش کر دینی چاہیے بیس بارگاہِ الہی میں دعاکرتا ہوں کیہ وہ تمہاری خطاؤں کو معاف فرماوے۔

اب تم لوگ کنعان والیں جاؤ اور سائھ مَیرا پیراس بھی کیتے جاؤ ۔ یہ میرے والد کی آنکھوں پر ڈال دینا۔انٹ ارالٹراسی خوشبو آنتھوں کوروشن کر دیگی اور

مهرتمام فاندان كومصرك آناء

ا مام تنفسیر ضحاکت اور مجاہر مسے منقول ہے کہ اس کرتے کی خصوصیت عام کپڑوں سے مختلف بھی ۔ یہ مرتہ حضرت ابراہیم علیہ انسلام کے لئے جنت سے اسس کا وقت لایا گیا تھا جبکہ اُن کو بربہنہ کرئے آگِ نمرو دنیں ڈالاگیا تھا۔ بھریہ جنت کا لباس ہمیشہ حضرت ابر اہیم علیہ است لام سے ہاں محفوظ رہا اور ان کی و فات سے بعد حضرت اسطق عليه استلام سے ہاں رہا۔ مجران کی وفات سے بعد حضرت بیقوب علیہ الت الام کوملاً آپ نے ایک بڑی متبرک نئی کی حیتئیت سے اسکو ایک ناکی میں بندکر سے حضرت یوسف عليه التهام سے تکے بیں بَطور نعویذ وال دیا تھا تاکہ نظر برے محفوظ رہیں برا دَرانِ ہو نے جب اُن کا کریتہ والد کو دھوکہ دینے سے لئے اُ ٹارلیا اور وہ برہنہ محریے منویں ہیں ڈال دیے گئے توجبر بیل امین تشریب لائے اور تھے ہیں پڑی ہوئی نگی کھول کم اُس ہے کرنہ برآ مدکمیا اور حضرت یوسف علیہ الت لام کو بہنا دیا ، اور یہ اُن کے یاس برا برمحفوظ جلا آیا اس وقت بھی جبرئیل امین نے حضرت نوست کومشورہ ویا کہ بیہ جنت كالباس تے اسى فاصيت يہ ہے كه نابينا كے جيرے پر دال ديا جائے تووہ بينا ہوجائے اور فرما یا کہ اسکو اپنے والد کے ہاں جیج دیا جائے وہ بینا ہوجائیں گئے۔ حضرت مجدّد الف ثاني كل تحقيق يديم كرحضرت يوسف عليه السلام كاحسن وجمال اور ان کا وجود خو د جنت کی ہی ایک چنر تھی اس کئے ان سے جسم کے متصل

مبرطال برادران یوسف کایہ قافلہ اپنے وطن کنعان روانہ ہوا ساتھ میں "پر اس یوسفی" بھی تھا۔ ابھی قافلہ شہر مصر سے باہر ہی ہوا تھا کہ حضرت بیقوب لیستلا نے اپنے تھروالوں سے کہا آگر تم یہ نہ کہو کہ بڑھا ہے ہیں اسی عقل ماری تھی ہے تو

میں مقبن کے ساتھ کہتا ہوں کہ مجھ کو یوسٹ کی خوشبو آرہی ہے ۔ مشہر مصر سے کنعان کک حضرت ابن عباس کی روایت کے مطابق آ بھے دن

میں میافت کا راستہ تھا، حضرت حسن بھری نے فرما یا کہ اسٹی فرخ تقریباً فرمانی میں۔ میل کا فاصلہ تھا۔ میل کا فاصلہ تھا۔

يه عجائب قدرت سے ايك بات تھى كەجب حضرت يوسف عليدال الم أينے

رایت کے چراغ مبلدا وّل

وطن کنعان ہی کے ایک تحنویں میں تمین روز تک پڑے رہے اُس وقت یہ خوشبومحسوس تہمیں ہوئی ۔

الغرض گھروالوں نے حضرت بعقوب علیہ الت لام کے اس ارشا دیر تعجب اور افسوس کے ساتھ کہا سخدا آپ تو اپنے اسی پرانے غلط خیال میں مبتلا ہیں کہ یوسف مے زندہ ہیں اور وہ بھر ملیں بھے بعنی اس قدر زمانہ گزرجانے کے باوجو د آپ کو یوسف ہی کی رٹ آئی ہے۔

کچھ دن نہ گزرے سے کہ کنعانی قافلہ بخیرتمام پہنچ گیا اور برا دران پوسٹ نے ان کا پیرا ہن حضرت یعقوب علیہ استلام کی آنکھوں پر ڈال دیا آنکھیں فوراً روشن ہوگئیں فرمانے لگے؛ دیکھومیں نہ کہتا تھا کہ میں الٹیر کی جانب سے وہ بات جا نتا ہوں جوئم نہیں جانتے ؟

ہے۔ برادران یوسف کے لئے یہ وقت بڑا رُسواکن تھا شرم وندامت ہیں سرجھائے بولے آباجان! آپ الٹر کی جناب ہیں ہمارے گنامہوں کی مغفرت کے لئے وُعا فرمائیے۔ بلاسٹ بہم سخت خطاکارا ورقصور وار ہیں۔

کے مغفرت بیقوب علیہ ات لام نے فرما یا عنقریب میں اپنے رب سے تمہار سے کے مغفرت کی دعاکر وں گا، بلاسٹ بدوہ بڑا بخشنے والارحم کرنے والا ہے۔ دربارِ یوسفی میں برادران یوسف کی تمیسری آید اور اپنی خستگی و زبوں حالی کا اظہار اور حضرت یوسف علیہ الت لام سے تعارف اور معافی کی درخواست اور بیرا بہن یوسفی کا تذکرہ آیاتِ ذیل میں تفصیلاً ندکور ہے۔ یوسفی کا تذکرہ آیاتِ ذیل میں تفصیلاً ندکور ہے۔

فَرَ أَنْ مُضَمُونِ فَكُمّا دَخَكُواعَلَيْهِ قَالُوا يَا يُنَهَا الْعَذِيْدُ مَتَنَا قَ أَنُوا يَا يَنُهَا الْعَذِيْدُ مَتَنَا قَ أَنُوا الْمَثَرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَتٍ مَّ نُجُدِي فَاوْنِ لَنَا الْصَّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَتٍ مَّ نُجُدِي الْمُتُصَدِّ فَاوْنِ لَنَا الْصَّرُ وَجِئْنَا بِبِضَاعَتٍ مَّ نُونِ فَا وَنِ لَنَا الْصَرَّ وَعَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

(پوسف آیات عث تا عرف)

(الغرض تیسری مرتبہ برا دران یوسف مصریہ بمکر) جب یوسف (علیہ الت لام) کے پاس (جنکوعزیز مصر مجھ درہے متھے) پہنچے کہنے لگے اے عزیز ہم کو اور ہمارے گھروالوں کو دقعط کی وجہ سے) بڑی انکیف پہنچ رہی ہے اور دچونکہ ہم کو نا داری نے گھرلیا ہے اس لئے خریداری کے گھرلیا ہے اس لئے خریداری کے کھرے دام میسزمہیں ہوئے ہم کچھ بینگی چیزلائے ہیں سوآپ د اپنی مہر بانی سے استح برله) پوراغلّه دے دیجے اور ہم کو خیرات سجھ کر دیجے بینگ النّه زنعالے خیرات دینے والول کو دائھی) جزا دیا ہے۔ یوسف (علیہ السّام) نے فرمایا دکہو) وہ بھی تم کو یا د جر جو تجھ تم نے یوسف اور اسکے مھائی کے سامخہ (برتاؤ) کیا تھا حب کر تمہاری جمالت کا زیانہ تھا۔

می کی کیے گئے سی سے مجھے تم ہی یوسٹ ہو ؟ انھوں نے فسرایا (ہاں) میں یوسٹ ہوں اوریہ (بنیا مین) میرا دخقیقی) بھائی ہے ہم پر الڈرنے بڑا احسان کیا واقعی جوشنخص گنا ہوں سے بچیا ہے اور دمضار پر)صبر کرتا ہے تو الڈرتھا لئے ایسے نیک کام کرنے والوں کا احب ضائع نہیں کرتا۔

بی بین مربع سمنے لگے بخدا کچھ ٹک نہیں تم کو اللّٰہ نے ہم پرفضیات • • • رکب نو رکبی میں میں ا

عطا فرما ئي ا دربيثك تهم خطا وارتقے -

یوسف دعلیہ استلام ، نے فرمایا کہ نہیں تم پرآج دمیری طون سے ، کوئی الزام نہیں ہے دبے فکررہو ، الٹرتعالے تمہارا قصور معا ف کرے اور وہ سب مہر بانوں سے زیادہ مہر بان ہے .

اب تم دمیرے باپ کوجاکر بٹ ارت دینااور بشار سے کے سابھ میرا پر کڑتہ دمجی) لینتے جاؤ اور اس کومیرے باپ کے چہرے پرڈال دو داس سے) اُن کی آنتھیں روشن ہوجائیں گی اور اس نے گھروالوں کومیرے پاس لے آئے۔

اورجب قافلہ (مشہر مصریے) جلاتوان کے باپ (میعقوب علیہ استلام نے اپنے باس والوں سے) کہنا نٹروع کیا کہ اگر تم مجھ کو بر معاید میں بہی باتیں کرنے والانہ مجموتو ہیں ایک بات کہوں کہ مجھ کو یوسف کی خوسٹ ہو آرہی ہے۔

وہ (پاس والے) کہنے گئے کہ بخدا آپ تو اپنے اسی پرا غلط خیال ہیں ببتلا ہیں دکہ یوسف زندہ ہے اور ملا قات کرےگا) دحضرت یعقوب علیہ استلام خاموش رہے) ہیں جب خوشخبری لانے والا آپہنچا تو د آتے ہی اس نے وہ کرتہ اُن کے منحہ پر لاکر ڈال ویا لیس فوراً ہی اُن کی آنھیں کھل گئیں۔ آٹ نے بیٹوں سے فرمایا کیوں ہیں نے ہم سے کہا نہ تھا کہ اللہ کی ہا توں کو جننا میں جانتے داسی گئیں نے یوسف کی تلاش کے لئے تم کو مجیجا تھا) یوسف کی تلاش کے لئے تم کو مجیجا تھا) سب بیٹوں نے کہا اے ہما رے باب ہمادے گئے زخدا ہے ہمارے گنا ہوں کی دعائے مغفرت تحجیئے ہم بیشک خطا وار تھے۔

یعقوب علیہ اتلام، نے فرما یا عنقر بب تمہارے گئے اپنے رب سے دعائے مغفرت کروں گا بیٹنک و ہ غفور رحیم ہے ؟

بدایت سے جیراغ

اس وقت مصر کا دار السلطنت ٹوسیس تھا اور وُہ جشن کا شہر" کہلا تا تھا۔
جب تمام باتوں سے فراغت پالی تو ارا وہ کیا کہ در بارمنعقد کریں تاکہ بزرگ ہا ہا اور
افراد خاندان کا تعارف ہوا ور نمام در باری ان کے عزت واحترام سے آگاہ ہوجائیں۔
در بارمنعقد ہوا تمام در باری اپنی البی شخصتوں پر ببٹھ گئے ۔حضرت یوسف علیالسلام
شاہمی سے نکل کرسخت شاہی پر صلوہ افروز ہوئے۔ اس وقت تمام در باری وستور
سے مطابق سجدہ کے لئے گر پڑے بصورت حال کھا ایسی تھی کہ خاندان یوسفی نے بھی
مہا تی ۔ یہ دیچہ کرحضرت یوسف علیہ الت لام تو اپنے بچپن کا خواب یا دآیا اور اپنے والد حضرت میعقوب یا دآیا اور اپنے والد حضرت میعقوب یا دآیا اور اپنے میا ہے۔

ا المان المستنعبيراس خواب كى جورت مونى ميں نے

دیجا تھا میرے رب نے اُسے بچے کر دکھایا "

یعنی والدین اورسب مھائیوں نے یوسف علیہ استلام کے سامنے سجدہ کیا،حضرت ابن عباس نے فرمایا یہ سجد ہُ شکر تھا جو اللّٰہ تعالیٰے کے لئے کیا گیا تھا حضرت یوسف علیہ استلام سے لئے نہیں کیا گیا ۔حضرت یوسف علیہ استلام اِن تمام آغاز و انجام کے اس حسن خاتمہ کو دیچھ کو ہے اختیار ہو گئے اور النّٰر کی جناب عالی میں اس طسرہ

> ہے ہے۔ اُسے پروردگار تونے مجھے مکومت عطاکی اور مجھ کو خوابوں کی تعبیر کاعلم عطاکیا ،اے آسمان وزبین کے خالق توہمی دنیا وآخرت بیں میرا کارسازہے ،مجھکو حالت فیرانبرداری میں ونیا سے اُسٹھا ہے۔

اور مجھ كونيك بندوں ميں شامل ركھتے "

تفسیر این کثیرو میں حضرت حسن کی روایت سے قال کیا گیا ہے کہ یوسف علیہ السلام سوجس وقت بھا تیوں نے کوئیں ہیں ڈالا تھا تو اُن کی عمر شیات سال کی تھی ، بھیر انتھی سال والد سے فائند رہے اور والدین کی ملاقات کے بعد تیکی سال زندہ ہے۔ اور ایک تلایا ہے۔ اور ایک تاریخ سال زندہ ہے۔ اور ایک تلایس سال کی عمر بیں وفات پائی اور دریا ئے نیل کے کنارے سپر و فاک سے گئے۔

. موّرخ ابن اسحاق نے حضرت عروہ بن زبیر کی ایک روایت نقل کی ہے کہ جب حضرت موسیٰ علیہ است ام کومکم ہواکہ بنی اسرائیل کو ماتھ کے کرمصر سے نکل جائیں تو بذریعہ وحی اُن کو یکم ملا تھا کہ یوسف علیہ اللم کی لاش کو بھی مصریں نہ چھوڑیں اُسکو اپنے ساتھ لے کر ملک شنا م چلے جائیں اور اُن کے آبار واجداد کے قریب وفن کریں ۔ چنانچ حضرت موسیٰ علیہ السلام نے تفتیش کر کے ان کی قبر دریا فت کی جو ایک سنگر می کے تا بوت میں بھی اس کو اپنے ساتھ لیکر ایض کنعان فلسطین ہے گئے اور حضرت اسمیٰ وحضرت بعقوب علیہ ماالستلام سے میں ہو ہیں وفن کر دیا۔ اور حضرت اسمیٰ وحضرت بعقوب علیہ ماالستلام سے میں ہو ہیں وفن کر دیا۔ اور حضرت اسمیٰ وحضرت بعقوب علیہ ماالستلام سے میں ہو ہیں وفن کر دیا۔

الغرض چومقی مرتبه برا دران پوسف کا مع والدین در بارپوسفی میں آنا، اہل دربار اور برا دران پوسف کاسسجدہ میں گرپڑنا اور بچپن کےخواب کا حقیقت اختیار کرنا آباتِ ذیل میں وضاحت سے سامقے موجو دہے۔

قرا في مضمون المنكا دَخَلُوا عَلَا يُوسُفَ اوْى إِكَيْدِا بَوَيُدِ وَ اللَّهُ اللّ

(يوسف آيات عدد يا عيزا)

بھرجب یہ سب سے سب یوسف دعلیہ ات لام کے پاس پہنچے تو انھوں نے دسب سے مالل کر) اپنے والدین کو اپنے پاسس د تعظیماً) مجکہ دی اور کہا سب مصری جائے اکٹ رائٹر و ہاں امن میں سے رہئے۔

(وہاں پہنچکر تعظیماً) اپنے والدین کو تخت شاہی پراُ ونجا بھایا (اس وقت سب کے قلوب پر یوسف علیہ استام کی ایسی عظمت طادی ہوئی کہ) سب کے سب اُن کے سامنے سجدہ بین گرگئے (یہ حالت دکھ کر یوسف علیہ استام) محمنے گئے کہ اے اباجان یہ ہے میرے خواب کی تعبیر جو پہلے زمانے میں دکھا تھا (کہشمس وقمرا ورگیارہ سارے مجو کو تعبیر جو پہلے زمانے میں دکھا تھا (کہشمس وقمرا ورگیارہ سارے مجو کو سمجدہ کرتے ہیں) یہ میرے دب نے اُس (خواب) کوسچا کر دیا اور سے

سا بقه ۱ ایک) اُس وقت احسان فرما یاجس وقت محوکو قید سے بکا لا (اور اس رتبهٔ سلطنت تک پہنچایا) اور لبعد اسکے کہ شیطان نے میرے اورمیرے مھائیوں کے درمیان میں فساد ولوا دیا مقا دمس اللہ کی عنایت ہے کہ وہ ہم تم سب کو ہاہرہے دیہاں) ہے آیا دا ورسب کو ملادیا) بلات ہمیرا رب جوچا ہتا ہے اُس کی تد بیرلطیف کر دیتا ہے ، بلاسٹ ہو ہ بڑا

علم والاحكمت والاہے۔

اے میرے رب آپ نے مجھ کوسلطنت کا بڑا حصہ دیااو^ر مجھے کو خوابوں کی تعبیر دینا تتعلیم فر ما یا ۔ اے آسمانوں اور زبین کے پیداکرنے والے آپ میرے کارٹ زہیں دنیا ہیں بھی اور آخرت میں بھی ۔ فرما نبر داری کی حالت میں مجمکو دنیا سے اُٹھا لیجئے اور خاص نیک بندوں میں ٹ مل کر دیجئے۔ بینفقیہ دجو بیان کیا گیا عیب کی خبروں میں سے ہے بہم وحی سے ذریعہ سے آپ کو بیقصہ بتلاتے ہیں اور آپ (اے محمد ملی اللہ علیہ و لم) اُن (برا در این یوسف) سے پاس اُس وقت موج و نه محقے جبکه انھوں نے اپنا اراد ہ (نیوسف کوکنویں می^{وا}ل دینے کا بختیر کراپیا بھا اور وہ تدبیریں کررہے تھے اور اکٹرلوگ پیا نہیں لاتے گو آپ کا کیسا ہی جی چاہتا ہو ۔ آپ اُن سے اس (قرآن) پر تچے معاوضہ تو چاہتے نہیں یہ دقرآن) توصرف تمام جہان والدں کے لئےایک نصیحت ہے "

قصير كالمختنام حضرت يوسف عليه استلام كاليمجيب وغربيب قصة غور وفكركرني والوں سے لئے اپنے پہلومیں نہایت اہم اخلاقی مسائل رکھتا ہے۔ در اصل بیقصتہ ایک واقعہ ہی نہیں بلکہ کمالات واخلاق کی ایک ایسی زریں داستا ہے جسکا ہر مہاو وعظ ونصیحت عبرت وبھیرت کے جواہرے لبریز ہے۔ قوت ایمانی ،استقامت ،ضبطِنفس ،صبروشکر،عفّت و دیانت ،امانت عفوو در تزر، جذبهٔ تبلیغ ، اعلار کلنه التر کاعشق ، صلاح و تقولی جیسے اخلاق فاصله اور

ملذاوّل بدایت کے جیراغ

صفات کا ملہ کا ایک نا در الوجود سلسلۃ الذہب ہے جو

جند امورخصوصیت سے ساتھ قابل ذکر ہیں۔

اگرکست خص کی زاتی سرشت عمیره مهوا در اِسکا ماحول بھی پاک ومقدس اورلطيف ہوتواً يست خص كى زندگى اخلاق وسحر دارميس

نمایاں صفات کی حامل ہوتی ہے۔

حضرت پوسف علیہ انسلام کی مقدس زندگی اسکی بہترین مثال ہے. وہ حضرت بيقوب عليه التسلام وحضرت أتسحق عليه التسلام وحضرت ابرابهم خلسل التنر علیہ انتسلام جیسے اُولوالعزم نبیوں کی اولا دیکھے اس لئے نبوت ورسالک سے حجوارہ میں نشونما یاتی اور خالوا و ہُ نبوت کے باحول میں توہبیت حصل کی . ذاتی نیک نہا دی اور فطری پاکی نے جب ایسے لطیف باحول کو دیکھا تو تمام کمالات اور اوصا حميده جمك أتمط

عقل انسانی اس مجموعهٔ کمالات مستی کو دیکھ کرمجوجیرت ہوجاتی ہے۔

استقامت **کااثر** اگرکشی خص میں ایمان بالٹرستقیم و تحکم ہوا دراس پر اسكا اعتماد وتقين راسخ ومضبوط بهوجأئة نوتميرزندكى تحكى تمام صعوبتين اورمشكلات اس يرآسان بلكه خوست گوار بهوجانی بپ ،حضرت يوسف علياتلاً کی تمام زندگی میں بیرانز نمایاں نظراتا تاہے بتختِ مصر پیر فائز ہونے کے بعدا نیز محبوب والدين كموطلب فرما سكتے تنقے نسكنَ مرضيُّ خدا وندي سُحّے انتظار ہيں نصف صدميّ ۔ زائدع صهاينا تنعار ب نهين كروايا -

ا بنلار وآزمائش دولت و ثروت کی تسکل میں ہو یامصیبت و ہلاکت کی

رایت <u>کے حیر</u>اغ مبلد اوّل

صورت بیں ہو ہر حانت میں انسان کو التّرتعالے ہی کی جانب رجوع ہونا چاہئے اور اُسی سے التجا کرنی چاہئے کہ وہ ٹابت قدم رکھے اور استقامت بختے۔ عزیزمصری بیوی اور میں مرضیات پوری نذکرنے پر قید کی دھمکیاں اور مجرقید وبند سے مصائب ، اِن تمام حالات میں حضر پوسف علیہ السّلام کا اعتماد اور اُن کی وعاوٰں اور انتجاوُں کا مرکز صرف ایک ہی التّر بزرگ وبرتر کی ذات تھی۔ تذکرہ سبیدنا یوسف علیہ السلام کا یہ پہلو استقامت

(أ ابت قدمی) كا بهترين تمونه ہے .

عزت فیمنس اخوداعتمادی انسان کے بلنداوصاف بیں ایک بڑاوصف ہے۔ النّرتعالیٰے نے جس سی کوید دولت بخش دی وہی دنیا کے مصاب وآلام سے گزرگر دنیوی اور دینی بلندی حال کرتا ہے بخوداعتمادی کی مختلف اقسام ہیں ایک قسم عزت نمفس" بھی ہے جوشخص خود داری اورعزت نفس سے محروم ہے وہ انسا نہیں آئر مضافہ گرفت میں ہے۔

تعفرت یوسف علیہ السلام کی عزینِ فس کا بہ عالم ہے کہ برسوں کی منطلو مانہ قید بندی سے ر ہائی کا حکم ملا توسئرت وٹ و مانی کے سابھ فوراً اُسکولبیک نہیں کہا لکہ صاف انکار کر دیا کہ میں اُس وقت تھک قید نوانے سے باہر نہیں آؤں گا تا وقت تک میں فیصلہ نہ ہوجائے کہ مصری عور توں نے محروفریب سے جس فسم کا معاملہ میرے ساتھ کیا تھا اُسکی اُسل حقیقت کیا ہے ؟

جب حقیقت واضح ہوگئی تو عزت وسر فرازی کے سابھ قید خانے سے باہر آئے اسی کا نام عزتِ مفس ہے۔

حقیقت صبر اصبر ایک عظیم ان ان خصلت ہے جو بہت سی بُرائیوں کے لئے سپر اور ڈھال کا کام دیتا ہے۔ قرآن صحیم میں شترے زائد مقامات پر اسکی فضیلت کا اعلان آیا ہے اور بہت سے مراتب و درجات کا مدار اسی فضیلت پر رکھا گیا ہے۔ ہدا بت کے چراغ

نگی اور ناخوت گواری کی حالت میں اپنے کورو کے رہنے کے ہیں اور اصطلاح شرعیت ایک اور ناخوت گواری کی حالت میں اپنے کورو کے رہنے کے ہیں اور اصطلاح شرعیت میں خوت کے میں اور اصطلاح شرعیت میں خوت کے میں کو خوت سے باہر نہ نکالاجا کے۔ میرکی مختلف اقسام ہیں ۔ بعنی جن اسٹ یار کی جانب صبر کو ننسوب کیا جا تا ہے اُس کے مغتلف نام ہوجاتے ہیں :۔

دا) آگربطن ویشرمگاه کی ناجائز خوا ہشات سے مقابلہ میں صبر

تحیاجائے تواس کا نام ُ عِفّت ' قرار پا تا ہے۔

(۲) اگر دولت و تروت کی فَراوانی میں صبر کیا جائے تعینی نجل و تکری جائے تعینی نجل و تکہتر سے پر مہیر کیا جائے تواس کو صبط شفس "کہا جاتا ہے۔

بر سے بھا ہے۔ (۳) اگر میدانِ جنگ اور اس قسم سے خطر ناک صالات پرمبر تا سے دونند ''س نا تا ہے۔

ہے تراس کو شجاعت' کہاجا آہے۔

دہم)اگرغیظ وغضب سے حالات پرصبر کیا جائے نواس کو ''حلم'' کہا جاتا ہے۔

م مہاجا ہے۔ (۵)اگر حواد ٹ زیا نہ پرصبر کمیاجائے تواس کا نام وُسعتِ

صدر کشاره ولی وحوصله مندسی کها جا تاسیح،

(4) اگر دوسروں سے پوٹ یدہ عیوب پرصبر کیا جائے

یعنی اسکوظا میرینه کمیا جائے تو اس کا نام مشرافت " قرار پاتا ہے ۔ ب

(٤) اگر بقدرِ صرورت معیشت پرصبر کیاجائے دیمعنی جول جا

اسپردافنی رہنا اور افسوس نہ کرنا) اسکو تناعت "کہاجا تا ہے۔ (۸) اگر لذائذ اور عیش بیٹ ندی کے مقابلے میں صبر ہو تو

(۸) الرکداند اور حیل بسیدی سے مقاب یک جر ہو تو اس کا نام 'زبہ'' قرار یا تاہے۔

(٩) أكر كناه ومعصيت ونا فرماني پرصبر كيا جائے دمعني اختيا

كى جائے) اس كا نام تقوٰى "ہے۔

(۱۰) اگرمصینتنوں رپصبرہے تو اس کا نام 'صبر'' ہی ہے۔ انٹرتعا<u>لئے نے</u>حضرت یوسف علیہ است لام کوصبر و دضا سے اِن تمام مراصل ہیں و ہ کمال عطافرہا یا تھاجسکو مشل اعلی "کہا جا تا ہے۔ مثلاً :
(۱) برا دران یوسف کی ایذار رسانیوں پرصبر (۲) آزاد ہونے

سے با وجود غلام بن جانے پرصبر (۳) عزیز مصر کی بیوی اور مصسری
عور توں کی پُر فریب ترغیبات پرصبر (۲) قید خانے سے مصائب پرصبر (۵) عزیز مصر کی دولت و تروت سے وسیل بن جانے پرصبر دیعنی اظہا میکٹرسے پر مہیزی (۹) ہر حالت بیں زید و قناعت کی زندگی بسر کی اور

اس پرصبر کیا (۵) ایڈار رسا بھائیوں کی ندامت سے وقت اختیار صبر یعنی وسعت فلب کا تبوت دیا ہمیں نہ صرف در گرزر کر دیا بلکہ آلوام وعزت بھی عطاکی۔

آخرمی بات کی مدحت یوست علیه است الام کے اخلاق کریما نه اورصفائیا یہ مسلی الشرعلیہ و کم ملہ ہے جنبی کریم صلی الشرعلیہ و کم ملہ ہے جنبی کریم صلی الشرعلیہ و کم ابن الکریم یوست بن یعقوب بن اسلی بن اسلیم مسلم دعلیہ مالسلام) دالحدیث الله نسب جو بیچار بیت توں سے کرامتِ نبوت سے تفیض ہے ۔ اور ایک روایت میں اسطرح مذکور ہے :۔ اکرم اناس یوست نبی الشرابن نبی الشرابن نبی الشرابن الله الله الله منسل الله دائن الله الله دیکی الله الله دیکھوں کے دیکھوں کا میکھوں کے دیکھوں کے دیکھو

حقیقت خواب اسلیم کانسانی کانسان کانسانی کانسان کا

ہ۔ایت کے چیداغ مبلدا وَل

ائی بین میں ہیں جن ہیں سے ق^نو بالکل باطل ولغو ہیں جنی کوئی اصلیت نہیں ہوتی ، نیسری قسم اپنی زات کے اعتبار سے صحیح وصاد ق ہے منگر اس صحیح قسم ہیں تھی مجھی کچھ عوارض سٹ ایل ہوکر اسکو تھی فاسدا ورنا قابل اعتبار کر دیتے ہیں ۔ مجھی کچھ عوارض سٹ ایل ہوکر اسکو تھی فاسدا ورنا قابل اعتبار کر دیتے ہیں ۔

مفصیل اسمی بیہ ہے کہ خواب میں انسان مختلف صور میں اور واقعات دیجتا ہو مجمعی توابسا ہو تاہے کہ بیداری کی حالت میں جوصور میں انسان دیجھتا ہے وہی خواب میں کل بن کرنظر آجائی ہیں اور تعجی ایسا ہو تاہے کہ شیطان کچھ صور میں اور واقعات اسکے ذہن میں ڈال دیبا ہے خوش کرنے والے یا ڈرانے والے، یہ دونوں قسمیں باطل اور بے حقیقت ہیں ان کی کوئی تعبیر نہیں ہوتی میہا قسم کو تحدیث النفس" اور دوسری قسم کو تسویل شیطانی "کہا جا آ ہے۔

خواب کی تمیسڑی قسم جو تھیے اور قابل اعتبار ہوتی ہے وہ الٹر تعالے کی طون سے ایک میم کا الہام ہے جو اپنے بندے کو خواب میں خبر دار کرنے یا خوشخبری و بنے سے کئے کیا جاتا ہے ۔ الٹر تعالے اپنے خزا نہ غیب سے بعض چیزیں اسکے قلب و دیا ط میں ڈال دیتا ہے ۔ خواب میں دکھی ہوئی ایسی چیزیں اصل و نبیا درصی ہیں انہی کی

عبرا نی شنے سندصحیح سے ساتھ ایک مدیث نقل کی ہے کہ رسول الٹر صلی اہتر علیہ ولم کا ارث و ہے :۔

ممومن کاخواب ایک کلام ہے جس میں وہ اپنے رب سے سٹرٹ گفتگو حاصل کر تاہے ؟ د تفییر مظہری)
قرآن حکیم کی ایک آیت کہ مم المثنی نے المحیوۃ کا کھیٹی فی انجیٹی فی المحیوۃ کا کھیٹی فی المحیوۃ کا کھیٹی کے تفسیر میں حضرت ابوالدر دار دوزنے کو فی الکی خور کے ایک کی تفسیر میں حضرت ابوالدر دار دوزنے نے بنی کریم صلی النٹر علیہ ولم کا قول نقل کیا ہے کہ ثبتر ہی ہم مرا دا جھے خواب میں جسکو مسلمان دیجھتا ہے یاکسی کو دکھا باجا تاہے در زندی تربین)
اس کے تعرف وہ خواب میں جسکو صور پر الہام من التیرا ورجھے ہے ہے نابتہ ہمورگا جوالیٹر کی اس کے تعرف وہ خواب میں جسکو مور پر الہام من التیرا ورجھے ہے ہے۔

طرف سے ہوا دراسمبر کچھ عوارض سٹ مل مذہبوں اور اسی تنعیبر بھی صحیح دی گئی ہو۔ انبیارعلیہم انت لام سے سب خواب ایسے ہی ہوتنے ہیں اس لئے اُن سے

خواب مھی وحی الہی کا درجہ رکھتے ہیں۔

تواب بی وی ان می درجه رسے نہیں ہورج کا احتمال رکھتے ہیں اس لئے وہ کسی کے بیے جت اور دلیل نہیں ہوتے ۔ اِن خوابوں بیں بعض او قات طبعی او رہنف ان صور تول کی آمیز سن ہوجا تی ہے اور بعض او قات گئا ہوں کی ظلمت وکد ورت صحیح خوا ہے ہی آمیز سن ہوجا تی ہے اور بعض او قات تعبیر سمجھین ہمیا تی جہاکر اس کو نا قابل اعتبار بنا دیتی ہے جس کی وجہ سے بعض او قات تعبیر سمجھین ہمیا تی ۔ چھاکر اس کو نا قابل اعتبار بنا دیتی ہے جس کی وجہ سے بعض او قات تعبیر سمجھین ہمیا تی ۔ خواب کی یہ تین قسم میں ہمیا ایک علیہ وہم ہو مقول ہیں :۔ مقول ہیں نا میں ایک قسم سے جو او می اپنی بیادری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسری قسم وہ جو آدمی اپنی بیداری ہیں دیکھیا رہتا ہے ۔ مؤسلی مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔ مؤسلی مؤسلی مؤسلی مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔ مؤسلی مؤسلی مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔ مؤسلی مؤسلی مؤسلی مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔ مؤسلی مؤسلی مؤسلی مؤسلی ہو اور اس مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔ مؤسلی مؤسلی مؤسلی ہیں اجاتی ہیں ۔

مرار میں تعلیم میں تھیں ہے اور حق ہے وہ نبوت سے اجزار میں سے حصیح اور حق ہے وہ نبوت سے اجزار میں سے حصیح اللہ اللہ تعالیے کی طرف سے الہام ہے . حجیالیسواں مجزر ہے لیعنی اللہ تعالیے کی طرف سے الہام ہے . خواب کی تیسری قسم جوحق اور صحیح ہے اسکونبوت کا

ایک جزر قرار دیا گیاہے۔

صحیح بخاری میں ایک روایت ہے کئم یَبُنیَّ مِنَ النَّبُوَّةِ الکَّ النُسُکَشُرَّاتِ لِعِنی آئندہ نبوت باقی نہ رہے گی سوائے مبشرات سے ،صحابہ نے بوجھا مبشرات سے کیا مراد ہے آپ نے ارث و فرایا سے ،صحابہ نہ ، سال مردر

سال المعض دوایات بین خواب از دبخاری ، بعض دوایات بین خواب از دبخاری ، بعض دوایات بین خواب کونبوت کا چالیسوال حصد قرار دیا گیا ہے اور معض بی چیا جا اور بعض بی چیا جا اور بعض بی بیٹٹروال حصد ہونا منقول ہے ، بیس بیٹٹروال حصد ہونا منقول ہے ، بیس بیٹٹروال حصد ہونا منقول ہے ، بیس بیٹ فیسے نظر کی گئی ہے کہ اس اختلاف میں کوئی تضاونہ ہیں ہے ۔ ہر دوایت اپنی جگہ درست وصحیح مفہوم رکھتی ہے ۔ عود کا ایک اختلاف خواب دیجھنے والے کے مختلف حالات کی بنا پر ہے جو شخص سچائی ، ا مانت ، دیانت اور کمال ایمان کے ساتھ متصف ہوگا اور جو ان اوصا ف میں کچھ کم ہے اسکا چھیالیسوال کا خواب نبوت کا چالیسوال کو ایک اسکا چھیالیسوال

ہدایت کے چراغ جلدا ڈل

یا ُ نچاسواں یا پچاسواں حصہ ہوگا اور جواس سے کم ہے اُس کا خواب نبوت کا ستر واں میں میں میں علا

ا مام قرطبتی نے ایک اور لطبیف توجیه ہی ہے لکھتے ہیں کہ خواب ہیں بعض او قات انسان انسی چیزیں دیجھتا ہے جو اس کی قدرت میں نہیں مثلاً یہ دیکھے کہ وہ آسمان پر اُڑر ہاہے، یا غیب کی ایسی چیزیں دیچھ رہا ہے جن کاعلم حال کرنا اس کی قدرت میں نہ تھا نواس کا یہ دیجھنا یا جا ننا بجزا بدا دوالہام الہی کے اور کچھنہیں ہوسکتا

جواصل میں نبوت کا خاصتہ ہے اسلئے ہیتے خوا ب کو نبوت کا جزر کہا گیاہے ۔ بہ ساری بحث تو نبی کے خواب کے بارے میں واضح ہے نیکن غیرا نبیار کے خواب پہنیوت میں اور یہ نبوت کاحقیقی جزر۔البنۃ سیتے ہونے میں نبی کے خواب سے

واب نہ ہوت ہیں اور نہ ہوت کا میلی بربر البند ہے ، وسے ہی مشامبہت رکھتے ہیں اس لئے ایسے خواب کو جزیر نبوت کہا گیا۔

ایک تمیسری توجیهه اورمقی ممکن ہے و ہیں کہ حدیث بنی ارمی ہیں سیجے خوالوں کو مبتئرات (خوسٹ نحبری و بینے والے) کہا گیا ہے۔ حدیث سے آیدالفاظ ہیں ہے۔

بدایت سے جراغ

لَهُ يَنِيَ مِنَ النَّبُوَّةِ إِلَّالْمُ بَشِرَاتُ والحديث، یعنی نبوت کا کونئ جزر سوائے مبشرات سے باقی نہ رہا۔

صحابة كرام في عرص كيا يارسول التربيشرات كيابي ؟

ارْت و فرما یا سیخے خواب د (بخاری)

ابتدایه نبتوت میں نبی کرئم صلی التہ علیہ ولم پر کبترت پیمبشرات آیا کرتے تھے جس کا

خوابوں کونبوت کا جزر کہا گیا۔ استفصيل مين يه بات الجيمي طرح ملحوظ رسني چا سئے پوری امیتِ اسلامیہ کا

متفق عقیدہ ہے کہ نبی کریم صلی الٹرعلیہ ولم پرنبوت کاسٹ المناختم ہوگیا . قرآ انجھیم ہیں پیرین أيجوخاتم النبين كهاكبيا اورآك كوفيامت يمك سح تمام انسانوں كالمادى ورسول كهار

عيد ا وَمَا أَرْسَلُنَاكِ إِلَّا كَانَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا. دالاَية)

اس لیئے کوئی یہ ندمجھے کہسی چیز کا ایک جزر ہونے سے اُس چیز کا موجو د ہونالازم نہیں " تا اگرکسی شخص کاایک بال یا ایک ناخن تهبیں موجود ہوتو کو ٹی میمولی سی عقل اس کھنے

والا بنہیں کہدسکتا اور نہ مجھ سکتا کہ بیاں قصخص موجود ہے۔

مثین سے بہت سے کل یُرزوں میں سے آگر کسی سے ہاں ایک یُرزوں ما ابک اسکر دموجو دہوا ور و عقل مند محجنے گلے کومیرے پاس فلان مشین موخو دہے تو

دنیا بھرکے انسان اسکو حجوما یا فریب خور دہ یا بیوقوٹ کہیں سے سيجة خواب حسب نصريج حديث بلاست بدجزِ رنبوت ہيں انگرنبوت نهير

نبوت توخائم الانبيارصلی الترعلیہ ولم پرختم ہو پھی ہے ۔ ا پہے ہی ایک اور وضاحت منبی طروری ہے. سیجے خواب کو جیسا کہ اعا دبیث

میں بٹ ات یا تنبیہ کا نام دیا گیا ہے اس کی حقیقت استے سوا اور کچھ نہیں کہ ایساخوا^ب

نہ خور دیکھنے والے سے حق بین جہتن ہے نہ دوسروں کے لئے۔

بعض نا واقیف لوگ ایسے خواب و سیھ کر طَرح طرح کے وسا وس میں مبتلا ہوجاتے ہیں اسکوکوئی اپنی بزرگی اور ولابت کی دلیل شجھنے لگئا ہے توکوئی اس سے مصل ہونے و آلی بات کوشرغی احکام کی طرح درجه دینے لگتا ہے۔

یہ سب باتیں ہے بنیاد ہیں خصوصاً جب یہ بھی معلوم ہو گیا کہ سیجے خوابوں ہیں بعض دفعہ منفسانی یا شیطانی انزات تی آمیزسش کا بھی احتمال ہے۔ حدیث صحیح میں خواب کی جوحقیقت بیان کی گئی ہے وہی اُسکی حقیقی حیثیہ ہے۔ یعنی خوشخبری دینے والے خواب، اس سے مہتراسکی اور کونی وضاحت ممکن نہیں۔ جامع تر مذی اور ابن ماجه بین ایک روایت موجود ہے جسیں بیرصراحت ملتی ہے کہ نبی کریم صلی التر علبہ و لم نے خواب کی نبیج قسموں کا بیان کیا ہے:۔ وایک الٹر کی طرمناہے بٹ ارت۔

دوسترے نفسانی خیالات ۔

تىيىرے ئىبطانى تصورات.

حضرت بوسف علیہ ات لام نے بچین میں جوخواب دیکھا تھا ،یاعز بزمصر نے تحطیب الی کوشات عد دمونی گائیوں اور شات عدد وُہلی گائیوں كى شكل بين ديجا تھا يا نبى كرىم صلى الترعليبه ولم نے غزو و اُروپ سے موقعہ يرارين و فرمايا مخا بين نے خواب ديجها كه ميري تلوا رئوٹ كئي ہے اور ونیحاکہ کچھ گائیں ذبح ہورہی ہیںجسکی تعبیرآ ہے نے حضرت حمزہ کی شہاد اوربهت سے مسلمانوں کی شہادت قرار دی جوبہت بڑا ما دیڈ بھت چنانچەغزو ة اُقدىس حضرت حمزه بىغ كے علاوه ستشرصى بەشپىدىرد ئے ؟

اس قسم کے جملہ خواب بٹ ارت اور الہام من الٹر کی قسم سے ہیں۔ خواب کی حقیقت اوراُس کے اقسام کے بعدیہ ہات مجی شمجھٹی چاہئے کہ خواب کوئی خواب وخیال سی بات نهبیں ہے جیسا کر معض نا دان لوگ کہہ دیا گرتے ہیں بلکہ سیجے خوا ب کی حقیقے ہے۔ بڑی گہری ہوتی ہے اور بعض خواب صبح روشن کی طرح ظاہر ہوجاتے ہیں اس لسلہ میں ایک بات میں کا فی ہے کہ تعبیرخوا ب کاعلم، علوم اُنہیار میں شمار کیا گیاہے اور تتقل طور بريعكم سبيرنا يوسف عليه التسلام كوعطاكيا كيا تفاء أكرخوا ب كوني خيفت نه ہوتا توعلم تعبیر کاکیامطلب ہوتا ؟ اور و ہ علوم نبوت محیوں قرار باتا ؟ یہی وجہ ہے کہ اجادیث میں یہ ہرایا ٹیلتی ہیں کہ اینا نقواب ہرکس و ناکس سے

بیان نه کیاجائے بلکہ ایسے تنفس سے بیان کیا جائے جو زیک متقی اور خلص قسم کا ہو

اور و ہلم تعبیر سے مناسبت بھی وکھ ما ہونا کہ و ہ غلط تعبیر دے کرخواب کا اثر ضائع منہ ر دے ' حیوں کہ حدیث شریف میں میان کیا گیا ہے کہ خوا معلق رہنا ہے جب تک ح تعبیر نہ دی جائے اور جب تعمیر دے دمی جاتی ہے تو حقیقت بن جاتا ہے۔ حدیث کے یہ الفاظ ہن :-

ٱلرُّوَّةَ يَا عَلِے ذَجُلٍ طَائِرٌ مَا لَعُ لِتَكَبَّرُ فَاذَ اعْدِيرَتُ

وَ قَعَتْ (اَ ثَيْ وقعت كماعبرت) (رواهُ ابوداؤد)

اس صدیث میں خاص طور ہیر بہ کننه ظام کیا گیا ہے کہ جیسی تعبیر دی جائیگی ویسے ہے واقع ہوگی اور بیری مفہوم ہوتا ہے کہ پہلی تعبیر ہی خواب کی حقیقت ہوتی ہے اس کیے خواب

کو ہرکس و ہائسسے بیان نہ کرنا جا ہئے ز ما نَهُ نبرّت میں ایک خض نے خواب دیجیا کہ وہ جاریانی دیلیا کے کوگل کیا ہے

اُس نے اپنے ایک دوست سے یہ خواب بیان کیا اُس دوست نے مزاحاً کہہ ویا تو پھیر تېراپېپ ئېپەڭ گيا. تچھە دېربعداسكى موت واقع تېرگئى. نبى كرىم سلى الليم علب ولم كوب ب اس واقعہ کی اطلاع دی محتی تو آپ نے ارٹ و فرمایا اُس سے دوست کی تعبیر نے السحو

ہلاک کر دیا۔ مھیرآ پ نے اریٹ و فرمایا اُس خواب کی یتعبیریہ مقی جو بیان کی گئی ملکہ أس خواب بين است اره محاكه التشخص كي شهرت اطراف عالم مين هيل جائيگي -

حضرت ابو بجرصدیق منے کے سی موقعہ پر آبٹ شخص کے نواب می تبیر بیان کی اس پر

نبی کریم میلی الترعلیہ ولم نے فرمایا تھا :-اصبت بعضًا وآخطات بعضًا دبارى بسلم، ترذى الوداؤد)

"کے ابو بچریم نے تعبیر کا بعض حصیح بیان کیا اور بعض میں

اس مدیث سے تعبیرخواب کی اہمیتت پر روشنی پڑتی ہے۔

ف نظر حضرت یعقوب علیہ است لام نے اپنے لڑکوں سے دوسرے سفیر مور مستر اسے وقت خصوصیت سے یہ وصیت فرمانی بھی کہ اسے بیٹیو! جب م شہرمصر میں داخل ہونے لگو توشہر سے ایک در وازے سے داخل نہ ہونا بلکہ متفرق ہوگ ہرایت کے چراغ

مختلف دروازوں سے ہونا. عام مفسرین قدیم وجدید نے اسکی معقول وجہ یہی بیان کی ہے کہ چونکہ یہ سب گیارہ بھائی صحت مند، قدآور، صاحب جمال اور صاحب وجا بہت تھے کہیں ایسا نہ ہو کہ کسی کی بدنظر لگ جائے اور انھیں کوئی نقصان ہوجائے .

نظر لگنااور اس ہے کوئی تمکیف یا نقصان پہنچ جا نا ایک مسلّمہ حقیقت ہے جمن نیاں کو مار نریس کی اور دن اس میں اور میں اس میں اس کا ایک مسلّمہ حقیقت ہے جمن

جا ہلانہ وہم وخیال کی بات نہیں جیسا کہ بعض لوگ خیال کرتے ہیں۔ میں کے مصل ایک عاصب کی فروس سکی تھی اور فروز کا دی ہے

نبی کریم صلی التّرعلیہ ولم نے بھی اسکی تصدیق فرما نی ہے۔ ایک مدیث میں ہے کہ نظر بدایک انسان کو قبر میں اور اونٹ کو ہنڈیا میں داخل کر دینی ہے مطلب یہ کہ نظر بد کا اثر موت کے قربیب کر دیتا ہے۔

حدیث بخاری و کم میں بکٹرت ا حادیث اس کیلے ہیں منقول ہیں . ایک صر

حدیث صحیح میں یہ حملہ تھی ملتا ہے:۔

وَمِنُ كُلِ عَيْنٍ لَامَّتِيْ

یعنی میں بناہ مانگتا ہوں نظر بہسے ز قرطبی)

صحابہ کرام بیں ایک صحابی رسول ابوسہل بن صنیف کا واقعہ معروف وضہور ہے وہ ایک موقعہ پر فسل کرنے کے لئے کیڑے اُ تارے اُنکے نرم و 'ازک سفید بدن پر عامر بن ربیعُہ کی نظر بڑگئی اور اُن کی زبان سے بے ساختہ نکلا کہ آج تک اتناحسین بدن کسی کا مہیں دیجھا۔ استح بعد حضرت مہل بن صنیف کو سخت بخارچڑھ گیا۔ نبی کریم صلی السّر علیہ ولم کو حب اسکی اطلاع ہوئی آپ نے یہ علاج ہجویز فرمایا کہ عامر بن ربیعُہ کو حکم دیا جائے کہ وہ وضو کریں اور وضو کا پانی کسی برتن میں جمعے کریں بھریہ یا بی سہل بن صنیف کے بدن پر ڈال دیا جائے، چنا بخد ایسے ہی کیا گیا تو بخار فوراً اُسرکتیا اور وہ بالکل تندرست ہوکر مسلم برنبی کریم صلی السّر علیہ و لم سے ساتھ جارہے سکھے روا نہ ہوگئے۔ اس واقعہ بربر آپ نے عامر بن ربیعُہ کو یہ نبیہ فرمائی مُقی :۔

عَلَّامُ يَقْتُلُ آحَدُكُمُ آخَاءُ أَرَّ بَرُّكُتَ إِنَّ الْعَيْنَ

حَق في دالحديث)

سکوئی شخص اپنے بھائی کوکیوں قتل کرے ،تم نے ایساکیوں نہ میاکہ جب ان کا بدن تمہیں خوب صورت نظر آیا تو برکت کی دعا کر دیتے،

نظر کا ہو ناحق بات ہے۔

بعض احا دیث میں ہے کہ تسی اچھی چنر کو دیکھ کر مّا شکاءً اللهُ لَا تُوَّا الَّهِ اللهِ بَعِنَ اللهِ کہنے سے نظر بدکا اثر حلاجا تاہے اور نظر نہیں گلتی ۔

معنی کرنے میں کافی دخل اور معنی یہ بات مجھ میں آتی ہے کہ نظر اور خیال کو حالات کے بدلنے اور متنی کرنے میں کافی دخل اور علق ہے۔ انسان کی قوتِ خیالیہ میں اتنا زدر اور اثر ہے کہ وہ است بار پر اپنا زبر دست اثر حجور ٹی ہے جئی کہ بعض اوقات اسی اثر کے بتیجہ میں چیزوں کی شکلیں تبدیل ہوجاتی ہیں۔ مثال کے طور پرکسی انسان کی غضبناک آنتھ میں اپر سے غیظ وغضب کے ساتھ کسی دوسرے انسان پر ٹر جاتی ہیں تو یہ خوف زدہ ہوکر کا نیٹ ہے مالا کہ اس خص پرکوئی ظاہری عمل واقع نمہیں ہوائی انسان کی عام حالت میں ایک تبدیلی آجاتی ہے اور جبرے کا رنگ وروپ برل جاتا ہے بسا اوقات انسان اپنے ہوئی ۔ یہ زبر دست انقلاب اسی غضبناک نظروں ہی کا تیجہ ہم جا اور آپ نے یہ جبی سُنا ہوگا کہ بعض دفعہ اور غضبناک نظروں ہی کا تیجہ ہم جا اور نہ کوئی ظاہری عمل صرف ایک نظر ہے جس اور غریب میل پیدا کردیا۔

اسی طرح کسی خو فرز ہ اور سہمے ہوئے انسان پر کوئی محبت و پیار سے نظسر ڈالے اور زبان سے کچھ نہ کہم تو اُسکی نظر کرم کا اثر فوری طور پراُ سکے خوف وہراس کو دُور کر کے جہرے کی رونن کو والیس لے آتا ہے ۔ یہاں بھی اُسی نظر کا اثر ہے جس نے یہ تغییر پیدا کر دیا ۔ حتی کہ بعض او قات جان بلب انسان جوخوف کے مارے نیم مُرد ہ ہوچکا مقا صرف نظر عنا بت کے باعث اُٹھ کھڑا ہوا ۔

سرف طرف بیسب نظروخیال ہی سے کرشندے ہیں۔ دراصل اللّٰہ تعالیے نے جن اشیار کو بھی پیدا فرما یا ہے اُن بیں تجھرنہ تجھ خاصیتیں رکھی ہیں۔انسان سے جسم بیں آٹھا ورزبان وغیرہ ایسے عضو ہیں جن میں ہزار ہا تاثیریں پوشندہ ہیں۔

سے اور مسمر یزم کے تصرفات میں انہی اسباب عادیہ ہیں سے ہیں جہاں نظر ویا سے اور میں ہے ہیں جہاں نظر ویا سے اور میں سے ہیں جہاں نظر ویا کی قوت سے بڑے انقلابات معلوم ہونے لگتے ہیں۔ان ہیں میں کوئی ابینی ذاتی تا نیر نہیں ہوتی بلکہ یہ سب اسباب اللہ تعالیے کی قدرت مطلقہ اور مشیت کاملہ کے تا نیر نہیں ہوتی بلکہ یہ سب اسباب اللہ تعالیے کی قدرت مطلقہ اور مشیت کاملہ سے

تا بع ہیں ، نقد پر خداوندی کے مقابلہ میں نہ کوئی تدبیر مفید ہوسکتی ہے نہ کوئی مُضر، اسلئے عدیث کا بدارت و کہ نظر کا لگ جانا ایک حقیقت ہے ۔ اسی معنی میں استنعمال کیا گیا ہے اس کا یمطلب ہرگز نہیں کہ ہر بدنظری کا انز فوری ہوجا تا ہے ۔ جبیبا کہ بہم می ضروری نہیں کہ ہر تدبیر کا میاب ہوجائے۔

تفسيرو لَقَلُ هُمَّتُ بِهِ وَهُمَّ بِهَا لِمُنْ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

کرعزیزمصر کی بیوی نے گھرکے دروازے بندکرے اِن کو گناہ کی طرف بُلانے کی کوشن کی اور اپنی طرف برانے کے کوشن کی اور اپنی طرف راغب کرنے کے لئے سارے اسباب جمع کر دیئے تھے گئر اللّٰہ تعالیٰ نے مین اس وقت اپنی حجت وہر ہان حضرت یوسف علیہ استلام کے سامنے کر دی جس کی وجہ سے وہ زلیغا۔ سے بیچھیا چھڑا کر بھاگ نمکے اور گھرسے یا ہر ہو گئے۔ اس نازک موقعہ پر قرآن مکیم نے گرخطر صورتِ حال کو اس جملہ سے اداکیا ہے:۔
موقعہ پر قرآن مکیم نے گرخطر صورتِ حال کو اس جملہ سے اداکیا ہے:۔
و لَفُنْ کُ ھَنَّتْ بِہ وَھَتَمْ بِھَا (سورہ یوسٹ آیت میں)

اور البته عورت نے فکر کیا اُس کا اور اُس نے فکر کیا عورت کا۔

اس آیت میں لفظ تھم ہے جمعنی خیال وفکر اور ارا دہ کے ہیں زلیجا اور حضرت یوسف علیہ استلام دونوں کی طرف منسوب کیا گیا ہے۔ اس آیت کے بعد والی آیت میں اسس تخصمکٹ کا اختیام اس طرح منقل کیا گیا ہے کہ عورت سے اصرار سے سنجات یانے کیلئے حضرت یوسف علیہ است لام دوڑ ہے اور دروازے سے باہر بہو گئے۔

اس حقیقت کے بعٰدیہ بات واضح ہوجاتی ہے کہ حضرت یوسف علیہ است لام گناہ توکیا کرتے ارا دہ بھی نہیں کیا بلکہ ارا دیسے خلاف عمل کیا اور باہر نکل آئے۔ اس سبیاق کلام کوپیشی نظر دکھ کر' تھتم'' والی آیت کا ترجمہ کیا جائے توسوائے اسکے اور کچھ نہیں ہر رکتا کہ

آور اُس عورت نے اُن کا دیورا) ارا دہ کر لیا اور (قریب تھاکہ) وہ بھی اُس کا ارا دہ کرتے اگر اپنے رب کی دلیل کو اُمھوں نے نہ دیکھا ہوتا." مایہ ترجمہ سوگا :۔۔

اُور اُس بورت نے اُن کا ادادہ کیا اور دائسے شدیدامرار ہر) یوسٹ کے دول میں اُس کا خیال آتا اگر اپنے رب کی دلیل کو اُمفول نے نہ دیکھا ہوتا ۔"

اس تشریج نے واضح ہواکہ زلیخا کا ہم اور تھا اور حضرت یوسف علیہ استلام کا ہم ہم اور تھا اور حضرت یوسف علیہ الت لام کو جو خیال بیدا ہوا وہ گناہ کا خیال نہ تھا، عربی زبان بیں لفظ ہم تو تومعنی کے لئے بولا جا تاہے۔ ایک سی کام کا قصد وارا وہ کرلینا، دوسرے معض ول بیں خیال و وسوسہ پیدا ہونا۔ بیہی صورت گناہ کی ہے۔ دوسری صورت گناہ کی ہیں بیدا ہونا۔ بیہی صورت گناہ کی ہیں جیسے موسم گرما کے روزون بیں مھنڈے پانی کی طرف بیمی میلان اور خیال آجاتا ہے۔ حالان کہ روزے بیں پینے کا ارادہ قطعاً نہیں ہوتا۔ اس قسم کا خیال نہ انسان کے اختیار بیس ہوتا۔ اس بیرکوئی موافذہ ہے اور نہ کوئی گناہ ہے۔ حضرت یوسف علیہ الت لام کا ہم تا اور نہ کوئی گناہ ہے۔ حضرت یوسف علیہ الت لام کا ہم تا

صحیح بخاری کی ایک حدیث میں ہے کہ نبی کریم ملی التُرعِلیہ و کم نے فرمایا:۔ "التُرتعالے نے میری امت سے لئے گناہ سے وسوسے اور خیال کو معاف کر دیاہے جبکہ وہ اسپرعمل نہ کرے ۔ د قرطبی)

امام قرطبی نے اپنی تفسیر میں لفظ همتم کا دونوں معنوں میں استعمال عرب کے محاور ا اور اشعاری شہاد توں سے تابت کیا ہے۔ نیز اسی آیت میں بھی خود بہ فرق اسٹ ارق موجود ہے۔ اگر دونوں کا همتم ایک طرح کا ہوتا تو اس جگہ علیحدہ علیحدہ بیان کرنے کے بجائے پیجا اس طرح بیان ہوتا و کفت کہ همتا داور دونوں نے ارا دہ کیا) اس تعبیر کوچھوڑ کر الگ الگ و کفت همت به و همتم به کا بیان کیا گیا جس سے معلوم ہوتا ہے کہ دونوں کا همتم (ارا دہ) مجدا مجدا محدا مقا۔

اس تفسیری مزید تأئیدیہ ہی ہے کہ زلیغا کے ھئٹم کو دلقد، لام اور قَدکے ساتھ ظاہر کیا گیا جو تاکید کلام کے لئے آتا ہے جومعنی میں تاکید اور خینگی پیدا کر تاہیے ۔ اور ضرت یوسف علیہ الت لام کے ھئٹم میں یہ تاکید نہیں ہے ۔معلوم مہوا کہ حضرت بوسف علیالسّلام کا ھئٹم ویبانہیں نیفا جبیباکہ زلیخا کا ھئٹم تھا۔

: خلاصہ کلام یک حضرت بوسف علبہ التلام سے ول میں جو خیال اِنکر سیدا ہوا و محض غیر اختیاری وسوسہ سے درجے ہیں تھاجو فطعاً سی انہیں ہے بھیراس وسوسہ سے خلاف حضرت یوسف علیہ اتلام کاعمل کرنا الٹرکے ٹز دیک ایجے در ہے کی بندی کا باعث ہوا.

ہمدی ہو ہوت ہوں۔ ایک اور تنفسیر مجبی بیان کی گئی ہے جو قرآن کے اسلوب و بیان کے بہت قریب ہے ، پوری آبیت اس طرح ہے :-قریب ہے ، پوری آبیت اس طرح ہے :-

وَلَقَلُ هَمَّتُ بِم وَهَمَّ بِهَا لَوُ لَا أَنْ مَا الْبُرُهَاتَ

برت تبر

ترحمه اس طرح بوگا:-

''اور البتہ اُس عورت نے یوسٹ کا ارادہ کیا اور بوسٹ بھی عورت کا ارا دہ کرتے اگر اپنے پرور دگار کے بُر ہان کو نہ دیکھے ہوتے'' مطلب یہ ہواکہ حضرت یوسف علیہ است لام موقعی خیال پیدا ہوجا یا اگرالٹنری حجت

و بُرہان کو نہ دیکھتے لیکن بُرہانِ رب کو و لیکھنے کی وجہ سے وہ اس تھنٹم اور خیال سے تھی بچے سے کے۔ بیر ہات بالکل واضح ہے . البتۃ اس صورت ہیں کلام سے اندر حملوں کی تقدیم قاخیر ماننا پڑے گا۔ اور بیکوئی ناور ہات یامحا ور ہُ عرب سے خلاف بھی نہیں۔خو د قرآن تجیم ہیں

> استی نظیرموجود ہے۔ اِن کا دَّتُ لَتُبُدِی بِہ لَوْلَا اَنْ شَاعَا عَلَے قَلْبِهَا۔

د القصص آبیت <u>منا</u>)

ہذا ندکورہ عبارت قرآن میں عام قواعدِ عربی کے لحاظ سے کلام اس طرح ہوگا۔ کو کر آن میں اگر کھائ سے بہ لقد کھتے بھا۔

سُرِّ الريوسف مُربانِ رب نه دَيْجِهِ سِوتَ تُو البته اداده كرجاتے۔ دروح المعانی

چونکه بُر ہان رب دیچھ لیا تھا اس لیے ارا د ہ وخیال تک نہ کرسکے ۔ استفسیر کی روسے تھمّے دارا دے کی منفی ہوگی ۔

م دونوں تفسیروں کی بنیاد پر بہ جال پیشتر کہ حقیقت مل جاتی ہے کہ حضرت ہو^{نت} علیہ اتسلام بُرے ادا دے سے ڈور رہے ،اور الٹر کا کلام یہی ظاہر بھی کرنا چا ہتا ہے۔ بدایت کیراغ باداوّل

، ترآن کیم نے یہ واضح نہیں کیا کہ ٹر ہانِ رب "جوحضرت یوسف علیہ التالام کے سامنے آئی کیا چنر تھی ؟ سامنے آئی کیا چنر تھی ؟

حضرت عبدالتّٰر بن عباسٌ ، امام مجابدٌ ، سعید بن جبیرٌ ، محد بن سیرینٌ ، امام سن بھریؒ نے فرایا کہ اللّٰہ تعالیٰ نے بطور مجز ہ اس خلوت گاہ بیں حضرت بعقوب علیہ السّلام کی صورت اس طرح سامنے کر دی کہ وہ اپنی انگلی وانتوں سے دبائے تھڑسے ہیں اور بیش مفسرین نے فربایا کوعزیز مصر کی صورت اُن کے سامنے کر دی گئی ۔ اور بعض دیجرنے یہ بیان کیا ہے کہ حضرت یوسف علیہ السّلام کی نظرا چا تک چھت کی طرف اُنھی تو یہ آیت لکھی نظراتیٰ :۔۔

لَا تَقْدُ رَبُوا الْمِذَنَّ آيَانَّ مَا كَانَ فَاحِشَهُ قَسَمَاءُ سَبِيلًا. "يعنى زناكے پاس نه مِا وَكيونكه وه برش بے حياتی كا كام ہے

اورنهایت مرا راسته سے "

اوربعض حضرات نے یہ نکھاہے کہ حضرت یوسف علیہ است لام کی نبوت ورسالت خو د مربان رب بھی ۔ مربان رب بھی ۔

رہاں رب ہے۔
امام تفسیر ابن جریز نے اِن تمام اقوال کونقل کرنے کے بعد جو بات تحریر
فرانی ہے وہ اہل تحقیق کی نرگا ہوں یں بندیدہ نظروں سے دکھی گئی ہے۔
تک اکتفاکر نا چا ہئے، بعنی یہ دخفرت یوسف علیہ التلام نے کوئی
ایسی چیز دکھی جس ہے دل کا وسوسہ جاتا رہا۔ اس چیز کی تعیین میں وہ
سب احتمال ہو سکتے ہیں جومفسرین کرام نے ذکر کئے ہیں لیکن قطعی
طور پرکسی ایک چیز کو تعیین نہیں کیا جاسکتا۔ دابن کثیری

طور پرسی ایک چیز کوستان ہیں گیاجا سکتا۔ ۱۲ ان سیر ایک سیری پرسٹ کا مصرت انبیار قرآن وسنت سے ثابت ہونے سے علا وہ عقلاً بھی اس کئے ضرور سے کہ اگر انبیار کرام سے گنا ہ سرز دہوجانے کا امکان داحتمال دہے قوان کے لائے ہوئے دین اور وحی پر اعتماد کا کوئی راستہ نہیں رہتا اور ان کی بعثت اور ان پر کتاب نازل کرنے کا کوئی فائدہ باقی نہیں رہتا۔ اس کئے الشرتعالے نے اپنے ہر پینمبر کو ہرگنا ہ سے معصوم رکھا ہے۔

ہدایت *کے جیراغ* جلدا وّل

قرآن کیم نے انبیا علیم استلام گوخلصین 'کے عنوان سے تعبیر کیاہے۔ مخلص المفتح لام کے نتخب کے معنی بیں آ پاسے بعنی الٹر نئالے اپنے کا رِ رسالت اور وحی اور اصلاح خلق کے لئے جن افراد کو ابنی جانب سے انتخاب فریا تا ہے و مخلصین کہلاتے ہیں بحضرت بوسف علیہ استلام کے بارے ہیں یہ ہی لفظ استعال کیا گیاہے۔

إنَّمَا مِنُ عِبَادِ مَا الْمُخْلَصِينَ. (يوسف آيت عند) وه مهادك نتخب بندوب من ايك من .

ایک عبرت است دون حضرت یوست علیه است الام جیل ہیں محبوس تھے جیل کا اظہار کیا کہ ہمیں آپ سے بہت محبت وعقبدنہ کا اظہار کیا کہ ہمیں آپ سے بہت محبت ہے۔

حضرت یوست علیہ است الام نے فرمایا :۔

محبرت عرب میں نے مجھ سے محبت کی توجھ پر است ہی تاب کی توجھ پر آفت ہی آئی ، بچین ہیں بیری بھوٹی کومھ سے محبت می اسکے نتیجے میں مجھ پر آفت ہی آئی ، بچین ہیں میرمیرے والدنے مجھ سے محبت کی تو بھا بیوں کے باحقوں کنویں ہیں گرا، بھرمیرے والدنے مجھ سے محبت کی تو بھا بیوں کے باحقوں کنویں ہیں گرا، بھر غلامی اور جلا وطنی ہیں مبتال ہوا، اب عزیز مصر

ایک فصیحت اعالم و مقتداکو جہاں اپ عمل وکر دارکی حفاظت فروری میں میں میں میں فکر ہونی چاہئے کہ اس کی طرب سے لوگوں ہیں برگمانی سراسر غلط اور ہے جا ہی کیوں نہ ہو، اگرچ یہ برگمانی سراسر غلط اور ہے جا ہی کیوں نہ ہو، الیبی صورت سے بھی بچنے کی تد بیرکرنی چاہئے۔ بدگمانی فراہ تھی جہالت یا کم فہمی ہی کے سبب سے ہو بہر حال ان کی دعوت و تبلیغ کے کام میں خلل انداز ہوتی ہے۔ بھر لوگوں میں ان کی بات کا وزن نہیں دہتا " (قرطی)

کی بیوی نے محبہ سے محبت کی تو اس جیل میں '' دابن کثیر'مظہری)

نبی کریم صلی النّرعلیبه ولم کا ارشاد ہے کہ تہمت سے مواقع سے بھی بچو، بعنی ایسے حالات اور مواقع سے بھی اپنے آپ کو بچایا جائے جہاں تھسی کو

تہمت لگانے کا موقعہ ہا مقرآ کے۔

خودنبی کریم شال الترعلیہ ولم نے جو تمام عیوب اور گنا ہوں سے معصوم ہیں اپنے لئے بھی اس احتیاط کو ملحوظ رکھا ہے ایک مرتبہ از واج مطہرات ہیں سے ایک پی آپ کے بھی اس احتیاط کو ملحوظ رکھا ہے ایک مرتبہ از واج مطہرات ہیں سے آیا ہی بی آپ کے ساتھ کسی تھی مگر دنے گئے تو آپ کے ساتھ کسی تھی مسلم کے اور کئے تو آپ نے انحصی طلب کیا اور فرمایا بہ میری بیوسی دائم ساتھ ہیں ۔ وہ سہم کتے اور عرض کیا یارسول التر کیا ہیں آ میں گرکھانی کرسکتا ہوں ؟

قَالَ ٱللَّهِ عُولِيْ مَرِيلِكَ فَسُقَلُتُ مَا بَأْلُ النِّسُونِ الَّذِي

قَطَّعُنَ أَيْدِ يَهُنَّ اللَّهِ أَرْآيت مَنْهِ)

'ُجب شاہی فرستاد ہ یوسف علیہ التلام کے پاس پہنچا **توکہا** اپنے آقا کے پاس والیں جا اور اُس سے پوچھ کہ اُن عور توں کا کیا واقعہ ہے جنھوں نے اپنے ہاتھ خو د کا شائے تھے بیرارب تو ان کے کمرو فریب سے خوب واقف ہے ''

مرا وست فرمایا ایسے رفیق سے بارے بین تمہاداکیا خیال ہے جس کا فرمایا ایسے رفیق سے بارے بین تمہاداکیا خیال ہے جس کا یہ حال ہوکہ آگرتم اُسکا اعزاز واکرام کرو، کھا نا کھلاؤ، کیڑا پہنا وُتووہ تمہیں بلا اور مصیبت میں ڈال دے ، اور آگر اسکی تو ہین کرو، جو کا نگار کھو تو وہ تمہادے ساتھ مجلائی کامعا لمدکرے ۔ ؟ صحابہ نے عرض کیا یارسول النہ اس سے زیادہ بُرا تو دنیا میں کوئی دوست نہیں ہوسکتا ۔ آپ نے ادشا و فرایا اُس ذات کی قسم جیکے دست قدرت میں میری جان ہے وہ تہارا اپائفس ہے جو تہادا اپائفس ہے۔ دقرطبی میں میری جان ہے جو تہادا اپائفس ہے۔ دقرطبی مضرت یوسف علیہ التلام نے نفس سے تعلق سے فرط یا :۔۔

مضرت یوسف علیہ التلام نے نفس کے تعلق سے فرط یا :۔۔

مقرت یوسف علیہ التلام نفسی آئی النّفس کے تعلق سے فرط یا دیا ہے۔

(آیت میده)

ائیں اینے مفس کی برأت نہیں کرتانفس تو بدی پراکسانے

والاہی ہے : ایت ندکورہ میں نفس انسانی کو آبارہ (بُرا ٹی پراکسانے والا) ظام رکیا گیا ہے ۔ سورہ قیآمہ میں اسی نفس انسانی کو کو امر (بُرا ٹی پر ملامت کرنے والا) کالقب

دیا کیا ہے۔ سورۂ فجرمیں اسی فس انسانی کو شطہ بڑتے کا طمینان والی روح اکا لقب دیجر

جنت کی بن ات و تی گئی ۔

مفس کی یہ بین تسمیں قرآن کیم نے بیان کی ہیں۔

توضیح اسی یہ ہے کہ ہر خفر انسان اپنی ذات ہیں آمّا آمّ اُلَّا اللّهُ وَ الرّبِ اللّهِ وَ اللّهِ اللّهِ وَ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

نصیب بروجائے وہ معی اللہ کی رحمت ہی کانتیجہ ہے۔

مرمعنی خاموشی استان کے خرت یوست علیہ ات لام سے واقعہ میں یہ بات انتہائی میرمعنی خاموشی استان کے داکہ طرت توان کے والد باجد حضرت یعقوب علیہ ات لام ان سے فراق میں روتے روتے نابنیا ہوگئے۔ دوسری جانب حضرت یوست علیہ ات لام چالیس سال کے طویل زمانے میں ایک مرتبہ بھی اپنی خیریت اورا طلاع کسی فرریعہ سے اُنفیس پہنچانے کی زحمت نہی جبکی عزیز مصرکے تھریس ہر طرح کی سہولت میں میں ، علاو ہ ازیں جیل کی آٹھ وس سالہ زندگی میں بھی ایسا نہ سوچا اور خاص طور پرجب مصرکا اقتدار با تھ آیا اس وقت توخود میل کر والدی ضدمت میں حاضری دیتے لئے آئے توان کو بھی اصل واقعہ کے اظہار کی نہیں جی اصل واقعہ کے اظہار کے بغیر فصت کردویا۔

یہ تمام حالات محسی عام انسان سے بھی تصور نہیں گئے جاسکتے ۔ جکہ السّر کے برگزیرہ رسول سے پیصورت کیسے برواشت ہوئی ہ

بر ریره رون سے پیر روپ پیسے بید و سعم کا جواب غالباً یہی ہے کہ النّد تعالیٰے نے اپنی اس طویل اور حیرت انگیز فاموشی کا جواب غالباً یہی ہے کہ النّد تعالیٰے نے اپنی حکمتِ فاص سے یخت حضرت یوسف علیہ السّلام کو اس سے اظہار سے روک دیا ہوگا اور یہی جواب حضرت بعقوب علیہ السّلام سے صبر کا ہے بتفسیر قرطبی ہیں اسکی یہ ہی وجب یہی جواب حضرت بعقوب علیہ السّلام سے صبر کا ہے بتفسیر قرطبی ہیں اسکی یہ ہی وجب

لکھی ہے۔ واکٹراعلم۔ الٹری پیمتوں کوخود وہی جانے۔انسان اِسکاکہاں اوراک کرسکتا ہے بہجی کوئی چیزکسی سے مجھ میں آجاتی ہے تو وہ اسکو بیان کر دیتائے ورنہ ہزار ہاامورا یہے ہیں جن کی چیزکسی سے مجھ میں آجاتی ہے تو وہ اسکو بیان کر دیتائے ورنہ ہزار ہاامورا یہے ہیں جن کی

مايوسس په هو."

جب النّرتعائے کوئی کام کرنا چاہتے ہیں تواس سے سب اسباب اسی طرح جمع کر دیتے ہیں کہ ایک چیزعدم سے وجو دہیں اور وجو دسے عدم ہیں آجاتی ہے ، النّد کے قدرت قاہرہ کی مہی حقیقت ہے ۔

وَمَا تَشَاءُونَ إِنَّ آنُ يَشَاءُ اللَّهُ مَ بُّ الْعَالَمِينَ.

انبیار ورس کی قوت اوراک سورهٔ یوسف آیت عظام ملاد کا ترجب میریجار پڑھئے :۔

اُورجب قا فلہ (مصرے) روانہ ہوا تو اُن سے باپ دیقو علیہالت لام) نے دا ہے شہر کنعان میں) کہا میں یوسف کی خوشہو محسوس کرر ہاہوں ، تم لوگ کہ ہیں یہ نہ کہنے لکو کہ میں بڑھا ہے میں سھیا سے رہا مہا میک میک میک کا ہوں ۔ انہ کہنے لکو کہ میں بڑھا ہے میں سھیا

گیا ہوں دکہ بہی باتیں کررہا ہوں) گھرکے لوگ بولے الٹرکی قسم آپ انھی تک اپنے اُسی پرا غلط خیال ہیں ہیں بھرجب خوشنخبری لانے والا آیا اُس نے یوسف علیہ است لام کا قسیص بعقوب علیہ استلام کے منھ برڈال

ویا بحابک اُن کی بینا می توف آئی ، تب کہا ہیں تم سے کہتا یہ بھت بیشک بیں اسٹر کی طرف سے وہ کچھ جانتا ہوں جو تم نہیں جانتے ''

اس سے انبیارعلیہم ابت لام کی غیرعمولی قوتوں کا اندازہ ہوتا ہے کہ انجمی فافلہ حضرت پوسف علیہ اب لام کانمیص کے کرمصر سے چلا ہے آدھ سینکٹروں میں سے فاصلے پر حضرت بعقوب علیہ استلام ابنے گھر میں اس کی مہک یا لیستے ہیں۔

انبیاعلیم است لام ویہ قریب الٹری بخشش وانعام کے طور ربعض اوقات دے دی جاتی ہیں اور الٹری بخشش وانعام کے طور ربعض اوقات دے دی جاتی ہیں اور الٹر تعلیے جب اور جس وقت چاہتا ہے ان قوتوں سے کام کرنے کاموقعہ فراہم کرنا ہے۔الیبی فوق البسٹر قویمی مخلوق کی واتی اور ابدی ہیں ہوئیں ۔حضرت یوسف علیہ التلام برسوں مصری موجود رہے اور تعجی حضرت بیقوب علیہ التلام کو اِن کی خوست بونہ آئی ، دُور نہ ہی تھر سے قریب ہی بھائیوں نے کنویں علیہ التلام کو اِن کی خوست بونہ آئی ، دُور نہ ہی تھر سے قریب ہی بھائیوں نے کنویں

ہمیں میں نے اس کا احساس تک نہ ہوا تبین دن تک مظلومانہ کنویں میں پڑے رہے مرحونی خبر نہ کے سکے۔ مرحونی خبر نہ کے سکے۔

" شهرمصر سے کنعان کا فاصلہ اُس زمانے میں آٹھ دن کی مسا

برمضاء دابن عباسط)

اور حضرت حسن بصری سے قول کے مطابق اسٹنی فرسخ تقریباً ڈھائی سومیل کا فاصلہ مخت ۔ جب الترکی مشیّت ومرضی ہو جاتی ہے بیکا یک قوتِ اوراک کی تیزی کا یہ عالم ہو گیا کہ انہی اُن کا تمسیص مصرسے چلاہے اور و ہاں اُن کی مہک آنی نشروع ہوگئی۔ اُن کا تمسیص مصرسے چلاہے اور و ہاں اُن کی مہک آنی نشروع ہوگئی۔ فیصر میں فیسٹرختان میں گی تیکوئی و لا یَخوی و

مشیخ سعدیؒ نے اس واقعہ کو اپنی رُ باعی میں اس طرح ا داکیا ہے:-

ایک خص نے حضرت بعقوب علیہ السلام ہو بچھا اے روشن دل بیرخرد مند آپ اپنی بیٹے یوسف کوا بخشہ کنعان بیں کیوں نہ و بچھا جبکہ ملک مصر کو انکے نسیص کی خوشبو پائی ؟ فرما یا ہمارا مال دنیا کے برق کی طرح ہے۔ محبھی اچا کک ظامر ہوجا تی ہے اور بھی بال غا

میح پُرسیدازان کم کرده فرزند کدایے روشن کم کرده فرزند چرادرجا و کنعانش نه دیدی زمصرش بوئے پیراین شنیدی گفتا مالِ ما برقِ جہانست دمے پیدا و دم دیگر نمانند

سجیرہ کی حقیق فی مسلم نے اعلیہ التلام اور برادران یو مسلم کی حقیق فی مسلم فی مسلم کے وار السلطنت پہنچے ہیں حضرت یوسف مسلم فیا اور اپنے والدین کو اسلطنت کے ساتھ عظیم ما نباپ کا استقبا سحیا اور اپنے والدین کو اسلطنت کے ساتھ عظیم ما نباپ کا استقبا سب یوسف علیہ التلام سے آگے بے اختیار سجدے ہیں گر پڑے۔ حضرت یوسف علیہ التلام نے کہا اے ابا جان! یہ تعبیر ہے میرے مشرب کی جو ہیں نے پہلے دیکھا تھا۔ (یوسف آیت سے اس خواب کی جو ہیں نے پہلے دیکھا تھا۔ (یوسف آیت سے اس آیت سے اس آیت ہے اس آیت سے اس آیت ہے اس آیت سے اس آئے ہے اس آیت ہے اس آیت سے اس آئے ہے اور اس کی جو ہیں نے پہلے دیکھا تھا۔ (یوسف آیت سے اس آئیت ہے اس آئیت ہے اس آئیت ہے اس آئیت ہے اس آئیت سے اس آئیت ہے اس آئیت ہے اس آئیت سے اس آئیت ہے اس آئیت ہے اس آئیت سے اس آئیت ہے اس آئیت ہے

بکال لیاہے اور چونکہ قرآن وحدیث ہیں سبجدہ صرف الٹدکے لئے بیان کیا گیا ہے اور تحسی مخلوق کے لئے نہیں تو اس ممانعت سے بچنے کے لئے انھوں نے سجدہ کو دوقسم میں تنقسیم کردیا :۔

سجدهٔ عبادت ،سجدهٔ تحبیت (معظیمی)

تنجدهٔ عبادت کوالنّه کے ساتھ فاص کر دیا کہ بیصرف النّه بی کے لئے کیا جاسکتا ہے اور اسکت ہے اور اسکتا ہے اور بیعبادت استجدهٔ تحتیت عام ہے بین کی تعظیم و تحریم سے لئے احترا ما سجدہ کیا جا سکتا ہے اور بیعبادت کے جذبہ سے فالی ہوتا ہے بحقیقت یہ ہے کہ تیقسیم ہی اپنی ذات میں غلط ہے کہونکہ ہر تشجدۂ عبادت دراصل انتہائی تعظیم ہی کا نام ہے۔ لہذا شجدۂ عبادت دراصل انتہائی تعظیم ہی کا نام ہے۔ لہذا ہر سجدہ تحقیق ہی غلط قرادیات ہے۔

ہر برہ ہوں ہے۔ ہورہ ہورے ہیں ہوں پر طبودہ کی ہے کہ تعظیم اور ہات ہیں ہورہ کو بہر طبودہ کی ہیں کہ آیت ہیں سبعدہ کو موجودہ اسلامی سبعدہ کا ہم معنی سمجھ لیا گیا ہے بعنی دونوں ہاتھ، گھٹنے، پیٹانی کا زہیں پر رکھ دینا حالانکہ سبعدہ کے حقیقی معنی محض حکنے اور خم ہوجانے کے ہیں۔ تذکرہ یوسف علیہ السّلام ہیں مجھائیوں کا سبحدہ ہیں کرجا نا اسی معنی ہیں ہے کہ وہ سب حضرت یوسف علیہ السّلام سمجے بلندم ہے بلندم ہے کودیچے کر مجھکنے والوں ہیں حضرت بعقوب علیہ السّلام میں اور ظاہر ہے کہ ایک جبلیل القدر پنجمبر ورسول کاغیر السّد کو سبعدہ کرنا کوئی معنی نہیں رکھتا ہوں کہ ایک جبلیل القدر پنجمبر ورسول کاغیر السّد کو سبعدہ کرنا کوئی معنی نہیں دکھتا ہوں گئی ہے۔ تران محمم میں کوسبعدہ کرنا کوئی معنی نہیں دکھتا ہوں السّد واحد کے لئے خاص ہے۔ قرآن محمم میں جہاں جہاں سبعدہ کا ذکر آیا ہے وہ صرف السّدواحد کے لئے خاص ہے۔ بنیادی بات پہنے جہاں جہاں سبعدہ کا ذکر آیا ہے وہ صرف السّدواحد کے لئے خاص ہے۔ بنیادی بات پہنے کہ سبحدہ عبادت سے اور عبادت کسی بھی آسمانی ملت بیں غیر السّد کے لئے شرک قرار دی گئی کے سبحدہ عبادت سے اور عبادت کسی بھی آسمانی ملت بیں غیر السّد کے لئے شرک قرار دی گئی کے سبحدہ عبادت سے اور عبادت کسی بھی آسمانی ملت بیں غیر السّد کے لئے شرک قرار دی گئی

ے توغیرالٹرکے لئے سجدہ کرنے کا کوئی جواز ہی پیدانہیں ہوتا۔ لانشہ کوئا لِلشّنسِ وَلاَ لِلْقَائِدِ وَاشْجُدُو اللّٰهِ الّذِي

خَلَفَهُ فَى إِنْ كُنْتُنْفُ إِيّا لَا نَعْبُدُونَ وَلَمْ سَجِده آيت مِنَّ) سُجده نه سورج كوكرونه جاندكو، اور اس التُركوكروجس نے إِن

سب چیزوں کو پیدا کیا ہے جبکہ تم اسی کی عبادت کرتے ہو۔" سورج وچاند کو پوجنے والے بھی زبان سے یہی کہتے ہیں کہ ہمآری غرض ان چیزوں کی ہدایت کے چراہ غ

پرستش سے النگر ہی کی پرستش ہے گر الٹرتعالے نے صاف صاف ہلادیاہے کہ یہ چیزی پرستش سے لائق نہیں ہیں عبادت کاستحق صرف ایک الٹر ہے کسی جمی غیر کی عبادت بستہ نیس زیال

و پرستش کرناالنٹروا مدسے بغاوت کرنے کامتراد ن ہے ۔ ''مدین ضحیعین میں سے کہ حضرت معا ذرہ حب ملک شام گئے

تُصُدین میں ہے کہ حضرت معا ذرہ جب ملک شام گئے و ہاں دیجھا کہ نصاری اپنے بزرگوں کو سجدہ کرتے ہیں تو واکیں آگر نبی کریم میں اللہ علیہ ولم کے سامنے سجدہ کرنے گئے آپ نے منع فرما یا اللہ علیہ ولم کے سامنے سجدہ کرنے گئے آپ نے منع فرما یا اور ارسٹ و فرما یا کہ آگر ہیں کو سجدہ کرنا جا ترسمجھتا توعورت کو گہتا

کہ اپنے شوہرکوسجدہ کیا کرے' دیخاری ولم) اس کا اپنے شوہرکوسجدہ کیا کرے' دیخاری ولم)

اسی طرح حصرت سلمان فارسی نے اپنی قوم کی عادت کے مطابق نبی کریم ملی الترعلیہ ولم کوسجد وکرنا چا ہاتو آگ نے فرما یا :۔

لَّا تَسْمُ حُدُ لِيُ يَا سَلْمَانُ وَاسْجُدُ لِلْفَحِ الَّذِي لَا يَمُوْتُ -"اے سلمانؓ مجھے سجدہ نہ کر بلکہ سجدہ صرف اسی ذات کو کرج

می وقیوم ہے جسکوسمبی فنانہیں۔ دابن کثیری نمور سے جسکوسمبی فنانہیں۔ دابن کثیری نمور سے کا کا سے مہاری نہ میں مقطع

جن اہل علم نے بھی یہ جولگھا ہے کہ بہلی شریعتوں بین عظیمی سجدہ جا کر تھا اسکن اس شریعت بیں یہ بھی ممنوع ہوگیا کیہ غالباً اس کئے لکھا ہے کہ چونکہ یوسف علیہ السلام کے بھائیو^ں نے حضرت یوسف علیہ الت لام کوسجدہ کیا تھا یا فرست توں نے حضرت آدم علیہ السلام کوسی کی اسر

کوسجدہ کیاہے۔ مالائکہ بہگونی جواب نہیں کیونکہ میہاں دعوٰی اور دلیل ایک ہی ہیں۔ دعویٰ پہ ہے کہ میہلی شریعتوں میں سجد تعظیمی جائز تھا اور دلیل بھی یہی ہے کہ برا درانِ پوسف نتیم فل

یں اگر میسی دلیل سے نابت ہوجائے کہ مہلی شریعیتوں میں سجد تعظیمی جائز تھا *** میں میں اس سرجوں کیا ہے۔

تو پھر شوت ہیں برا دران یوسف کاعمل دلیل ہوسکتا تھا۔ نہ جانے حس بنیا دیریہ لکھ دیا گیا کہ مہلی نشریعتوں ہی تعظیمی سجدہ جائزتھا جکہ قرآن وحدیث ہیں سجدہ کوعبادت قرار دیا گیا ہے اور الشر کے لئے خاص کیا گیاہے۔ دراصل یہ ساری غلط فہمیاں میساکہ لکھا گیاہے آبت ہیں سجدہ کوموجودہ اسلا سجده کاہم معنی سمجھ لیا گیاہے مالا تکہ ایسانہیں ہے۔

قديم تهذيب اورجابل دوربين يدعام طريقه تقااورآج تهى بعض ملكون بلاسكا رواج ہے کہسی کاشکریہ ا داکرنے کے لئے پاکسی کا استقبال کرنے کے لئے یامحض سلام كرنے كے لئے بينے پر ہاتھ ركھ كركسى مدتك آگے كى طرف حجكتے ہيں اسى جھكا وُ کے لئے عُربی ہیں سجودا ور انگریزی ہیں دسہ 8) سے الفاظ استعال کئے جاتے ہیں۔ بأنبل بین اسی بکثرت مثالین ملتی ہیں۔ قدیمے زیانے میں پیطریقہ آداب تہذیب میں سٹ مل تھا۔ ایک مقام پر ہائیل میں یہ ذکر ملتا ہے کہ بابل کی اسیری کے زِیا نے بیں جب اخسویرس بادرت اہ نے یا مان کو اپنا امیرالامرائبنا یا اور حکم دیا کہ سب لوگ سجدہ ً تنعظیمی بجالا یا کریں تومرو کی نے جو بنی اسرائٹیل سے اولیارالٹریس سے مقے یہ مکم ماننے سے انکار کر دیا ، تلمود میں اس واقعہ کی شرح کرتے ہوئے تیفصیل دی گئی ہے :-"بادشاہ کے ملازمین نے کہا آخرتو ما مان کوسجدہ کرنے سے کبوں انکارکرتا ہے ؟ ہم بھی آ دمی ہیں مگر شاہی حکم کی تعمیل کرتے ہیں ۔اُس نے جواب دیا تم لوگ نا دان ہو! کیا ایک فاٹی اُنسان جوکل خاک ہیں ملجاً واللہے اس قابل ہوسکتاہے کہ اسکی بڑائی مانی جائے ہو کیا ہیں اُسکو سجدہ کروں جوایک عورت سے پیٹ سے پیدا ہو! کل بچے تھا آج جوان ج کل بوڑھاہوگا اور پرسوں مرجائے گا ؛ نہیں ہیں تواس ازلی وابدی فدا ہی کے آگے جھکوں گاجوحی وقیوم ہے جوکائنات کا خالق اور ماکم ہے،

میں توبس اُسی کی تعظیم سجالاؤں گا اور کسی کی نہیں '' یہ تقریر نزول قرآن سے تقریباً ایک ہزار برسس پہلے ایک اسرائیلی مومن کی زبان سے ادا ہوئی ہے اور اسمیں کوئی سٹ ئیبنہیں کہ غیرالٹر کوکسی بھی معنی میں سجدہ کرنا جا ئز ہو۔ برا دران یوسف کا سجدہ کرنا یا فرشتوں کا حضرت آ دِم علیہ است لام کوسجدہ کرنا،

بر اور ان چرمی او جدہ بر اور ان چرمی اسلامی اصطلاح میں سجدہ کہا جاتا ہے تو بھروہ اللّٰہ اگر اس سجدہ سے مراد و ہمل ہو جسے اسلامی اصطلاح میں سجدہ کہا جاتا ہے تو بھروہ اللّٰہ کی جیبی ہوئی محسی شریعیت میں مجھی کسی غیرالیٹر کے لئے جائز نہیں رہاہے۔

قدیم کتب تفاسیراسپرٹ بر ہیں کہ قرآن تکیم میں جہاں بھی غیرالٹر کیلئے سجدہ کالفظ آباہے اُس سے مراد صرف مجھک جانا ہے یاز مین بوس ہونا ، بے انتہا تواضع کرنا مراد م ایت کے چراغ ر

فرضتے اللہ سے صکم پر آدم علیہ الت لام ہے آ گے تجھک گئے۔ برا در انِ پوسف اور ما نباپ حضرت پوسف علیہ الت لام می عظمت وشان دیچھ کرمجھک گئے۔

رتنف يركبير، معالم التزيل، جلالين، روح المعاني ، كثاف وغيره)

یہاں اس فرق کو تھی ملحوظ رکھنا ضروری ہے کہ سجدہ تعظیمی کارواج اگر قدیم تہذیبول اس مرائج وسعرون تھا بادش ہوں کے درباریں عام طور پر کیا جا یا تھا یا بلندواؤی شخصیات سے لئے جمی بطور تعظیم اواکیا جا تا ہو جمعن ہے ایسا گزشتہ او دار بین رہا ہو ہکن تحسی آسمانی سٹریعت میں یا ببیوں سے قائم کر دہ نظام میں غیرالٹر کے لئے سجدہ تعظیم کا نبوت اور اس کارواج قرآن وحدیث کی تصریح کا محتاج ہے جو با وجود تحقیق و تلاش کے ہمیں ماس نہ ہوں کا۔

ہونا تھا۔ علا وہ ازیں اگر برا درانِ پوسٹ نے اپنے بھائی کو اسلامی سجدہ ہی کیا ہو تب بھی یہ اس بات کا نبوت نہیں بنتا کرغیرالنٹر کے لئے سجدہ جانز ہے ممکن ہے کہ یہ اپنے رواج و تہذیب کی بنار پر ایسا کئے ہوں۔ قرآن مکیم نےصرف واقعیم قل کیاہے کوئی ترغیب یا تعرایف نہیں کی ہے۔

ی رہے ہیں ہے۔ علاوہ ازیں بکٹرن مقامات پر النٹرنے سجدہ کوصرف اپنی ذات سے لئے خاص کیا ہے۔ بہرجال قدیم کتب تفسیر کی مراجعت سے بعد اس سئلہ میں جوحقیقت ظاہر ہوئی وہ درج کردی تھی ہے۔ والٹراعلم وعلمۂ اتم۔

ایک گرمی حقیقت قرآن میمی حقیقت قرآن میمی ایک اور گهری حقیقت میمی انسان کے ذہان میں سراتا ہے ۔ وہ یہ کدالٹر تعالیے جو کام کرنا چا ہتا ہے وہ مہرصورت پورا ہو کر دہتا ہے ۔ آن اپنی مخلف تد ہر وں اور منصوبوں ہے اس تو روکنے یا بد نئے برسم می کا میا بنہیں ہوسکا۔ بسااو قات انسان ایک کام اپنے منصوبے کی فاطر کرتا ہے اور سمجھتا ہے کہ ہیں نے اپنامنصوبہ پوراکرلیاہے گزتیجہ بیں یہ ثابت ہوتاہے کرالٹرنے اُسی کے ہاتھوں سے وہ کام لے بیا جو اُسے اِسے منصوبے کے خلاف اور الٹرکی مرضی و منشار کے عین مطابق تھا۔ حضرت یوسف علیہ التلام کے بھائی جب اِنضیں کنویں ہیں بھینک رہے متھے تو اُن کا گمان تھا کہ ہم نے اپنی را ہ کا کانٹا ہمیشہ کے لئے دور کر دیا ، مگر فی الواقع انضوں نے حضرت یوسف علیہ الت الم کو اُس بام عروج کی پہلی سیڑھی پر اپنے ہا تھوں لا کھڑاکیا جس حضرت یوسف علیہ الت الم کو اُس بام عروج کی پہلی سیڑھی پر اپنے ہا تھوں لا کھڑاکیا جس پر الٹرکو بہنچا یا منظور تھا بحزیز مصر کی بیوی نے یوسف علیہ الت الم کو قید خانے ہیں ڈاکٹر اپنے نزدیک تو اُن سے انتقام لے لیا مگر فی الواقع اُس نے اِن کے لئے تخت سلطنت کی بہنچنے کا راستہ فراہم کیا اور اپنی اس تدبیرے خود اپنے لئے اسکے سواکچ نہ کیا اُک وقت آنے پر فر از وائے سلطنت کی میٹر مندگی اُس فیان پڑی۔

یعض دو چارستنی واقعات نہیں ہیں بلکہ تاریخ ایسے بے شمار مثالوں نے محری پڑی ہے جو اس گہری حقیقت کی گواہی دیتی ہیں کہ الشرتعالے جے اُنھانا چاہتا ہے ساری دنیا ملکر اُسکو گر انہیں کئی، بلکہ وُنیاجس تدبیر کو اسکے گرانے کی نہایت کارگر اور بھرنے اور اُنجر نے اور بھرنے اس تدبیر میں سے اُسکے اُنھے اور اُنجر نے اور اُن لوگوں کے حصے ہیں رُسوائی کے سوائی نہیں آیا جمعوں نے اُسے گرانا چاہا تھا اور اُسی طرح اسکے بڑکس الٹر جے گرانا چاہا تا ہے اُسے جمعوں نے اُسے گرانا چاہا تھا اور اسی طرح اسکے بڑکس الٹر جے گرانا چاہا تا ہے اُسے کوئی تدبیریں اُنٹی پڑی ہیں اور ایسی کرئے والوں کو منھ کی کھانی پڑی ہے۔
تدبیریں کرنے والوں کو منھ کی کھانی پڑی ہے۔

وَمُكُرُوا وَمُكُرُ اللهُ وَأُللُهُ اللهُ كَالِمُ اللَّهُ الْمَاكِونِينَ.

اس سورہ کے نزول پر دو ڈیڑھ سال ہی گزرے ہوں سے کہ اہل قریش

رایت کے چراغ .

برا دران پوسف کی طرح نبی کریم سلی الته علیه ولم کے قتل کی سازش کی اور آپ کو مجمم الہی منح مگرمہ سے نکلنا پڑا ۔ بھر ان کی تو قعات کے خلاف جیسا کہ وہ سمجھ رہے بھے کہ انھوں نے آپ کو منح مکرمہ سے نکال کر گویا آپ کے لائے بہوئے دین کا ضائمہ کر دیا لیکن آپ کو اس جلا وطنی میں ویسا ہی عروج واقت دارنصیب بہوا جیسا کہ حضرت پوسف علیہ استلام کہ سموا بھتا ہے۔

ہو ہوا تھا۔ میپر نوسف علیہ است ام کے سامنے اُن کے بھائیوں کی آخری حضوری کے موقع پر بہنے میں یوسف علیہ است لام کے سامنے اُن کے بھائیوں کی آخری حضوری کے موقع پر بہنے آیا تھا،جہاں برا دران یوسف انتہائی عجز و در ماندگی کی حالت ہیں اُن کے آگے ہاتھ بھیلا محصورے منتے اور محمد رہے منتے کہ :۔

تَصَدَّقَ عَلَيْنَا ٓ إِنَّ اللَّهَ يَجُنِى الْمُتَصَدِّقِينَ -

(آیت عصر)

توحضرت یوسف علیه استلام نے انتقام کی قدرت رکھنے کے با وجود انہیں معاف کر دیا اور فرمایا :-لا تنٹویٹ علیکٹر الیو کھرکیٹیٹو کاللہ کیکٹر کھٹے کھوکارٹی کے

> النزّاجیدین در آیت میاہ) ور آج تم پرکونی گرفت نہیں الترتمہیں معان کرے وہ رم کرنے والوں سے بڑھ کررم کرنے والا ہے '' مراں در نبی کریم مسلی اللہ علیہ ولم سے رامنے شکست خور دہ قریش س

اسی طرح یہاں جب نبی کر اسلی النہ علیہ ولم سے سامنے شکست خور وہ قریش سرگوں کھڑی ہوئے بتھے اور آنحضور میلی النہ علیہ ولم اِن سے ایک ایک ظلم کا بدلہ لینے کے موقف بین کھ آپ نے دریافت کیا تمہار اکیا خیال ہے کہ بیں تمہارے سا تھ کیا معاملہ کروں گا ؟ انمفوں نے عرض کیا :۔

آخُ كُو يُعُرُّ وَإِبْنُ أَجْ كُونِيمٍ.

"آپِ ایک عالی ظرف تھائی ہیں اور ایک عالی ظرف بھائی کے

بیٹے ہیں '' اس پر آپ نے فرمایا :۔ فَايِّنْ أَقُولُ لَكُمْ كَمَا قَالَ يُوْسُفُ لِإِخْوَتِهِ لَا تَاثِرُ بِيْبَ عَلَيْكُمُ الْبَيْوُهَ إِذْ هَبُو ا فَأَنْتُهُ الطَّلَقَاءِ -"مِينَهِ مِن وَمِي جواب ويتا ہوں جو لوسف عليہ ال

"مین تمہیں وہی جواب دیتا ہوں جو یوسف علیہ التلام نے اپنے بھاً یو کو دیا تھا کہ آج تم برکوئی گرفت نہیں، جاؤتمہیں معاف تھیا۔" کَفَدُنْ کَانَ فِے 'یُوسُفَ وَلاحُونِۃِ آیا گئے لِلسَّا یَیْلِیْنَ۔

"یوسف علیہ التلام اور اُن کے بھائیوں کے قصتے میں اِن پوچھنے والوں کے لئے بڑی نشانیاں ہیں '' موروں کے دیم میں دریں میں دریں میں کا دیا ہے۔

سُبُعًانَ اللهِ وَيِحَدُيهِ سُبُعًانَ اللهِ الْعَظِيمِ.

تذكرة السيعين عليه السام المعتبد الديكة

تعارف استهوراسلای مؤرخ محد بن اسحاق کے بیان کے مطابق حضرت ایرائیم خلیل اللّٰد کے مطابق حضرت ایرائیم خلیل اللّٰد کے صاحبزادے مَدین کی اولا دہیں سے ہیں اور حضرت لوط علیہ استلام سے مبی رشتہ قرابت رکھتے ہیں ۔ جس سی میں ان کا قیام تھا اُس کو بھی شہر مُدین کہا جا یا تھا۔ گویا مدین ایک قوم کا بھی نام ہے اور ایک شہر کا بھی ۔ پیشہر آج بھی شرق اُردن کی بندرگا ہ معان کے قریب موجود ہے۔

حریب راسیم حضرت شعیب علیہ ات لام کو التّر نعالے نے وعظ ونصیحت کامعجزا نہ انداز عطاکیا تھا۔اسی حُسنِ خطابت کی وجہ سے اتنصیں نبی کریم صلی التّرعِلیہ ولم نے خطیب لانبیا کے لقب سے یاد فرمایا ہے۔

عفرت شعیب علیه استلام کا اسم گرامی قرآن تکیم میں دس جگه آیا ہے۔ سور گاعن آیات ۵۸،۸۸،۹۰،۹۰

سورگاهود آیات ۱۹۱۱۸۷۱۹۱۹

سورة شعراء آيت ١٤٤

سورة عنكبو آيت ٣٩

فوم شعب احضرت شعیب علیہ است لام کی بعثت کدین میں ہوئی ۔ مدین کسی مقام کو مشعب است کا مام نہیں ہے علیہ است کا مام نہیں ہے بلکہ قبیلہ کا نام ہے ۔ یہ قبیلہ حضرت ابراہیم علیہ استلام سے بیٹے کدین کی نسل سے مقاجو اُن کی تبیسری بیوی قطور ہ سے بیدا ہوا تھا اسکے مضرت

ا براہیم علیہ الت لام کا یہ خاندان بنی قطورا کہلا تاہے۔حضرت ابراہیم علیہ الت لام کی تین بیویاں تقییں سار 'و مناجر' و ، قطور اُر ۔

حصرت بآرہ کے بیٹے حضرت اسحاق علیہ التسلام سخے ان سے دَتُو بیٹے سخے حضرت یعقوب علیہ التسلام جو بنی اسرائیل سے باپ قرار پائے ، دوسرے عیسو جنکا

لقب اروم تقاء

ستدہ ہاجرہ کے بطن سے صرف ایک بیٹا ہواجن کا نام حضرت آممعیل علالیہ آلم ہے بستیدہ قطور ایٹر کے بطن سے کئی ایک بچتے ہوئے جن بیں ایک کا نام مدین تھا۔عرب ہی بیں ان سے باپ نے اُن کو بسایا تھا۔

انهی نمینوں ازواج سے حسب ذیل شهور زمانهٔ قومیں پیدا ہوئیں۔ ۱۔ بنو قطور اسمیں سے اہل مدین اور اہل و دان کر اصحاب الایحہ ، حضرت شعیب

عليدالسلام كى قوم ـ

۲. بنوسارہ میں سے ادوم دلعنی حضرت الوب اوران کی قوم) ۲۰ بنو ہاجرہ میں سے حضرت المعیل علیہ استلام ،اصحاب کجر، قیدار، قریش ۔ مدین اپنے اہل وعیال سے ساتھ اپنے سو تیلے مجانی حضرت اسمعیل علیہ استلام سے بہلو میں جمازاً کر آباد سرگیا تھا۔ تھریہی خاندان آسے حبل کرایک بڑا قبیلہ بن گیا۔ حضرت شعیب علیہ استلام تھی چونکہ اسی نسل سے تھے اس لئے انکی بعثت کے بعد بہقوم ، قوم شعیب تمہلائی۔

ایک بیکریه قبیله اِمَامِ مُنِینِ پرآباد مقا. قانقهٔ آلباما مِدمنِین دَجْرآیت، اور قوم لوط اور مدین دونوں بڑی سٹاہراہ پرآبا دعقے۔ دوسرے بیکہ وہ اصحاب الا کمہ تقے دَجُهندُوالے یابن والے) ایکذّب آصُع ہے الکیکٹ المُدُسَلِینَ ، دشعرار آیت علاا)

"أيج والول في رسولول كو حجثلايا-"

عربی زبان میں ایج" البین سرسبز ومث اواب حجالاً تیوں کو کہا جا تاہے جو ہرے تھرے درختوں می کنڑت سے جُھنڈ کی شکل اختیار کرلیتی ہیں ۔

تفسیرروح المعانی میں ابن عساکر تے حوالہ سے یہ مرفوع صدیث تقل کی گئی ہونے۔ اِتَّ مَدُینَ وَاصْعَابَ الْاَیْکَةِ اُمَّتَانِ بَعَثَ اللَّهُ تَعَالَیٰ

إِلَيْهِمَا شُعَيْبًا. (الحديث)

ور اصحاب الایکه وتو مین تقین جنگی جانب حضرت شعیب علیه الت لام کومبعوث کیا گیا تھا "

ان دونوں ہاتوں سے جان لینے سے بعد مدین کی آبادی کا پتہ آسانی سے معلوم ہوسکتاہے وہ یہ کہ مدین کا اصل علاقہ جاز سے شمال مغرب اور فلسطین کے جنوب میں بحرائمسراور خلیج عقبہ سے کنارے پر واقع تھا، قدیم زمانے ہیں جو بچارتی شاہراہ بحرائم کے کنارے ہیں سے مند اور نیبوع ہوتی ہوئی ملک شام کے بیان تھی اور ایک دوسری شاہراہ جو میاق سے مصر کی طرف جاتی تھی اس کے عین چورا ہے پر اس قوم کی بستیاں آبا و تھیں۔ عرب سے بچار بی قلے مصراور شام کی طرف جاتے ہوئے اسلے آنار قدیمہ کے درمیان میں کا رہے تاریک کا درمیان میں کے درمیان کے درمیان کے سے تاریک کی تر مقد

مافظ ابن کثیر کی تحقیق ہے کہ یہاں ایکہ نامی ایک درخت بھا اہل قبیلہ جو بحد اسی عبادت کیا کرتے بھا اہل قبیلہ جو بحد اسی عبادت کیا کرتے بھے لہذا اس نسبت سے مدین کو اصحاب الا یکہ کہا گیا۔
گویا یہ وہو نام ایک ہی قبیلے کے ہیں۔ اس خیال کی تائید میں بعض مفسرین کھھے ہیں کہ آب وہوا کی لطافت، نہروں اور آبٹ روں کی کنڑت نے اس مقام کو اسس قدر شاداب اور گرفضا بنا دیا تھا اور میہاں میووں ، بھیلوں اور توسنبودار مجولوں کے شاداب اور گرفضا بنا دیا تھا اور میہاں میووں ، بھیلوں اور توسنبودار مجولوں

ہایت کے جیراغ مبلدا وّل

کے اسقدر باغات اور حمین منظے کہ اگر ایک شخص آبادی سے باہر کھٹرے ہو کر نظارہ کرتا متھا تو اس کو یہ معلوم ہوتا کہ یہ ایک نہا بیت خوبصورت اور ن دا ب گھنے درختوں کا مجھنڈ ہے۔ اسی وجہ سے قرآن محیم نے اسکو "ایجے" دمجھنڈ ، کہہ کر تعادیف کروایا۔

تحقیق سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ دونوں خیال اپنی جگر صحیح ہیں۔ اصحاب بدین اور اصحاب الابحہ بلاسٹ بد دوالگ قبیلے ہیں مگر ہیں ایک ہی نسل کی دونا فہیں، حضرت ابرا ہیم علیہ الت لام کی جواولا دائی تبسری بیوی ستیدہ قطور اسے بطن سے تھی وہ عرب اور اسرا سل کی تاریخ میں بنی قطور اکے نام سے معروف رہی ہیں، اِن میں سے ایک قبیلہ جوسب سے زیادہ مشہور ہوا وہ مدین بن ابرا ہیم کی نسبت سے اصحاب مدین کہلایا۔

بوسب سے ریادہ مصہور ہواوہ مدین ابرا، یم فاسبت سے اسی بہدن اہما یا۔ یاقی سبتیدہ قطوراکی دوسری اولادجن میں بنی و دان نسبتہ زیادہ شہورہیں۔ شمالی عرب میں تیمارا ورتبوک کے درمیان آبا دہوئے۔ ان کاصدرمقام تبوک تھاجیسے

قدیم زمانے میں ایجہ محبتے ہیں۔

اصحاب مدین کا آغازعہد دو مہزار ببیل برس قبل میج شمار کیاجا تا ہے کیونکہ یہی زمانہ مدین کے پدرمحترم حضرت ابراہیم خلیل الٹرکاہے۔

قرآن حکیم میں مدین کا ذکر دو وجہ سے آیا ہے۔

اوّل ۔ حضرت تنعیب علیہ انت لام توم ۔ حضرت موسیٰ علیہ انت لام سے تنعلق ہے۔

سورہ اطلا آیت منا میں حضرت موسیٰ علیہ السّلام کا چندسال قیام مدین کا ذکرہے۔ سورہ قصص آیت ملک میں حضرت موسیٰ علیہ اسسلام کا حضرت شعیب علیہ انسلام کی خد میں حاضر ہونا بیان کیا گیاہے۔

سطفرت شعیب علیہ التلام اِن دونوں قبیلوں کے بغیبر کھے ،ان دونوں قبیلوں کے عادات واطوار تقریباً یکساں تھے۔ چونکہ دونوں ایک ہی نبال ہے۔ دونوں ایک ہی زبان بولئے سطے۔ اِن کے علاقے بھی ایک دوسرے سے قربیب اور شصل سطے ، اورانِ دونوں بیں ایک ہی طرح کی دونوں بیں ایک ہی طرح کی تجارت نظا، دونوں بیں ایک ہی طرح کی تجارت بھا، دونوں بیں ایک ہی طرح کی تجارت جادتی ہی اور ندسی داخلاتی ہی اربی بائی جاتی تھیں ہونکہ تجارتی ہی اور ندسی داخلاتی ہی اربی بائی جاتی تھیں ہونکہ

یہ لوگ اس زیانے ہیں بین الاقوامی تجارت کی ڈٹو بڑی شاہر ہوں پر آباد محقے جبکی وجہ سے بڑے پیمانے بررہزئی کاسلسہ بھیلار کھا تھا دوسری قوموں کے سجارتی قافلوں کو بھاری ٹیکس لئے بغیر گرزرنے نہ دیتے محقے اور راستہ کا امن خطرے بیں ڈال رکھا تھا۔ سور ہُ اعراف آبت علام میں ان کی اس بڑملی کا تذکرہ موجو دہے ہے۔

وعوت و بنیغ حضرت شعیب علیہ استلام جس توم ہیں مبعوث ہوئے وہ قوم خدا بیزاری اورمعصیت کاری کا شکار تھی۔ یہ صرف افراد کی

حد تک ہی محدو دینہ مقابلکہ ساری قوم اسی گر داب ہلاکت میں مبتلائقی۔ایک کمی کے گئے حد تک ہی محدو دینہ مقابلکہ ساری قوم اسی گر داب ہلاکت میں مبتلائقی۔ایک کمی کے گئے بھی ان کو بیراحیاس نہ مقاکہ بیرسب کمچھ گنا ہ ومعصیت ہے بلکہ وہ آپنے ان اعمال فوج سے سے میت

پرفخز کیا کرتے تھے۔

یہ لوگ الٹرتعالے اور اسکے دسولوں پر ایمان نہ لاکر جہاں حقوق الٹرکی خلا ورزی کر دہے بھے و ہاں خرید و فروخت میں ناپ تول گھٹاکر لوگوں سے حقوق میمی ضائع کر دہے بھے ۔مزید میہ کہ راستوں اور سرراہ بیٹھ نحر آنے جانے والے مسافروں کوڈرایا دھمکایا کرنے اور لوط مار مجایا کرتے تھے۔

یہ ان سے شدید خرا نُم <u>مختے جن</u> کی اصلاح سے لئے حصرت شعیب علیہ السلام

كومجيجا كبيا تتفاء

الٹرکی توحید اور شرک بنراری کا اعتقاد نوتمام انبیار کرام کی مشترکہ علیم ہے جوحفرت شعیب علیہ استلام سے حصہ بین بھی آئی مگر قوم کی مخصوص بدا خلاقیوں پر توج دلانے اور اُن کو راہ راست پر لانے کے لئے اُن مغول نے اس فانون کو بھی اہمیت دی کہ خرید وفروخت کے معاملہ میں ہمیشہ یہ بیٹین نظر رہنا چاہئے کہ جوجس کاحق ہے وہ پورا بور اُناسکو ملے۔

ہ ۔ اپنی اس قوم کی اصلاح سے لئے حضرت شعیب علیہ استلام نے تمیق باتیں خصوصیت سے فرمانی ہیں :۔

اول یدکداے میری قوم تم اللرکی عبادت کروا سے سواتمہارااورکونی

معبودنهبي

یہ وہ دعوت توحیدہ جوتمام انبیار کرام دیتے آئے بیں اور جو تمام عقاید اور اعمال کی بنیاد ہے۔ چونکہ یہ قوم بھی مخلوق پرستی میں مبتلا تھی اس لئے ان کوسب سے پہلے یہی پیغام دیا۔ ترقوم یہ بات فرمائی کہ ناپ اور تول بین کمی زیادتی نہ کرو میں مطاب مراما کرو۔

ستوم بیکہ تم لوگوں کو ڈرانے دھمکانے اور الٹر کے پراستہ سے روکنے کے لئے راستوں پر نہ بیٹھا کرو۔"

اسکامطلب یہ مقاکہ یہ لوگ عام ثاہرا وں پر ببٹھ کرحضرت شعیب علیہ ات الام کے پاس آنے والوں کو ڈراتے دھمکانے متے اور امنبی اور مسافروں کے مال واسباب جمی لوٹ لیاکرتے مقے ۔

ر سیستی علامه قرطبی نے اِن کا پیمل تھی نقل کیا ہے کہ وہ لوگ عام مسافروں سے ناجا کرمنیکس تھی وصول کیا کرتے تھے ۔ ناجا کرمنیکس تھی وصول کیا کرتے تھے ۔

بہاری دوں یا درجی۔
حضرت شعیب علیہ الت الام بڑے قصیح وبلیغی مقرد تھے۔ شبری کلامی جُسن خطاب اور کے بیان اور کا قت لسانی میں بہت نما یاں انبیاز رکھتے تھے۔ اس کئے نبی کریم سی التہ علیہ ولم نے انتھیں خطیب الانبیار سے لقب سے یا دکیا ہے۔ ابنی قوم کو زم و گرم ہر طریقے ہے۔ ابنی قوم کو زم و گرم ہر طریقے ہے۔ مثلہ و مدایت کے کلمات ارت او فرائے مگر بے نصیب قوم پر اسکا کوئی اثر نہ ہوا، چند ضعیف اور کرور انسانوں کے علاوہ صی نے بھی ان کے پیغام حق پر کان بہی ہوا، وہ خور مجبی اسی طرح بیمل رہے اور دوسروں کی را ہ بھی مارتے رہے، کین جضرت و مقیب علیہ الت لام کی دعوت حق جاری رہی۔ قوم کے سر بر آور دہ افراد نے جنگوا بنی شوکت و طاقت پرغرور تھا حضرت شعیب علیہ الت الام کو دھمکایا کہ یا مجھ کوا ور تیری قوم کو اپنی اس بی سے نکال با ہر کر دیں گے یا بھر تم کو ایسا مجبور کر دیں گے کہ تم ہما دے رہن ہیں لوٹ آؤ۔

حضرت شعیب علیه استسلام تھرمجی یہ فرما تے بہتے کہ 'اُ ہے قوم بیں اپنی مقدور تھرتمہاری اصلاح کی کوششش

برایت *کے چراغ*

کرون گا و رہیں جو کہتا ہوں اُسکی صداقت اور سپانی کے لئے النّر
کی حجت اور دسیل اور کھلی نشانی بھی پیشس کر رہا ہوں۔ اسپر میں
کری عوض و بدائھ توطلب نہیں کر رہا ہوں ، میرا اجر توصرف النّر
ہی کے ہاں ہے۔ مجمعے طور ہے کہ تہیں النّد کا عذاب تم کو ہلاک و برباد
مذکر دے جیسا کہتم سے پہلنے قوم نوخ اور قوم ہوڈ اور قوم صالح می کو
پیش آجکا ہے۔ اور قوم لوط کامعاملہ تم سے کچھ دور نہیں ہے۔ دیجھوا اُسی
سے اپنے گنا ہوں کی معافی ما تکوا و راسی طرف لوٹ جاؤ۔ بیشک میرا
پیرور دی اور بڑا ہی رحمت و الا اور بڑا ہی محبت و الا ہے۔ سی

پرورڈگار بڑاہی دحمت والاا در بڑاہی محبت والاہے۔ اصلاحِ قوم کے لئے بیطویل جدوجہد، وعظ و تذکیر، قوم کی بغاوت وسرنشی اور عبر زناک انجام قرآن جحیم کی آیات ذیل میں تفصیلاً مرکورہے :-

> قرآئ مضمون الله مَا لَكُمُ مِن إِلْهِ عَيْدُةُ الْحِ رَبُود ايات عِن اعْدُوا الله مَا لَكُمُ مِن إِلْهِ عَيْدُةُ الْحِ رَبُود ايات عِن اعْدَا

'اورہم نے مدین والوں کی طرف ان کے بھائی شعیب کو پیغمبر بناکر بھیجا انھوں نے فرمایا اے میری قوم کے لوگوتم صرف النگر سی عیادت کر واکسیے سوا تہارا کوئی معبود نہیں اور تم ناپ تول ہیں کمی نیر و دکیونکہ میں تم کو فراغت کی حالت میں دکھتا ہوں دبھر تم سوناپ تول میں کمی کرنی کیا ضرورت ہے ۔ بعین النّہ نے تمہیں بہت کے دول میں کمی کرنی کیا ضرورت ہے ۔ بعین النّہ نے تمہیں بہت کے دول میں کمی کرنی کمیان نعمت سے بچی اور میں ڈرتا ہوں کہ تم بہ عذاب کا ایسا دن نہ آجا سے جوسب پر جھاجا ہے گا۔

عداب ہا ہیں دی ہا ہوسے بہت ہے۔ اور اے میری قوم کے لوگو ناپ تول انصاف کے ساتھ پوراپوراکیا کرو، لوگوں کو ان کی چیزیں (ان کے حق سے) تم نہ دو اور مک میں ضاد بھیلاتے نہ تھے ہو۔ اور مک میں ضاد بھیلاتے نہ تھے ہو۔

اور ملک میں سار بیاب سے استار کا دیا بھے دہے اسی میں تمہار میں اس میں تمہار کے دیا بھے دہے اسی میں تمہار کے دیا اسے بہتری ہے اگر تم سومقین آئے ،ا ور بین تم پر میرہ دینے والا تو

نہیں ہوں۔

لوگوں نے کہا اے شعیب کیا یہ تیری نمازیں (جو تواہے اب کے لئے پڑھتاہے ، تجھے بیٹھم دیتی ہیں کہ ہم اِن چیزوں کوچوڑ ہیں جنگی پرتش ہمارے بڑے کرتے آئے ہیں اور اس بات کو چوڑ دیں کہ ہم اپنے مال میں جو چا ہیں تصرف کریں واقعی آپ بڑے عقلمن رین دین پر چلنے والے ہیں ۔

شعیب نے کہا اے میری قوم کے لوگو کیا تم نے اس بات

برغور نہیں کیا کہ اگر میں اپنے پر ور دگار کی طرف سے ایک روشن

ولیل دکھتا ہوں اور اس کے فضل و کرم کا یہ حال ہو کہ اچھی سے اتھی

روزی عطا فرہا رہا ہو (تو بھریں بھی چیپ رہوں اور تمہیں را وحق کی
طرف نہ بلاؤں) اور میں پہنیں چاہتا کہ جس بات سے تمہیں روک

رہا ہوں خود اُ سکے خلاف چلوں میں تمہیں جو کچھ کہتا ہوں اُس پڑمل

مھی کر تا ہوں ، میں اسکے سوالچ نہیں چاہتا کہ جہاں یک میرے بس

میں ہے اصلاح حال کی کوشش کروں ۔ میرا کام بنتا ہے تو اللہ ہی کی
مددسے بنتا ہے ۔ میں نے اُسی پر بھروسہ کیا اور اُسی کی طرف رجوع ہو

اور اے میری قوم سے لوگو!

میری ضدیں آگر کہیں الیبی بات نہ کر بیٹھنا کہ تمہیں بھی ویساہی معالمہ بیٹ آجا ہے جیسا کہ قوم نوٹح کو یا توم ہو کو کو یا قوم صالح کوبیٹیں آچکا ہے اور قوم لوگا کا معاملہ توئم سے کچھ دور نہیں ہے اور دیچھو الٹرسے معافی مانگو اور اُسی کی طرف لوٹ جا ؤیمیرا بروردگار

براہی رحمت والا بڑا ہی محبت والاہے۔

لوگوں نے کہا اے شعیب نم جو کچھ کہتے ہواس اکثر باتیں تو ہماری سمجھ بین نہیں آتیں اور ہم دیجھ رہے ہیں کہتم ہم لوگوں میں ایک ممزور آ دمی ہوا ور آگر (تمہارے ساتھ) تمہاری برا دری کے آدمی نہ ہوتے تو ہم تمہیں ضرورسٹ محسار کر دینے اور تم ہما رہے

سامنے کوئی ہستی نہیں .

شعیب نے کہا اے میری قوم کے لوگو! کیا النّرسے بڑھ کر تم پر میری برا دری کا دباؤ ہوا؟ اور النّر تمہارے نئے کچھ نہ ہواکہ کے پیچھے ڈال دیا؟ داجھا) جو تم کرتے ہو میرے پر در دگار کے احاط علم سے باہر نہیں۔

ا ہے میری قوم کے لوگو! تم اپنی مجگہ کام کئے جاؤ، میں بھی اپنی مجگہ سرگرم عمل ہوں ، مہت جلدمعلوم کرلو گے محکس پرعندا ب آتا ہے جو اس کو رُسواکر ہے گا اور کون فی الحقیقت جھوٹا ہے انتظار کر دہیں بھی تمہارے سابھ انتظار کروں گا۔"

وَمَا لَىٰ مَدُينَ اَخَاهُمُ شُعَيْبًا قَالَ يَقَوُمِ اعْبُرُهُ اللهُ اللهُ مَا لَكُمُ مِنْ اللهُ عَلَيْهُ الْ مَا لَكُمُ مِنَ الْمِهِ عَلَيْرُهُ قَدُجَاءً تُكُمُ بَيِنَتُ مِنْ مِنْ مَنْ مَنْ الْمُوانِ اللهِ عَلَيْهُ الْخ رالاعران آیات هم این ا

آورہم نے مدین والوں کی طرف اُن کے بھائی شعیب کوھیجا اُسھوں نے فرایا اے میری قوم تم صرف النّر کی عبادت کرواس سے سواکوئی تہارامعبو دنہیں، تہا رہ یاس تہارے پر وردگاری طرسے دیرے نبی ہونے پر) واضع دلیل آجی ہے تو تم ناپ نول پورا پوراکیا کرو اور لوگوں کا اُن کی چیزوں ہیں تقصان نہ کرو (میسا کہ تہاری عاوت ہے) اور روئے زئین پربعد اُسے کہ اُسی درت کردی کردی گئی فیاد نہ بھیلاؤ۔ یہ تہارے گئے مہترہ اُگریم میری تقدیق کرد۔ گئی فیاد نہ بھیلاؤ۔ یہ تہارے گئے مہترہ اُگریم میری تقدیق کرد۔ گئی فیاد نہ بھیلاؤ۔ یہ تہارے لئے مہترہ اُگریم میری تقدیق کرد۔ والوں کو دھمکیاں دو اور ان کو النّر کی دا ہ سے دوگو اور اُس مالت کو یا دکرو جبکہ میں اور دھیے لوکیسا براا بجام ہوا فیاد کرنے والوں کا۔ اور اگر تم ہیں سے بعضے تو اُس جم پرجبکو دیچر فیا نے دیکھیلوکیسا براا بجام ہوا فیاد کرنے والوں کا۔ اور اگر تم ہیں سے بعضے تو اُس جم پرجبکو دیچر فیا نے تو اُس جم پرجبکو دیچر فیا اور بعضے ایمان نہیں لائے تو ذیا

تھیرجا بہاں تک کہ ہما ہ ہے درمیان الٹرتعالے (عملی) فیصلہ سکتے دیتے ہیں ا در وہ سب فیصلہ کرنے والوں سے بہتر ہیں۔

مانحی قوم کے متکبرسرداروں نے کہاا کے شعیب دیا درکھ)
ہم تجھ کواور جو تیرے ہمراہ ایمان لانے والے ہیں۔ اُن کو اپنی بستی
سے بکال ہا ہرکر دیں گے یا یہ کہتم ہمارے ندہب میں لوٹ آ جاؤ۔
شعیب نے جواب دیا کیا ہم تمہارے ندہب میں آ جائیں گے گوہم اسکو
سکروہ داور قابل منفرت، ہی سمجھتے ہوں ؟ دالیسی صورت میں) ہم تو
السُّریر حجوقی تہمت لگانے والے ہوجائیں گے۔

اگر (فدانه کرے) ہم تمہارے مذہب میں آجائیں، خصوماً بعداسے کہ اللہ نے ہم کواس سے نجات دی ہواور ہم سے محن نہیں کہ تمہارے مذہب بیں کہ تمہارے نہ سہب بیں آجائیں لیکن ہاں اللہ سے خات دی ہوا دہم سے محن نہیں کہ تمہارے نہ سہب بیں آجائیں لیکن ہاں اللہ سے دہم مقدر میں کیا ہو۔ ہمارے رب کاعلم ہر چیز کو محیط ہے۔ ہم اللہ بی پر محروسہ رکھتے ہیں۔ اللہ بی پر محروسہ رکھتے ہیں۔

اے بہارے پر وردگار نہمارے اور بہاری اس قوم کے درمیان فیصلہ کر دبیجئے حق کے موافق اور آپ سب سے انچھا فیصلہ کرنے والے ہیں ۔ کرنے والے ہیں ۔

اور اُن کی توم کے کا فرسر داروں نے دشعیب علبہ السلام کی یہ تقریر شنکر) کہا دا ہے لوگوں اگرتم شعیب کی را ہ پر جلنے لگو نو بیشک بڑا نقصان اُنٹھاؤگے۔

كَذَّبَ أَصْعَابُ لُكَيْكَةِ الْمُدُسَلِينَ - إِذْ قَالَ لَهُ مُر شُعَيْبُ أَلَّ تَتَّقُونَ . الْحُرِ (الشّعراء آيات مِلِنَا علله)

اصحاب الایکہ نے بینجبروں کو جھٹلایا جبکہ اُن سے شعیب دعلیہ السلے استالام) نے فریا یا کیا تم السّرے ڈر نے نہیں ہو۔ ہیں تمہارا ایانت دار بینجبر مہوں۔ سوتم السّرے ڈر وا ور میراکہا مانو۔ اور میں تم سے اسپرکوئی صلانہیں جا ہتا ہیں میراصلہ تورب العالمین کے ذہہے۔

ٹم لوگ پورا پورا نا پاکرواور نقصان نہ کیا کرو۔اور سیر طی ترازو سے تولا کرو۔اور لوگوں کا اُن کی چیزوں میں نقصان نہ کیا کرو اور زمین میں فساد نہ مجا یا کرو۔اور اُس دخُدا، سے ڈروجس نے تم کو تمام اگلی مخلوق کو پیدا کہاہے۔

ای علوق و پیدا لیا ہے۔
وہ لوگ سمجنے گئے (اے شعیب) مجھ پر توکسی نے بڑا
مھاری جاد و کر دیا ہے۔ اور تو توقی مہاری طرح ایک بشرہ
اور ہم مجھکو صرف جھوٹے لوگوں ہیں خیال کرتے ہیں۔ سواگر تو
سچوں ہیں ہے ہے توہم پر آسمان کا کوئی مگڑا گراد ہے۔
شعیب نے کہا تہارے اعمال کومیرارب خوب جانتا ہو
سومن لوگوں نے (شعیب) کو جھٹلا دیا بھرا ککوسائبان
سے واقعہ نے آپکڑا بیشک وہ بڑے سخت دن کا عذاب تھا۔
اسمیں عبرت ہے ،اور ان بی اکثر لوگ ایمان ہیں لاتے۔
اور بیشک تیرارب بڑی قدرت والا بڑی رحمت والا ہے ؟

آخرمی انجامی این مواجوقانون الہی کا بدی وسرمدی فیصلہ ہے۔ بعنی اسوا در اس کی روشنی آنے سے بعد بھی جب باطل پر اصرار ہوا ور اسکی صداقت کا نداق اُڑا یا جائے اور اُسکی اشاعت ہیں رکا وہیں ڈوالی جائیں تو بھی الٹر تعالیٰ کا عذاب اُس مجرما نہ زندگی کا فیصلہ اور خاتمہ کر دیا ہے اور آنے والی نسل کے گئے اسکو عبرت و موعظت بنا دیا کرتا ہے۔

قرآن جکیم نے نا فرمانی اور سرکشی کی پا داسٹس ہیں قوم شعیب کو دوق قسم کے عذاب سے دوچاد کر دیا۔ ایک زلزلہ کاعذاب اور دوسرا آگ کی بادش کاعذاب .

عذاب سے دوچاد کر دیا۔ ایک زلزلہ کاعذاب اور دوسرا آگ کی بادش کاعذاب .

نَاخَذَ اَنْهُ مُوسَى اور طَظِیم زلزلے نے آبکرا اُد

سایہ سے دن والے عذا ہے اُنہیں کیرار

ہرایت کے پیراغ میں میں میں اس میں

جس کامطلب یہ کہ مہنے اُن پر گہرے بادل کاسایہ آیا جب سب اُسکے نیچے جمع ہو گئے تواسی بادل سے اُن پر آگ برسانی گئی۔

"خصرت عبدالله بن عباس نے اِن دونوں آیتوں کی وضات سلاح فرمائی کہ حضرت شعیب علیہ التلام کی قوم پر پہلے دن الیمی سخت گرمی مسلط ہوئی گویاجہتم کا دروازہ اِن کی طرف کھول دیا گیاہو جس سے ان کا دم کھٹنے لگا نہ مسی سایہ میں ہیں ہیں آیا تھانہ پانی میں بہلوگ شری سے گھراکر تہم فالوں میں گھس گئے تو و ہاں او برسے جی زیادہ ہو گئی تو و ہاں او برسے جی زیادہ ہو گئی ، پریٹ ان ہوکر شہر سے جنگل کی طرف بھا تھے۔ و ہاں اللہ تو سے ایک گہرا بادل بھیج ویا جسکے نیمچے مصند می ہوا تھی ۔ یہ سب لوگ فرمی سے بدحواس تھے دوڑ دوڑ کر اُس بادل کے نیمچے جمع مہو گئے۔ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُس وقت یہ سارا بادل آگ ہوکر اُن پر برس پڑا اور اسمیے بعد زلزلہ اُن بیس می تو سے یہ بیوری قوم الکہ کا ڈھیر بن کر رہ گئی ۔ " دیموری اُن میں می تو سے بیروں میں ہوں گئی ۔ " دیموری میں تو سے بیروں کر میں ہوں گئی ۔ " دیموری و میں اُن بیسے می تو سے بیروں کی تو میں اُن بیرس کر میں ہوں گئی ۔ " دیموری میں ہوں گئی ۔ " دیموری ہوں گئی ہوں گئی ۔ " دیموری ہوں گئی ہوں گ

عبی آیاجس سے یہ پوری قوم ٔ راکھ کا ڈھیر بن کر رہ گئی ۔" دہجر محیط) بعن مفسرین نے یہ بھبی لکھا ہے کہ مکن ہے قوم شعیب کے مختلف حصتے ہوں لبعض پر زلزلہ آیا اور لبعض عذاب فکلہ سے ہلاک کر دئے گئے ہوں۔ والٹراعلم۔ قرآن مکیم نے اس عذاب کی نوعیت کو اس طرح بیان کیا ہے :۔

فران مضمون فَاخَذَ تَهُ مُ الرَّجُفَةُ فَأَصُبَحُوا فِي دَارِهِمُ الرَّجُفَةُ فَأَصُبَحُوا فِي دَارِهِمُ المُ

نیس آمفیں ایک دہلا دینے والی آفت نے آلیا اور وہ ایے گھروں میں اوندھے بڑے کے بڑے رہ گئے.

جن توگوں نے شعیت کو حبٹلایا وہ ایسے مطے کہ کو با کہی اِن گھرد ں میں بسے ہی مذمنے شعیب کو جھٹلانے والے ہی آخسہ کار

رباد ہوکر رہے۔

اورشعیت یہ کہ کران کی بستیوں سے نکل گئے کہ اے میری قوم سے لوگو میں نے اپنے رب سے پیغا مات تہیں پہنچا دستے اور تمہاری خیرخواہی کاحق ا داکر دیا اب میں اُس قوم پر کیسے افسوسس کروں جو قبول حق ہے انکار کرتی ہے "

وَلَتَاجَاءُ أَمْرُنَا نَجَيْنَا شُعَيْبًا وَ الَّذِيْنَ الْمَنُوْامَعَهُ

بِدَحْمَةِ مِنْنَا. الخ. (جود آيات عيو "ماعه)

'اُ ورجب ہمار کے فیصلہ کا وقت آگیا تو ہم نے اپنی رحمت سے شعیب اور اُن سے ساتھی ایمان والوں کو بچالیا اور جن لوگوں نے ظلم کیا تھا اُن کو ایک سخت دھما سے نے ایسا کیڑا کہ وہ اپنی بستیو میں بے حس وحرکت پڑے سے پڑے رہ کتے گویا و مجمعی فہاں رہے سے ہی نہ محقے سنو إ بدس كورحمت سے دورى مونى جيساتمو و رحمت سے دور موٹے تھے۔"

وَإِنْ كَانَ أَصْعَابُ الْآيْكِيْ لَظْلِمِينَ الْحَ

(جرآیت مه ، مه)

اُوراً بيجروالے فالم مقے تو ديچھ لو كہ ہم نے بھی اُن سے انتقام لیا ۱۰ وران دونوں (قوم لوطٌ وقوم شعیبٌ) کے اُجڑے ہوئے علاقے تھلے راستے پر واقع ہیں " فَكَنَّ بُولُهُ فَأَخَنَ هُمُ عَنَابُ يَوْمِ الظَّلَّةِ الْح

سواً مفوں نے شعیث کو حبشلایا آخر کارسائیان والے دن كاعذاب أن كو آيجرا بيتك وه برك خوف ناك دن كاعذاب مظاميقيناً اسمين أيك نشاني محكر إن بن اكثر ماننے والينهين -اورحقیقت بیرے کر تیرارب زبر دست تھی ہے اور دحیم تھی۔

آک مین سے علاقہ حضرموت میں ایک قبرجو زیارت گاہے خاص وہام ہے و باں سے باسٹندوں کا یہ دعولی کے کہ بیحضرت شعیب علیالتالم

حضرت شعیب علیہ ات لام اہل مدین کی ہلاکت سے بعد حضرموت ہجرت کر آئے تھے اور و ہاں ہی اُن کی و فات ہوئی ۔

صاحب قصص الانبیار علاّمہ عبدالوہاب نجار ہی رائے ہے کہ یہ بات کھے جے میں ہاکت ہے کہ یہ بات کھے جے نہیں ہے بمشہوریہ ہے کہ حضرت شعیب علیہ التلام قوم کی ہلاکت سے بعد مکہ کرّمہ آگئے سے اور وہاں ہی و فات ہوئی۔ وہ اور اُن سے سامخیوں کی قبریں مکہ مکرّمہ ہیں دارالنّد و کے قریب ہیں۔ د دار الندوہ زیانہ جا ہمیت ہیں اہل محتے کامشورہ گاہ تھا، جہاں قوم سے فیصلے اور معا ملات طے کئے جاتے محقے)

متائج وعبرتر

عجرت ہی عجرت انہاں اسوں اور قوموں کے واقعات صرف قصہ یا کہانیاں انہیں ہیں۔ انہیں ہی انہانی ہا تاریخ وسیرت پائی جان انہیں ہیں بلکہ عبرت ونصیحت کے لئے سربایہ ہیں۔ انہیں ہی تاریخ وسیرت پائی جان سے وہاں نتائج وا نجام کا بہت بڑا ذخیرہ تھی ہاتھ آتا ہے جو قوموں کے عوج وزوال کے اسباب بیداکرتاہے۔ قرآن حکیم نے انبیار سابقین کے مسلسل تذکرے سے بعد انجام و نتیج سے طور پر خلاصہ کلام اس طرح بیان تحیا ہے:۔ فکر اُخدہ من اُخدہ نا بدنیہ فیمنی اُکر اُخدہ نا بدنیہ فیمنی اُکر اُخدہ نا بدنیہ فیمنی اُکر اُخدہ نا بدنیہ ویمنی اُکر اُک کے والے اُکر اُک کی استان کے اسباب بیدر در ہیں ہوں در میں میں بدیرہ وردی و در اُکر اُک کی در اُکر ہوں میں بدیرہ وردی و در اُکر اُک کی در اُکر ہوں میں بدیرہ وردی و در اُکر و در اُکر ہوں میں بدیرہ وردی و در اُکر و در اُکر ہوں میں بدیرہ وردی و در اُکر و

وَمَا كَانَ اللهُ لِيَظْلِمُ اللهُ وَلِكُنْ كَانُوا آنفُهُم يَظْلِمُونَ. د العنكوت آيت من

آخر کارم رایک کوہم نے اُستے جُرم ہیں پکڑ لیا۔ مجراُن میں سے بعض پرہم نے سخت طوفانی ہوا بھیجی، دھیے قوم عادی اور اُن میں بعض کوزبر دست دھما کے نے کیڑلیا، دھیے قوم تمودی اور اُن میں سے بعض کوہم نے زمین ہیں دھنسادیا ، (جیسے قارون) اور اُن میں سے بعض کوہم نے ڈبودیا ، (جیسے فرعون اور اُسکے نشکر) اور اللہ ایسا نہ تھا کہ اُن پرظلم کر تالیکن یہی لوگ اپنے اونظم کیا کر ڈبھے۔ یہ تمام واقعات جو میہاں تک بیان کئے گئے ہیں اُن کارو کے شخن دوطر ف ہے:-ایک تو بیسے اہل ایمان کو اسمیں وغط و تذکیر ہے کہ وہ پہت ہمت اور دل کستہ مذہبوں ،مشکلات اور مصائب ہیں صبر واستقلال قائم رکھیں اور الٹہ تعالے پر بھروس رکھیں۔ انجام حق وصد اقت کا ہی ہوگا اور ظالموں کوشکست ورسوائی ہوگی ۔ رکھیں۔ انجام حق وصد اقت کا ہی ہوگا اور ظالموں کوشکست ورسوائی ہوگی ۔

ورسرے اُن ظالموں کو مجی سنایا جارہ ہے جو انبیار کی تعلیمات و ہدایات کو اہمیت نہیں دے رہے ہیں اُمضیں جومہلت دی جارہی ہے وہ خدائی ڈھیل ہے جو قدیم اسمیت نہیں دے رہے ہیں اُمضیں جومہلت دی جارہی ہے وہ خدائی ڈھیل ہے جو قدیم زیانے سے مجرم قوموں میں التا کی سنت چلی آرہی ہے۔ التار تعالے کے اس ملم و مُرد باری کا مصطلب نہیں کہ محرمول بنہیں کہ اگر بغاوت وسرمتنی پرفوراً پکڑا نہیں جارہ ہے تو اس کا میطلب نہیں کہ مجرموں پرکوئی انصاف کرنے والی طاقت نہیں ہے اور زبین پرجس کا جوجی چاہے بیخوف اختیاد کرتا رہے ؟

ا صبیا دس ارتارہ ہے؟ یہ غلط فہمی حس انجام سے دوجار کرکے دیے گی وہ وہی انجام ہے جو تم سے پہلے قوم نوځ اور قوم ابراہیم، قوم لوط، عا دوثمود، قوم شعیب دیچھ کی ہیں اور جیسے قارونُ فرعونُ

ہان نے تھی دیجھا ہے۔
اس ضمن میں جتنی قوموں کا بھی ذکر کیا گیا ہے وہ سب کی سب شرک میں مبت لا مقیں اور اپنے معبود وں سے بارے میں ان کا پیعقیدہ تھا کہ یہ ہمارے حامی ویددگار اور مقیں اور اپنے معبود وں سے بارے میں ان کا پیعقیدہ تھا کہ یہ ہمارے حامی ویددگار اور مگراں ہیں۔ ہماری حسمتیں بنانے اور بگاڑنے کی قدرت رکھتے ہیں بنیکن جیسا کہ اوپر کے تاریخی واقعات ہیں اُن سے یہ تمام عقائد او ہم اس وقت بالکل بے بنیا د تا بت ہوئے جب النٹر کی طرف سے ان کی بر ہا دمی کا فیصلہ کر دیا گیا۔ اسوقت نہ کوئی ویو، دیونا، نہ کوئی او تار، نہ کوئی ولی، نہ روح ، نہ جن وفر سشتہ جسے وہ پو جستے سمتے ان کی مدد کو آیا نہیں کوئی سفار سنس کیا۔

حقیقت بہ ہے کہ الٹارمے نظام کا ننات کا اعتزاف کئے بغیر بہ سارے ہے بنیا د سہاروں رکیمی مبی ابنا نظام حیات تعمیر نہیں ہوسکتا۔اس کا ئنات ہیں جملہ اختیارات کا مالک صرف اور صرف ایک رب ہے۔ اُسی کا سہار اسہار اے۔ اُسی پر اعتماد قابل اعتماد ہے۔ فکن تیکفکر بالتظاعوت ویون باللّٰہ فقد استمسک

بِالْعُرُوَةِ الْوُتُفَةِ لَاانْفِصَامَ لَهَا. دَبَقِ آيَت عِيمًا)

بنجس نے طاغوت کا ابحار کیا اور الٹر رپر ایمان لایا اُس نے

مضبوط سہارا تفام لیا جو تھی ٹوٹنے والانہیں ہے "

طاغوت کا سیجے ترجمہ اُردوزبان میں شکل ہے اسے تئے قریب ترین ترجمہ شیطان سے کیا جاسکتا ہے ،عربی زبان میں اس کا دسیع ترین مفہوم ہے بعینی ہرمعبو د باطل اورسرسٹ و گھراہ کرنے والا۔

معیار و بانت احضرت شعیب علیه استلام اینی قوم کو اس طرح نصیحت کرتے ہیں :
معیار و بانت ایک لوگو : تمہارے پاس تمہارے دب کی واضح رسنمائی آگئی کے در ایس نمہارے دب کی واضح رسنمائی آگئی کے در ایس اور پیمانے امانت و دیانت سے پورے کرو، لوگوں کو اُن کی چیزوں ہیں گھاٹا نہ و و ، اس طرح زمین میں نسا د ہر پانہ کرومبیا کو اُن کی چیزوں ہیں گھاٹا نہ و و ، اس طرح زمین میں نسا د ہر پانہ کرومبیا کہ اسکی اصلاح ہو چی ہے ، اسی میں تمہاری بھلائی ہے آگر واقعی تم مؤن ہو ''

حضرت شعیب علیہ است ام سے اس خطاب سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ گوگٹ خو د مدعی ایمان تھے جیسا کہ بنی اسرائیل ابتداً مسلمان تنفے حضرت ابراہیم علیہ است لام سے بعد حجہ آتھ سوبرس تک مشرک اور بداخلاق قوموں سے درمیان رہتے رہتے یہ گوگ بھی شرک اور بداخلاقیوں میں مبتلا ہوگئے تھے متحراس سے با وجود ایمان کا دعوٰی اور امپر فخر برقرار تھا۔

حضرت شعیب علیه است الام این اس گرای قوم کوفهماکش کرتے ہیں کہ اگر تم مومن ہوتو تمہاکش کرتے ہیں کہ اگر تم مومن ہوتو تمہارے نز دیک خیرو بھلائی ، راست بازی و دیانت ہونی چاہئے۔ ناپ تول میں کمی زیادی دین و دیانت کا تقاصہ نہیں اور یہ بات دیانت کے تقاصے سے بالکل مختلف ہے۔ ایمان کا دعوی ہوا در بھراس سے تقاصفے کے خلاف عمل ہویہ سراسر

مسلسل نذكره كرنے سے معاً بعد بہ جامع ضابطہ بیان كياہے :-

می ایسانہیں ہواکہ ہم نے کسی بین بی بھیجا ہواور اس بی کے لوگوں کو بہتے نگی اور ختی بیں بہتلانہ کیا ہو،اس حیال سے کہ ن اید وہ نرم بڑیں بھیر ہم نے اُن کی برحالی کوخوش حالی ہے بدل دیا. یہاں تک کہ وہ خوب مچھے بھولے اور کہنے لگے کہ ہمارے آبار واجدا دیر بھی اچھے اور بڑے دن آتے رہے ہیں۔ آخر کار ہم نے

آبار واجداد برحبی البیع اور برے دن اسے رہے ہے۔ انتخیں اچا یک پیڑ لیا اور انتخیں خبر یک نہونی ۔

اور اگران بستیوں سے لوگ ایمان لانے اور نقوی کی دو اختیار کرتے توہم اِن پر آسمان اور زمین کی برکتوں سے در وازے محصول دیتے بمگرانھوں نے دنبیوں کو ، حجمٹلا یا۔ لہذا ہم نے آسس بُری ممانی کے عوض میں امھیں پکڑلیا۔ بُری ممانی کے عوض میں امھیں پکڑلیا۔

بین کہ ہماری گونت میں ایا بین پردات سے بے خون ہوگئے ہیں کہ ہماری گونت میں اچا بک اُن پردات سے وقت نہ آ میگی جبکہ وہ سوتے پڑے ہوں ؟ یا اُنہیں اطمینان ہوگیا ہے کہ ہماری پکڑ مجھی یکایک اُن پردن کے وقت نہ آ پڑے جبکہ و کھیل کو درہے ہوں۔ سے وہی قوم بے خوف ہوتی ہے جو تبا ہ ہونے والی ہے۔ سے وہی قوم بے خوف ہوتی ہے جو تبا ہ ہونے والی ہے۔

(اعراف آيت يمو تا 19)

آفات وحوادث مومن کی اصلاح کرتے جاتے ہیں بہاں کے کہ وہ گناہوں سے پاک صاف ہوکڑنکلنا ہے ۔ سکن منافق کی ما الک کہ وہ گناہوں سے پاک صاف ہوکڑنکلنا ہے ۔ سکن منافق کی ما بالک کدھے کی سی ہوتی ہے جو یہ نہیں سمجھنا کہ اسکے مالک نے اسے کیوں ماندھا نظا اور کیوں اسے جھوڑ دیا۔ دالحدیث،

پس حب سنی قوم کا یہ جا آ ہوجا آئے ہے کہ من مصائب ہے اُس کا دل نعدا کے آگے تھے گئا ہے اور منعقوں پر وہ سنگر گزار ہوئی ہے تو بھراسی بر با دی اس طرح اسکے سرمنڈ لانے لگتی ہے جس طرح چیل کو ہے سی مُردار پر منڈلانے لگتے ہیں اور کچھ دیر نہیں لگتی کہ اُسپر مجھیٹ پڑیں۔

ر ما نے کا ایار حرصا و انبی کریم ملی الله علیہ ولم کی بعثت کے کچھ دنوں بعد مکہ کے مار حرصا و کی کریم ملی الله علیہ ولم کی بعثت کے کچھ دنوں بعد مکہ کے تعلقات سخت اور کی کلیف دہ روید اختیار کرنا شروع کر دیا تھا تونبی کریم ملی الله علیہ ولم نے دُعائی:۔

اللہی! حضرت یوسف علیہ است الم سے زمانے میں مبیسا ہفت اللہ فعل بیا تھا بڑا تھا و لیے ہی تحط سے مشرکیوں کہ کے مقا بلے میں میری

وين بيزارى مرض حضرت شعيب عليه استلام كى إس تبليغ بركه التُركى عباد

بدایت کے چراغ

سروم سے سوا تمہار اکوئی معبو دنہیں اور ناپ تول میں تمی نہ کرو، آج میں تم کو اچھے مال میں دیکھ رہا ہوں مئے کھے اندیث ہے کہ کل تم پر ایسا دن آنے والا ہے جسکا عذا ب سب کو گھیرلیگا۔ دہود آیت ہے۔ قوم کے لوگوں نے جواب دیا اے شعیب کیا تیری نماز تجھے پیکھائی ہے کہ ہم اِن سارے معبودوں کو چھوٹردیں جبکی برشش ہمارے باپ دا داکرتے آئے ہیں ؟ یا یہ کہ ہم کو اپنے مال و دولت میں اپنے منشار سے مطابق تصرف کرنے کا اختیار نہ ہو ؟ بس تو ی ایک عالی ظرف اور داست جاز آدمی دہ گیاہے ؟ دہود آیت عفی

یطعن آمیز فقرہ جبی روح آج بھی آپ اپنے موجودہ ہاحول میں ائیں گے جو بندے دین سے غافل فسق وفجور میں مبتلا ہیں وہ ایسے ہرموقعہ پر ایک دیندار کو پیطعنہ و بینے سے کامرین نہیں کرتے کہ جناب انہیں 'وینداری کامرض' گگ گیا ہے۔ یہ بہت پاکیز آدمی ہی اپنر نماز کا دورہ پڑگیا ہے، اب یہ وعظ ونصیحت کا درس دینے لگ گئے ہیں۔ در انسل اپنر نماز کا دورہ پڑگیا ہے، اب یہ وعظ ونصیحت کا درس دینے لگ گئے ہیں۔ در انسل دینداری کو فاسق و فاج قسم کے لوگ ایک تقل خطرہ خیال کرتے ہیں چونکہ نماز دینداری کا دینداری کو فاسق و فاج قسم کے لوگ ایک تقل خطرہ خیال کرتے ہیں جونکہ نماز دینداری کا سب سے پہلا اور نمایاں وصف ہے اس لئے جب شخص کو اپنے میں نماز پڑھتا و پچھے ہیں تو انہیں فوراً احساس ہوجا ہے کہ استخص پر مرض دینداری "کا حملہ ہوگیا ہے۔ راعونی بالتہ من الشیطان الرجیم)

بالسرن اسیطان الزیم) حضرت شعیب علیه الت لام می سبرت میں بیان کیا گیا ہے کہ یہ بی لمبی کماریں پڑھا کرتے تھے ان کے رکوع وسجو دمھی طویل طویل ہوتے تھے۔ قوم نے جو مرض نحدا بیزاری ' یہ مدت انتخری طون دیا۔

۔ "اے شعیب کیا تجھے نیری نماز حکم دیتی ہے کہ ہم لوگ اپنے

طور وطريقے حصور ديں؟

می من شخی میں تاریک خیالی طرت شعیب علیه ات الام کو آنجی توم پیرجواب دیتی ہے:-"ہم کو اپنے مال و دولت میں اپنی مرضی سے مطابق تصرف كرفے كا يوراختيارے ، (مود آيت عدم)

یہ اسبالام اورجا ہلیت کا اختلاف ہے۔ اسسلام کا نظریہ یہ ہے کہ التٹرگ بندگی سے سوا جوطریقہ بھی ہے غلط ہے۔ اورجا ہلیت کا نظریہ یہ ہے سے باپ وا واسے جوطریقہ جیلا آر ہا ہوانسا^ن کواسکی بیروک کرنی جا ہتے اور اس تقلید سے لئے تحسی مزید وسیل کی صرورت نہیں ہے کہ وہ باپ دا داکا طریقہ ہے۔

جا ہلیت کا نظریہ یہ ہے کہ دین و ندمہب کا نعلق صرف پوجا پاٹ مراسم کی حد کس ہے رہے زندگی کے ونیوی معاملات اسمیں انسان کو پوری آزادی ملنی جا ہیئے جس طرح چاہیں کام کریں ۔ زندگی کو ندمہی اور ونیوی دا ئروں میں الگ الگ تقسیم مرنے کا تخیل آج کوئی نیا مخیل نہیں بلکہ آج سے نظریبا چار ہزار برس پہلے بھی حضرت شعیب علیہ الت لام کی قوم کو اس مقسیم پر ولیا ہی اصراد تھا جیسا آج اہل مغرب اور اُن کے مشرفی نے گردوں کو ہے۔

مسترق سے سرووں وہے۔ یہ نی الحقیقت کوئی 'نئی روشنی'' نہیں ہے بلکہ یہ وہی''پرانی تاریک خیالی''ہے جو ہزار ہا برس پہلے کی جا ہلیت ہیں جس اسی نشان وآن سے پانی جاتی تحقی۔

سنگ ولی نهمیں رحمد لی اوعظ و تذکیر کے اختیام پر حضرت شعیب علیالهام این قوم کو دعوت استغفار ویتے ہیں بہ وَ اسْتَغُفِرُوْ اَسَ اِللّٰ مُنْ اَلْهُ اِللّٰهِ إِنَّ مَا بِيْ تَدُوْدُوْ آلِكُيْدِ إِنَّ مَا بِيْ تَدُودُدُ

(مود آیت نق)

''ا پنے دب سے معافی مانگوا وراُسکی طرف پلٹ آؤ، بے شک میرا دب دحیم ہے محبت کرنے والا ہے'' یعنی الٹرتعالیے کو اینی مخلوق سے کوئی دستسنی عدا وت نہیں کہسسی کوخوا ہ مخوا ہ سنرا دیے ہی کواس کا جی چاہے اور اپنے بندوں کو مار مارکر ہی اُسکاجی خوش ہو۔
الشرکے بندے جب سکوشیوں سے باز نہیں آتے اور اُس حدسے بھی گزرجائے
ہیں جو بندگی سے حدو دیس ہونی ہے تو بھروہ قانونِ انصاف کو حرکت ہیں ہے آ تا ہے
اور با دل ناخواست سنرا دیتا ہے۔ ورنہ اُس کاحقیقی حال تو یہ ہی ہے کہ انسان خواہ
کتنے ہی قصور کر ہے جب جی اپنے افعال پر ناوم ہو کر اُسکی طرف پلٹ آتا ہے تواسکو
دامن رحمت کو اپنے لئے وسیع نز پا تاہے ، کیو بحد اُسکو اپنی پیدائی ہوئی مخلوق سسے
دامن رحمت کو اپنے لئے وسیع نز پا تاہے ، کیو بحد اُسکو اپنی پیدائی ہوئی مخلوق سسے
یا یاں محبت و بیا دہے۔

بني ريم صنى التدعليه ولم السحى أيب نهايت بليغ اورمؤ ترمثال ارتنا و فرماتے ہيں

حضرت عمرٌ فرمائے ہیں _!۔

ر ایک د فعه نبی کریم سلی الترعلیه ولم کی فدمت میں چند قیدی گرفتار ہوکر آئے اِن میں ایک عورت بھی بھی جس کا شیرخوا ربچہ کہیں جبوٹ گیا تھا اور وہ ایسی بے بپین بھی کرجس بچے کو پالیتی اپنی سینے سے چٹالیتی ، نبی کریم صلی الترعلیہ ولم نے اس کا حال دیچھ کرہم لوگوں سے پوچھا بتاؤ آگر اس کا اس کو بچے مل جائے تو کیا اپنے بچے کو اپنے ہا بھوں آگ بیں بھینک دے گی ؟ ہم نے بلا توقف عرض کیا ہرگر نہیں ۔ ادرت اد فرمایا :۔

أَسُّ أَنْ حَمُّ بِعِبَادِ مِنْ هٰذِهِ بِوَكَدِهَا.

الٹر کا رحم اپنے بندوں پراس سے کہیں زیادہ ہے جو یعورت اپنے بچے سے بئے رکھتی ہے ؟' اوریہ بحت مجمی ملحوظِ خاطر رکھنا چاہئے کہ وہ الٹر ہی ہے جس نے بچوں کی پروڑسٹس کے لئے ماں باپ کے دل میں محبت پیدا کی ہے ورنہ حقیقت یہ ہے کہ اگر الٹر تعالیٰے اس محبت کو دلوں میں پیسرا نہ کرتا توماں باہ سے بڑھ کر بچوں کا کوئی وسٹمن نہ ہوتا ، کیو بحر سب سے بڑھ کر وہ انہی سے لئے تکلیف دہ ہوتے ہیں۔
اب ہر شخص کے لئے یہ بات قابل غور ہے کہ جو خدا "مجت ما دری" اور شفقت پرری کا خالق ہے خود اس کے اندر اپنی مخلوق کے لئے کیسی کچھ مجست نہ ہوگی ؟

نہ ہوگی ؟

خطیب الانبیار حضرت شعیب علیہ الت لام کا یہ وعظ آج کے انسا لوں کے لئے مجمی وعوتِ عمل دے رہے۔

حالتے مجمی وعوتِ عمل دے رہا ہے۔

حالتے مجمل دی دور آیت عنہ کا کہ ان محمد ان محمد

فعارف یعقوب علیہ ات لام کاسلسلۂ نسب چند واسطوں سے بعد صرت یعقوب علیہ ات لام تک پہنچیا ہے ۔ اِن کے والد محترم کا اسم گرامی عمران اور والدہ محترمہ کا نام بوکا بربیان کمیاجا تا ہے سلسلۂ نسب اس طرح ہے :-موسیٰ بن عمران بن فامت بن لاوی بن یعقوب علیہ السلام ۔

معنوت ہارون علیہ الت لام سے بین عراف ہاں علیہ الت لام سیحقیقی بڑے تھائی ہیں جو حضرت ہارون علیہ الت لام سے بین جارسال بڑے مخفے۔ عمر میں حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے بین جارسال بڑے مخفے۔

مری صفرت و نامید است کا مرسی علیه السلام کی ولادت ایسے زمانے میں ہوئی جب خون مصراسرائیلی لوگوں کے قرید نامولئی علیہ السلام کی ولادت ایسے زمانے میں ہوئی جب فرعون مصراسرائیلی لوگوں کے قب کا درجے مامور سفے جواسرائیلی خاندان کی عور توں پر سفا شہر ہیں جا ہجا ایسے کا درجے مامور سفے جواسرائیلی خاندان کی عور توں پر سگرانی کیا کرتے مقے اس کئے حضرت موسی علیہ السلام کی والدہ اور اُن کے باللہ خاندان ان کی ولادت کے وقت سخت پریشان سفے کو کس طرح بچے کو قاتموں کی بھا ہے سے محفوظ رکھا جائے ؟ اور یہ بات نگرہ ہستید نا یعقوب علیہ السلام میں کی بھا ہے سے کہ بنی اسرائیل داولا دمیقوب علیہ السلام میں اُنے کی سے کہ بنی اسرائیل داولا دمیقوب علیہ السلام کی حضرت یوسف علیہ السلام کے دور تھے متے اسلام بنی اسرائیل مصرت یوسف علیہ السلام کی درمیانی صدیوں ہیں لک مصر سے یوسف علیہ السلام کی درمیانی صدیوں ہیں لک مصر حضرت یوسف علیہ السلام کی درمیانی صدیوں ہیں لک مصر حضرت یوسف علیہ السلام اور حضرت موسیٰ علیہ السلام کی درمیانی صدیوں ہیں لک مصر

ہی میں مقیم رہے ہیں۔ حضرت موسیٰ علیہ ات لام کا زیانہ سولہویں صدی قبل مسیح کا ہے۔ اثری تحقیقات سے مطابق آب کاسن و لادت سزا 18ء قبل مسیح اور سال و فات سنگائے قبل سیح بیان سے مطابق آب کاسن و لادت سزا 13ء قبل مسیح اور سال و فات سنگائے قبل سیح بیان کیا جا تا ہے۔ اور حضرت موسیٰ علیہ السلام جس دورِ حکومت میں پیدا ہوئے اُس فرعون کا نام بعض مُورِ خبین دلیان ہاتے ہیں۔
کا نام بعض مُورِ خبین ولید بن مصعب بن ریان اور دوسرے مصعب بن ریان بناتے ہیں۔
اور بعض اہل تھیت نے صرف رُیان یا ریان ابالکھا ہے۔ ابن کثیر گئی رائے ہے اُسی کئیت ابوم و حقی۔ یہ بات میں ملحوظ رُصنی چاہیئے کہ فرعون شام بان مصرکا لقب ہے سی نام ساوڑا کا نام نہیں۔ یان شا بان مصرکا سلسلہ بین ہزار سال فبل مسیح سے نشروع ہوکر سے ہیں۔
مسیح جی سے سنروع ہوکر سے بین مراس میں میں میں میں اور سال فبل مسیح ہیں۔

الغرض مضرت موسیٰ علیه اتسام کی پیدائش اس فرغون مصر کے زمانے ہیں ہوئی جبکہ قتل اولاد" کا قانون مصر میں علیہ اتسام کی پیدائش اس فرغون مصر کے والدین نے جبکہ قتل اولاد" کا قانون مصر میں ختی کے ساتھ نافذی ایجوں توں کرکے والدین نے تین ماہ تک معصوم موسیٰ دعلیہ السلام) کو ہرایک کی نگرانی اور صالات کی نزاکت کی وجہ سے کی مطلق کسی کو خبر نہ ہونے دی لیکن جاسوسوں کی نگرانی اور صالات کی نزاکت کی وجہ سے زیادہ عرصے تک اس کے ان کی والدہ محتر مسخت بریث ان رہنے کلیں۔

ُ اس سخت و نازک وفت خدا و نیه قد دس می دستگیری بهویی جسکی فصسب ل مُدیث الفتون سے نام سے سنن نسانی کتاب التفسیر میں موجو دیے۔

ماری این کثیرنے سے ماماق مناب استیری توبود ہے۔ ابن کثیرنے بھی ابنی تفسیر میں اس طویل حدیث کونقل کرنے سے بعد فرمایا ہم کرحضرت ابن عباس شنے اس روایت کو مرفوعاً بعنی نبی کریم سلی الٹرعلیہ ولم کا بیان قرار دیا ہے اور استے بعد ابنا یہ فیصلہ بھی درج کریا ہے :۔

وَصَدَقَ ذَالِكَ عِنْدِي .

لعنی اس مدیت کا مرفوع ہونا میرے نزدیک درست ہے۔

اسے بعد یہ بھی نقل کیا ہے کہ ابن جریرؓ اور ابن ابی حاتم ﷺ نے اپنی اپنی تنفسیروں میں یہ روایت نقل کی ہے مگر ابن کئیر روایت نقل کی ہے مگر ابن کئیر اور ایت نقل کی ہے مگر ابن کئیر جیسے ناقد صدیت اور نسانی جیسے امام حدیث نے اسکوم فوع تسلیم کیا ہے۔ علاوہ ازیں جن میڈمین نے اسکوم فوع تسلیم کہ نہیں جن میڈمین نے اسکوم فوع تسلیم نہیں کیا انتخوں نے بھی اسکے مضمون پرکوئی کمبر نہیں کی ہے۔ والٹر اعلم۔

الغرض بورى مديث كانزم نقل كياجا تاب حس سے حضرت موسىٰ عليہ الت لام

جیسا کہ لکھا گیا یہ مدبیث مدیثُ الفُتُونُ کے نام سے موسوم ہے ۔ فتون کا لفظ آیت قرآنی سے لیا گیاہہے ۔ التُّرتِعا لئے نے حضرت موسیٰ علیہ ابت لام پر اپنے احما ان شمار کرتے ہوئے یہ ارسٹ و فرمایا :۔

وَفَنَنَّا لَكَ فُنُونًا رَطَا آيت عنه)

یعنی اے موسی ہم نے آپ کو بار بارببتلائے آزمائنس کیا۔ د قالہ الضحاک

اسمیں لفظ فتون سے کیا مرادہے؟ (کئی ایک آنہ مانش) حضرت ابن عباس نے فرمایا اس کا واقعہ بڑا طویل ہے کل صبح سویرے آجا نا بتا دوں گا،جب اگلاون آیا ہیں سویر ہے ہی حضرت ابن عباس کی خدمت ہیں حاضر ہوگیا تاکہ کل کا وعدہ یا د دلاؤں .

حضرت ابن عباس نے فرایا سنو ایک روز فرعون اور اسکے ہمنشینوں ہیں اس بات کا ذکر آیا کہ التہ تعالیہ نے فرایا سنو ایک روز فرعون اور اسکے ہمنشینوں ہیں اس بات کا ذکر آیا کہ التہ تعالیہ التہ الم سے وعدہ فرما یا تھا کہ آئی ذریت میں انہیاراور باد شاہ پیدا فرماتے رہیں گے۔ بعض شرکار مجلس نے کہا ہاں بنی اسرائیل تو اسکے نتظر ہیں جس میں اُن کو فررا بھی شک نہیں کہ اُن کے اندر کوئی نبی ورسول پیدا ہوگا اور پہلے اِن لوگوں کا خیال تھا کہ وہ نبی حضرت یوسف بن یعقوب علیہ استلام ہیں جب اُن کی وفات ہوگئ تو کہنے گئے کہ حضرت ابراہم علیہ استلام سے جو وعدہ کیا گیا تھا یہ اُس سے وفات ہوگئ تو کونے گئے کہ حضرت ابراہم علیہ استلام سے جو وعدہ کیا گیا تھا یہ اُس سے مصدا ق نہیں دکوئی اور نبی پیدا ہوگا جو اس وعدہ کو پور اکر میگا) فرعون نے جب یہ بات مصدا ق نہیں دکوئی اور نبی پیدا ہوگا جو اس وعدہ کو پور اکر میگا) فرعون نے جب یہ بات

مصنی توفکرمند ہوگیا کہ اگر بنی اسرائیل دا ولا دبیقوب ، ہیں جنکو اِس نے غلام بنار کھا ہح سحونی نبی وِرسول پیدا ہوگیا تو وہ ان سومجھ سے آزا د کرا لے گا ۔اس لئے حاضر م^ن محب^س دریافت کیاکہ اس آفت سے بینے کا کیاراستہ ہے ؟ حاضرین مجلس آبیں ہیں مشور سے سرتے رہے آخرسب کی رائے اس بات پرتفق ہوگئی کہ بنی اسرائیل میں جولڑ کا ببیر آبو اسکوقتل کردیا جائے تاکہ نبی ہے ببیدا ہونے اور قوم بنی اسرائیل کو آزا دکرانیکا امکان ہی جتم ہوجائے۔ چنا بخہ ایسے آدمی مقرر سئے گئے جو پنی اسرائیل سے گھروں ہیں ا جا کک جاكرمعا ننه كرتے جبال كونى لاكانظراتا اسكوامٹا ہے آتے اور ذیج كرمے دفن كر ديتے۔ غتی اولا د کامیر لسله ایک عرصه تک جاری ریانسین در بار کے چند آ دمیوں کو احساس ہوا کہ اب توہماری سب خدمتیں اورمحنت ومشقت سے کام بنی اسرائیل ہی انجا م دیتے ہیں۔اگر بیالسائر قتل جاری رہا تو اس قوم سے بوڑھے تو اپنی موت مرجا ئیں سے اور بچے ذیج ہوتے رہیں سے تو آئندہ بنی اسرائیل ہیں کوئی مرد ندر سے گاجو ہماری اور ہمار^ہ اولادی خدمت انجام دے بتیجہ بیہوگا کہ مشقت سے سارے کام مہیں خو د انجام دینا پڑے گا۔ اس اندنیشہ ملے بعداب بیرائے قراریا فی کہ ایک سال میں پیدا ہونیوائے نار نو کوں کو چھوڑ دیا جائے، دوسرے سال میں پیڈا ہونے والے لڑکوں کو ذیج کردیا جائے۔ اس طرح بنی اسرائبل میں تجھ جوان بھی رہیں سے جوا بینے بوڑھوں کی جگہ لیے تکیں اور تھیر ان کی تعکدا د اتنی زَیا د ہ تھی نہ ہوگی جس سے فرعو بی حکومت کوخطرہ ہوسکتے، یہ بات سب كوپ نندآني اورميي قانون نا فذكر ديا گيا -

ا دھرحضرت موسیٰ علیہ انسام تی والدہ کو ایک ممل ایسے وفت ہوا کہ جبکہ بچول کو زندہ جیوٹر دینے کا سال تھا اسمیں حضرت ہارون پیدا ہوئے ، فرعونی قانون کی

ر وسے انھیں کو فئ خطرہ نہ تھا۔ دوسرا سال جولڑکوں سے قبل کا بھا اسمیں حضرت موسیٰ بطون ما در ہیں آئے تو

اُن کی والدہ پرغم وخوف طاری تھا گہاب اگر لڑکا پیدا ہوگا توقتل کر دیا جائے گا۔ حضرت ابن عباس نے قصے کو یہاں تک پہنچاکر فرما یا کہ اے ابن جبیسے کُر فتون بعنی آزبائش کا یہ بہلاموقعہ تھا کہ موسیٰ علیہ است لام ابھی وُنیا میں پیدا تھی نہیں ہوئے کہ اُن کے قتل میں مصوبہ موجو د تھا۔ چنا سنچہ موسیٰ علیہ السلام پیدا ہوئے۔

دسوره قصص آيىتى كا

" جبتم کواپنے بیچے براندسیم و تواسکودریایں طوالد واورتم کوئی خوف اورغم مذکروہم اسکو تمہارے پاس وائس کردینے اور اسکورسول بنانے والے ہیں "

جب موسیٰ علیہ الت لام پیرا ہو گئے توالٹٹر تعالئے نے والدہ کو تکم دیا کہ اسکوایک تا ہوت دصندوق) ہیں رکھ کر دریا دنیل) ہیں ڈال و ویصرت موسیٰ علیہ الت لام کی والدہ نے حکم کی عمیل کر دی۔

جب وه تابوت کو دریا کے حوالہ کر کئی توشیطان نے وسوسہ ڈالاکہ یہ تونے کیا کام کیا ؟ اگر بچتہ تیرے پاس رہ کر ذبح بھی کر دیا جاتا تواپنے ہاتھوں سیرکفن دفن کرکے کچھ تی توہوجاتی اب تواس کو دریا کے جانور کھاجا 'بینگے۔

اموسی علیہ السلام کی والدہ اسی غم وفکر ہیں بہتلا تھیں کہ دریا کی موجوں نے البوت کو ایک ایسی چٹان پر بھینک دیا جہاں فرعون کی باندیاں لونڈیاں نہانے دھونے کے لئے جا یاکرتی تھیں اُتھوں نے جب یہ تابوت دیجھا تو اُتھا لیا اور کھولنے کا ادادہ کیا تو اُن میں سے سے جا اگر اسمیں سے بچھ رکھ لیا ہوگا اسکے بعد ہم جھ بھی کہیں مقین نہ تو اُن میں سے سے کہ اس تابوت کو اسی طرح اُنھا کر فرعون کی بیوی ہے آگے دیکے دیا جا سے بہتریہ سے کہ اس تابوت کو اسی طرح اُنھا کر فرعون کی بیوی ہے آگے دیا جا ہے۔

مرسوریں بیا ہوں کی بیوی نے جب تا ہوت کھولا تواسمیں ایک ایسالا کا دیکھا جس کو دیکھتے ہی اُس کے دل ہیں اُسکی اتنی محبت پیدا ہوگئی جواس سے پہلے کسی بیجے سے نہیں ہوئی ۔ نہیں ہوئی ۔

دوسری طرف حضرت موسیٰ علیہ است لام کی والدہ بوسوسۂ شیطانی الٹرتعالے کے اس وعدہ کو مجول گئیں اور صالت یہ ہوگئی :۔

وَ أَصُبَحَ فُوْ الْهُ أَقِدِ مُوْسِىٰ فَا دِغًا. الله رسورة تعن يعنى موسىٰ عليه السّلام كى والده كا دل برخوشى اورم زحيال خالی ہوگیا دصرف موسیٰ کی فکرغالب آگئی) ادھرجب بڑکوں سے قبل پر مامور بولیس والوں کو فرعون کے گھر بیں ایک لڑ کا آ جانے کی خبر ملی تو وہ جیٹریاں لیکر فرغون کی بیوی کے یاس پہنچ گئے کہ یہ لڑ کا نہیں دے وو تاکہ ذبح تحردیں۔

تصرت ابن عباسُ نے بہاں بہونجگر تھیرا بن جبرِ کو مخاطب کیاکہ اے ابن جبرِ^{رہ}

فتوں تعنی آنہ مائش کا بہر دوسرا) واقعہ ہے . فتوں تعنی آنہ مائش کا بیوی نے اِن سٹ کری لوگوں کوجواب دیا کہ انھی تھیروکے صرف ایک لڑکے سے تو بئی اسرائیل کی قوت نہیں بڑھ جائیگی میں فرعون سے اس بچے کی جان بخثی حرانی ہوں۔

اگرفرعون نے بخش دیا تو بیرہتر ہوگا ورنہ تمہار ہے معاملہ ہیں دخل پنہ دوں گی اور بیر بختر تنہارے حوالہ ہو گا. بیر کہہ کر وہ فرعون کے پاس گئی اور تھنے لگی کہ بیر بختے میری اور

آبی آبکھوں کی تصنارک ہے۔

فرغون نے کہا ہاں تمہاری آئکھوں کی مٹھنٹرک ہونا تومعلوم ہے دکیونکہ اس وقت تک کوئی اولا دیز تھتی مگر مجھ کو اسکی کوئی صرورت نہیں ہے۔

استح بعد حضرت ابن عباس شنے فرما یا کہ رسول النٹرصلی التٹرعلبہ ولم نے فرما یا سمے اُس زات کی جبکی قسم کھا ئی جاسکتی ہے اگر فرعون اُس وقت بیوی کی طبیرہ ا ہے گئے بھی موسیٰ علیہ الت لام ملحوا بنی آنکھوں کی مٹھنڈک قبرار دیتا توالٹڈ تبعالے اُسکو

تھی ہرایت عطا کر دیتا جیسا کہ اُسکی بیوی کو ہرایتِ ایما ن عطا کی ۔

د بہرحال بیوی سے سینے پر فرعون نے اُس لڑ سے کو قتل سے آزا دکر دیا ، ا ب فرعون کی بیوی نے اسکو دو دھ یلانے سے لئے اپنے آپ بیاس کی عور تول کو کہا یا ، سب نے چا ہاکہ موسیٰ کو دووھ پلانے کی خدمت انجام دیں مگر بچیشی کا دودھ بینے کو تیار نہیں تفاءاب فرعون کی بیوی کو یه فیمر ہوگئی کہ جب بیسی کا دو دھ مہیں لینا توزندہ سیسے رہے گا۔ اس لئے اپنی کنیزوں سے سپر د کیا کہ اسکو بازار اور لوگوں سے مجمع میں لیجائیں شاید مسی عور کا دود ه فبول محر ہے۔

دوسری طرف موسیٰ علیہ التلام کی والدہ نے بے چین ہوکر اپنی بیٹی د موسیٰ کی بہن) کو کہا کہ ذرا با ہر حاکر تلاین کر اور لوگوں ہے دریا فٹ حرکہ اُس تابوت اور بچیہ کا

کیا انجام ہوا ؟ وہ زندہ تھی ہے یا دریانیؑ جا نوروں کی غذا بن جکا ہے۔ اس وقت تک اُن کوالیتر تعالیے کا وہ وعدہ یا رنہیں آیا جوحالتِ حمل ہیں اُن سے بچے کی حفاظت اور چندروزمفارقت سے بعد والبی کاکیا گیا بھا،حضرت موسی کی بن بالمركلين تو (الشركي قدرت كامشابه ه كيا) فرعون كى كنيزى أس بيج كولئے بوئے وودھ یلا فروالی عور توں کی تلاش میں ہیں جب بہن نے یہ معاملہ دیجھا کہ بچیکسی کا وو دھ نہیں ليتااوريه كنيزي يريشان بي توإن سے كها كه بين مهيں ايك ايسے تھرانے كا بہت دیتی ہوں جہاں مجھے امبیہ ہے کہ بیراُن کا دو دھ بھی بی لے گا اور وہ لوگ اسس کو خیرخواہی ومحبت سے ساتھ برورش تھی کریں سے۔ پیشن محرکنیزوں نے اُس کوشہیں كيرالياكه يبعورت ثايداس بيحى مال ياقريبي عزيز ہے جواننے وثوق سے ساتھ كہہ رہی ہے کہ وہ گھروالے اسکے خیرخوا ہ اور ہمدر دہیں (اسوقت یہ ہن کھی پرایٹان ہوگئیں) حضرت ابن عباس نے اس جگہ پنجیر مھر ابن جبیر کو خطاب کیا کہ یہ ڈنمیسرا) واقعہ فَتُونِ بِعِنَى آزِ مِانَشَ كاسے واس وقت موسیٰ علیہ استلام کی مبہن نے بات بنائی اور کہا کہ میری مرا داس تھروالوں سے ہمدر د وخیرخوا ہ ہونے سے مرادیہی ہے کہ فرعونی دربار تک اُس خاندان كى رسانى مَوكى جس سے أنحومنا قع ملنے كى اُميد بہوگى اس لئے وہ اس سيح كى محتبت وخیرخواہی میں کوئی کسنمہیں کریں گے۔ پیشن کر کنیزوں نے اُن کو چھوڑ دیا۔ يه والس آكرا بني والده كو واقعه كي خبر دى اوراينے ساتھ ليكراُس جُكَه پنجيں جہا یمنیزی جمع تقیں ،کنیزوں سے کہنے برامخوں نے تھی بچے کو گو دیں لیا ، موسیٰ فوراً اُنکے سینے سے چیٹ کر دودھ پینے گئے بہاں تک کہ سیر ملم ہو سے، یہ نوٹ خبری فرعون کی بیوی کومپنجی کہ اس بیجے سے لئے دودھ بلانے والی مل گئی ۔ فرعون کی بیوی نے اُن کو طلب کیا اُمفوں نے آگر حالات و پھے اور پیمسوس کیا کہ فرعون کی بیوکی میری صرورت محسوس سحررہی ہے تو دراخود داری ہے کام لیا ، فرعون کی بیوی کے کہاکہ آپ یہاں محل میں رہ کر پیر اس بيج كو د و ده يلا ياكرين محيونكم محيط اس بيج سے اتنى محبت ہے كہ بين اسكوا بني نظرون ہے غائب و بچے نہیں ہے۔ موسیٰ علیہ التلام کی والدہ نے کہا میں تواپنے گھرا وربچوں کو چوور كريهان قيام نهي رسكتي . ، ہاں آگر آپ اس بات پرراضی ہوں کہ بچپر میرے سپُروکریں میں اپنے گھرد کھرکم

اسکو دو ده پلاؤں گی اور به وعده کرنی ہوں کہ بیجے کی خیزخواہی اِ ورحفاظت ہیں ذرہ برابر کوّناہی نوکروں گی۔موسیٰ علیہ السّلام کی والدہ کو اسوقت التّٰرنغا کیٰ کا وہ وعدہ یاد آگیا جمیں کہاگیا تھا کہ چندروز کی جدانی کے بعد ہم موسیٰ کو تہارے پاس والیں ک^وینگے اِس لئے وہ اپنی بات پرمزید اصرار کرنے گئیں فرعون کی بیوی نے مجبور ہوکراً ن کی بات مان لی ، کیونکہ بچیسی طرح بھی تحسی کا دوردھ پینے کو تیار یہ تھا۔ اس طرح والدہ نے اُسی دن موسیٰ کو اپنے محفرك آئين اور التيرنعالے كاوه وعدہ پوراہواكہ اس بيچے كو دريا ميں ڈال دے اور تو نہ خوف کر مذعم کر مینک ہم اس مجے کو تیرے پاس پہنچا دیں گے۔

مجھ عرصہ بعد فرعون کی بیوی نے اُن کی والدہ سے کہا کہتے کو لاکر د کھلاجاؤ۔ إد صرسب دربار بول كوضم دياكه يه بجه آج بهمار معل بين آر باي تم بب كوني تجمي ايسانه رہے جواس كا اكرام نه كرے اسكی نظرانی بیں خود كرنتی ہوں كرتم لوگ اس معاملہ میں کیا کرتے ہو۔

اس کا اثر بیہ ہوا کہ جس وقت موسیٰ علیہ الت لام اپنی والدہ کے ساتھ گھرسے مکلے ہیں اُسی وقت سے اُن پر تحفوں کی بارش ہونے گئی ۔ جب فرعون کی بیوی کے ہاں ملے بیں اُسی بوقت سے اُن پر تحفوں کی بارش ہونے گئی۔ جب فرعون کی بیوی کے ہاں يہنچ تواس نے بھی اپنے پاس سے فاص تحفے اور ہدایا پیش کئے۔ فرعون کی بیوی بچے کو دیچھ کر بیحد مسرور ہورہی بھتی اسکے بعد کہا کہ اب میں اس بیچے کو فرعون کے پاسس لے جاتی ہوں تاکہ وہ بھی خوش ہو۔جب وہ لے کر فرعون کے پاس بہجی نو فرعون نے فرطِ مسترت سے انکو گو د میں ہے لیا موسیٰ نے غیر شعوری طور پر فرعون می داوھی پکرو کر زمین کی طرک محملادیا ، اسوقت در بار کے لوگول نے فرعون سے کہا کہ آپ نے دیکھ لیا كه التُدتِعائك نے این ابراہم دعلیہ السلام سے جووعدہ کیا تھا کہ بنی اسرائیل ہ ایک رسول بیدا ہوگا جو آپ کے ملک و مال کا وارٹ ہوگا .آپ پر غالب آے گا اور آپکو

یہ وعدہ پورا ہورہاہے (ویسے بھی اس بچے کی جان بخشی پر در باریس سرّکوٹیاں مراہ مان منت ِ اِن عَنِينِ ﴾ اس اندبيث، بر فرعون متنبه بهوا اور اُسی وقت جلّا دوں کوطلب کيا تاکہ تيجے کو ذبح کر دیاجائے۔

حضرت ابن عباس في يهال پېنچکر مجيرا بن جبير کوخطاب کيا که په جویمقا واقعب

بدایت کے چراغ

۔ فُتُون مینی آز ہائش کا ہے کہ موت بھر منٹر لانے لگی۔ فرعون کی بیوی نے پیچومنظر د کھھا تو کہا کہ جناب والا! آپ بیر بتچہ مجھے دے جیکے

ہیں بھیراب بیر کیامعاملہ ہور ہاہے۔؟ فرعون نے کہاکہ تم نیمہیں دکھتیں کہ بیدلڑ کا اپنے عمل سے کو یا بید دعویٰ کررہاہے

که و ه مجه کوزمین بریجها از کرغالب آجائے۔

بیوسی نے تبا (کہ بچے نے یہ معاملہ بچپن کی عام عادت کے مطابق شوخی اور غیر شوری طور پرکیا ہے ، بخر بے کے طور پر آپ بھیراسکا امتحان لیں دوآگ کے انگار اور دوّعد دمونی منگوائیے اور دونوں اس بچے کے آگے رکھ دیجئے۔ آگر یہ موتیوں کی طون ہاتھ بڑھا یا اورآگ کے انگاروں ہے بچا تو آپ بھی لیں کہ اس بچے کے انگاروں کی ہاتھ بڑھا یا اورآگ کے انگاروں ہے بچا تو آپ بھی لیں کہ اس بچے کے انگاروں کی کے ساتھ دیدہ و دانت ہیں۔ اور آگر یہ بچہ موتیوں کے بچائے آگ کے انگاروں کی طون ہاتھ بڑھا کے تو یہ بھین ہوجائے گا کہ یہ کام سے عفل و تعود سے نہیں کیا گیا کیو کہ کوئی کوئی کوئی کوئی کے انگارے اور قوعد دموتی بچے کے سامنے رکھ دیئے گئے تو بچے نے انگارے ہوئین داور منوسی والے بی خوبین یہ دیکھا تو فورا اُن کے ہاتھ سے انگارے تھیں داور منوسی والے بار ہے ہوئی کا داڑھی پکڑنا کیا صیاحت کی اس طرح فون کی طرف کے بیوں کی میں کی بیوی کی ہاتھ ہے کا ڈاڑھی پکڑنا کیا صیاحت کی اس طرح انگارے کے بھریہ موت بھی موسی علیہ اسلام سے مثلا دی کیونکہ اُن اس طرح اللہ تعالی استراخ اللہ نے بھریہ موت بھی موسی علیہ اسلام سے مثلا دی کیونکہ اُن اس طرح النہ تعالی در آئی کی ایک کا میں ایک کا داڑھی پکڑنا کیا صیاحت کا موسی علیہ استام سے مثلا دی کیونکہ اُن اس طرح النہ تعالی در اس طرح النہ تعالی اس طرح اللہ نے بھریہ موسی علیہ استام سے مثلا دی کیونکہ اُن اس طرح النہ اعزاز داکرام اور شام ہوسی علیہ استال می خودن کے شام لیا نہ اعزاز داکرام اور شام ہوسی علیہ استال می موسی علیہ استال میں موسی علیہ استال میں ہوت کی ہوں کی ہونکہ کوئی ہونکہ کی ہو

سے آتے کام بینا تھا داسطرے موسیٰ علیہ اُت لام فرعون کے شاہانہ اعزاز و اکرام اور شاہانہ خرج پر اپنی والدہ کی مگرانی ہیں پرورش پاتے رہے یہاں تک کہجوان ہوگئے) خرج پر اپنی والدہ کی مگرانی ہیں پرورش پاتے رہے یہاں تک کہجوان ہوگئے) اُن سے ناہی اکرام واعزاز کو دیچھ کرفرعون سے لوگوں کو بنی اسرائیل پروہ کام

اور تم کرنے کی ہمت کم ہوتی رہی جواس کے پہلے آل فرعون کی طرف سے نہیث اور تم کرنے کی ہمت کم ہوتی رہی جواس کے پہلے آل فرعون کی طرف سے نہیث

بنی اسرائیل پربہوتارہتا کھا۔ ایک روزموسیٰ علیہ ات لام شہر سے کسی گومٹ میں جلیے جارہے بھے کہ دیکھا سرویوں میں تاہیمیں را رہے ہیں جنمیں ایک فرعونی (اک فرعون سے) تھا اور دوسے ما

اسرائیلی (قوم موسیٰ ہے) تھا۔

اسرائیلی نے موسی علیہ الت الم کو دکھ کر امدا دے گئے پکارا۔ موسی علیہ الت الم کو فرعونی کی بے جا جسارت پرغصہ آگیا جبکہ وہ جانتا ہے کہ موسی رعلیہ السلام) اسرائیلی کی حفاظت و مد دکرتے ہیں۔ موسیٰ علیہ الت الم مومکن ہے التٰہ تعالیے نے اُن کی والدہ محترمہ یاکسی اور ذراعہ سے یہ معلوم کروا دیا ہو کہ یہ دو دھ بلا نے والی عورت ہی تمہاری حقیقی والدہ ہیں اور یہ کہ موسیٰ علیہ الت الم نے شدید عضب کی حالت میں اس فرعونی کے ایک م کارسید کیا جسکو وہ برداشت نہ کرسااور وہیں مرگیا۔ اتفاق سے و ہاں کوئی اور آدمی موجود نہ تھا جو فرعون تک مخبری کر دے جب بہ فرعونی موسیٰ علیہ است الم کے ہاتھ مارا گیا توان مفوں نے استعفار کیا اور کہا یہ کام شیطان کی طرف سے ہوا ہے۔ بھر بارگاہ الہی ہیں مغفرت طلب کی۔

اُ مے میرے پرور دگار میں نے اپنے آپ پرظلم کیاہے دکریہ خطا مجھ سے سرز دہوگئ) مجھے معان فرمادیجئے ، التیر تعالے نے معاف فرمادیجئے ، التیر تعالیے نے معاف فرمادیا کیونکہ وہ ہی معاف کرنے والا اور بہت رحمت والا ہے ؟

صفرت موسیٰ علیہ است لام اس واقعہ سے بعد خوف و ہراس سے عالم میں یہ جا نے کی کوشش کرتے دہے کہ اس فرعونی کے قبل پرآل فرعون کا رقمل کیا ہوا ؟ معلوم ہوا کہ فرعون تک بہمعا ملہ اس عنوان سے بہنچا ہے کہ کسی اسرائیلی نے آل فرعون کے ایک فرعون کے ایک آدمی کوفت کر دیا ہے۔ لہذا اسرائیلیوں سے اِس کا انتقام لیا جائے اور اس معاملہ ہیں کسی قسم کی ڈھیل نہ دی جائے۔

فرعون نے اس کا یہ جواب دیا کہ اسکے قائل کو تلاش کرکے مع شہادت بیش

كياجائي بب اس كاانتقام ضرورلوں گا۔

آل فرعون پیسنگرگل کوچوں بازاروں بیں گھومنے لگے کے کہبیں اس کا سراغ مل جائے گرامخیں اس کا کوئی سراغ نہیں مل رہاتھا۔

اچانک ایک اور واقعیر بیش آگیا کہ ایک روزحضرت موسیٰ علیہ الت لام اپنے گھرسے تکلے ہی تھے کہ اُسی اسرائیلی کو دیجھا کہ کسی دوسرے فرعونی شخص سے حبگاڑ رہاہے حضرت موسیٰ علیہ الت لام کو دیجھ کر اُس نے سابقہ کی طرح مدد کرنے پیکارا منگر حضر سنے موسی علیہ است لام گزشتہ وا قعہ پر نا دم وشرمندہ ہی ہور ہے تھے اور اس وقت اُسی اسرائیلی کولٹرتے دیچھ کر اِبپر نارافن ہوئے دکہ خطا درافسل اسی اسرائیلی کی معلوم ہوتی سے بہ حکر الوقسم کا آدمی ہے ہروقت حکر تا ہی رہتاہے) گربطور تنبیہہ اپنے قومی آدمی اسرائیلی کوغصتہ سے کہا کہ تونے کل مجمی حکم اگراکیا تھا آج مچھر لڑدیا ہے ؟

ہمزای و صدیح مہا تہ وہے گا بی جسرہ میا تھا ہی چیز کر در ہستے ہ اسرائیلی حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی اس تنبیہہ سے خوف ز وہ ہوگیاا ور اُن کے الفاظ سے اسکو پیٹ بہ ہواکہ یہ آج مجھے ہی فکٹ ل کر دیں گے تو فوراً بول پڑاا ہے

موسیٰ کیا تم چاہتے ہوکہ محصے بھی قتل کر والوجیے کہ کل تم نے ایک خص کوفتل کردیا تھا؟ یہ باتیں ہونے کے بعدیہ دونوں ایک دوسرے سے الگ ہوگئے. گرفر عونی

شخص نے آل فرعون کے اُن لوگوں کوجوکل سے قانل کی تلاش میں مقطے جاکر خبر دے دی شخص نے آل فرعون کے اُن لوگوں کوجوکل سے قانل کی تلاش میں مقطے جاکر خبر دے دی کرخو د اسرائیلی نے موسیٰ سے کہا ہے کہ تم نے کل ایک آدمی قبل کر دیا ہے۔ یہ خبر فرعون

تک فوراً بہنچائی گئی۔ فرعون نے اپنے آ دمی موسیٰ علیبہ است لام کو گرفتارکرنے روانہ کرئے۔ ۔

دوننری طرف حفرت موسیٰ غلیہ است لام سے تعیر خواہموں میں سے ابک شخص جو شہر سے کسی بعید حصے بیں رہتا تقامسی طرح اسے یہ خبر لی کہ فرعونی سیا ہی حضرت

جوشہر سے کسی بعید خصے ہیں رہتا تھا تھی طرح آسے یہ خبر ملی کہ فرعونی سیاہی حضرت موسیٰ علیہ السلام می تلاش بین نکل کیکے ہیں اس نے سی طرحے موسیٰ علیہ السالام کا بہنچکر یہ خبرد ہے دی کہ موسیٰ آپ می تلاش سے لئے ایک جماعت نکل کیجی ہے تاکہ بہ شہر قریب میں مدہ فتاس سالمان سائی سائی ہیں جماعت نکل کیجی ہے تاکہ

آب کو آس فکل سے بدلہ بین فتل کرد یا جائے۔ لہذا بین آپ کی خیر خواہی کے لئے کہتا ہوں کہ آپ کی خیر خواہی کے لئے ک کہتا ہوں کہ آپ شہر سے نکل جائیے۔

ہما ہوں ہم ہپ ہرکے کی بات عباس نے بھرا بن جبیر کومخاطب کیا کہ اے ابن جبیر یہ دیانخواں) واقعہ فتون تعبیٰ آزمائش کا ہے کہ موت سر براجی ہے الترنے بخات کا سامان بیدا فرمادیا۔

خضرت موسی علیہ الت لام یہ خبر صنکر شہرسے فوراً نکل گئے اور شہر مَدْیَنُ

کی طرف اُرخ کیا۔ یہ آج بک شاہی نازونعمت میں بلے بھے بھے بھی محنت ومشقت کا نام تک نہ جانتے بھے مصریے نکل بڑے گرراستہ بھی تہیں کا نہ جانتے بھے گراپنے رب پر مھروسہ تھا دل ہیں کہا مجھے اُمید ہے کہ مبرارب مجھے راستہ دکھا دے گا حب شہر مضرت موسی علیہ الت کا شرافت سے مثا تر ہوئے اور حود اسے بڑھ کر سمنویں سے پانی بکالنا مشروع کیا البترتعالے نے قوت وطاقت بخشی مقی فری جلدی ان کی کمریوں کوسیراب کردیا۔

بیعور بہت اپنی بگریوں کولیکر گھرآگئیں اور حضرت موسیٰ علیہ الت الم ایک درخت کے سایہ بین بیٹھ کئے اور الٹر تعالے سے دُعا کی 'میرے پرور درگار ہیں محتاج ہول س سے سایہ بیں بیٹھ کئے اور الٹر تعالے سے دُعا کی 'میرے پرور درگار ہیں محتاج ہول س نعمت کا جرآب میری طرف بھیجیں'' (مطلب یہ تھا کہ طعام و فیام کا کوئی انتظام ہوجا) یہ لؤکیاں اپنے ہرروز سے وقت سے پہلے گھر پہنچیں توان سے والدکو تعجب ہوا پو جھاکہ اج جلد کیسے آگئیں ؟

لڑکی کو کہا کہ اس مرد کو بلاؤجس نے یہ احسان کیاہے۔ وہ آئیں اور موسی علیہ الت لام کو کہا کہ اس مرد کو بلاؤجس نے یہ احسان کیاہے۔ وہ آئیں اور موسی علیہ الت لام کواپنے ساتھ لیکر گھرینہ چیں۔ والد نے اُن سے حالات دریا فت کئے اور تسلی دی کہ تم نے نظالم قوم سے نجات پالی ، ہم نہ فرعون کی سلطنت میں ہیں ندا سکا ہم پر کچھ ملی سالم ہوئے مالی کہ ہم نے فرعون کی سلطنت میں ہیں ندا سکا ہم پر کچھ ملی سالم ہوئے اپنے اور ایا باجان اور کو آپ بلازم رکھ لیجئے کیونکہ ملازمت کیلئے وہ بہتر آدمی ہیں قوی بھی ہیں اور امانتدا ہی والد کو لڑکی کی بات سن کر غیرت آئی پوچھا بیٹی تم کو اُن سے یہ صفات کیسے معلوم ہو اگر جب بین آن کو اُن کے کنویں سے پانی کھینچئے بر ہر ہوا کہ سب لوگوں سے پہلے اُن خوں نے اپنا کا م تمام کر لیا دوسراکوئی اُن کی برابری ندکر سکا اور امانت و دیا نت کا حال اس طرح معلوم ہواکہ جب میں اُن کو بلانے تھی ہوں تو ہیلی نظر میں اُن میں ایک عورت ہوں تو اپنا سرنیچا کر لیا اور اُس وقت تک اپنا میں اُن میں اُن اور اُس وقت تک اپنا

سرنہیں اُٹھایا جب تک کہ بیں نے اُن کو آلچا پیغام نہیں میہنچا دیا. اسکے بعد اُنمفوں نے مجھ سے کہاکہ تم میرے پیچھے پیچھے حلوا ور اپنے گھر کا راست

سے جاتا ہے۔ سے ہے ہتلانی چلو۔ یہ ہات صرف وہی مرد کرسکتا ہے جوا مانتدار ہواؤلو بیندار ہو۔ رسے ہے ہتلانی جلو۔ یہ ہات صرف وہی مرد کرسکتا ہے جوا مانتدار ہواؤلو بیندار ہو۔

والدكوروكي في اس واكت مندائه بات پرمسرت بوني اوراسي تصديق فرماني

اورخود میں امنیں اس بات کا یقین ہوگیا کہ موسیٰ علیہ الت کام بہت ہی بااخلاق انسان ہیں۔ اس وقت روا کیو یہ بات کا یقین ہوگیا کہ موسیٰ علیہ الت کام ایسے ہی بااخلاق انسان ہیں۔ اس وقت روا کیو رسے والد نے موسیٰ علیہ الت کام سے کہا تھ کیا آ بکو یہ بات بہندہ کہ ہیں اور آس وونوں ہوسی شرط یہ ہوگی کہ آپ کے میں اور آس ہوں ہوسیٰ میں شرط یہ ہوگی کہ آپ آس میں ہمارے ہاں مزدوری کریں ہوا ور آس آپ پورے دست میں کردیں تو آپ کا اختیا رہوگا۔ ہم آپ پرزیا دہ مشقت والنانہیں چاہتے لا یہ حضرت شعیب تو آپ کا اختیا رہوگا۔ ہم آپ پرزیا دہ مشقت والنانہیں چاہتے لا یہ حضرت شعیب

سید است است موسی علیه است ام نے اس عقد کومنظور کرلیاجسکی روسے حضرت موسی علیہ است ام میں معدد معامدہ لازم ہوگئی باتی دو سال کا وعدہ علیہ است ام پرصرف آمھ سال کی خدمت بطور معامدہ لازم ہوگئی باتی دو سال کا وعدہ

اختیاری رہا دلیفالیا اُس زمانے کامہریقای حضرت سعید بن جبیر فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ ایک نصرانی عالم محصے ملا اُس مصرت سعید بن جبیر فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ ایک نصرانی عالم محصے ملا اُس

نے سوال کیا کہ تم جانتے ہو کہ موسی علیہ است لام نے دونوں میعا دوں سے کون سی میعا د پوری تی ہ میعا د پوری تی ہ

سیا و پوری و بیس نے کہا مجھے معلوم نہ ہیں کیونکہ اُس وقت حضرت ابن عباس کی یہ مدین الفتو میں نے کہا مجھے معلوم نہ ہیں کیونکہ اُس وقت حضرت ابن عباس سے کیا۔ اُنفول می یہ دستے بعد میں حضرت ابن عباس سے ملا اور یہ سوال اُن سے کیا۔ اُنفول نے فریا یا کہ آبھ سال کی مدت تو پورا کر نا حضرت موسیٰ علیہ استلام پر واجب تضاہی کین التٰ تعالیٰ کو اپنے رسول (موسیٰ علیہ استلام) کا اختیاری وعدہ بھی پورا کروانا مقصود میں اس نے رسی میں سال کی مدت پوری کی۔ اس سے بعد میں اُس نصرانی عالم سے ملا اور اُسکو یہ خبردی تو اُس نے کہا کہ تم نے جس شخص سے یہ بات معلوم کی ہے کیا وہ تم نے اور علم والے میں کا میں کہا کہ تم نے جس شخص سے یہ بات معلوم کی ہے کیا وہ تم نے اور علم والے میں کا میں کہا کہ تم نے جس شخص سے یہ بات معلوم کی ہے کیا وہ تم سے نیا وہ علم والے میں ک

بیں نے کہا ہاں و ہ مہت بڑے عالم اور ہم سب میں افضل تزین ہیں! دالغرض دخل سال کی میعاد پوری کرنے سے بعدجب) حضرت ہموسیٰ علبالسلام

ا بنی اہلیمحتر مہ کولیکر احضرت شعیب علیہ التلام کی وطن تہر مدین سے رخصت ہو کے د تأكه اینے وطنَ مصرحیلیں ، راستنه معلوم نه نظا موسم سخت سرد مقاررا ه بین آگ كی صرورت بیش آئی کوه طور پرآگ نظرا تی دجوحقیقت میں الوار الہی تھے) آگ لینے گئے وہاں حيرت انتكيز مناظركم بعدمعجزه عُصاا وريد ببيضا اورا سكے ساتھ منصب نبوّت ورسالت عطا ہونی اور پیمم دیا گیا کہ فَرعون سے پاس جاؤا وراُسے اللّٰہ کا بیغام پہنچاؤ دجس کی

تنفصیل قرآن میں موجود ہے)

الشيح بعدحضرت موسى عليه استلام كويه فكر لاحق بهوني كربين فرعوني ورباركامفرار ملزم قرار دیاگیا ہوں اور مجھ سے فرعو نی کا قصاص تھی لئے جانے کا حکم نا فذَہو دیکا ہے۔ اب میں تس بر سے ساتھ دعوتِ رسالت لے سر فرعون سے پاس جاؤں کیزا بنی لکنتِ زبا^ن ا كا عذرتهم سامنے تھا۔ التّرى جناب ميں عرض معروض بيت سمّى ،التّد نعالے نے اُن كى خواہش پراُن سے بھائی حضرت ہارون علیہ الت لام کونٹریک رسالت بناکراُن ہے پاس وی بخیجدی اور پیکم د باکه و ه حضرت موسی علیه التلام کاشهرمصری با هراستنا كربي، چنانچه جب موسى عليه ات لام و بال پهنچ تو بارون عليه ات لام سے ملا فات ہوئی دونوں مجھا فی حسب المکم فرعون کو دعوٰتِ حق دینے کے لئے اُس سے دربار ہیں پہنچے ، کچھ د پرتوا تخیی در بارېپ حاضری کامونغه نهبی د پاگیا. تھراجازت ملی د ونوں بھائیوں نے فرعون سے اپنا تعارف کروا یا اور کہا:۔۔

ہم د ونوں تیرے رب کے پیغیبر ہیں!

فرعون نے یو حیا:۔

موسیٰ وہارون علیہماالٹ لام نے وہ بات نمہی جس کا قرآن نے خود ذکر کیا ہے۔ 'ہمارا رب وہ ہے جس نے ہر چیزکو پیداکیا ا ور نھیسر ''ہمارا رب وہ ہے جس نے ہر چیزکو پیداکیا ا ور نھیسر

أسكى رہنما ني كى "

اسپر فرعون نے یو چھا کہ مھرتم دونوں کیا جیاہتے ہو؟ اور ساتھ ہی اُس مقتول کا واقعہ ذكر كرسح حضرت نمونني عليه الت لام كومجرم تطيرا بإ (اور اپنے گھریں اُن کی پر ویشش یانے کا احسان جٹلایا)

حضرت موسیٰ علیہ است لام نے دونوں ہاتوں کا جواب دیا جو قرآن حکیم میں نرکورے۔ دمیعنی مقتول کے معاملہ میں اپنی خطالا ورغیرارا دی قتل کا اعتراف کیا اور یرورش نے بارے میں کہا کہ یہ الٹر کا فیصلہ تفاج کچھ الٹیر کومنظور تھا وہ ہوگیا) ایسے بعدحضرت موسى عليه استلام نے فرعون كوخطاب كياكہ تم اللّه يرايمان لاؤاً سيح سواكوني اورمعبو دنہبیں ہے اور بنی اسرائیل کوغلامی سے آزاد کردو۔ م

فرعون نے اس سے انکار کیا اور کہا کہ اگر تمہار نے پاس رسولِ رب برویکی کوئی دلبل ہوتو پیش سروا سپرحضرت موسیٰ علیہ الت لام نے اینا عصا زمین پر ڈال دیا تو وہ ایک زبر دست اژوهای شنگل میں منھ کھولے فرعون کی طرف لیکا ، فرعون خوفزدہ ہوکر ا بنے تخت سے نیچے جھپ گیا اور موسیٰ علیہ التلام کے پناہ طکب کی کہ اسکوروک لیں،

حضرت موسی علیہ انت لام نے اسکو بیٹر لیا۔

اسے بعد اینا ماہھ گریبان میں ڈال کر نکالا تو و ہ رسورج کی طرحی جیکنے لگا۔ یہ دوسرامعجزہ تھاجوفرغون کے سامنے آیا تھردو بارہ گریبان میں ہاتھ ڈالا تَو و ہ اپنی الصلى حالت يرآ تجيا-

فرُّعوا في ميبت زوه مهوكراين الى در بارت مشور ه كيا ، ممين كياكرنا جا ميني ؟ ور باربوں نے متفقہ طور پر کہا کہ یہ دونوں جا دوگر ہیں اپنے جادو کے وربعیہ ہم کواپنے ملک سے بکال ہا ہرکر نا چاہتے ہیں اور ہمارے دین وند مہب کومٹا ناچاہتے ہیں۔آپ ان کی کوئی بات نہ مانیں تھیونکہ آپ سے ملک میں بڑے بڑے جا ووگر ہیں۔ آپان کوبلالیجئے وہ اپنے جا دوسے اِنکے جا دو پرغالبِ آجا کیں گئے۔ فرعون نے اپنی مملکت کے سب شہروں میں حکم دیے ویا کہ جتنے آدمی جادوگری

میں ماہ مہوں وہ سب سے سب دربار میں حاضر کر دیئے جائیں۔ ملک بھرسے ما دوگرجمع ہوگئے تو اُمھوں نے فرعون سے پوچھاکہ جس جا دوگرسے آب ہمارامقابله کروانا چاہتے ہیں وہ کیاعمل کرتاہے ؟

فرعون نے جواب دیا کہ وہ اپنی لامٹی کو سانپ سا دیتا ہے۔ جا دوگروں نے ڑی بے فکری سے کہایہ تو کوئی چیز نہیں جمیں خود لا تھیوں اور رسیوں کو سانپ بنادینج كاجوجا دوحاسل ہے اسكاكوني مقابله مهي كرسكتا بمرتبيعي يه طے كرديج كه اگرتيم اسپر

بدایت کے چراغ

غالب آگئے توکیا انعام ملے گا؟

فرعون نے کہاکم تم میرے خاندان کا جزم اورمقربین فاص ہیں داخل ہوجا وُگے اورتمہیں وہ سب کچھ ل جائیگا جوتم چاہو گئے۔

اسے بعد مقابلہ کا وقت اور مجگہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے طے کر کے اپنی عید

کا دن اورصبح چاشت کا وقت مقرر کر دیا۔

ابن جبیر کہتے ہیں کہ حضرت ابن عباس نے مجھ سے بیان فرمایا ان کا یوم المؤینیة رمیعنی عید کا دن ، جس میں الٹرتعالے نے حضرت موسیٰ علیہ است لام کو فرعون اور جا دوگرو پرفتے عطافر مانی عاشورار (وارمجرم) کا دن تھا۔

جبُ سب لوگ ایک و کیے میدان میں مقابلہ دیکھنے سے لئے جمع ہو گئے توفرون کے لوگ آپس میں ایک و صرے کو کہنے گئے کہ ہمیں یہاں ضرور رہنا چاہیے تاکہ یہاں لا کے لوگ آپس میں ایک و وسرے کو کہنے گئے کہ ہمیں یہاں ضرور رہنا چاہیے تاکہ یہاں لیعنی موسی و ہارون دعلیہ ما اسلام ، اگر غالب آ گئے توہم بھی اِن پر ایمان لے آئیں ان کوگوں کی پر گفتگوبطور مزاجے واست ہزار بھی دکیونکہ اِنھیں بھین تھا کہ یہ ہماری جا دوگرو^ل پر ہرگز غالب نہ آئیں گئے)

جب میدان بین سب جمع ہوگئے نوجا دوگروں نے حضرت موسیٰ علیہ السّلام

سے کہا پہلے آپ اپناسحرد کھائیں یا ہم پہلے ڈال کر ابتدا کریں ہ حضرت موسیٰ علیہ است لام نے فریا یا کہ تم ہی پہل کرو ۔ اُمفوں نے اپنی لامھیوں اور رسیوں کو زمین پریہ کہتے ہوئے چینکا کرقسم سے فرعوں کی ہم ہی غالب آئیں گے۔ دیجھتے ویکھتے یہ لامھیاں اور رسیاں سانپ بن کرچلئے لگیں ۔ یہ منظر دیکھ کر حضرت موسیٰ علیہ است لام پر ایک قسم کا خوف طاری ہوا۔ التیرتعالے نے موسیٰ علایتالم کو بذرائیہ وی حکم دیا کہ اپنی عصا ڈ الدو۔

ر برایہ برن میں میں بیاب کے اپنی عصافہ الدی تو وہ ایک بڑا اڑدھا بن گیاجس کا منھ کھلا ہوا تھا تھیراس اڑدھانے اُن تمام سانیوں کو ٹگلنا سٹرو ظے کیاجو جا دوگروں نے لاتھیوں اور رسیوں سے بنائے ہتھے۔

جاد وگراینے فن کے باہر محقے . یہ ماجرا دیچھ کرامضیں مقین ہوگیا کہ ٹوئی علیالسلام کا یعمل جا دونہیں ہے بلکہ النٹر کی طرف سے معجزہ ہے اس پر اُسی وقت اعلان کر دیا کہ ہم ابتر پر اورموسیٰ علیہ السلام سے لائے ہوئے دین پر ایمان لے آئے اورہم اپنے ویصلے عقائد سے تو بہ کرتے ہیں .

فرعون اوراً سکے ساتھی مغلوب ہوگئے اور ذکت اور رسوائی کے ساتھ اُسس میدان سے پب پاہوئے جس وقت یہ مقابلہ ہور ہاتھا فرعون کی بیوی آسیہ بھٹے پرانے سرپڑے مہن کریہ دعا کر رہی تھتی کہ التیرتعا لے موسیٰ علیہ استلام کی مدد کرے اور آل فرعون یہ مجھ رہے متھے کہ یہ فرعون کی وجہ سے پریٹ ان ہے.

اسے بعد حضرت موسیٰ علیہ است لام جب بھی کوئی معجزہ دکھاتے اور التّرکی طرف سے اسپر حجبت پوری ہموجاتی تو وعدہ کرلیتا تھا کہ اب بنی اسرائیل کوموسیٰ علیالسّلام سے ساتھ بھی ہوں گا۔ اور جب موسیٰ علیہ است لام کی دُھا سے وہ خطرہ عذاب ٹل جا با تو کہہ دیتا کہ کہا آپ کا رب اور کوئی نشانی دکھا سکتا ہے ؟

رہ میں ہب ہ رہب در وں میں کارعا معاصی ہے۔ پیسسلہ چلتار ہا بالآخرالٹ ربعائے نے قوم فرعون پرطوفان ، مٹری دل ، کیٹروں پیسسلہ چلتار ہا بالآخرالٹ ربعائے نے قوم فرعون پرطوفان ، مٹری دل ، کیٹروں

میں جوئیں ، رتنوں اور کھانوں میں مینٹرک ،خون وغیرہ کا عذاب کیے بعد دیگر مسلط کئے جن کو قرآن حکیم میں 'ایکتِ مُنفَصَلاتِ "کے عنوان سے بیان کیا گیاہے:

بن و حرات یم بی ایک ملطان کے کو جب ان میں سے کوئی عذاب آتا اور اُس سے وہ اور اُس کے وہ اور اُس کے وہ اور اُس کے قوم عاجز ہوجاتی تو موسیٰ علیہ السام سے فریا دکرتا کہ سی طرح یہ عذاب کہائے توہم وعدہ کرتے ہیں کہ بنی اسرائیل کو آزاد کر دیں گے جھرجب وہ عذاب لل جاتا تو ہوہدی کرتا ، یہاں تک کہ الٹر تعالیٰ نے موسیٰ علیہ الت لام کو تھم دیا کہ اپنی قوم کے ہوہدی کرتا ، یہاں تک کہ الٹر تعالیٰ نے موسیٰ علیہ الت لام کو تھم دیا کہ اپنی قوم سے سابھ ہجرت کرجائمیں ،حضرت موسیٰ علیہ الت لام اِن سب کو لے کردات کے وقت شہر سابھ ہجرت کرجائمیں ،حضرت موسیٰ علیہ الت لام اِن سب کو لے کردات کے وقت شہر

ساتھ ہجرت کرجا ہیں ہطرت کو ی علیہ اس مام ال حب حرب کردہ ک سے کردہ سے نکل سکتے ۔ فرعون کوحب اطلاع ملی کہ یہ سب لوگ چلے سکتے ہیں تو اپنی فوج کوجمع کرکے اُن کے تعاقب میں روانہ کر دیا ۔

ان کے لعا جب میں روائے کروائے۔ ادھر اللہ تعالیے نے اس دریا کو کم دیا جوموسیٰ علیہ الت الم اور بنی اسرائیل کے درمیان مائل ہوگیا تھا کہ جب موسیٰ علیہ الت الم تجھ پر اپنی عصا باریں تو تجھ میں بارہ را بن جانے چا ہئے ، جن سے بنی اسرائیل کے بارہ قبائل الگ الگ گزر سمیں اور جب یہ سرر جائیں تو اُن کے تعاقب میں آنے والوں پر بیر دریا کے بارہ حصتے بھر ملجائیں۔ حضرت موسیٰ علیہ الت لام جب دریا کے قریب پہنچے تو یہ یا د نہ رہا کہ لائھی مار ے دریا میں داستے پیدا ہوں گے۔ اسپراُن کی قوم نے اُن سے فریا دکی اے موسیٰ اب توہم پر اِسے میں دریا حائل مختا ، اور سامنے یہ دریا حائل مختا ، اسوقت حضرت موسیٰ علیہ التلام کو النّر تعالیٰے کا وہ و عدہ یاد آیا فوراً دریا پر اپنی لاکھی مار دی . یہ وہ وقت مخاکہ بنی اسرائیل کے بچھلے حضوں سے فرعونی افواج کے انگلے حصے تقریباً مل حکے مخے۔

حضرت موسیٰ علیہ الت الم سے ضرب عصا سے دریا ہیں بارہ راستے بن سکئے۔ حضرت موسیٰ علیہ الت الم سے صرب عصا سے دریا ہیں بارہ راستے بن سکئے۔ حضرت موسیٰ علیہ السالم اور تمام بنی اسرائیل ان راستوں سے گزر کئے، فرعونی افواج جوان کے تعاقب میں تھی دریا کے ان راستوں ہیں اپنے گھوڑ ہے اور پیا دے ڈال دیئے تو دریا کے یہ مختلف راستے بھر آبس ہیں مل گئے۔ تو دریا کے یہ مختلف راستے بھر آبس ہیں مل گئے۔

بنی اسرائیل جب دریا کے دوسرے کنارے پہنچ گئے تو دیکھاکہ ساری فوج دریا میں ہلاک ہوگئی ہے اور فرعوان کی لاش کوموجوں نے سخنارے پر پھینک دیا ہے۔ فرعون کی ہلاکت کا مضا ہدہ آنکھوں ہے دیکھنے کے بعد بنی اسرائیل حضرت موسی علیہ استال منے ساتھ آگے چلے راسۃ میں ان کاگزدایک الیبی قوم پر ہوا جو اپنے ہاتھوں بنائے ہوئے بتوں کی عبادت و برشش کر رہی تھی ۔ بنی اسرائیل یہ منظر دیکھ کرصفرت موسیٰ علیہ السال مے گزارش کرنے گئے اے موسیٰ ہمارے گئے جی کوئی الیبا ہی معبود بناد کھا ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام نے جواب دیا بنا دیکئے جیب قوم ہوکہ ایسی جہالت کی باتیں کرتے ہو۔ یہ لوگ جو بتوں کی عبادت میں مشغول ہیں آئی عبادت بر باد ہونے والی ہے۔ تم اپنے رب کے استے معجزات اور انعال دیکھ میر بھر بھر بھر بھر بھر اس اور انعال میں بدلے۔

یکہ کرمضر شام ملیہ الت لام آگے بڑھے اور ایک مقام پر پہنچ کراُن سب
کو تھیرادیا اور فرمایا کرتم سب یہاں تھیروئیں اپنے رب کے پاس جاتا ہوں ۔ نمین دن
کے بعد واپس آؤں گا اور میرے پیچے ہارون علیہ الت لام میرے نائب رہیں گئے ہر
کام نیں ان کی اطاعت کرنا۔

 کی بؤمنھ ہیں بیدا ہوجاتی ہے یہ فکر ہوئی کہ اس بُو کے ساتھ الٹّہ تِعالیے سے شرف ہمکا می نامناسب ہے سواک کرکے منھ صاف کر لیا جب بجلی گاہ پر حاصر ہوئے تو الٹّہ تِعالیے کی طرف سے ارشا د ہواکہ تم نے افطار کیوں کر لیا ؟

حفرت موسیٰ علیه است الام نے عن کیا میرے پرور دگار مجھے خیال ہواکہ آپ سے ہمکلامی سے لئے منھ کی بئو دور کرلوں ، ارت دہوا موسیٰ اکیا تمہیں خبر نہیں کہ روزہ وار کے منھ کی بؤ ہمارے نز دیک مُشک کی خوشبوسے جی زیادہ محبوب ہے ۔ اب آپ لوط جانبے اور ذلیں دن مزید روزے رکھئے بھر ہمارے پاس آئے جضرت ہوئی علیہ اب لام نے حکم کی تعمیل کی ۔

سیم اور ہوں میں میں میں است اللہ کی قوم نے دیکھاکہ مفررہ مدت نمین ون گزرگئے اور وہ واپس نہیں آئے تو یہ بات اُن کو ناگوارمعلوم ہوئی اور وہ حضرتِ ہارون علیالسّلام

کی اطاعت سے بحل کئے۔

قوم میں سامری نامی ایکنٹے میں جو گاؤپرست ذہنیت رکھتا تھا اُس سے ایک عجیب واقعہ رونیا ہوا اُس نے حضرت جبریل علیہ استلام کا ایک اثر دیکھا تھا رہینی جہا اُن کا قدم پڑتا اسمیں زندگی کے آثار پیدا ہو جانے تھے) اُس نے خاص اُس جگہ سے ایک مشت خاک اُس میں اُن کا قدم پڑتا اسمیں زندگی کے آثار پیدا ہو جانے سے کوئی روح نہ تھی مگر اس خاک کے اثرے اسمیں حرکت اور آواز پیدا ہوگئی۔ کوئی روح نہ تھی مگر اس خاک کے اثرے اسمیں حرکت اور آواز پیدا ہوگئی۔ حضرت ابن عباس من نے اس روایت کونظل کرتے ہوئے فرمایا والتہ وہ کوئی زندہ آواز نہ تھی بلکہ ہوا اُسکے بچھلے حصہ سے واخل ہوکر منہ سے کھی اُسی سے بہ آواز پیدا ہوجاتی تھی اُسی سے بہ آواز پیدا ہوجاتی تھی اُسی سے بہ آواز پیدا ہوجاتی تھی۔

يعجيب وغربيب قصته ديكه كربني السرائنيل كئي فرقول ميتقسيم بروسمئي ايب جمات

نے سامری سے پوچھا کہ بیر کیاہے ؟ اس نے کہا بہی تمہارا خداہے الیکن موسیٰ راستہ بھول کر دوسری طرف طیے گئے ہیں۔ دوسری جماعت نے پرکہا کہ ہم سامری کی اس بات کی اُس وقت تک تکذیب نہیں کرسکتے جب تک کہ حضرت موسیٰ علیہ استلام حقیقت حال نہ بتائیں۔ ایک ا درجماعت نے کہا کہ یہ سب شیطانی دھوکہ ہے ۔ یہ ہمار ا دبہیں ہوسکتا جلداة ل

ہم اسپرایان نہیں لائیں گے۔ ایک جماعت کے دل میں سامری کی بات اُ ترکئی اور اُس نام اسپرایات نہیں لائیں گے۔ ایک جماعت کے دل میں سامری کی بات اُ ترکئی اور اُس

نے امری تی تصدیق کرمے اسکوا پناخدات کیم کر لیا۔

ہدایت کے جراغ

م حضرت ہارون علیہ است لام نے یہ فسادِ تبیر دیکھا تو فرمایا اے قوم تم لوگ فتنه گئیسرتی است ترجمات پر ترکی میں میں میں است احکی ا

یں پڑگئے ہوتمہارارت توزمن ہے تم لوگ میری پیروٹی کرواورمیراحکم مانو۔ قوم نے کہا کہ بھریہ بتلائیے موسیٰ علیہ ات لام کو کیا ہوا؟ ہم سے تبین ون کا

وعدہ کرکے گئے تھے 'یہ وعدہ خلافی کیوں کی گئی اب چالیان کا دن پورے ہورہے ہیں ؟ قوم سے چند بیو قوفوں نے کہا کہ موسیٰ علیہ است لام اپنے رب کا مقام بھول گئے

ہیں ان کی تلامنس میں بھردے ہوں گئے۔ ہیں ان کی تلامنس میں بھردہے ہوں گئے۔

بیت من ماس طرح جب چاکینگ یوم پورے ہوگئے توحضرت موسیٰ علیہ اتسلام کو التارنعالے سے سترف ہم کلامی نصیب ہوا ، التارنعالے نے اُن کو اس فتنہ کی خبر دی جس میں اُن کی قوم مبتلا ہوگئی بھی ۔

حضرت موسیٰ علیہ الت لام و ہاں سے غصتہ اور افسوس کی حالت ہیں والیں آئے بعد حضرت ابن عباس ٹنے فرایا: والیں آکرموسیٰ علیہ الت لام سے وہ امور سرزد ہوئے وقرآن میں تم نے پڑھی ہیں بعینی موسیٰ علیہ الت لام نے غصتے ہیں اپنے تعبائی ہارون علیا سلام کے سرکے بال پڑاکر اپنی طرف تھینچے اور تورات کی وہ تختیاں جوکو وطور سے لائے تھے نیچے کھر دیا۔ مجھوظ متہ تھنڈ اہو نے بعد بھائی ہارون علیہ الت لام کا عذر قبول کیا اور اپنی اِن میر شعوری حرکات پر التارتعالیٰ کی جناب ہیں تو بہ واستغفار کیا۔ اسکے بعد سامری سے پاس کیے اور اُس سے کہا کہ تونے یہ حرکت کیوں کی ؟

اس نے جواب دیا ہیں نے رسول کے نشان قدم کی مٹی اٹھالی اور ہیں سمجھ یا تھاکہ اس سے آثارِ حیات پیدا ہو جا کیں گے ۔ بس میں نے اسکو بچھڑے ہیں ڈال دیا اور یسے ہی میرے دل نے یہ بات سجھانی ۔

حضرت موسیٰ علیہ انسلام نے سامری کو جھو کا اور فرما یا جا اب تیری سزایہ ہے ۔ ہ تو زندگی بجریہ کہتا بچھرے کہ مجھے کوئی نہ چھوئے د ورنہ وہ بھی عذاب ہیں گرفتار موجائیگا) رتیرے لئے ایک مدت مقرر ہے جس کے خلاف نہ ہوگا ، اور دیجہ تو اپنے اس معبود کو ۔ کی تونے پر تنن کی ہے ہم آگ ہیں جلائیں گے اور مجھراس کی راکھ کو دریا ہیں بہا دینگے۔ اگریه خدا مبوتا تو نهم کواس عمل پر قدرت نه موتی ـ

اس وقت بنی اسرائیل کومیقین ہوگیا کہ ہم فقنے ہیں مبتلا ہوگئے ہیں اورسب کو اس جماعت پر رشک آنے لگاجسی رائے حضرت ہارون علیہ السلام سے مطابق تھی۔ حب بنی اسرائیل کو اپنے گنا ہے ظیم کا احساس ہوا توحضرت موسیٰ علیہ السلام سے میں شموس نہ میں میں میں ہوں ہے۔

سے گزارش کی کہ اپنے رت سے دُعا تیجئے کہ وہ ہمارے لئے تو بہ کا در وازہ کھول دسے جس سے ہمارے گناہ کا کفارہ ہوجائے۔

بی سے بہت رہے۔ اسکام نے اس کام سے لئے بنی اسرائیل میں سے سنتے رہے۔ کئے بنی اسرائیل میں سے سنتے رہیں اور ممتاز لوگوں کا انتخاب کیا جو اُن کے علم میں گوسالہ پر تی سے بھی دور رہے ہے ان کو لئے کرکو و طور پر مینچے تاکہ اِن کی قبولِ تو ہہ کے بارے میں عرض کریں جب یہ کو وطور پر مینچے ہیں زمین پر ایک زلزلہ آیا جس سے موسیٰ علیہ السّلام کو بڑی شرمندگی ہوئی النّد کی جناب ہیں عرض کیا :۔

النّد کی جناب ہیں عرض کیا :۔

آ ہے میرے پر ور دگار آگر آپ ان کو ہلاک ہی کرناچا ہے ہیں تو اس و فد کے آنے سے پہلے ہی اُن کو اور مجھکو ہلاک فرما دیتے ۔کیب آپ ہم سب کو اس لئے ہلاک کرتے ہیں کہم میں کچھ بیو قوفوں نے گناہ

اس زلزلے کی وجرید تھی کہ اِس و فد ہیں تھی حضرت موسیٰ علیہ السّلام کی تحقیق واحتیاط کے باوجو و کور الیسے بھی لوگ شامل بہوگئے تھے جو پہلے گوسالہ پرستی ہیں جبتلا ہو سکتے اور اُن سکے دلوں ہیں گوسالہ (بچھٹرے) کی عظمت وبڑا نی جبھی ہموئی تھی۔ الغرض حضرت موسیٰ علیہ السّلام کی اس وُعا و فریا و کے جواب ہیں ارشا دہوا:۔ "میری رحمت توسب کوشامل ہے اور ہیں عقریب لکھدونگا اپنی رحمت کا پروانہ اُن کوگوں کے لئے جو تقولی اختیار کرتے ہیں اور در اُن اور مرادی آیتوں پر ایبان رکھتے ہیں اور جو اتباط کرتے ہیں اور جو ہماری آیتوں پر ایبان رکھتے ہیں اور جو اتباط کرتے ہیں اور اُن کا جس کا ذکر لکھا ہوا پاتے ہیں اسپنیاسس کرتے ہیں اُس رسول میں کا دکر لکھا ہوا پاتے ہیں اسپنیاسس تورات اور انجبل ہیں ۔"

يسنكر حضرت موسى عليه التلام نے عرض كيا:-

"میرے برور دگار میں نے آپ سے اپنی قوم کی تو ہہ کے بارے ۔ میں عرض کیا تھا آپ نے جواب میں رحمت کی عطامیری قوم کے علاوہ دوسری قوم سے متعلق ارت دفرما یا ہے تو تھیر آپ میری پیدائش کو اُس نبی اُتی کی اُمّت مرحومہ میں رکھ دیتے تو اچھا تھا!"

اس پرالٹر تعالیے نے بنی اسرائیل کی تو بہ قبول ہونے کا ایک طریقہ بیان کیا کہ ان ہیں ہے ہوئے خص اپنے متعلقین ہیں سے باپ، بیٹے جس سے بلے اس کو کلوار سے قتل کر دے اُسی جگہ پر جہاں یہ گوسالہ پرتی کا گناہ کیا تھا۔اس وقت حضرت موسیٰ علیہ التلام کے وہ سامقی جن کا حال حضرت موسیٰ علیہ التلام کے وہ سامقی جن کا حال حضرت موسیٰ علیہ التلام کو معلوم بنہ تھا اور جن کو نیک اور صالح سمجھ کر سامقے نے لیا تھا گرحقیقت ہیں اُن کے دل میں گوسالہ پرستی کا جذبہ موجود تھا وہ تھی اپنے دل میں کا دم ہوکرتا من ہوگئے اور اُس شدید کی پر عمل کیا جو اُن کی تو بہ قبول ہونے کیلئے بطور کھارہ نا فذکیا گیا تھا۔ اور حب سب نے عیمل کرلیا تو الٹر تعالیے نے قاتل و مقتول و رونوں کی خطا معاف فرمادی۔

اسے بعد حضرت موسی علیہ الت لام اپنی قوم کو لے کر ارس (شام) کی طرف چلے گئے وہاں ایک ایسے شہر پر مہنچ جس پر قوم جبّارین کا قبضہ تھا جن کی شکل وصوت اور قدو فامت بھی ہیں ہیت ناک تھی۔ اُن کے ظلم وستم اور طاقت وقوت کے عجیب وغریب قصتے قوم کو معلوم ہوئے ۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام اس شہرییں واضل ہونا چا ہت مقے مگر بنی اسرائیل کہنے گئے اے موسیٰ اس شہرییں تو بڑے طالم لوگ ہیں جن کے مقابلہ کی ہم میں طاقت نہیں اور ہم تو اس شہریں اس وقت تک واضل نہیں ہوں گے جب تک یہ جبّارین وہاں موجود ہیں، ہاں وہ یہاں سے تعلیٰ جائیں تو بھر ہم اس شنہر میں داخل ہو سکتے ہیں۔

ا یسے نازک وقت میں قرا دمیوں نے جن پر النّر کا انعام ہوا تھا قوم سے کہنے گئے اے قوم النّر کے نام پرسٹ ہمرے درواز سے بک توپہنچوالٹر تعالیٰ تمہاری مدوکرے گا اور تائٹر پر اعتما دکروجب کرتم ایمان لا مجلے ہو۔ مدوکرے گا اور تم کوغلبہ دے گا اور النّر پر اعتما دکروجب کرتم ایمان لا مجلے ہو۔ اس روایت کے راوی پر بدبن ہارون سے پوچیا گیا اِن قرار دمیوں سے مراد

کون ہیں ؟

فرما یا کہ حضرت ابن عباسؓ انکو قوم جبّارین میں شمارکرتے بھے جو اُس شہر سے آکر حضرت موسیٰ علیہ السّلام پر ایمان لائے بھے۔

ان دونوں نے بنی اسرائیل پر اپنی قوم کا رُعب طاری دیچھ کر کہا کہ ہم اپنی قوم کے حالات سے خوب واقعت ہیں تم اِن کے ڈیل ڈول اور اُن کی بڑی تعدا دسے ڈر رہے ہو صفیقت یہ ہے کہ اُن ہیں دل کی قوت بالکل نہیں اور نہ مقابلہ کرنے کی ہمت ہے تم ذراشہر کے در وازے بک تو عبلو توخو د دیچھ لینا کہ (وہ ہتھیار ڈوال دیں گے) اور تم ہی اُن پر غالب آجاؤگے۔

یٹ شنگر بھی بنی اسرائیل آماد ہ نہوئے اور حضرت موسیٰ علیہ انسلام کو نہایت کوراجواب اس بدنمیزی کے ساتھ ویا :۔

سیخ ہم تو ہیں بیٹے ہیں "
صفرت موسی علیہ السلام ہر قدم پر قوم کی سرکتی اور بہودگی کا مشاہدہ کرتے آد ہے تھے
گر صبر وقتل سے کام لیتے دہے ہیں اُن کے لئے بدوُعا نہیں کی لیکن اِس وقت اُن کے اس
بیہودہ وجواب سے بہت شکستہ اور محکین ہوگئے اور اُن کے لئے بدوُعا کی اور اُن کے لئے
بیروں ہواب سے بہت شکستہ اور محکین ہوگئے اور اُن کے لئے بدوُعا کی اور اُن کے
میں فاسقین کے الفاظ استعمال فرائے ، الله تعالیے نے حضرت موسیٰ علیہ استلام
کی وُعا قبول فرالی اور اللہ تعالیے نے بھی اُس قوم کو فاسقین ہی کے نام سے یاد کیا ، اور
اس مقدرہ سے اُن لوگوں کو چالیس سال کے لئے محروم کر دیا اور ایک کھکے میدان
میں اُن کو ایسا قید کر دیا کہ صبح سے شام تک چلتے رہتے تمہیں قرار نہ تھا (اسی زمانے
میں اُن کو ایسا قید کر دیا کہ صبح سے شام تک چلتے رہتے تمہیں فرار نہ تھا (اسی زمانے
میں اُن کو ایسا فید کر دیا کہ سی ملاکر تا تھا سخت گرمی میں بادلوں کا سایہ مہیا ہواکر تا
میا اور مجزانہ طور پر اُن کے کپڑے نہ میلے ہوتے بھے اور نہ چھٹے
مضرت موسیٰ علیہ انساللم کو ایک مرتبے ہوتے بھے اور نہ چھٹے تھے ، اسی زمانے میں
میوٹ پڑتے سے جو بی اسرائیں کے بارہ قبلے کی اس پر لائھی مارنے پر بادہ چشے
مضرت موسیٰ علیہ انساللم کو ایک مرتبے بارہ ویشے
میوٹ پڑتے سے جو بی اسرائیں کے بارہ قبلے کہ میں تعین کر کے تقسیم کر دیے گئے
میوٹ پڑتے سے جو بی اسرائیں کے بارہ قبلے کہ مقام مرتبے اور دوسری منزل پر قیام

كرتے تومعجزانه طور پراس بچركو و بي موجود پاتے. (قرطبی)

ففروم میں نے کام بھی کا اس طویل حدیث پربعض مفسرین نے کام بھی اس طویل حدیث پربعض مفسرین نے کام بھی کی اس و ایت کی اس و ایت کیاہے تاہم و وسرے مفسرین و محدثین نے اس روایت پراعتماد کا اظہاد کیاہے وان میں نسائی جیسے الم مدیث ا ورابن کثیر جیسے نا ت رویث شامل ہیں۔

علاہ ہازیں جن اہل علم نے اس حدیث پر تنقید کی ہے وہ اس حدیث کے مضمون پرنہیں بلکہ اسیح موقوت ومرفوع (یعنی کلام رسول یا کلام راوی) پر کی ہے روایت کا مضمون ہے بارہے۔ اس کا اکثر حقہ تو خو د قرآن کریم کی آیات ہیں موجود ہے اور بقیہ حصہ بھی آیات قرآنی ہے مطابقت رکھتا ہے ۔ میں وجہ ہے کہ جن حضرات نے بھی اس روایت پر تنقید کی ہے مضمون حدیث پر کسی قسم کی نگیر نہیں ہے گو یا ان حفرات نے بھی اس روایت کی معنویت کو درست سمجھا ہے۔ ورنہ جہاں سندا کلام کیا گیا ہے کوئی وجہ نہیں کہ متن حدیث پر سکوت اختیار کیا جائے ؟ جبکہ ناقدینِ حدیث وونوں پر کلام کیا گیا ہے کہ روایت کا مضمون صحیح و درست ہے۔ کہ روایت کا مضمون صحیح و درست ہے۔

ضروری ہے جو بہال موجود نہیں . الفون رہیں منتش مرقب یہ تسلیم سیار سے اوون یا عام تحق

بالفرض اس حدیث کوموقو ف ہی سلیم کر لیا جائے جیب کہ بعض اہل علم کی قیق سے تب بھی کوئی فند ور لازم نہیں آیا۔ کیونکہ اسکے را وی اس امت کے سب سے بڑے عالم حضرت عبد اللّٰہ بن عباس ہیں جن کافہم قرآنی اورعلم اکا برصحابہ بھی تسلیم کرتے تھے۔ یہ بات بھی درست ہے کہ بنی اسرائیل کے واقعات کو حضرت ابن عباس مشہوراسرائیلی عالم کعب احبار ہے منا کرتے تھے اوربعض دفعہ ان سے قبل بھی کردیا کرتے تھے ۔ غالباً یہی وجہ ہے کہ جن اہل علم نے بھی اس قسم کی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس چنیت ہے گئی ہے کہ یہ اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس چنیت ہے گئی ہے کہ یہ اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس حیثیت ہے دہاں اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس حیثیت ہے دہاں اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس میں ہے دہاں اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس میں ہے دہاں اسرائیلی روایات پر تنقید کی ہے وہ اس میں ہیں ہے کہ یہ اس نام کی ہے دہاں اسرائیلی روایات بر کی اجازت بھی دی ہے ۔

حَدِّ نُواعَنُهُ مُ وَكَرْحَرَجُ دالمديث

بچرکیا وجہ ہے کہ حضرت ابن عباسؓ جیسا ''جبٹ ٹراُلاً تھ" (امّت کاسب سے بڑا عالم) اگر محب احبار شسے کوئی روابیت نقل محرتا ہو تو اِسپر محض اس وجہ سے نتقید کرنا کہ وہ اسرائیلی روایت ہے کوئی معقول بات نہ ہوگی۔

اسرائیلی روایت قابل جرح و بات مجھی جائیگی جب کہ وہ بات قرآن و مدیث کے مفہوم و منشار سے مکراتی ہوا و ''مدیث فتون ''کامضمون قرآنی مضمون کے مخالف توگئی قرآنی تصنیوں کے مخالف توگئی قرآنی تصریحات سے بہت مدیک مطابقت بھی رکھتا ہے اس لئے اس روابت کو نیم مضالقہ نہیں ہے۔ ابن جریز اور ابن ابی مائم رہ جیسے اگر تفسیر نے بھی اس روایت کو اپنی اپنی تفسیروں بین قل سی اسے۔

بیب این میروسے بی اور ایک تو اپنی تفسیر بین قبل کیا ہے وہاں اُن کا این افسیر بین قبل کیا ہے وہاں اُن کا این افسیر بین قبل کیا ہے وہاں اُن کا این فیصلہ یہ ہے کہ یہ پوری روایت نبی کرتم میں النٹرعلیہ ولم کی ارشاد فرمودہ ہے اور اپنے فیصلہ یہ ہے کہ یہ پوری روایت نبی کرتم میں النٹرعلیہ ولم کی ارشاد فرمودہ ہے اور اپنے فیصلہ یہ ہے۔

اس نيصلے برايكم معقول دسيل محل لكھتے ہيں:-

جب حفرت معاویہ نے حضرت ابن عباس کو یہ مدیث روایت کرتے سُنا تواس بات کو مُنکرا ورغلط قرار دیا جواس میڈ میں آیا ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ است لام نے جس قبطی دفرعونی کوقتل کیا تھا تو اُس کی مخبری اُس دوسرے فرعونی نے کی جس سے دوسرے روزیہ اسرائیلی لار رہا تھا.

وجہ یہ مقی کہ اس فرعونی کو توکل سے واقعہ قتل کاعلم نہ تھا وہ اسکی مخبری سیسے کرسکتا تھا ؟ اسکی خبر توصرف اسی لرفینے والے اسرائیلی کومعلوم سمجنی (لہذایہ بات غلطہ ہے کہ قتل کی مخبری فرعونی سنتخص نے کی)

جب حضرت معاویہ نے اُن کی حدیث کے اس تجز کا انکار کیا توصرت ابن عباس کو غصہ آیا اور حضرت معاویہ کا ہاتھ کیڑ کر سعد بن مالک زمری کے پاس سے سکتے اور اُن سے کہا اسے ابواسحاق کیا تہیں یاد ہے حب ہم سے رسول السر صلی السر علیہ ولم نے تتیل کو کے بارے میں مدیث بیان فرمائی تھی ا دراس رازکا افشار کرنیوالا اور فرعون کے پاس مخبری کرنے والا اسرائیلی تھا یا فرعونی ؟ سعد بن مالک نے نے فرمایا فرعونی تھا کیونکہ اُس نے اسرائیلی سے یہ کلام من لیا تھا کہ کل کا واقعۂ فتل حضرت موسیٰ علیہ است لام سے ہاتھ سے ہوا تھا ، اسی بنا پر اُس نے اِسکی شبہا دت فرعون کے پاس بہنجا دی ۔"

حضرت ابن عباس کایہ واقعہ اس بات کا واضح ثبوت بیش کرتاہے کہ انھوں نے یہ طویل حدیث نبی کریم میں النٹرعلیہ و لم ہی سے شنی ہے جبکی تا ئید حضرت سعید بن مالک نے بھی فرمانی اور حضرت معاویہ نے بھی استحق لیم کیا۔ اس ساری بحث سے ہمٹکر بھی قرآن ملیم کے بیان کر دہ واقعات کی تفسیر نہ اس طویل حدیث بحث سے ہمٹکر بھی قرآن ملیم کے بیان کر دہ واقعات کی تفسیر نہ اس طویل حدیث پرموفوت ہے اور نہ کوئی عقیدہ ثابت ہوتا ہے اور نہ ہی حلال دحرام کا حکام کا تعلق بیمون نہ بی حلال دحرام کا حکام کا تعلق ہے۔ اِن تمام وجوہات کے با وجود بھی معلوم نہیں جدید مفسرین کو اس حدیث سے نقل کورنے ہیں کیوں خوف لگتا ہے ؟ (والنٹراعلم وعلمہ اتم)

449 <u> ج</u>لدا وَل آیات میں حضرت موسیٰ و ہارون علیہماالتلام اور بنی اسرائیل اور فرعون کا واقعہ لتاہے جن می مفصیل یہ ہے:-ا ـــ سورة بقرة ـــ أيات به تا ١١، ١٣٠ تا ٨١، ١٣٦ م ١٥١، ١٣٩ ا ١٠٨، ٩٣ تا ١٣٩، ٢- سوريانساء " ١٥٦١ ١٥١١ ١١٠٠-(2) (2.1 62.17) 671 171 17. (17) ٣_ سوره ما تكا __ " -49661 72.63.64.411.401-س_سورلاانعامر_ " ٥ _ سور ١٤١٤م . ١٥٠ تا ١٥١، ١٥٩ تا ١١١٠ ٧ _ سورة انفال _ أيت ١٠٥٠

٤_سور٧ يونس_أيات س الا ٩-م_سوره هود. سر ۱۱۰، ۹۹ تا ۹۹، ۱۱۰

٩ سوردارداری ، ۵،4،۵. ١٠ ــسورد تحل __أيت ١٢١٠-

١١ _ رسبني سوائيل _ أيات ٢ تا٤١٠١ تا ١م٠١-

۱۲ _ سوری کہفت __ " -11 64.

-07101 ١١- سوره مريم - "

-914 سراسسوره ظف - "

-49.44 ٥ ــ سور ١٥ نبياء ــ "

-M9100 14_سر رمونون _ "

- 44640 ١٤ ــ سرر لافرقان - "

-44 61. مرا __سورياشعراعر_ "

-17/12 19_سوردندل_ "

سالمرا-۲۰ __سور لاقصص ر

-4.679 ۲۱ _ سوزعنگبوت س

۲۲ ـــسوره سجد که ـــ « -44,44

```
٣٧ ــ سورة الصِّقَدِ . ١٢٢ الما ١٢٢ -
                              ۲۷_سورة زخوت س ۲۷ تا ۵۹ ـ
                               ۲۷_سورلادخان_ " ۱۲ الاس
                                -16614
                                         ۲۸ _ سرده جاشيه _ "
                              ٢٩ ــ سور الذاريا .. ١٠٠٠ ... ٢٩
                               ٣٠ _سور ١٤ تس ،، ١٦ تا ٥٥ -
                                    ٣١ _ سور لاصف _ أيت ٥.
                                  ٣٢ سرره حمع فيأت ١١٥٥
                                    ٣٣ _ سوريتي پيم _ أيت ااء
                                  ٣٧_سور الماقة _ أيات ١٠٠٩ -
                                 07_ سرره مزمل _ " 14:10. ا
                                ٢٧ - سور النازعا - ١٥ ١٥٠٠
                                 ۳۷ _ سورد فجر _ را ال ۱۳ ا
اسی طرح حصرت موسی اور بارون علیهما استلام سے اسمائے گرامی قرآن حکیم کی جن
سور توں میں ندکور ہیں اُن کی نتفصیل یہ ہے۔
حضرت موسیٰ علیہ الت لام کا اسم گرامی قرآن حکیم کی ۲۹۱) سور توں میں (۱۰۷) مجگہ
                                        لما ہے جبی تفصیل یہ ہے:۔
                        ا ــسور کا بقری سا مقام بر آبا ہے۔
                                  ۲ _ سورکانساء _ س
                                       س سوره مائل سيس
                                     س سورهانعامرسيس
                                      ۵ - سورداعرا - بس ۱۹
```

٢٧ __سورة احزاب _أيات ١٠ ٩٩٠

```
ہ۔ سورہ بونس میں مقام پر آیا ہے
       ٤ ــ سور كا هود ـــ سي ٢ ١٠
           م سردلا ارتام سي
            و سوره بن اسوال س
            ١٠ _ سوريا كمعت _ ميل ١٠
           اا __سور لامریم __ سل ا
            ١٢ ــ سوره ظف ـــ بي ١١
           ۱۳-سور۲۱نداء بساس ا
           سوري مومنو___ بس ٢
            0 ا سوره فرقان سيس ا
            ١٩ _ سوري شعراء _ بي ٨
          14 _ سورة غمل _ سي ۲
          مراسسور لافضص سيس مها
            ١١- سور ١٤ احن ١٠ - سيل ١
            ۲۰ __ سرری سعدی __ ۲۰
            ۲۱ ___ سرگرصفت ___ ۲۱
            ٢٢ - سوركامون _ بيل بم
            ۲۲_سورکازخون___ ا
        אדן שענאלונים אין וי יי
        ۲۵_سرره صف_سل ۱ س
             ٢٧ _ سور كالنازعا _ بي ١
```

جملہ (۱۰۷) مقامات پراسم گرامی موجود ہے۔ سر

حضرت بإرون عليه است لام كا اسم كرامى قرآن مكيم كى (!!) سوزتول بي

(سما) جگه موجود ہے:۔

ا سود لا بفره سبی ا مقام بر آیا ہے ۱ سورلانساء بس ا رو رو

سود لا انعام برآیا ہے۔

هم سورة اعوا بي ا

۵ سورکا بونس میں ۱-

4 سوره ظن میں ۳

سوره انبياء مي ا

ب بین ا سوره مومنو بین ا

. سوره فرقان میں ا

سورياشعراء مي ٢

سورياقصص

جملہ (بہرا) مفایات براسم گرای موجود ہے۔

ضمول المستقريلة المدُ الكتاب المُبين . تَتُلُوْا عَلَيْكَ ، مِنْ نَيْهُ مُوسى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِلسَّفَى إِم

يَوْمُمِنُونَ ١٠٤٠ (القصص آيات علاماتك)

لطسمة بير كمكي كتاب كى آيات ہيں۔ ہم آبکوموسیٰ اور فرعون کا کھھ قصتہ تھیک تھیک ٹرھکر ساتے ہیں۔ اُن لوگوں کے لیے جو ایمان کھتے ہیں۔ بیشک فرغون سرز بین ہیں بہت بڑھ چڑھ گیا تھا اور اُس نے وہاں کے باتندوں کی مختلف جاعتیں كرركها تفاكراً ن مي سے ايك جماعت كا زور كھٹا ركھا تھا اُن كے بمیوں کو ذبح کر دیتا تھا اور اُن کی عور توں کو زندہ رہنے دیا تھا بشك وه برا مفسدون بس سے تھا۔ اور مم کو بیمنظور مقاکہ جن کوگوں کا زمین میں زور گھٹایا جارہا مقاہم اُن پر احسان کریں اور ان کو بیٹیوا بنائیں اور اُن کو مالک بنائیں اور اُن کو زمین میں حکومت ویں اور فرعون اور ہا بان اور اُ سکے تابعین کو اُن کی جانب ہے وہ وا قعات دکھلا ہیں جن سے وہ بچاؤ کر رہے تھے۔ اور ہم نے موسیٰ کی والدہ کو الہام کیا کہ تم اِنکو دو وہ پلاؤ، مھرجب مم کو اُن کی وجہ سے اندیب ہو تو اُن کو وریا ہیں ڈال دینا اور نہ تو اندیب مرنا ہم اُن کو بھرتمہار ہے ہی پاس ضرور واپس اندیب کرنا اور نہ عم کرنا ، ہم اُن کو بھرتمہار ہے ہی پاس ضرور واپس بہنچادیں گے اور اُن کو پنیمبر بنا دیں گے۔

بنائی کے اپنے فرعون شکے کو گوں نے موسیٰ کو امطالیا تاکہ وہ اُن لوگوں کے لئے وشعن اورغم کاسبب بنیں۔ بلاٹ بہ فرعون اور ہابان اور ان سے تابعین (اس ہارے میں بہت) چوکنے والے تھے (کہ اپنی وشمن کو اپنے گھر میں بالا) اور فرعون کی بیوی نے (فرعون سے) کہا کہ یہ (بچہ) میری آنکھوں کی تھنڈک ہے اسکونسل نہ کرنا بحب نہیں کہ (بڑا ہوکر) ہم تو کچھ فائدہ بہنچا دے یاہم اُسکو (اینا) بیٹا ہی بنالیں اوران کوگوں

کو دانجام کی)خبر نہ تھتی۔ اورموسیٰ کی والدہ کا دل بیقرار ہوگیا فریب تضاکہ وہ موسیٰ کا حال ظاہر کر دیتیں اگر ہم اُن کے دل کو اس غرض سے مضبوط نہ کئے

ہ حان کا ہر سرویہ بی ہمرہ مہاں سے دی وہ ہونے تاکہ و ہیفین کرنے والوں ہیں ہو۔

اور اُ تحفول نے موسیٰ کی مہن (اپنی بیٹی سے) کہا ذراموسیٰ کی مہن (اپنی بیٹی سے) کہا ذراموسیٰ کو دورسے دیجے اوران لوگول کو بہ خبر منتمقی (کریہ اُن کی مہن ہیں اور اس فکر میں آئی ہیں) اور ہم نے پہلے ہی سے موسیٰ پر دودھ بلانے والیول کی بندش کر کھی تھی (معنی کسی کا دودھ نہ لیتے تھے) سووہ (بہن) کہنے لگیں کیا میں تم لوگول کوسیٰ لیسے موسیٰ کا بنتہ بتا وُں جو تمہارے گئے اس بیجے کی پر ورسس کریں اور وہ اسکے خیرخوا ہ بھی ہول ۔

غرض ہم نے موسیٰ کو اُن کی والدہ کے پاس (اپنے وعدہ کے موافق ہ والیس پہنچا دیا تاکہ اُن کی آنکھیں کھنڈی ہوں اور تاکیغم ہیں بذر ہیں اور تاکہ اس بات کوجان لیں کہ الٹرتعالے کا وعدہ سچا ہوتا ہے لیکن اکثر لوگ میتین نہیں رکھتے۔

وَلَقَانُ مَنَّنَا عَلَيْكَ مَتَرَةً الْخُدِى إِذُا وَحَيُنَا إِلَىٰ الْخِدِى الْذُا وَحَيُنَا إِلَىٰ الْمِيْك أَمِّلَكَ مَا يُوْحَىٰ الْمُ (الله آيات مئة تامنه)

اور (تحجے اے موسیٰ معلوم بھی ہے) ہم تجھ پر پہلے بھی ایک مرتبہ احسان کر چکے ہیں ؟ (ہم تحجے بتا نے ہیں اُس وقت کیا ہوا) حب ہم نے تیری مال کے دل ہیں یہ بات ڈال دی تھی ،کہ بچے کو ایک صندوق ہیں ڈال دے اور صند وق کو دریا ہیں چھوڑ دے دریا اُسکو کنا دے پر ڈال دے گا بھیراسکو وہ اُسطالے گاجو مبرا وشمن ہے اُسکو کنا دے پر ڈال دے گا بھیراسکو وہ اُسطالے گاجو مبرا وشمن ہے نیزائس بچے کا بھی وشمن ہے اور اے موسیٰ ہم نے اپنے فضل فاص سے نیزائس بچے کا بھی وقال دیا تھا (کہ اجنبی بھی تجھ سے محبت کرنے گئے) اور یہ اس لئے کہ ہم چاہتے تھے توہماری گرانی ہیں پر ورش یائے۔

تیری بہن جب وہاں سے گزری تو دیہ ہماری ہی کا دفرمانی محقی کر) اس نے دفرعون والوں کو) کہا کیا ہیں تہمیں ایسی عورت بتلادوں جو اس بچے کو پالے یوسے۔ اور اس طرح ہم نے تجھے بھیر تیری ماں کی گودیں لوٹا دیا کہ اسکی آنتھیں مصندی رہیں اور دبچہ کی جدائی سے) غمگین نہ ہو۔

غیرارا دی فنکس سری جوغالباً آبادی سے دور شہر کے باہر محقے جیساکہ باد شاہوں سری جوغالباً آبادی سے دور شہر کے باہر محقے جیساکہ باد شاہوں کے محل ہواکرتے ہیں فطری صلاحیتیں اور شاہی زندگی نے اُنھیں نہایت قوی اور مضبوط جوان کی طرح بنادیا۔ چہرے سے رہ ب ٹیکتا تھا اور جسم کی ساخت بھی پُروقار باعظمت مقی انہیں یہ معلوم مخاکہ وہ اسرائیلی ہیں اور مصری خاندان سے ان کا کوئی رشتہ قرابت جلداول

نہیں اُنھوں نے بیھی بار ما و کیھا کہ بنی اسرائیل پرسخت مظالم ہورہ ہی اوروہ لوگ مصر میں ذکت وغلامی کی زندگی بسر کررہے ہیں۔ یہ دیکھ دیکھ کر اُن کا خون جوش مارنے گگتا تھا اورموقعہ بہموقعہ بنی اسرائیل کی حمایت ونصرت میں پیشس پیوماتے تھے۔ ایک مرتبہ شہری آبادی سے ایک کنارے جارہے تھے کہ دیکھا ایک فرعونی ایک اسرائیلی موبیگار سے لئے تھسیٹ رہاہے۔ اسرائیلی نے حضرت موسیٰ علیہ السلام کو ديجها تولگا فرياد كرنے إور مد دچاہنے بحضرت موسیٰ عليه السلام كو فرعونی كی اس حركت پرغصه آیا اور آسکو بازر کھنے کی توششش کی لیکن اُس فرعونی نے توجہ نہ و کی اسپر حضریت مُوسیٰ علیه الت لام نے غصبہ میں ایک گھونسا رسید کیا۔ فَرعو نی اس ضرب کو بر واشّت نہ کرسکا اور اُسی وقت دم نوڑ دیا۔حضرت موسیٰ علیہ الت لام کو اس عمل پر مہت افسوس ہوا ،الٹسر سے فوری معافی طلب کی الترنے انتھیں معان بھی فرمادیا دکیونکراس عمل ہیں ہزارا وہ

مقانه نبیت) د وسرے دن مجی إيها ہي ايک اور واقعہ پيش آيا۔ ديجما كه وہي كل والا اسرائيلي ايك اورفَرعوني سي حجاكر ما ہے حضرت موسىٰ عليه الت لام كو دىكيم كركل كى طرح آج تجبی مد د کاطالبَ ہموا حضرت موسیٰ غلیہ استَ لام کو بیہ بات ناگوار گزری کہ اس کارُوز كا حُجَكُرُ الم معلوم من المسيح كه يَحْجَكُرُ الوقسم كا آدمى سي تنبيه كے طور بر فرما ياكه :-انْكَ عَنْوِي مُنْبِينَ .

تو بلاشبہ کھُلا کمراہ آ دمی ہے۔

وه اسرائیلی سمجھاکه کل تو فرعو نی کو مار آنھا شاید آج میری خبرلیں فوراً بول پڑا:۔ ا ہے موسیٰ جس طرح کل تم نے ایک فرعو ٹی تو مار ڈالا تھا کیا

آج مجعكوفتل كرنا عاست بو ؟ فرعونی نے جب یہ ہات سنی تو آس قتل کاراز فاش کردیا۔ حضرت موسیٰ علیہ است لام کی سخرفتاری کا محم جاری ہوا بحسی خیرخوا ہ نے حضرت موسیٰ علیہ السلام کو اطلاع دی کہ اس وقت مصلحت مہی ہے کہ آپ شہر جپوڑ دیں حضرت موسیٰ علیہ السلام نے اسس مشور کے توقبول کیا اور ارض مدین کی جانب روانہ ہوگئے۔

قرآن علیم نے اس جبرحوا ہ کا نام نہیں بیان کیا صرف وقو وصف بیال کئے ہیں۔

ہدایت کے چراغ

ہ میں ہے۔ اول یہ کہ وہ مخص شہر کے آخری کنارے سے دوڑتا ہواآیا، دوم یہ کہ اُس نے حضرت موسیٰ علیہ التلام سے کہا ایک بڑی جماعت آ کیکے فتل کامشورہ کررہی ہے۔

شہرے آخری کنارے سے آیا تھا،او رعرب میں پیشل معروف ہے الاطراف مسکنی الاشراف دشہر کے کنادے شرفار معروف ہے الاطراف مسکنی الاشراف دشہر کے کنادے شرفار معروب کی جگھ ہے) معلوم ہوتا ہے کہ وہ کوئی مشرفین ومعزز آدمی تھا۔ دوسرے یہ خبر دینا کہ ایک بڑی جماعت قبل کا مشورہ کررہی ہے۔ یہ ظاہر کرتا ہے کہ یعلم اسی شخص کو ہوسکتا ہے جو فرعون اور اسیح ارکان کے درمیان نما یاں جینیت رکھتا ہوگا۔ ارکان کے درمیان نما یاں جینیت رکھتا ہوگا۔ فرعونی کے قبر آن کیم کی سورہ صف میں اسطرح ملتا ہے :۔

قرافي مضمون وكتابك أشُدّ أتينن محكمًا وَعِلْمًا الح

(قصص آیات مثکا تاملا)

اورجب موسیٰ اپنی پوری جوانی کو بہونچے اور اُن کا نشو و نما کمل ہوگیا تو ہم نے اُن کو حکمت علم عطا کیا دنبوت سے پہلے) اور ہم نبک لوگوں کو ایسی ہی جزا دیتے ہیں ۔

دایک روز) و ہشتہ ہیں ایسے وقت داخل ہوئے جبکہ اہل شہر غفلت ہیں بھتے وہاں ڈو آدمیوں کو لڑتے پایا۔ ایک اُن کی اپنی قوم کا بھا اور دوسرا اُن کی دشمن قوم کا بھا ، سو اُن کی برا دری کے آدمی نے دشمن قوم والے کے خلاف مدد کے لئے پیکارا ، موسیٰ نے اسکو ایک گونسا مارا اور اُس کا کام تمام کردیا۔

موسیٰ نے کہا کہ یہ توٹ بیطانی طرکت ہوگئی، بیٹک شیطان توسخت ڈمن کھلا گمراہ کن ہے (بھیرنادم ہوکر) موسیٰ نے کہا اے میرے پر ور دگار ہیں نے اپنے نمفس پرطلم کیا ہے ہیں میری مغفرت فرمادیجے پر ور دگار ہیں نے اپنے نمفس پرطلم کیا ہے ہیں میری مغفرت فرمادیجے چنا بچہ النہ نے ان کی مغفرت فرما دی میو کمہ وہ غفور ترجیم ہے۔

موسیٰ نے عہد کیا کہ اے میرے پر ور دگاریہ احسان جو تونے مجھ پر کیا ہے اسکے بعد میں تعبی مجرموں کا مدد گار نہ بنوں گا۔

سے خطرہ محسوس کرتے شہر میں جارہے تھے کہ اچانک دیکھا کہ وہی خص ہے جس نے کل موسیٰ سے مد د کے لئے پیکار انتھا آج بھرمیکار رہاہے'

موسیٰ نے کہا تو تو بڑا بہکا ہوا آ دمی ہے۔

اسرائیلی کافیمن تھا تو وہ اسرائیلی دغلط فہی ہیں) کہا ،اے موسیٰ اور اسرائیلی کافیمن تھا تو وہ اسرائیلی دغلط فہی ہیں) کہا ،اے موسیٰ کیا تم مجھے آج اسی طرح قتل کرنا چا سے ہوجس طرح کل ایک آدمی کو قتل کر چا ہیں تم زمین ہیں ، پنا زور بٹھا نا چا سے ہوا ور مسلح کروا نا نہیں چا سے داس کلام سے شہر ہیں بات مجھوٹ گئی) دا سکے بعد) داسکو بعد کا ایک بعد) داسکو بعد کروا نا نہیں چا سے دوٹر تا ہوا آیا اور بولا اے موسیٰ اسٹوارو میں آپ کے قتل کے مشورے ہور ہے ہیں ۔ لہذا یہاں سے جلدگل جائے میں آپ کا خیرخواہ ہوں (یہ خبر سنتے ہی) ، موسیٰ ڈرتے اور سہتے کا گئی اور دُھا کی اے میرے دب مجھے ظالموں سے بچا ''

ہرایت کے چراغ جلدا وّل میں میں میں میں میں اور اور اور اور اور اور او

اسہ جوم سے کچھ دور و تو لڑکیاں گھڑی ہیں اور اپنے جانوروں کو یانی پر جانے ہے روک رہی ہیں۔ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کو احساس ہواکہ یہاں بھی وہی سب کچھ ہور ہا ہے جو دنیا کی ظالم طافقوں نے اختیار کرد کھاہے معلوم ہوتا ہے کہ رٹڑکیاں ممزور وغریب گھرانے سے تعلق رضتی ہیں اور اس انتظار ہیں ہیں کہ جب بیقوی وسرکش اپنے جانوروں کو سراب کرچکیں تو بچا گھیا پانی اپنے جانوروں کو بلائیں ، انغرض برحال حضرت موسیٰ علیما اسے دیجھا نہر کیا آگے بڑھ کر بوجھا :۔

تمہاری کیا پریٹ فن ہے ؟ اپنے جانوروں کو یا بی کیوں نہیں پلالیں ؟

دونوں ترکیوں نے جواب دیا ہم مجبور ہیں آگر جانوروں کو آگے بڑھاتے ہیں اور ہمارے والد بہت بوڑھے ہیں اُن فریہ طاقتور زبرد تی ہم کو پیچھے ہٹا دیتے ہیں اور ہمارے والد بہت بوڑھے ہیں اُن بلا کر میں بہوات ہم کو پیچھے ہٹا دیتے ہیں اور جب یہ لوگ اپنے جانوروں کو پانی بلا کر والیس ہوجانے ہیں اسوقت ہم بچا کھیا پانی حاصل کرتے ہیں بہی ہمارا روز کامعا لمہ ہے والیس ہوجانے ہوئے کو میں اسوقت ہم بچا کھیا اُن فی مارا دوز کامعا لمہ ہے جہرتے ہوئے کو یو کر جبرت ہوئے ہوئے کر او کیوں سے جبرتے ہوئے کو یو کیوں سے جانوروں کو سیراب کر دیا ۔ جب ان لڑکیوں سے جانوروں نے پانی بی لیا تو وہ گھر پہنچیں جانوروں کو سیراب کر دیا ۔ جب ان لڑکیوں سے جانوروں نے پانی بی لیا تو وہ گھر پہنچیں خلاف عادت جلد والیس تیز ان سے والد کو تعجب ہوا پوچیا بیٹی آج کیا بات ہے جو تم خلاف عادت جلد والیس تیز ان سے والد کو تعجب ہوا پوچیا بیٹی آج کیا بات ہے جو تم جلد لوٹ آئی ہو؟ دونوں نے گزرا قصة سنا یا کر کس طرح آگ اجنوبی نے کہا جا وجلد اُس اجنبی کو لے آؤ معلوم ہوتا ہے کہ کوئی نیک ہوت

آدمی ہے ؟ ادھر باپ بیٹی بیں یگفتگو ہورہی تھی اُدھر حضرت موسیٰ علیہ السّلام جانوروں کوسیراب کرنے کے بعد قریب ہی سے ایک درخت سے نیچے بیٹھ سے کے ۔مسافرت وغربت اور تھے تھے کے بیاس سے نڈھال ہو تھے تھے۔الٹر تعالے سے آگے ہاتھ تھے یا اسے۔ مناجات شروع تحردی :۔

الہی بیں بھوکا ہوں ، حالت سفر میں نہوں ، میری مد دفر ما ، جو بھی میرے گئے بہتر ہوا پنے فضل سے 'ازل فرما . بیں تیری ہسر معمت کا متاج ہوں ۔ ہایت کے باغ ہاپ سے مشورہ پر اُن دونوں میں کی ایک لڑکی تیزی سے وہاں پہنچی تو دیکھا کہ وہ نیک دل آدمی کنویں سے قریب ہی بیٹھا ہے۔ شرم وحیا کے ساتھ بیچی نظریں سکتے لڑکی نے کہا :۔

آپہمارے تھر چلئے ہمارے والد آپ کو بلاتے ہیں، سرید سرم

تاکہ وہ آبکو آپ کے اُس احسان کا برلہ عنایت کریں۔
صفرت موسیٰ علیہ اس الم نے اس غیر متوقع دعوت کورد کرنا مناسب نہ سمجھا اُ تھ کھڑے
ہوئے اور الڑکی کو ہدایت کی کہ وہ پیچھے چلے اور اشارے سے گھر کی رہنما تی
سرے جب گھر پنجے تو الڑکیوں کے والد بزر تحوار نے حضرت موسیٰ علیہ السلام کا
استقبال کیا ،اعزاز وائرام سے ساتھ ملاقات کی۔ پہلے کھانا کھا یا بھر حالات دریافت
سختے حضرت موسیٰ علیہ استلام نے اپنی ذندگی کی ساری فیصیل بیان کی ۔ فرعون کاللم
بنی اسرائیل کی حالت زار کا تذکرہ کیا اور بعد میں اپنے اُس غیرارا دی قبل کا بھی واقعہ
بیان کیا ۔ اسپر ان بزرگ نے سئی دی اور فرمایا کہ النٹرکا شکر کروا ہے ہیں ظالم قوم
بیان کیا ۔ اسپر ان بزرگ نے سئی دی اور فرمایا کہ النٹرکا شکر کروا ہے ہیں ظالم قوم
بیان کیا ۔ اسپر ان بزرگ نے سئی دی اور فرمایا کہ النٹرکا شکر کروا ہے ہیں ظالم قوم

عربی صفح کمبیر ایم بزرگ کون تھے ؟ اس موقعہ پر قرآن کیم بیں کوئی صراحت موجود اس سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ کوئی بڑے بوڑھے آدمی تھے جواپنی پیرانہ سالی سے باعث اس قابل نہ تھے کہ گھر کی ضروریات خود اسپنے ہوتھوں پوداکریں ۔ اور غالباً گھریں ان سے سوا اور کوئی مردھی نہ ہوگا تب ہی گھر کی عور میں صفروری کام سے لئے با مزکلتی تھیں۔ عور میں صفروری کام سے لئے با مزکلتی تھیں۔ اس ساری صورت حال کو لوگیوں نے ایک مختصر فقرے میں اداکیا ہے :۔

وًا بُوْنَا شَيْحُ كَبِيرٌ وسورة صفر آيت على)

ہمارے والدہہت بوڑھے آدمی ہیں۔ اس فقرے کی ادائی میں لوکیوں کی حیاداری کا اندازہ ہوتا ہے کہ ایک اجنبی سے غیر روز بات بھی نہ کرناچا ہتی تقییں ،گریہ بھی پ نند نہ تھا کہ یہ اجنبی ہمارے خاندان کے متعلق سکوئی غلط دائے قائم کرلے اور اپنے زہن میں یہ خیال محرے کہ یہ کیسے لوگ ہیں جن

مرد گھر بنیٹے رہیں اورعو رتیں کام کریں ؟

بہرمال ان شیخ کبیر کے بارے ہیں قرآن حکیم نے کسی ایک مجگہ بھی ان کا نام نہیں بتایا ہے اور یہ کوئی ایسی قوی روایت موجو دہے جو نام کومتعین کر دے۔ایسلئے مفسرین وموّرضین کے مختلف اقوال پائے جاتے ہیں جن میں شبہور ومعروف اوراکٹر مفسرين كى رائے بہہے كہ و ہ حضرت شعيب عليه الت لام ہيں۔ ا مام تنفسيرا بن جرير طبرئ شنيبي قول حضرت بحسن بصري كانتقل تحياسي ومحدث أبن ابي عالتم نه عجمي يهي با کہی ہے جو قرآن سیاق وسیاق کے مطابق مجی ہے۔

بعضَ مُورِضين نے اس شیخ کا نام پیڑون لکھا ہے اور پیرحضرتِ شعیب علیالسلام کے بھتیجے تھے۔ اور معض نے ان کا نام پٹریٰ لکھا ہے ۔ طبری نے سند کے ساتھ حضرت ابن عباس طنسے روایت نقل کی ہے کہ موسیٰ کو اجیر رکھنے والا مدین کانتیج '' بنری' نامی تھا۔ توراۃ میں اسی سے ملتا جُلتا نام ٌ یٹرو" بتا یا گیا ہے۔ اوربعض نے ان کا نام

مؤرخ اسلاعلامیسیّدسلیمان ندوی کی تحقیق یہ ہے کہ حضرت شعیب کا ایم کرا محوباب مقااور بتزوایک اعزازی لقب نفا جیکے معنی کامل سے ہیں جس طرح یہو دیوں سے ہاں کامن اورمسلمانوں کے ہاب ایام کالفظ بولا جاتیا ہے۔

قرآن صيم نے ان كا نام شعيب كہا ہے جو باب كى تصحيف ہے۔

حقیقت ہیں یہ سب ایک ہی نام ہیں جوزُ بان ولغت کے لحاظ سے مختلف تلفظ ہیں اوا کئے گئے ہیں۔ بہرحال نام کی تعین ہیں کوئی قطعی بات معلوم نہیں ہوتی جو کچھ ہی ہیں وہ تیاس واندازے ہیں سکین جن اہل علم نے اِن بزرگ کا نام شکیب علیہ اسٹ لام بنایا ہے وہ زیاہ قابل ترجیج ہے اور اسی پراغتما د کیا جاسکتا ہے۔ایک وجہ تواسکی یہ کہے کہ عام طور پرحضرت شعیب علیه است لام اورحضرت موسیٰ علیه است لام کا زمایذ ایک بیان تحیا تحیاہے۔

دوسری وجہ بیرکہ شہر مدین کی جانب جوربول بھیجے گئے تھے وہ حضرت شعیب علیہ الت کام ہیں ۔ان سے علاوہ قرآن تھیم ہیں اس شنہ کی جانب مسی اور مضہور وُمعروف رسول سے روانہ کئے جانے کا ڈکرنہیں ملیا۔ وَ إِلَىٰ مَدُينَ أَخَاهُمُ شِعْيَبًا. (بودآيت عند)

بدبن كي جانب ٱنج مها بئ شعيبُ كورسول بناكر بهيجا كيا-اصحاب الأيكه تهمي إبل مدين هي كوكها جا تاسيح يختفصيل تذكره ستيدنا

مليه التلام بين آجي ہے۔ عليه التلام بين آجي ہے۔ اکڏي آخي المُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُنْ الْمُنْ سَلِينَ. إِذْ قَالَ لَهُ حُر

شَعْيَبُ أَلَّ تَتَقُونُ . (شعرار آيت علاا)

تميسری وجه په کهسوره مهو د بین آنبیار کرام کے سلسله وار پذکرون پر حضر شعیب علیہ الت لام کے نذکرے کے بعد حضرت موسیٰ علیہ الت لام کا تذکرہ ملتا ہے جس معلوم ہوتا ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ الت کام اور حضرت شعیب علیہ الت کام کا ايك زمانه ہے۔ لهذا مذبن كے يہ سي كبير حضرت شعيب عليه الت لام ہيں ۔ والتراعلم' مار مدین کا تذکره آیات ویل میں اسطرح موجو دہے:-

> ضمول وَكَتَا تُوَجَّهَ يِلْقَآءَمَدُينَ وَالْ عَسَى مَرِجَّكَ آنُ يَكُهُ يَنِيُ سَوَآءُ السَّيِيلِ. الخ

د القصص آیات ۲۳۰ تا ۱۹۵۰) اور مصر سے نکل کر) جب موسیٰ نے مدین کا ٹرخے کیا تو انھو نے (دل میں) کہا اُمبید ہے کہ میرارب محصحیج راستے کی رہنسا تی

اورجب و ہ رین سے کنویں پر مہنچے تو دکھاکہ وہاں ہے ہے لوگ دا ہے جا نوروں کو) یانی بلارہے ہیں اور دوعور نوں کو پایا محہ وہ اُس بھیڑے پیچھے اپنے جانور و ل کو روک رہی ہیں موسیٰ نے کہاتمہیں کیا پربیٹا نی ہے ؟ سحنے تکی ہم اپنے جانور وں کو پانی نہیں پلاسکتیں جب تک پیچروا ہے اپنے جانور کال نہ لے جائیں ،اور ہار والداك بورسے آدمي ہيں۔

ر پیشن کرے موسیٰ نے اُن سے جانوروں کو یا بی پلا دیا تھے

ایک سایه کی مجگه جا بیٹے ، تھر کہا پرور دگار جو خیر بھی تو مجھ پر نازل کردے بیں اُس کامتاج ہوں۔

پس آئی موسیٰ کے پاس اُن دونوں ہیں سے ایک ملیتی ہوئی مشرم وصیاہے ، بولی میرے والد آپ کو کلانے ہیں تاکہ بدلہ دیں اُس کام کا جو آپ نے ہمادے جانوروں کوسیرا ب کیاہے۔
کام کا جو آپ نے ہمادے جانوروں کوسیرا ب کیاہے۔
مجرجب موسیٰ اُن کے پاس بہنچے اور اُن سے (تمام) قصتہ بیان کیا دِ تواس شیخ کبیرنے) کہا اب اندیشہ نہ کر و، تم ظالم قوم سے بیان کیا دِ تواس شیخ کبیرنے) کہا اب اندیشہ نہ کر و، تم ظالم قوم سے

تورات بیں شیخ نجیری لڑکیوں کی تعداد ہائت بیان کی گئی ہیں ممکن ہے ایسا ہی ہو لیکن ابن کثیر نے اِن ہردوا قوال بیں اس طرح مطابقت پیدا کی ہے کہ ہوسکتا ہے کہ مرین کے اس بزرگ کی ثبات لڑکیاں ہوں گر مارِ مدین پرجو واقع پیش آیا اسس میں صرف ڈولڑگیاں ہی موجود تھیں جیسا کہ قرآن تھیم کی تھر کیجے سے معلوم ہوتا ہے۔

سرت دو تربیان و دود می جیب در تران یم میشری سے سوم ہوہ ہے۔ مشیخ کبیرا **ور داما دی رشنہ** حضرت موسیٰ علیہ استلام اور بدین ہے

اسِ بزرگ کے درمیان یہ باتیں ہور ہنگیں

کہ اس لڑکی نے جوموسیٰ علیہ التلام کو ملانے گئی تھی اپنے باپ سے تھا:۔ اسے آبا جات ایس اس مہمان کو اپنے جانور تجرانے اور

پانی مہیا کرنے کے لئے مقرر کر لیجے کیونکہ یہ وہی اُجیر بہتراور مناسب ہوتا ہے جو قوی اور امانتدار بھی ہو۔"

مفسرین لکھتے ہیں کہ باپ کو او کی گی گیافتگو عجیب سی معلوم ہوئی پوچھا ببٹی تجھکو اس مہمان کی قوت وا مانت کا حال کیو کمرمعلوم ہوا ؟

لا کی نے جواب دیا قوت کا اندازہ تواس سے معلوم ہواکہ کنویں کا بڑا ڈول اس سے معلوم ہواکہ کنویں کا بڑا ڈول اس سے تنہا بھر کر تھینچ لیا اور ایانت کا حال اس طرح کہ حب ہیں اسمنیں ملانے گئی تواس نے مجھے دیچھ کر اپنی نظریں نیچی کرلیں اور دوران گفتگوا یک مرتب مجھی نظراً مٹاکر نہیں دیجھا۔ اور جب چلنے لگا تو مجھکو پیچھے چلنے کو کہا اور خود آسکے آگے جلا انظراً مٹاکر نہیں دیجھا۔ اور جب چلنے لگا تو مجھکو پیچھے چلنے کو کہا اور خود آسکے آگے جلا

اور میں اُسکی صرف اشاروں سے رہنمانی کرتی رہی ۔

بینی کامشور ہ بیان باتوں کو مناتو ہہت خوش ہوا،
بینی کامشور ہ بیٹ آیا۔ حفزت موسیٰ علیہ التلام سے کہا اگرتم آئے
سال میرے پاس رہوا ورمیری بکر باں چراؤ تو میں اپنی دونوں میں سے
ایک بیٹی کا نکامے تم سے کروں گا اور اگرتم اس مدت بیں مزید دوئو
سال اور بڑھاکر دئی سال پورے کر دو تو اور بھی زیاد ہ بہتر ہوگا اور بہی اس لڑی کا مہر ہوگا۔

حضرت موسیٰ علیہ السلام نے اس شرط کومنظور کرلیا اور کہا کہ یہ میری مرضی پر حیوڑ سیے کہ ہیں اِن دونوں مدتوں ہیںسے جس کو جا ہوں پور اکر دول ''

طرفین کی اس باہمی رضامندی کے بعد نینے کیرنے اس بیان کر دہ مدت کومہر قرار دے حرسبید ناموسیٰ علیہ است لام ہے اپنی ایک لڑکی کا نمکاھے کر دیا۔

بعض مفسرین کاخیال ہے کوختم مُڈت پرعقد نرکاہے عمل ہیں آیا اور عقد کے فور اُبعد حضرت موسیٰ علیہ الت لام اپنی بیوی سے ساتھ جن کا نامٌ صفورہ" بیان کیسا جا آ اسے مصرروا نہ ہو گئے ہیں

عقدنکاح کی یے گفتگو قرآن کیم میں اسطرح موجود ہے۔

قرآن مضمون قَالَتُ إِحُلاسُهَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرُكُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجِرُتَ الْقَوِيُّ الْأُمِيْنُ الْخ

(قصص آیات ۲۲ تا ۲۵۰)

ان دونوں میں سے ایک لڑکی نے کہا اہّا جان ! اس شخص کونوکر دکھ لیجئے۔ بہترین آدمی جسے آپ نوکر رکھیں وہی ہوسکتا ہے۔ جوقوی اور امانت دارہو۔

باپ نے دموسیٰ ہے) کہا ہیں جا ہتا ہوں کہ اپنی ان ویو بیٹیوں ہیں سے ایک کا نکاھ تمہارے سامھ کردوں بشر طیکہ تم آسھ سال تک میرے ہاں ملازمت کرو۔ اوراگر دس سال پورے کر دو تو یہ تمہاری مرضی ہوگی میں تم پر ختی نہیں کرنا چاہتا، تم انشار السر محصے نیک آ دمی یاؤگے.

موسیٰ نے جواب دیا یہ بات مبرے اور آپ کے درمیا^ں طے بہوگئی ۔ ان دونوں مدّتوں ہیں سے جومدت بھی پوری کر دوں مجھرپر کوئی جبر نہ ہوگا اور جو کچھ تول و قرار ہم کر رہے ہیں التُراس پر تکہبان ہو قیام مدین کا تذکرہ آبیتِ ذیل سے معلوم ہوتا ہے :۔

فَكِيثُ سِنِينَ فِي أَهُلِ مَنْ يَنَ الْمُولِ مَنْ يَنَ ثُمَّ جِعُتَ عَلَا قَدَيٍ

يَبْهُونُسَىٰ الْخُ وَلَمْ آيتَ عَنْ)

مچرتم نے مرین میں چند سال قیام کیا بھراب مھیک پنی وقت دمقررہ) پراےموسیٰ تم آگئے اور میں نے تم کو اپنے کام سکا بنالیا ہے۔"

ازروئے معاہدہ حصرت موسیٰ علیہ السلام کی خدمت آٹھ سال مقی کیکن امفوں نے پورے دہش سال معمل کئے ۔ یہ بات انبیار علیہم الت لام کی سیرت کا بہتہ دبتی ہے۔ یہ حضرات اپنے اخلاق وکردار کا اعلیٰ ترین نموں نہینیں کرتے ہیں ۔

حضرت حسن بن علی فرماتے ہیں کہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے آ کھ سے بجائے د تن سال محمل کئے۔ حضرت ابن عباس نے بھی یہی بات خود نبی کریم ملی الشرطیہ و لم سے مقل کی ہے۔ حضور نے فرمایا :۔

قصی مُوسی است الدُجکین و اَطیبه ماعتنگی سینی .
حضرت موسی علیه استلام نے دونوں مدتوں میں سے
وہ مدت بوری کی جوزیادہ کا مل اور اپنے فسر کے لئے زیادہ نوشگوار
مقی تعنی دین سال ۔

تاج نبوت اورعطام عمره القران عليم نے ينهي بنايك مدت يورى

بدایت کے چراغ

ہونے کے بعد کتنے عرصے تک حضرت موسیٰ علیہ السلام مدین ہیں قیام پذیر رہے ؟ بعض مفسرین نے یہ خیال ظام کیا ہے کوختم مدت سے فوری بعد اپنی بیوی کو لے کرم صرر وانہ ہوسکتے ۔

ُ مَلَکّنَا فَضَیٰ مُوسَی ۱ لُکَجَلَ وَسَارَ بِاَ هُلِهِ اللّهِ۔ بچرجب موسیٰ نے مرت پوری کردی اور اسنے اہل کولے کر

> پس پرتے . غالبًا اس آیت سے یہ بات اخذ کی گئی ہو۔

کیکن معالم التنزیل میں یہ وضاحت ملتی ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ التسام مدت کے حتم ہونے پر فوراً روانہ نہ ہوئے بلکہ مزید وشل سال اسپنے خسر کے ہاں قیام کیب ، تورات میں بھی ایسی ہی نصریج موجود ہے۔

اور اس بات کو اس حقیقت سے جی تقویت ملتی ہے کہ جب حضرت موسے علیہ است لام گھرسے جیئے تو وا دمی مقدس بیں الٹرتعالے کی جانب سے انھیں کہا گیا کہ ظالم فرعون اور اسی قوم کی طرف جا واور ان کو الٹرکا پیام پہنچاؤ۔ اسپر حضرت موسط علیہ السالم نے فرمایا ہے۔

ور ورد گار میں نے اُن فرعونیوں میں سے ایک کوفتل کیا تھا

مجھے ڈرئے کہ تہیں وہ مجھے قتل نہر دیں ؟ اس گفتگو کے وقت نک قتل والے معاملہ کی وجہ سے حضرت موسیٰ علیہ الت لام کو مصر جانیکی ہمت نہیں ہورہی تھی ۔ مجلا و ہ مذت عقد کے نوری بعد کیسے روانہ ہوتے ؟ مہر حال حقیقت حال کاعلم الٹرعلیم وجبیر ہی کے ہاں ہے اوریہ ہی مناسب اور قابل احتیاط طرز ہے کہ لیسے امور میں جسکوالٹر تعالے نے پوشیدہ رکھا ہستم بھی پوسٹ مدہ مجھیں ۔

الغرض ایک روز حضرت موسی علیه الت لام اپنی بیوی سیّدُ صفور تُمُ اور تورا قری کی تصویری ایک روز حضرت موسی علیه الت لام اپنی بیوی سیّدُ صفورتُ اور تورا قریک تصریح کے مطابق اپنے دونوں بچوں سمیت شہر مدین سے اپنے وطن مصر محلئے روانہ ہوگئے رات مصند می محت مصروی کا شدت سے احساس ہور ہاتھا ،آگ جلانے کا اراوہ کیالیک چھما ق نے سخت محت کی وجہ سے کام نہ دیا ۔ قریب کی وادی ہیں نسگاہ ڈوائی توایک شعبلہ چھما ق نے سخت کی وجہ سے کام نہ دیا ۔ قریب کی وادی ہیں نسگاہ ڈوائی توایک شعبلہ

وايتسك جراغ

چکا نظر آیا۔ بیوی سے کہاتم یہاں تھیروہیں آگ لے آؤں گا تاکہ تاہیے کا بھی انتظام ہوجائیگا۔اور آگروہاں کوئی رہبرل گیا تو بھٹی ہوئی راہ کا بھی کھوج لگ جائے گا جب وہاں پہنچے تو دیچھا کر بجیب وغریب منظرے درخت پررٹنی نظر آرہی ہے۔ مگرمہ درخت کوجلائی ہے اور نہ ہی گل ہوئی ہے۔ یہ سوچتے ہوئے آگے بڑھے۔ سکین جوں جوں آگے بڑھتے آگ دور ہو۔ تی ۔ جاتی۔ اس صورت حال سے کچھ خوف سا پیدا ہوا۔ادا دہ کیا سکہ والیس لوٹ جائیں جوں ہی چلٹے آگ قریب ہوگئی اور اُس ہیں سے یہ آواز آئی :۔ سکہ والیس لوٹ جائیں جوں ہی جاتے اگ قریب ہوگئی اور اُس ہیں سے یہ آواز آئی :۔

یه آوازست نکر حضرت موسی علیه است لام آگے بڑھے تو دو بارہ بیکاراگیا :-"آے موسیٰ میں ہوں تمہارا پر دردگار یہاں اپنی جوتی آناردو

تم یہاں طولی کی مقدس وادی میں کھڑے ہو۔ اور دیجھو میں نے تم کو اپنی رسالت کے لئے جن لیا ہے اب میں جو کچھ بھی وحی کروں اسکوغور سے سنو "

شبہر مدین سے روانگی اور درمیان راہ میں نبوت سے سرفرازی اورعصا وید بیضا کا معجزہ آباتِ ذیل میں وضاحت سے ساتھ ملتاہے:۔

فرا فی صفحون مِنْ جَانِبِ التُطُورِ مَا مَّا الْهَلِهِ الْسَّ الْهَالِمِ الْسَّ الْهَالِمِ الْسَّ الْهَالِمِ الْسَّ الْهَالِمِ الْهَالِمُ الْهِ الْهَالِمُ الْمَالِمِ الْهَالِمُ الْمَالِمِ الْمَالِمُ الْمُلْمِلُولُ الْمَالِمُ الْمُلْمِلُمُ الْمَالِمُ الْمُلْمِلِمُ الْمَالِمُ الْمُلْمِ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمُلْمُ الْمُلْمِلِمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمِلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُلِمُ الْمُلْمُلُمُ الْمُلْمُ ال

بھرجب وہ وہاں پہونچے تو وادی کے داہنے کنار ہے۔ پرمبارک خطر میں ایک درخت سے پیکاراگیا کہ اے موسیٰ میں ہی النگر بہوں سارے جہان والوں کا پروروگار۔ اور بیرکه بچینک د و اپنی لائھی کو بچرجب دیکھا اُس کو کہ وہ لاٹھی سانپ کی طرح بل کھارہی ہے تو پیچٹے بچیر کر بھاگ کھڑے ہوئے اور مڑکر بھی نہ دیکھا (ارشادہوا) موسیٰ بلٹ آؤاورخوف کرو تے ایکا محذنا ہو

تم بالكل محفوظ مهوبه

اپنا ہاتھ کریباں ہیں ڈالو وہ چپکتا ہوا نکلے گا بغیر کسی نمگیف کے اور خوف دور کرنے سے واسطے اپنا ہازو مجبرا پنے سے ملالیب رجس سے ہاتھ اپنے اصلی ربگ پرلوٹ آئے گا) پس یہ قرصند تمہارے رب کی طرف فرعون اور اسکے در باریوں کے باس جانے کیلئے ہیں بیشک وہ بڑے نا فرمان لوگ ہیں۔

موسیٰ نے عرض کیا اے بیرے دب بیں نے اُن میں کے ایک آ دمی کاقتل کیا ہے سومیں ڈرٹا ہوں کہ وہ لوگ مجھے مار فرالیس گے۔ اور میرا بھائی ہارون مجھے سے زیادہ خوش بیان ہے اُسکومیرے ساتھ مدد تحیلے روانہ فریا تاکہ وہ میری تصدیق کرے گا محیمے اندیش سے کہ وہ لوگ مجھے حصالا دیں گئے۔

الترنے فرمایا ہم تیرے ہمانی کے ذریعہ تیرے باز وکومضبو کریں سے اور تم دونوں کوغلبہ دیں سے . تجبردہ لوٹ تم دونوں تک رہرگز، نہیں تینچ پائیں سے . ہماری نشانیوں سے زورسے غلبہ تہارا اور نہاری پیروی کرنیوالوں کا ہی ہوگا۔"

وَ هَلُ } كَاكَ حَدِيثُ مُوسى وَدُكُ إِنَّا كَامًا فَقَالَ

الإهلي المُكُنُّوا. إلخ الله واعلا)

اورتہیں کچھ موسیٰ کی خبر بھی پہنچی ہے ؟

جب کہ انتفوں نے ایک آگ دیمی اور اپنے گھروالوں سے کہا ذرا مخیرو میں نے ایک آگ دیمی ہے تا بدتمہارے گئے ایک آدھاانگادہ کے آؤں یا اس آگ پرمجھے دراستے سے متعلق) کوئی رہنائی ملجائے ؟ جب و ہاں آئے تو پکاراگیا اے موسیٰ! میں ہی تہارا رت ہوں اپنی جو تیاں اگارہ وتم وا دی مقدس طوی ہیں موجود ہواور ہیں نے تم کو چیئ لیا ہے۔ لہذااب کان لگا کرسنو جو کچھ وحی کی جاتی ہے۔
میں ہی الشر ہوں مبر سے سوا کوئی معبود نہیں ہیں تم میری بندگی کروا ورمیری یاد سے لئے نماز قائم کرو۔ بیشک قیامت ضسر لو انے والی ہے۔ میں اس کا وقت پوٹ یدہ رکھنا چاہتا ہوں تاکہ ہر متنفس اپنی سعی سے مطابق برلہ یائے۔

کی تکرے دوک نہ دے وہ شخص جو اس قیامت کی فکرے دوک نہ دے وہ شخص جو اس قیامت کی فکرے دوک نہ دے وہ شخص جو اس قیامت کی بیروی کرلیا اس قیامت برایمان نہیں لا تا اور اپنی خواہش نفس کی بیروی کرلیا ہے در نہ تم ہلاکت بیں بڑجا ؤگئے۔

اور اہے موسیٰ ابہ تمہارے داہنے ہاتھ میں کیاہے ؟ موسیٰ نے جواب دیا یہ مبری لاٹھی ہے اسپرٹیک لگا کرملیتا موں اور اس سے اپنی بکریوں کے لئے بیتے جمالا تا ہوں اور بھی بہت سے کام ہیں جواس سے لیتا ہوں.

ارت و فرمایا اے موسیٰ فرا اسکو رزمین پر) ڈال دو! پس موسیٰ نے اُسکو ڈال دیا ا چانک وہ ایک سانپ تھا جو دوڑنے لگا۔

فرمایا! (اے موسیٰ) اسکو کپڑلوا در ڈرونہیں ہم اس کو ویسا ہی کر دیں گے جیسا یہ دیہلے لاکھی کفی۔ اور ذرا ا پنا ہاتھ اپنی بغل میں دباؤ جیکٹا ہوا نسکلے گا بغیر کسی تمکلیف سے یہ دوسری نشانی ہے۔ یہ اس لئے کہ ہم تم کو اپنی بڑی بڑی نشانیاں دکھانے والے ہیں " اذ کیا کی موسیٰی اِری کھیلہ این آئیسٹ مناراً! الح

د النمل آيات <u>نه نامل</u>)

د این اس وقت کا قصّه سناؤ) جب موسیٰ نے اپنے گھر والوں سے کہا مجھے ایک آگسی نظر آئی ہے۔ میں انہی یا تو و ہاں سے کوئی خبر ہے تا بہوں یا کوئی انسکارا چُن لا آبوں تا کہ تم لوگ گرم ہوسکو۔

پس جب وہ وہاں پہنچے تو پکاراگیا مبارک ہے وہ جو اس آگ بیں ہے
اور جو اسکے اطراف میں ہے پاک ہے السرسب جہانوں کا پرور دگار۔
ایسی لاحقی ڈال دو جو ں ہی موسیٰ نے دیجھا لاحقی سانپ کی طسرہ اپنی لاحقی ڈال دو جو ں ہی موسیٰ نے دیجھا لاحقی سانپ کی طسرہ بل کھا رہی ہے تو پیٹھ بھیر کر بھاگ کھڑے ہوئے اور مرکز کر بھی نہ دیجھا۔ اے موسیٰ ڈرونہیں میرے حضور رسول ڈرانہیں کرتے ۔
البتہ جوظلم کیا اور بھراس بُرائی کے بعد بھلائی سے بدل لیا تو میں معاف کرنے والا نہر بان ہوں ۔ اور در اا بنا ہاتھ اپنے گریبان معاف کرنے والا نہر بان ہوں ۔ اور در اا بنا ہاتھ اپنے گریبان میں داخل کر لوجیکٹا ہوا نکلے گا بغیر کسی تکلیف کے۔ یہ دو وائن بان نہوں اور اُسکی قوم کی طرف دلے جاڈ کیگئے ،
نونشا نیوں میں سے ہیں فرعون اور اُسکی قوم کی طرف دلے جاڈ کیگئے ،
نیشک وہ لوگ بدکر دار قوم ہیں "

منرف بمکلامی قرآن مکیم کی آیات سابقہ سے پیش نظر دو باتیں کتب تفسیر میں زیر بجٹ آئی ہیں ۔

اُوَلَ موسیٰ علیه است لام نے حس رفتنی کو دکیما و ہ آگ نہ تھی بلکہ تحلی الہی کا نور تھا بسین جو آ واز اس پر د ۂ نور سے سنی گئی و ہ فرسنتے کی آ واز تھی ہ یاخود رابعالین کی ندا تھی ؟

بعض مفسرین کی رائے ہے کہ یہ فرشتے کی آواز بھی جیکے ذریعہ حضرت موسیٰ علیہ التلام کو ہمکلامی کا مشرف حاصل ہوا۔

بعلن دیگرمفسرین کی رائے ہے کہ یہ براہ راست ندائے الہی تھی اورحضرت موسیٰ علیہ التلام نے اس نداکو بغیر کسی واسطہ یا ذریعہ سے ثنا، یہ اس طرح جیسا کہ پنچمبرانِ فکداوحی الہی کوٹ ناکرتے ہیں۔

حقیقت بہتے کہ قرآن تھیم نے اپنے کلام عظیم کے لئے خود بہا پنا قانون بیا تحیاہے کہ عام فطری قوائے بشری اس قابل نہیں کہ الٹر نعالے سے برا ہِ راست عزت ہم کلامی خاصل محرسکیں .الٹر تعالیے سے شرف ہم کلامی سے صرف بین طریقے ہیں :۔ وی ، ورارجاب، فرشتے کے ذریعہ دشوری آیت ، هے ، ورارجاب، فرشتے کے ذریعہ دشوری آیت ، هے ، ورارجاب کے قلب میں کوئی بات ڈال دی جائے ہے کہ بغیری اسباب کے قلب میں کوئی بات ڈال دی جائے ہے کہ بغیری ندا جورسولوں کوئی جائی ہے ، فرشتہ پڑھکر سنا کے ، فرشتہ پڑھکر سنا کے ، فرشتہ پڑھکر سنا کے ، اب نا ہر ہے کہ حضرت موسی علیہ الت الم سے کوہ طور پر جو کلام کیا گیا وہ ان ہی تینوں صور توں میں سے ایک ہوسکتا ہے ۔ وحی اور فرشتے کا ذریعہ پہاں موجود نہیں ۔ لہذا ایک ہی صورت باتی رہ جائی ہے اور وہ ورار جاب کی ہے ، بعنی حضرت موسی علیہ السلام کو بیکارا گیا ۔

تو چارا گیا۔ قرآن کیم نے جہاں جہاں بھی حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے ہمکلامی کا ذکر محیاہے وہاں وحی یا فرشنے کا ذرایعہ موجو دنہیں ہے۔ ایان میں کیا۔ اس میں کا درایعہ موجود کی سے کا درایعہ موجود کی ہے۔

سُور و طاشی آیت ملاسے مینی بات مفہوم بروتی ہے کہ یہ کلام بی بردہ تھا:۔ کَلَتَا اَتْهَا نُوْدِی بِنُوسِی آیِ اَنْ اَکَامَ تَبُكُ اللّٰہُ

يس جب موسىٰ أس اك كے قريب آئے تو پكارے كئے اے

موسیٰ بی بهون تمهارا پر ور دگار-

اس لعاظ ہے جن مفسرین کرام نے یہ رائے ظاہر کی ہے کہ یہ کلام براہ راست نداکے طور پر تھا قابل ترجیج معلوم ہوتا ہے۔

وادی مفرس میں حضرت موسی علیہ است الم کو کم دیا اللہ کا کہ آپ اس مقدس میں حضرت موسی علیہ است الم کو کم دیا اللی جو تیاں اللی علیہ واللہ کی اللہ اللی جو تیاں اللہ علیہ ولم نے اس کی وجنو دار ثاد فرمانی ہے:۔

اللہ دیں ۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ ولم نے اس کی وجنو دار ثاد فرمانی ہے:۔

کا مُناتا مِنْ جِلْدِ جِمَا دِرِ مَنِیتِ۔

حفرت موسیٰ علیہ الت لام کی جو تیاں مردہ گدھے کی کھال سے بنائی گئی تھیں۔ د تفسیرا بن تیری دایعنی غیر مدبوغ تھیں) لہذا وہ جمڑا پاک نہ تھا۔ اگر جپخشک تھا۔ الغرض حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے جب یہ آ وا زسنی کہ الٹر تعالیٰے نے آخیں بدا <u>ت</u> کے جراغ

ا پنے کلام و پیام کے گئے منتخب فرمایا ہے اور انبیار سابقین کی طرح سیجے دین کی ملقین اور فرعون کی غلامی سے بنی اسرائیل کی ر ہائی کی اہم خدمات ابخام دینے سے لئے پہند فرمالیا ہے توانتہائی مسرت ہیں حیران کھڑے رہ گئے۔ آخر کھپر اُسی جانب سے ابتدا ہوئی پوچھا گیا اے موسیٰ تمہارے دا ہنے ہاتھ ہیں کیا ہے ؟ کس کلام سٹروع ہوگیا ہو لے یہ میری لامعیٰ ہے ۔ اسپرسہار الیتا ہوں اور کمریوں کے لئے بنے وغیرہ حھاڑلیتا ہوں ۔ اسپرسہار الیتا ہوں اور کمریوں کے لئے بنے وغیرہ حھاڑلیتا ہوں ۔ اسکے علاوہ اور بھی بہت سے مقاصد یورے کرتا ہوں ۔

اسکے بعد حضرت موسیٰ علیہ النّہ لام کو تُرْوط مِم معجزے عنایت کے گئے۔ بیاں سے

عَصا، تَدْبِيضا.

اور فرما یا گیا یہ ہماری جانب سے تمہاری نبوت ورسالت کے قرفر بڑے نشان ہیں تمہاری دعوت و پیغام کی تائید ونصرت میں تم کو دیئے جاتے ہیں ضرورت پر ان سے کام لیاجائے۔ اور ارت دیما کو ایک فرعون اور اس کی قوم کو را و ہرایت دکھا و انحفوں نے بہت مرکشتی اور نا فرمانی اختیار کر رکھی ہے اور اینے غرور و تکبر میں بنی اسرائیل کو غلام بن رکھا ہے۔ رکھا ہے سوان کو غلامی سے جاور اینے غرور و تکبر میں بنی اسرائیل کو غلام بن

صزت ہوسی علیہ انسام نے الٹر تعالے کے اس ادنا دیر عرض کیا پرور دگار
میرے ہاتھ سے ایک مصری کاقتل ہوگیا تھا اس نے مجھے نوف ہے کہ مہیں وہ مجھے پاکر
قتل نہ کر دیں۔ علاوہ ازیں مجھے یہ ہی اندیشہ سے کہ وہ میری شدت کے ساتھ تکذیب
کر دیں گے اور مجھے جھٹلا ئیں گے۔ لہذا جب آپ نے یمنصب عالی عطائی ہے تو
میری زبان میں پڑی ہوئی گرہ کو کھول دیجئے اور اس خلافت کو آسان بنا دیجئے اور
میری زبان میں پڑی ہوئی گرہ کو کھول دیجئے اکد لوگوں کو میری بات سنتے سمجھنے میں
آسانی ہوا ورچو کھے میری گفتگو میں روانی نہیں ہے اور میرا بھائی ہارون مجھے میں
قصیح ہے اس لئے اُس کو بھی اپنی اس نعمت نبوت سے نواز کر میرا شرکی کار بنا دیکئے۔
الٹر تعالے نے حضرت موسیٰ علیہ است لام کو اطمیان دلایا کہ تم ہمارا پیغام
لے کرضرور جاؤا ور ان کوگوں کو حق کی راہ دکھاؤ۔ وہ مہارا تھے بھی بگاڑ نہیں سکیں گے۔
ہماری مدو تھا ارے ساتھ رہے گی اور جونٹ نات ہم نے تم شود سے ہی وہ تہا ری

معانی ہارون کو تمہارا شریب کار بناتے ہیں تم دونوں فرعون سے پاس جاؤ اور اس کو صحیح راہ دکھاؤ۔

واخلی مصر سرفراز ہوکر وادی مقدس سے اُترے تو اپنی ہوی کے پاس ہنچ جو وادی کے سامنے والے جنگل میں منتظر تھیں اُن کو ساتھ لیا اور سہیں سے عمیل حکم الہی میں مصر روا نہ ہوگئے ۔ منزل بمنزل طے کرتے ہوئے رات کے وقت مصری واضل ہوکر اپنے مکان پہنچ سکر اندر واضل نہ ہوئے والدہ صاحبہ کے آگے ایک مما فرکی چیٹیت میں ظاہر ہوئے ۔ یہ مکان مہمان نواز گھر تھا حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی خوب فاطر ہدار ات کی گئی اسی دوران اُن کے بڑے بھائی حضرت ہارون آ پہنچ ۔ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کے مصر پہنچنے سے قبل اُحضین نبوت سے سرفراز کیا جاچکا تھا اور اُسفیس حضرت موسیٰ علیہ السلام کی آمدگی اطلاع بھی دی جاچکی تھی وہ بھائی کو دیچھ کر لیٹ گئے اور تھے ابھے اہلی علیا کو گھر کے اندر لے گئے اور والدہ صاحبہ کو سار اصال سنا یا۔ تب ساد سے خاندان سفے خوشیاں مناہیں ۔

شرف ہمکامی ،عطائے نبوت ،معجزات ، وا دی مقدس کا ذکرا ورمصر ہیں واخلہ کمفصل نذکر ہ آیات ذبل ہیں ترتیب وار ندکور ہے .

قرائی مضمول اوماً تِللَّهِ بِيمِينِكَ يَامُوْسِي اللهِ دِلا آياتِ كَا مَا اللهِ دِلا آياتِ كَا اللهِ اللهِ

امقین کیاہے؟

عرض کیا میری لائھی ہے چلنے میں اس کاسہارالیتا ہوں ، اس سے بکرلیوں کے لئے ہے جھاڑتا ہوں ،اور میرے لئے اسمیں اور مجی طرح طرح کے فائدے ہیں . میں طرح طرح کے فائدے ہیں .

مكم ہوا اے موسیٰ اسے زمین پر ڈالدو۔

يس موسى في فرال دياتو و ه اچانك سائت مقا جو دور

کم ہوا اسکو کیڑیو اورخون نہ کر وہم اسے بھراسی اصلی حالت پر کئے دينة ہيں. (اورنيز حكم ہوا) ابنا دا ہنا ہائھ اپنے پہلو ہيں ركھ لو اور تھر نكالوتو و وحمكاً بوا بغير عيب مے نكلے كال يه (تمهارے لئے دوسرى نشانی ہے . داوریہ دونوں نشانیاں) اس لئے دوی گئی ہیں) کا مُند تم کو اپنی قدرت سے ہم بڑی بڑی نشانیاں دکھائیں گئے۔"

وَمَا كُنُتَ بِجَانِبِ الْغَرُبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوْسَى الْأَمْرُ

وَمَا كُنُتُ مِنَ الشَّاهِدِينَ. رقص آيات ١٢٢ تا ١٢٢٠

(ا ورا ہے محد سلی التّٰہ علیہ ولم) آپ اس وقت مغربی کو شے میں موجو دینہ تھے جب ہم نے موسیٰ کو یہ فرمانِ شریعت عطا کیا ہے اور نه آب شاہدین بیں شامل محقے۔ بلکہ اسکے بعد (آپ سے زمانے تک) ہم نے بہت سی سلیں پیدائیں اور اُن پر بہت زمانہ گزرچکاہے اور نہ آمی اہل مربن کے درمیان موجود منے کہ ان موہماری آیات سارے ہونے مگر (اس وقت کی پہنجری) جمیجنے والے ہم ہیں اور آپ طور سے وامن بس بھی اُس وقت موجود نہ تھے جب ہم نے موسیٰ کو پیکار اتھا مگر یہ آئے کے رب کی رحمت ہے دکر بمعلومات آپ کو دی جا رہی ہیں) تاکہ آپ ان لوگوں کوخبروار کریں جن کے پاس آپ سے پہلے کوئی ڈرانے والانهين آيات يدكه وهنصيحت قبول كرس "

هَلْ أَتَلْكَ حَدِيثُ مُوسَى إِذْ نَادِلْمُ رَبِّمُ بِالْوَاحِ

المُعْقَدَّ سِ مُطُوِّى - (النازمات آیات عطاما)

سر آپ کک موسیٰ کا قصد میہنیا ؟ جب کہ اسکے رب نے اسکو طونی کی وادی مقدس میں پکارا داے موسیٰ جاؤیم فرعون کی طرف بیشک اس نے سرسٹی کی ہے بھیے۔ مربر اسکوکہوکیا تجھ کورغبت ہے اس بات کی کہ توسنورجائے ؟ اور میں تجمکو سيرهي راه وكهاؤن نيرے رب كى طرف تاكر تجو كو در ہو!"

اِذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ اِنَّىٰ طَعَیٰ۔ قَالَ رَبِّ اشْدَحَ کی صَدْیری نَ ۱۶ (طاریات ۱۳۳۱)

رحکم ہوا) اب تم فرعون کے پاس جاؤ بیشک وہ سکرشہوگیاہو موسیٰ نے عرض کیا پرور وگار میراسینہ کھول دیجئے اور میرا کام میرے لئے آسان کر دیجئے اور میری زبان کی گرہ کھول دیجئے تاکہ وہ لوگ میری بات داچھی طرح) سمجھ سکیں اور میرے لئے میرے فاندان سے ایک وزیر مقرر کر دیجئے۔ ہارون جو میرا بھائی ہے اُسکے ذرابع میں سرا باتھ مضبوط فرما۔ اور اُسکومیرے کام میں شریک فرما تاکہ ہم آپی خوب پاسی بیان کرسکیں اور آپ کا ذکر کشرت سے کریں اور آپ ہما رے حال پر ہمیشہ گراں رہے ہیں "

ادت دہوا و یا گیاجو تونے ما نگا اےموسی -

اَذُهَبُ آنتُ وَ آخُولُكَ بِالْمِينَ وَلَاتَيْنَا فِي ذِكْرِي الْحِ ولاتيات على المض

اے موسیٰ جاؤتم اور تمہارے مھانی میری نشانیوں کے ساتھ اور دیجھومیری یا دہیں تقصیر تحریا ، جاؤتم دونوں فرعون کے پاس کہوہ سرکون ہوگیا ہے۔

ر ں ہو سیاسے پس اسے نری کے ساتھ بات کرنا نثاید کہ و ہنصیحت قبول کرے

یا ڈرجائے۔

وونوں نے عرض کیا پرور دگار ہمیں اندیث ہے کہ وہ ہم پر زیادتی کر ہیٹے یا بل پڑسے گا۔

ارث ٔ دہوا ڈرونہیں میں تم دونوں کے ساتھ ہوں دسب کھی مشن ریا ہوں اور دیکھ ریا ہوں ۔

پھا کا دہ ہوں دریوں ہے باس جا ڈا ورکہوکہ ہم دونوں تیسے بروردگارکے فرستا دہ ہیں بنی اسرائیل کو ہمارے ساتھ جانے کیلئے چھوڑ دے اور اُسمفین نظیف نہ دے ۔ ہم تیرے پاس نیرے داب کی ن انی ہے کر آئے ہیں اورسلامتی ہے اُس کے لئے جورا ہِ راست کی پیروی کرے۔

ہیں پیروں بیشک ہماری طرف وحی گی گئی ہے کہ عذاب ہے اُسٹیخص سے لئے جو حجے ٹلائے اورمنھ موڑے۔

وَلَقَلُ التَيْنَا مُوْسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَنَ آخَتَا ﴾ هَا رُوْنَ وَذِيْرًا ١١٤ ﴿ رَفِقَانِ آيَاتٍ ١٤٠٠ المِسْمَّ)

"أورسم نے موسیٰ کو کتاب دی اور اُسکے ساتھ اُن کے بھائی ہارون کو مددگار بنایا۔ اور اُن سے کہا تم دونوں جاؤ اُس قوم کی طرف جس نے ہماری آیات کو جھٹلا دیا ہے۔ آخر کار اُن لوگوں کو ہم نے تباہ سرکے رکھ دیا "

وَإِذْ نَادَى مَرَ بَلَكَ مُوسَى آنِ النُّتِ الْفَوْمُ الظَّالِمِينَ الْحَدَ وَالْعَوْمُ الظَّالِمِينَ الْحَدَ وَالْعَوَامِ آيات مَا مَاكِ)

راوراے محصلی النٹرعلیہ ولم) ان اہل مکہ کو اس وقت کا قصتہ سناؤ) جبکہ تمہار ہے رب نے موسیٰ کو بیکاراکہ دائے موسیٰ) طالم قوم کے پاس جائیے دجو) فرعون کی قوم ہے کیا وہ نہیں ڈرنے ؟
پاس جائیے دجو) فرعون کی قوم ہے کیا وہ نہیں ڈرنے ؟
عرص کیا اے میرے رب مجھے خوب ہے کہ وہ لوگ مجھے جھٹا دیں گے اور میراسینہ گھٹتا ہے اور میری زبان نہیں جبلتی سوآپ جھٹلا دیں گے اور میراسینہ گھٹتا ہے اور میری زبان نہیں جبلتی سوآپ

محسلا دیں کے اور سیراسیہ تھنا ہے اور سیری رہاں ، یں یہ کا واپ بارون کی طرف رمالت بھیجیں ۔ اور مجھ پر اُن کے ہاں ایک جُرم کا الزام مجھی ہے۔ اس لئے میں ڈرتا ہوں کہ وہ مجھے قتل کر دیں گئے۔

ارٹناد ہوا ہرگز نہیں تم دونوں جا کو ہماری نشا نباں لے کر بیٹک ہم تمارے ساتھ سب تجھ سنتے رہیں گئے۔ فرعون کے پاس جا کُر اور اُس سے مہوہم کو رب العالمین نے اس لئے بھیجا ہے کہ توبنی اسرایل کوہما رہے ساتھ جلنے دے ،

وَ الْمِنْ عَمَالِهُ فَلَمَّا مَا هَا تَهُ تَوْكُو كَا فَا مَا ثَهُ اللَّهُ اللَّهُ مَلَ إِلَّا مَلُ اللَّهُ مَلَ إِلَا مَا تَهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللْمُعَالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللِّهُ الللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَ

ا وراپی لاتھی ذرا بھینک دے جونہی دیکھا تو وہ لاتھی کو یا مانپ تھی بل کھارہی ہے تو بیٹھ بھیرکر بھاگ کھڑے ہوئے اور بیچھے مڑکر تھی بنہ و بھیا۔ اے موسیٰ ڈر و ضہیں میرے حضور پنجیبر ڈر انہیں کرتے۔ الآ یہ کوسی نے تھیا و کہ اور ڈرانہیں کرتے۔ الآ یہ کوسی نے تھیا وی سے محلائی سے دائیے فعل کو) بدل لیا تو میں معاف کرنے والا مہر بان ہوں۔ اور ذرا اپنا ابتقا اپنا کی بدل ایا تو میں معاف کرنے والا مہر بان ہوں۔ اور ذرا اپنا ابتقا اپنا کی تو میں نے مور نے اور اُسی قوم کی دور نشانیاں اُن) نوش نیوں میں سے ہیں فرعون اور اُسی قوم کی طرف دے جانے کیلئے) بلاشہ وہ بڑے بدکر دار لوگ ہیں "

الغسرض ان آیات میں عصائے موسیٰ کے معجزہ یا آیت الٹر ٹیرونے کومختلف تتعبیرات سے ساک اگر سے

سوره ظهری حَیَّتُ نَسَعَیٰ دوورٌ تا بَل کما ناسان کہاگیا۔ اورسور وُنمل اورسوروُ قصص میں جَانُ دیتلائمچُرتیلاسانپ) کہا گیا۔ اورسور وُشعرار میں ٹعُنبَانُ مَیِننُ دواضح مونما اژوھا) بیان کہا گیا۔

مفسرین کوام فرماتے ہیں کہ عصائے موسیٰ کی اگرچ یہ تعبیرات نفظی اعتبارے مختلف ہیں بیک بلکہ ایک ہی حقیقت کے مختلف ہیں ہیں بلکہ ایک ہی حقیقت کے مختلف اوصاف کوا داکیا گیاہے ۔ بعین ذات کے لیا فاسے وہ حقیقی حَیَّۃ مُنانِ مقااور تیزروی کے لیا فاسے جائے تیزروی کے لیا فاسے جائے تیزروی کے لیا فاسے جائے تیزروی کے لیا فاسے میں نظل مردہ تیزروی کے اوصاف محق العمی بیک وقت اسمیں یہ مختلف اوصاف محق ۔ شخبتان موارد فصص میں حضرت موسیٰ علیہ استام کے دونوں معجزوں کا ذکر کرتے ہوئے کہا گیا :۔

وَاضْمُمُ الْمِلْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهُ إِلَا

د آیت سر سور قصص)

اورخون سے بچنے کے لئے اپنا بازد اپنی طرف بھینچ ہے۔ اس آیت میں کس قسم سے خوف کا وکرہے ؟ مفسرین نے مختلف فسم سے خوف کی تعیین کی ہے۔ ہے۔ بعض نے کہاکہ سانپ کا ڈرمراد ہے اور معض نے کہا فرعون کے در بار کا خوف مرا دہے۔ جلدا وّل

بدایت کے چراغ

ا در یہ میمکن ہے ہرتسم سے خوف سے وقت اپنا ہاتھ اپنے ہازویں و ہا لیاجائے تو خوف جائ رہے گا۔ یعنی جب مجمعی کوئی خطر ہاک موقع ایسا آجائے جس سے دل ہیں خوف فون جائ رہے گا۔ یعنی جب مجمعی کوئی خطر ہاک موقع ایسا آجائے جس سے دل ہیں خوف وائدیث پیدا ہو تو اپنا ہا زوجینچ لیا کر واس سے تمہارا دل قوی ہوجائیگا اور رُعب و دہشت کی کوئی کیفیت ہاتی نہ رہے گی۔ اس جینچ لینے کی تا شکلیں ممکن ہیں۔ ایک میہ کہ و دہشت کی کوئی کیفیت ہاتی نہ رہے گی۔ اس جینچ لینے کی تا شکلیں ممکن ہیں۔ ایک میہ کہ سے دہشت ہیں۔ ایک میں ایک میں ایس ہیں ہیں۔ ایک میں ایس ہیں۔ ایک میں ایس ہیں۔ ایس

بالتھ کو مہلو کے ساتھ لگا کر دبالیا جائے۔

ورسری شکل یہ کہ ایک ہاتھ کو دوسرے ہاتھ کی بغل میں رکھ کر دبایا جائے۔
حضرت ہوسیٰ علیہ است لام کویہ تدبیراس لئے بتلائی گئی کہ وہ ایک ظالم بادشاہ کامق بلہ
سونے سے لئے بغیر کسی لاؤلٹ کر اور سازو سامان کے بھیجے جارہے سے بیفیناً البوخوفناک
مواقع بیش آنے والے تھے جن میں فطری طور پر ہراساں اور خوفز وہ ہونام محن محت اس کے اللہ تعالیہ است لام کویہ تدبیرا فقتب او
س کے اللہ تعالیٰ نے اس سے تحفظ کیلئے حضرت ہوسیٰ علیہ الست لام کویہ تدبیرا فقتب اور نسی پر ایت کی جس سے خوف واندیشہ جاتا رہے گا۔ چانچ حضرت ہوسیٰ علیہ السلام نے
سومل سے فائدہ اُسٹا یا اور بے خوف واندیشہ در بارِ فرعون میں جا بہنچ اور دُو برو
کلام اور بحث و مناظرہ کیا۔

یہ دراصل ہوئی تمیسری نشانی نہ تھی بلکہ خوف اؤر ڈرکو دُورکرے کا ایک علاج

تقا. والتُّداعــلم-

فرعون اور دعوت فی اسس نے لکھاہے کہ حضرت موسیٰ علیہ است الم اور معنی علیہ است الم مے خوف و خطر فرعون کے

در بارمیں داخل ہوگئے۔ فرعون نے اس اجائک آنی غرض پوچھی ؟ حضرت موسی علیالسلام وہارون علیہ السّلام نے جواب دیا کہ السّرنے ہم دونوں کو اینا پیام ورسالت دیکر نیرے پاس بھیجا ہے۔ ہم مجھ سے دئو باتون کا مطالبہ کرنے آئے ہیں۔

یہ بی بات تو یہ کہ اُس خدا پر ایمان لاجو ساری کائنات کا خالق ہے۔ ورسری بات یہ کہ بنی اسرائیل پرظلم کرنے سے باز آ اور اُن کو اپنی غلامی سے

نجات دے۔ فرعون نے جب بیٹ شا توغضبناک ہوگیا کہنے لگا اے موسیٰ آج تومیرے آگے ایت کے پراغ برایت کے پراغ

بنی اسرائیل کی رہائی کامطالبہ کرتاہے وہ دن تھول گیاجب کہ تونے میرے گھر بر ورش پانی اور بچین کی زندگی گزاری ؟ اور کیاتو یہ تھی تھول گیا کہ تونے ایک مشری کوتال کیسا متھا اور بھر میہاں سے فرا رہوگیا تھا ؟

تحضرت موسیٰ علیہ است لام نے ساری با توں کا اعتراف کیا اور تسل کے بارے میں یہ وضاحت کی کہ میں نے دانستہ کوئی قتل نہیں کیا البتہ اُس ظالم مصری کو دھمکا نے کے لئے ایک گھونسا رسسید کیا تھا جس بر اُس نے دم توڑ دیا۔ اس سے زیا دہ میں۔را اور کوئی قصور نہیں۔

مچرجب بیں نے یہاں سے کوچ کیا توالٹر تعالے نے میری خطامعان کر دی اور مجھکو نبوت ورسالت سے سرفراز کیا ہے۔

بیں تجھے کو خدا ئے واحد کی طرف دعوت دیتا ہوں ،اُ سکے سواکو بی عبادت کے لائق نہیں وہ رب العالمین ہے۔

یسٹنگر فرعو ن حیرت وتعجب سے کہنے لگا موسیٰ کیا مبرے علاوہ اور بھی کو ٹی' رت ہے ؟ اگر میں جے ہے تو اسکی حقیقت بیان کر ؟

ر جسم بہت ہوئی ملیہ استسلام نے فرما یا ہمارا رب وہی ہے جس نے زمین وآسمان حضرت موسیٰ علیہ استسلام نے فرما یا ہمارا رب وہی ہے جس نے زمین وآسمان کو پیداکیا اور اُس ساری مخلوق کو بھی جوان سے درمیان ہے۔

تر بیاری اس کاجواب نه دے سکا اور در باربوں سے کہنے لگا مجھے ایسا معلوم ہو تا ہے بیمجنوں اور پاگل انسان ہے۔

ہر بہ سے بیبر رہ بری بری ہوتا ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ است لام نے فر ما یا اگر تم لوگ ذرا سی بھی عفل سے کام لو تو اس حقیقت کو یا سکتے ہو۔

یسے در بازمیں وعوتِ حق کا تذکرہ قرآن مکیم کی مختلف سورتوں میں اس طرح

-: 4-3990

قرآ فی مضمول او خال موسی یفرعون این تر سول مین ترب العالمین کا فرتا ده بول. او در موسی می با در اعران آیات معدا، مصا) اور موسی نے کہا اے فرعون میں رب العالمین کا فرشا دہ ہوں۔

میرے کے کسی طرح زیبانہیں کر الٹرتعالے پرحق اور بھے کے علاوہ کچھ اور کہوں ۔ بلاسٹ بین تمہارے گئے تمہارے دب کی طرف سے ولیل اور نشان لایا ہوں ۔ بہذا میرے ساتھ بنی اسرائیل کو بھیج و ہے۔ "
فَا نُیْنَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلًا إِنَّا دَسُولٌ مَ بِدَ الْعَالِمَ اللهِ اللهِ

ر استرائم دونوں فرعون کے پاس جاؤ اور اُس سے کہو ہم کو ربُّ العالمین نے اس لئے بھیجا ہے کہ تو بنی اسرائیل کو ہمارے ساتھ ب

بی سے رسے کہا کیا ہم نے تجھ کو اپنے ہاں بچیسانہیں یا لا مقا ؟ تو نے اپنی عمر کے کئی سال ہمارے ہاں گزارے۔ اور اسکے بعد تو کر گیا جو تچھ کر گرا دمیعنی ایک شہری کافعل جی کیا) اور تو (اے موسیٰ) بڑا احسان فراموش آدمی ہے۔ موسیٰ نے جواب دیا اس وقت وہ کام میں نے نا واسسی

میں کر دیا تھا۔

ی سربی می میم اس نمهارے خون سے بھاگ گیاا سے بعد میرے رب نے مجھ کو حکمت رنبوت) عطا فرمائی اور مجھے رسولوں میں ثنامل فرمالیا۔
اور میری پروش کا یہ احسان جسکو تو مجھ سے جنار ہا ہے کیا ایسا احسان ہے کہ تو بنی اسرائیل کو غلام بنائے رکھے ؟
ایسا احسان ہے کہ تو بنی اسرائیل کو غلام بنائے رکھے ؟
فرعون نے کہا اور بدرب العالمین کیا ہوتا ہے ؟
موسیٰ نے جواب ویا آسمانوں اور زمین کا رب اور اُن نم میقین میں گرتم میقین سب چیزوں کا رب جو آسمان و زمین کے درمیان ہیں اگرتم میقین لانے والے ہو۔
لانے والے ہو۔

یہ سے کہا کیا ہے گرد و پیش کے لوگوں سے کہا کیا تم لوگ نہیں سنتے ہو؟ موسیٰ نے کہا تمہارا رب بھی اور نمہار سے اُن آبار واجداد

كارب بهى جو گزر چكے ہيں۔

فرعون نے حاضرین سے کہا تمہارے یہ رسول صاحب جو نمہاری طرف معیمے گئے ہیں یا گل معلوم ہوتے ہیں ۔

موسیٰ نے کہامشرق ومغرب اور جو کچھ اِن کے درمیان ہے روسیٰ نے کہامشرق ومغرب اور جو کچھ اِن کے درمیان ہے

سب كارب أكرتم لوك عقل ركفتي بهو.

فرعون نے کہا آگر تونے میرے سواکسی اور کومعبو دبنایا تو تجھے بھی اُن لوگوں میں سٹامل کر دوں گاجو قید خانوں میں پڑ ہے بیوئے ہیں۔

یہ موسیٰ نے کہا اگرچ میں تیرے سامنے ایک واضح دسی ل بھی لے آوں ؟

فرعون نے کہا اچھا تو ہے آاگر توسیّا ہے۔ موسیٰ نے اپناعصا بھینکا تو یکا یک وہ ایک نمایاں اڑد ہاتھا اور دبھر اپنا ہاتھ د بغل سے بھینیا تو و وسب دیجھنے والوں سے سامنے جیک رہائیا۔

اِتَا قَدُ أُوْجِي إِلَيْنَا آنَّ الْعُنَاآبَ عَلَىٰمَنْ كَنَّابَ عَلَىٰمَنْ كَنَّابَ وَتَوَكِّىٰ الْمُ الْمُ

ہم کو وی تھے ذریعہ بتا یا گیا ہے کہ اُس شخص کیلئے عذاب ہے جوجھٹلا تے اورمنھ موڑے۔

فرعون نے کہا تو بھرتم دونوں کارب کون ہے اے موسیٰ ہ موسیٰ نے جواب دیا ہمارارب وہ ہے جس نے ہر چیز کو اسکی ساخت بخشی بھراسکوراستہ بتایا۔

فرعون بولا اور پہلے جوت کیں گزرمکیں ہیں انکاکیا انجام تھا؟ موسیٰ نے کہا اُسکاعلم میرے رب سے پاس ایک نوشتے ہیں محفوظ ہے میرارب مذچوکتا ہے اور مذمجولتا ہے۔ وہی جس نے زمین کا فرش بچھا یا اور اُس میں تمہارے جلنے کے لئے داستے بنائے اور آسمان سے پانی برسایا ، بھراُسکے ذریعہ سے مختلف اقسام کے نباتات کے جوڑے بکا لے۔

کھائو اور اپنے جانوروں کو بھی چراؤ مقیناً اسمیں بہت سی نشا نیاں ہی عقل والوں کے لئے۔اسی زمین سے ہم نے تم کو پیدا کیا ہے اور اسی میں ہم تہمیں واپس لے جائیں گے اور اسی میں سے تم کو دوبارہ نکالیں گے۔

اورہم نے فرعون کو اپنی ساری نشانیاں و کھائیں مگروہ م وطل کے مالکی میں میں ان

حَصِّلاَ عَجِلاً كَيا اوْدِيهُ مانا . فَلَتَا جَاءَهُ هُ مُعَرِّقُوسِي بِالْيَتِنَا بَيَهَاتُ عَالُوْا مَا هَلْذَا

إِلَّ مِحْرِمٌ فَنُتَرِّى الْحَ (القَصْصَ آیات مَلِمٌ تَا مِیْلٌ)

مچے جب موسیٰ ان لوگوں کے پاس ہماری کھکی گھکی نشانیاں کے آکر آئے تو اُمھوں نے کہا کہ یہ کچے نہیں ہے سوائے بنا وٹی جادو ،اور یہ باتیں توہم نے اپنے باپ وا دا سے زمانے میں تھجی نہیں سنی ہیں۔

بی مادیم کے میب بی را رہ مصر بات میں بی بی بی ہے۔ اور موسیٰ نے کہا میرارب اُسٹخص سے حال سے خوب واقف ہی

جواُسکی طرف ہے ہدایت نے کرآیاہے اور وہی مہترجا نتاہے کہ آخری انجام محس کا اجھا ہو ناہے۔حق بہ ہے کہ ظالم مجھی فلاح نہیں یا تے۔

یہ ہر باہت ہے۔ اور فرعون نے کہا اے اہل دربار! میں ۔ تواپنے سواتمہار

محسی خداکونہیں جانتا ہیں اے ہان دراا نیٹیں پکواکرمیرے گئے ایک اونچی عمارت تیار کرٹ ایریں اسپر چڑھ کرموسیٰ کے خداکو دیجھے سات

سکوں اور میں تواسے بیقیناً جھوٹوں میں سمجھتا ہوں ۔ اور اُس نے اور اُس کے بشکروں نے زمین میں بغیرکسی حق کے اپنی بڑائی کا گھنڈ کیا اور گمان کیا کہ امضیں مجمی ہماری طرف

يلننانهي س-

 ہم نے انھیں جہنم کی طرف وعوت دینے والے پیش رو بنا دیااور قیا کے دن وہ کہیں ہے کوئی مدونہ پاسکیں گے۔

میت اورہم نے اِس دنیا ہیں اُن کے پیچھے لعنت لگا دی اور قیا کے دن بڑی قباحت میں مبتلا ہوں گے۔

وَقَالَ فِرْعَوْنَ بِإِهَامَانُ ابْنِ لِيُ صَرُحًا لَّكِنْ أَبُلُغُ

الكسباب الح (المؤمن آيت عليه تاعيم)

"فرعون نے کہا اے ہان میرے لئے ایک بلندعمارت تیارکر اکریں آسمانوں کی بلندیوں اور اُن کے درائع کک قدرت مال کرسکوں۔ اس طرح موسیٰ کے فداکا حال دہمی معلوم کرسکوں اور بیں تو اُس کو حُموٹ اسمجھتا ہوں ۔ اسی طرح فرعون سے لئے اُس کی بیملی کوخوبصورت کر دبا گیا اور وہ را ہ حق سے روک دیا گیا اور فرعون کے مکرکا آخری انجام ملاکت ہے ''

شاہ عبدالقا درصاحت نے موضع القرآن میں لکھا ہے کہ آیت مَاعَلِدُتُ لَکُمْرُ مِنْ الْمِهِ غَبْدِی ﴿ فرعون نے کہا اسے دربار بوں میں تمہارے لئے اپنے سوا

تحوتیٔ خدانہیں جانتا)

اس آیت ہے معلوم ہوتا ہے کوعون و ہری تھا اور تفسیر و تاریخ کے کتب ہیں جومصر قدیم کے تاریخ حوالجات تفل سے گئے ہیں اُن سسے یہی پتہ چلتا ہے کہ اہل مصر دیوتا وُں کے پرستار مقے اوران کاسب سے بڑا دیوتا کمن راع " دسورج دیوتا) تھا۔ یہ لوگ خدا واحد کے قائل نہ مقے بلکہ کائنات کی تخلیق اور اُن کے ہرمعا ملات او دحوا دث کا معلق ستاروں اور دیوتا وُں کی پرشن کر تی ہے بلکہ کائنا تو فرم کاعقیدہ ہے۔ یہ ایسے ہی جیسا کہ ہندوستان کے بین سے بھی خدا کے واحد کی منکر اور دیوتا وُں کی پرشن کر تی ہے بلکہ کائنا تو منطق سمجھا کرتے تھے۔ یہ ایسے ہی جیسا کہ ہندوستان کے بین کا مناسب سے بلکہ کائنا تو مناسب سے بلکہ کائنا تا ورحوا دث کا تعلق ستاروں اور دیوی دیوتا وُں ہی سے متعلق سمجھا کرتے تھے۔ یہ ایسے ہی جیسا کہ ہندوستان کے مین مت قوم کا عقیدہ ہے۔ یہ قوم منظق سمجھا کرتے تھے۔ یہ ایسے ہی جیسا کہ ہندوستان کے مین مت قوم کا عقیدہ ہے۔ یہ قوم ہمی خدائے واحد کی منکرا در دیوتا وُں کی پرشن کرتی ہے۔ یہ تھر بے نہیں کی کہ یکسی شخصیت کا نام ہے ہمی خدائے واحد کی منظق قرآن کریم نے کوئی تقریح نہیں کی کہ یکسی شخصیت کا نام ہے ہما مال کیا بان سے متعلق قرآن کریم نے کوئی تقریح نہیں کی کہ یکسی شخصیت کا نام ہے

یاعهده ا ورمنصب کا نام ہے. بظاہر تو یہی معلوم ہوتا ہے کہ یہ فرعون کے کسی با اعتماد ہ دمی کا ہی نام ہے جو فرعون سے ا**جکام اورمرضیات کو نا فذکر ٹا ہوگا ب**ے فرعون کا بیہ کہنے اکہ اے ہان ایک بلندعمارت تعمیر کر شخصی خطاب معلوم ہوتا ہے جوعمویاً بااعتما دافراد کے

لئے استعمال کیا جا تا ہے۔ اسى طرح عمارت سيضعلق سيحجى قرآن حكيم بين ايسى كونئ وضاحت نهبين ملتى كه

ہان نے فرعون کے اس حکم می تعمیل میں کوئی عمارت تعمیر کی یانہیں ؟ یہاں بھی قرآن مکیم نے فرعون کا صرف حکم نقل کیا ہے لیکن

" اریخی روایات میں موجو دہے کہ ہا مان نے اسمحل کی تعمیر کیلئے بچاس ہزار معمارجع سئے اورمحل کو اتنا اونیا کیا کہ اُس زمانے میں اس ہے بلٹ کو بئ عمارت نہ بھی، مجرحب تیعمیر میمل ہوگئی توالٹہ نغالے کے حکم سے

جبرتیل امین نے ایک ضرب میں استح مین مکڑے کرکے گرا دیا جس سے

فرعونی فوج سے ہزاروں آدمی دب کرمر گئے۔ (قرطبی) بېرحال واقعيرًكا انحصار اسپرنهئين كه مامان كى شخصيت كىيانىتى ؟ اورمحل تعمير سواتھا يانىہ ب ؟ مقصود تویہ تفاکہ فرعو بی حضرت موسیٰ علیہ استلام کے مقابلہ میں اپنی شکست کو تجھیا نے . سے لئے اگرچہ ندکورہ بالاطریقہ اختیار کیا مگروہ خود میں سمجھتا تھا کہ یہ ایک دھوکہ تواور س

مع ارمه ها بای از منابا که افرون کافدت برها ایس را اسکوحت و باطل کی این مسکش میں اپنے اعارم ها بالیم لئے سخت خطرہ نظر آر ہا تھا بیقول شخصے تنگ آ مدیجنگ آمد، اُس نے حضرت موسیٰ و ہارون علیہما است لام کے خلاف طاقت وقوت کا فیصلہ کرنیا اور یہ دھمکی دی کہ اے موسیٰ اگر تونے میرے سواکسی اورکو اپنامعبود قرار دیا تو میں تجھکو قبد میں ڈال دونگا ا و رہنی اسرائیل پر اپنی گرفت مضبوط کر دوں گا ۔اسپر حضرتَ موسیٰ علیہ الت لام نے نہایت ستانت سےجواب دیا

رجے میں تیرے پاس النگروا حد کی جانب سے ایک واضح وسیال ليرآيا مون تب مجى تيرے غلط راستے كوا ختيار كرلون؟ فرعون نے کہا آگر واقعی توسیا ہے نو مچروہ نٹان دکھا ؟ مكداول حضرت موسیٰ علیہ انت لام نے مجرے در بار میں اپناعصاز مین پر ڈالاوہ اچا ایک اژ د صاکی شکل اختیار کراپیا اور پیرخلیقت بهتی ،منظر کا د صوکه نه تقار

اسے بعد اپنے ہاتھ کو گریبان کے اندر لے جاکر باہر بکالا تو وہ ایک روشن تارے کی طرح چیکتا ہوا نظر آیا۔ یہ دوسری نٹ نی تھی جومپلی مرتبہ فرعون اور اہل در بار کے آگے

فرعون کے درباریوں نے جب یہ دیکھا کہ ایک اسرائیلی سے ہاتھوں اپنی قوم اور ا پنے با دست ہو گئنگست ہورہی ہے تو وہ بیقرار ہو کر کہنے لگے ، بلاست بموسیٰ بڑا جا دوگر ہے اور اس کا ارا دہ بیمعلوم ہوتا ہے کہ ہم کوسرز مین مصر سے باہر کر دے اور تختِ مصر پر قابض ہوجائے۔

ا باہمی مشورہ سے طے پایا کہ فی الحال موسیٰ اور ہارون کومہلت دی جائے اور اس دورا ن مملکت کے ماہر جا دوگروں کو دار السلطنت میں جمع کیا جائے اور تھیرمت ابلہ

سے بیا ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ است لام نے فرما یا کہ بہترہے ایساکو ئی انتظام ہوجائے اور اس سے لئے ملک سے قومی دن کا انتظار کیا جائے تاکہ اس مقابلہ کا انجام ہرض دیجھ سے۔ ینبوت ورسالت کے عزم وارا د و کا ایک کھلا ثبوت ہے کہ وہ حق کے اظہار کیلئے بڑاسے بڑا خطرہ مول لیتا ہے۔انبیا کہ ورسل کو النٹر کی ذات پرکس قدر اعتما دہوتا ہے وہ اس وا قعہ سے بخو تی سمجھ ہیں آیا ہے۔

الغرض یوم الزمینہ رجشن کا یوم ، مقابلہ کے لئے طے پایا ، فرعون نے اپنے ارکان دولت کے نام احکام جاری کرونے کے کملکت میں جسقدر بھی ماہر جا دو گر بہوں انھیں جلاز جلد جمع کرلیا جائے۔

بهرحال جشن کا دن آیاسب لوگ میدان میں جمع ہو سے نے فرعون اینے ارکانِ دو كے سائق ميدان ميں تخت نيشين ہوا۔ لا كھوں افرادحق و باطل كا يہ مقابلَہ ديجھنے جمع ہيں۔ ایک جانب مفرکے تمام نامی گرامی جا دوگر جمع ہیں کو وسری طرف حفرت موسیٰ اور حضرت بارون عليهما السلام حق وصداقت كاظهار كيلئ كعطرك بين أليس بين تحفقكو كم بعدط بإياكه مقابلہ کا آغاز جا دوگر کرٹن گے۔

چنانچ يرسارى فصيل آيات ديل بي اسطرح مذكور بـ بـ

قرآن مضمون قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَارَبُ الْعَالِمِينَ ١٠٠

(الشعرار آیات متات تا میس)

فرعون نے کہا اور بیرتُ العالمین کیا ہوتا ہے؟ موسیٰ نے جواب دیا آسمانوں اور زمین کارب اور اُن سب چیزوں کارب جو آسمان وزمین کے درمیان ہیں اگرتم میقین کرنے والے ہو؟ فرعون نے اپنے گر دو پہیش کے لوگوں سے کہا سنتے ہو؟ موسیٰ نے کہا تمہارا رہ بھی اور تمہارے اُن آبار وامدا د کارب بھی جو گزر چکے ہیں!

فرعون نے (حاضرین سے) کہا تمہارے یہ رسول صاحب جو تمہاری طرف بھیجے گئے ہیں بالکل یاگل ہیں۔

موسیٰ نے کہامشرق ومغرب اور جو کچھ اِن کے درمیان ہے سب کارب آگرتم لوگ عقل رکھتے ہوں۔

فرعون نے کہا اگر تونے میرے سواکسی اور کومعبو د بنایا تو تجھ کومیقیناً قیدیوں ہیں مث مل کر دوں گا۔

موسی نے کہا اگر چیس تیرے آگے ایک تھی دلیل لے آوں ؟ فرعون نے کہا اچھا تو لے آ، اگر توسچوں میں سے ہے۔ لیس موسیٰ نے اپنا عصا ڈال دیا تو پیکا یک و ہفتی اڑدھا مقا اور (اسکے بعد) امفول نے اپنا ہاتھ (بغل سے) کھینچا تو وہ سب دیکھنے والوں کے آگے جمک رہا تھا۔

وَقَالَ مُوسَىٰ يَفِرُعُونُ إِنِي مُنَ سُولُ رَبِّ الْعَالِمِينَ ١٠٤

موسیٰ نے کہا اے فرعون میں رب العالمین کا فرستادہ رسول ہوں۔ میرامنصب میں سے کہ الٹر کا نام لے کر کوئی بات حق سے

بدایت بحرجراغ

سوا نہ مہوں بیں تم لوگوں کے پاس تمہارے دب کی طرف سے کھٹ لی بیل لے کر آیا ہوں ۔ لہذا تو بنی اسرائیل کومیرے ساتھ بھیج دے۔ فرعون نے کہا اگر تو کوئی نشانی لایا ہے تو اُسکو پیش کر

اگر توسیاہے۔ موسیٰ نے ایناعصا ڈال دیا توا جانک و هتی اژ دیا تھا۔ (اور بھیر) اپنا ہاتھ (اپنی گریبان سے) بکالا توجوہ دیکھنے والوں کے

سامنے جمک رہاتھا۔

ر اسپر؛ فرعون کے قوم سے سرواروں نے کہا کہ بیقیٹ ایہ تنخص بڑا یا ہرجا دو گرکے جمہیں تمہاری زمین سے بے دخل کرناچاہتا ہے اب کہا حکم کرتے ہو؟

دیمچران سب نے فرعون کومشور ہ دیا) کہا اِسکوا وراسکے مجائی ریارون کو ،مہلت دیجئے اور تمام شہروں بیں ہرکارے مجیج دیجے کہ ہرماہر جادو گرکو آپ سے یاس لے آئیں۔

تُحَرِّبَعَتْنَامِنُ بَعُدِهِمُ مَّوْسَىٰ وَهُرُونَ الْحُلْ فِرْعَوْنَ وَمَلَابِهِ بِالْيِينَا فَاسْتُكُبُوُوْا وَكَافُوُا قَوْمًا عَجُهِينَ الح

د بونس آیات <u>۵۵۰ تا م</u>ک^ی)

مپیران ذہبیوں) سے بعد ہم نے موسیٰ اور ہارون کو ابنی نشائیو ے ساتھ فرعون اور اس سے سرداروں کی طرف بھیجا مگر انتھوں نے برائی کا گھنڈ کیا اور وہ مجرم لوگ تھے۔

یس جب ہمار لے پاس سے حق اُن سے سامنے آیا تو اُمفول نے کہد دیا بقیناً یہ تو کھلا جا دوہے۔

موسیٰ نے کہاتم لوگ حق کو ایسا کہتے ہو جبکہ وہ تمہارے سامنے آگیا کیا یہ جا دو ہے ؟ حالا نگہ جا دو گرمجی فلاجے نہیں یا تے۔

المفوں نے جواب دیا (اے موسیٰ) کیا تو اس لئے آیا ہے كہميں اُس طريقے سے مجيرو سے جبير ہم نے اپنے باپ دا دا كو پايا

رظاتیات سه تا وه)

فرعون نے کہاا ہے موسیٰ کیا توہمارے پاس اس کئے آیا ہے کہ اپنے جادو کے زور سے ہم کو ہمارے ملک سے نکال باہر کرے۔
اچھاتو ہم بھی نیرے مقابلے ہیں ویساہی جا دولا نے ہیں۔
اہذا طے کر لے اپنے اور ہمارے درمیان ایک دن (مقابلہ کا) نہم اس سے بھریں گے نہ تو بھرنا تھلے میدان ہیں۔

سے چری سے یہ و پرواسے میں ان ہے۔ موسیٰ نے کہاجش کا دن تمہارے لئے طے ہوا اور یہ کہ دن چرھے لوگ جمع ہوں . کس فرعون پلٹا اور اپنے داؤ چیج جمع کئے تھیسر

مقابد کے لئے آیا۔ قَالَ الْمَكُرُّمِنُ قَوْمِرِفِدُعُونَ إِنَّ هٰذَا لَسْحِ عَلَيْهِ الْحِ

(اعراف آیات مصابیا پیما)

فرعون کی قوم کے سرداروں نے آپس میں کہا کہ میقینًا نیخص رموسیٰ) بڑا ہا ہر جا دوگرہے ہم کو تمہاری زمین سے بے دخل کرناچاہتا ہے اب کیا کرناچاہتے ہو ؟

ہے ہب بیا ترہا چاہے ہوں۔ اُن سب نے فرعون کومشورہ دیا کہ اِسکوا ور اسکے مجانی رہارون) کو انتظار میں رکھتے اور شہروں میں ہرکارے روا نہ کر دیجئے کہ ہر اہرفن جا دوگر کو آپ کے پاس سے آئیں۔ ہر اہرفن جا دوگر کو آپ کے پاس سے آئیں۔

ہر، ہر کی جادور کر رہا ہے۔ بیات کیے اس آگئے انصوں نے کہا اگر رچنانچہ، جادو گرفرعون کے پاس آگئے انصوں نے کہا اگر ہم غالب رہے تو ہمبیں اِس کاصلہ توضرور بلے گا؟ فرعون نے کہا ہاں! اور تم مقرّب دربار ہوجا و گے۔

مرحوں ہے ہا ہی اے موسیٰ تم آپنا جا دو ڈالو گئے کیا ہم جا دو گئروں نے کہا اے موسیٰ تم آپنا جا دو ڈالو گئے کیا ہم

و اليس <u>۽</u>

موسی نے جواب دیا تم ہی ڈالو بس جاد وگروں نے اپن جا دو پیش کیا تولوگوں کی نگا ہوں کوستحور کر دیا اور دلوں کوخونسنر دہ کر دیا اور بڑاہی زبر دست جا دُولے آئے ۔ اور ہم نے موسیٰ کی طرف وحی کی کہ اپناعصا ڈال دے! (بس اُس کا مجھیکنا مقاکہ آن کی آئی) وہ ان جا دو گروں کے حجو ٹے کر تبوں کو نگلتا چلاگیا۔ (اس طرح جوحق مقا) پس وہ حق ثابت ہوا اور جو کچھ اُن جا دو گروں نے بنایا محت باطل ہو کررہ گیا)

پس فرعون اورا سے جادوگر مقابلہ میں ہار گئے اور ذلیل وخوار ہوکر لوٹ گئے ۔ اور جا دوگر (اللّہ وا حد کے لئے) سجد ہے ہیں گر پڑے ۔ اور کہنے گئے کہ ہم رب العالمین پر ایمان لائے جوموسیٰ اور ہارون کا رب ہے۔

فرعون نے کہاتم موسیٰ پر ایمان لائے قبل اسکے کہ پی تہ ہیں اجازت دوں ؟ بیقیناً یہ کوئی خُفیہ سازسٹس بھی جوتم نے اس شہریں کی تاکہ اسکے باسٹندوں کوشہر بدر کرو۔ اچھا اس کا بھیجہ اب تمہیں معلوم ہوجائے گا۔

بیں تمہارے ہاتھ پیرمخالف سمتوں سے کٹوا دوں گا۔ بھیر اسکے بعدتم سب کوسول پرچڑھا دوں گا۔

انحفوں نے جواب ویا بہرطال ہمیں اپنے رب ہی کی طرف پلٹنا ہے۔ اور توجس بات پر ہم سے انتقام لینا چا ہتا ہے وہ اس کے سواکچھ نہیں کہ ہمارے رب کی نشانیاں جب ہمارے را سفے آگئیں توہم نے انتقام یا اے دب ہم پرصبر کا فیضا ان کر اور ہمیں ونیا ہے انتقا تو اس طال ہیں کہ ہم نیرے فرما نبردار ہوں " ہمیں ونیا ہے انتقا تو اس طال ہیں کہ ہم نیرے فرما نبردار ہوں " منابع النہ تا آئند کے مال ہیں کہ ہم نیرے فرما نبردار ہوں " منابع النہ تا آئند کے اللہ کا آئند کے میں ہمیں و بیا ہے انتقا النہ کہ آئند کے اللہ کا آئند کے میں میں میں ہمیں کہ ہم نیرے فرما نبردار ہوں " میں ہمیں و بیا ہے اللہ کا آئند کے میں ہمیں کہ ہم بیرے فرما نبردار ہمیں کہ ہم بیرے فرما نبردار ہمیں کہ ہمیں میں ہمیں کر ہم بیریں و بیا ہمیں کہ ہم بیرے کی میں کہ ہمیں کہ ہمیں کہ ہمیں کہ ہمیں کر ہمیں کہ ہمیں کر بیریں ک

د یونس آیات منه تا <u>می</u>د)

مُّلُقُوْنَ. 1 يخ .

مچرجب جادوگر آگئے تو موسیٰ نے اُن سے کہا جو کچھنک اُن سے موسیٰ نے کہا یہ جو کچھ تم نے مجھنگا ہے یہ جا دو کی رسیاں وغیرہ بچھینگ اسے موسیٰ نے کہا یہ جو کچھ تم نے مجھنگا ہے یہ جا دو ہے الٹرتعالیٰ ابھی اسے باطل کئے دیا ہے۔ مقیناً الٹرمفسدوں کے کام کو سُدھر نے نہیں باطل کئے دیا ہے۔ مقیناً الٹرمفسدوں کے کام کو سُدھر نے نہیں دیا۔ اور الٹرتعالے حق کو اپنے احکام کے مطابق ضرور تابت کردھائیا اگرچہ مجرموں کو الیہا ہو ناپسند نہ آئے۔

ملمور حق اور گرجوا ہے فن کے اہراور کائل سے جب عصاموسیٰ (علیہ السلام) کی میجزہ دیجا تو وہ حقیقت مال کو سمجھ گئے اور جس بات کواس وقت کی فرعون اور اُس سے درباری پوشیدہ رکھنے کی کوشش کر رہے تھے وہ اس کو تھیا نہ سے اور جا دوگروں نے برسرِ عام اعتراف کرلیا کہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کا پیمل جادو سے بالا تر النہ کا معجزہ ہے۔ اسکوجاد و سے کوئی نسبت نہیں اور کھر فوراً النہ کی عظمت سے آگے سجدہ میں گر پڑے اور اعلان کر دیا کہ ہم موسیٰ اور ہارون کے پرور دگار پرایان کے آئے وہی رب العالمین ہے۔

فرعون نے جب یہ ویکی کہ حضرت موسیٰ علیہ السّلام کوشکست دینے کی جوآخری صورت بھی وہ جبی ختم ہوگئی۔ اب تہب الیانہ ہو کہ مصری عوام بھی ہا تھ سے جائیں اور حضرت موسیٰ اپنے مقصد میں کا میاب ہوجائیں تو اس نے کمر وفریب کا ایک دوسراطرلیقہ اختیار کی ساح وں سے سحینے لگا کہ ایسامعلوم ہو تا ہے کہ موسیٰ تم سب کا استاذ ہے اور تم سب کے دب پر نے آپ میں سازسٹس کر رکھی بھی تب ہی تو تم میری اجازت سے بغیر موسیٰ سے دب پر ایمان سے آئے۔

بین کی سے اب میں تمہیں عبرتناک سزاد دن گا تاکہ آئندہ کسی کوالیبی ہے وفائی کی جرأت منہوں پہلے تمہارے ہاتھ پاؤں اُلٹے سیدھے جانب سے کٹواؤں گا اسکے بعد سولی پرر چڑھا دوں گا۔

قرآني مضمون جادوكرون كاعتراب شكست ادر فرعون كاغيض وغضب

آبات ذیل میں ظامر کیا گیاہے :۔ عَالَ أَمَنْ تُنْهُ لَنُ قَبُلَ أَنُ أَذَنَ لَكُمُ الْحَ

(کلاآیات *بلئ* تا <u>مل</u>ئ)

صمول فرعون نے کہاتم میرے حکم مے بغیر موسیٰ پر ایمان ہے آئے یقینًا یہ تمہارا سردار ہے جس نے تمہیں جادو سکھایا ، میں

تمہارے ہاتھ یاؤں آلٹے سیدھے کٹواؤں گا اور تھجور کے تنوں پرسولی دوں گا بھرتمہیں پتہ چلے گاہم دونوں میں کون سخت عذاب دینے والا

ہے اور کس کا عذاب دیر پاہے ؟ جا دوگروں نے کہا ہم میجمی نہیں کرسکتے کسچائی کی جوروشن دلیلیں ہمارے سامنے آگئی ہیں اورجس خدانے ہمیں بیداکیا ہے اُس سے منھ موڑ کرتیرا حکم مان لیں توجو نیصلہ کرنا چاہتا ہے کر گزر توزیادہ سے زیادہ جو کچھ کرسکتا ہے وہ مہی ہے کہ دنیائی اس زندگی کا فیصلہ کر دی۔ ېم تواپ پروردگار برايان لا چکې پې که ده ېماري خطاي بخش دے خصوصاً جا دوگری کی خطا کہ جس پر تونے ہمیں مجبور کیا تھے۔ ہمارے نئے اِلنّر ہی بہترہے اور باقی رہنے والا وہی ہے۔ حقیقت بہ ہے کہ جومجرم بنگرائے رب سے حضور حاصر ہو گا اُسے لئے جہنم ہے جبیں

وہ نہجئے گا اور پذمرے گا۔ ا ورجواً سكے حضور مؤمن كى حيثيت سے ما ضربهو گاكه نيك عمل سے ہوں ایسے سب لوگوں سے لئے بلند درجے ہیں جنت عدن کے باغات ہیں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی ان میں وہ ہمیننہ رہے گے بہ جزا ہے اُس خص کی جو یا کیزگی اختیار کرے۔

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمَنْتُمُ بِم قَبُلَ أَنُ أَذَ كَ لَكُمُ إِنَّ هِذَا

داعرات آیات سی ا تا میدان لَتَكُوُّ لِللَّهُ الْحُوالِي الْحُوْلُ الْحُ

فرعون نے کہاتم اسپرایان ہے آ کے ہوتبل اسکے کہ میں تمہیں اجازت دیتا ؟ میقیناً بر کوئی خفیہ سازش مقی جوتم لوگوں نے اس

برایت کے چراغ

دارالسلطنت میں کی تاکہ تم اسکے رہنے والوں کونکال باہر کروا چھا تو اب اسکانتیجہ تم کومعلوم ہوجا کے گا۔

بب میں مہارے ہاتھ پاؤں مخالف جانب سے کٹوا دول گا اسکے بین تمہارے ہاتھ پاؤں مخالف جانب سے کٹوا دول گا اسکے بعدتم سب کوسولی پر چرصا دوں گا۔

جا دوگروں نے جواب دیا بہرطال مہیں اینے رب ہی کی جا دوگروں نے جواب دیا بہرطال مہیں اینے رب ہی کی

طرف بلشناہے۔

سرت پرسی ہے۔ توجس بات پرہم سے انتقام لینا چاہتاہے وہ اسکے سوا سمچھ نہیں کہ ہمارے رب می نظا نیاں جب ہمارے سامنے آگئیں تو ہم نے انھیں مان لیا۔

اے ہمارے پروردگارہم پرصبرکا فیضان کر اورہمیں ونیا سے اُسٹا تواس حال میں کہم تیرے فرما نبروارہوں ؟ سے اُسٹا تواس حال میں کہم تیرے فرما نبروارہوں ؟ فَا لَمْقَى السَّحَرَةُ سُعِدِینَ. قَالُوْ اَمَنَا بِرَدِ الْعَلَمِینَ الْحَ رانشعرار آیات علامانی)

یس سارے جا دوگر ہے اختیار سجد سے میں گر پڑے . سحنے گئے کہم رب العالمین پر ایمان لے آئے جوموسیٰ اور

ارون کارب ہے۔
فرعون نے کہا تم نے موسیٰ کی بات مان کی قبل اسکے کہ میں تہریں اجازت دیتا باضرور بہتہارا بڑا سردار ہے جس نے تہریں جا دو سکھایا ہے۔ احتیابی تم جان لوگے میں تہرار کے ہتھ پاؤں مخالف سکھایا ہے۔ احتیابی تم جان لوگے میں تہرار کے ہتھ پاؤں مخالف سمتوں ہے کو وائ گا اور تم سب کو ضرور سولی پر چڑھا دوں گا۔
سمتوں ہے کو وائ رگا اور تم سب کو ضرور سولی پر چڑھا دوں گا۔
حضور پہنچ جائیں گے۔ اور تہیں توقع ہے کہ ہمارا دب ہمارے گناہ معالی کے دیا گا کہ تیں۔
کردیگا کیون کے سب سے پہلے ہم ایمان لائے ہیں۔

انتف امی کاروانی تاریخی روایات میں ایک روایت بیمجی ہے کہ جادوگروں

کے ایمان لانے کے بعد قوم فرعون کے پچھ لاکھ آدمی حضرت موسیٰ علیہ السلام پر ایمان لائے ۔ اس طرح اس مقابلہ سے پہلے تو صرف دیّو فرد حضرت موسیٰ اور حضرت ہارون علیہ مااست لام کے مخالف سے ، اب ایک مہت بڑسی جمعیت فرعون کی مخالف ہوگئی اور یہ معلیہ الست لام کے مخالف سے ، اب ایک مہت بڑسی جمعیت فرعون کی مخالف ہوگئی اور یہ صورتِ حال الیبی نہ تھی کہ اسپر سکوت افت یا جائے ۔ در بار میں مشور سے ہو کے اور یہ طے پایا کہ بنی اسرائیل میں جو بھی لڑکا پیدا ہوا سکو قتل کردیا جائے قبل اولاد کا پیم اس لئے دیا گیا تاکہ بنی اسرائیل میں اس سے سرائیگی اور خوف و دہشت پیدا ہوجائے اور لوگ اپنے سابقہ وین پر لوٹ آئیں اور ان کی طاقت و قوت بڑھنے نہ پائے ۔ قتل اولاد اور لوگ اپنے سابقہ وین پر لوٹ آئیں اور ان کی طاقت و قوت بڑھنے نہ پائے ۔ قتل اولاد کا پیم کم دوسری مرتبہ جاری کیا گیا ، پہلی مرتبہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی بیدائش ہے کا پیم کہ دوسری مرتبہ جاری کیا گیا ، پہلی مرتبہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی نبوت اور دریالت کے دور میں جاری ہیا ہوا ۔ بیمانے پر انتقامی کا دوائی کا تذکر ہ آیاتِ ذیل میں ہوا ۔ فرعون کی جانب سے بڑے پیمانے پر انتقامی کا دوائی کا تذکر ہ آیاتِ ذیل میں اسطرے موجود ہے :۔

أَنْ مُضْمُونَ وَقَالَ الْمَلَا ثُمِنُ قَوْمِ فِرْعَوْنَ آتَنَامُ مُوسَى وَيَنَامُ مُوسَى وَيَنَامُ مُوسَى وَيَنَامُ مُوسَى وَيَنَامُ الْمَالَةُ الْمَالَةُ اللهِ الْكُمْ مِنْ وَيَنَامَ لَوَوَالْمَالُولِهِ

(اعراف آیات میلاتاعوا)

اور فرعون کی قوم میں سے ایک جماعت نے فرعون سے کہا کیا تو موسیٰ اور اسی قوم کو یوں ہی چھوڑ دے گا کہ وہ زمین مصر میں فعاد کرتے بھریں اور تجھکو اور بترے معبود وں کو شھکرا میں ، فرعون نے کہا ہم اُن کے لوگول کو قتل کر دیں گے اور ان کی لوگیوں کو رہاندیاں بنانے کے لئے ہزندہ رکھیں گے اور ہم اِن پر ہر طرح غالب ہیں۔ بنانے کے لئے ہزندہ رکھیں گے اور ہم اِن پر ہر طرح غالب ہیں۔ موسیٰ نے آپن قوم سے کہا النٹر سے مدد چا ہوا ور صبر کر و بلا شبہ زمین النٹر کی بلک ہے وہ اپنے بندوں میں جے چا ہتا ہے وارث بنادیا سے اور اچھا ابخام النٹر سے وار ف والوں کے لئے ہی ہوتا ہے۔ قوم نے جواب دیا اے موسیٰ آپ کے آنے سے پہلے بھی ہم قوم نے جواب دیا اے موسیٰ آپ کے آنے سے پہلے بھی ہم مصیبت ہی مصیبت ہی مصیبت ہی

وَلَقَدُ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِالْيِينَا وَسُلُطُون مُتِّبينِ الز

دا لموّمن آیت ع^{۱۲} تا ۲۴)

اُورہم نے موسیٰ کو اپنے احکام اور واضح دلیل دیمر بھیجافروں اور ہا مان اور قارون کی جانب تو اُمھوں نے کہا دموسیٰ) ساحر برکڈ اہے۔ موسیٰ ہماری طرف سے حق اُن کے سامنے ہے آئے تو اُمھوں نے کہا کہ جولوگ موسیٰ ہماری طرف سے حق اُن کے سامنے ہے آئے تو اُمھوں نے کہا کہ جولوگ موسیٰ کے سامنے ایمان لائے ہیں اُن کے بلیٹوں کوقتل کر ڈوالو اور ان کی لڑکیوں کوزندہ رہنے دول گر) کا فروں کی چال اکارت ہی گئی ۔ اُ

(اور ایک روز) فرعون نے اپنے در باریوں سے کہا جھوڑو مجھے، میں موسیٰ کوقتل کتے ویتا ہوں اور اسکو چا ہئے کہ اپنے رب کو پکارے مجھکو اندیث ہے کہ وہ کہیں، تمہار ہے دین دنہ ابدل قوالے یا ملک میں کو ٹئ

خرا بی تھیلائے۔

موسی نے کہایں نے ہراس متکبر کے مقابے یں جوادم الحمال پرایمان نہیں رکھتا اپ رب اور تہارے رب کی پناہ لے ہی ہے " قاؤ کھینکا آلی مُوسی و آخیہ آن تَبَوَّا لِفَوْمِکُمَا بِمِصْرَ مِیوْتًا وَاجْعَلُوا بِیوْتَکُمْ وَبِلْتًا وَآمِیْ الصَّلُوٰ الْسَلُوْلَا الصَّلُوٰ الْمَالِدِهِ الْمَالِدِهُ وَالْمَالِيَةِ الْمَالِيَةِ الْمَالُوٰلَا الصَّلُوٰ الْمَالُوٰلَا الْمَالُونَا الْمَالُوٰلَا الْمَالُوٰلَا الْمَالُوٰلَا الْمَالُونَا الْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا الْمَالُونَا الْمَالُونَا الْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا الْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمِلْمِالُونَا وَالْمِلْمُونَا وَالْمِلْمُونَا وَالْمُلِمِيْنَا وَالْمِلْمُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمُعَلِيْنَا وَالْمُعِلَا وَالْمَالُونَا وَالْمِلْمَالِمِلُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْمَالُونَا وَالْم

ديونس آيات يم اعد)

اورہم نے موسیٰ اوران کے مجائی ہارون کے پاس وی بھیجی کرتم دونوں اپنے اُن لوگوں کے لئے دبستور، مصریں گھر برقرار کھواور تم سب اپنے اُمنیں گھروں میں نماز پڑھنے کی جگہ قرار دے لو۔ اور نماذ کے پابندر ہوا ور داے موسیٰ) آپ سلمانوں کو بشارت دے دیں۔
اورموسیٰ نے دوعا مین) عرض کیا کہ اے ہمارے دب آپنے اورموسیٰ نے دوعا مین) عرض کیا کہ اے ہمارے دب آپنے

فرعون کواوراُ سکے سرداروں کو سامان زینت اورطرح طرح کے مال دنیوی زندگی بیں اے ہمار سے رب اسی واسطے دیئے ہیں کہ وہ آپ کی راہ سے (لوگوں کو) گمراہ کریں ،اے ہمارے رب اُن کے بالوں کوئیست ونابول محرد بیجئے اور اُن کے دلوں کوسخت کر دیجئے یسویہ ایمان نہ لانے پائیس بہا مک کر عذاب البیم کو دیجھ لیں۔

اللہ نے فرمایا تم دونوں کی دُعا قبول کرلی گئ سوتم مستقیم رہواور اُن لوگوں کی را و نہ چلناجن کوعلم نہیں ہے۔

مروم ومروم و المينان دلاويا مروم و مروم و المينان دلاويا مروم و المينان و المينان المينان المينان و المينان ال

ایک روز این ایل در بارسے کہا اگر موسیٰ کوہم نے یوں ہی چھوڑ دیا تو مجھے اندلئیر سے کہ یہ تمہارے دین کو بھی آ ہستہ آہستہ بدل ڈالے اور ملک مصریس فساد مجادے۔ لہذا مناسب یہی معلوم ہوتا ہے کہ موسیٰ دعلیہ السلام ، کوقتل کر دیا جائے۔ اہل در بار نے اسمی رائے سے اتفاق کیا .

حضرت موسیٰ علیہ السّلام کوجب اس کاروائی کاعلم ہوا تو آپ نے فرمایا کہیں ایسے متلئرومغرور سے کیاخوٹ کروں جوالٹر کے یوم حساب سے نہیں ڈرتا۔ میراسہارا تومیرا پرور د گارہے میں اُسی کی بناہ میں ہوں۔

پرورد گارہے ہیں اُسی کی پناہ ہیں ہوں۔ فرعون اور اسکے اہل در بارکی اس گفتگو ہیں ایک مصری مردِمومن "مجھی موجود متحاجس نے انہی تک اپنے اسسلام کو پوششیدہ رکھا تھا اُس نے جب یہ مُنیا تو ایپ ا ایمان ظامر سمئے بغیراہل دربار سے پوں مخاطب ہوا:-

ہر سب ہے۔ اور اس میں میں ہے۔ اور اس سے بہلے کہ تم اسے اور اس سے بہلے کہ تم اپنے ارادے کو بورا کروایک بات پر مجھرغور کرلو، اس شخص رموسیٰ نے تمہیں ایسی گھلی گھلی نٹ نیاں دکھا دی ہیں جس سے یہ بات روز روش کی طرح کلا ہر ہو تھی ہے کہ وہ تمہارے رب کا فرستا دہ ہے۔ اگر ایسی صربے نٹ نیوں سے یا وجو دتم اُس کو جھوٹا سمجھتے ہو تبھی تمہار کے یہ مناسب نہیں کہ اسکونسل کر دو بلکہ اُسکو اُسکے حال پر چھوڑ دو۔ کیو کہ دوسرا فوی احتمال یہ جھی ہے کہ اگر وہ سپاہے تو بھرتم اس کو قتل کر ہے۔ الس کو السرا فوی احتمال یہ بھی ہے کہ اگر وہ سپاہے تو بھرتم اس کو قتل کر ہے۔ الس کو السرا ہے عذا ب ہیں بہتلا ہوجا ذیا ہے۔ "

ائمة فسيرين حضرت مقاتل اورحضرت حسن فرماتے ہيں كہ تيه مردمومن فرعون كا چا زا د
مجانی مقاا وريہ وہی خص مقاجو شہر کے كنارے سے دوڑ كر آیا تھا اور حضرت موسى
عليه الت لام كو يہ خبر دى تھى كہ اے موسى قبطى كے تسل كے مقدمہ ہيں اہل در بارنے تم
کو قصاصاً قتل كر دینے كافیصلہ كیا ہے ۔ لہذا ہيں تم كومشورہ دیتا ہوں كہ تم فورى ملك
مصر سے ہجرت كر جاؤ۔

ر بعض مفسرین نے اس مردمومن کا نام جبیب بیان کیا ہے اور بعض نے شمعان لکھا ہے ۔اورٹ ہورمورخ شعلتی نے حضرت ابن عباس سے اس کا نام حتزقیل شقاس

نقل کیا ہے۔ مؤرخ ستہیلی نے دوسرے نام شمعان کو ترجیج دی ہے کیونکہ صبیب اسس شخص کا نام ہے جسکا واقعہ سور ولیبین ہیں آیا ہے۔ شخص کا نام ہے جسکا واقعہ سور ولیبین ہیں آیا ہے۔

قرطبی نے ایک مدیث نقل کی ہے کہ رسول الٹیوسلی الٹیوعلیہ ولم نے فرمایاصة میقین صرف چند ایک ہیں ، ایک صبیب نجار جن کا قصّہ سورہ یک بین ہیں موجو د ہے۔ د وسرے آل فرعون کا رجل مومن" تبیسرے پلین ہیں موجو د ہے۔ د وسرے آل فرعون کا رجل مومن" تبیسرے

البوكرصديق رمزاوريه إن سب نيس افضل بيس "

ہ بات ذیل میں اسی رحل مُومن کا خطاب نہایت وضاحت سے بیان کیا گیا ہے یہ ماریخ بنی اسرائیل کا ایک اہم ترین وا قعہ ہے جسکوخو دینی اسرائیل فراموش کر سکتے ہیں ، یہ قصة انبیا ہرام کی دعوت و تبلیغ کے نمن بل طری اہمیت اور قدر وقیمت رکھتا ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام کی مخالفت ہیں جہاں فرعون ، ہا مان ، قارون جیسے متکبر اور مغرور انسان منظراتے ہیں وہاں حق وصد اقت کی تائید و نصرت کرنے والے ، بہاڑوں سے زیادہ خت و بلند تر حوصلہ رکھنے والے افراد بھی انبیا ہر کی دعوت و تبلیغ سے پیدا ہوئے ہیں۔ وبلند تر حوصلہ رکھنے والے افراد بھی انبیا ہر کی دعوت و تبلیغ سے پیدا ہوئے ہیں۔ فرعون کے بھرے در بار ہیں حضرت موسیٰ علیہ الت لام پر ایمان لا نے والا مردِمومن اس طرح مخاطب ہے :۔

وَقَالَ مَ جُلُ مُّونُ مِنْ مِنْ أِلِ فِرْعَوْنَ يَكُنُّهُم لِيمُانَ الإ

(المؤمن آیات ۱۳۳۳)

ایک موسنی خص جو فرعون کے خاندان سے مقا دا ورابتک ایک شخص این ایمان پوسٹیدہ رکھا تھا، کہنے لگا کیا تم ایک شخص کومحض اس بات پرفنل کرتے ہوجویہ کہتا ہے کہ میرا پرور دگار النہ ہے حالانکہ وہ تمہارے باس بتینات لے کر آیاہے حالانکہ وہ تمہارے درب کی طرف سے تمہارے پاس بتینات لے کر آیاہے اگر وہ جو گھوٹا ہے تو اس کا جبوٹ خو د اسی پر پلٹ پڑے گا اور اگر وہ سی آگر وہ جو کچھ پیشین گوئی کر رہا ہے اس میں سے بچھ تو تم پرضروری واقع ہوگا۔ النٹرکسی ایسے خص کو ہدایت نہیں دیتا جو صدے گزر جانے والا اور محوط اس پو

اے میری قوم کے لوگو! آج تہیں باوشاہی ماصل ہے کہ اس سرزئین میں تم حاکم ہولیکن اگر النٹر کا عذاب ہم پر آگیا تو بھر کون ہے جو ہماری مد دکر سے گا، فرعون نے کہا میں تو تم لوگوں کو وہی رائے دے را ہموں جو محجے مناسب معلوم ہوتی ہے اور میں اسی راستے کی طون تہاری رہنمائی کرتا ہوں جو بالکل عظیک ہے۔

اراده نهبی رکھتا۔

اور اے قوم مجھے ڈرہے کہ کہیں تم پر فریاد وفعال کا دن نہ آجائے (میعنی قیامت کا دن) جس دن تم پشت بھیر کر بھاگ کھڑے ہوئے کہ میں انٹر سے بچانے والا کوئی نہ ہوگا اور سے یہ ہے کہ جے الٹر بھٹ کا دے اُسے میرکوئی راستہ دکھانے والا نہیں ہے .

اور اس سے پہلے یوسف (علیہ التلام) مجی تنہارے ہاں بینات کیرا کے عظے مگر تم اُن کی لائی ہوئی تعلیم کی طرف سے شک ہی بیں پڑے دہے بھرجب اُن کا انتقال ہوگیا تو تم نے کہا اب اُن کے بعد اللہ کوئی رسول ہرگر نہیں بھیج گا ،اسی طرح اللہ اُن سیب لوگوں کو گراہی میں ڈال دیتا ہے جو حدے گزر نے والے (اور) شکی ہوتر ہیں۔ اور جو اللہ کی آیات میں جھگڑا کرتے ہیں بغیرا سکے کہ اُن کے پاس کوئی دلیل آئی ہو۔ یہ رویۃ اللہ اور ایمان لانے والوں کے نزدیک سخت دلیل آئی ہو۔ یہ رویۃ اللہ مرسکہ جبار کے دل پر عظیۃ لگا دیا ہے۔ اس طرح اللہ مرسکہ جبار کے دل پر عظیۃ لگا دیا ہے۔ فرعون نے کہا اے کہا ان اِ میرے نے ایک بلند عمارت تیار کرتا کے ایک بلند عمارت تیار کرتا کو ک

میں آسمان پر جانیکی را ہوں تک پہنچ جاؤں ۔ بھر (و ہاں سے) موسیٰ کے خلا کو دیکھوں ۔ اور بیس تو در اصل موسیٰ کوجھوٹا ہی سمجھتا ہوں ۔ اس طبرط فرعون کے لئے اسکی بڑملی خوسٹ نما بنادی گئی اور وہ را ہے راست سے روک دیاگیا اور فرعون کی ساری چا لبازی (اُس کی اینی) تباہی کے راستے میں ہی کام آئی ۔

اوراس ہوم شخص نے کہا اے میری قوم کے لوگو میری بات مانو ہیں تہہیں جیج راستہ بتا تا ہوں۔ اے میری قوم بید و نیا کی زندگی توچند روزہ ہے اور ہمیشہ قیام کی جگہ آخرت ہی ہے۔ جو بُرانی کرے گا اُس کو اتنا ہی بدلہ ملے گاجتنی اُس نے بُرائی کی ہے اور جو نیک عمل کرے گا خواہ مرد ہو یاعورت بشرط یکہ ہو وہ مومن۔ ایسے سب لوگ جنت ہیں داخل ہوں سے جہاں اُن کو بے حماب دزق دیا جائے گا۔ اورا ہے میری قوم کے لوگو! آخریہ کیا بات ہے کہ میں توتم کوگو کو بنیات کی طرف ممبلاتا ہوں اور تم لوگ مجھے آگ کی طرف دعوت ویتے ہو۔ تم لوگ مجھے اس بات کی دعوت ویتے ہوکہ میں النگرسے کفر کروں اور اُسکے ساتھ ان مہتیوں کو شریک تھیراؤں جنہیں میں نہیں جانت حالا کمہ میں تمہیں اُس زبر دست مغفرت کرنے والے خدا کی طرف دعوت وے ریا ہوں.

و و ت برہ اور اسکے خلاف نہیں ہوسکتا کرجن کی طرف تم مجھے مہلار ہے ہووہ نہ دنیا ہی میں کوئی بیکارے جانے کے لائق ہے اور نہ مہلار ہے ہووہ نہ دنیا ہی میں کوئی بیکارے جانے کے لائق ہے اور نہ اخرت ہی میں ،اورحقیقت یہ ہے کہ ہم سب کو النّد کے پاس جا ناہے اور مدسے گزرنے والے ہی اہل جہنم ہیں ۔ مدسے گزرنے والے ہی اہل جہنم ہیں ۔

ترام و وقت آئے گاجب تم اسے یادکر وسے اور میں اپنامعا ملہ اللہ می کے سپر دکرتا ہوں بیشک وہ اپنے بندوں کا بحکمہان ہے "

مردموم سی سی اور اسبحام جبر آل فرعون کے اس حق پرست انسان کی تقریر کا مرزم مومن اور اسبحام جبر آن فرع جبلہ:-

آج جوکچیدیں کہ رہا ہوں عنقریب وہ وقت آئے گاجب
تم اُسے یاد کروسے اور میں اپنامعاملہ تو الٹرکے سپردکر تا ہوں ''
اس آخر جملہ سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ باتیں کہتے وقت اُس مردِمومن کو پورائیقین تھا کہ اس حق گوئی کی پا داش میں پوری قوم کاعتاب اس پر ٹوٹ پڑے گا اور اسی پرلسن ہیں ہوگا بلکہ اپنے اعزازات ومفادات کے علاوہ اپنی جان سے بھی ہاتھ دھونا پڑے گا ،مگر پرسب کچھ جانتے ہوئے بھی محض اُس نے الٹر سے مجمود سے پر اپنا وہ فرض انجام دیدیا پرسب کچھ جانتے ہوئے بھی محض اُس نے الٹر سے محمود سے پر اپنا وہ فرض انجام دیدیا جودنیا میں صرف اُدلوالعزم انسان ہی دیا کرتے ہیں۔

امام تمفسیر حضرت مقاتل کھتے ہیں کہ اس مردمومن کے پیچھے قوم فرعون ٹوٹ پڑی اور یکسی طرح ایک پہاڑی طرف مجاگ نکلے اور اُن کی گرفت ہیں نہ آسکے . الترتعالٰ جلداول

ہایت کے چراع نے قوم فرعون کی ٹری تدبیروں سے اُن کو بچالیا گرخود قوم فرعون سخت عذاب ہیں پگری سنگی جسکا انجام غرقا ہی کی شکل ہیں ظاہر ہوا اور آخرت کاعذاب اسکے علاوہ ،مردمون کے سنگی جسکا انجام نے بی یہ آیات آئی ہیں۔ اسی طرح آل فرعون کے انجام کے بارے ، انجام کے سلسے ہیں یہ آیات آئی ہیں۔ اسی طرح آل فرعون کے انجام کے بارے ،

فَوَقَانَ اللهُ سَيِّاتِ مَا مَكُوهُ اوَحَاقَ بِالِ فِرْعَوْنَ فَوَقَالَ اللهُ سَيِّاتِ مَا مَكُوهُ اوَحَاقَ بِالِ فِرْعَوْنَ فَرَعُونَ مُصْمُونِ فَوْعَوْنَ مُصْمُونِ اللهِ اللهِ والمُوسِ آیات عصم آیانه فی مُوعِ الْعَدَابِ اللهِ والمُوسِ آیات عصم آیانه فی

آخر کار آس مرد مومن کو النّرتعالے نے اُن لوگوں کی بُری چالوں سے جو اُمحفول نے اُسکے خلاف ملیں بچالیا اور فرعون کے ساتھی خود بدترین عذاب کے جبکر میں آگئے۔

دوزخ کی آگ ہے جس کے سامنے سیج و زنام وہ پین کئے جانے ہیں اور جب تیامت قائم ہوگی توضم ہوگا کہ آل فرعون کو شدیز رین عذا ب ہیں وافل کر دو میھر فررا خیال کر واس وقت کا جب یہ لوگ دو زخ میں ایک دوسرے سے حجا گر ہے ہوں گئے ۔ وُنیا ہیں جولوگ مم درجہ تھے میں ایک دوسرے سے حجا گر ہے ہوں گئے ۔ وُنیا ہیں جولوگ مم درجہ تھے وہ بڑے ورجے والوں سے مہیں گئے کہ ہم تو تمہارے ہی تابع سے میں اب کیا یہاں تم نارجہ ہم کی تکلیف کے کچھ حصے سے ہم کو بچالوگے ؟ وہ بڑے درجے والے جواب دیں گئے ہم سب یہاں ایک عال ہیں ہیں بڑے درجے والے جواب دیں گئے ہم سب یہاں ایک عال ہیں ہیں بڑے درمیان قطعی فیصلہ کر جیکا ہے ۔

میریہ دورخ بین پڑے ہوئے آگئے جہنم سے بہرہ داروں سے میں پڑے ہوئے آگئے جہنم سے بہرہ داروں سے میں پڑے ہوئے آگئے جہنم سے بہرہ داروں سے محتاکر دکہ وہ ہمارے عذاب بیں سے دان ہی کی تخفیف کردے .

ب ایک دن ہی کی تخفیف کردے .

و ، پوجیس سے سی تہارے پاس رسول بینات لیکر نہیں اس سول بینات لیکر نہیں اسے ہو ، دار جہنے کے بہرہ دار جہنے کے اس کیوں نہیں اجہنم کے بہرہ دار جہنے کے اس کیوں نہیں اجہنم کے بہرہ دار کہنے کا محصر تو تم ہی دُعاکر وا ورکا فروں کی وُعاا کارت ہی جانے والی ہے ۔ محضرت عبدالنہ ابن مسعود شنے اس آبت کی تنفسیر میں یہ محضرت عبدالنہ ابن مسعود شنے اس آبت کی تنفسیر میں یہ ارت و فریا یا کہ آل فرعون کی روصیں سیاہ جانوروں کی شکل میں ارت و فریا یا کہ آل فرعون کی روصیں سیاہ جانوروں کی شکل میں ارت

مرروزصبع ومشام قوم تنبح بنم کے سامنے لائی جاتی ہیں اور انھیں جہنم و کھلاکر کہا جاتا ہے کہ یہ تمہارا تھکانہ ہے۔ رتفسیر ظہری

تسع آبات (نومعجزے) اور اسکے سردار دن پرمطلقاً اثرنہیں ہوا، سوائے

معدودے چندسب نے مخالفت و بغاوت افتیار کرلی بچیر بنی اسرائیل کی ذیج اولاد کا قانون حیل پڑا جسکے بتیجے ہیں منطلوم بنی اسرائیل کی اولا د نرینہ ذیج ہونے لگی اور فرعون مرستہ پر رب

كى پرسش كازورشور سے رواج سروع ہوا۔

اس درمیان حضرت موسی علیہ است الام پر وحی آئی کہ فرعون اور فرعونیوں کو خبروار کر دیا جائے کہ اگر یہ ہی طور وطراقیہ جاری رہا تو عنقر سب الٹرکا عذاب نازل ہونے والا ہے۔ اس آگا ہی پر بھی کوئی توجہ نہ دی گئی تونب یجے بعد دیگر عذاب الہی آئے نظر منظر وع ہوئے۔ جب سی عذاب سے پریٹ ان ہوجاتے تو حضرت موسی علیہ است الام سے درخواست کرتے کہ یہ عذاب اپنے رہ سے وُعاکر کے وُورکر دیا جائے توہم ایمان کے آئیگے مجرجب وہ عذاب جا تارہ تا تو چھروہی روش اختیار کر لیتے۔ اسی طرح فداکی طون ہو اُخیس مجرجب وہ عذاب جا تارہ تا تو چھروہی روش اختیار کر لیتے۔ اسی طرح فداکی طون ہو اُخیس مربار مہلت دی جا تی رہیں لیکن ہر بار مہلے سے زیادہ ہی سرکشی اختیار کر لیتے ، جبائ خوں فون اور اہل فرون نے اسکو ایک مذاق بنالیا تو بھر النہ کا وہ آخری عذاب آیا جب بیجے بین فرعون اور اہل فرون غرق کر دیئے گئے۔ وہ عذاب جس کو قرآن مکیم نے آیات بتنات "کے الفاظ سے تعبہ کی جاسکی کی مسلم کے بعقے اور ان کی تعداد کلتی حقی ہواسی کوئی واضح تحدید شعین نہیں کی جاسکی سور ہ بنی امرائیل میں نو فین نیوں کا ذکر ملتا ہے۔

اورسورہ کلا ، نمل ، زخرف ،النّازمات میں تعداد کی وضاحت کے بغیر صرف آیات " کہکر ذکر کیا گیا کہیں آیات بتینات "اور کہیں آیات مفصّلات "اور ایک موقعہ پر الایۃ الکبریٰ اور کہیں آیا تنا ہے تعبیر کیا گیا ہے۔

اَنْ تَفْصِيلَى اور اجمالی تنعبيرات کے علاوہ مذکورہ بالاسور توں میں علیٰجدہ علیٰجدہ

ن نات کامھی ذکر موجود ہے ۔ آگر اِن سب کوجمع کر دیا جائے توحسب ذیل فہرست

مرتب ہوشنی ہے:-مرتب ہوشنی ہے:-عصا ، ید بیضا ،سنین د قحط سالی ، منفص ثمرات د بھلوں کا مقصان) طو فان ،جراد

رطیری دل منتل دیجوں ، ضفا دع دمیندگ ، دقم دخوں ، فلق بحرد دریا کا بھٹ جا کا ہم اللہ فسلوی دحلواا ور بٹیراغمالم دیادل کا سایہ ، انفجارعیون د ببقرسے شیموں کا بہہ پڑنا ، نتی جبل دہباڑ معربر

كالكفركرسرون برآجانا) نزول تورقات -

روں پر ہباہ ، مدر ہیں ہیں جن کا ذکر قرآن حکیم میں موجود ہے۔ اسکے عسلاوہ یہ پندرہ آیات توالیسی ہیں جن کا ذکر قرآن حکیم میں موجود ہے۔ اسکے عسلاوہ

كتب مديث مين مزيد تشريج مجي لمتى ہے۔

ترندی تفریق جلد دوم کتاب اکتفسیر میں حضرت صفوان بن عسال کی ایک مدیت جس کامفہوم یہ ہے کہ ایک مرتبہ ذکو میہو دیوں نے آپس میں مشور ہ کیا کہ نبی کرمم صلی اللہ علیہ و کم کے دعویٰ تبوت کا امتحان لینا چاہئے بمشورہ کے بعدوہ آپ کی خدمت میں آئے اور پوچھاکہ اللہ نفالے نے حضرت موسیٰ کوجوشیح آیات د نوآیات) دیئے متحے میں آئے اور پوچھاکہ اللہ نفالے ارشا د فرمایا وہ نوآیات یہ ہیں:۔

و مشرک نہ کرنا، زنانگرنا، کسی کا ناحق قشل نکرنا، چوری نکرنا، جادہ کرنا، سُود نہ کھانا، پاک دامن کو تنہمت نہ لگانا، میدان جنگ سے فرار نہ ہو اور اے میہود تمہارے کئے خصوصیت سے ساتھ پیمم بھی متھا کہ دومیت

ر بفت سے ون ائی خلاف ورزی مکرنا "

یر منکرو ہ میہودی آپ کے ہاتھ چومے اور والیں چلے گئے۔ در مدن ی

اس طرح تسع آیات کی ایک تشریح یہ جم ملتی ہے ، لیکن یہ تشریح قرآنی تشریح سے بالکل مختلف ہے۔ قرآن میں جن آیات کا ذکر کیا گیا ہے۔ اُن میں سے ایک بھی اسمیں شامل نہیں ہے۔ اس بے مفسرین کرام نے اس مدیث کامختلف طور پرجواب دیا ہے جو عسلم مدیث سے تعلق رکھتا ہے جس کا یہاں موقعہ نہیں۔

ت و این کی ایک اور تستریج حضرت ابن عباس سے بھی منقول ہے وہ فراتے میں میں ایک اور تستریج حضرت ابن عباس سے بھی منقول ہے وہ فراتے

ہیں کہ تنع آیات سے مراد حسب ذیل نشانیاں ہیں :

برایت کیراغ باداد ل

، تعلیا، تلی بینیا، سینیا، منتقص تمرات ، طوفان ، طرّا د ، قبل منتقادع ، وقم . اگه تفسیر صفرت مجا پُرُ، حضرت عکرمُرُ ، حضرت شعبی ، حضرت قتاد و قیاد سی اس تشسر یج کی تا بُدگی ہے ۔

ما فظ ابن کثیر این عباس کے قول کو قابل ترجیح قرار دیاہے۔ حقیقت یہ ہے کہ آیات کا لفظ قرآن مکیم ہیں معجزے اور احکام الہیہ دونوں معنی میں اس میں الم

میں استعمال کیا گیائے۔ اسی لئے مفسر تین کی ایک جماعت نے شیخ آیات سے معجزے مرا دیئے ہیں اور نوفیکے عدد سے حصر مرا دنہیں ہے معنی یہ ضروری نہیں کہ جملہ معجزات نوفسے زائد نہ ہوں۔ آیت مذکورہ میں کسی خاص اہمیتت سے پیش نظر نوفی عدد کی تصریح کی گئی ہے اور مبیا کہ او پڑھل کیا گیا ہے ایک جیجے مدیث میں اِن نوفی آبات سے احکام الہیہے

ہے ہور بین میں دیوں میں بیاسی بیاب کا مادیہ بیاب اس انہیں مرا دلیا ہے۔ مراد ہیں ۔اس لئے بعض دیگرمفسرین نے تسع آیات سے احکام الہیہ مرا دلیا ہے۔ دلافیض جونہ میں دیوں میں آتسویں میں کی چفصال سامی میں اور کی میر میں

الغرض حضرت ابن عباس عنے تیسے آیات کی جوففسیل بیان فرمائی ہے اُس کی وضاحت مفسرین کرام نے اس طرح بیان کی ہے :۔

(۱) عصا المرائ کا نام ہے جوعام طور پر طبیۃ بھرتے سمارے کا کام دہتی ہے۔
کم اجانا ہے کہ یہ فاص لکڑی جوجنت سے اناری گئی مئی اسی فاصیت یہ مقی کہ اگر
اسکو پھر پر ماراجائے تو اسکے ضرب سے بچھر میں پانی کے چٹے بچوٹ پڑتے تھے۔
یہ کلڑی حسب ضرورت دراز بھی ہوجاتی معتی جسے ذریعے حضرت موسی علیہ السّلام
جانوروں کے لئے اُونچے درختوں سے بیتے جھاڑ لیا کرتے تھے۔ اس لکڑی کو مسلم کے مقابلہ میں حضرت موسی علیہ السّلام
مسلم کرجاتا تھا۔ فرعونی جادو گروں کے مقابلہ میں حضرت موسی علیہ السّلام
نے اسی کلڑی کو بھینک کرو عظیم الشّان منظا ہرہ کیا کہ جادوگر حیران رہ گئے
اور اینے جادو سے تو بر کمیا اور حضرت موسیٰ علیہ السّلام پر المیان ہے آئے۔
اور اینے جادو سے تو بر کمیا اور حضرت موسیٰ علیہ السّلام پر المیان ہے آئے۔

جسکا تذکرہ گزشتہ اوراق بین قصیل سے آچکاہے۔ (۱۷) پر سرچھ اے جسکا ترجہ روشن ہاتھ کیا جا آ اے بحضرت موسیٰ علیہ است لام کا یہ داہنا مور مور کی علیہ استام اس ہاتھ کوا ہے گریبان میں ڈال کر ہاہر نکالنے تو وہ نصف النہا رکے۔ اس ہاتھ کوا ہے گریبان میں ڈال کر ہاہر نکالنے تو وہ نصف النہا رکے سورج کی طرح جیکے لگتا تھا۔ دیکھنے والوں کی آنگھیں جیرہ ہوجاتی تھیں اس وقت ہاتھ کو دیکھنے کی تاب نہ رہجتی تھی۔ بھرجب اسکو دوبارہ گریب ان ہیں وال لینے تو وہ عام ہاتھ کی طرح ہوجا تا تھا۔ اس معجزے سے بھی حضرت موسیٰ علیہ استلام نے جا دوگروں کے مقابلہ میں کا میابی حاصل کی ۔ اور فرعون کے

دربار بین بھی اس کائنی بارمظا ہرہ فرایا تھا۔

است من رقع طامعالی، فرعون اور اہل فرعون کی سلسل بغاوت وسرکشی
پرخفزت موسی علیہ است لام نے انتھیں ایک ہولئاک قبط سالی پیشین کوئی
فرمائی جسکو قوم نے مزاح اور دھمکی سے تعبیر کیالیکن جب وہ شروع ہوا تو بلبلا
اُسطے بتفسیری روایات کے مطابق پر تحطان کے شہروں پر سلسل سات سال

مک رہا۔ حضرت ابن عباس اور حضرت قبار اور کی روابیت سے مطاب بن تحط اور خشک سالی کا عذا ب گاؤں سے لئے بھا اور بھیلوں کی کمی کا عذا ہ

شہروں پرمسلط تھا۔ اس طرح غلّہ اور تھپلوں کی تمی کے باعث پوری قوم کاعرصہ م حیات تنگ ہوجیکا تھا۔

(س) مقصی عثرات دریعنی پهلون کی کسی کاعد (ب) جیساکه بیان کیا گیا قطرالی میں جہاں ہوتھم کی پیدا وار بند ہوگئی اسی طرح ایک عذاب بھلوں کی کمی کا بھی آیا جس کی وجرسے ہرے باغات اُجڑ گئے اور پورا ملک ویران ساہوگیا۔ درال کسی بھی شہر کی نوبھور تی سے لئے درخت اور باغات ضروری ہیں بوہستانوں میں اس لئے وحشت برستی ہے کہ و ہاں سرسنری کا نام ونشان نہیں ہوتا اور اگر میہ کیفیت شہروں میں قصبوں میں پیدا ہوجا کے تو انسانی آبادی کے لئے مرتزین مصیبت پیدا ہوجاتی ہے۔ اہل فرعون کی سلسل نافر مانی وظلم سے مرتزین مصیبت پیدا ہوجاتی ہے۔ اہل فرعون کی سلسل نافر مانی وظلم سے میترین مصیبت پیدا ہوجاتی ہے۔ اہل فرعون کی سلسل نافر مانی وظلم سے میترین مصیبت پیدا ہوجاتی ہے۔ اہل فرعون کی سلسل نافر مانی وظلم سے میترین مصیبت پیدا ہوجاتی ہے۔ اہل فرعون کی سلسل نافر مانی وظلم سے میترین میں ایک عذاب اس قسم کا آیا۔

ده طوق آن اکثر مفسرین کرام نے اس طوفان سے پانی کا طوفان مرادلیا ہے۔
میں اور لے بھی برستے بخے۔ اگر چوطوفان ووسری چیزوں کا بھی ہوسکتا ہے۔ قوم
فرعون سے سب گھروں اور زمینوں کو پانی کے طوفان نے گھیرلیا نہیں بھی

(۱) جرام. دید یون کاعد ۱۱ ب) اس سے مراد ٹرٹی ول ہے جوغول بیا بانی کی شکل میں تھیتوں اور باغات پر ٹوٹ پڑتا ہے اور آٹا فائا میلوں لیے چوڑ ہے کھیتوں کو چیٹ کرجا تا ہے. اگریہ ایک مرتبہ تھی آجا نے تو پوری فصل تب ہ ہوجاتی ہے جبکہ یہ بطور عذا ب اُنپر سلط کر دیا گیا تھا جب تھی تھیت اور باغات سرسبز ہوہے یہ ول ٹوٹ پڑتا اور سب چیٹ کرجا تا تھا۔ بعض روایات میں یہ بھی بیان کیا گیا کہ یہ ٹرٹیاں کلڑی کے در وازوں اور چھتوں اور گھریلوسا مان

برتنوں میں جٹی کو بچی ہموئی غذاؤں کک میں پیدا ہوگئے۔
اس حیرتناک عذاب سے سب روپڑے اور ہر دفعہ کی طرح وعدہ کیا
کہ وہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کی پیروی کریں گئے جب حضرت موسیٰ علیالسلام
کی دُعاسے یہ عذاب دور ہموا تو بھیروہی مخالفت وسرسیٰ شروع کردی ۔
(۹) وم م دخون کاعد اب) اس سے مرا دایسا عذاب تھا جو ہر کھانے پینے کی چزوں کو خون میں تبدیل کر دیا کر تا تھا۔ حب کوئی غذا تیاد کی جاتی تو تیار ہونے سے بعد معافوں بن جاتی بحنویں ،حوض ، نہر کسی بھی ذریعہ سے یانی نکالا جائے ۔

ملداة ل

تو و ہنون کی شکل میں برآ رہوتا۔ مجوک و پیاس سے عاجز و در ماند ہ ہوگئے۔ نجات کی سورت نہ مفی جو اُنہیں میسترآئی اور نفسرین کرام بیعجیب وغریب بات بھی نفسل سرتے ہیں کہ ایک ہی وسترخوان پر بیٹھ کر ایک اسرائیلی د قوم موسلی) اور ایک فرعون کھانا کھاتے توجولقہ اسرائیلی اُنٹھا او و اپنی حالت پر کھانا ہوتا تھا اور جولقہ یا پانی کا تھونٹ فرعون اُسی دسترخوان سے منھ میں لیتا ،خون بن جاتا۔ یہ عذاب بھی برستورسات دن تک فرعون کی اُنٹھا و کی منظم میں ایتا میں والیکن قوم بھیرو ہی پیغاوت پو بال قرحضرت موسی علیہ استلام کی وُنا سے رفع ہوالیکن قوم بھیرو ہی پیغاوت پو اُنٹر آئی۔

قرآن مكيم نے إن سارے عذاب سے تذكرے سے بعد يخصوصى نوٹ بھى بيان

اورجب ان پرکونی عذاب واقع ہوتا تو یوں کہتے اے موسیٰ ممارے لئے اپنے رب سے اس بات کی دُعاکر وجس کا اُس نے آپ عہد کرر کھا ہے دمینی اپنے دہے وُعاکر نے کے بعد ہ توہم ضرور بالضرور آپ کے کہنے ہے ایمان لے آئیں گے اور ہم بنی اسرائیل کو بھی رہا کر کے آپ کے ہمراہ کر دیں گے۔ بھرجب ہم اُن سے اُس عذاب کو اُسی مدت کے لئے ہما ویتے جس تک اُمضیں بہنچنا تھا تو وہ فوراً عبد مکنی کرنے گئے۔ اور ایک ہمان ایک کا ایک کا گئے۔ اور ایک ہمان ایک کا گئے۔ اور ایک مات ایک کا گئے۔ اور ایک مات اُس عالمان کے اُس عالمان کو اُس عالمان کے اُس عالمان ک

ابن منذر نے حضرت ابن عباس کی ایک روایت مقل کی ہے کہ اِن میں سے ہرعذاب قوم فرعون پرشات روز تک مسلط رہتا تھا۔ ہفتہ سے دن شروع ہوتا بھر دوسرے ہفتے کو دور ہوجا تا مجربین ہفتے کی اِنھیں مہلت دی جاتی تھی تاکہ وہ تو یہ کرلیں لیکن جو ہی وہ عذاب رفع ہوتا سرکشی ومبغاوت پراگرآتے۔

امام بغوی نے ان می صفرت ابن عباس سے ایک اور روابت نقل کی ہے کہ جب بہلی مرتبہ قوم فرعون پر قحط کا عذاب آیا اور صفرت موسیٰ علیہ است لام کی دعا ہے رفع ہوگیا معجر یہ لوگ اپنی سرکشی سے باز نہ آئے تو صفرت موسیٰ علیہ است لام نے وعاکی ا ہے میرے پر ور دگاریہ ایسے سرکش لوگ ہیں کہ عذاب فحط سے بھی متنا ترنہ ہیں ہوئے اور معابدہ میرے پر ور دگاریہ ایسے سرکش لوگ ہیں کہ عذاب فحط سے بھی متنا ترنہ ہیں ہوئے اور معابدہ کر کے مچر گئے۔ اب ان پر مونی ایسا عذاب مستلط فرما دیجئے جو اِن کے لئے درو ناک ہو

اور میری قوم کے لئے وعظ کا کام بھی دے اور بعد میں آنے والوں کے لئے ورس عبرت بخاتو الشرتعالے نے اُنپر بیچے بعد دیگر عذاب کاسلسلہ جاری فرما دیا۔ تسع سنین کی تفصیلات اور فرعون اور قوم فرعون کاظلم و نا فرمانی آیاتِ ذیل میں اس طرح بیب ن کیا گیاہے :۔

اور داخل کرتواپے ہاتھ کو اپنے گریبان میں وہ نکلے گاروشن ہو کر بغیر کسی مرض وعیب کے زیران) نوآیات میں سے ایک ہے جو فرعو اور اسکی قوم کے لئے بھیجی گئیں بلاشبہ وہ نافرمان قوم تھی۔ گائٹ کا گائٹ اٹک بڑی قلکہ آت وعصیٰ الآیہ۔

(النازعات آيث ، ملا)

پس د کھا یا اُس فرعون کو ایک برانشان دمیعنی عصاکانشان) پھراُس نے جبٹلادیا اور نافرمان کی ۔

فَأَلُقَ عَصَالُهُ فَإِذَا هِي ثُعُبَانُ مَيْدِينٌ وَ نَزَعَ يَلُهُ فَإِذَا

رهي بيضًاء لِلتَظِيرِينَ وراعرات آيت يخذا ، عضا)

یس ڈال دیاموسیٰ نے اپناعصا تو وہ اچانک ایک واضح اژدھا تھا۔ اورگریبان سے اپنا ہاتھ تھینچا تو وہ دیکھنے والوں کے آگے روشن تر تھا۔

وَلَقَدُ أَخَذُ نَا آلَ فِرُعُونَ بِالْيَتِنِينَ وَنَقُصِ مِتَ التَّمَّرُتِ لَعَكَبُ مُعُولَ كُونُ الإراء الماس من الماس اور بم نے فرعون كے لوگوں كوكئى سال تك قبط اور بھلوں كى كمى (كے عذاب) ميں بكوليا كر شايد ان كو بوش آجائے۔ مگراُن كا يہ حال مقاكر جب اچھا زمانہ آتا تو كہتے كر ہم اسى

برايت يحيراغ

پرائی مستحق ہیں اورجب بُر از ہانہ آتا توموسیٰ اور اُن کے سامقیوں کو اپنے یئے فالِ برمطیراتے ۔ صالا کم اُنکی فالِ بر تو درحقیقت السُّرکے پاس مقی

مران بي اكثرب علم مقه.

امفوں نے موسیٰ سے کہا کہ اے موسیٰ تو ہمیں مسعور کرنے کے نواہ کوئی نشانی لے آئے ہم تیری بات مانے والے نہیں ہیں۔

آخرکار ہم نے اُن پر طوفان اور ٹارٹی دل ، جُڑییں ، بینڈک اور خون (کے عذاب) بھیجے۔ یہ سب نشانیاں علیحہ ہلیحہ ہیں مگروہ سرکشی کئے چلے گئے اور وہ بڑے ہی مجرم لوگ تھے۔ جب بھی بھی اُن پر کوئی بلا نازل ہوتی تو کہتے اے موسیٰ تجھے اپنے رب کی طوف سے جو منصب جاس کی بنا پر ہمارے حق میں وعاکر ، اگر اب سے مو منصب جاس کی بنا پر ہمارے حق میں وعاکر ، اگر اب سے تو ہم پر سے یہ بلا ٹلوا دے تو ہم تیری بات مان لیس کے اور بنی اسرائیل تو ہم پر سے یہ بلا ٹلوا دے تو ہم تیری بات مان لیس کے اور بنی اسرائیل کو تیرے بیا تھے جو سے جو سے جو سے جو سے جو سے یہ بلا ٹلوا دے تو ہم تیری بات مان لیس کے اور بنی اسرائیل کو تیرے بیا تھی جو سے دیں گے۔

ریر است میروب ہم آنپر سے وہ عذاب ایک وقت مقررتک سے لئے جسکو وہ بہر حال پہنچنے والے تھے ہٹا لیتے تو وہ پکلخت اپنے عہد

مع مجرجاتے. وَلَقَلُ النَّيْنَا مُوسَى تِسْعَ أَيَاتٍ بَيِنَاتٍ فَسُكُلْ بَيْنَا مُوسَى تِسْعَ أَيَاتٍ بَيِنَاتٍ فَسُكُلْ بَيْنَا مُوسَى تِسْعَ أَيَاتٍ بَيْنَا مِنَاسِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّلَّاللَّهُ اللَّهُ اللَّلَّا اللّ

اورہم نے موسیٰ کو نوکھلی نٹ نیاں عطاکیں۔ اب تم خود بنی اسرائیل سے پوچھے لو کہ جب وہ سامنے آئیں تو فرعون نے کہا کہ اسے موسیٰ میں سمجھتا ہوں کہ توایک سحزد دہ آدمی ہے۔ قال کہ ہے تھوٹسی اکھوٹا میا آنگھ فی لفوْن الح

د الشعوار آیات میسی تا شیری

موسیٰ نے کہا (اے جاد گرومینیکو جرنہیں بھینکناہے؟) انھوں نے اپنی رسیاں اور لا تھیاں بھینک دیں اور لو لے عرب فرعوں کی قسم سے ہم ہی غالب ہوں گئے۔ مھرموسیٰ نے اپنا عصا ڈال دیا تو بکایک وہ اِن کے حجو ٹے کرشموں کو ہڑپ کرتا چلاگیا۔ اسپر سارے جا دوگر ہے اختیار سجدے میں گر پڑے ۔ سجنے لگے کہم ایمان لائے رب العالمین پر جوموسیٰ اور ہارون کا رب ہے۔

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِالْيَتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَاسِبِ نَقَالَ

رَانِيَ مُنْ سُولُ مَرِيتِ الْعَالَمِينَ. الخ والزخوف آيات مندًا مند)

اورہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیوں سے ساتھ فرعون اوراً سکے اعیان سلطنت سے پاس مجیجا تو اُس نے جاکر کہا کہ بیں رب العالمین کا رسول ہوں .

مچرجب اُس نے ہماری نشانیاں اُن کے سامنے پیش کیں تو وہ مظیمے مارنے لگے۔

ہم بیجے بعد دگیراُن کوالیسی نٹ نی دکھاتے چلے گئے جو مہلی سے بڑھ چڑھ کر بھی اور ہم نے اُن کو عذاب ہیں پکڑیا تاکہ وہ اپنی دوشس سے باز آئیں۔

لعافی ورکی جراسوره اعراف میں یہ وضاحت ملتی ہے کہ جب حضرت موسیٰ میں اطلاع کے مطابق کوئی غذاب عام مصر پر نازل ہو تا تو فرعون حضرت موسیٰ علیہ الت الام سے کہنا تھا کہ اے موسیٰ تم النہ سے دعارکے اس عذاب کو دُورکروا دو ، بھر جو کچہ تم سمتے ہو وہ ہم مان میں گے . مگر جب وہ بلاٹل جاتی تھی تو فرعون اپنی آسی ہے دھرمی پر تل جاتا تھا۔ عذاب کا کے بعد دیگر اور وہ بھی قبل از قبل ہے بیش گوئی ہے بعد آجانا۔ بدایک ایسا کھلامعیزہ نھا جبکو دیھ کر ایک اور وہ بھی قبل از قبل ہے بیش گوئی ہے بعد آجانا۔ بدایک ایسا کھلامعیزہ نھا جبکو دیھ کر ایسی ایک معمولی سی قبل رکھنے والا آ دمی بھی یہ فیصلہ کرسکتا تھا کہ ایک سیچے آ دمی کے کہنے پر ایسی ملک گیر بلاوُں کا آنا اور مھر اسمے کہنے پر ایسی میں کے مسلم نے فرعون سے صاف میں میں اس کے خون سے صاف میں دیا تھا :۔

لَقَدُ عَلِمُتَ مَا آنُولَ هُؤُكِرَ مِلْ الْحَرَبُ التَّمُونِ

وَ الْأَرْضِ . ربى اسرائيل آيت عندا)

ً توخوب جان چکاہے کہ بیاٹ نیاں زمین وآسمانوں کے مالک نوموں نوموں نیست کی میں انسان کی میں انسان کی مالک

كے سواكسى اور نے 'ازل نہيں كى ہيں . وَجَحَدُ وُا بِهَا وَاسْتَيْقَنَةُ اَ اَنْفُسَهُمْ ظُلُمًّا وَعَلُو اللهِ

دالنمل آیت مکل)

اور ان لوگوں نے معجز ان کا انکارصرف ظلم اور نکبتر کی وجہ سے

کیا حالا کہ ان کے قلوب اس کا بیٹین کر کیلے تھے۔ جب نوبت بہاں تک مہنجی کہ انکار بغض وعداوت کی حد تک پہنچ گیا۔ جا بجا مزاق اٹرایا جا لگا، دھمکیاں دی جانے لگیں تو الٹر تعالے نے حضرت موسیٰ علیہ است لام پر وحی جیجی کہ اب تم بنی اسرائیل کو لیکرمصر سے فلسطین ہجرت کرجاؤ۔

المن مرسے فلسطین یا ارض کنوان جانے کے دو راستے ہیں ایک فیٹی کا راستہ جو قریب ترتھا دوسر ابحر فلزم دبحراحمر) کا راستہ جبکو عبور کرکے وا دی سینا کی راہ اختیار کی جائے ہیں دور کی راہ اختیار کی جائے ہیں مقاضہ ہوا کہ وہ ختی کی راہ چھوٹ کر دور کی راہ اختیار کریں اور دریائے فلزم کو پار کرکے جائیں۔ بظاہر اسمیں میصلحت چھوٹ کر دور کی راہ اختیار کریں اور دریائے فلزم کو پار کرکے جائیں۔ بظاہر اسمیں میصلحت فروری ہوجاتی سیون کے دخشک کی راہ اختیار کرنے ہیں فرعون اور اُس کی فوج ہے جنگ ضروری ہوجاتی سیون کہ اسمول نے بنی اسرائیل کو قریب ہی آئیا تھا اور اگر دریا کا معجب نہ بیش نہ آتا تو فرعون بنی اسرائیل کو والبس مصر لیجانے ہیں کا میاب ہوجا یا۔ الغرض حضرت موسیٰ اور بار ون علیہ ما استام بنی اسرائیل کو لے کر راتوں رات بجراحمر کی راہ ہوگئے اور روانہ ہونے اور ایس نہ کرسے کہ کہ ہیں اہل مصر پراصل حال واضح نہ ہوجائے۔

ادھر بعض نے فرعون کو اطلاع دی کہ بنی اسرائیل مصر سے فرار ہونے کے گئے اور ایس خرعون کو اطلاع دی کہ بنی اسرائیل مصر سے فرار ہونے کے گئے شہروں سے نکل گئے ہیں. فرعون کو اطلاع دی کہ بنی اسرائیل مصر سے فرار ہونے کے گئے شہروں سے نکل گئے ہیں. فرعون اُسی وقت ایک زبر وست شکر کیکر اُن کے تعاقب شہروں سے نکل گئے ہیں. فرعون اُسی وقت ایک زبر وست شکر کیکر اُن کے تعاقب شہروں سے نکل گئے ہیں. فرعون اُسی وقت ایک زبر وست شکر کیکر اُن کے تعاقب

ہروں سے میں ہے ہیں ہروت میں است ہے۔ کے لئے بحل پڑااور صبح ہونے سے پہلے اُن کے سروں پر جا پہنچا۔ بنی اسرائیل کی تعدا د مقول تورات اسوقت تیجھ لاکھڑھی کو پیھٹنے سے ونت

جب اعفوں نے پیچھے موکر دیکھا تو فرعون کو سر پر یا یا گھبراکر تھنے ملکے (میہاں تورات

کی روایت بڑی دلیپ ہے)

"أفي موسى كيامصري فبري منتقيل جوتوم كومرن كالك

بیا بان بیں ہے آیا ؟ (خروج بابس اآیات علا، علا)

حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے اتھیں تی دی اور فرمایا خوف نہ کرومیرارب میرے ساتھ ہے وہ تم کو بخات دے گا اور تم ہی کامیاب ہو گے۔ بھر بارگاہ الہی ہیں دست بُدعا ہوئے وی اہی نے حکم دیا کہ اپنی لاتھی کو پانی پر مار دو پانی مھیٹ کر بیچ ہیں راست تہ 'تکل آئے گا۔

اورخشک زمین کی طرح اس سے پار ہو گئے۔

فرعون نے جب پر بنظر دکھا تو اپنی قوم کو آواز دی کہ یہ وقت بہت مناسب ہے آگے بڑھوا ور بنی اسرائیل کو جا کپڑو ۔ چانچ فرعون اور اس کا تمام نشکر بنی اسرائیل کے پیچھے اُسی راستے پر جا پڑا ۔ لیکن النڈ کی قدرت آگے آئی جب بنی اسرائیل کا ہر فرد دوسرے کنارے پر سلامتی کے ساتھ بہنچ گیا تو یا نی کو کم دیا کہ وہ اپنی اصلی حالت پر آجائے سس آئا فاناً دریاسے دونوں پاٹ بھر مل سے اورفرعون اور اس کا تمام سے رجو انھی درمیان ہی میں تھاغرق آب ہوگیا۔

ہی یا تھا ہے۔ یہ قرآن مکیم ہی کا انکثاف ہے جس کا واحد ذریعہ وحی الہی کے سواکچھ نہیں ۔ جب فرعون غرق ہونے لگا اور ملائکہ العذاب سامنے نظرآنے گئے تو میکارکر کہتے لگا:-

مين أسى ابك وحدهٔ لا شريك لهٔ مستى برايمان لا تام ورحب

پر بنی اسرائیل ایمان لائے ہیں اور میں اطاعت کرنے والوں میں سے

ایک ہوں ۔ ریوس آیت میں) گریدا بمان چوکی حقیقی ایمان نہ تھا بلکہ گزشتہ فریب کاربوں کی طرح نجات حاصل کرنے سے لئے ریمبی ایک مضطر بانہ بات تھی اس لئے الٹر کی طرف سے بیرجواب دیاگیا ۔ آلی کی قدیم آلی کی قدیم تھے گئے گئے گئے میں المفیدی کا دیس ایک اب یہ کہہ رہ ہے مالانکہ اس سے پہلے جوا قرار کا وقت تھا۔ اسمیں انکار اور فلاف ہی کرنار ہا ور درحقیقت تومفسدوں میں سوتھا۔ یعنی الٹرکوخوب معلوم تھا کہ وہ لمین میں سے نہیں بلکہ مفسدین میں تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ فرعول کی یہ پیکار ایمان لانے اور بیقین کرنے کے لئے مذہ تھی بلکہ عذاب الہی کامٹ بدہ کرنے کے بعد اضطراری اور بے اختیاری کی حالت میں نکلتی ہے۔ ایسی وُعا و پیکار موت کے وقت نا قابل قبول ہوتی ہے۔ قرآن صحیم نے اس کے لئے ایک

فَكُوْ يَكُ يُنْفَعُهُ مُ إِيْمًا نَهُ مُ لِكَا لَا أَوْا بَالسَّنَاسُنَّتَ

اللِّي الَّتِي قَدُخَلَتْ فِي عِبَادِع. (المومن آيت عهم)

یں انکونفع نہ دے گا اُن کا اپنا ایمان جبکما مفوں نے ہمار اعذاب دیجہ کے استحار مفوں نے ہمار اعذاب دیجہ کا اُن کا اپنا ایمان جو ہمیشہ اسکے بندوں ہیں جاری رہاہے۔ تو بہ اور ایمان بس اُسی وقت تک نفع دیتے ہیں جب تک آدمی الشرکے عذا ہے۔ موت کی گرفت میں نہ آجائے۔ عذا ہا جا کے بعد ایمان لانا یا تو بہ کرنا الشرکے ہاں مقبول نہیں ہے۔ ایمان لانا یا تو بہ کرنا الشرکے ہاں مقبول نہیں ہے۔

اس موقعہ برالٹر کی جانب سے بیمقی جواب دیاگیا۔ شج کے دن ہم تیرے حبم کواُن نوگوں کے لئے جو تیرے پیچھے آنے والے ہیں نجات دیں سے کہ وہ عبرت کانشان ہے۔

(يونس آيت مله)

جدید تحقیقات کی روشنی میں قاہرہ کے عجائب خانہ میں درئیس ثانیٰ، فرعونِ موسیٰ کی معش موجود ہے۔ بیسمندرمیں محقود می دیرغرق رہنے کی وجہ سے اس کے ناک کے کچھ حصہ کو مجھلی نے کھا لیا تھا آج بھی تماشاگاہ خاص وعام ہے۔

تُنوعون کاتعاقب اورسمندر کامپیٹ جا نااور بنی اسرائیل کا بخات پاجانا اور فرعون کاغرق ہونا قرآن حکیم کی مندرج آیات ہیں تفصیلًا واختصارًا اس طرح موجود ہے۔

قرانى مضمون وَلَقَدُ أَوْحَيْنًا إِلَىٰ مُوسَىٰ آنُ أَسُرِبِعِبَادِتُ

فَأَخُوبُ لَهُ حُرُ الْحُ ('طُرْآيات عِئْ آماف)

اور بھرد کچھو ہم نے موسی پر وحی بھیجی کہ اب میرے بندول کو راتوں رات مصرسے نکال لیجا بھرسمندر میں اُن کے گزرنے کے لئے خشکی کی راہ نکال لیے بچھکو نہ تعاقب کرنے والوں سے اندیث ہوگا نہ اور کسی طرحے کا خطرہ ۔

پھرفرعون نے اپنے شکر کے ساتھ اُن کا پیجھاکیا ہیں پانی کاربلا جیسا کچھ اُن پر چھانے والا تھا چھاگیا۔ دمیعنی جو کچھ اُن پر گزرنی تھی، گزرگئی) اور فرعون نے اپنی قوم پر را ہ نجات گم کر دی انھیں سرھی را ہنہیں دکھانی ۔

وَ اَوْحَيْنَا ۗ إِلَىٰ مُوسَى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِ یَ إِنَّكُمُ مُنَبَّعُوْنَ الْحِ دانشعرار آیات عله تاعث

ہم نے موسیٰ کی طرف وحی بھیجی کدراتوں رات میرے بندوں کو لے کرنکل جاؤ تمہارا بیجیاکیا جائے گا۔

مجرفرعون نے (فوج جمع کرنے کے لئے) شہروں میں نقیب بھیج دئے . (اور کہلا بھیجا) کہ یہ کچھ مٹھی مجرلوگ ہیں اور اعفوں نے ہم کو بہت نارائن کیا ہے۔ اور ہم سب کوان لوگوں سے خطرہ ہے۔

اس طرح ہم نے اُن مخیب اِن کے باغوں اور حیثیموں اور خزانوں اور ان کی بہترین قیام گا ہوں سے بکال باہر کیا۔

یہ تو ہواا کی سے ساتھ ،اور (دوسری طرف) بنی اسرائیل کو ہم نے ان سب چیزوں کا وارث کر دیا ۔صبح ہوتے ہی یہ لوگ اُن کے تعاقب میں جل بڑے ۔

بھرجب دونوں جماعتوں نے ایک دوسرے کو دیکھا توموسیٰ کے ساتھی کہنے گئے بیٹنک ہم تو بکڑے گئے .

موسیٰ نے کہا ہر گزنہیں میرے ساتھ میرادب ہے وہ ضرور میری رہنمانی کرے گا پس ہم نے موسیٰ کی طرف وحی جیجی کہ اپنا عصاسمندر پر ما دو یکا کی سمندر کھٹ گیا اور اس کا ہو گھڑا ایک عظیم الثان پہاڑ کی طسرے ہوگیا۔ اور اس جگہ ہم ووسری جماعت کو بھی فریب لائے۔ موسیٰ اور اُن سب لوگوں کو جو اُس کے ساتھ تھے ہم نے بچالیا۔ بھر دوسروں کو غرق سب لوگوں کو جو اُس کے ساتھ تھے ہم نے بچالیا۔ بھر دوسروں کو غرق کر دیا۔ بیٹک اس واقعہ میں ایک نشانی ہے مگر ان لوگوں میں اکثر مانے والے نہیں ہیں۔ اور درحقیقت تیرار ب زیر دست بھی ہے جیم محمد میں ۔ اور درحقیقت تیرار ب زیر دست بھی ہے جیم بھی ہے۔

فَانْتَقَمَنُا مِنْهُ مُ وَاَعْرَفُنْهُمْ فِي الْبَيْرِ بِأَنْهُمْ كِي الْبَيْرِ بِأَنْهُمْ كِذَّ بُوا بِالْبِيْنَا وَكَانُوُ اعَنْهَا غَيْوِلِيْنَ . داعراف آيات عسّلا آعسًا

تب ہم نے اُکن سے انتقام لیا ا ورا تمضیں سمندر میں غسر ق کردیا کیو نکہ انتخوں نے ہماری نشانیوں کو جھٹلایا تھا اور اُن سے بے پڑا ہوگئے تنفے .

اور اُن کی جگہم نے اُن لوگوں کوجو کمزور بنا کے رکھے گئے تھے اُس زمین کے مشرق ومغرب کا وارث بنا دیا جسے ہم نے برکتوں سے مالامال کررکھا تھا،اور اس طرح بنی اسرائیل کے حق ہیں تیرے دب کا وعدہ خیر پورا ہموا کیونکہ اُنمفوں نے صبرسے کام لیا تھا اور جو کچھ فرعون اور اُسکی فوم نے تیار کیا تھا اور جوجو اونجی عمار ہیں بنائی تھیں اُن سب کوہم نے ملمامیٹ کردیا۔

وَجَاوَزُنَا بِبَنِيَ إِسْرَائِيْلَ الْبَحْرَفَاتَبُعَهُمْ فِرْعَوْثُ دَجُنُوْدُهُ * بَغُيَّاوَّعَدُدًّ ٢١١ (يونس آيات منه اعك)

اور مجرایسا ہواکہ ہم نے بنی اسرائیل کوسمندر کے پاراُ تار دیا۔
یہ دیجھ کر فرعون اور اُس کے لئے کرنے بیچھا کیا مقصو دید تھا کہ ظلم وشرات
محریں ،لیکن جب حالت یہاں تک مینچ گئی محرفون سمندر میں غرق ہونے
لگا تو اُس وقت پیکاراً مجا، میں مقین کرتا ہوں کہ اُس سبتی کے سواکوئی معبود
مہیں جس پر بنی اسرائیل ایمان رکھتے ہیں اور میں بھی اُنہی فرانبردادوں

دہم نے کہا، ہاں اب تو ایمان لا یا حالا کم يہدے برابر نا فرمانی حرتار با اور تو دنیا سے مفسد انسانوں میں سے ایک تھا۔ يس آج ہم ايساكريں سے كہ تيرے حبم كو دسمندر كى موجول) بیالیں گئے تاکداُن لوگوں سے نئے جوتیرے بعد آنے والے ہیں ایک نَ فِي بِنَا وراكثران ان مهاري نشانيوں سے تليخت غافلَ مِن -وَاسْتُكْبَرُهُو وَجُنُودُ لَا فِي الْكَهُنِ بِغَيْرَالُحَتِ وَ ظَنُّوْا ٱنَّهُ مُ لِلَّذِي لَا يُرْجَعُونَ ١٠ خ (القصص آيات على تاعيم) اور اس نے اور اس کے شکروں نے زمین میں بغیر کسی حق کے اپنی بڑائی کا گھنڈ کیا اور سمجھے کر امفیں سمبی ہماری طرف پلٹنا

آخر کارہم نے اُسے اور اُسکے لٹ کروں کو کیڑا اور سمندر میں مجيئك دياءاب ديج لوإن ظالنون كأكيساانجام مواء اور ہم نے امضیں جنم کی طرف دعوت دینے والے بیٹیوا بنادیے

اور فیامت سے دن وہکوئی مدونہ یاسکیں گے۔ اور ہم نے اس وُنیا میں اُن کے پیچے لعنت لگا دی اور قبا

کے دن وہ بڑی بُرائی میں مبتلا ہوں گئے۔

وَلَقَدُفَتَنَا قَبُلَهُ مُ قُوْمً فِرُعَوْنَ وَجَاءَهُمُ مَرَاثُ

اكريم ١١٤ ١ الدفان آيات علا تا علي

اورسم ان سے ملے فرعون کی قوم کو اسی آز ماکش میں ڈال ملے ہیں جبکہ اُن کے ہاں ایک نہایت شریف رسول آیا۔ داور اُس نے کہا) كرالترك بندول دبى اسرائيل كوميرے حوالكرو بي تمارے كئے ایک اما نتدار رسول ہوں۔ اور الترکے مقابلہ میں سرحشی نہ کرونس تمہار سامنے تعلی دلیل سپیس کر تا ہوں . اور میں اپنے رب اور تمہارے رب ی بنا و لے چکا ہوں اس سے کہتم مجھ کوسکسار کرو۔

اور اگرتم مجھ پر ایمان نہیں لاتے تومجھ سے الگ ہی رہو۔ اخر کار موسیٰ نے اپنے رب کو پیکا راکہ بہ لوگ مجرم ہیں۔ (جواب دیاگیا) اچھا تو راتوں رات میرے بندوں کو لے کرمیل پڑو، تم لوگوں کا پیچھا کیا جائے گا۔

ہیں اور سمندر کو اسکے حال پر کھلا چپوڑ دویہ سارات کرغرق ہوئے والا ہے۔ کتنے ہی باغ اور حیثے اور کھیت اور شاندار محل تھے جو وہ جپوڑ گئے اور کتنے ہی عیش کے سروسا مان جن میں وہ مزے کر رہے محفظ اُن کے جمھے وحرے رہ گئے۔

یہ ہوا آن کا انجام اور سم نے دوسروں کو اِن چیزوں کا وارث بنا دیا۔ بچرنہ آسمان اُن پررویا نہ زمین اور نہ اُسمیں وراسی مھی مہلت دی گئی۔

اور البنة ہم نے بنی اسرائیل کو ذلت کے عذاب سے بخات دی۔ فرعون سے بنجات دی جو حد سے گزر جانے والوں بیں فی الواقع بڑے اونج درجے کا آدمی تھا۔

غَامَادَ آنُ يَّشَهِ فَا هُوُمِينَ الْأَمْضِ فَاعْرَقَنَ وَصَنَ مَعَ سُ جَمِيهُ عًا. الخ ربن اسرائيل آيات علا تامين!

آخر کارفرعون نے ارا وہ کیا کہ موسیٰ اور بنی اسرائیل کور مین سے
اکھاڑ بھینکے مسکر ہم نے اُسکوا ور اُسکے ساتھیوں کو اکٹھا غرق کردیا۔
اور اُسکے بعد بنی اسرائیل سے کہا کہ اب تم زمین میں رہوسہو مھر
جب آخرت کے وعدے کا وقت آ سے گا تو ہم تم سب کو ایک ساتھ لا محفرا

وَ فِي مُوسَى إِذْ الرَّسَلْمَا لَا إِلَىٰ فِرْعَوْ نَ بِسُلُطْنِ مَيْبِيْنِ ١٠٤ (الذاريات آيات عصر آين)

داورتمہارے لئےنٹ فی ہے) موسیٰ کے قصتے میں جب ہم نے اُمضیں کھکی دسیل دیجر فرعون سے باس مجیجا۔ تو وہ اپنے بل بوتے پر اکوارکیا اور اولا

یہ جا دوگر ہے یامجنوں ہے۔

یہ بروں کو کمڑا اور سے اور اُ سکے شکروں کو کمڑا اور سب کو سمندر میں بچینک دیا اور وہ ملامت زد ہ ہوکررہ گیا ،" سمندر میں بچینک دیا اور وہ ملامت زد ہ ہوکررہ گیا ،"

عبرت کی ایجامی افرون اور حضرت موسی علیه است لام کایه واقعہ کوئی تاریخی واستا معبرت کی ایک استان قابل عبرت معرکوں میں ایک عظیم الثان قابل عبرت معرکوں میں ایک عظیم الثان قابل عبرت معرکہ ہے۔ ایک جانب غرور و مخوت ، جبر والم ہے و دوسری طرف صبر واستقامت ، منظومیت اور خدا پرستی اس کے النہ تعالیٰ نے فرعون اور قوم فرعون کی ہلاکت کے بعد عبرت واستی اس جانب خصوصی توجہ ولائی ہے کہ اس قسم سے لوگوں کے لئے آخرت کی ابدی وسرمدی زندگی میں کس قدر سخت عذاب اور خدا کی پھٹکار کے کیے کیے عبر زناک کی ابدی وسرمدی زندگی میں کس قدر سخت عذاب اور خدا کی پھٹکار کے کیے کیے عبر زناک سامان مہیا ہیں تاکہ سلیم و نیک نہا و فطرت لوگ اِس کامطالعہ کریں اور اُن جیے اعمال سے خود مجی بچیں اور دوسروں کو بھی بچائیں اور اسکی ترغیب دیں .

فرعون اور دوسروں کو بھی بچائیں اور اسکی ترغیب دیں .

قرآئ مضمون وَلَقَدُ أَرُسَلُنَا مُوسَى بِالْيِنَا وَسُلُظْنِ مَبِينِ ١٠٤ مِنْ مَا يَنِنَا وَسُلُظْنِ مَبِينِ ١٤

اورموسیٰ کوسم نے اپنی نشانیوں اور کھلی دلیل سے ساتھ فرعون اور اُسکے اعیان سلطنت کی طرف بھیجا۔

آخرکار قوم نے فرعون کے تم کی پیروی کی مالا کہ فرعون کا حکم راستی پر شمقا۔ قیامت کے روز وہ اپنی قوم کے آگے آگے ہوگا اور ایس دوزخ کی طرف نے جائیگا اور وہ کسی برترجائے ور و د ہے جس پرکوئی پنجی۔ اور اِن لوگوں پر ونیا میں بھی لعنت پڑی اور قیامت کے دن جی پڑے گی کیسا جرا بدلہ سے یہ جوکسی کو ہے۔ کیسا جرا بدلہ سے یہ جوکسی کو ہے۔

یہ چندب تیوں کی سرگزشت ہے جوہم تہیں سارہ ہیں اِن میں سے بعض اب بھی کھڑی ہیں اور بعض کی فصل تحری ہے۔ اورہم نے اُن پڑللم نہیں کیا لیکن اُکھوں نے آپ ہی اپنے او پر تنم ڈھایا ہے اورجب الٹرکا پھم آگیا توان کے وہ عبود جنھیں وہ الٹرکو چھوڈ کر پیکارا کرتے محقے اِن کے کچھ کام نہ آسکے اور اُکھوں نے ہلاکت وہر ہادی کے سواا بھیں کچھ فائدہ نہ دیا۔

اور تیرارب جب سی خالم بستی کو پکر آئے۔ تو مجر اسکی پڑائی ہی ہواکرتی ہے۔ فی الواقع اسکی پکر بڑی سخت اور وروناک ہوتی ہے۔ حقیقت بیسے کہ اسمیں ایک نشانی ہے ہراُس خص کے لئے جوعذاب آخرت کا خوف کرے ۔ وہ ایک ون ہوگاجس میں سب لوگ جمع ہوں گے اور بچر جو کچھ معبی اُس روز ہوگاسب کی آنکھوں کے سامنے ہوگا۔ ہم اسکے لانے میں بہت زیادہ تا خیر نہیں کر رہے ہیں بس ایک مختصر گئی چنی مدت اسکے لئے مقرر ہے۔ جب وہ دن آئے گا تو تو سی کی بات کرنے کی مجال نہ ہوگی الآ بہ کہ خدا کی اجازت سے ۔ بھر کچھ لوگ اُس روز بر بخت ہوں گے اور کچھ نیک بخت۔

پس جو بد بخت ہوں گے وہ دوزخ میں جا کینے دجہاں گرمی اور پیاس کی شدت ہے ، وہ انہیں گے اور پیاس کی شدت ہے ، اس حالت میں وہ ہمیشہ رہیں گے جب بک کر زمین واسمان قائم ہیں ۔ اِلّا یہ کہ تیرا رب کچھ اور چا ہے ۔ شک تیرا رب جو کچھ چا ہتا ہے کر گزر تا ہے ۔ اور رہے وہ لوگ جو نیک بخت نگلیں گے تو وہ جنت میں اور رہے وہ لوگ جو نیک بخت نگلیں گے تو وہ جنت میں جا میں گے۔ اسمیں ہمیشہ رہیں گے جب بک زمین واسمان قائم ہیں ۔ اِلّا یہ کہ تیرا رب کچھ اور چاہے ۔ ایسی بخشش اُن کو ملے گی جس کاسلسلہ مجمیح ہم میں کے ایسی کے اور چاہے ۔ ایسی بخشش اُن کو ملے گی جس کاسلسلہ مجمیح ہم میں کا اور چاہے ۔ ایسی بخشش اُن کو ملے گی جس کاسلسلہ مجمیح ہم میں کا ا

وَجَعَلْنَهُ مُواَيِمَةً يَّدُعُونَ إِلَى النَّامِ وَيَوْمَ الْفِيَامَةِ لَا يُنْصَرُّوُنَ ١٤ رقصص آيات ١٢ ، ١٢)

اورہم نے اتحفیں جہنم کی طرف دعوت دینے والے بیشوا بنا دیا اور قیامت کے دن کوئی مدو نہ پاسکیں گئے۔ اور ہم نے اس دنیا میں اُن سے پیچھے لعنت لگا دی اور قیامت سے روز وہ بڑی بُرائی میں مبتلا ہوں گے۔

فَوَقَلْمُ اللهُ سَيِّاتِ مَامَكُونُ اوَحَاقَ بِالرِفِرُعَوْنَ

سُوْءُ الْعَدَابِ الْمُ رَمُونَ آيات عظم المنه)

آخرگاراُن لوگوں نے جو بُری چالیں اُس رمل مُومن کے خلاف چلیں الٹرنے اُن سب سے اُسکو بچالیا اور فرعون کے سامقی خو د برترین عذاب سے بھیرمیں آگئے۔

دوزخ کی آگ ہے جسکے سامنے صبح و شام وہ پیش کئے جاتے ہیں اورجب قیامت کی تھٹری آ جائنگی تو تھم ہوگا کہ آلِ فرعون کو شدید عذاب میں داخل کرو۔

مچر زراخیال کرواس وقت کاجب یہ لوگ دوزخے میں ایک دوسرے سے حکر سے ہوں گے۔ دنیا میں جولوگ کم درج تنفے وہ بڑ درجے والوں سے کہیں سے کہم نمہارے تا بع تقے اب میا یہاں تم نارجنم کی تکلیف سے کچوجھے سے ہم کو بچالو سے ؟

وہ بڑے درجے والے جواب دیں گے ہم سب بہاں ایک طال میں ہیں بیٹیک الٹربندوں کے درمیان فیصلہ کرچکاہے۔
اور دمجری یہ دوزخ میں پڑے ہوئے لوگ جہنم کے بہرہ دارو
سے کہیں گے۔اپنے دب سے دُعا کروکہ ہمارے عذاب ہیں ابس الک آدھے دن کی تخفیف کردے۔

وہ پوچیں گے کمیا تمہارے پاس تمہادے رسول نشانیاں کیے نہرہ دار بولیں گے کے الم ایم اس میں اسے بہرہ دار بولیں گے کی تو تم ہی و مار بولیں گے کی تو تم ہی و ماکر و اور کا فروں کی وعا اکارت ہی جانے و الی ہے۔ یو تا تا شکھ کے تاکہ النظر قوم کا کھا کھی الکر شائم کی دیا ہے۔ یا تا شکھ کھی تاکہ الکر شائم کی دیا ہے۔

 پیط میں اس طرح جوش کھائے گا۔ جیسے کھولتا ہوا پانی جوش کھا تا ہے۔

(اے فرستتو) پکڑو اسے اور دھکیلتے ہوئے لیے جا ڈ اسکوجہنم کے بیچوں
بیچ ۔ بچرانڈیل دوا سکے سر پر کھولتے پانی کاعذاب جی اس کا مزہ
بڑا زبر دست عزت داراً دمی ہے تو۔
بر وہی چیزہے جسکے آنے ہیں تم لوگ شک رکھتے تھے۔
بید وہی چیزہے جسکے آنے ہیں تم لوگ شک رکھتے تھے۔

مہرا مطالب المحقادم کو پارکرنے سے بعد بنی اسرائیل نے اپنی آنکھوں سے فرعوں اور مہرا مطالب اسی فوج کوغرق ہوتے دکھا بھران کی بیشمارنعشوں کوسمندر کی موجوں

نے اپنی غیض وغضب کے ساتھ سامل پر لا پھینکا۔

یہ سارا منظر اُن کے سامنے تھا الٹر تعالیٰ کی ٹائید ونفرت آنکھوں سے دیجہ اسکے، سیکن اُن کی ذہنیت کو اہل مصر کی برسہابرس کی غلامی نے کچھ اس قدر مسکاڑ دیا تھا
کہ اس کا اندازہ اس بات سے با سانی کیا جا سکتا ہے کہ یہ قوم حضرت موسیٰ علیہ استلام
کی چالین سالہ زندگی کی تربیت و رہنمائی میں زندگی بسر کرلینے سے بعد بھی اپنے اندر سے
اُن مت رکانہ اُٹرات کو نہ کال کی جو فراعنہ مصر کی بندگی سے دور میں پیدا ہو سے سخت مصروف متھے بنی ایس سے مہتوں کی چرف اعلیٰ مہت پند آیا۔ اس منظر کو دیکھ تحران بگڑ ہے
موروف متھے بنی اسرائیل کو نیقش باخل مہت پند آیا۔ اس منظر کو دیکھ تحران بگڑ ہے
ہوئے سلمانوں میں سے مہتوں کی بیشانیاں اس آسانے پرسجدہ کرنے کے لئے بیتا ب
ہوئے مسلمانوں میں سے مہتوں کی بیشانیاں اس آسانے پرسجدہ کرنے کے لئے بیتا ب
ہوئے مسلمانوں میں سے مہتوں کی بیشانیاں اس آسانے پرسجدہ کرنے کے لئے بیتا ب

کہ ان کامعبود ہے۔ اسپر حضرت موسیٰ علیہ است الام نے فرمایاتم بڑی جاہل قوم ہو، یہ لوگ جن کے طریقے کو تم پند کررہے ہوان سب سے اعمال ضائع جانے والے ہیں ۔ یہ باطل کی پیروی کررہے ہیں تم کو اس کی حرص بکرنا چاہئے کیا ہیں تمہارے گئے الند کے سوامی اور کومعبو د نیا دوں بجبکہ وہی سب کامعبو دہے۔

رور بررباروں ابن اسرائیل نے بحرفلزم کو پارکرنے کے بعد حس سرزمین پر قیام کیا **دوسترام طالب ا**بنی اسرائیل نے بحرفلزم کو پارکرنے کے بعد حس سرزمین پر قیام کیا

تڑپ تڑپ کرمرجائیں احتیاتو یہ ہی تھاکہ بحرفلزم بن ڈوب مرتے۔ قوم کی بےصبری اور بے اعتما دی پرحضرت موسیٰ علیہ السّلام نے ہارگاہِ الٰہی مصادی جو دالے نہ بہند کا کسی سالت میں اور کا بہترین

میں التجاکی وحیٰ الہٰی نے انتخبیں حکم دیا کہ اپناعصا زمین پر ماریں ،حصرت موسیٰ علیہ اتلام نے تعمیل کی توفوراً ہارہ جینے بچوٹ بڑے اس دقت بنی اسرائیل کے ہاراہ قبیلے تھے سے میں برائی میں جہ یہ میں میں اس بنیاس

سب کے لئے ایک ایک جیٹ مفرر مہوگیا، بنی اسرائیل کوجب یا نی سے اطمینان ہوگیاتو سمینے لگے یانی کا انتظام تو ہوگیالیکن زندگی کے لئے صرف یا نی تو کا فی نہیں ہمیں مصوک

لگی ہے کھائیں کہاں سے ب

حضرت موسیٰ علیہ است الام نے بھرب العالمین کی بارگاہ میں وُعاکی النّہ زعالیٰ نے وی جبیجی، اے موسیٰ تمہاری دُعا فبول ہوئی پریٹان نہو اب ہم غیب سے سب انتظام کرویتے ہیں۔ بھیرایسا ہوا کہ جب رات ختم ہوئی صبح سبح بنی اسرائیل نے دیچھا کہ زمین اور خشک درختوں پر جگہ جگہ سپید اُولوں کے دانوں کی طرح شبنم کی صورت میں آسمان سے کوئی چیز برس کرگری پڑی ہے۔ کھا یا تو نہایت شیریں علوے کی مانند مقابی قرآنی الفاظ میں من "مقاب پھر دن میں تیز ہوا جلی اور تحجہ دیر کے بعد شیروں کے غول درغول آکر زمین پر مبیعہ گئے۔ بنی اسرائیل نے اُنھیں آسانی سے پچڑا اور تل جون کر بیا ہوں ک

اسی طرح روزا نہ بغیر کسی زحمت وشقت سے بیر دونوں متیں مفت مہیا ہوگئیں۔
لیکن چو نکہ ہرنعمت ا بہنے میں بچھ نہ بچھ آزمائش بھی رکھتی ہے ، النٹر تعالیے نے حضرت موسیٰ
علیہ الت لام کی معرفت بنی اسرائیل کو یہ بھی آگا ہی دی کہ وہ اپنی صرورت کے مطب بق من وسلوئی کو کام میں لائیں۔ دوسرے دن کے لئے زخیرہ نہ کریں ، ہم ان کو ہر مسیح میہ نعمت فراہم کرتے رہیں گئے لیکن یہ بگڑے انسان کب سکون واطبینان سے بیٹھتے مزاج ملداول

ہدایت سے حیراغ

وعادات میں شیرها بن تھا۔اللہ اور اسکے رسول موسیٰ علیہ السلام پرغیر متزلزل میقین ما تھا۔حضرت موسیٰ علیہ السلام کی اس آگاہی کوکوئی اہمیت مذوی ۔ رزق فروا کے اندیشے میں مبتلا ہوگئے اور ہرروز دوسرے دن کی غذا کا ذخیرہ کرنے گئے ۔ اگرچوا بخیں ہر روز نبیا من دسلوئ ملاکر تا تھا،کسی بھی قوم میں جب اللّہ ورسول پر ہے اعتمادی کامرض پیدا ہوجا تاہے اُسکے آثار الیبی ہی شکلوں میں ظاہر ہوتے ہیں۔حضرت موسیٰ علیہ السلام کی منہ ماشن کچھ مفید ثابت مذہوئی۔آخر کار آیک مدت سے بعد اس آسمانی دسترخوان "سے مہمی محروم ہو تھے ۔ نعمتوں کاحق اوا مکرنے پر ایسے ہی نتائج سے دوجیا رہونا پڑتا ہے۔

میسرامطالی کے اس وادی میں میسرامطالبہ شروع کردیا گرمی کی شدت ہے،

رایہ وار درختوں اور مکا نات کی راحت میشرنہیں ہم بہت پریٹ ان ہیں ایسا نہ ہو گرگری کی شدت ہے،

مایہ وار درختوں اور مکا نات کی راحت میشرنہیں ہم بہت پریٹ ان ہیں ایسا نہ ہو گرگری کی بیٹ ایسا نہ ہو گرگری کی بیٹ اور میں ایسا نہ ہو گرگری کی بیٹ اور سے ہمارا ملک مصر ہی اچھا مقا اگرچہ و ہاں ہم غلا ما نہ زندگی بسر کررہے مقے لیکن رہے سہنے کا تو انتظام سے وصوت موسی علیہ الت لام نے انتظام سے انتظام نے تمہاری آزادی کا وعدہ کیا ہے وہ ضرور پیدا کر دیتی ہے تم لوگ الشرے ورواس نے تمہاری آزادی کا وعدہ کیا ہے وہ ضرور بیتات و می اور سب انتظام اپنے وقت مقررہ پر بور اہوگا یکن جب الشرورسول پر یقین ہی مقرد السب الشرورسول پر یقین ہی مقرد کیا ہے وقت مقردہ پر بور اہوگا یکن جب الشرورسول پر یقین ہی مقرد اللہ میں مقرد کیا ہے وقت مقردہ پر بور اہوگا یکن جب الشرورسول پر یقین ہی مقرد کیا تھا۔ ہم اور زرین نصیحت مقید ہو تکتی تھی۔ ہر دوز حضرت مقید مقید ہو تکا تھا۔

موسیٰ علیہ الت لام کو وق کرنے گئے۔ بالآخر حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے قوم کی اس بے صبری کا استفاثہ بارگا والہٰی میں بیٹ س کر دیا اور اُس سے فضل وکرم کی التجا کی بحضرت موسیٰ علیہ الت لام کی دُعاسنی گئی آنًا فائًا با دلوں سے مجنٹ بنی اسرائیل برسایہ گئی ہو گئے اور بنی اسرائیل جہاں بھی سفر کرتے با دلوں کا یہ سائبان اُن پر محفوظ جِھتر لوں کا کام دیتا۔

یہ ماہ ہاں پر مسوط بہتر ہوں ہا ہے۔ اس طرح بنی اسرائیل میں کسال بے صبری اور بے اعتمادی سے با وجو دوا دی نبیہ

بطوراً ز مائش فيجتت نتان أبن كيا-

جلداذل ہرایت سے حیراغ چوم مطالب یو ندایی نشانت" الله ورسول پراعتما دکرنے سے کیا کھے کم تحقے ؟ مگرجب فطرت میں سسلامتی باقی نهبیں رہتی اور توکل واغتمادٰ علی التّٰرے دل خالی ہوجا تا ہے تو ایسے بڑے بڑے مجزات بھی انسان کومطمئن بہبر کرتے۔ بنی اسرائیل پر وا دی تنیه میں التّر ہے برانعاً مات اور پیغیبر کی موجودگی جوسب سے بڑی نعمت ہے مہیا ہیں ان خصوصی حالات میں امفول نے ایک عجیب وغریب مطالبہ پیش کر دیا آیک مرتبہ سب جمع ہوکر کہنے گئے:۔ "ا ہے موسیٰ ہم روز روز ایک طرح کی غذا کھاتے رہنے سے ا کتا گئے ہیں اب ہم کو اُس من وسلولی "گی ضرورت نہیں ہے ۔ اپنے فدا سے دعاکروکہ و ہمارے لئے زبین سے سبزی ، کھیرا ، کیہوں وال مسور، بیازمیسی چیزیں اگائے: ناکہ ہم خوب کھائیں یُ حضرت موسیٰ علیہ السلام کو اِن کی اِس بیہودگی 'پرمہت غصّہ آیا فرمانے لگے:۔ وتتم بحى عصنقدراحمق ہوكہ ايك عمدہ وبہترين غذاً كو حجودٌ كر ایک معمولی ا ورکھ ٹیا قسم کی چیزوں کے خواہشمندہو ؟ اس طرح التٹر کی عطاکر دہ معمتوں کے خٰلاف اپنی پسند کو اختیار کر ناصریج کفّسرانِ معمت ہے الٹرسے ڈرو ایسے ہے جامطالبات سے باز آئے۔" لیکن قوم کے مجڑے وہنوں کو یہ بات بسندندانی اپنے مطالبہ براصرار کرنے لگے۔اس پر حضرت موسیٰ علیہ التِ لام نے وحی الہی سے اسٹ ار ہ پاکر قوم سے کہا ،اجھا فریب کی بستی میں جلے جاؤ و ہاں تم کو پیسب چیزیں وافرمفدار میں مل جائیں گئی۔ اس طرح خود اپنی زاتی تجویز ہے ایک ایک نعمت سے محروم ہونے چلے گئے۔

الترتعالے سے مذکورہ بالااحسانات کاجواب یہ لوگ کیسی میرمایز نے باکیوں کیسا تھ دیتے رہے اور پھرکس طرح سلسل تباہی کے گڑھے بیں گرتے جلے گئے۔ مفسرينَ لَكُفَّتَهُ بِينَ كُهِ بِهِ جِيارُونَ مِنْ مِنْ إِنَّى مَنْ وَتَلْلُونَى بَنْجَا دِلُونِ كَاسابِهِ، جِالبين

برس تک اس مسافرت کے زمانے نیں بنی اسرائیل کوملتی رہیں، جھ لاکھ سے زائدان ان قا فلہ بغیر کسی مشقت اور فاقد کشی کے اس وا دی بین کھا تا بیتا رہا۔ ملداة المست المان المائل الما

قرآئى مضمون وَجَاوَزُنَا بِهِنَيُ اِسُرَا فِيكَ الْبَحْرَفَا تَوُاعَلَىٰ قَعُومِ مِلْ الْبَحْرَفَا تَوُاعَلَىٰ قَعُومِ الْمُعَلَىٰ الْبُحُوسَىٰ الْجُعَلُ عَلَىٰ الْمُعُلِيْ الْمُعُلِيْ الْمُعُلِيْ الْمُعُلِيْ الْمُعَلِيْ الْمُعُلِيْ الْمُعَلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعَلِيْ الْمُعَلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِي الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِي الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِي الْمُعِلِيْ الْمُعِلِيْ الْمُعِلِي الْمُعِلِيْ الْمُعِلِي الْمُعِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي

لَيْنَاكُمُ الْمُعْرِ أَلِهَتُ الْحِدُ اعْرَافِ آيات عِطَا آعظا)

اور بنی اسرائیل کوہم نے سمندرسے پار کردیا بھروہ ایک ایسی قوم پر گزرے جو اپنے بتوں سے جمیٹی بیٹی تھیں تھیں، کہنے گئے اے موسی ہمارے بتے بھی کوئی ایسامعبود مقرر کر دے جیسا کہ اِن لوگوں کے معبود ہیں، موسی نے کہا افسوس تم پر بلاشبہتم جاہل قوم ہو۔
معبود ہیں، موسی نے کہا افسوس تم پر بلاشبہتم جاہل قوم ہو۔
لاریب ان لوگوں کا طریقہ تو ہلاکت کا طریقہ سے اور یہ جو کچھ سررہے ہیں باطل ہے۔ با وجود اسکے کہ السرنے تم کو تمام کا کنات پر فضیلت دی ہے معیر بھی ہیں تمہارے لئے السروا مدسے سوا اور معبود میں تب معیر بھی ہیں تمہارے لئے السروا مدسے سوا اور معبود سے سوا اور معبود ہیں۔

المستسرون ؟

وافرا استسفی موسی یقوی من فقلنا اخر بتعمالی و المحرک استسفی موسی یقوی من فقلنا اخر بتعمالی المحرف فانفر من فقلنا اخر بتعمالی المحرف فانفر من من المحرف و اقدم من یا دکر وجب موسی نے اپن قوم کے لئے یا فلاب کیا تھا اور ہم نے حکم دیا تھا اپن لاحقی سے فلال چاک پرضرب الگاو (موسی نے اس حکم کی تعمیل کی ، چنا نچ بار چین محصوب نکلے آور تمام لوگوں سے لوگوں نے اپنے بان چنا ہے اپن میں تنہارے لئے زندگی کی تمام مرکبی اس محاکم اس بے آب و گیا ہ بیا بان میں تنہارے لئے زندگی کی تمام مرور تیں مہتا ہوگئی ہیں بس کھاؤ بیو فعدا کی جنت سے فائدہ اسٹ کو اس فردر تیں مہتا ہوگئی ہیں بس) کھاؤ بیو فعدا کی جنت سے فائدہ اسٹ کو اس کے فائدہ اسٹ کو سے فائدہ اسٹ کے فائدہ اسٹ کو سے فائدہ اسٹ کو سے فائدہ اسٹ کو سے فائدہ اسٹ کو سے فائدہ اسٹ کے فائدہ اسٹ کی کو سے فائدہ اسٹ کے فائد کے فائد کو سے فائدہ اسٹ کے فائد کو سے فائد کے فائد کی سے فائد کو سے کو سے کی سے فائد کی سے ک

اور ایسا نه کروکر ملک مین فتنه و فسا دی میلاؤ دمینی ضرور یا تِمعیشت کے لئے لڑائی محکم اگرو یا ہر طرف لوٹ مار میاتے بھرو) کے لئے لڑائی محکم اگرو یا ہر طرف لوٹ مار میاتے بھرو) وَظَلَلُمْ عَلَيْكُ مُحْ الْغُنَا مَدَ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْكُ مُحْ الْغُنَا مَدَ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ ال

اورموسیٰ کی قوم میں ایک گروہ ایسامھی ہے جو لوگوں کو سپائی کی راہ چلا تا ہے اور سپائی کے ساتھ (ان سے معاملات میں) انصاف مجھی کرتا ہے ۔

اورہم نے بنی اسرائیل کو بارہ خاندانوں کے بارہ گروہوں میں تقسیم کردیا اور جب لوگوں نے موسیٰ سے پانی مانگاتو ہم نے وحی کی کہ اپنی لائمی (ایک خاص) چٹان پر مارو چنانچہ بارہ چنسے بھوٹ پڑے اور ہر جماعت نے اپنی اپنی جگہ بانی کی معلوم کرلی اور ہم نے بنی اسرائیل پر بادل کا مایہ کردیا تھا اور ااک کی غذا کے لئے من من من اسرائیل پر بادل کا مایہ کردیا تھا اور ااک کی غذا کے لئے من من اور من من من کہا تھا یہ پ ندیدہ غذا کھاؤجو ہم نے عطا کی ہے داول فقنہ وفساد میں نہ پڑو) اُمنوں نے نافر مانی کر کے ہمارا تو کچے نہ مبکا ڈاخود اینے ہاتھوں اپنا ہی مقصان کرتے رہے۔

لِبَنِينَ أَسُرًا بِيلَ قَدُا نُجَيْنَكُمُ مِنْ عَدُوكُمُ اوْلااتِ مَضَّاكُ

اے بنی اسرائیل ہیں نے تمہارے وسمن سے تم کو سجات دمی اورتم سے دبرمتوں اور کامرانیوں) کا وعدہ کیا جو کو ہ طور کے دہنی جا ب : طبوریس آیا تفا، تمہارے گئے صحرا نے سینا میں من وسلوئی مہیا کیا۔ تہیں کہا گیا یہ پاک غذامہیا کر دی گئی ہے شوق سے کھا وُد مگراسس بارے میں نا فرمانی نہ کرو ہے تومیراغضب نازل ہوجائے گا اور جس پرمیراغضب نازل سوانو و ه بس کلاکت بین گراا ور بینک میں بڑا ہی بخشنے والا ہوں جو کوئی تو ہرکرے اور ایمان لائے اور نیک عمل کرے اور سیھی را ہ پر قائم رہے !" د علامہ عبدالو یاب بخار نے اپنی کتا بینے صص الانبیار ہیں لکھاہے کہ یانی کے و چینے جن کا ذکر سبی اسرائیل کے واقعات بیں آیا ہے۔ بجراحمر کے مشر تی بیا بان ہیں نہرسوئز سے زیادہ وورنہیں ہیں اور ابھی عُمیون موسیٰ " دموسیٰ سے جینے ، سے نام مے شہور ہیں۔ ان چیموں کا پانی اب بہت کچھ سو کھ گیا ہے اور بعض کے تو آنار بھی قریب قریب معدوم ہو گئے ہیں اور تمہیں مہیں ان حثیبوں پر اب تھجور کے باغات نظر آتے ہیں) والتعزام -وَإِذْ قُلْتُكُو لِمُوسَىٰ لَنُ نَصْبِرَ عَلَا ظَعَامِر وَ احِدٍ فَادْعُ تَنَا رَبَلِكَ يُخْدِجُ لَنَا مِسْتَا تُنْبِثُ الْأَكْنُ صُ مِنْ بَقْلِمَا وَقِتَّا بِهَا

وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ١٠٤ ربقره آيت علا) اورجب تن نے کہا اے موسیٰ ہم اب ایک قسم کے کھانے پر ہرگز صرنہیں کریں سے بیں اپنے پرور دھ کارہے سمارے کئے دُعاکر وکدوہ زمین سے ہمارے گئے سبزی محکمری الہسن مسور اور بیاز رحبیبی چیزی ا الاے ورسی نے کہاکیا تم مبتراور عمدہ چیزے بدلے میں گھٹیا چینز محضوا مشمند مو وكسى مشهر مين جاكر قيام كرو بالشبه وبال يدسب چيزىي ىل جائيس گى -

كو وطور اوراعتكاف حضرت موسى عليه استلام سے الله إلى كاوعده

ہایت کے چراغ مبلدا وّل

متفاکه جب بنی اسرائیل فرعون کی غلامی سے آزا دہوجائیں گے تو انھیں ایک تقل کتا^ب وشریعیت دسی جائیگی.

کے لئے شریعیت عطاکی جائے۔

اس کے گئے حضرت موسی علیہ است است کام کو ہے حضرت موسیٰ علیہ است الم کو ہائیں دن کا اعتداف پور اکرنا طے کیا گیا تاکہ چالیس دن روزے رکھ کرشب وروزعباد وریافت کرکے الٹرتعا کے کے اُس کلام کو اخذ کرنے کی اپنے میں استعدا دیپدا کریں جو اُن پر نازل ہونے والامقا۔ دراصل اس اعتکاف کی مدّت صرف تیس دن محق بعب میں دن اور بڑھا کرجالیس دن کر دیئے گئے۔

علامہ دلمی^ج نے حضرت ابن عباس شے سے ایک روایت نمقل کی ہے دلیکن دلمی^{م م}

محققین کی نظرمی مجروح ہیں)

" جس کا خلاصہ یہ ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ایک اوکا اعتکاف حب جمکلامی کی اور کھوں نے الٹر تعالے سے ہمکلامی کی فکر میں مسواک کیا چونکم سلسل مکیاہ روز دں کی حالت میں گزرگیا تھا اس لئے منھ میں بؤمحسوس کرتے مقے ۔ لہذا اُنھوں نے یہ لیے انھوں نے کے انھوں نے کہ اس کے لئے انھوں نے اس مالت میں ہمکلام ہوں ،اسکے لئے انھوں نے ایک خوشہو دارگھاس کو چیا لیا اور کچھ کھانجی لیا۔

وی البی نے آگاہ کیا ، اے موسیٰ تم نے ہمکلامی سے پہلے روزہ کبوں افطار کر لیا ؟ حضرت موسیٰ علیہ استلام نے اسکی وجر بیان کی ، ادث د ہواکہ اس مدت کو دین ون بڑھاکر پورے چالیس ون کرلیا جائے ، کیا تہیں معلوم نہیں کہمادے ہاں دوزہ دار کے منھ کی مُوشک کی خوش ہوسے جی زیادہ وسے جی زیادہ وسے جی نے ایک خوش ہوسے جی زیادہ و عزیز سے " د تفسیر دوح المعانی جلد مقصص ہے

قرآن علیم نے صرف اسی مقدار پر اکتفاکیا ہے کہ یہ مُدت پہلے بین دن مقی اور بھر بڑھا کر چالین دن کردی تنی اس اضافہ می کوئی وجہ ند کورنہیں ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ است الم جب کو وطور پرجانے گے داپنے بھائی حضرت ہارون علیہ است الم موجوعمریں حضرت موسیٰ علیہ است الم سے بین سال بڑے بھے لیکن کا اِنبوت میں حضرت موسیٰ علیہ است الم سے بات الم سے بات سال مرح المحت اور مدوگار تھے اور حضرت ہارون علیہ است الم می نبوت موحضرت موسیٰ علیہ است الم نے اللہ تعالیٰ سے درخواست کرے ایپ وزیر کی حیثیت سے مانگا تھا اور اللہ نے انتھیں نبوت کے لئے نتیجب بھی فرما لیا نھا)

دیشیت سے مانگا تھا اور اللہ نے انتھیں نبوت کے لئے نتیجب بھی فرما لیا نھا)

ہمااہ کی بنی اسرائیل کو دا وحق پر قائم رکھیں اور اِن کی ہم طرح مگرائی کریں ۔

ہمااہ کی کا شرف بختا کیا کلام فرمایا ہ فرآن تھی اس کی تفصیل سے ساکت ہے ۔

حضرت موسیٰ علیہ است کام اس کلام کی لذّت وکیفیت سُرور سے شاوکام ہوکر مشاہدہ و دیدار ہم خواہم شمور از فرما!

مشاہدہ و دیدار ہمے خواہم شمند ہوئے عرض کیا الہی اپنی لذت ویدار سے سرفراز فرما!

جواب ملا اے موسیٰ ! تم ہمارے مشاہدہ کی تاب ندلاسکو گے ۔ البتہ ہم اپنی دات کی بجی کا ظہور اس بہاڑ پر کریں سے آگر یہ بہاڑ اس بجلی کو برداشت کرگیا تو بھرتم یہ وال کرنا ؟

اسے بعد طور پر ذاتِ حق کی تجل نے طہور کیا تو بہاڑکا وہ حصہ معاً ریزہ رہوگیا اور حضرت موسیٰ علیہ الت لام مجی اس نظارہ کی تاب نہ لاکر ہے ہوش ہو گئے اور گرپڑے ۔ جب ہوش آیا تو الٹرعز وجل کی حمدو ثنائی اور اپنے سوال پر نا دم ہوئے اور اقرار سمیا کہ بیں ایمان لا تا ہوں کہ تو دیچھے جانے سے مبہت بالا وبر ترہے ۔ قرآن محیم کی آیات ذیل اسی واقعہ سے متعلق ہیں ۔

> مضمون بعَشْرُ نَتَعَرِينَ كَامُوْسَى ثَلْثِينَ لَيْكَتَّ وَآتُمَنُنَاهَا بِعَشْرُ نَتَعَرِينَ كَامُوسَى ثَلْثِينَ لَيْكَتَّ وَآتُمَمُنَاهَا بِعَشْرُ نَتَعَرِينَ كَامُوسَى ثَلْثِينَ لَيْكَتَّ وَإِنْهَ الْرَبِعِينَ لَيْكَتَّ الْح

(اعراف آیات متلا تا متیما)

اورہم نے موسیٰ سے بیس راتوں کا وعدہ کیا دکہ کوہ طور پرآگر اعتکا ف کریں ، اور مزید دینل راتوں کو اِن تیس راتوں کا تتمہ بہنا دیا اس طرح اُن کے پرور دگار کا (مقرر کیا ہوا) وقت (سب مکئر) پوری چاہیے۔ راتیں ہوگیا اور موسیٰ دعلیہ الت لام) نے (چلتے وقت) اپنے بھائی ہارون سے کہہ دیا تھا کہ میرے پیچھے تم میری قوم میں میری جانشینی کرنا اور اصلاح کرتے رہنا اور مگاڑ پیدا کرنے والوں کے طریقے پر نہ چلنا ۔

جب موسی ہمارے مقرد کردہ وفت پرآئے اوراُس کے رب نے اس سے کطف وعایت کا کلام کیا توموسی نے النجاکی اے میرے پروروگار اپنا ویدار مجھ کو دکھلا دیجے کریں آپ کو ایک نظر دیچے لوں النٹرنے فرمایا ہم مجھکو ہرگز نہیں دیجھ سکتے۔ البتہ ذراسا منے سے پہاڑکی طرف دیچھواگر وہ اپنی جگہ قائم رہ جائے تب تو مجھے دیکھ سکو گے میمرجب اُ سکے رب نے پہاڑ برتجتی کی تو اُسے دیزہ ریزہ کر دیاا درموسی سے ہوش ہوکر گریٹے ہوت ہوں اور سب سے پہلے ہیں اس پر مقین میں کر ایموں اور سب سے پہلے ہیں اس پر مقین کر ایموں ا

مرول تورات کی تختیا اس گفتگو کے بعد حضرت موسی علیہ است ام کو تورات کی تختیا عنایت کی گئیں اور تاکید کی گئی کہ اس کتاب کو مضبوطی ہے تقام لواور اسکے احکام کو قائم کرواور قوم کو بھی اسپر عمل کرنی تلقین کرو ۔ ہیں نے اس کتاب ہیں وینی و ذبیوی فلاح کی تفصیل بیان کردی ہے۔ ملال وحرام ، جیروسٹ ر ، امرونہی کو کھول کھول کر بیان کر دیا ہے۔

اس مقام پر واو باتیں قابلِ توجہ ہیں :۔

۱۱) علما ہِ النسلام سمجتے ہیں کہ اس واقعہ بیں جن احکام کا نزول ہواو 'ہ کتاب تورات' ہے جو شختیوں ربکھتی ہوئی تضیں ۔

۳۵) علمارنصاری آبک جماعت کاا دعاہے کہ اس سے مراد وہ احکام عشرہ " بیں جو نہ ہب موسوی کی تشریعیت یا احکام عہد کے نام سے موسوم ہیں بعنی خدا کے سوا محسی کونہ پوجنا، زنانہ کرنا، چوری نہ کرنا وغیرہ وغیرہ ۔ ہایت سے چراغ ہے ۔ میں مشرقہ میا

' تیکن قرآن کیم اور تورات سے بعض قدیم نسخوں سے جبکی نشان دہی شیخ جمت التگر کیرانوئ نے اپنی سنٹ ہمرہ آفاق کتاب اظہار الحق" میں درج کی ہے ۔ احکام سے مراد سمتابِ تورات ہم لی گئی ہے۔ قرآن تحیم میں نزول احکام سے نذکر سے میں اسکو کتاب اور

فرقان کے الفاظ سے یا دکیا گیا جو کتاب کی صفات ہیں۔ ان حوالوں سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کو کمور برجو الواح د تختیاں ، دی گئیں وہ تورات کی تختیاں تضیں اَحکام عشرہ یا احکام عہد نہیں تحقیں ، انہی تختیوں میں جہاں احکام ومواعظ مقے وہاں ایک بیشگوئی مجمی موجود ہے۔ بتیا دیں بیکٹی دائر الفالیسیفین ، داعرات آیت ، ہے ا

عنقريب مين تم كو نا فرمانوں كا تھرد كھا وُل گا۔

دا) اس وارہے مراد کون سامقام ہے ؟ اہل علم نے مختلف نام مکھے ہیں۔ (۱) بعض نے کہا اس دارہے عاد ونمود کے تھنڈر مراد ہیںجبکو دیجھ کرعبرت

ونصيحت لي جاسڪے۔

و بیک بابعض نے شہر مصر مراد لیاہے کہ بنی اسرائیل نکالے جانے سے بعد دو بارہ اسمیں عزت کے سابخہ واخل ہوں گئے۔

رس امام تفسیرقتا و گئتے ہیں کہ اس سے ملک شام کی مقدس سرز ہین مراد ہج جہاں اُس زمانے ہیں قوم عمالقہ کے ظالم وجا بر بادشا ہوں کی حکومت بھی اورجہاں ا ب بنی اسرائیل کو داخل ہونا تھا۔

میں داخل ہوسکتے ہیں جنانجہ ان لوگوں نے اُس کا مٹ بدہ کرکے حضرت موسیٰ علیالسّلام اور بنی اسرائیل کو تفصیلات سے آگاہ کیا۔اس طرح معدو دے جندا فراڈ کا ارض مقدس میں داخل ہوکر اسکو دیجہ آنا اور تھے رسب کو و بال سے حالات سے آگاہ کرناگویاسب کا دیجہ آنا میں داخل ہوکر اسکو دیجہ آنا اور تھے رسب کو و بال سے حالات سے آگاہ کرناگویاسب کا دیجہ آنا

مراوبوسكتا ہے۔ آیتِ مذکورہ میں اسی طرف اشارہ ہے۔ والتراعلم۔

سراد، وسائے بہ بہ در ہیں ہی سرت ہی رہا ہے۔ وسیر ہے۔ حضرت قیا دی گئے تول کے مقابلہ بیں پہلا قول اس لیئے ضعیف ہے کہ اسس واقعہ کے بعد بنی اسرائیل معمی قومی یا جماعتی حیثیت سے مصری واخل نہیں ہوئے۔

دوسرا قول مجی اس سے قابل اعتبار نہیں کہ اگرچینمود کے آٹار وادی سینا کے قریب صرور مقے مگر قوم عاد کے آٹار و کھنڈر توعرب کے مغربی حصہ ہیں واقع مقے جو وادمی سینا سے مہینوں کی راہ تھی تو ایسی کوئی وجہ جھ میں نہیں آئی کہ بنی اسرائیل کو صرف وان محو شدہ آٹار و کھنڈر ان و کھانے سے لئے بھیجا جا تا اور اس کے لئے الٹر کا وعدہ اس سنان سے ساتھ بیان ہوتا.

الکتنمیسرا قول بہ تھی ہے دار الفاسقین سے مرادجہنم ہے کا فروں سے لئے تہدیداً

بہرحال حضرت موسی علیہ الت لام کو تورات دی گئی اور ساتھ ہی یہ بھی فہائشس کردی گئی کہ ہمارا قانون یہ ہے کہ جب بسی قرم کو ہدایت پہنچ جاتی ہے اور اُسپر تُحبّت پوری ہوجا تی ہے بھی ور مسجھ سے کام نہیں لیتی گراہی اور باپ دا دائی بُری راہ ور م برہی قائم رہنے پراصرار کرتی ہے تو مجب ہم جھی اُس کو گمراہی میں چھوڑ دیتے ہیں اور ہمارے پیغام حق میں اُن سے لئے کوئی حصہ باتی نہیں رہنا اس لئے کہ اُسفوں نے قبولِ حق کی استعداد اپنی بغاوت وسرحتی ہے زائل کردی۔ ان ساری تفصیلات کو قرآن صکیم نے اینے خاص ایدا نہیں اس طرح بیان کیا ہے :۔

قرا فی مضمول قال یکوسی این اصطفیت کے النّاس برسالیّے کرا فی مضمول ویکلامِی فک نُما انتیاک و کار مُن مِن الشّاکِوین ۱۶ کرون مین الشّاکِوین ۱۶ کرون مین الشّاکِوین ۱۶ کرون مین المثلا کار مین میں نے لوگوں پرتم کو اپنی پنیمبری اور بمکلامی فرمایا اے موسیٰ میں نے لوگوں پرتم کو اپنی پنیمبری اور جمکلامی

سے متا زکیا ہے ۔ تواب جو کچھ بیٹ نم کوعطا کیا ہے اُسکو لے لوا وریش کر کرنے والوں ہیں ہو مائے۔

اورہم نے اس کے لئے تورات کی شختیوں پر ہر قسم کی تھیت اور (احکام ہیں سے) ہرشی کی تفصیل لکھ دی ہے۔ لہٰذا اسکومضبوطی کے ساتھ تھام لواور اپنی قوم کو حکم دو کہ اسکے اچھے احکام کولازم کرلیں۔ عنقریب ہیں تم لوگوں کو نا فرمانی کامقام دکھی دوں گا۔

میں اپنی نشا نبول سے اُن لوگوں کو برگشتہ ہی رکھوں گاجو روسئے زمین پر نکبر کرتے ہیں بغیرسی حق کے اور اگر بیمادی نشانیاں بھی دیکے لیں جب بھی ان پرائیان نہ لائیں گے اور اگر بیمادی نشانیاں بھی دیکے لیں جب بھی ان پرائیان نہ لائیں گے اور اگر برایک است ذکھے بائیں تو اُسے اینا راستہ بنالیں۔ یہ سا دی شامت اس سبب سے ہے کہ اُمضوں نے ہماری نشا نبوں کو جھٹلا یا اور اُن کی طرف سبب سے کے کہ اُمضوں نے ہماری نشا نبوں کو جھٹلا یا اور اُن کی طرف سبب سے کے کہ اُم فوں نے ہماری نشا نبوں کو جھٹلا یا اور اُن کی طرف سبب سے کے کہ اُن کی طرف

اورجن لوگوں نے ہماری نشانبوں اور آخرت کے پیش آنے کو حبشلا یا اُن کے اعمال اکارت گئے اور اُن کو بدلہ اُسی کا ملے گاجو کچھ کہ وہ کرتے رہے ہیں ؟'

وَإِذْ وَاعَدُ ثَامُوْسَىٰ آرْبَعِينَ لَيْكَتَّ شُعَّاتَعَ لَكُنَّ الْعَبْلَ

مِنُ بَعْدِع دَا نُتُمُ ظِلِمُونَ ١٠٤ ربقره آيات عله تايته)

اُوروہ وقت یا دکر وجب ہم نے موسیٰ سے چالیس راتوں کا وعدہ کر لیا تھا مجرتم نے اُن کے چیچے کو سالہ کو اختیا دکر لیا اورتم سخت کا اللہ عظم کے دامراد بچھڑے کی پوجا پاٹ ہے) مجربم نے ہم کو اسکے بعد می معان کر دیا کہ شاید تم شکر گزاد بن جائو۔

اور وه وقت یا دکر و جبکهم نے موسیٰ کو کتاب اور معجزه ویا

تاكه تم راه ياب موجاؤي

وَلَقَلُ النَّيْنَامُوْسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مِنَ آهُلَكُ اللَّهُ الْفَكُ الْكُلُبُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلَّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلَّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلَّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ الْمُعَلِينَامِ وَهُدًى وَدَحْمَتُ اللّهُ وَمُعْلَمُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

يَتَنَ كُرُونَ . رقص آيت علا)

اور بنیک ہم نے پہلی قوموں کو ہلاک کرنے سے بعد موسیٰ کوکتاب دی جولوگوں کے لئے بصیر میں مہیا کرنے والی اور ہدایت ورحمت ہے تاکہ وہ نصبیت مصل کرلیں ۔

مصنوعی خرا کی ذہنی وفکری علیہ استلام کی تعلیم و تربیت میں رہنے والی قوم کے دائیر مزید ایک اور شہادت جو تعجب خیز ہی نہیں افسو سناک وعبرت ناک مجی سے دائیم ہوتی ہے۔

کوه طور پرجب حضرت موسیٰ علیه الت لام اپنے پر ور دگار کی طلب پر مقیم تھے نیچے وا دی میں بنی اسرائیل نے سامری کی قیادت میں خود ہی ایپ امعبود نمتخب کر سے اسکی برستش سٹروع کر دی ۔

واقعہ کی تفصیل یہ ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام کوہ طور پر تورات کے لینے کے لئے تشرلین لیے جانے گئے تو اپنی قوم بنی اسرائیل سے فرما یا مقاکہ لوگومبری اعتقا کُ مَّدت بَیْنِ یوم ہے جتم مَدّت پر ہیں تمہارے پاس پہنچ جاؤں گا۔ ہارون علیہ الت لام تمہار نے گراں زہیں گئے انٹی بیروئ کرنا اور ان کو اینا امیر جانبا۔

ملدا ول

آ ثار بیدا ہو گئے اور وہ بھائیں بھائیں کی آ واز کرنے لگا۔اب سامری نے بنی اسرائیس سے کہا کوموسیٰ علیہاںسلام سے علطی اور بھول ہوگئی کہ وہ الٹر کی تلامن بیں کوہ طور پر سھنے ہیں تمہارامعبود تو بہموجود ہے۔

گزسشة واقعات سے یہ اچھی طرح معلوم ہوچکا ہے کہ صدیوں تک مصدر کی غلامی نے بنی اسرائیل ہیں مشر کا نہ دسوم اور عقائد کو محبوب بنا دیا تھا اور وہ اس ماحول ہیں کا فی حد تک متا نثر ہو چکے ہتنے اور گوس لہ پہتی جو قوم مصر کا قدیم عقیدہ تھا اور اُ نکے میں کا فی حد تک متا نثر ہو چکے ہتنے اور گوس لہ پہتی جو قوم مصر کا قدیم عقیدہ تھا اور اُ نکے ایک بڑے دیو تا گئورس "کا مُنہ کم مُنہ کی گائے گئی کا کہ تھا اور وہ یہ عقیدہ رکھتے ہے کھی کر کہ زمین گائے سے سر پر قائم ہے۔

گائے کی شکل کا تھا اور وہ یہ عقیدہ رکھتے سے کھی کر کہ زمین گائے سے سر پر قائم ہے۔
سامری نے جب بنی اسرائیل کو ترغیب دی کہ وہ اسکے بنا کے ہوئے گو سالہ

معتمری سے جب کی اسرا میں تو ترقیب دی کہ وہ استے بہائے ہوئے کوسالہ سحوا پنامعبودیمجیں اور اسکی پوجا کریں تو انھوں نے بغیریسی تر د د اسکو قبول کر لیا۔

حضرت ہارون علیہ الت لام نے یہ دیکھا تو قوم کوسمجھا یا کہ ایسا نگرو یہ تو گھراہی کا راستہ ہے گرانموں نے حضرت ہارون علیہ الت لام کی بات نہ مانی اور کہنے گئے کہ جبتاک موسیٰ نہ آجائیں ہم اس سے باز آنے والے نہیں ۔ نوبت جب یہاں تک بہنچی نوالٹر تعالیٰ کی مصلحت کا مقاصہ ہوا کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کواس وا قعری اطلاع دے دی جائے اس لئے حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے پوچھا، موسیٰ تم نے قوم کوچھوڑ کر یہاں آنے ہیں اسقدر عبلت کیوں کی ؟

حضرت موسیٰ علیہ السلام نے عرض کیا خدایا! اس لئے کہ آپ سے پاس آکر قوم کے لئے ہدایت حاصل کرسکوں .

الٹرتعالے نے اسمیں بتایا کہ جب ہدایت کے لئے تم اس قدر مضطرب ہو وہ تواس گراہی ہیں بتلا ہیں حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے بیمنا توان کوسخت رنج وصدمہ ہوا اور مدامت کے ساتھ توم کی طرف و الیس ہوئے اور قوم سے یوں مخاطب ہوئے :۔ اے قوم تم نے یہ کیا کہا ؟ مجد سے الیسی کون سی تاخیر ہوگئی تھی جو تم نے یہ آفت بر پاکی ؟ یہ فرماتے ہوئے فیض و غضب ہیں کانپ رہے تھے حتی کو ہاتھ سے تو دات کی الواح بھی گرگئیں۔ ہوئے فیض و غضب ہیں کانپ رہے تھے حتی کو ہاتھ سے تو دات کی الواح بھی گرگئیں۔ بنی اسرائیل نے کہا کہ ہمارا کوئی قصور نہیں ،مصر یوں سے زیورات کا جو بوجہ ہم ساتھ لئے بھر رہے ہتھے وہ سامری نے ہم سے مابک لیا اور اس طرح ہم کو بتلا کیا۔

توم کا پیشرک ایک نا قابل برداشت جرم تھا۔ خاص کرمنصب نبوت کے لئے ایک چیلنج کی حیثیت رکھا تھیا۔ علاوہ ازیں حضرت موسی علیہ السلام و لیسے بھی الشکر فی امرالٹر کا مزاج رکھتے تھے۔ بھائی ہارون علیہ السلام کی گردن پکڑی اورداڑھی کی جا ہاتھ بڑھا یا حضرت ہارون نے فرما یا برا درمیری اسمیں کوئی خطانمہیں ہے۔ بیں فرانہیں ہر چیز سمجھا یا گرامضوں نے کسی طرح نہ ہا نا اور اصرار کرنے لگے کہ جب تک موسی نہ آجائیں ہم تمہادی بات سُنے والے نہیں بلکہ اُمضوں نے مجھوکو محزور پاکرمیرے قتل کا ادادہ کرلیا مقا جب میں نے یہ حالت و بھی توخیال کیا کہ اب اگران سے لڑائی کی جائے اور اسکے بعد موسنین کاملین اور اُن میں جھڑا ہر پا ہو تو کہیں مجھ پریہ الزام نہ لگا باجا کے کرمیری چیھے بعد موسنین کاملین اور اُن میں جھڑا ہر پا ہو تو کہیں مجھ پریہ الزام نہ لگا باجا کے کرمیری چیھے اور نہ میری داڑھی پر ہا تھ چیلا سے اس طرح دوسروں کو سنسے کا موقعہ ملے گا۔ اور نہ میری داڑھی پر ہا تھ چیلا سے اس طرح دوسروں کو سنسے کا موقعہ ملے گا۔ اور نہ میری داڑھی پر ہا تھ چیلا سے اس طرح دوسروں کو سنسے کا موقعہ ملے گا۔ اور نہ میری داڑھی پر ہا تھ چیلا سے اس طرح دوسروں کو سنسے کا موقعہ ملے گا۔ حضرت ہارون علیہ الت لام کی میں عقول بات سنگر حضرت موسی علیہ السلام کی میں عقول بات سنگر حضرت موسی علیہ السلام کا حضرت ہارون علیہ الت لام کا میں میں عقول بات سنگر حضرت میری علیہ السلام کا میں موسلے کیا دوسروں کی میں عقول بات سنگر حضرت موسی علیہ است لام کا

حضرتِ ہارون علیہ اتسالام کی بیمعقول اِتسنگر حضرتِ موسی علیہ السسالام کا غصتہ فرومہوا ،اسکے بعد سامری کی جانب منوجہ ہوئے اور پوجھا :-اے سامری تونے یہ کیا وصوبیک میا یاہیے ؟

اسے تامری دیا ہیں ہے ایک السی بات دیجھی جو ان اسرائیلیوں ہیں ہے کسی نے ہیں اور کھی جو ان اسرائیلیوں ہیں ہے کسی نے ہیں دیجھی جو ان اسرائیلیوں ہیں ہے کسی نے ہیں دیجھی معنی ابعنی غرق فرعون کے وقت جرئیل علیہ الت الام کو ہیں نے گھوڑ ہے پرسوار دیجھا متھا اور ان کا گھوڑ اجس جیچہ بھی قدم رکھتا تھا اس حصد فعاک میں حیات وزند ٹی ہے آٹا ر پیدا ہو جاتے متھے اور خشک زمین پر سبزہ آگ آ ما متھا تو ہیں نے اس خاک کی ایک مستھی جھر لی پیدا ہو جات کے میں دوال دیا۔ معاً اسمیں زندگی پیدا ہوگئی اور وہ مجاں مجال محتی اور جو میکھاں مجال

کرنے لگا۔
حضرت موسیٰ علیہ التلام جو کہ اس وقت حالتِ مل میں سمتے ورنہ معلوم نہیں اس کا کیا حشرکر دیتے ؟ عتاب آمیز لہج میں فرما یا اب تیرے گئے دنیا میں بسزا تجویز کی کئی ہے کہ تو پاگلوں کی طرح مارا مارا پھرے گاا ورجب کوئی انسان تیرے قرب آئے تو اس سے معاسکتے ہوئے یہ سمجے گا، دیکھو مجھے ہا تھ نہ لگانا، پھراسکے بدن کو الیا ہا دیا گیا کہ مسی معبی انسان کے حقید نے سے ہلاکت خیز پمکلیٹ ہوجا تی متی ۔
مسی معبی انسان کے حقید نے سے ہلاکت خیز پمکلیٹ ہوجا تی متی ۔
فریا یا یہ تو تیرا دنیوی غذا ب ہے اور قیامت کے دین ایسے نافر پانوں کے گئے فریا یا یہ تو تیرا دنیوی غذا ب ہے اور قیامت کے دین ایسے نافر پانوں کے گئے

جو عذاب مقرر ہے وہ تیرے گئے وعدۃ الہٰی کی صورت میں پوراہونے والاہے اورجس سخوساله تو تو نے معبود بنایا کے اسکواگ بیں ڈال کرخاک کر دیا جا تے گا تاکہ مجھکوا ورنیرے اِن بیوتون پیروی کرنے والوں کومعلوم ہوجائے کہ ہمارے معبو داور فکدا کی قدر وقیمت

وه د وسرو ن پر توکیا کرم وعنایت کرتا خود اینے آپ کو مذبجا سکا۔ علاوہ ازیں دنیا وی زندگی ہیں اِن لوگوں کوجنہوں نے گوسالہ بیرستی می تھی یہ سزا ملی که اسخیں ارض مقدس د فلسطین) میں موت یک داخلہ نہ ہوسکا اور اُن کی تو بہ یہ قرار دی تحتی که ایک اندهیری رات میں ایک دوسرہے کونتل کریں . چنانچہ ایسے ہی ہوا تقریباً سنتر ہزار آ دمی مارے سکتے اور تورات کی روایت کے مطابق تین ہزار آ ومی مارے سکتے۔ جب نوبت بهان بک بینی توحضرت موسیٰ علیه السالام در گاهِ الهٰی ^ا سجده ریز ہو^{نے} اورعرض کیا بارالہااب اِن پررحم فرمااوران کی خطاؤں کو بخن دے ،حضرت موسیٰ علالہلام كى دُعا قَبول بونى اور الترفي قاتل ومقتول دونون كو بخش ديا-یہ ساری تنفاصیل قرآن پھیم کی آیات ذیل میں اس طرح موجود ہیں :۔

> قرآنى مضمون وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهٖ يُفَوْمِ اللَّهُ ظَلَبْ تَمِيْ بِا تِتَخَاذِكُمُ الْعِجُلَ فَتَنُونُو ٓ اللَّا بَاسِ لِمُكُمُ فَا تُتَلَّوْآ

> > الفسكمة الخ ربقره آيت المه ا

ا ورجب موسیٰ نے اپنی قوم ہے کہا اے قوم بلاشبہ تم نے گو سالہ بنانے میں اپنے نفس پر بڑا ظلم کیاہے۔ بیں اپنے خالق کی طرف رجوع کرو اور اپنی جانوں کو قربان کر و تنہارے پیدا کرنے والے کے نز دیک تمہارے حق میں میہی بہترہے بھروہ تم پر رجوع به رحمت ہوگا . بلاث وہ بڑارجمت والارجم کرنے والاہے.

وَ لَقَدُ جَاءً كُورِمُ وسِي إِلْكِيناتِ تُكَرَاتَكُ دُ تُكُر الْعِجْلَ مِنَ

بَعْدِهِ وَأَنْتُمُ ظَلِمُونَ ١٠ ﴿ رَبَعُوا يَتَ عَلِهِ ، عَلَا)

اور بیقینًا موسیٰ تمہارے پاس تھلے ہوئے نٹان کیکر آئے ،امیر

مجی تم نے اُن کے پیچھے بچھڑے کو اختیار کرلیا اور تم تو ظالم ہی لوگ تھے۔
اور وہ وقت بھی یاد کر وجب ہم نے تم سے قول وقرار لیا بھا
اور تمہارے او برکوہ طور کو اُٹھا دیا بھا کہ اسکومضبوطی کے سابھ بچڑو جو کچھ
ہم نے تمہیں دیا بھا اور غور سے سنو، تم نے کہا ہاں ہم نے سن لیا مگر ہم
نے مانا نہیں او راُن کے ولوں میں گوسالہ اُن کے کفر کے سبب پیوست
ہوگیا تھا، آپ کہہ دیجئے بری ہے وہ بات جس کا حکم تمہار اایمان تمہیں
دے رہا ہے اگر تم واقعی ایمان والے ہو "

وَاتَّخُنَ قَوْمُرُمُوسَى مِنْ بَعْدِ ﴾ مِنْ حُدِيِّمِ مُعَالَّا عَمْدًا لَكُولَيْ مِنْ حُدِيِّمِ مُعِجُلَّجَسَدًا لَكُولَا مِنْ مُعَالِمُ اللهِ وَاعْرَاتَ اعْدَاتًا عَمَالًا)

اور موسیٰ کی قوم نے اُن کے طور پر جانے کے بعد ایک بچیڑا اپنے زیور ول سے بنالبالین ایک جبم جس کے اندرایک آواز محتی کیا اُن کویہ تک نسموجھاکہ وہ نہ تو اُن سے بات کرسکتا تھا اور نہ انتھیں کوئی راہ بتلاسکتا تھا اسکو اُمھوں نے معبود بنالیا اور وہ بڑا ہی ظلم کرنے والے محقے .

اور حب وه نا دم موئے اور محسوس کیا کہ وہ تو بڑی گراہی میں بڑگئے تو بو کے اگر ہمارا پر در دگارہم پر رحم نہ کرے اور ہماری مغفرت فرکے تو ہم فرور نقصان والے ہوں گئے.

اورجب موسی رنج وغصے ہے بھرے ہوئے اپنی قوم کے پاسس واپس آئے تو ہوئے تم لوگوں نے میرے پیچھے بہت ہی بُری حرکت کی ،کیا تم نے اپنی روروگار کے حکم آنے سے پہلے ہی جلد بازی کر دی۔ اور تورات کی تحتیاں توایک طرف ڈال دیں اور اپنے بھائی کے سر کے بال پکڑکر گئے انھیں اپنی طرف گھسٹنے ، ہادون نے کہا اے میزے پیارے بھائی مجھے تو لوگوں نے بے حقیقت سمجھا اور قریب تھا کہ مجھے قتل ہی کرڈ الیس بیمومیرے اوپر شمنوں کو نہ نہنسوائیے اور مجھے آن ظالم لوگوں کے زُمرے میں داخل نہ کر لیمئے۔

موسیٰ نے کہاا ہے میرے پرورد کارمجھ سے اورمیر و بھانی

ہے درگزر فرما اور ہم دونوں کو اپنی رحمت خاص میں داخل فرما ہے اور تو سب مہر بانوں سے بڑھ کر مہر بان ہے۔

بیشک جن لوگوں نے بچھڑ کے کواپنامعبو د بنالیا ہے اُن پر اُن کے پرور دگار کی طرف سے غضب اور ذکت بہت جلد پڑے گی اسی و نیائی زندگی میں اور ہم تہمت گھڑنے والوں کوایسی ہی سنرا دیا کرتے ہیں۔

آورجن لوگوں نے گناہوں سے کام کئے مچراسکے بعد امھوں نے تو بہ کرلی اور ایما ن لے آئے تو بیٹیک تمہارا دب اسکے بعد ان کے حق میں بڑامغفرت والا بڑارجمت والاہے۔

اورجب موسیٰ کاغصتہ فردہوا تو انھوں نے شختیوں کوا تھالیا اور اُس نسخ توربیت ہیں ہرایت اور رحمت بھی اُن لوگوں کے لئے جواپنے یرور دگا رہے ڈرتے ہیں ''

وَمَا آَ نُجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يَاكُونُى فَالَ هُمُ أُولَاءِ عَلَى اَتَذِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ مَنِ قِيلِوَضِي الْحُرْضِي الْحُرْرِةِ الْمُعَامِدِي

(اور جب موسی طور پر حاصر ہوئے توہم نے پوچھا) اے موسیٰ کس بات نے تم کو جلدی کرنے پرا بھارا؟ اور تم قوم کو پیچھے چھوڑائے۔
موسیٰ نے عرض کیا وہ بس میرے پیچھے آئی رہے ہیں، میں جلائی
کر سے تیرے حضور آگیا، تاکہ اے میرے رب تو مجھ سے خوش ہوجائے۔
فرمایا احتجا سنوہم نے تمہارے پیچھے تمہاری قوم کو آز مائش میں ڈال دیا اور سامری نے اتحقیں کھراہ کرڈ الا موسیٰ سخت عصے اور دیخ کی حالت میں اپنی قوم کی طرف پلٹے ،کہا اے میری قوم کے لوگو اکیا تمہار کی مالت میں اپنی قوم کی طرف پلٹے ،کہا اے میری قوم کے لوگو اکیا تمہار برب نے تم سے اچھے وعد سے نہیں کئے تھے ؟ مجھ کیا ایسا ہوا کہ تم پر برب کاعضب ہی بربر می بدت ترزیکی دا اور تم یا و نہ رکھ سکے) یا تم اپنے رب کاعضب ہی اپنے او پر لاناچا سنے تھے کہ تم اپنے دیا ہم نے آپ سے وعدہ خلافی کی ؟
اپنے او پر لاناچا سنے تھے کہ تم نے میا ہم نے آپ سے وعدہ خلافی کی اپنے اس خواب دیا ہم نے آپ سے وعدہ خلافی کھوا ہے

ا فتیار میں نہیں کی نسکن معاملہ یہ ہمواکہ لوگوں کے زیورات کے بوجھ سے ہم کد سے تھے اور ہم نے بس اُن کو بھینک دیا تھا۔ بھراسی طرح سامری نے بھی کچھ ڈالا اور اُن کے لئے ایک بچھڑے کی ممورتی بناکر نکال لایا۔ جس میں سے بیل کی سی آواز نکلتی تھی ، لوگ میکار اُ بھے یہی ہے تمہا را فرا اور موسیٰ کا فکدا ، موسیٰ اسے بھول سکتے۔

کیا وہ دیکھتے نہ مقے کرنہ وہ ان کی بات کا جواب دیتا ہے اور نہ ان کے نمفع ونقصان کا کچھ اختیار رکھتا ہے۔ ہاروئن موسیٰ سکے آنے سے بہلے ہی اِن سے کہ چکے تھے کہ لوگو! تم اسکی وجہ سے فتنہ میں پڑگئے ہو تمہارا رب تورحمٰن ہے ہیں تم میری بیروی کرواورمی سے

ہات با نو۔

گرائھوں نے ہارون سے کہہ ویا کہ ہم تواسی کی پرتش کرتے رہیں سے جب کک کرموسی واپس نہ آجائے ؟ موسیٰ د نوم کو ڈا نٹنے کے بعد ہارون کی طرف سنوجہ ہو ہے) بولے اے ہارون تم نے جب دیجھاتھا کہ یہ گمراہ ہو گئے ہیں توکس چنر نے تم کورد کا کہ میرے پاس چلے آتے توکیا تم نے میں میرے مکم کی فلاف ورزی کی ۔

ارون نے جواب دیا اے میری ماں سے بیٹے میری واڑھی نہکڑ نہ میرے سرمے بال ، محصے اس بات کا ندلیث، تھاکہ تم آکریہ نہ کہوکہ تونے بنی اسرائیل میں محصوف ڈال دی اور میری بات کا پاس نہکیا۔

موسیٰ نے کہا اے سامری نیراکیا معاملے ہے ؟

مس نے جواب دیا میں نے وہ چیزدیمی ہے جوان لوگوں نے ہم میں ہے وہ چیزدیمی ہے جوان لوگوں نے ہم میں ہے وہ پیزدیمی ہے جوان لوگوں نے ہم میں ہے ہم سے ایک میں میں نے رسول سے نقش قدم سے ایک میں میں اور اسکو ڈوال دیا ، میرے نفس نے مجھے کچھ ایسا ہی سجھا یا ۔

موسیٰ نے کہا اجتمالہ جا اب زندگی بھر تھے یہی پیکارتے رہنا ہے کہ مجھے نہ مجھونا اور تیرے باز پُرس کا ایک وقت مقرر ہے جو تھ سے ہرگز نہ ملے گا اور دیجر اپنے اس فکرا کوجس پر توریجھا ہوا ہے اب ہم اسے

ضرور جلا دیں گے اور ریزہ ریزہ کرکے دریامیں بہا دیں گے۔ لوگو! تمها راخگدا توبس ایک ہی الٹدیے جس سے سواکونی معبودنہیں ہرچیز پر اس کاعلم حا وی ہے۔

محمانت اور بلاكث جب بني اسرائيل كاجُرم معان كردياً كميا اور توبه يحضمن میں مقتولین کوٹ ہدیکا درجه اورجو زندہ رہ سے انتخاصیں

معافی کا درجہ دے ویا گیا۔ا سکے بعد حضرت موسیٰ علیہ السّلام نے قوم سے النّد تعالیے کی وہ فہمائٹ تھی شنا دی کہ اس کتاب کومضبوطی سے تھام لوا ور اسلحے مطالبق عمل کرواسس ہیں تمهاری بدایت و فلاح سےطور وطریقے ہیں اب تمہارا فرض ہے کہ اس کتاب پر ایما ن لاؤاوراس سے احکام می تعمیل کر و ، بنی اسرائیل مبہرطال َ بنی اسرائیل ہی تھے سہنے لگے اے موسیٰ ہم کیسے بقین سویں کہ یہ اللہ کی کتاب ہے جہم اتنی بڑی بات صرف آپ سے کہنے سے کیسے قبول حریں ؟ اس کا مطلب یہ ہے کہ ہم بغیر دیکھے ایک بات می تصدیق کرلیں ؟ ہم اسپراسوقت بیک ایمان نہیں لائیں سے جب تک کہ الٹیر کو اپنی آنکھوں سے نہ دیکھ لیب اور اپنے كانوں سے يين ليس كريہمارى مخاب ہے اسپرايمان لاؤ؟

حضرت موسیٰ علیہ استیلام نے اتھیں سمجھایا کہ یہ ہے جاسوال سے ان آنکھو سے خدا کوکس نے دیکھا ہے جونم لوگ دیکھنا چاہتے ہو؟ یہ بڑی جرأت کی بات ہے اور

سخت گستاخی تھی۔

ليكن بني اسرائيل كالصرار بيستور قائم ربا مصرت موسى عليه التسلام نع جناب باری میں عرض کی الہٰی اس قوم پر رحم فرما ، اور اپنے کتاب پر مل کرنے کی انتخیں توفیق و ہے۔ حضرت موسی علیه السلام می وعا قبول بوئی وی آئی که قوم سے تنتیز دمه دارا فراد کا انتخاب كرلواورا مخين كوه طورير كے آؤہم اسى تصديق كرواديں سطحے۔ چنانچ حضرت موسی علیه است الم نے بنی اسر آئیل سے بارہ قبائل میں سے تنظر سرداروں کا انتخاب کیا اور ان سے عہد لیا کہ وہ والیس ا كرشهادت دي . قوم نے مجی اس انتخاب سے اتفاق كيا، اس طب رہے۔

حضرت موسی علیہ است لام نے تمام قبائل سے سنترسر داروں کو تین

نیا اورطور پر لے آئے کو وطور پر ایک سفید بادل نے حضرت موسیٰ علیہ السلام مو گھیرلیا اور الٹر تعالے سے ہمکلامی شروع ہوئی ، اِن سرداروں نے بھی الٹر تعالے اور حضرت موسیٰ علیہ السلام کا کلام شنا جب بات جتم ہوئی اور وہ سفید بادل دور ہوا تو اِن ضدی سرداروں این بہلا اصرار قائم رکھا کہ کیا معلوم کس کا کلام بھا ؟ ہم نے توصر و این بہلا اصرار قائم رکھا کہ کیا معلوم کس کا کلام بھا ؟ ہم نے توصر میں کا نوں سے شنا ، کلام کرنے والا تو ہمیں نظر نہیں آیا بھلا اے موسیٰ ہم کا نوں سے شنا ، کلام کرنے والا تو ہمیں نظر نہیں آیا بھلا اے موسیٰ ہم این قوم کوکس طرح سنتہا دت دیں کہ یہ کلام اللہ ہی کا تھا۔

ہذاہم اب بھی وہی کہتے ہیں کہ جب تک کہ التارکواپی آنکھو سے نہ دیکھ لیں ایمان نہیں لائیں گے۔اس احمقانہ اصرار پرغضب الہی ٹوٹ پڑا۔ایک ہیں تناک چیک وکڑک وزلز لے نے اُن کو پکڑلیا اور سب ہلاک ہوگئے۔جمہورعلم ارکامہی قول ہے کہ یہ لوگ حقیقتًا مرسکتے۔

(دوج المعانى)

حضرت موسیٰ علیہ التلام نے جب یہ حال دیجھا تو ہارگاہ الہٰی میں عاجزی کیسا تھ دُعا مانگی الہی آگر یہ چند بیوقوف بیوقو فی کزمیٹھیں تو کیا ہم سب کو ہلاک کردیا جائے گا۔اے النٹر اُنہسیں اپنی رحمت سے معاف فرما۔

التُّرتِعاكِ كُوحِشَرِت مُوسَىٰ عليه استلام كَى دُعا وبِكاربِندآ ئَى ان سب كو دوباره زندگی عطاكردی گئی اس طرح اِن لوگوں نے التُّرے كلام سے سامقدموت كا مزه بھی مجھا۔ اس واقعہ ئی خصیل قرآن بحیم ہیں اس طرح موجو د ہے :۔

> فرائى مضمون قرائى مضمون داعران آیات مفاتا ما المان آیات مفاتا ما المان آیات مفاتا مناها)

اورموسی نے اپنی قوم سے شکھرد کا انتخاب کیا ہمارے مقرر کئے ہوئے وقت کے لئے، مجرجب انتخاب کیا ہمارے مقرر کئے ہوئے وقت کے لئے، مجرجب انتخاب کی زلز لے نے آبکرٹا توموسی نے کہا اے میرے پروردگار اگر مجھے میہی منظور ہے تو تو نے اس کے قبل ہی اُنکو اور مجھکو ہلاک کر دیے گا جوہم میں اور مجھکو ہلاک کر دیے گا جوہم میں اس حرکت پر ہلاک کر دیے گا جوہم میں

ان چند ہے وقوفوں نے کی ہے ؟ یہ توبس تیری طرف سے آزمائش ہے ۔ اِن آزمائشوں سے جس کو تو چاہے محمراہی میں ڈوال دے اور جسکو چاہے ہرائیت پر قائم کر دے ، تو ہمارا کا رساز ہے ہماری مغفرت فرما اور ہم پر دحم فرما اور تو ہی بہترین مغفرت کرنے والاہے

اور ہمارے حق میں جلائی لازم کردے اس دنیا میں تھی اور آخرت میں ہم تو نیرے آگے تھے کہ ہیں ، النٹرنے فرمایا اپنا عذاب میں اُس پر واقع کرتا ہوں جسکے لئے چاہتا ہوں اور میری رحمت تو ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے سواسکو ان لوگوں کے لئے توضرور ہی لازم کردوں گاجو خوف فلار کھتے ہیں اور جو لوگ ہماری نشا نیوں پر ایسان در کھتے ہیں اور جو لوگ ہماری نشا نیوں پر ایسان در کھتے ہیں .

ربقرہ آیت ہ<u>ہ ہ</u> ، علاہ) اُورجب تم نے کہا اےموسیٰ ہم تجھ پر اُس وقت بک ہرگزایا نہیں لائیں گے جب بک کہ اللّٰر کو بے جاب اپنی آ مکھوں سے دیکھ زلیں' پس آ نکھوں دیکھتے تم کو مجل کی کڑک نے آپکڑا۔ بچھر ہم نے تم کوموت کے بعدز ندہ کیا تاکہ تم شکر گزار رہو'' ولا الغرض جب بہ شتر سردار د و بارہ زندگی پاکرقوم کی جانب والیں ہو کے اور قوم سے ماراقعة كہرشنايا اور تباياكہ موسىٰ عليہ الت لام جوكچه مجی كہتے ہيں وہ حق ہے اور بلاسٹيد وہ النّركے فرستاوہ ہيں اس آنكھوں وكھيں شہادت سے بعد اب كوئى گنجائش ہى نہمتی جوت سے بعد اب كوئى گنجائش ہى نہمتی جوت سے ما طاعت سے لئے ضروری ہوتی ،لیکن قوم کی کجروی برستور باقی رہمی اور قبول حق میں وہی معاند ارند رویدا ختریا اور حضرت موسیٰ علیہ الت لام کے ارث اوات پر توج نہ کی حضرت موسیٰ علیہ الت الم مے ارث اور تحق عل نہ کی حضرت موسیٰ علیہ الت الم کے ارث اور تحق عط مدد چاہی ، بارگا و الہٰی سے جواب و یا گیا کہ اب اِن نا فرانوں کے لئے ایک اور تحق عط مرتا ہوں اب اسی وربعہ سے یہ لوگ نورات کو قبول کرلیں گے ۔ چنا بخہ ایک ون زبر دست مرد وں اور جموں پر ہوتا ہے ۔ اس ہمیت ناک منظمیں آواز آئی ، کتاب تورات کو قبول کرلوا ور اسکومضبوطی سے عمل کے لئے تھام ہو۔ کرلوا ور اسکومضبوطی سے عمل کے لئے تھام ہو۔

اس عظیم الث ان نشانی کو دیجھ کرمارے بنی اسرائیل نے احکام کی عمیل کا وعدہ کیا اور اقرارکیا کہ یہ الٹری کتاب ہے اسی سے مطابق عمل کیا جائے گا۔ اسس اقرار کے بعد کو وطور سروں سے دور ہوا اور اپنی مجھے آبیٹھا، روایات میں ہے کہ ایک فرشتے نے الٹر کے محم سے ییمل انجام دیا۔

چند دن توبنی اسرائیل پر اس کا خون مسلّط ریامچیروسی بے را ہ روی عود کرآئی زیادہ عرصہ تک اس عہد پر قائم نہ رہ سکے اور تھیر ضلاف ورزی شروع کر دی۔ رفع طور کا یہ واقعہ قرآن حکیم میں آیات ذیل میں مختصر مگرنہایت صاف اور واضح

الفاظ میں موجو د سے :-

قرائى مضمون قرادُ أَخَدُ نَامِينَا قَكُمُ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطَّوْرَ الح دبقره آيت سَالِا)

اورجب ہم نے تم سے قول و قرار لیا اور ہم نے طور پہاڑ کو اٹھاکہ تہارے او پرمعتن کر دیا۔ قبول کر وجوکتاب کہ ہم نے تم کو دی ہے صنبوطی کے ساتھ اور یا در کھوجو احکام اسمیں ہیں ،جس سے توقع ہے کہ تم منتقی بن جادً۔ کھرتم اس قول و قرار کے بعد مجمی مچر گئے، سواگرتم کوگوں پرخدا تعالے کافضل ورقم نہ ہوتا تو ضرور تباہ ہوجاتے۔ وَاذْ نَتَقَنْا الْجَبُلَ فَوْقَتْهُمْ كَانَتْ ظُلَنْ وَظُنُوا الْتَهُمُ

وَاقِعْ بِيهِ مَم الْخِ رَاعِرَاتُ آيتُ عِلِيًّا)

وریم بیری اور وہ وقت بھی قابل ذکرہے جب ہم نے پہاڈ کو ان کے اور ان کو بھی گر حیبت کی طرح ان سے او برمعلق کر دیا اور ان کو بقین ہوگیا کہ اب انہر سرارا ورکہا کہ قبول کر وجو کتا بہم نے تم کو دی ہے مضبوطی کے ساتھ اوریا در کھوجو احکام اسمیں ہیں جن سے توقع ہے کہ تم متفی بن جائو''

ارش مقرس فیرس فیرس سے بیا سے جس مقام ہیں اس وقت بنی اسرائیل تھے یہ السطین سے اور اسلی مقارب اسلی مقارب اسلی سے باپ داد احصرت ابراہیم اور اسلی اور میقو علیہم ات اللہ سے اللہ تعالے کا وعدہ تھا کہ آب زمانہ بعد تمہاری اولاد کو بھر سے السار اس مقدس کا مالک بنا دیا جائے گا جو دوسروں سے قبضے میں چلاگیا تھا تاریخی روایات میں شہور بات میں ہے کہ ملک شام اور بیت المقدس پر عمالقہ قوم کا قبضہ تھا جو قوم عادی نسل سے تعلق رکھتے تھے بڑے بڑے ویل ول اور بہیبت ناک قدوقام تھے۔ والم میں کے لوگ محقے۔

فرعون سے بجات پانے اور کو ہے طور پر کتاب و شریعت ملنے کے بعد حضرت موسیٰ علیہ استلام کو حکم ملاکہ اپنی قوم کو لے کر بہت المقدس فتح کر بیں اور اس کے لئے ارض مقد^س برجہاد کریں اور وہاں سے ظالم وجا برحکمرانوں کو نکال کرعدل وانصیاف قائم کریں الشرتعالٰ پرجہاد کریں اور وہاں سے ظالم وجا برحکمرانوں کو نکال کرعدل وانصیاف قائم کریں الشرتعالٰ نے حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے یہ مجمی وعدہ فرایا کہ فتح تمہاری ہوگی اور ظالم قیمن تحست

کیا جائیں گے۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام نے تعمیل کی میں اپنی قوم بنی اسرائیل کو نیکر ملک ثام کارُخ کیا جا نا تو بیت المقدس پر تھا جب نہر اُر ون سے پار بہو کرونیا کے قدیم ترین شہر آریجا پر بہو پنچ جسی خوشے الی اور سرمبزی ضرب المثل تھی۔ یہاں مچھ دن قبام کیا اور بنی اسرائیل سے بارہ سردا روں کو رجن کا ذکر گزشتہ آیات ہیں آچکا ہے) محاذ جنگ کی صورتِ حال اور

دشمن کی طاقت وقوت کا ندازہ لگانے آگے روانہ کیا جب یہ لوگ شہر کے قریب ہی پہنچے تنے کہ قوم عمالقہ کا ایک آ دمی اتھیں مل گیا اور وہ صرف اکیلا اِن بارہ کو گرفتار کر کے اپنے باوست و کے سامنے بیش کردیا کہ یہ لوگ جنگ کے ارا دے سے آئے ہیں ، بعضوں نے مشورہ دیاکہ انھیں قتل کر دیا جائے، بعض نے کہا انھیں جیل بھیج دیا جائے۔ آخریہ طے ہواکہ انتخیب قوم کی قوت وطاقت کامٹ اہدہ کرا کے آزا دکر دیا جائے تاکہ یہ اپنی قوم میں جا کرعمالقه کی نتان و شوکت کا وکر کریں تاکہ انتھیں مجھی جنگ کرنے کا خیال تک نہ آئے۔ چنالنجہ انحفیں آزا دکر دیا گیا۔ بیر ہا ہوکراپنی قوم بنی اسرائیل کے پاس مقام ؓ آریجا" پہنچے اور حضرت موسیٰ علیہ السلام سے اس عجیب وغریب قوم کی نا قابل قیاس قوت وشوکت کا دیر کیا۔ حضرت مُوسىٰ عليه الت لام كَا قلب تومطميّن تقاتميو بكه اتضين فتح كي ببشِگويّ مل حجي مقى نىكىن قوم پراً ندىشە بېواكە اگرامخىين تىفقىيلات معلوم بېوجائيں توہمت بإربيٹييں سے۔ اِن بارَّهٔ سرداروں کو ہدابت کی کہ یہ حالات پوشیدہ رکھے جائیں کسی پرنطا ہر نہ ہوں مگران میں سے دیش سرداروں نے اسکو فائش کر دیا صرف ڈٹوسردا رجن سے نام پوٹیع بن نون اور کا لب بن بوقنا عقے مُوسوی ہدایت برعمل کرتے ہوئے اس را زکومسی برنا ہرنہ کیا . بہرحال بنی سرائل یں جب پنغصیلات بھیل محتیں تو وہ رونے بیٹنے لگے اور سہنے لگے کہ احجاً تومیری تھا کہم مھی قوم فرعون کی طرح دریا میں ڈوب مرتے یا بھرمصر ہی میں غلام بنے بڑے رئیتے یہاں تو سوائے موت کے اور تحیا ہے ؟ مجلا ایسی بڑی قوت وطاقت سے تہیں مقا بایھی نہوسکتا ہے؟ بیٹ نکراُن وڑو بزرگوں نے جوالتہ تعالے سے سواکسی سے حوف نہیں کھاتے تخے نصیحت کے ہجہ میں کہا اے قوم دراہمت کر و چند قدم اُٹھاکر شہر کی طرف میلوالٹر کی مدد ونصرت آئے گی می قیناً تمہاری ہی فلتے ہوگی جوں ہی تم سیت المقدس سے دروازے پر داخل بو کے دشمن مجاگ کھڑا ہوگا. التربراعتماد کرو، کامیابی ہم کوہی ہوگی۔ تمربني اسرائيل جب اپنے بيغيمبري بات ماننے تو تيار نہ سکتے تو اِن دونوں بزرگوں كي بات كاكيا لحاظ د كھتے حضرت موسى عليه السلام كونهايت ذليل وشرمناك جواب ديا:-أكصموسي بس تم اورتمها رارب دونوں جاؤا ورلاو، تم يهاں

بيجفة بيء

حضرت موسیٰ علیہ انتسلام نے جب بیر بہو و ہ جواب مُنا تو بہت افسروہ خاطر ہوئے اور

مبلداوّل

انتیا نی رنج و ملال می حالت میں درگاہ الہٰی عرض کیا الہٰی میں اپنے اور ہارون کے سوا سی بر قابونہیں رکھتا سوہم دونوں حاضر ہیں اب توہمارے اور اِن نافر مانوں کے درمیا

بوجھ نہیں اب ہم نے اِن سے لئے یہ سنرانجویز کردنی ہے کہ یہ چالیس سال اسی میدان میں مصلتے مجری سے اور اِن کوان کے آبا و اجدا دے قدیم شہرارض مقدس ہیں جا نانصیب نه ہوگا۔ ہم نے اُنپرا رض مقدس حرام کر دیا ہے۔ جنانچہ اس صحرا نور وی کی شکل اس طرح سنروع ہونی ، بطورسزا امھیں جالیس سال تک ایک محدود علاقہ میں معصور ومقیّد ہونا پڑ ا، ظاہری طور پران سے اطراب سمو ٹی حصار نہ تھا نہ اُن کے ہاتھ پیرسسی قیدو بند میں جھڑے ہوئے تھے بلکہ بیسب تھلے میدان میں تھے اور اپنے وطن مصر کی طرف جانیٰ کے لئے ہرروزصبے سے ثنام تک سفر کرتے مگرت ام کو بھرو ہیں نظرا تے جہاں سے صبح کو چلے تھے۔ یہ اللّٰدی طرف سے عذاب تھا جو اُن پرمسلط ہوگیا تھا۔ نا قابل فہم طور پر بی سحرا نورٌ دنی سیسل چالیس سال تک جاری رہی نیکن انتھیں اس وا دی سے نکلنے اور آ شیخے وطن مصر پهنجیجه کن نحو نی تشکل پیدا به ہوئی .اسی دوران حضرت موسیٰ علیہ است لام اورحضرت ہارون علیہ الت لام کا انتقال تھی ہوگیا اور بیہ باپ کی اولا دکی طرح اس وادی تیب کہ میں حیران ویریٹ اُن مجھرتے رہے ۔ ان سے بعد النُّرتعالے نے دوسرے بینمیبران کی ہدایت سے لئے بھیجے۔

الٹیری سزاؤں سے لئے نہ پولسِ اور نہ اُن ہتھکڑیوں کی صرورت ہے جس سے قیدیوں کومقید کیاجا تا ہے۔ نہبل خانے کی مضبوط دیواروں اور آمنی دروازوں کی ضرور ہے جب و محسی کومحصور اور نظر بند کرنا چا ہتے ہیں تو تحقیے میدان میں بھی قید کرسکتے ہیں۔ وجہ اسی یہ ہے کہ ساری کا تنات اُس کی مخلوق اور محکوم ہے جب کا تنات کوکسی سے قید كرنے كا چىم ہوجا تا ہے تو بھراسكى سارى ہوا ، اور فضا ، زمين ومكان اسكے ليے جيل خانہ

بن جاتی ہے

چنانچہ پاپ ارامیدان جومصرا وربیت المقدس کے درمیان ہے جس کا طول وعرض حضرت مقاتل محي تفسير كے مطابق تيس فريخ لمبانی اور نو فرسخ چوڙا را رايک فرسخ *ج*لدا وَل

مدابت تح جراغ

سم وبیش تین میل کا فرار دیا جائے تو کل نو<u>ق</u>ے میل کا طول اورستا نیش میل سے عرض کا رقبہ ہوجا تاہے ، اور معض روایات مے مطابق صرف ۱۸× ۱۲ میل کا رقبہ تھا۔ اکٹر تعالے نے اس پوری قوم کوجی تعدا دحضرت مفاتل سے بیان کے مطابق حجد لا کھ نفوس پڑتم ل تھی مقید كر كے ركھ دیا۔ اس میدان کے اندر اس عرصہ میں اس قوم کے جوان اور بوڑھے فوت ہو گئے صحیح روایات سے مطابق اس چالیس سالہ دور میں 'بہلے حضرت بإرون علیہ التسلام كاانتقال بهوامچراسيح حجدياه بعدحضرت موسى عليه استلام تبعى وفات بالشخيز إن سحے بعید الترتعالے نے حضرت بوشع بن نون کوبنی اسرائیل کی ہدایت سے نئے بنی بناکر ما مورف رمایا۔ چالیس سالہ دورِ قیدختم ہونے سے بعد قوم سے نوجو انوں کولیکرحضرت بوشع علیہ السلام بیت المقد سی فتح سے بئے میں بڑے التہ تعالیے سے وعدہ سے مطابق ملک شام اِن سے ہاتھوں فننے ہواا درملک کی ناقابل قیاس دولت اِن کے اِتھ آئی۔

ا ہن تفسیرنے ایک بحت یہ بھی لکھا ہے کہ الٹر تعالے کسی کوجوتھی سنرا دیتے ہیں وہ انکو اعمال بدی ہم شکل ہوتی ہے ،اس نافر مان قوم نے حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے سوال پریہ

ستناخا نه جواب تفاء

إِنَّا هُمُ هَٰنَا قَاعِلُ وْنَ ﴿ رَبُّم تُومِينِ بَيْضِتُ بِينٍ } الشرتعالي نے اسمنیں جالبین سال يک ميہيں بٹھا دیا . معوذ بالشرمن غضبر وعقابہ۔ ارض مفدس كاتذكره آيات ذيل بين موجود - ب

قرآن مضمول وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِ، لِقَوْمِ اذْكُرُوْ انْعُمَةِ اللهِ عَكَيْكُمُ إِذْ جَعَلَ فِيكُمُ آنِبِيّاءً. الإرائدة آيات من المان)

اور و ہ وقت یا د کر وجب موسیٰ نے ابنی قوم سے کہا اے مبری قوم اللركاوه احمان تم ابنے اوپر یاد كروجب أس نے تمهار سے اندرنبی پیل سے اور تہدیں خو دمخار کیا اور تہیں وہ دیاجو دنیا ہیں تھی قوم کو تھی نہیں

اے میری قوم سے لوگو! اس زئین مفدس میں داخل ہوجا کو جے الترنے تہارے لئے لکھ دیا ہے اور چھلے بیروالیں نہونا ورسہ

بالكل مى خساره ميں يرماؤكتے۔

وہ بولے اے موسیٰ اُس ہرزمین پرتو بڑی زبر دست قوم آباد ہے،اورہم تو وہاں ہرگزنہ جائیں گے جب تک وہ وہاں سے تکل نہ جا ہیں البيته وه أكرو بإن سے تكل جائيں تو بلاست به واخل ہونے كو تبيار ہيں ۔ اس پروہ قوآ دمی جوالٹرسے ڈرنے والوں ہیں مضے اور اُن دونوں پر الٹٹر کافضل تھا بوہے تم اُن پرچڑھانی کرکے شہر سے در وازے یک توحلو، سوجس وقت تم دروازه میں قدم رکھوسے اسی وقت غالب آجاؤ کے اور التدسى برمجروسه رمحواكرتم ابمأن رتحقته موس و ہ لوگ بو ہے ا 'ے موسیٰ ہم سر کڑ وہاں بھی تھی نہ دخل ہو بگے جب یک که و ه لوگ و ہاں موجو د ہیں بسوآ پ خو دا ورآپ کا خدا چلاجا کے اور آپ دونوں لام بھرلیں ہم تو بہاں سے قلتے نہیں۔ موسیٰ نے عرض کی اے میرے پروردگار ہیں توسوائے اپنے اورا بنے بھائی ہارون سے سی اور پرافتیار نہیں رکھتا۔ لہذا توہی ہمارے اور اس ہے جم قوم سے درمیان فیصلہ کر دے۔ ارٹ د ہوااحیا تو و ہ ملک اُن برجالین سال سے بے حرام

کر دیاگیا. بہلوگ اسی زمین پر پھٹکتے بھریں گئے ۔سو آپ اس ہے پھم قوم پر درانجى غم نەسىجىئے۔

و بح القره بنی اسرائیل سے واقعات میں ذیج گائے کا واقعہ میں خاصی شہرت رکھتا ہے۔ قرآن مکیم نے اس واقعبہ کو تھی خصوصیت سے ساتھ بیان کیاہے اور اسکے نتائج ہے بھی آگاہ کیا ہے۔ یہ واقعہ غالبًا نزولِ تورات سے قبل کا ہے۔ بنی اسرائیل اپنی ہمایہ قوم سے جہاں عا دات واطوار میں مشکل ہو گئے تھے وہاں عبادات واعتقادات میں بھی کافی مدیک متا ترہو گئے تھے۔ قدیم زمانے سے مصریب گائے کی تقدیس اور اسکی پو جا حلی آر ہی تقی بنی اسرائیل کو تھی اس مرض کی چھوت لگ گئی تھی ابھو آیک واقعیہ میں كَا يَ وَ مِجَ كَدِنَ كَا يَكُمُ وِيا كَمَا جو در اصل إن سَے ایمان کا امتحان تھا کہ اگر وہ واقعی اب

الترکے سواکسی کومعبو دنہیں سمجھتے تو بیعقید ہ اختیار کرنے سے پہلے جس ثبت کومعبو د سمجھتے رہے ہیں اُس سے اپنے ہاتھ اُٹھالیں۔ یہ امنخان بڑاسخت تھا۔جن قلوب ہیں گائے پرستی موجو دهی وه اس کوکسی طرح تھی کرنے پر آیا وہ یہ تھے بسین التدکویہی منظور تھا کہ ایک وفعہ عملاً اس معبود بقری 'کوخور عابدوں نے ہاتھ ذبج ہونا دیکھے اورمومن کا فرسے ممت از ہوجائے اور معبود باطل کی ہے چارگی اور بے بسبی بھی عیاں ہوجائے۔

ملاعلی قاری نے مرقاۃ شرح مث کوہ میں اِس کا یہ وا قعہ لکھاہے کہ ایک خص نے کسی گھرسٹ وی کا پیام دیالیگن سنگھروالوں نے اسکوفبول نہ کیااٹ خضیطور پراسس روی کے باپ کونٹل کر دیا ،اسے بعد و ہ لایتہ ہوگیا ،آخر کارسٹ بہ کی تہمت نے بہت سے خانوا دوں میں باہمی اختلاف اور شعمی کی صورت اختیار گر لی بحنی طرح قانل کا بتہ یہ چلتا بھا قوم نے موسیٰ علیہ انسلام سے درخواست کی کہ اس نراع کامل تلاش کیا جائے وریہ قبائلی

جَنَّكُ كے چھڑجانے كا اندلیث ہے۔

حضرت موسی علیہ است لام نے بارگاہ اللی میں وعاکی اور مدوچا ہی التر تعالیٰ نے موسیٰ علیہ است اَم کی وما فبول فرمائی اور قائل کی نشان دہی کے لئے یہ نسخہ تجویز فرمایا، قوم سے کہا جلنے کہ ایک گائے ذبیج کی جائے اور اُسکے گوشت کے ایک حصے کومفتول کے جسم سے لگایاجائے،مقتول زندہ ہوکرا ہے قاتل کا نام ونشان بتلادے گا۔اس طرح یہ معیا ملہ

مسئله کامل بھی ضروری تھا اِ دھرگا نے کا ذبح کرنا دگویا اِ بنے معبود کو ذبح کرنا ہ مجمی بڑاسخت امتحان تھا، بنی اسرائیل نے اسکو گالنے کی کوشش کی اور بچے بھی شروع کر دی كرائے موسیٰ كياتم ہم سے نداق كر تے ہو ؟ قاتل كى نشان دہی سے گائے كو كيا تعلق ہے ؟ مجلايه مجى كونى طريقائ وحضرت موسى عليه استلام ني خيرخوا بى سے كها كەنعوذ باللرس مذاق یا جبوٹ کیوں کروں ۔ یہ توجا ہلوں کا طریقہ ہے ۔ جب بنی اسرائیل حضرت رسیٰ علیہ التلام کی صفائی ہے۔ جب بنی اسرائیل حضرت رسیٰ علیہ التلام کی صفائی ہے مطبئن ہوگئے تو پہ جینے گئے اجبا اگریہ واقعی النّد کا محم ہے تو یہ بنا یا جائے کہ وہ گائے کہیں ہو؟ اس کی عمر کیا ہو؟ کن کن صفات کی حامل ہو وغیرہ و اس کی عمر کیا ہو اس کی دو اس کی مرکبا ہو اس کی عمر کیا ہو اس کی عمر کیا ہو اس کی عمر کیا ہو اس کی دو اس کی دو اس کی مرکبا ہو اس کی عمر کیا ہو اس کی دو اس حضرت موسیٰ علیہ ابت لام ہرسوال کا جواب الند تعالیٰ سے معلوم کرسے بتلا یا کرتے تحقے آخر کارجب سب سوالات ضم ہو گئے اور حبلہ جو بی کا کو بی موقعہ باقی مذر ہاتو بادل ناخواہ

بدایت کے چراغ ملداوّل

گائے کو ذیج کیا اور گائے سے گوشت سے مقتول کی لاش پر ضرب لگانی گئی ، یک بیاب مقتول میں حرکت پیدا ہوئی اور وہ اُٹھ بیٹھا ، اپنے قائل کا نام ونشان بیان کرکے بھر فرھیر ہوگئیا۔ تاریخی روایت ہیں اس کا نام عامیل بیان کیا گیاہے اور اس کا قائل خود اس کا معتبد مقیا۔ اس طرح بیک کرشمہ ستا کا رہوئے :۔

أول التُدي قدرت كاايك نشان ظاهر بهوا.

وَوَم قاتل كانام ونشان ملا.

سوم گائے کی تقدلیں وعظمت پر بھی کاری ضرب لگی کہ اس نام نہا دمعبود کے پاس اگر کچھ بھی طاقت ہوتی تو اُسے ذبح کرنے سے ایک آفت ٹوٹ پڑتی ۔

اس واقعہ سے جہاں یہ نتائے ظاہر ہوئے وہاں اس سے ایک بڑی حقیقت کا بھی اظہار کیا گیا، وہ یہ کجس طرح اللہ تعالیٰ نے اُس مردے کو زندہ کر کے اپنی قدرت کا مظاہرہ کیا ہے، اسی طرح وہ فیامت کے دن بھی اسی طرح مُردوں کو دو بارہ زندگی عطا کر گیا۔

الغرض یہ واقعہ بھی اللہ تعالیٰ کی نت نیوں میں سے ایک عظیم نشان " کو بہی اسرائیں دقوم موسیٰ) کو جنی کر شرائیں دوسری قوم کے سامنے یہ مظاہرے کئے جاتے تو وہ ہمیشہ کے لئے اللہ تعالیٰ کی فرانب رواد وسری قوم کے سامنے یہ مظاہرے کئے جاتے تو وہ ہمیشہ کے لئے اللہ تعالیٰ کی فرانب رواد بین جاتی اور اُسکے ول میں ایک لمح کے لئے بھی نافرانی کا خطرہ نگر زیا لیکن ان سے ول بین می سوائے خیارہ اور نقصان کے کچھ باقی نہ رہا۔ قرآن چکیم نے فائدے ہیں گران کی زندگی میں سوائے خیارہ اور نقصان کے کچھ باقی نہ رہا۔ قرآن چکیم نے اس واقعہ کے بعد ان کے قلوب کی حالت کو اِن الفاظ سے تعبیر کیا ہے :۔

اسے بعد ان کے دل سخت ہوگئے گویا کہ وہ پتھر ہیں یا ہتمر سے سندیا دہ سخت، رکیونکہ) بعض بتھروں سے پانی نکل کرنہریں ہبتی ہیں اور کوئی

یتھر اِن بیں ایساتھی ہوتا ہے کہ بھٹ جاتا ہے اور اس بیں سے یانی تکلیا ہو، اور کوئی اِن بیں سے ایسا بھی ہوتا ہے کہ التّرکی ہیبت سے نیچے آگر تاہے '

اورجو کھے مجی تم کرتے ہوالٹراس سے بے خبرنہیں. (بقرہ آیت علا)

مطلب یہ ہے کہ بنی اشرائنیل کے قلوب کی شختی اور حق کے قبول کرنے میں ہے اثری کا یہ عالم ہے کہ اگر محاور ہ اور بول جال کے مطابق یوں کہا جائے کہ ان کا دل تھے۔ ہدایت کے چراغ

کی چٹان بن گیاہے تب بھی اُسکی شدت وصلابت کی سمجے تصویر نہیں بنتی اس کئے کہ پتھرا گرچینخت ترین ہے مگر ناکارہ نہیں کیونکہ ہم بہاڑوں کامشا ہدہ کرتے ہیں ان ہی سخت چٹانوں سے دریا بہہ رہے ہیں اور اُن سے شیر نیں وٹھنڈ سے یا بی کے چٹے جاری ہیں، اور اگر اِن پیہاڑوں میں کوئی زلزلہ آجائے یا الشرکی مشیت کا کوئی اور فیصلہ ہوجائے تو پہاڑوں کی طرح اُٹرکر سُرنگوں ہوجا تی ہیں۔ اور الشرکی خوف وخشیت کا زبان حال سے اعتراف کرتی ہیں، مگرقوم بنی اسرائیل پر منہ آیت اللہ کا ترہو تا ہے خوف وخشیت کا زبان حال سے اعتراف کرتی ہیں، مگرقوم بنی اسرائیل پر منہ آیت اللہ کی اور نہ نافر با نی کرتے وقت السرائیل پر منہ آیت اللہ کی اور نہ نافر با نی کرتے وقت السرائیل ہو اور اُن کی کرتے وقت السرائیل ہو اور اُن کرتے وقت السرائیل ہو اُن کی کرتے وقت السرائیل میں اُن کے دلوں برطاری ہوتا ہے۔

اُن کے دلوں پرطاری ہوتائے۔ اہل سنت کا ایک گروہ کہتا ہے کہ خشیتِ الہٰی کا یہ اثر پیقسروں میں اپنے حقیقی

ولفظی معنوں میں ہے۔

یعنی بعض بیتھروں میں گداز کا نجزر ہوتا ہے گوان کے مرتبۂ جما دیت سے مطابق سہی اور ان میں فہم و اور اک کی قوتیں ہوتی ہیں گوجری سطح سے مطابق ہی ۔ جیسے طور کہ آخر پہاڑہی نخالیکن عبل الہی سے وفت جلالتِ رّبانی سے چور جور ہوگیا۔ قرآن محکیم اس حقیقت کا اظہار کرتا ہے :۔

> تُسَيِّحُ لَدُالسَّنُوَاتِ السَّبُعُ وَالْكَرُضُ وَمَنُ فِيُوتَ وَلانُ مِّنُ شَكُمُ إِلَّا يُسَيِّحُ بِحَدْدِ فِي وَلَكِنُ لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيعُهُمْ. ولانُ مِنْ شَكُمُ إِلَّا يُسَيِّعُ بِحَدْدِ فِي وَلَكِنُ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيعُهُمْ.

"اسی پائی بیان کررہی ہیں ساتوں آسمان اور زبین اور وہ سب چیزیں جوائ کے درمیان ہیں اور کوئی چیزایسی نہیں جوائس کی سب چیزیں جوائن کے درمیان ہیں اور کوئی چیزایسی نہیں جوائس کی مدکے ساتھ تسبیج نہ کر رہی ہومگر تم اُن کی سبح نہیں سمجھتے ہو حقیقت بد ہے کہ وہ بڑا ہی بُرو بار درگزر کرنے والا ہے:"

زیج بقرہ کا یعجیب وغریب واقعہ قرآن مکیم نے اس طرح بیان کیا ہے۔

بالله آن آگون مِن آنج پہلین ۱۰ کو (بقرہ آبات عند تا عند)

اور وہ وقت یا دکر وجب موسیٰ نے اپنی توم سے کہا تمہیں اللہ مکم دیا ہے کہا تمہیں اللہ موسیٰ نے اپنی توم سے کہا تمہیں اللہ موسیٰ نے کہا اللہ مجھے اس سے پناہ میں رکھے کہ میں جا ہلوں میں ہو جا وُل۔
وہ بولے ہماری طرف سے اپنے پرور دگار سے درخواست وہ بوئے کہ وہ ہمیں بتا کے کہ وہ گائے کیسی ہو، موسیٰ نے کہا اللہ فرما آبہے کہ وہ گائے نہ بوڑھی ہوا ور نہیں بیا ہی بلکہ دونوں عمروں کے درمیان ہو، موسیٰ می درمیان ہو، موسیٰ کے درمیان ہوں کے درمیان ہور کے درمیان ہوں کے درمیان ہوں کے درمیان ہوں کے درمیان کے درمیان ک

وہ بوتے ہماری طرف سے اپنے پرور دگار سے درخواست کیجئے کہ د ہمبیں بنائے کہ اُس کا رنگ کیسا ہو؟ موسیٰ نے کہا السُّرفرما تاہے کہ و ہ گائے خوب گہرے زر د رنگ کی ہودیجھنے والوں کو بھی اچھی معلوم ہوتی ہویا

وہ بولے اپنے پرور دگارے ہماری طرف سے درخواست سیمئے کہ وہ ہمیں بتا ہے کہ وہ اورکسی ہو؟ اس لئے کہ گائے ہیں ہم سی اشتباہ پڑگیا ہے اورخدا نے جا ہاتوہم ضرور را ہ باجا ئیں گے۔
موسیٰ نے کہا الٹرتعالیٰ فرما ناہے کہ وہ گائے محنت کرنے والی نہوجوز مین کوجوتتی ہوا ور نہ کھیتی کو بانی دبتی ہو۔ سالم نہواس میں کوئی داغ دھتہ نہ ہو، وہ بولے اب آب بھیک بینہ لائے بھراُ محفوں نے اُسے نو بھی کہ دیا اور وہ گئے نہ سخے کہ ایساکریں گے۔
ز اور وہ گائے ایک ایسے نوجوان کی تھی جو اپنی ماں کی بہت خدمت کیا کرتا تھا اس سے وہ گائے خریدی گئی اتنے مال میں جتنا اس کی خدمت کیا کرتا تھا اس سے وہ گائے خریدی گئی اتنے مال میں جتنا اس کی کھال میں سونا آسکتا تھا ،

اور وہ وقت یادکر وجب تم نے ایک خص کوفتل کردیا تھا تھیرتم اس باب میں رونے حکار نے بگے دمیعنی ایک دوسرے پر الزام دینے لگے) اور الٹر نعالے کو فل میرکر نا تھا جو تم جھیا تے بچھے دیعنی قاتل کو فلا مرکز ناتھا) توہم نے کہاکہ اس میتت پر اس گائے کا کوئی فکڑا مارو، یوں ہی۔ التّدمردوں کوزندہ کرسے گا اور نم کو اپنی نشانیاں دکھا کے گا تاکہ نم عف ل سے کام لو۔

اسپر بھی تمہارے ول اسکے بعد سخت رہے۔ جنانچہ وہ پتھر جیے ہیں بلکہ ختی ہیں اس سے بھی بڑھکرا در پیھر نوکوئی ایسا بھی ہوتا ہے کہ التُّد کی خشیت سے نیچ آگر تاہے اور جو کچھ مھی تم کرتے ہوالتُّر اُس سے بے خبر نہیں ہے ''

مارون حضرت موسیٰ علیہ است لام کوجن مخالف طاقتوں سے سابقہ بڑا انہیں قارون کے ایک نقل رکوئے ہیں اس کا واقعہ کا نام بھی شہرت دکھتا ہے۔ قرآن مکیم نے ایک نقل رکوئے ہیں اس کا واقعہ بیان کیا ہے۔ اس قصتہ کا آغاز ہی اس نسبت سے کیا گیا کہ قارون حضرت موسیٰ علیہ السلام کی برا دری سے تعلق رکھتا تھا۔

حضرت ابن عباس کی ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ بیہ حضرت موسیٰ علالسلام کاحقیقی چیازا دیجانی متھا دخرطبی ،

روح المعانی نے محد بن اسحاق کی ایک روایت نقل کی ہے کہ قارون توریت کا عافظ اور عالم تقام تکرسامری کی طرح منافق ثابت ہوا، حضرت موسیٰ علیہ الت لام جن سَتُر افراد کو کلام الہی سُنانے کوہ طور پر ہے گئے بھتے اُن میں بیمجی شامل تھا۔ حس کامفصل واقعہ تحریث تہ اوراق میں آجیکا ہے۔

حضرت عطارت عطارت جوایت ہے کہ اسکو حضرت یوسف علیہ السلام کا ایک ظیم الثا کم انتخاب اللہ کا ایک ظیم الثا کم کون خزانہ لی گیا تھا جسی وجہ سے دولت کے انبار حاصل ہوگئے تھے اور وہ اپنے مال و دولت کے نشب میں دوسرول پر کلم وستم کیا کرتا تھا ، اسکو نز نے اتنے زیادہ تھے کہ ان کی کنجیاں اتنی تعدا دمیں تھیں کہ ایک طاقتور جماعت بھی اسکو اُسٹھائے تو بوجھ سے مجھک جائے ، اور ظاہر ہے قفل کی منجی ہمہت ملکے وزن کی ہوتی ہے جسکا اُسٹھا نا اور پاس رکھنا مشکل نہیں سکر کٹر ت عدد سے سبب اتنی ہوگئیں تھیں کہ ان کا وزن ایک طاقتور جائت کے لئے بھی معادی تھا۔

جلدا ول

بدايت تحيراغ

حضرت موسیٰ علیہ است لام اور اُن کی قوم نے ایک مرتبہ اسکونصیحت کی کہ اسٹر نے تھے بے شمار دولت وٹروت بخشی ہے۔لہذا اس کاسٹ کرا واکرا ور مال کاحق زکوۃ و صدقات دے کرغربار ومساکین کی مدد کر، جیسا کرانٹر تعالے نے بچھ پر اجسان کیا ہے تو میں لوگوں پر احسان کڑ، اپنا وہ حصّہ جو تو دنیا سے لیے جائے گا فراموسٹنس نکر (معنی صرف كفن، مُكِرُاسُكوبِيضيت بِندنة في نهايت مَنكبرانه لهجهيں جواب ويا بـ

"میری یہ دولت و ثروت اللّٰری عطاکر دہ نہیں ہے یہ تومیری

محنت وقابلیت ا ورعقل و مہنر کا نتیجہ ہے ۔ یہ کوئی فضل و کرم نہیں جو استحقاق سے بچائے احسان کے طور پر دیاجا تا ہو !

ا سحے باوجو دحضرت موسیٰ علیہ الت لام اسکو برا برنصیحت کرتے اور را ہے ہدایت کی تلقین ق رہے لیکن جب اس نے دیجھا کہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام اس طرح بازنہیں آتے تو اُن کو اور اُن کی قوم کو مرعوب کرنے سے لئے ایک دن بڑکے کر وفر کے نکلا حضرت ہوئی علیسلا بنی اسرائیل کے ایک مجمع میں پیغام الہی شنارے مقے کہ قارون ایک بڑی جماعت اور خاص ثان وشوکت اورخزانوں نی نماکش سے سائھ سامنے سے گزرا.

بنی اسرائیل نے جب فارون کی اس ثنان وشوکت کو دیکھا تواُن ہیں سے کچھ آ دمیوں سے د **یوں کو انسانی کمزوری کا بہجذبہ بے چپین کر**دیا ، ان کی زبانوں سے بیہ الفاظ نكل تَحَيِّهُ ،

" ہے کاش! یہ دولت وٹروت ، شان وشوکت ہم کو بھی

اسی وقت قوم سے بعض اہل علم افرا دنے مداخلت کی اور اِن سے کہا ، مخبروا رخبردارا اس دنیوی زیب وزینت پرید جاناا ورا سیج حرص میں نہ گرنا تم عنقریب دیچھو گئے کہ اس غرور ونخون کا کیا انجام ہونے والاہے. تمہارے کئے ایمان عمل صالح ہی بہترین ذخیرہ ہیں ؟ قارون کی اس ثنان وشوکت کا تذکرہ نبی کرمے ملی الٹرعلیہ و کم نے اس طرحے بیان کیا ہے:۔ بنی اسرائیل کاایک خص (قارون) اینے کیاس کی ثنان وش^{کت} سے ماتھ اکڑتا چلاجار ہاتھا اچانک زہبن میں دھنسا دیا گیا اور و و تیامت

تک اسی طرح دهنشاجائے گا۔ (بخاری)

ابن عباس کی ایک روایت ہے اسمے وحنسا کے جانے کی یہ کیفیت ملتی ہے :۔

ایک و فعہ قارون نے حضرت موسیٰ علیہ الت لام کو بدنام اور ذہیل کرنے کے لئے ایک بدکار عورت کو کثرت سے مال دیا اور اسکواس بات پرراسی کرلیا کہ وہ مجرے مجمع میں حضرت موسیٰ علیہ الت لام پر بدکاری کا الزام لگائے۔ اس بدکا رعورت نے ایسا ہی کیا جبکہ حضرت موسیٰ علیہ السالم کا الزام لگائے۔ اس بدکا رعورت نے ایسا ہی کیا جبکہ حضرت موسیٰ علیہ السالم ایک مجمع سے علیٰحدہ ہوئے دورکعت نماز پڑھی اس کے بعد اس عورت کی محمع سے علیٰحدہ ہوئے دورکعت نماز پڑھی اس کے بعد اس عورت کی طون متوجہ وئے اور فرمایا اے عورت تو اس بات پر اللہ کی قسم کی اور اللہ کی قسم کی اور اللہ کی قسم کی اور اللہ سے اور اللہ کی جا ہے کہ ایسی ہیں ہوگئ کو اسے اور اللہ کی جناب میں تو ہر کرتی ہے۔ اسپر حضرت موسیٰ علیالہ الم سجدہ ریز ہوگئ اور بارگا ہ الہٰی میں فریا دکی ، اللہٰ نے وی جیجی کہ ا سے موسیٰ میں نے زمین کو تکم دیا ہے کہ وہ آپ کی اطاعت کرے۔

حضرت موسیٰ علیه است لام نے زمین کوهکم دیا کہ وہ فارون اور اسکے سازوسامان کوئنگل ہے ، زمین نے نگلنا سٹروع کیا بہاں تک کہ وہ اور اس کا مکان زمین میں دھنس گیا۔ دقصص الانبیار ، ابن کثیر)

یہ سارا واقعہ بنی اسرائیل کی آنکھوں کے ساتنے ہوا اسپرجن لوگوں نے کل یک حسرت ونمٹ ظاہر کی تھیں اُن لوگوں نے اس ہولناک منظر کو دیچھ کر توبہ کی کہنے گئے اے بر با دی اگر ہم پر النّد کافضل نہوتا تو ہم بھی ایسے ہی وھنسا نے جاتے اور بیٹیک ناشکری کرنے والے فلاج نہیں یاتے۔

یں پائے۔ تارون کا یہ واقعہ قرآن کیم کی اِن آیات میں موجود ہے:۔

فرا في مضمول إن قام و كان مِن قوير مُوسى فَبَغ عَلَيْهِم. ١٠٠ . د تعس آيات ٢٠٠١ م

به ایک وا نعیہ که قارون موسیٰ کی قوم کا ایکشخص مخصا بھران يرتكبركرنے لگا اورہم نے اسكواس قدرخزانے دیے تنے كہ اُن كى كنجياں سی کئی زور آو شخصوں کو گرانبار کر دیتی تقیں ، جبکہ اسکواسی برا دری نے سہاتواس مال پرینا ترا واقعی الٹرتعالے اترانے والوں کولپند نہیں کرتا۔ يه ايك واقعه ہے كہ قارون موسىٰ كى قوم كا ايشخص تھا مھراُن پر تکبرکینے لگا ورہم نے اسکواس قدرخزانے دیے سکھے کہ اُن کی کنجیاں سحی سی زور آ و تشخصوں کو گرانبار کر دیتی تھیں ،جبکہ اسکواسکی برا دری نے کہا تواس مال پریندا ترا واقعی الله تعالیٰ إنرانے والوں کوپ ندنہیں کرتا۔ بجھ کو الٹرنے جتنا دے رکھاہے اس بیں عالم آخرت کی تھی جنجو سمياكراور دنياسے اپنا حصته فراموش نهكرا ورجس طرح التُدنے تيرے ساتھ احیان کیاہے تو بھی بندوں کے ساتھ احسان کیا کراور دنیا ہیں فسا دسما خوا بإن نه بهو بيشك التُدنِعا ليٰ ابل فسأ وكويب ندنه بين كريا -قارون تحنے لگا کہ مجھ کو بیسب کچھ میری ذاتی ہنرمندی سے ملا ہے، کیا اُس (قارون) نے یہ نہ جا ناکہ الٹرتعالے اس سے پہلے امتوں

فارون ہے اس رقارون) نے یہ نہ جا الکہ اللہ تعالے اس سے پہلے امتوں میں ایسے ایسوں کو ہلاک کرچکا ہے جو قوت بیں اس سے بھی کہیں بڑھے ہوئے سے ایسوں کو ہلاک کرچکا ہے جو قوت بیں اس سے بھی کہیں بڑھے ہوئے سے اور مجمع بھی اُن کا اس سے زیادہ نظا اور مجرموں سے تو اُن کے گناہ پو چھے نہیں جاتے رالا تو بیٹ اوسٹیٹا) ایک روز وہ ابنی قوم کے سامنے پورے مطابھ باف سے نکلا، جو لوگ جیاتِ دُنیا کے طالب تھے وہ اسے دیچھ کر مجنے گے کاش بہیں بھی وہی کچھ ملما جو قارون کو دیا گیا تھے وہ اسے دیچھ کر مجنے گے کاش بہیں بھی وہی کچھ ملما جو قارون کو دیا گیا

ہے یہ تو بڑالھیں والا ہے۔
اور جولوگ علم رکھنے والے تقے وہ کہنے گئے افسوس تمہارے حال پرالٹر کا ثواب بہتر ہے استخص کے لئے جوا بمان لائے اور نہیا ۔
عمل کرے اور یہ دولت نہیں ملتی سوائے صبر کرنے والوں کو۔
عمل کرے اور یہ دولت نہیں ملتی سوائے صبر کرنے والوں کو۔
اخر کارہم نے اسے اور اُسکے کھرکو زمین میں دھنسا دیا بھرکوئی اُسکی مامیوں کا گروہ نہ خود وہ اپنی حامیوں کا گروہ نہ خود وہ اپنی

مدد آپ کرسکا.

اب وہی لوگ جوکل اُسی منزلت کی تمناکر رہے ہتے ہے گے افسوس ہم مجول کئے ہتے کہ النّدا ہے بندوں میں سے جس کارزق چا ہتا ہم کث وہ کرتا ہے اور جے چا ہتا ہے اندازہ سے دیتا ہے۔ اگر اللّٰہ نے ہم پر احسان نہ کیا ہو تا تو ہم یں نمبی زمین میں دھنسا دیتا۔ افسوس ہم کو یا د نہ رہا کہ کا فر فلاح نہیں یا یا کرتے۔ وہ آخرت کا گھر تو ہم اُن لوگوں سے یا د نہ رہا کہ کا فر فلاح نہیں چا رہنے ہیں جو زمین میں اپنی بڑائی نہیں چا ہتے اور نہ فساد سے فاص کردیتے ہیں جو زمین میں اپنی بڑائی نہیں چا ہتے اور نہ فساد چا ہے ہیں۔ اور اچھا انجام توصرف النّدسے ڈرنے والوں کے لئے ہے۔ چو کوئی مجلائی ہے اور انجاب کو گائی ہے اور ویساہی بدلہ ملے گاجیے جو بڑائی نے کر آئے تو برائیاں کرنے والوں کو ویساہی بدلہ ملے گاجیے دو ممل کرتے ہتے ہیں۔

'اُور بلاست ہم نے موسیٰ کو اپنی نٹ نیاں اور کھلی حجت دیجر فرعون اور ہا مان اور قاردن کے پاس مجیجا تھا۔ پس اِن سب نے کہا کہ بہ توجاد وگر ہے بڑا حجوظا۔''

وَ كَاكُرُونَ وَفِرْعُونَ وَهَامَانَ وَ لَقَدُ جَاءَهُمُ مُوسِى مِا لُبَيِّنَاتِ فَالْتَكُبُرُوعَ فِي الْكُرُضِ وَمَا كَا نُولًا لَمِيهِ بَدُنَ. ١٦ وَمَا كَا نُولًا لَمِيهِ فَالْتَكُبُرُوعَ فِي الْكُرُضِ وَمَا كَا نُولًا لَمِيهِ بَدُنَ. ١٦٤ (عنكبوت آيت عاميم)

اور قارون اور فرعون ادر مامان کو ہم نے ہلاک کیا اور موسیٰ اُن کے پاس نشانیاں لے کرآئے مگر اُنھوں نے زمین میں اپنی بڑا بی کا زعم کیا حالا بحے وہ سبقت لے جانے والے نہ تھے۔

آخرکارہم نے ہرایک کوا سکے گناہ میں پکڑا بھران ہیں سے کسے گناہ میں پکڑا بھران ہیں سے کسے کسی پڑتا ہے اور کسی کو محسی پڑتھم نے سپھراڈ کرنے والی ہوا بھیجی اور کسی کو ایک زبر دست دھماکہ نے آلیا اور کسی کو ہم نے زمین میں دھنساویا ،اور کسی کوغرق کردیا

التُداُن پرطلم کرنے والا نہ نخا گگر وہ خود بنی اپنے او پرطلم کررہے تھے۔

بن اسرائیل روزا قران سے حضرت موسیٰ علایسلام کتعلیمات کو پہندنہیں کرتے تھے بہی وجہ ہے

کوئب پرستی کی فرمائش ،گوسالہ پرستی ، فبول تورات سے انکار ، ارض مقدس میں واضع سے گرئیز ، من وسلولی پر نامشکری ۔ بیا اور اس قسم کے تمام واقعات اسکی شہادت دیتے ہیں سحریہ تو گریز ، من وسلولی پر نامشکری ۔ بیا اور اس قسم کے تمام واقعات اسکی شہادت دیتے ہیں اسکے علاوہ زہنی وفکری طور پر بھی حضرت موسیٰ علیہ است لام کوکٹرت سے ایزا ، دیتے رہے اورگندی تہمتوں سے بھی بازیذ آئے ۔ احا دیث میں ایسی ایدا ، رسانیوں اور تہمتوں کے چندایک واقعات مذکور ہیں جس سے اندازہ ہوتا ہے کہ اس اولوالعزم رسول نے اپنی قوم سے کیا واقعات مذکور ہیں جس سے اندازہ ہوتا ہے کہ اس اولوالعزم رسول نے اپنی قوم سے کیا کے ختم ہیں بر واشت کیا ہے۔

ایک موقع پرنبی کریم سلی النّه علیہ ولم نے اپنی قوم کی ایذار دہی پر السّر السطرح اظہار حقیقت فرماکت کین حاصل کی، موسیٰ علیہ السّل م پر السّر کی رحتیں ہوں ان کو السّر کی را ہ میں اس سے زیادہ ایندار دی گئی محرامحوں

في ميركيا وترندي ابوداؤد)

سور ہ احزاب میں التیرتعالیٰ نے ایمان والوں کو فہمائن کی کداہے ایمان والواُن لوگو جیسے نہو اجنھوں نے موسیٰ علیہ است لام کوا بذا میں دیں مجبرالٹرنے موسیٰ علیہ البت لام کو اُن سب باتوں سے بری کر دیاجو وہ کہا کرتے تھے۔

آن واقعات ہیں ایک شہور واقعہ بخاری و لم ہیں ندکور ہے جسکے را وی حضرت ابو ہر برائھ ہیں فرماتے ہیں کہ نبی کریم صلی الشرطلیہ و لم نے ارشاد فرما یا:۔
حضرت موسیٰ علیہ الت لام عام بمیوں کی طرح شرم و حیا ڈیاد و تصحیح کے مسلمہ میں مام بمیوں کی طرح شرم و حیا ڈیاد و تصحیح کے حصرت موسیٰ علیہ الت لام عام بیں برہمنہ ہو کو عنسل کرنے کے عا دی مصرت موسیٰ علیہ الت لام کو اکثر وقت تنگ کرتے ہے عالیہ الت لام کو اکثر وقت تنگ کرتے ہے اسے اور اُن کا ندا تی اُمرا یا کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اکثر وقت تنگ کرتے ہے تھے اور اُن کا ندا تی اُمرا یا کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اکثر وقت تنگ کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اُکٹر وقت تنگ کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اُکٹر وقت تنگ کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اُکٹر وقت تنگ کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو اُکٹر وقت تنگ کرتے ہے تھے کہ موسیٰ علیہ الت لام کو ا

کے خاص حصر حبم پر برص کے داغ ہیں جمجی مجتے ہتے کہ اِن کو آ در ہ (شرم گاہ کامتورم ہوجانا) کا مرض ہے یا کونی اور قسم کا مرض ہے تب ہی تو حَيْبِ كُرعليْجِد غِسل كرتے ہيں ،حضرت موسیٰ علیہ انتسلام سنتے اور خاموش رہتے۔ آخرالٹرتعالیٰ کی یمرضی ہوئی کران کو اُس تنہمت سے پاک اور برّی کر دیا جائے۔ چنا بنجہ ایک روزحضرت موسیٰ علیہ السّالم علیٰجدہ آوہیں غىل كردى يخفيا وركيل أناركرايك بتخفر پر ركھ ديئے تخف يتجفر الترتعالے سے حکم ہے اُن کے کیڑے ہے مجاگا اور ایسی جگہ جاکر مرکا جهاں بنی اسرائیل موجو دہتھ ،حضرت موسیٰ علیہ السلام انتہائی گھبڑا ا در غصے کی حالت میں اُس بچھ کے پیچھے یہ سہتے ہوئے دوڑے تو بی حَجَرْ تُوْ بِي حَجَرُ ال يَجْرِمير ﴾ كِبر إلى إلى منخفرمير كبير إبتجف جب مَجْمَعٌ سے سامنے مھرکیا توسب نے اچا نک دیجھ لیا کہ حضرت موسیٰ عليه التلام پرجومختلف الزامات لگائے جلتے ہیں وہ سب غلط ہیں اور وہ ہرعیب سے پاک صاف ہیں مصرت موسیٰ علیہ اب الم براس اجانك واتعه كاايسا الزيرا كغصي جبنجه للكريتهرير لاتقى سے ضرب لكانا شروع كياجس م أسيرن إن يركي . د بخاري كتاب التفسير، اس طرح غیر شعوری طور پر الترتعا نے حضرت موسیٰ علیہ است لام کی صفائی کرا دی اور انهیں اس دنہنی کوفت سے سبحات دی جو قوم کی طرف سے سلسل دی جارہی تھی۔ ایک اور واقعه محی محدث ابن ابی حاتم کے حضرت علی ضعے روایت کیاہے کہ ہے جس زمانے میں بنی اسرائیل وا دی تیہ میں مفیّد ہتے اُن و نوں حضرت موسیٰ علیه التسلام ا ور بارون علیه التسلام بها (۲ بهور) پرمصروف عبادت يخفه انهى دنون حضرت بإرون عليه التسلام كاانتقال هوكيا جضرت موسیٰ علیہ التلام نے انکی تجہیز ونکفین کی اور نیچے اتر کر قوم کو اطلاعے دی۔ بنی اسرائیل نے البریمشم ورکر و یا کرموسی نے بارون کوقتل کردیاہے۔ اس تہمت برحضرت موسیٰ علبہ است لام کوسخت صدمہ بہنیا، بھیرالترتعالے نے ایک فرشنے کو محم دیا کہ وہ ہارون علیہ است لام کی معش کو مجمع میں

پیشس کردے جب اُتھوں نے بہ دیکھا تواطمینا ن ہواکہ واقعی ہارون علالسلاً رقتش کا کوئی نٹ ان نہیں ہے"

تورات میں خمی اس واقعہ کو بیان کیا گیا ہے

ا یک نیشرا وا قع حضرت ابن عباس سے کتب تنفاسیر میں منقول ہے کہ جیب فارون کوحضرت موسیٰ علیه الت لام کی نصیحت بہت نا گوارگزرنے لگی نوایک دن اس نے ایک پیشہ ورعورت کو کچھ رویے دیج اس پرآما د ه کیپاکهجس وقت حضرت موسیٰ وعظ ونصیحت میں مشغول ہو اس وقت ٱ نپرالزام لگا نا که تیخص مجھ سے علق رکھتا ہے۔ د معوذ باللّٰہ ؟ چنا بنچه ایک دن جب حضرت موسیٰ علیه الت لام وعظ فرماد ہے تنے اس برکارعورت نے آپ پریہ الزام دھردیا جھنرت موسیٰ علالسلام یسنکرسجدہ میں کر بڑے اور تھے سرا تھا کر اس عورت کی جانب مخاطب ہوئے کہ تونے جو تھے ابھی کہاہے کیا اللّٰر کی قسم کھا کر کہتے تی ہے ؟ یسنکرعورت بر دعشه طاری ہوگیا اور اُس نے اعترا ن کیا کہ تاردن نے مجھے روپیہ پیسہ دے کر اس الزام پر آیا دہ کیاہے ور نہ آپ

اس سے بری اوریاک ہیں. تب حضرت موسیٰ علیہ استلام نے قارون کے لئے بدوعاکی

اور وہ التر کے حکم سے زمین میں وصنسا دیا گیا " شاہ ولی الند و فرماتے ہیں کو کسی آیت سے شان نزول سے لئے کسی ایک واقعہ کا مخصوص ہونا ضروَری نہیں ہے بلکہ شیانِ نزول کی اصل حقیقتِ یہ ہے کہ زمانہ نبوت'' میں پیش آنے والے وہ تمام واقعات جوکسی آیت کامصداق بن سکتے ہوں ،اس آیت سے لئے کیساں طور پرت ان نزول سمے جاسکتے ہیں۔ قرآن محیم نے ایدار بنی اسرائیل کا إيك واقعه اس طرح بيان كياب جوا بذار رساني بين تو واضح مي ليكن نوعيت ابذار بين عَمِل ہے اور بقولَ شاہ ولی الٹارج ہروا قعہ کا ثنانِ نزول ہوسکتاہے۔ وعظیم آیت پیجوز۔

قَرْ أَ فَي مُضمون إِنا يَهُا الَّذِينَ أَمَنُوْ الَّا تَكُونُوا كَالَّذِينَ أَذَوا مُوسَى

فَبَرَّ اللهُ اللهُ عِلَمَا تَا لُوُ اللهُ وَكَانَ عِنْدَ اللهِ وَجِيمًا واحزاب آيت عون) اسے ايمان والونم أن بني اسرائيل كي طرح نه مونا جنعول نے

موسیٰ کوا پذاہبنچائی بھرالتٰدنے اُن کو اُس بات سے بری کر دیا جو وہ آئی متعلق کہا کرتے تھے اور موسیٰ توالتٰرکے ہاں عزت والے ہیں !'

ب رف عدرون والمعرف بالقوام المورية المركة والمعرب القوام المركة والمعربية المورية المركة الم

إِنَّ مُرَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمُ اللهِ اللَّهِ عَلَيْكُمُ الله رصف آيت عفى

اورجب موسیٰ (علیہ الت لام) نے اپنی قوم سے کہا اے قوم توکس سے کہا اے قوم توکس سے کہا اے قوم توکس سے محکلو ایزار بہنچا تی ہے جبکہ تنجھ کومعلوم ہے کہ بیس تمہاری جانب السّر کا بھیجا ہموارسول ہموں ، بجرجب وہ محجی پر اڑ بھیجے تو السّر نے بھی اُن سے دلوں پر کجی مسلّط کر دی اور السّر نا فرمان قوم کوراہ یا بہیں کہا تا۔

صالع) کے درمیان سپنی آیا۔ سور ہے کہف میں اس واقعہ کو بیان کیا گیا۔ ہے اور بنجاری مسلم ہیں بھی یہ واقع تنفصیلاً آیا ہے۔ وسلم ہیں بھی یہ واقع تنفصیلاً آیا ہے۔

قرآن تکیم نے اس واقعہ نیں جس بزرگ کی ملاقات کا ذکر کیا ہے اس کوئی وضاحت نہیں کی کہ وہ کون بزرگ تھے ہ صرف عبدًا من عباد نا کہہ کر ذکر کیا ہے۔
(ہمالے بندوں میں ہے ایک بندہ) احادیث میں خاص طور پر بخاری وسلم کی روایات میں اس بندے کا نام جفر بتایا گیا ہے۔ اور عام شہرت بھی اسی نام کی ہے۔ اکثر مفسرین اسی نام سے یہ واقع مقل کرتے ہیں بجث یہاں اُن کے نام یالقب کی نہیں ہے جو بھی نام ہو بہر حال واقعہ ضرور پیش آیا۔ یہاں بخاری کی روایت سے مطابق اس واقعہ کی تفصیل کھی جاتی ہا۔ کہ مفسل کھی جاتی ہا۔ یہاں بخاری کی روایت سے مطابق اس واقعہ کی تفصیل کھی جاتی ہے۔

سعید بن جبیر نے حضرت عبد اللہ بن عباس سے عرض کیا کہ نوٹ بنکالی دمیرہ دمی عالم کہتا ہے کہ خضر علیہ است لام سے ساتھ جن موسی کا واقعہ بیش یا و مشہور ومعروت موسی علیہ است لام نہیں ہیں بلکہ

او شخص ہیں جن کا نام مجی موسیٰ تھا۔ کیا یہ بات درست ہے ؟

حفرت ابن عباس نے نہایت برہمی ہجہ بی فرایا التّرکا دشن حبوث کہتا ہے۔ اسے بعد فرایا کہ مجھ سے حضرت ابّی بن کعب نے خو دیہ جدیث بیان کی ہے کہ انحفول نے رسول کریم سلی التّدعلیہ ولم سے مُناہے آئی نے ارس کی ہے کہ انحفول نے رسول کریم سلی التّدعلیہ ولم سے مُناہے آئی نے ارت وفرایک دی حضرت موسیٰ علیہ الت الم ابنی قوم بنی اسرائیل میں وغط فرماد ہے بنظے (غالبًا وعظ علمی) اور تحقیقی قسم کا تھا) کسی نے پوچھا اسے موسیٰ اس زمانے میں سب سے بڑا عالم کون ہے ؛ حضرت موسیٰ علیہ الت الله موسیٰ اس زمانے میں سب سے بڑا عالم کون ہے ؛ حضرت موسیٰ علیہ الت الله نہ آئی اور اُن پراُسی وقت التّدی جا نب سے عتاب ہواکہ تمہار امنصب نہ این اور اُن پراُسی وقت التّدی جا نب سے عتاب ہواکہ تمہار امنصب نہ وہ یہ ترجاب کو علم اللّٰہ کے سپر وکرتے اور سمجۃ 'التّراعلم'' (معنی التّد نے حضرت ریاد و مہۃ جا تا ہے یا یہ کہ التّر زیاد و مہۃ جا تا ہے بعد التّد نے حضرت موسیٰ علیہ التّ الم پر وحی نازل کی کہ جہال دوسمندر ملتے ہیں وہاں ہمارا ایک بندہ سے جو تم بھی زیادہ علم والا ہے ، اسے جو تم بھی زیادہ علم والا ہے .

حضرت موسی علیہ الت لام نے عرض کیا پر ور دگار تیرے اُس بندے بک رسانی کا کیاطریقہ ہے تاکہ میں اُس سے ملاقات کروں ؟ التّٰرتع نے وحی کے ذریعہ اطلاع دی کہ ایک مجھلی اپنے توسنہ دان میں رکھ لواول سفر سفر سفر وع کر دوجہاں میمجھلی گم ہموجا نے اُسی جگہ و شخص ملیگا ۔ ربعض مفسرین نے لکھا سے کہ میمجھلی تھی اوربعض نے کہا کہ زندہ مجھلی تھی اوربعض نے کہا کہ زندہ مجھلی تھی اوربعض نے کہا کہ زندہ مجھلی تھی ا

حصرت موسی علیہ است لام نے ایک مجھی اپنے توشہ دان میں رکھ لیا و را پنے ایک شاگر دکوجن کا نام بوشع بن نون مقارفیق سفر بنایا اوراس مردصالح کی تلاش میں روانہ ہوگئے دمجع البحر بن دئوسمندروں کا بھم جس کی نشان دہی گئی تھی کہاں مقے اور اِن سے کون سے دریا مرا دہیں قرآن مکیم اور احا دین صحیحہ میں کوئی وضاحت نہیں ملتی قیاس کا تھا صند میں ہے کہ یہ اس زیانے میں کوئی مشہور ومعروف شکم ریا ہو جسکے لیے نام ار

معل وقوع کی صراحت نہ مجھی گئی ہو، والٹراعلم بعض مفسرین نے بحر دوم اور بحر قلزم کاسٹنگم مرادلیا ہے اور یہ بھی قرین فیاس ہے کہ سوڈ ان کے پایئہ تخت خطوم کے قریب بحرالا بیض اور بحرالا زرق مراد ہوں جیسا کہ بعض کا خیال ہے) یہ فرسندر کے کنارے کنارے تھا۔ الغرض سفر کرتے کرتے ایک مقام پر چنجے یہاں آرام لیننے کی فاطر کچھ دیر کے لئے ایک چٹان پر وونوں سو سمجے ۔

یوشع بن نون نے دیے اکہ توت دان کی مجیلی ہیں اچا اکہ حرکت
پیدا ہوئی اور وہ زندہ ہوکر سمندر ہیں جلی گئی مجیلی پائی کے جس جھے پر ہہی
ہوئی گئی اور جہال بک گئی وہاں پائی کے اندر ایک کیر جیسی بن گئی ،ایسا
معلوم ہونا تھا کہ سمندر ہیں ایک سرنگ سی بن گئی (یہ وا تعد صرت یوشع کے
لئے چیرت انگیز ضرور تھا تیکن کوئی نیا یا بہلا قسم کا مذتھا کیونکہ وہ حضرت
موسیٰ علیہ الت لام سے ساتھ کثرت سے معجزات کا منا ہدہ کرنے رہتے تھے ،
موسیٰ علیہ الت لام بیدار ہوئے سفر کی تیاری ہیں اس واقعہ
کو بیان کرنا مجھول گئے اور جبیا کہ قرآن کی می گی تھربری ہے اس بات کو
یا و دلانا شیطان نے مجھلا ویا اس طرح آگے سفر جاری رہا ایک دن رات
مسلسل چلتے رہے و وسرے دن حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے فرایا کہ
آج غیر معمولی تھکن اور پ سی محسوس ہور ہی ہے اچھا وہ مجھلی لاک تا کہ جوک

اس موقعہ پر نبی کر بم صلی التّرعلیہ و کم نے فرایا حضرت موسیٰ علیہ التسام کو التّرکی بیا تی ہوئی منزلِ مقصودی کے بہنچنے میں کوئی تفکان نہیں ہوا تھا مگر منزل ہے آگے غلطی ہے نکل گئے تواب تھاکان بھی محسوس ہونے لگا ، پوشع بن نون نے کہا ہاں مجھے کہنا یا دندر ہاجسوقت ہم بتقر کی چٹان پر محقے و ہیں مجھل کا یتعجب خیز واقعہ سیشس آیا اس میں حرکت پیدا ہوئی اور وہ توشہ وان سے نکل کرسمندر میں جلی گئی اور اسکی زنیار پر سمندر میں مجھی راستہ بنیا چلاگیا۔ واقعی شیطان نے یہ بات آپ سے پرسمندر میں مجھی راستہ بنیا چلاگیا۔ واقعی شیطان نے یہ بات آپ سے

ذکرکرنا مجھلادیا۔ اسپر حضرت موسیٰ علیہ است کام نے فرما یا جس مقام کی تلاش ہم کوہے وہ وہی مقام مخا یہ کہہ کر مھرو و نوں نشا نا ب قدم پرواپ لوٹے اور اس چٹان تک جا پہنچے، و ہاں دیجھا کہ عمدہ لہاس میں ایک ہوئی بیٹے اور اس جھائے۔ حضرت موسیٰ علیہ است کام نے انتخب سلام کیا۔ اس شخص نے کہا تمہاری سرزمین میں سلام کہاں ؟ (بعنی اس سرزمین میں تومسلمان نہیں رہنے)

بنی کریم میں اللہ علیہ ولم نے فرایا پیخفر علیہ است لام تھے ، حفرت موسیٰ علیہ است لام تھے ، حفرت موسیٰ علیہ است لام نے بوجواب دیا میرا نام موسیٰ ہے ، خصر علیہ است لام نے پوچھا موسیٰ بنی اسرائیل ، حضرت موسیٰ نے کہا ہاں ، بیں آپ سے وہ علم حاصل کرنے آیا ہوں جو اللہ تعالیٰ نے صرف آپ ہی کوعنا بت کیا ہے!

حاصل کرنے آیا ہوں جو اللہ تعالیٰ نے صرف آپ ہی کوعنا بت کیا ہے!

خصر علیہ است لام نے فریا یا تم میرے سا تھ دہ کران معاملات پر

صبر کرسکو گے جومیرے ساتھ سپنیں آتے ہیں.اے موسیٰ!الترنعالیٰ نے مبرکرسکو گے جومیرے ساتھ سپنیں آتے ہیں.اے موسیٰ!الترنعالیٰ نے مجعکو ایسی بخفی چیزوں کاعلم عطاکیا ہے جوتم کونہیں دیا گیا ہے۔

حضرت موسیٰ علیہ اُست لام نے فرماٰ یا انت التّرآپ مجھکوصبر کرنے والاضبط کرنے والا پائیس گے اور میں آپ کے حکم کی خلاف ورزی نہ کروں گا۔

حضرت خضر علیہ است الم نے کہا تو پھر شرط یہ رہے گی کہ جب آپ

یرے ساتھ رہی تو کسی معاملہ کے متعلق بھی جسکو آپ کی نگا ہیں دیکھ رہی

ہوں بھرسے کوئی سوال نہ کریں ، میں خود آپ کو اُسکی حقیقت بنا دوں گا۔
حضرت موسیٰ علیہ الت الم نے پیشرط منطور کرلی اور دونول کی
جانب روا نہ ہوگئے دیہاں اسکی صراحت نہیں ملنی کہ یوشع بن نون بھی ساتھ
رہے یا اسمنیں واپس کر دیا گیا) جب سمندر کے ایک کن دے پہنچے توسا سے
رہے یا اسمنیں واپس کر دیا گیا) جب سمندر کے ایک کن دے پہنچے توسا سے
رہے یا اسمنی نظر آئی حضرت خضر علیہ الت الم نے ملا حوں سے کیرا یہ لوجھا وہ
ایک شائی خضر علیہ الت الم کو جانے تھے لہذا کرایہ لینے سے انکار کیا اور
اصرار کرکے دونوں کو خسی پرسوار کرنیا اور ششتی روا نہ ہوگئی ۔

ابھی کچھ ڈورمبی نہ چلے تھے کہ حضرت خضر علیہ التلام نےکشتی کا ایک شختہ اُ کھاڈ کر خشتی میں سوراخ کر دیا، حضرت موسیٰ علیہ التلام سے ضبط نہ ہوسکا کہنے گئے جناب شتی والوں نے توہم پر احسان کیا اور ہمیں مفت سوار کر لیا اور آپ نے اِس کا یہ بدلہ دیا کہ اُن کی ششی خراب کردی اُس طرح توسب لوگ ڈوب جائیں گئے .حضرت خضر علیہ استلام نے مسلم سے محضرت خضر علیہ استلام نے محضرت کہا میں تو ہملے ہی کہا مظاکہ آپ میری با توں پر صبر نہ کرسکیں گئے ۔حضرت موسیٰ علیہ استلام نے فرما یا مجھ سے محصول ہوگئی برا ہوکرم آپ اسپر گرفت موسیٰ علیہ استلام نے فرما یا مجھ سے محصول ہوگئی برا ہوکرم آپ اسپر گرفت نہ کریں اور میرے معاملہ میں سخت گیری سے کام نہ لیں ۔

اس موقع پرنبی کریم صلی الترطلیہ ولم نے فرما یا کہ یہ بہلا سوال حقیقاً حضرت موسیٰ علیہ التلام کی بھول کی وجہ سے بھا۔ اس اثن رہیں ایک چشریا کشت کے کنارے آبیٹی اور سمندر سے ایک قطرہ پانی پی بیا، حضرت خضر علیہ الت لام سے مخاطب ہو کر فرما یا ، خضر علیہ الت لام سے مخاطب ہو کر فرما یا ، اسے موسیٰ علم اللہ کے مقابلہ میں میرا اور آپ کا علم اس فدر بے حقیقت ہی میساکہ سمندر سے سامنے یہ قطرہ .

الغرض سنی کنارے لگی دونوں حفرات اُ ترکرایک جانب
روانہ ہوگئے جفرت موسیٰ علیہ الت الم پیچھے چھے جلی رہے سخے کچھ دُور
چند بچے کھیلنے نظرائے ،حضرت خفرعلیہ الت الام اُن کی جانب بڑھے اور
ایک بیچے کوشل کر دیا اس اچا تک اورغیر متوقع بلا وجقس پرحضرت موسیٰ
علیہ الت الم سے قطعاً ضبط نہ ہوسکا کہنے گئے حضرت آپ نے یہ کیا کیا ؟
علیہ الت الم معصوم جان کو یوں ہی قبل کر دیا ؟ یہ تو بہت بڑا کام کیا ۔
ایک بے گنا ہ معصوم جان کو یوں ہی قبل کر دیا ؟ یہ تو بہت بڑا کام کیا ۔
عفرت خضرعلیہ الت لام نے کہا بہت پہلی بات سے بھی سختہ دیا پر نبی کریم صلی النہ علیہ ولم نے فرما یا چونکہ یہ بات پہلی بات سے بھی سخت ہم سخت کم سابھ دو میں علیہ الت لام ضبط نہ کرنے میں معذور سختے ۔
منی اس سے حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے فرما یا خیراس مرتبہ اورنظ انداز محضرت موسیٰ علیہ الت لام نے فرما یا خیراس مرتبہ اورنظ انداز محضرت موسیٰ علیہ الت لام نے فرما یا خیراس مرتبہ اورنظ انداز

ى دىجےً. اسكے بعد آگر ہیں كوئى سوال كروں تو بھرعذرخوا ہى كاكوئى مو قع نہیں رہے گا اور اسکے بعد آپ کو اختیا رہوگا کہ مجھے تجد اکر ویں ۔ اس طرح خصرت خصر علیه استلام نے دوسری مرتبہ تھی درگزر کو یا اسكے بعد آگے روانہ ہو گئے ، بیہاں تک كد ایک بستی برگزر ہواجہاں ہے باشندے خوشی ال معلوم ہورہے تھے دونوں مسافر بزرگوں نے اِن لوگوں سے مہمان داری کی درخواست کی سکین یہ اسقدر بخیل کابت ہوئے که ایک وقت می ضیافت کانجی انتظام به کیا اورصاف انکار کردیا جض^ت خضرعلیہ التسلام آ کے جانے سے کئے میل پڑے ابھی اسی سبتی سے گزر رے مقے کہ ایک مکان ایسابوسیدہ نظر بڑاجسی دیوا تھی ہوئی تھی اور وہ گرنے سے قریب مقاحضرت خضرعلیہ السّلام نے اسکی مرمت کردی اوراسکو درست کر دیا، حضرت موسیٰ علیه التلام نے بے ساخت مچھر ٹوک دیااور کہنے گئے جناب ہم اس بستی میں مھو سے بیا سے مساف رانہ حالت میں پہنچے مگران نا قدرسشناہوں نے نہماری مہمان داری کی نہ رہے کو جگہ دی اور آپ نے مفت میں ایکشخص کے مکان کو ورست كرديا، أكر كرنابي بها تو كيم أجرت لے ليتے و حضرت خضر عليه السلام نے فرما یا بس اب میری اور آلی جدانی کا وقت آگیا لہذا اب آپ کامیر رائق رسناممكن نهيس فعدا ها فظ

ا سکے بعد حضرت خضر علیہ الت الم مے حضرت ہوسی علیہ السلام کو رخصت کرتے وقت اُن ہمنوں معاملات کی حقیقت بیان کی اور مجھا اِ کہ یہ سب باتیں الٹرکی طوف سے تقییں جن پر آپ صبر نہ کرسکے۔

یہ واقع نیقل فرنا کرنبی کریم صلی الٹرعلیہ و لم نے فرما یا کہ ہما را ہوجی بیرچا ہتا تھا کہ جفرت موسی علیہ السلام بھوڑ اور صبر کرتے تو ہم کو الٹرتعالیٰ کے دموز وا مراد کی مزید معلومات حاصل ہوئیں۔

الٹرتعالیٰ کے دموز وا مراد کی مزید معلومات حاصل ہوئیں۔

الغرض اِن عینوں واقعات کی حقیقت حضرت خضر علیہ السلام نے جو بہان کی ہے وہ ورج تربیل ہے ہے۔

دا، جس سے تو خراب کیا گیا در اصل یہ سنتی چند ایسے غریبوں کی مقی جن سے متعلق مشہور اسرائیلی عالم کعب احبار سے تکھا ہے کہ وہ جملہ دین میعائی شخصی جن میں پانچ اپا بیج اور معذور منے بقیہ پانچ میما نی محنت مزدوری کر سے اچرا ور پانچ معذور بھائیوں کی روزی کا انتظام کرتے ہے اور پانچ معذور بھائیوں کی روزی کا انتظام کرتے ہے اور یا بیک شتی چلاتے ہے اور اس کا کرا یہ ماصل کرتے ہے۔

ام بغوی نے اپنی تفسیر میں حضرت ابن عباس کی ایک روائی نقل کی ہے کہ کیشتی جس سمت جارہی تفقی و ہاں ایک ظالم باوش ہی مکمرانی تعقی وہ ہر اچھی اور نئی کشتی کو زبروستی حجیین لیا کرتا تھا ،حضر خضر علیہ اسکے تحفظ کے لئے کششتی کو عیب دار بنا دیا تاکہ وہ ظالم بادش ہ اسپر توجہ کمرے اور یہ غریب وشریب لوگ اس مصیبت طالم بادش ہ اسپر توجہ کمرے اور یہ غریب وشریب کو اس مصیبت سے محفوظ ہوجا کیں ۔ چنا نچہ آگے میل کر ایسا ہی واقعہ پیش آیا اور یہ شتی حجور وی گئی ۔

ردی اور وہ لڑکا جس کوفتل کیا گیا تھا اسکی حقیقت یہ ہے کہ اس لڑکے کی طبیعت میں کفروسرکشی اور والدین کے خلاف بغاوت بھی اور علم الہٰی میں یہ طبے تھا کہ اگریہ بالغ ہوگا تو کا فرہوگا جس سے ووسرے انسانوں کو بھی مصیبت بن جا کیگا، انسانوں کو بھی مصیبت بن جا کیگا، اس لڑکے کے والدین نیک اور بزرگ انسان متھ اور النگر کو بیمنظور متاکہ یہ لڑکے کی مصیبت سے محفوظ رہیں اس لئے اسکو بالغ ہونے سے متاکہ یہ لڑکے کی مصیبت سے محفوظ رہیں اس لئے اسکو بالغ ہونے سے بہن قبل کردیا گیا۔

ابن ابی سفیہ اور ابن المنذر اور ابن ابی طائم نے ایک روایت مقل کی ہے کہ مقتول لڑکے کے والدین کو السّرتعا لئے نے اسکے برلہ ایک لؤکی عطائی جس کے بطن سے ایک نبی پیدا ہوئے اور حضرت ابن عباس کی کی روایت کے مطابق اس لڑکی کے بطن سے وَتُونی پیدا ہوئے اور وضرت ابن عباس کی روایت کے مطابق اس لڑکی کے بطن سے وَتُونی پیدا ہوئے اور لعن دیگر روایات میں یہ وضاحت بھی آئی ہے کہ اس لڑکی ہوئے اور لعن دیگر روایات میں یہ وضاحت بھی آئی ہے کہ اس لڑکی

سے بطن سے پیدا ہونے والے نبی علیہ التلام کے ذریعہ الشرتعالیٰ نے ایک بڑی امّت کو ہدایت وی . د تفسیر مظہری و قرطبی)

الشرتعالے نے اپنے مقبول بندے کی نیت سے مطابق اِن تیم بچوں سے لئے دفون خزانے کی حفاظت کا اس طرح انتظام فرما یا کہ اُسس محرتے مکان کو تجھے عرصہ سے لئے مضبوط کر دیا ، اسکے لئے حضرت خضسہ علیہ اسسالم سے اُس کی مرمت کرا دمی۔ انتہیٰ

محدین منکدر و این الترتعالی ایک نیک بندے کی الترتعالی ایک نیک بندے کی نیک وجہ سے اُس کی اولا وا ورا ولا وکی اولا و اورا سکے خاندان کی اور اُس کے آس یاس سے مکا نات کی بھی حفاظت فراتے خاندان کی اور اُس کے آس یاس سے مکا نات کی بھی حفاظت فراتے

یں۔ دمنظری)

من الله وفد اپنی غیرافتیاری مالت میں من فررا یا تھا کہ میں اس من ہراور پورے علاقے سے لئے اللّٰم کی امان میں مجب اُن کی وفات ہوگئی تمونین سے بچھ ویر بعد کفار وہلم نے وریا وملک کو عبور کر کے بغدا و پر قبضہ کر لیا ،اس وقت عام توگوں کی نہ بان پر یکھ میں کہ میں کہ میں کہ میں مصیب ٹوٹ پھری ہے ۔ بعنی حضرت شبائی کی میں اور کفار کا قبضہ ۔ د قوظبی جا اصفی ۱۹)

الغرض بيه حقائق ہيں جو إن وا قعات ہيں پونٹيدہ تعقیجس کاعلم سوائے النّر کے اورکسی

محومکن نہیں تھا۔ اللہ نعالے نے حصرت خصر علیہ الت لام کو اِن خفائق پر بذرایعہ وحی مطلع فریا دیا جسکو انفوں نے اللہ کے حکم و منشار کے مطابق انجام دیا . مطلع فریا دیا جسکو انفوں نے اللہ کے حکم و منشار کے مطابق انجام دیا . حصرت موسیٰ علیہ الت لام اور حضرت خضر علیہ السلام کا یہ فصل تذکرہ قرآن محکیم کی آیات ذیل میں موجود ہے :۔

(ذراان کو و ه قصة سنا وُجوموسیٰ کوپیش آیا تخیا) جبکه موسیٰ

نے اپنے خادم سے کہا تھا کہ میں اپناسفرختم نہ کروں گا جب تک کہ دونوں دریا وُں کے سنگم پر پہنچ نہ جا وُں بازچر ایک زیانے تک چلتا ہی رہوں گا۔

کے سم پرپی نه با ون بارچراه به کاره کے معت پیس کار درو کا د پس جب وہ دونوں اُن کے شکم پر مینیچ تو اپنی محیلی کو وہ

مجول سے اور محیلی نے دریا میں اپنی راہ لی اور میل دی بھرجب ونوں آگے بڑھ سے داور دور کل گئے) توموسیٰ نے اپنے خادم سے کہا کہ ہمالا

ناشة تولاؤهم كوتواس سفري برئ كليف يبني ہے۔

فادم نے کہا آپ نے دیجھا یہ کیا ہوا؟ جب ہم اُس جٹان کے پاس کھیں کا خیال ندر ہا ورشیطان نے محمد کے پاس کھیں کا خیال ندر ہا ورشیطان نے محمد کو ایسا عافل کر دیا کہ میں اِس کا ڈکر آپ سے کرنا مجول گیا ،محجلی تو عجیب طریقے سے کا کر دریا ہیں جل گئی ۔ عجیب طریقے سے کا کر دریا ہیں جل گئی ۔

بین برسی نے کہا اسی جگہ کی تو ہمیں تلاش تھی چنانچہ وہ دو نوں اپنے نقش قدم پر بھیروالیں ہوئے اور وہاں اُنھوں نے ہمارے بندو میں سے ایک بند ہے کو پایا جے ہم نے اپنی رحمت سے نواز انھا اور اپنی مل من سے ایک بندھے کو پایا جے ہم نے اپنی رحمت سے نواز انھا اور اپنی مل من سراک مناص علم عمالک امترا

طرن سے ایک خاص علم عطا کیا تھا۔

موسیٰ نے اُس بندے سے کہا کیا ہیں آپ کے ساتھ رہ سکتا ہوں ؟ گاکہ آپ مجھے بھی اُس مفید علم کی تعلیم دیں جو آپ کو سکھائی گئی ہے۔ اُس بندے نے جواب ویا آپ میرے ساتھ صبر نہیں کرسکتے۔ اور جس جیز کاعلم آپ کو مذہو آخر آپ اس پرصبر کر بھی کیسے سکتے ہیں۔ موسیٰ نے کہا انتار النار آپ مجھے صابر پائیں سے اور میں کسی معاملہ میں آپ کی نا فرمانی نہ کروں گا۔

اُس بندے نے کہا اچھا اگر آپ میرے ساتھ طیلتے ہیں تومجھ سے کوئی بات نہ پوجھیں جب یک ہیں خود اُس کا آپ سے ذکر نہ کر دوںِ

ین وہ دونوں روانہ ہوئے بیہاں نگ کرجب وہ ایک شی میں سوار ہوئے تو اُس بندے نے اُس شیکان ڈوال دیا، موسیٰ نے کہا آپ نے اسمیں شکا ف ڈال دیا تاکہ سبختی والوں کوڈ بوٹویں ؟ بہ تو آپ نے ایک سخت حرکت کرڈوالی ؟

اس بندے نے کہا میں نے تم سے کہا نہ تھا کہ تم میرے ماتھ صبر مہیں کرسکو گئے.

موسیٰ نے کہا آپ میری مجول چوک پر گرفت نہ کیجئے اور نہ میرے معابلہ میں سختی سے کام لیجئے۔

مجروہ دونوں آگے چلے یہاں تک کہ اُنکو ایک لڑکا ملا اُس بند نے اس لڑکے کو اچا کک قتل کر دیا.

موسیٰ نے کہا آپ نے ایک ہے گنا ہ کی جان ہے کی حالا ککہ اُس نے کسی کاخون نہیں کیا تھا یہ کام توآپ نے بہت ہی بُراکیا ؟ مُس بندے نے کہامیں نے تم ہے کہا نہ تھا کہ تم میرے ساتھ

ہرگز صبر نہ کرسکو گئے ؟ موسیٰ نے کہا اس کے بعد اگریں آپ کے کچھ پوچیوں آؤ آپ مجھے اپنے ساتھ نہ رکھیں ، اب تو آپ کو میری جانب سے عذر مل گیا ہے۔ بچروہ وونوں آ گئے جلے یہاں یک کہ ایک ہیں بہنچے اور وہاں کے لوگوں سے کھا یا طلب کیا سٹر اُن لوگوں نے ضیافت سے انکار کر دیا ، بچروہاں انتھوں نے ایک دیوار وکھی جو گرا جا سہی بھی اُس بندے نے اس دیوار کو بھیرقائم کر دیا، موسیٰ نے کہا اگر آپ چاہتے تو اس کام کی اُم حرت ہے سکتے سختے .

مس بندے نے کہا بس یہ وقت ہماری اور آبی علیمہ گی کا ہے اب میں اُن وا قعات کی حقیقت بتلائے دیتا ہوں جن پر آپ سے صبر نہ ہوسکا۔
م اُس شتی کا معاملہ تو یہ ہے کہ وہ چند غریب آ دمیوں کی تھی جو دریا میں محنت مزد دری کرتے ہے میں نے چا باکہ اُسے عیب وار کر دوں کی تھی کو کر آگے ایک ایسے باوش ہ کا علاقہ تھا جو ہرضتی کو زبر وسسی چین لیتا ہے۔ ایسا ایسے باوش ہ کا علاقہ تھا جو ہرضتی کو زبر وسسی چین لیتا ہے۔ ایسا ایسے اور اُس

را وہ لڑکا تو اس کے والدین مؤمن مقے ہمیں اندیثہ ہواکہ یہ لڑکا اپنی سرکتی اور کفرسے اُن کو ننگ کرے گا۔اس لئے ہم نے چا ہاکہ اُنکا رب اُسکے بدلے اُن کو انگ وسے جو اخلاق میں بھی اُس سے بہتر ہواود جس سے صابی میں زیادہ متوقع ہو۔

جواس دیوارکا معاملہ یہ ہے کہ یہ وٹو تیم روکوں کی ہے جواس شہریں رہتے ہیں۔ اس دیوار کے نیچے اِن بچوں کے لئے ایک فزانہ بدفون ہے اور اُن کا باپ ایک نیک آدمی تھا اس نے تنہارے رب نے چاہا کہ یہ دونوں ہے بالغ ہوں اور اینا فزانہ کال لیس، یہ تنہارے رب کی رحمت کی بنا پر کیا گیا ہے۔ اور میں نے اپنے افتیار سے کچھ مجمی نہیں کیا ہے۔ یہ ہے صقیقت ان ہاتوں کی جن پر آت صبر نہ کرسے۔

وفات موسی علیم است کی احدت موسی علیه استلام کی ساری زندگی ابنی قوم سے ساتھ بڑے صبر آزما حالات وواقعات میں بسر بہوئی حتی کہ موت بھی غربت و مسافرت میں حبکہ قوم سے ساتھ وا دی تیہ میں مقیم سے بیٹ میں آئی حضرت موسی حلیہ استلام ایک اولوالعزم رسول کی طرح رشد و ہدایت میں مشغول رہے اور برقسم کی ایزار برداشت کی۔
وہدایت میں مشغول رہے اور برقسم کی ایزار برداشت کی۔
بخاری ولم میں ایک روایت حضرت ابن مسعود رہ سے مروی سے وہ فرماتے

برای*ت کے جراغ*

ہیں کہ ایک مرتبہ نبی کر پیم لی التعطیبہ الت لام نے مال فنیمت میں سے کچھ مال کوگوں میں بيم فرما يا مقارا يضغص دمنافق) تحبنے لگاكه استقسيم بيں التّركى رضاجو بى كالحاظ سنہ رکھاگیا اس مسلمان نے یہ بات نبی کریم ملی الترطلیہ ولم سے عرض کردی تو آپ کاچہرہ مبارك غصے وغضب سے سرخ ہوگیا ارتشا و فرما یا کہ النّدتِعا لئے موسیٰ پررہم فرما نے آن كواس سے بى زيادہ افست پہنچانی تئی اور انجوں نے صبر كيا، باوجود قوم كي كسال عهد تنكني اور شرارت سے آخرِ وقت يك نصيحت وخيرخوا ہى جارى ركھى اور اُن كى اصلاح میں مشغول رہے یہاں تک کہ زندگی کا آخری وقت آگیا اور اسی وا دی تبید میں داعی آبل

بخاری ولم مین حضرت موسی علیه التلام کی و فات کا تذکره اس طرح ملتائے حضرت ابوہر ریم را دوی ہیں، نبی کریم صلی التہ علیہ و کم نے ادشاد فرما یا کیجب حضرت موسیٰ علیه استلام کی و فات کا وقت قریب آیا تواک کے پاس فرشته ما ضربهوا دیبها ب به بات خاص طور پرملحوظ رکھنی کیا ہیئے کہ موت سے وقت انبیار کرام سے بارے میں الترکا قانون عام ان نوں سے مختلف ہوا ہے نبی کی وفات سے قبل ان کو اسکی اطلاع وی جاتی ہے اور انکی رضامندی عاصل کی جاتی ہے، فرشتہ موت نے حضرت موسیٰ سے کہا آجِبْ سَ بَلِکَ ا پے پر وروگارکی جانب سے پیغام اَجل قَبول سیجے ﴿ چِنْ بَحَ فَر شِتْهِ الْسَانَ شَكُلَ میں تھاحضرت موسیٰ علیہ الت لام جان نذیعے) اور اسکے ایک طمانچہ رسید سر دیاجس سے اُسکی آبکھ بھوٹ گئی ، وہ فوری روانہ ہوگیاا ور بارگاہ الٰہی میں شکایت کی کرتیرا بندہ موت نہیں چا ہتا، اور بیکہ اس نے طمیا بچہ رسید كردياہے. الشرتعالے كى جانب سے اسكى آنكھ درست كردى كئى اور كلم دیا گیاکر موسیٰ کے پاس بھرجاؤا ورکہو کہ یہ اللہ کاارشادے کر اگر دنیا مين مزيدر سناچا ہتے ہو توکسی بيل کی محر پرتم اپنا باعقہ رکھ دوجس قدر بال تہاری میں میں اجائیں سے ہم ہر ال سے عوض تمہاری حیات ونیوی میں ایک ایک سال کا اضافہ کرویں گے۔ فرشتے نے دوبارہ حاصر ہوکر الله تعالیٰ کا بیغام مُنایا ،حضرت

موسیٰ علیہ است لام نے دریا فت کیا کہ اسکے بعد کیا ہوگا ؟ فرشتے نے جواب دیا کہ آخر کھر موت ہوگی ۔ تب حضرت موسیٰ علیہ است لام نے ، عرض کیا کہ آخر کھر موت ہوگی ۔ تب حضرت موسیٰ علیہ است لام نے ، عرض کیا کہ آگر حیات طویل کے بعد تھیر وہی موت ہے تو تاخیر کی کیا ضرور لقار رب ہی بہترہے ۔ وُعاکی اے اللّٰہ اس آخری وقت مجھکو ارض مقدس سے قریب کر دے ۔

رالٹرنے حضرت موسیٰ کی خواہش پوری فرمادی غیبی طور پر انتخیں ارض مقدس دفلسطین) سے قریب کر دیا گیا اورکشیب احمر (سرخ طیلہ) کے قریب موت آئی اور وہیں دفن کئے گئے)

مشہور مؤرخ ضیار مقدسی کہتے ہیں کہ مقام اربحار ہیں مرخ ٹیلہ کے قریب ایک قبرہ جسکو حضرت موسیٰ علیہ استلام کی قبر بتایا جاتا ہے دوسرے تاریخی اقوال کے مقابلہ ہیں یہ قول زیادہ قرین قیاس ہے اسلئے کہ وادی تیہ کے سب سے قریب وادی مقدس کا علاقہ اربحار کی بت کہ اور اسی جگہ وہ کشیب احمروا قع ہے جسکا ذکر حدیث ہیں آیا ہے۔ ہے اور اسی جگہ وہ کشیب احمروا قع ہے جسکا ذکر حدیث ہیں آیا ہے۔

ایک عمده نشتر میکی او فاتِ بوسیٰ علیه الت لام کا جو وا قعه بخاری و لم میں موجود ہے اسمیں چند امور وضاحت طلب ہیں ۔

یہ توایک سلم حقیقت ہے کہ انسان اگر نبوت وربالت جیسے ظیم الثان اہمی نصب پر بھی فائز ہو تب بھی بیٹریت سے فارج نہیں ہوتا اور یہ تقاضا کے بیٹریت سے فالی ۔ موت اپنی ظاہری شکل بین کسی بھی بیٹ کر ومطلوب نہیں ہوتی بلکہ وہ اس سے گر رز کرتا ہے۔ البتہ جب التدنیا لے کسی بندے پر موت کی حقیقت منکشف کر دیتا ہے تو اُسکے مقرب بندوں کے لئے وہی موت سب سے زیادہ محبوب شی بن جاتی ہے اور اس کے لئے وہی موت سب سے زیادہ محبوب شی بن جاتی ہے اور اس کے لئے وہ بی موت سب سے زیادہ محبوب شی بن جاتی ہے اور اس کے لئے وہ بی موت سب سے زیادہ محبوب شی بن جاتی ہے اور اس کے لئے وہ بیقرار ہوجا تا ہے۔

موت سے کئی خوا ہ محبوب شی ہویا غیر محبوب بہر طال ایک نہ ملنے والا حکم ہو آہے جس سے کسی کو بھی مفر نہیں ،اس لئے تمناییہ نے ہونی چاہئے کہ عمر دراز" ہ میں ہوجائے بلکہ یہ آرزو ہونی چاہئے کہ زندگی کالمحہ جو بھی میستر ہوجائے وہ پاکی ونیکی میں گزرے عاصل ہوجائے بلکہ یہ آرزو ہونی چاہئے کہ زندگی کالمحہ جو بھی میستر ہوجائے وہ پاکی ونیکی میں گزرے تاکہ جب موت آئے تو پیضیقی وا بدی زندگی بن جائے۔

حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے واقعۂ موت میں فرشتہ موت کوطمانچہ رسید کرنا ایک ایسا واقعہ ہے جبکو بخاری ولم نے سیوسیج سے ساتھ نقل کیا ہے۔ یہکوئی امر محال یا نامسکن بات نہیں ہے۔ انبیار کرام کی سیرتوں میں اس سے جب عجیب نزوا قعات رونما ہوتے ہیں جبح بمثرت تذكر في انهي صفحات من آجيح بن كفتكو صرف اسمين بوني جائي كرآيايه واقعه سند سحیح سے ساتھ نقل ہوتا آیا ہے یانہیں ؟ اگریہ بات نابت ہے تو تھے روایت کومین وغن طرایقہ پر قبول کرنا چاہیے یا اسمیں تا ویل توشیل کا پہلوا ختیار کرنا چاہیے ؟ یہ ایک علمی وا صو کی بحث ہے بعض اہل علم نے ایسی صور توں میں تا ویل مشیل کا بہلوا ختیار کیا ہے جیب ک محدّث ابن قتیبہ سے اس واقعہ میں افتیار کیا ہے۔ ان کاخیال ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ السّلام کی موت کا بہ وا قعہ حقیقت سے ساتھ وابستہ نہیں ہے بلکہ پیخیلی توسیلی واقعہ کیے . بہرطال پیے حصرات کا احترام اپنے مقام پر ، کین اکثرابل علم جن میں اہل تحقیق کی کنزت ہے بہلے مفہوم کوافتیا كيائے بحسى واقعه كاغبيب تركبونا ياعقل وقياس سے اورار بونا استح قبول ياعدم قبول كامحتلج نہتی ہوتا بلکہ ثبوت یا عدم ثبوت کا محتاج ہے توات مدیث سے الفاظ کی تعبیراس طرح ہونی چاہیے اور میکن بھی ہے کہ جب حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی خدمت میں فرنٹ نہ سیغام امل کیکر آیا تو وه بشری میل وصورت بین تهاجیب که عام طور پر انبیار کرام می زندهیون بین سابقر را به -حضرت موسیٰ علیہ استرام اس فرشتے کو اس حالت میں اس طرح پہچان نہ سکے جیسا کہ حضرت ابراسم خليل الترعليه التسلام اورحضرت لوط عليه التسلام عذاب سمے فرشتوں كو ابت راءً نه بهجان سيح وحضرت موسى عليه التسلام كويه ناكوار كزراكه ايك امبني تخص اجا بك أنج فلوت كده مِنْ صَن آيا ورموت كاپيغام دين لگابشري تقاضه أبھرآيا طيش بي ايک طمانچ رسيد كرديا-چونکه فرست بهی بشری شکل میں تھا بشرای اکثرات مرتب ہو گئے اور آنکھ مجروہ ہوگئی محرص عذاك كي فرشتون في البستة استه حضرت ابراسم خليل الشروص وطعليهم التسلام كواپني اصل حقیقت سے آگاہ کر دیا تھا، موت سے فاشتے نے حضرت موسی علیہ السلام کو آگاہ نہ کیا اور فوراً غائب بوكيا اور باركاه الني بي فريادرس بوا-

مدیث کے یہ الفاظ بڑتے ہی دلچسپ ہیں ہے۔

اُدُسَلْتَنِی الیٰ عَبُدِ لَا بُرِیدُ النُسَوْتَ · ابخاری) اُک رب آب نے مجھے ایسے بندے کی جانب بھیجا جوموت

نهیں چاہتا!"

معیرالٹر تعالے نے اُس فرشتے کو ملکوئی ہیئت پر والیں کردیا اور اس طرح وہ اس عیب بری ہوگیا جو بشری شکل میں آنکھ مجروج ہونے سے پیدا ہوگیا تھا۔

موت سے واقف ہوئے بغیرخو دہی یہ مجد لیا کہ حضرت موسیٰ علیہ است لام سے خفا ہو گئے اور وہ موت نہیں جاہتے .

الترتعالے نے فرشتہ کی اس غلط فہمی اور حضرت موسیٰ علیہ السلام کی جلالتِ شان دونوں کے اظہار کے لئے پیطریقہ اختیار فرما یا تھم دیا کہ دوبارہ جاؤ اور حضرت موسیٰ کو

ہما را پیغام میہجاؤ۔

اُوم فرشته پیغام عال کرر بانها اور اِ دهرحضرت موسی علیه استلام نے امنبی سنخص کے نائب ہوجانے پرفوراً بیمسوس کرلیا کہ درحقیقت بیمعاملہ انسانی معاملات سے مجدا دوسرے عالم کا ہے ۔ چنا بخہ جب فرشته امل نے دوبارہ حاصر ہوکر حضرت موسیٰ علیہ استلام کو پیغام الہی سنایا توان کا لہجہ اور طرز گفتگو دوسرا ہوگیا اور مجرا بخام کا روہ رفیق اعلیٰ سے جاملے۔ فصلوات الله وسلام علیہ و

تورات اوربعض کتب تاریخ کے مطابق حضرت موسیٰ علیہ السلام کی عمر سٹریون ایکٹو بیس سال ہوئی اور آپ کے اور حضرت ابراہیم علیہ استلام سے درمیان تقریب ً ڈھائی سوسال کاعرصہ رہا ہے۔ والٹراعلم۔

ر منبہ جسے و نیا بین خکرا و بیا ہے گزشتہ صفحات میں نصیل سے یہ عقب بیان ہوئی ہے کہ حضرت مقبقت بیان ہوئی ہے کہ حضرت

موسیٰ علیہ استلام بھی انبیار وس کی فہرست میں خصوصی شان دسھتے بیں جن نبیوں کی زندگ دعوت وتبلیغ میں سرگرم عمل رہی ہے اور جنھوں نے اپنی اپنی قوم سے سخت ترین دکھ وریخ اٹھا نے ہیں ان میں حضرت موسیٰ علیہ استلام کا اسم کرامی بھی سرفہرست ہے۔ دکھ وریخ اٹھا نے ہیں ان میں حضرت موسیٰ علیہ استلام کا اسم کرامی بھی سرفہرست ہے۔ قرآن کریم اور احادیث صحیحہ میں اُنکی جلاتِ شان وعظت کا بکترت ذکر آیاہے۔ اس حیثیت سے حضرت حتم الرسلین محد بن عبد الشّصلی الشّرعلیہ ولم اور حضرت ابوالا نبیاء ابراہیم خلیل الشّر علیہ السّر اللّم کا المّ کرامی عام طور پر لیاجا تا ہے۔ علیہ السّر اللّم کی اللّم کی اللّم کے اللّم کا اللّم کے واقعات بیان کئے ہیں ۔ تذکرہ انبیار ہیں شایر حسی اور نبی کے واقعات اتنی کثرت سے بار بار و ہرائے گئے ہوں ۔ انبیار ہیں شایر حس ویل آیات ہیں خصوصیت کے ساتھ اُن کی ثنا و منقبت کا اظہار کیا گیا ہے۔ حسب ویل آیات ہیں خصوصیت کے ساتھ اُن کی ثنا و منقبت کا اظہار کیا گیا ہے۔ واقعات آئی گات مُنفِکھ اُن کی ثنا و منقبت کا اظہار کیا گیا ہے۔ واقعات آئی گات مُنفِکھ اُن کی ثنا و منقبت کا اظہار کیا گیا ہے۔

رَسُولُ نَيْسِيًّا الخ رمريم آيت عك)

رسور بیب اور یادکروموسی کو قرآن یس کہ ہے شک وہ محقے السّر کے فاص بندے اور رسول محقے بنی محقے۔ اور ہم نے اُن کوطور کی واسمی جا ماص بندے اور رسول محقے بنی محقے۔ اور ہم نے اُن کوطور کی واسمی جا سے آواز دی اور اُن کو قریب کر کے اُن سے راز کی گفتگو کی ۔ اور ہم نے اپنی عنایت ہے اُن کے جمائی ارون کو نبی بنایا۔
اپنی عنایت ہے اُن کے جمائی ارون کو نبی بنایا۔
قال یاموسی آیی اصطفیۃ یُتگ کے علا انتایس بدسلای

وَ بِكَلَا مِي . واعرات آيت عليها)

الترتعالے نے فرایا اے موسی بلاٹنگ میں نے تم کو لوگوں پر فضیلت دی اپنی پلیجامبری اور اپنی ہمکلامی ہے۔ وَ اِلْمُ مَوْسَنی تَنْکِلِیماً۔ دنیار آیت عملا)

اور الشرق موی سے کام کیا جیسا کرحقیقتاً کام ہوتا ہے۔ وَ لَقَدُ مِنَنَا عَلِمُ مُوسَى وَ هَادُونَ الْح

(صاقات آیت میدا تاعتدا)

اور بلات منهم نے موسی اور مارون پراحیان کیا۔ اور اُن دونوں کو اور اُن کی قوم کو بڑی مصیبت سے بخات دی ۔ اور ہم نے اُن کی مدو کی کہ وہ فرعون اور قوم فرعون پر غالب رہے۔ اور ہم نے اُن دونوں کوروشن کتاب دی ۔ اور ہم نے اُن دونوں کورا اُستقیم کی برایت بختی ۔ اور اُن کا ذکر فیر بچھلے لوگوں میں باقی جھوڑ ا۔ سلامتی ہوںوئی

اور ہارون پر۔

ہے تنگ ہم اسطرح نیکو کاروں کو بدلہ دیا کرتے ہیں ۔ بے شک وہ دونوں ہمارے مومن بندوں میں سے تقے ۔

يَا يَّهُا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ أَذُوا مُوسَى يَا يَنَ أَذُو امُوسَى فَبَرَّ أَهُو الله عَلَى الله عَل

بر الله مستا قالوم و كان عند الله وجيها. (احزاب ابت علا) المراب ابت علا) المراب المان والوتم أن لوكو ل كى طرح نه بهو ناجنهول في موسى

کوا یذار پہنچائی مجرالٹرنے اُن کواس بات کے بری کردیا۔ جس کوان

کی زبانیں مجہ رہی تنقیب اورموسیٰ تو الٹرکے نز ویک باعزت تقے۔ بخاری مسلم کی روایت میں نبی کریم صلی الٹرعلیہ ولم کا پیمارٹنا دِنقل کیا گیا ہے :۔

مجھکوموسی پرفضیلت مذور، اس کے کرجب قیامت سے

ون لوگوں پر دہشت سے عنی طاری ہوجائی توسب سے بہلانخص جس کو ہوش آئے گا و ہ میں ہوں گا، دیجھوں گا کہ موسیٰ علیہ استلام عرش الہی کا پایہ پکڑے کھڑے ہیں، اب میں مہیں کہ سکتا کہ اِن کو مجھے سے بہلے عنی سے

پایہ پکڑے گھڑے ہیں ، اب ہیں مہیں کہ سکسا کہ اِن کو تجھے جہتے جہتے عسی سے ہوسٹس آیا تھا یا یہ آج مہوستی سے بری کر دیئے گئے ہیں''

ابن کثیر شنے اس روایت پر نیملیق کی ہے کہ نبی کریم صلی النّد علیہ ولم کا یہ ارتثاد ازرا ہِ تواضع وانحیارہے ورنہ ایک اور مدیث صحیح میں آپ کا یہ اربٹ دخو دُنقل کیا گیا ہے :۔

أَنَا سَيِّنُ وُلْدِ أَدَمَ وَلَا فَخُرُ - (الدين)

'میں مگل اولا دبنی آ دم کا سردار بہوں اور بیہ بات فخرکے طور

پرنہیں کہہ رہا ہوں '' کلمرمی آپ کو خاتم النبیتن کما گیاہے جوآ کی ر زی کی واضح دلسل ہے ۔ مہر جال

خود قرآن مکیم میں آپ کو خاتم النبیتن کہا گیاہے جوآ بی برزی کی واضح دلیل ہے۔ بہرحال مذکورہ بالاحدیث حضرت موسی علیہ الت لام کی جلالت قدراور عظمت کا اظہار کرتی ہے نیز صدیث معراج میں حضرت موسی علیہ التلام اور نبی کریم صلی المترعلیہ ولم سے جو مکا لمات منقول ہیں اُن سے بھی حضرت موسی علیہ التلام کی عظمت وشان کا نمایاں اظہار ہوتا ہے۔ منقول ہیں اُن سے بھی حضرت موسی علیہ التلام اُن اولوالعزم انبیار ورال ہیں شمار ہوتے ہیں جنکا تذکرہ قرآن حکیم فی الغرض حضرت موسی علیہ السلام اُن اولوالعزم انبیار ورال ہیں شمار ہوتے ہیں جنکا تذکرہ قرآن حکیم فی نمایت استام کیسائھ کیا ہے۔ جیسا کہ آپنی کرشتہ صفحات ہیں قصب راحی ہے۔ بہارات اہتمام کیسائھ کیا ہے۔ وہیا کہ آپنی کرشتہ صفحات ہیں قصب راحی ہے۔

فصلوات الله وسلامة عليه.

ومنائج وعبث نر

روی محرس المحضون علیه استلام، بنی آسرائیل، فرغون اور قوم فرعون کی به طویل محضرت موسی علیه استلام، بنی آسرائیل، فرغون اور قوم فرعون کی به طویل تاریخ ایک داستان یا حکایت نهیں ہے بلکہ حق و باطل کامعرکہ ظلم و انصاف کی جنگ، غلامی و آزادی کی شب کش مظلوم کی سر بلندی، ظالم و سرکش کی ڈکت و پتی، حق کی فتح باطل کی شکست، صبرکا امتحان، ناسٹ کری و بے صبری کا انجام، قومون کے عروج و زوال کی دستاویز، نبیوں کی دعوت و شب لینے کی تاریخ اور اُسکے عواقب و نتائج کا متند ذخیرہ ہے .

ص ۱۵ کی اگر حق اور سپائی کوجس نے بھی دل سے قبول کر نیاسپائی اپنا اثر کئے بغیر نہیں رہتی اُسکے دل و د ماغ پر اسی کا غلبہ ہوجا تا ہے اور اُسکی زبان سے وہی صدائے ق نکلتی ہے جسکو اُس نے کچھ دیر پہلے قبول کیا تھا، یہی حق کا اعجازے اور اُسکی سپی علامت بھی ۔ ماحرانِ فرعون نے حضرت موسیٰ علیہ است لام سے مقابلہ سے پہلے یہ نعسرہ بلند کیا تھا:۔

وَ قَالُوا بِعِزَّةِ فِرُعَوْنَ إِنَّا لَنَحُنَّ الْغَالِبُونَ .

(شعرار آیت ۱۳۲۶)

فرعون کے جاہ و جلال کی قسم آج ہم ہی غالب ہوں گے۔ لیکن جب مقابلہ ہوا آور ُساحری کرشے " ٹاتا رہو گئے جاد و کروں پر اپنی سحری طاقت کی شے لسبی کا انکثاف ہوا تو فوری اعتراف کر لیا اور سجدے میں گر پڑے اور و ولتِ ایمان سے سرشار ہوکر فرعون کی وهمکی کا اس طرح جواب ویا :۔ تنا گؤنا کئی آئی ٹیڈیٹر کے علے ما جگاٹھ نَامِتَ الْبُیٹِیَاتِ وَالَّذِی ُ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضِ ، إِنَّمَا تَقْضِحُ هَانِ وِ الْحَيْوَةُ الدُّنْيَا إِنَّا أَمَنَا بِرَبِّنَا. الآية رالا آيت عنه)

ساحروں نے کہا ہم کی تھی نہیں کرسکتے کہ روشن دلائل سے منھ موڈکر تیرانکم مان لیں اور اُس خداسے جس نے ہیں پیدا کیا ہے، جو توفیصلہ کیا ہے وہ کر گزر، توزیادہ سے زیادہ جو کرسکتا ہے وہ میں ہے کہ دنیا کی اس زندگی کا فیصلہ کردے ، ہم تو ایمان لا چکے ہیں ۔

معیر کی بوجی میں میں میں میں میں میں میں ہوتا ہے۔ یہ بات حقیقاً قرآن تکیم کے واقعات سے لگی ہے۔ بنی اسرائیل مصر میں عرصہ وراز ٹک محکومی ، بیپ ارگی ، غربت وافلاس میں بسرکرتے رہے ، قسل اولاد کی مصیبت سے بھی دو چارر ہے ، عور توں کی باندیاں بننے کی ذکت ورسوائی بھی اُمھانے رہے ، اور خو دبھی فرعونیوں کے فلم وستم سے عاجزو ہے بس ہوگئے ، گروہ وقت آہی گیا جو صبر کا نتیجہ کہلا تاہے بطلم کو بھی بق امنیں رہی مظلوم کی آہ نے اسی دنیا میں ظالم کو مزہ چھایا ہے۔ فرعون کی تباہی اور اُن کی غرق بی نے اُمھیں ہرقسم کے مصائب سے بجائے بیا۔

قرآن ملیم نے اس حقیقت کوصبر کا نتیجه قرار دیا ہے۔ وَ تَدَّتُ کَلِمَدُ کَلِمَدُ مَ بِلِكَ الْحُسُنَىٰ عَلَا بَنِی ٓ اِسُرَا مِیْلَ بِمَا

صَبَرُود. الآية دا عراف آيت عكال

اوربنی اسرائیل پرتیرے رب کانیک وعدہ پورا ہوا اسس

وجہ سے کہ انتخوں نے صبر کیا ۔ باطل کی طاقت کتنی ہی زبر دست اور پُرشوکت ہوا نجام اس کا نامرادی اور شکست سے سوا کچونہیں ۔ یہ یہ دہ اللہ ہمیشہ سے جاری رہی ہے کہ جن قوموں کو ذلیل وحقیر سمجھا گیا ایک دن ایسا مجی آیا ہے کہ وہی صنعیف و کمزور قوییں زمین کی وارث بنی ہیں اور حکومت واقتدار اسمجے ایت میں تیں ۔ یہ میں مدہ ۔ یک نارا حکوں رکھا قیتی ایا تیزیاں ماہم

ا تقدیں آیاہے۔ بیپی وجہ ہے کہ ظالم حکمراں کا اقتدار یا پائیدار رواہے۔ استحدی قوم پر کا فروظ لم حکمراں کامسلط ہونا اُس حکمراں کی عندالٹرمقبولیت کی علامت جلدا ول

بدایت کے جماغ

نہیں بلکہ وہ ایک طرح کا عذاب ہے جومحکوم قوم کی بڑملیوں کے باعث یا داش عمل کی صورت یں ظاہر ہو تاہے۔

أَغْمَا لُكُوعُمَّا لُكُوُ (الحديث) تمہارے اعمال خود تمہارے ماکم ہوتے ہیں .

جب فَرعونِ اور اہل فرعون کی سکرشی مدے تجا وزکر گئی توحضرت موسیٰ علالسلام نے بارگاہ اللی میں وُعاکی الله اب استخیں سزا دیے کیسی طرح راہ راست پرنہیں آتے۔ عذاب كاسسلسله ستروع ہوا كيے بعد دكير پانج عذاب آئے پاني كاطوفان ، المريح دل، جَوْرُوں کی کثرت ، تینٹرک کی کثرت ، ٹیا نی کاخون ہوجا نا۔

ہرعذاب سے وقت فرعون اور اسکی قوم درخواست گزار ہوتی اے موسیٰ آگریہ عذاب ہم پرے دفع ہوگیا توہم تجہ پَر ایمان لے آئیں گئے اورجب و ہ دفع ہوجا تا تھر وہی تمردا ورسخفی کرنے لکتے اس طرح ایک مت تک اتھیں مہلت ملتی رہی اور جب سی طرح باز نه آئے آخر کارعذاب النی سے غرف کردیے گئے.

یہ ایک ان ان کمزوری ہے جوازل سے ملی آرہی ہے مصیبت سے وقت انسان پکارنے لگتاہے کہ آگریٹل جائے تو وہ تھراس گنا و سے قریب بھی نہ جائیگائیکن بہت تم ایسا ہواہے کہ انسان اپنے عہد پر قائم رہا ہو، تیکن اسکے با وجو دمھی النّدتعالیٰ کی موصیل طری دراز ہونی ہے جس سے انسان دھوکہ میں بڑجا تاہے اورجب و ہ اُس آخری مدکو پہنچ جا تاہے جوعلم اللی میں اسی آخری مهلت علی تو مجرالتری گرفت اس کا خاتمہ کردیتے کے یا مجران میت كو يهميشه كے لئے جين كيتى ہے جس كا و و نامشكر كرزار رہا ہے۔ قوم فرغون كى بيرمالت كنے والے انسانوں کے لئے عبر تناک درس ہے۔

عزم وبهمت كي موت سل نوں کے لئے منابی یا ممکوما نہ زندگی ایک بڑی لعنت اور عذاب ہے اور اسپرقانع ہو کرمطئن ہوجا نا دراصل عذاب الہی اورلعنت الہی پرقناعت کر لینے سمے مرادق ج یہی وجہ ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام نے فرعون کو دعوتِ حق دیتے ہوئے یہ مطالب م مجھی کیا تھا کہ بنی اسرائیل کو اپنی غلامی سے آزاد کر اور اُن کو میرے ساتھ کر دیے تاکہ میں انھیں یہاں ہے بھال ہے جاؤں .

غلامی اور محکوما نہ زندگی کے اثرات بڑے گہرے ہوتے ہیں ۔ اِن میں سب سے بڑا اثریہ ہوتا ہے کہ ہمت وعزم کی روح پست اور مجروح ہوجا تی ہے ۔ میھر دفتہ رفتہ بہی انسان اس ذکت آمیز زندگی کو نعمت مجھنے گئا ہے ۔ اس طرح اسکی قوتِ عمل ضمل ہوجا تی ہے اور وہ قدم قدم پر دوسروں کا سہارا ڈھونڈ نے گئا ہے ۔ بنی اسرائیل کی سسل غلا مانہ زندگی نے انھیں اسقدرلیست اور کم ہمت کردیا تھا کہ اپنے ارضِ مقدس داصلی وطن) میں داخلہ اور وعد وُ نصرت کے باوجود انھوں نے وہ تاریخی جھکے کہد ئے جوصر بن غلام قوم ہی کہتی ہی۔ وعد وُ نصرت کے باوجود اُنھوں نے وہ تاریخی جھکے کہد ئے جوصر بن غلام قوم ہی کہتی ہی۔ وعد وُ نصرت کے اور دور اُنھوں نے وہ تاریخی جھکے کہد کے جوصر بن غلام قوم ہی کہتی ہی۔ وعد وُ نصرت کے باوجود اُنھوں نے وہ تاریخی جھکے کہد کے جوصر بن غلام قوم ہی کہتی ہی۔

اے موسیٰ تم اور تمہارا رب دونوں جاکراُن سے لاوہم تو

یہیں بیصے ہیں۔ دراصل یہی عزم وہمت کی موت ہے جو اُسی غلامانہ زندگی کا نتیجہ ہے جومحکوم قوموں کا نصیبہ بن جاتی ہے .

تحمال داناني

سور ہ کا گیب فرعون اور حضرت موسی علیہ الت لام کا مکا لمہ اسطرح درج ہی:۔ ہم تیرے رب تیرے رب کی نشانی ہے کر آئے ہیں اور سلاتی ہے اُس خص پر جو راہِ راست کی پیروی کرے.

ہم کو وی کے ذریعے تبایا گیا ہے کہ عذاب ہے اُس کے لئے جو حصالائے اور منھ موڑے۔

فرعون نے کہا اچھا تو بھرتم دونوں کا رب کون ہے ؟ موسیٰ نے جواب دیا ہمارا رب وہ ہے جس نے ہر چیز کو اُسکی ساخت بخشی ہے بھیراسکو ہدایت کی ۔ اُسکی ساخت فرعون نے کہا تو بھیر مہلے جونسلیں گزر مکی ہیں اُن کا کیس

انجام ہوا ؟

موسیٰ نے جواب و یا اس کاعلم میرے رب سے پاس ایک نوشتے میں محفوظ ہے . میرارب نہ جو کتا ہے نہ معبولتا ہے۔ (كارتات عند تاعده)

فرعون سے سمینے کامطلب یہ تھاکہ اگر بات میں ہے کہ اُس رب کے سواکونی دوسرا رب نہیں تو یہ ہم سب سے باپ وا واجونسل درنسل و ونسرے ارباب کی بندگی کرتے جائے آئے ہیں آخرا بچے بارے میں تمہار اکیا خیال ہے ؟ کیاوہ سب گمراہ سقے ؟ کیا وہ سب عذاب سي ستحق عقے ؟

يه ايك ايسا جا ملا نه سوال تحاجس كاجواب بروقت دينا كچه آسان به نحت ا اہں حق کی تبلیغ سے خلاف بیہ تھکنٹہ ہمیشہ استعمال کیا جا تا رہا ہے۔ پیطرز جاہلوں کو مثنتعل کرنے اور اپنے لئے راہ فراہم کرنے سے بٹے بڑا مؤثر ثابت ہوا ہے۔ آگر حضر موسیٰ علیہ ات لام کہتے کہ ہاں وہ سب کے سب جاہل گمراہ تھے اورجہنم کا ایندھن ہوں گئے توجا ہے این حقائر فی کا بڑا زبر دست نمونہ ہوتا منگریہ جواب اپنی حقانیت کے با وجو وحضرت نموسی علیه است لام سے بجائے فرعون سے مقصد کی تقویت کا سبب بن جا آ ا ورقوم بدک کرحضرت موسی علیه استلام سے کٹ جاتی ۔ سکین آنجناب نے کال دانانی ہےابیا مکیمانہ جواب ریا جو سجائے خو دحق مجی مضا اور فرعون سے جا ہلانہ ستھکنڈے کا جواب مھی ۔

فرمایا وہ لوگ جیسے کچھ تھی تھے اپنا کام کرکے الشرکے ال جا مجلے ہیں، میرے اس ایخ اعمال اور نیتوں کو جانے کا کوئی ذربینہیں ہے کہ ان سے بارے میں کوئی حکم لگا دوں ، ان کا پور اعمل ابٹرے ہاں محفوظ ہے اللہ کی نگاہ ہے کوئی چیز بوشیدہ نہیں اور نہ و کسی بات کو بھول ہے۔ اِن کے ساتھ جو بھی معاملہ خداکو کرناہے اُسکو

وہی جاتاہے۔ رطایت ۲۲)

يهمقى حضرت موسىٰ عليه التسلام كى محمالِ دا نا في كرايك سوالِ جا المانه كا ايساجوابٍ مكيما بنه دیا کہ بجائے خو دحق مجی تھا اور ساتھ ساتھ اس نے فرعون کے اُس زہریلے ہتھکنڈے کومجی تاتارکردیا انبیارکرام کے کلام کایہی اعجازے جو انفیس الترکی جانب سے مہتاکیا جاتا ہے۔ مہتاکیا جاتا ہے۔

معلم کی اعامت حضرت موسیٰ علیہ الت لام کے ہاتھ سے نا دانستہ ایک قبطی دفرونی) کا قتل ہوگیا مقاجسپراُ مغول نے اپنے رب سے اسطرح معذرت کی تھی :۔ اے میرے رب میں نے اپنے آپ پڑھلم کرڈ الاہے میری مغفرت فراد ہے، النّہ نے ان کومعاف فرادیا ، دقصص آیت ملا) داس معانی پرحضرت موسیٰ علیہ الت لام نے عہد کیا کی اے میرے رب یہ اصان جو تو نے مجھ پر کیا ہے اسکے بعد یں کبھی مجرموں

> کا مدوگار نه بنول گار د تصص آیت سا) بعنی اب میں کسی ظالم کی اعانت نهبیں کروں گا اور نه اُسکی پیشت پناہی ۔

علمارسلف نے اس آیت سے یہ استدلال کیا ہے کہ مسلمانوں کوظالم کی پیشت پناہی یا اعابنت سے کامل طور پر امتناب کرنا چا ہینے ظالم خواہ فرد ہویا گروہ ہویا محومت

وسلطنت.

مشہور تابعی عطار بن ابی رباح شے کسی نے عرض کیا کہ میرا مجائی بنی اُ میں کی حکومت میں کوفے امیر کا کاتب دسکرٹری ہے۔ معاملات کے فیصلے کر نا اس کا کام نہیں ہے البتہ جو فیصلے امیرکر تا ہے وہ اس کے فلم سے جاری ہوتے ہیں۔ یہ نوکری وہ نہر کرے تومفلس ہوجائے گا (مقصد یہ نفا کہ سلاطین بنوا میتہ کے امرار عمو با غلط سلط فیصلے کر دیا کرتے ہتے اس سے بعض حقداروں کی حق تلفی ہوجایا کرتی تھی ،حضر سے فیصلے کر دیا کرتے ہتے اس سے بعض حقداروں کی حق تلفی ہوجایا کرتی تھی ،حضر سے عطار شنے جواب میں مہی آیت پڑھی جو عہدموسی "کہلاتی ہے۔ اسکے بعد فرما یا کہ تیرے مصافی کو چاہئے کہ اپنا قلم بھینک دے درق دینے والا التارہے۔
میانی کو چاہئے کہ اپنا قلم بھینک دے درق دینے والا التارہے۔
اسکی طرح ایک اور کا تب نے عامر شعبی شسے یوچھا مقا کہ جناب میں احکام کھوکر

اسی طرح ایک اور کاتب نے عام تعبی جسے پوچیا متنا کہ جناب میں احکام لکھ کر جاری کرنے کا ذر دار ہوں فیصلے کرنے کا ذر دار نہیں ہوں کیا یہ رزق میرے لئے

ملال ہے ؟

برایت کے چراغ جلدا قل

حضرت عامشعبیؒ نے جواب دیا کہ اگر حاکم نے کسی ہے گنا ہ سے قبل کا فیصلہ کیا ہو یاکسی کا مال ناحق ضبط کیا ہو ؟ یاکسی سے گھرگرانے کا پیم دیا ہوا ور وہ تمہارے قلم سے جاری ہوجائے تو کیا یہ درست ہے ؟

اسکے بعدا مام موصوف نے ندکورہ بالا آیت پڑھی جسے سنتے ہی کا تب نے کہا میں تو بہرتا ہوں آج سے بعد میراقلم امرار بنوامیۃ سے احکام جاری کرنے میں

استعمال نهروگا.

اسپر حصارت عام شنے فرمایا بھرالتہ بھی تمہیں رزق سے محروم نہ کرہے گا۔
روح المعانی میں آیک اور واقعہ درج ہے کہ امیر عبد الرمان بن سلم نے حضرت صحی کی مقرد کرنا چا ہا کہ وہ شہر بخارا کے ملازمین کی نخواہی جا کرتھ ہے کہ دیا ہے کہ دوست نے مقرد کرنا چا ہا کہ وہ شہر بخارا کے ملازمین کی نخواہی جا کرتھ ہے کہ دوست نے جا کرتھ ہے کہ کوکیا ہوگیا آخر اسمیں کیا حرج ہے ؟ حضرت ضحاک تے جواب دیا کہ میں کہا فتھاک تم کوکیا ہوگیا آخر اسمیں کیا حرج ہے ؟ حضرت ضحاک تے جواب دیا کہ میں کا لموں کے سی کام میں بھی مدو گار بنیا نہیں چا ہتا ۔
کا لموں کے سی کام میں بھی مدو گار بنیا نہیں چا ہتا ۔

آیام ابوضیفی کا یہ واقعہ تو بہت ہی مشہورے کہ امھول نے تباسی دور کے ملیفہ منصور عباسی کے ایک فوجی افسرحین بن قطبہ کو ملازمت چیوڑ دینے کی تلقین کی مقی جیرحسن نے یہ کہ کر استعفادے ویا تھا کہ امیرا لمومنین آج تک میں نے آپ کی حکومت کی جمایت میں جو کچے مجی کیا ہے یہ اگر النٹر کی داہ میں مقاتو میری بخات کے لئے اتنا کافی ہے کیکن اگر نیللم کی داہ میں صرف ہواتو میں اپنے نامۂ اعمال میں مزید گناہ کا اضافہ کرنا نہیں چا ہتا۔ یہ کہ کر ملازمت سے علیٰدہ ہو گئے دخلیفہ منصور کے بعض احکام غیر بھی شکل میں ہوا خرت کا بڑا خسا رابیدا کر دیتی ہو اگر انسا دابیدا کر دیتی ہو اللہ حاحفظنا منہ نہ

حمیا وار کر کیا گ صفرت موسیٰ علیہ الت لام نے شہر مدین کی جن و کو کڑکیوں کی خدمت انجام دی تقی اور بھر ان کڑکیوں نے اپنے باپ سے سارا واقعہ بیان کیا، بوٹہ ہے باپ نے اپنی لڑکی کو دو بارہ بھیجا کہ اس اجنبی سافر کو لے آئو۔ لا كى في صفرت موسى عليه التسلام كوا بين بوار سے باب كا جو بيغام بہنيا يا قرآن مكيم نے اُسكى كيفيت كواس طرح بيان كيا ہے:-فَعَاءَن مُن اِحُد مِهُمَّا تَن شَيْ عَلَى اسْتِحْدَا إِقَالَتُ اِنَّ إِنَى يَدُعُولُهُ لِيَجُدِيدُ لَهُ آجُرَمًا سَقَيتَ لَنَا الحَ

(تصص آیت عصر)

دکچھ دیرنہ گزری کہ) ان دونوں لڑکیوں میں ہے ایک سٹرم وحیا کے ساتھ چلتی ہوئی اُن کے پاس آئی کہنے گلی میرے والد آپ کو بلارہے ہیں تاکہ آپ کو برلہ دیں اُس خدمت کا جو آپنے ہماری کمروں کو سے اب کیا ہے۔

بات سرم وحیاتی اس کئے تھی کہ ایک اجنبی مرد سے پاس اکیلے آئی تھی اگر گھر ہیں کوئی

خاوم ہوتاً تو اِسکی نوبت ہی نہ آتی۔

مَصْرَتُ عَمُرُ فِي السَّرِيَّةِ مَى يَفْسِيرِ بِيان كَى ہِ :-جَاءَ تُ تَمُثِنَى عَلَمُ اسْتِحُيَّاءٍ قَائِكَةً بِثُوبِهَا عَلَى وَجُهِهَا لَيُسَتُ بِسَلْفَعِ مِنَ النِّسَاءِ وَلَاجَةً وَلَاجَةً خَوَاجةً.

(ابن جرير ،ابن ابي حاتم)

وہ مترم وصاکے ساتھ علی ہوئی اپناچپرہ تھونگھٹ ہیں چھپائے ہوئے آئی، اُن بیباک عور توں کی طرح وندناتے علیٰ ہیں آئی جو ہرطرت کل جاتی اور مرحکہ تھس جاتی ہیں "

اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ جیا داری کا تصور کتنا قدیم اور شرفار کی فاص علات
رہا ہے۔ صحابہ کرام کے عہد ہی بھی یہ تصور جوقر آن تکیم اور نبی کریم صلی الشرطلیہ و کم
کی تعلیم و تربیت سے اِن بزرگوں نے جو سمجھا تھا وہ بہی تھا کہ عور توں کو اجبیوں کے
سامنے تھے بھرنا ور گھرسے باہر ہے باکا نہ چلت بھرت اسلامی جیا داری کے بالکل خلاف
سے جضرت سیدنا عمر اُنے صاف الفاظیں چہرہ قوصا کئے کو جیا کی علامت اور اسے
اجنبی مردوں کے سامنے تھولنے کو بے جیائی قرار دے رہے ہیں۔
اجنبی مردوں کے سامنے تھولنے کو بے جیائی قرار دے رہے ہیں۔

شهر رین سے سردار حضرت شعیب علیه استلام کی صاحبزا دیوں کی پیغیرت

برايت كم چراغ

و حیاداری اونجی اونجی مشربین زا دیوں کے لئے کتنی سبق آموز ہے۔

اسلامی تبذیب اورفقهی نزاکت حضرت موسیٰ علیه اسلام مصری بجر اسلامی تبدین کے شیر دین کے شیر دین کے شیخ کبیر

کے ہاں مہمان ہوئے، کچھ دن بعد سے کبیر دحضرت شعیب علیہ استلام)نے ان کواپنا دا ما د بنا نا چا ہا اور اسکے لئے حضرت موسیٰ علیہ استلام سے اسطرح خطاب کیا :-وَا مَا وَ بِنَا نَا چَا ہِا اُور اسکے لئے حضرت موسیٰ علیہ استلام سے اسطرح خطاب کیا :-قَالَ إِنْ اُنْ اللّٰهِ اَنْ اُنْکِحَلْفَ اَحْدَ ابْنَدَی هُذَیْنِ الحَ:

(نصص آیت ۲۷)

باپ نے رموسیٰ ہے) کہا میں چاہتا ہوں کہ اپنی ان ڈو بیٹیوں میں سے ایک کا نکاھے تمہارے ساتھ کر دوں بشرطیکہ تم آٹھ سال کس سے ایک کا نکاھے تمہارے ساتھ کر دوں بشرطیکہ تم آٹھ سال کس

میرے ہاں ملازمت کریں۔ آیت بالا کے بخت نقبار نے لکھا ہے کہ لڑکیوں کے ولی کو جا ہیئے کہ اگر کوئی مردصالع مل جائے تو اس کا انتظار نذکر ہے کہ مرد کی طرف سے نکاھ کی بخریک نہو ملکہ خود ہی تخریک کر دینا انبیار کی سنت رہی ہے۔

نیزسید ناعرش نے اپنی صاجزا دی حضرت حفصہ کے بیوہ ہوجائے سے بعد ازخود ہی حضرت صدیق اکبر اور اسکے بعد سید ناعثمان نی ا سے اُن سے نکاچ کی پیشس سے تھی بچر بعد میں ہر دوصاحبین کی رائے

سے بی کریمی النّزعلیہ ولم کے عقد نکاح ایس آئی۔ دقرقبی)

نیز آیت ندکورہ میں لفظ ایکحقہ جس کا ترجمہ میں آپ کا نکاح کرناچا ہتا ہوں ، فقہارکرا کے

نیز آیت ندکورہ میں لفظ ایکحقہ جس کا ترجمہ میں آپ کا نکاح کی معاملت کرنی چاہئے، لڑکی

خودمعاملت ندکرے، جیسا کرمغربی تہذیب کی لؤکیاں خود اینا معاملہ طے کرلیتی ہیں۔ یہ

اور بات ہے کہ ہیں کسی صرورت یا مجبوری ہے کسی بالغ لؤگی نے اپنا نکاح خود کرلیا

توآیا وہ نکاح صحیح ہوجا آ ہے یا نہیں ؟ اس سکلے میں المدفقہار کا اختلات ہے۔ امام

ابوطیفہ رم کی تحقیق ہے کہ ایسا نکاح درست ہوجا آ ہے۔

ابوطیفہ رم کی تحقیق ہے کہ ایسا نکاح درست ہوجا آ ہے۔

مہرجال آیت سے یہ سکلے منتعلق ہے بیکن اسلامی تمذیب کی نشان دی

ہدایت کے چراغ صرور ہوتی ہے۔

فرعون اور اہل فرعون کو قرآن مکیم نے "اُنمة جہتم" قسسرار دیاہے۔ وَجَعَلْنٰ هُوْ آبِتَنَاً يَدْعُونَ إِلَى النّابِ

آخرت کی معتبی اورزهین آیک نادر تفسینر

وَ يَوْمَرُ الْقِيلَةِ لِلا يُنْصَرُونَ . رقص آيت ١١)

اً ورہم نے اہفیں جہنم کی طرف دعوت دینے والے پیٹوابنادیا

اور قیامت کے روز وہ کہیں سے مدونہیں یاسکیں سے "

فرعون اور استحے ارکانِ سلطنت تو آپنی دانست تیں صلاح و فلاح کی طرف وعوت د ہے رہے بیچے نیکن قرآن محیم نے امفیں 'داعی الی النار" قرار دیا ہے۔

رہے ہے۔ کا مراق ہے ہے ہیں وہ کی اماد سرادویا ہے۔ ایک استفارہ اور مجاز قرار ویا ہے بعنی اکتار استفارہ اور مجاز قرار ویا ہے بعنی اکتار سے مراداعمال کفروشرک ہیں جن کا نتیج جہنم کی آگ داکتار) ہے ، کین صوفیہ سے سرخیل می الدین ان عربی نے اِس کا ایک معنی خیر مطلب بیان کیا ہے وہ سمجتے ہیں کہ آخر کی حزاد سزا دمعتیں آور زحتیں) حقیقتاً اعمال ہی ہیں ۔ اٹسان جوعمل دنیا میں کرتا ہے کی جزاد سزا دمعتیں آور زحتیں) حقیقتاً اعمال ہی ہیں ۔ اٹسان جوعمل دنیا میں کرتا ہے ہیاں اُس کا کوئی مطوس جم نہیں ہوتا صرف تھی وصورت ہی ہے لیکن میں علی وصورت ہی ہے لیکن میں علی وصورت

عالم آخرت میں اپناجسم اختیار کرنے گا۔ نیک وصالح اعمال جنت کی معتیں بن مائیں سطح اور بداعمال کفروشرک جہنم سے عذاب بن جائیں گئے۔

جنت کی نیعتیں اورجہم سے یہ عذاب دراصل وہی اعمال ہیں جو دنیامیں انسان نے کئے تھے اسلئے جوشخص اس و نیامیں تھی کو کفروسٹرک کی دعوت دے رہا ہو و ہ حقیقتاً نادِجہم کی دعوت دے رہا ہے آگرجہ اِس ونیامیں اسٹی شکل آگ کی نہیں ہے

مگراسی مقیقت آگ ہی ہے۔ مگراسی مقیقت آگ ہی ہے۔

اس تفسیر پر فرعون اور آعیان فرعون کے بارے بین پرکہنا کہ وہ اکہ جہنم "
ہیں حقیقت پرمحمول ہے مجازیا استعارہ نہیں ہے۔ والٹراعلم
ابن عربی کی یہ وصاحت قرآن حکیم کی دیجرآ یات سے مجی مطابقت رکھتی ہے۔
سورہ کہف کی آیت و وَجَدُوْا مَا عَیدُوْا حَافِی اللّٰیۃ (۴۶)

آیاہے :۔

اور اُن لُوگوں نے جو بھی عمل کیا تھا اسکو آخرت میں موجود پایا۔ یَوُمَدِ پَیْصُدُ مُن النّاسُ اَشْتَا تَّالِیُوُوا اَعْمَا لَهُمُو فَسَنُ یَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَمَّ فِی خَدُرًا یَرَهُ وَمَن یَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَمَّ فِی شَدُا یَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَمَّ فِی خَدُرًا یَرَهُ وَمَن یَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَمَّ فِی شَدَا

اُس روز لوگ مختلف جماعتیں ہوکر والیں ہوں گے تاکہ اپنے اعمال کو دیجے لیں دمیدان حشریں ہرایک کے اعمال دکھلادیے جا بینگے ، موجی خص نے ذرّہ برا برنجی کی وہ اُسکو دیجے لے گا اور جب خص نے ذرّہ ہ برا بر بری کی وہ اسکو دیکھ لے گا۔

یه آیات بھی اس حقیقت کی طرف نشان دہی کرتی ہیں کہ آخرت میں دنیا کے اپنے اعمال کو لوگ دنیا کے اپنے اعمال کو لوگ دبیجے لیس کے بیٹی اس دنیا میں وہ اعمال اپنا کوئی جسم نہیں رکھتے ہیں کین کا خوت میں وہ ایسے ہوجا میں گے کہ شرخص اپناعمل خود دبیجے سکے گا۔ آخرت میں وہ ایسے ہوجا میں گے کہ شرخص اپناعمل خود دبیجے سکے گا۔

فیصل کی بات وعوت رسالت لیکر پہنچے ہیں اس وقت انتخیں وونشانیاں وعوت رسالت لیکر پہنچے ہیں اس وقت انتخیں وونشانیاں وی گئیں جنکو قرآنی زبان میں آیات" اور علم کلام کی زبان میں مغزات" کہا جا ہے۔ یہ وی گئیں جنکو قرآنی زبان کی آیات "اور علم کلام کی زبان میں مغزات "کہا جا ہے۔ یہ ورت اور ہیں جو کا کنات کا خالق اور فربال رواہے۔ انبیار کرام نے جب میں اپنے کورٹ العالمین کا رسول کہ کرقوم کو دعوت وی الدی اس نے ہوں تو کوئی نشانی پینے سکریں۔ قرون اور اہل فرعون نے میں حضرت موسی علیہ استلام سے میں مطالبہ کیا تھا

حضرت موسی علیہ است الم فے اسکے لئے دونشان سیش کئے جس کا تذکرہ اس آیت ہی

فَالْقَ عَصَاءٌ فَإِذَا فِي تَعْبَانٌ مَينِينٌ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا فِي

بَیْضَاً اُ لِلنَّیْظِدِیْنَ. داعران آیت ۱۰،۱۰،۱ میلی میرموسی نے اپنا عصافوال دیا تووہ سکا یک جیتا جاگا اژدہ

عقا اور اپنی گریباں سے ہاتھ شکالا تو وہ کو پیھنے والوں کے سامنے چک رہا ہفت ایم

رکھتے ہیں جسکا نعارت قرآن مکیم کی بے شمار آیات پیش کرتی ہیں تو پھر
ان کے لئے بیت کیم کرنامشکل نہیں ہے کہ جوالٹرنظام کا کنات کو ایک
قانون پر میلانے سے بعد ہرآن اُس پر باخبرہے اور ہروتت اسکوا متیار
عاصل ہے کہ وہ است یار کی شکلوں اور واقعات کی مقررہ رفتار میں

جزن طور پریائی طور پر جیسا چاہے تغیر کردے تو ایسے حضرات کے لئے معجزات کو سمجھنا اور سیم کرنا کچھٹسکل نہیں ہے۔ ظاہرے جب آ ہے۔ کا یہ اعتقاد ہوگا کہ اثر دہے جس طرح پیدا ہوا کرتے ہیں وہ اُسی طبرح

بیدا ہو سکتے ہیں اُس کے سواکسی اور ڈھنگ پر کوئی از دھا پید اکردیا

الترك قددت عبامر بتوجيرات نياك ايع فداكا تصور اسي

ذہن میں رکھا ہے جو ایک مدید عاج و بے سب بھی ہوجا آہے۔ یقیناً یہ تصوّر رب العالمین سے تصورے بالکل مختلف ہے۔

لیکن اسے بوکس آپ کا یہ عقیدہ ہوکہ التروہ ہے جوبے جا

اقے میں زندگی پیداکر اے اورجبکو چاہے جب چاہے جیسی چاہے مورت عطا کرسکتاہے تو ایسے الترکے حکم سے لامٹی کا اڑ دھا بن جا اکیا مشکل

اور نا قابل فہم ہے ؟

حقیقت یہ ہے کہ مجزات کا تعلق ' خدائی اقتدار' سے متعلق ہے ہے کہ مجزات کا تعلق ' خدائی اقتدار ' سے متعلق ہے ہے کہ خطبیم کی محفظ میں کہ اللہ عظم میں معلق ہے ۔ صفتِ اقتداد کے ماننے یانہ ماننے ہے متعلق ہے ۔

عظیم انقلاب اور دل راه صفرت موسی علیه ات لام اور نسرعونی سام انقلاب اور دل راه سام ورب کے مقابلہ کا انجام قرآن علیم نے

منطام كياب: قرأ كُفِيَ السَّحَرَةُ سُجِدِينَ - قَالُوْآ أَمَنَا بِرَبِّ السَّحَرَةُ سُجِدِينَ - قَالُوْآ أَمَنَا بِرَبِّ السَّحَرَةُ سُجِدِينَ - قَالُوْآ أَمَنَا بِرَبِّ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل

(اعران آیت ۱۲۰ تا ۱۲۹)

اور جا و و گرسجدے میں گر بڑے۔ کہنے مگے ہم رب العالمین

پرایمان ہے آئے جوموسیٰ اور ہارون کا رب ہے۔ ساحروں کاایمان لا نامحسی سازش کا نہیں بلکہ سیچے اعتراف کا تیجہ تھا۔ فرعون نے اس کو

من مروں کا بیاں کا کا ماں میں کا بین بھی میں اس کے بیٹ کا مور است کا مقال ہے۔ محر و فریب اور سازش قرار دے کریہ دھنگی دی کہ بیں انجمی تمہارے کا مقر پاؤں مخالف سمتوں سے کٹوا دوں گا اور اس سے بعدتم سب کوسُولی پرچڑھا وُں گا۔

معنوں سے سوا دوں ہے اور اسے بعد م حب ہو ہوی پر پرھا وں ہو۔ ساحروں نے جواب دیا بہرصال نہیں لوٹنا تواپ رب ہی کی طرف ہے دائی طبعی موت نہیں اس طرح حضور رب ہیں پہنچ جائیں گے، توجس ہات پر ہم سے انتقام لینا چاہتا ہے وہ اس کے سواکچھ نہیں کہ ہما رہ رب کی نشانیاں جب ہمارے سامنے آگئیں تو ہم نے اُسمنیں مان لیا۔

"اے رب تہم پرصبر کا فیضان کر اور ہمیں وُنیا سے اُ مطاتواں

عال میں کہ ہم نیرے فرمانبردار ہوں "

یہ مقاجواب ساحروں کا جواہمی چند کموں پہلے اپنے آقا ومولیٰ فرعون کے عزت و جلال کی قسم کھاکر کہدیہ سے کہ ہم ہی غالب ہوں گئے اورسر کاری ندمہب کی نصرت وحمایت کے صلہ میں فرعون سے پوچھ رہے تھے کہ سرکار! اگر ہم آپ سے وین کوموسیٰ کے حسلہ سے بچا لے جائیں توہمیں کمیا انعام ملے گا؟ ان ہی لمحات میں ایمان کی جوروشنی ملی تو جادوگروں کی سیرت میں کتناعظیم انقلاب آگیا، نبعت ایمان نصیب ہوئی انکی حق پرستی اوراً و لوالعزمی اس حدکو پہنچ گئی کے خون کی جبو فئی کبریائی کو مفکوکر مارتے ہوئے اس کے بدترین سنراؤں کو مفکنے سے لئے تیار ہیں جبی وہ وصی دے رہا مقامگراکس جی کوچپوڑنے سے لئے تیار ہیں جبی وہ وصی دے رہا مقامگراکس جی کوچپوڑنے سے لئے قطعًا تیار نہیں جس کی صداقت اِن رکھل مجی ہے۔

إن ساحرون كامندرج في للمه قيامت كك ك كے لئے حق پرستوں كا دسيل دا

تسسرار يا يا :-

فَاقْضِ مَا آنْتَ قَاضِ إِنَّمَا تَغُضِى هَذِي الْحُيَوةَ الدُّنْيَا. وَاللَّهُ الدُّنْيَاءُ اللَّهُ الدُّنْيَاء

تجعکوجوکرناہے وہ کر گزر توزیادہ سے زیادہ کس اسی و نیا کی زندگی کاخاتہ کرسکتاہے۔

فيركى زنركى أنام يعنون اور آل فرعون كالفروى انجام اس طرح بيان كياكيات النّاس يعنوضون عليفا عدوةً ادَّ عيشيًّا ويون مَرتَقَومُ المتّاعَةُ

آدُ خِلُوْ اَلْ فِوْعُونَ اَشَدَ الْعَدَ اب دالمون آیت ۲۸)
مرووزخ کی آگ ہے جس کے سامنے صبح و تنام وہ پیش کے جانے ہا استے ہیں اورجب قیامت قائم ہوگی تو تھم ہوگا کہ آل فرعون کو شدید ترین عذاب ہیں داخل کرووں

حضرت عبدالله بن سعور اس آیت کی تفسیریه بیان فرمایا مرتے تھے کہ آل فرعون کی رومیں سیاہ پر ندوں کی شکل میں ہر روز صبح و سنام و تو مرتبہ جہم کے سامنے لائی جاتی ہیں اور چہم دکھلاکر آن کے مہارا اصلی عفکا ندیہ ہے۔ دست عبدالرزا ق مظہری) بخاری و کم کی ایک روایت میں ہی کریم ملی الشرطیبہ و کم کا یہ ارشافیقل کیا گیاہے:۔ بخاری و کم کی ایک روایت میں کوئی مرجا تا ہے تو مالم برزخ دقبر کی زندگی میں جب تم میں کوئی مرجا تا ہے جہاں قیامت سے حساب کے مسل کے حساب کے مسل کے حساب کے مسل کی ایک و وہ مقام و کھایا جاتا ہے جہاں قیامت سے حساب کے مسل کے حساب کے مسل کو وہ مقام و کھایا جاتا ہے جہاں قیامت سے حساب کے مسل کو وہ مقام و کھایا جاتا ہے جہاں قیامت سے حساب کے

بعد اُس کو پہنچنا ہے اور بیر مقام و کھلاکر اُس سے کہا جاتا ہے کہ اخسیر کار شخصے یہاں پہنچناہے۔ اگر بین خص اہل جنت میں سے ہے تو اس کا مق م جنت اسکو د کھلا یا جائے گا اور اگر اہل جہنم میں سے ہے تو اُس کا مق ا جہنم اسکو د کھلا یا جائے گا:

آیتِ ندکور ہ بھی عذاب قبر کا واضح ثبوت ہے جس کا بکٹرت ذکرا مادیث میں آیا ہے اس لئے اسپرائٹ کا اجماع ہو چکا ہے کہ قبر کی زندگی معبی ایک حقیقت ہے ایسے ہی جیب کہ عالم حشرٔ

جنت ،حبنم وغيره .

بست بہم و میرود التٰر تعالیٰ بہاں واضیح الفاظ میں عذاب کے قرّو مرطوں کا ذکر فرمادہ ہیں ایک ایسا عذاب جو قیامت آنے سے پہلے فرعون اور آل فرعون کو دیا جار ہاہے اور وہ یہ سے کہ اسمنیں صبح وسٹ م دوزخ کی آگ کے را منے پیش کیا جا تا ہے جے ویچھ دیجھ کروہ سخت کرب و بے مینی میں مبتلا ہیں اورجن کا وہ دائمی ٹھکانہ قرار پائے گا۔ عذاب کا دوسرام طدوہ ہوگا جب قیامت آجائیگی تو اسمنیں اور مجرموں کے را تھ

جہنم میں جبونک ویا جائے گا جواگن کی اصلی اور دائمی بدترین زندگی ہوگی۔ قرآن تکیم نے اس درمیانی زندگی کوجوموت سے بعد صفرے پہلے ہوگی" برزخ" سے نام سے یا دکیا ہے اسی کو قبر کی زندگی تھی کہا جا تاہے جسکی مزید وضاحت نبی کریم سلیات علیہ ولم نے اس طرح فرمانی ہے :۔

قبر یا توجنت کے بافات میں سے ایک باغ ہے یاجہنم کے

وَمِنُ وَرَآبِهِمُ بَرُزَخُ إِلَىٰ يَوُمِهِ مِبْعَثُونَ دَمِومُون آيت ١٠٠٠) اور اُن كے بيمچه ایک پرده دآڑ، ہے اُس دن تک جس دن وہ دو اور اُن کے بيمچه ایک پرده داڑ، ہے اُس دن تک جس دن دو وہ دو بارہ اُسٹائے جائیں گے۔ داس آڑھے بہی قبری ذیدگی (برزخ)

مراوسے۔

جہتم کے رہنما مہم کے رہنما مرعون کے اخروی نذکرے میں خصوصیت کے ساتھ یہ ذکر کیا گیاہے کہ وہ اپنی قیاوت میں اپنے مُرید وں کوجہنم کی جانب لیتا جائے گا۔ یہ دمیر ہوری یورس کا دیس کا دریا ہوری کا دریا ہوری کا

يَعْدُهُمُ قَوْمَتُ كَذْ مَرَا لُفِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُ هُمُ النَّاسَ وَ

بِيْتُكَ الْيُوزُدُ الْمُوْرُودُ . ١٤ زبود آيت ١٩٥، ٩٩)

قیامت سے دن وہ اپنی قوم سے آگے آگے ہوگا بھر داپنی پیشوائی میں) اُن کو دوزخ میں جا اُ تارے گا اور بُری ہے وہ جگہ اُ ترنے کی جہاں یہ اُ تارے جائیں گے۔

اوراس دنیا میں تھی لعنت اُن کے ساتھ رہی اور قیامت کے

ون تمی بڑے گی کیسا براصلہ ہے بہ جوان کو دیاگیا۔

قرآن مکیم کی اس آیت اور اما دین صحیحہ کے معلوم ہو تاہے کہ جولوگ دنیا ہیں کسی قوم یا جماعت سے رہنما ہوتے ہیں وہی قیامت کے دن بھی اُن کے رہنما ہوں گے۔

جن لوگوں نے ونیا میں حق کی دعوت دی اوراُسی کی رہنما نی کرتے رہے توجن جن لوگوں نے اُن کی بیروی کی اوراُن کا ساتھ دیا وہ آخرت میں بھی انہی کے ساتھ ہوں گے اوراُن کے بیر ہنما آخرت کے بھی رہنما ہوں گے اور اپنے اِن رہنما وُں کی سرکر دگی میں جنت کی طرف رواں دواں ہوں گے .

اُورجولوگ ونیا کی زندگی میں کفروشرک ،فسق وفجوریا گمراہی کی طرف لوگوں کو ترغیب دیا کرتے بھتے اور اُسی کی رہنما ئی ہیں زندگی بسر کرتے ہتھے توجولوگ یہاں ان کی پیروی کررہے ہیں وہ آخرت ہیں ہمی اُن کے بیچھے ہوں گے اور انہی کی سر بیستی ہیں جہنم رسید ہوں گئے۔

بنى كريم صلى الترعليه ولم ك ايك ارثاو ساس حقيقت كى مزيد توضيح بوتى ٢

كُورُ إِنَّ نِي نِهِ فِي اللَّهِ

اور بہ ظاہر ہے کہ جن رہنماؤں نے دنیا میں لوگوں کو گمراہ کیا اور حق کی راہ سے ہٹایا اُن کے پیروجب اپنی آنکھوں سے دیجے لیس سے کہ یہ ظالم ہم کوکس خوفناک انجام کی طرف کھینج لائے

ہیں تو و ہ اپنی ساری مصیبتوں کا ذمہ دار انہی کو قرار دیں گے اور اُن کا پیجلوس اسس شان ہے دوزخ کی جانب رواں ہوگا کہ آگے آگے تو وہ گمراہ رہنما ہوں گے اور پیچھے پیچھے أن كے ان مريدوں كا ہجوم ہوگاجواً نيرلعنتيں برسا تا ہوا جار ہا ہوگا۔

قرآن علیم نے سیّانی پر چلنے والوں اور حق کا ساتھ دیسنے والوں کا تذکرہ مجی بڑی

شان سے کیاہے :

وَمَنُ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَكُ فَأُولَدِكَ أَعُولَدِكَ مَا لَكِذِينَ الْغُمَ اللهُ عَلَيْهِمُ مِنَ النَّبِينَ وَالصِّدِينِينَ وَالصَّاكِمِينَ وَحَسَنَ أُولَيْكُ مَنْ فِيقًا. رسوره ناء آيت عام)

"ا ورجوت خص الله اور رسول کا کہنا مان لے گا تو ایسے لوگ بھی إن حضرات سے ساتھ ہوں سے جن پر النّرنے انعام فرمایا ہے بعنی انبیار اورصدىقىين اورىثهدار اورصلحارا درييعضرات بهت اچھے رفيق ہيں ''

ہنی اسرائیل نے جب تورات کو قبول کرنے میں بیں ویش کیا توالنه تعالے نے اُن کے سروں پر کوہ طور کو اعفوا کرمعلق کر دیا اور اُنہے کہا گیا کہ تزرات کو قبول کرو ور نہ یہ یہاڑ تم پر گرا دیا جائیگا بنی اسرائیل اسوقت مارے دہشت کے سجدے میں گریڑے اور قبولیت کا اعتراف کیا۔ سور ہُ بقرہ اورسور ہُ اعرا ن کی دونوں آیات سے یہ وا تعہ ثابت ہے۔ تحسى بہاڑ كاجڑے انھركر فضا ميں علق ہوجانا نہ عقلاً محال ہے نہ قانونِ قدرت کے منا فی ہے البتہ عجیب وجیرت زوہ ضرورہے . خاص طور پرجب بطور معجزہ کے ایسا عمل دا قع بهو تواسیر تعجب و حیرت بھی غلط ہے کیونکہ آیت التّد <u>سے ن</u>عنی میں کہ وہ عام اس^{اب} ہے بیٹکر امراہی سے بخت صا در ہوتاہے۔ لبذاکوئی وجنہیں کہ آیات سے ظاہری معنی کو بغیر محبوری سے تا ویل سے ذریعیمشیلی قرار دیا جائے۔ وَ إِذْ آخَذُ نَامِيْنَا قُكُمُ وَتَى فَعُنَا فَوُ قُكُمُ الْطُوسَ

ربقره آیت ۲۳)

اورحب ہم نے تم سے قول و قرار لیا دکہ تورات پرعسل

سریں سے اور ہم نے کو ہ طور کو اعظا کر تمہارے اور بعلق کردیا۔ الخ قراد نشختا الجنبل فوقیم کا نگر ظالیہ الخ

اور وہ وقت بھی قابل ذکرہے جب ہم نے پہاڑکو اسٹ کر اسے جب ہم نے پہاڑکو اسٹ کر ہے جب ہم نے پہاڑکو اسٹ کر جست کی طرح اُن کے او پرمعتق کر دیا اور اُن کو میقین ہوگیا کہ وہ پہاڑ اُن پر اب گرنے والا ہے ؟'

پہلی آیت ہیں دفع کے معنی بلند ہونا، اونچا ہونا کے ہیں لیکن اس کے بعد لفظ فَوق (اوپر)کا
لفظ اس کے سامقہ محض تاکید کے لئے تو نہیں آتا بلکہ یہ ظاہر کرتا ہے کہ بہاڑ واقعی طور پر آنکے
اوپر آگیا بھا۔ اسی طرح نتن کے معنی حرکت ہیں آنا، زلزلہ آنا، جڑے آنھونا، تینوں معنی ہیں
آنا ہے اسکے بعد مجی فَوْقَرِصِمْ فُوقَ کا لفظ آیا ہے جواس بات کا ثبوت ہے کہ پہاڑ جڑ ہے
انکھڑکر اُن کے اوپر آگیا تھا۔ حضرت ابن عباس شنے نتقی کی تفسیر دَفَعْنا ہے اواکی ہے۔
انکھڑکر اُن کے اوپر آگیا تھا۔ حضرت ابن عباس شنے نتقی کی تفسیر دَفَعْنا ہے اواکی ہوں
میساکہ بھن کو سنت ہم اس واقعہ کو حقیقت پر محمول کیا ہے مجازیا تشیل نہیں
میساکہ بھن کو سنت ہم اس صورت ہیں جرواکرا و سے کام لیا گیا جو
میساکہ بھن ہوا ہے۔ دہی یہ بات کہ اس صورت ہیں جرواکرا و سے کام لیا گیا جو
دین ہیں جائز نہیں ہے اور غالبًا اسی سنت ہم کی وجہ سے بعض اہل علم نے یہاں حقیقی دفع مراو

میک ، نیکن پیشنبه کونی زیاده وزن نهبس رکها اگرغور سے کام لیا جائے تواکراه اور بیت فیسے قریب

اکراه جروزیادی توکها جا با ہے اور تنبیت نابت قدمی اور صبولی مے معنی میں آباہے کسی فیرسلم کو اسلام قبول کرنے پر معمی مجبور نہیں کیا جا نیگا کیونکہ یہ اکراہ ہے بین جو مسلمان ہوکر اسلامی عہدو بیمان کا پابند ہوگیا اسکے بعدا گروہ احکام اسلامی کی خلاف ورزی کرنے گئے تو اس پر مقیناً جرکیا جا نیگا کیونکہ یہ نابت قدمی کی خلاف ہے اور خلاف درزی کرنے گئے تو اس پر مقیناً جرکیا جا نیگا کیونکہ یہ نابت قدمی کی خلاف ہے اور خلاف در تاب میں سخت سے خت سزا بھی وی جائیگا جیسا کہ اسلامی تعزیر ات بیں بہت سی سنرائیں مقرد ہیں۔

ا طاعت قبول کرنے سے بعد بغاوت کرنا برواشت نہیں کیا جاتا مبیا کہ باغیوں کی سنزاقتل بنویز سی وجہ ہے کہ اسلام میں میں مرزد کی سنزاقتل بنویز سی کا میں اور کا فر

حضرت موسیٰ علیہ ات لام کی مجمع البحرین پرجس بندے سے ملاقات
ہوئی قرآن محیم نے اُن کا اسم گرامی ظاہر نہیں کیا ہے بلکہ عَبُدًا

الم میں عِبَادِ مَا رے بندوں میں سے ایک بندہ) کہا ہے ۔ البت م الم معیم بخاری کی فصیل حدیث میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں اُن کا نام خِضرظا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضر طا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں اُن کا نام خِضر طا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِضر طا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں اُن کا نام خِصر طا ہر کیا گیا ہے دخِصر میں میں اُن کا نام خِصر طا ہر کیا گیا ہے۔

سے معنی سرسبزو شاواب کے ہیں) اہل تفسیر جن ہیں امام بنجاری بھی شامل ہیں۔ رقصل اپیا ان کٹراڈ نے اسکی وجریہ بیان کی ہے کہ یہ س جگہ عبیر جاتے تو و ہاں سرسبز گھاس اگ جاتی تھی اور زمین سرسبز ہوجاتی۔ قرآن تکیم نے یہ میں واضح نہیں کیاہے کہ وہ دیگر انبیار کرام کی طرح کوئی نبی مقے یا دسول ؟

اس المدين بالمي فصيل طلب بين إ

(۱) خِصْرنام سِے یالقب (۲) وہ ولی ہیں یانبی ورسول (۳) آمضیں حیات ابدی

حاصل ہے یا و فات یا تھے ؟

اہل تفسیر کی کتا ہوں میں اِن سوالات کے جوا بات میں بہت سے اقوال ہیں اور اس بارے میں چھوٹی بڑی کتابیں اورمضا مین کثرت سے کلھے گئے ہیں جن کا خلاصة تقریباً یہی ہے کہ

را) پہلے سوال سے جواب میں کہتے ہیں کہ خِصَر نام ہے کیکن اکثر اہلے علم نے اسکو اُن کا لقب بتایا ہے اور نام سے بارے ہیں تکھتے ہیں کہ بلیابن ملکان ،ابلیابن ملکان ، خضرون ،معمر الیاس ، الیکیع میں سے کوئی ایک نام مقا۔

منگرار منگملیم منگملیم کا ولادہے ہیں۔ ابن فئیبہ نے وہب بن منبۃ سے نقل نمیاہے کہ حضرت خصرعلیہ استلام سام بن نوح علیہ التلام کی اولا دسے ہیں۔

اور تعضٰ دگیر موَرضین کا نتیال ہے کہ وہ حضرت اسحاق بن ابراہیم علیہ السّلام کی اولا دسے ہیں ۔اورجن کو کول نے انتخیں فرسٹتہ کہا ہے نہا بیت صنعیف قول ہے جسکی "ائید منه مروی دوایات کرتی ہیں نہ تاریخ وسیرت کی کتا ہیں جس قدر بھی روایات ہیں وہ سب کی سب اولادِ آ دم ہی قرار دیتی ہیں البتہ سلسلۂ نسب میں مختلف ہیں۔

۳۱) دوسرے سوال کا جواب یہ ہے کہ وہ فقط عبدصالح دنیک بندے) سقے اور بعض تھنے ہیں کہ وہ رسول مقے گر اکثر اہل تفسیرنے اُنکونبی قرار دیا ہے۔

۱۳۰ تمیسے سوال کے جواب میں بعض علمار کا خیال ہے کہ اُن کو حیاتِ ابدی حاصل ہے اور وہ ابتک زندہ ہیں اس بارے میں کثرت سے حکایات اور روایات میں نظر کا جاتی ہیں جنگی چینٹیت تاریخی روایات سے زیاد و اہم نہیں ہے۔ بھی خلکی چینٹیت تاریخی روایات سے زیاد و اہم نہیں ہے۔

محدثین کی ایک بڑی جماعت کی تحقیق ہے کہ اُن کے لئے حیات ابدی کا ثبوت مذہر آن کے لئے حیات ابدی کا ثبوت مذہر آن کے لئے حیات ابدی کا ثبوت مذہر آن کی سے تابت ہے اور ندا حادیث صحیحہ ہے۔ لہذا و ہ بھی عام انسانوں کی طب رح اپنی طبعی عمر کو پہنچ کر و فات پلگتے۔ صوفیہ کرام کی ایک بڑی تعدا د اُن کسے حیات کی قائل ہے اور اس بارے ہیں وہ حضرات اپنے مشاہرات تک بیان کرتے ہیں کہ امهنوں نے حضرت خضر کو ویچھا ہے اور ملاقات بھی کی ہے۔ والنّداعلم

چون کے بیمستلہ قرآن وحدیث سے متعلق ہے اور انہی دو ذرایعہ سے مہیں انکا

ہرایت کے جیراغ

علم مجی ہواہے اس کئے قرآن وحدیث ہی ہے اس کا فیصلہ کر ناچا ہئے اور یہی عقل و والش کامھی تتقاضہ ہے۔

إن ہرسه مسأئل میں حقیقت بدہے کہ مہلی بات سے تعلق قرآن حکیم میں کوئی نذکرہ نہیں ہے۔ نہ حضرت خضر کا نام موجود ہے نہ لقب بلکہ قرآن حکیم نے عَبُدًا مِن عِبَادِ مَا ر ہمارے بندوں میں سے ایک بندہ ، کوکران کا واقعہ بیان کیا ہے۔ البتہ بخاری ہے۔ س معج روایات میں اِن کا نام خضر بیان نمیا گیا ہے۔ لہذا یہ بات تو ثابت ہوگئی کروہ عبدمهالع حضرت خيضر مقے . البته أبحے لقب وغيرہ كى سجت اس سيسلے ہيں تاريخي روا يات اورا قوال اس درج مختلف ہیں کہ آن سے ذریعے سی نتیجہ پر پہنچنا میقینًا وشوار ہے اور اسى چندال صرورت مجى نهيس ہے:

بندا ہمارے علم سے لئے اُن کا اتنا تعارف کا فی ہے کہ وہ التّٰر کے خاص بندوں میں سے ایک بندے تقے حنہیں الٹرنے اپنے علم سے خصوصی طور برسرفراز کمیا تھا. اور وہ حضرت موسیٰ علیہ الت لام سے ہم زائد متحے حضرت موسی علیہ است لام کو اُن کی خدمت میں چند حقائق کے انگشاف مے لئے روانہ کیا گیا تھاجئ تفصیل قرآن حکیم نے بیان کی ہے۔

د کیف آیات ۲۱۱۱۱)

د وسری بات سے تعلق سے حقیقت سے قریب تریہی ہے کہ وہ "نبی " سنتے بکوئی صاحب کتا ' ياصاحبِ شريعِت رسول نهبي سفتے . قيرآن وحديث بيں ايسا کونی اثبارہ نہبيں ملتائے س و و کسی قوم کی جانب مبعوث سئے سئے ہوں ۔ جیسا کہ دیگر انبیار کے باریمیں وضاحتیں اور ا ثارے ملتے ہیں۔ان کے لئے نبوت کا نبوث بھی اگرج فطعی طور پر ٹابت نہیں کیا جاستا بیکن قرآن تھیم نے اُن کاجسِ اندا زسے وکر کیا ہے وہ اندا زِ کلام نبیوں پر ہی صا دق آ تاہے غیر بلی سے سئے ایساکوئی عنوان قرآن علیم نے اختیار نہیں کمیا اسکنے حقیقت سے قریب تر یہی معلوم ہوتا ہے کہ و ہ نبی سفے جنہیں اللّٰم کی قرف سے وجی رجو صرف انبیار ورک سی سے لئے مخصوص ہے ، کی گئی ۔ اس سے لئے وقو بڑی وجرفرآن ملیم سے ملتی ہیں :۔

وجرآول والترتعاك نے حضرت خضرعليه السّلام كا تعارُف اسطرح كروا بابح

فَوَجَدَا عَبُدًا مِن عِبَادِ نَا أَتَينُنْ رَحْمَةً مِن عِندِنَا وَعَلَّمُنْ مِنْ لَدُ تَا عِلْمًا. دَمِهِ ابت ١٠٥

بھر پایا ایک بندہ ہمارے بندوں میں سے جسکو دی متی ہمنے

رحمت اپنے پاس سے اور سکھایا تھا اپنے پاس سے ایک علم.

آیت بین تبین لفظ خصوصی طور پر ذکر کئے گئے ہیں ایک اُن کا فاص بندہ ہونا دوستے اللّٰہ نے انتخیں اپنی رحمت خاص سے کچھ حصہ عطا کیا تھا ۔ نمیستے ہے اپنے پاس سے اُن خیس علم خاص دیا۔

یہ انداز کلام اورعنوان خاص قرآن کیم میں صرف انبیار کرام سے لئے استعال مہواہے اور اس عنوان سے ایک خصوصیت نمایاں ہوتی ہے جو عام انسانوں کے لئے چسپیاں نہیں ہوتی۔

ویسے الٹرنے عام انسان کوعلم بھی عطا کیا ہے رحمت سے بھی سرفراز کیا ہے لیکن کسی خاص فرد کے لئے ایسا عنوان نہیں ملتاجیسا کہ اس واقعہ بیں اُس بندے کے لئے اختیار کیا گیا ہے اس لئے حضرت خضرعلیہ است لام کا نبی ہونا حقیقہ سے قریب ترہے ۔ قربیب ترہے ۔

دوسری وجہ بحضرت خضر علیہ الت لام نے قتل ولد کی جو وجر بیان کی ہے اسمیں پیصراحت بھی موجود ہے :۔

وَمَا فَعَلْتُ مُ عَنْ آمُرِى . دَكِمِت آيت ٨٠)

یہ کام میں نے اپنی مرضی سے نہیں کیا۔

جس کاصاف مطلب میں ہے کہ وحی الہی کا امر ہفا جسے تحت لڑکا قتل کیا گیا ۔ اوریہ واقعہ ہے کہ کسی بھی مذہب ہیں کسی عام انسان کو یا ولی کواسکی اجازت نہیں رہی کہ و ہ اپنے وجدان یا الہام سے کسی کوقت کرے اور فاص طور پر ہماری اس شریعیت میں جسکا مافذ یہی قرآن جکیم ہے ۔ اس ہیں کوئی اجازت نہیں ملتی کہ بے گنا ہ قتل کیا جائے ۔ لہذا کسی کا بہی قرآن جکیم ہے ۔ اس ہیں کوئی اجازت نہیں ملتی کہ بے گنا ہ قتل کیا جائے ۔ لہذا کسی کا بہت کے در لعبر ہی ممکن ہے ۔ دائے ، قیاس ، وجدان ، الہام وغیرہ سے کومث تبہجوانب واضح ہو سکتے ہیں لیکن قبل جیسا قبیج اور بڑا جرم جا کر نہیں ہوسکتا ، لہذا حضر علیہ التسلام کا آخریں یہ فرما نا کہ ہیں نے یہ کام اپنی طوف سے نہیں کیا ہے لہذا حضر علیہ التسلام کا آخریں یہ فرما نا کہ ہیں نے یہ کام اپنی طوف سے نہیں کیا ہے لہذا حضر علیہ التسلام کا آخریں یہ فرما نا کہ ہیں نے یہ کام اپنی طوف سے نہیں کیا ہے لہذا حضر علیہ التسلام کا آخریں یہ فرما نا کہ ہیں نے یہ کام اپنی طوف سے نہیں کیا ہے

واضح دلیل ہے کہ وحی الٰہی انکونصیب تھی اور بیر طے شدہ حقیقت سے کہ انسانوں میں صرف انبیار ورک کی ہو وحی کی جاتی ہے۔

مائل سرگاندیں تیراستلد حضرت خضرعلیدات لام کی حیات ابدی سے

ا بنی طبعی عمر کومپنچ کروفات پاکھئے۔

قرآن تکیم اور اما دین تصحیحہ میں ایسی کوئی وضاحت نہمیں کہ وہ فرشتوں کی طرح زندہ ہیں اور اپنامفوضہ کام ابنام دیتے ہیں۔ امام بنجاری ان کے حیات کے قا کن نہیں ہیں اپنی کتاب صحیح بنجاری میں اس کی تائید کے لئے اما دیث ہمی نقل کئے ہیں۔ اسی طرح امام سلم نے بھی اپنی کتاب صحیح عصلم میں مدیث نقل کی ہے اور سے ہیں۔ اسی طرح امام سلم نے بھی اپنی کتاب صحیح مسلم میں مدیث نقل کی ہے اور سے نابت کیا ہے کہ وہ وفات یا جکے ہیں۔

و سیرائد مدیث سے پوچھا گیا کہ کیا خضرز ندہ ہیں؟ توآ مفوں نے قرآن تخیم کی اس آیت سے اسکی تردید کی

وَمَاجَعَلْنَا لِلبَشِرِمِينُ قَبُلِكَ الْخُلْدَ رانبيارات ٢٢) اور دائے محصلی الترعلیہ ولم ، ہم نے آپ سے پہلے ہی کسی

بشرکوحیاتِ ابدی مہیں دی۔ نیز قرآن مکیم نے انبیار سابقین کی موت کا اعلان کیا ہے:۔ وَمَا مُحَدِّدُ لِلْآرَ سُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ تَبْلِیمالسَرُ سُلُرُ.

د آل عران آیت ۱۲۲)

اور محدد صلی الله علیه و لم) تورسول بی بی ان سے پہلے

مجی رسول گزر پیچے ہیں۔ چونکہ حضرت خضرہ مجی نبی ہیں وہ مجی اس آیت میں شامل ہیں۔ سنجے الاسلام ابن تیمیہؓ سے پوچھا گیا تھا کیا حضرت خضرعلیہ السّلام زندہ ہیں؟ جواب دیا کہ آگر وہ زندہ ہوتے توان پر واجب مقاکہ وہ نبی کرمے صلی النّسطیہ ولم می خدمت میں حاضر ہوتے اور آپ پر ایمان لاتے اور آپ کی معیت میں غزوات میں شریک ہوتے اور آپ کا ہرطرح تعاون کرتے جیسا کہ صحابہ نے کیاہے۔ مسام صوفیہ کرام میں سے ایک شہور بزرگ ابوالفضل مرسی نے بھی انکی و فات کا ذکر کیاہے۔

مشہور ناقد مدیث ابن الجوزیؒ نے حضرت علی بن موسی رضارہ کا قول نقل کیا ہے کہ و ہ و فات پانچکے ہیں۔ دقصص الانبیار ابن کثیرہ نیز قرآن حکیم کی یہ آیت بھی اس نظریہ کی تروید سرتی ہے کہ حضرت خضر علیہ است لام بقید حیات ہیں :-

اُورجب الترف نبیوں سے عہد و پیمان لیا کہ ہیں نے جو کچے تم کوک بیں اورعلم دیا ہے بھیرا ئے تمہار سے پاس رسول دمحرہ) جوتصدیق کرنے والا ہے تمہار سے پاس رسول پرتم ضرورایمان لاؤگے اور اُسکی ضرور مدد کرو گے ؟ التّٰہ نے فرایا کیا ہم نے اقراد کیا اور اسکی ضرور مدد کرو گے ؟ التّٰہ نے فرایا کیا ہم نے اقراد کیا اور اسکی طرور مدد کرو گے ؟ التّٰہ نے فرایا کیا ؟ سب بولے ہم نے اقراد کیا ! ارثا و فرایا تو اب کو اور ہیں بھی تمہار سے ساتھ کوا ہ ہوں ؟

شیخ الاسلام ابن تیمیت کی دلیل کا ماخذ میمی آیت میثاق ہے۔
حضرت ابن عباس نے بھی آیت میثاق کی تفسیر میں بہی مضمون
بیان کیاہے فرماتے ہیں کہ اللہ تعالے نے جس نبی ورسول کومبعوث کیا
ہے سبوٹ کرنے سے پہلے اُس سے عہدو بیان لیا کہ اگر تمہارے زمانے
میں محصلی اللہ علیہ وہم مبعوث بہوجائیں تو تم اُن پر ایمان لا وَکے اوراُنکی
مدرکر و گے ، اسی طرح ہر نبی و فات سے قبل اپنی اپنی امت کو یہ ملقین
مدرکر و گے ، اسی طرح ہر نبی و فات سے قبل اپنی اپنی امت کو یہ ملقین
کر گئے ہیں کہ اگر تم لوگ زندہ رہے اور محدصلی اللہ علیہ ولم مبعوث ہوگئے
تو تم اُن پر ایمان لانا اور اُن کی ہرطرح نصرت کرنا ،

(ذكره البخاري عن ابن عباس)

قرآن مکیم کی اِن آیات سے علاوہ بخاری و کم کی سیسیج روایت بھی اس عقیدہ کی تردید سر ن ہے کہ حضرت خضرعلیہ اکسال م ابتک زندہ وموجو دہیں۔ سر ن ہے کہ حضرت خضرعلیہ السّال م ابتک زندہ وموجو دہیں۔

ر سے میں کریم میں اللہ عالی فرماتے ہیں کہ ایک شب نبی کریم میں اللہ علیہ وقم عشا حضرت عبد اللّہ بین عمر فرما یا سمیاتم نے آج رات مجھ ذکیھا ؟ مجر فرما یا بیہ حقیقت سے کہ آج کی نمازے فارغ ہوکر فرما یا سمیاتم نے آج رات مجھ ذکیھا ؟ مجر فرما یا بیہ حقیقت سے کہ آج جوشخص مجمی روئے زمین پر موجو د ہے ایک صدی گزرنے پر اُن میں سے ایک بھی زمین پر

زنده باقی نهیں رہے گا۔ د بخاری کم کتاب الفضائل)

ریدہ بان ہیں رہے ہوئی کی بیٹیگوئی کے مطابق بھی حضرت خضر علیہ الت لام کی حیات ابدی

سے لئے کوئی گنجائٹ نہیں تکلتی اور نہ اُن کا کوئی استثنار کسی روایت سے ثابت ہے۔
مالانکہ یہ روایت بنجاری و کم سے علاوہ اور کتب حدیث میں بھی منقول ہے ۔ یہی وجہ کرمٹ ہور محدث ابن القیم نے یہ وعویٰ کیا ہے کہ کتب احادیث بیں ایک بھیج روایت
رمشہور محدث ابن القیم نے یہ وعویٰ کیا ہے کہ کتب احادیث بیں ایک بھیج روایت
ایسی موجود نہیں ہے جس سے حضرت خضر علیہ الت لام کی حیات کا ثبوت ملی ہو بہشہور
مفتر ابن حیان اندلی نے بھی یہی وعویٰ کیا ہے کہ اُمت کا سوا دِ اعظم اس بات کا قائل کے

کر حضرت خضر علیہ التسلام و فات پائے۔ اور حقیقت میں ہے کہ جس کہ کا متعلق قرآن وحدیث۔ ہو اسکواسی ذرایعہ سے حل کرنا چاہئے۔ تاریخی روایات، واقعات، مشاہرات، اقوال مشائع وغیرہ سے نہ عقید ہوتا ہے اور نہ کوئی قطعی حکم جاری کیا جاسکتا ہے۔ عقید ہوتا ہے اور نہ کوئی قطعی حکم جاری کیا جاسکتا ہے۔ حیاتِ خصرعلیہ الت الام سے سلسلے میں جتنی تھی روا یات نقل کی جاتی ہیں ہ سب کی سب صنعیف، غریب، مرسل منقطع، موضوع قسم کی ہیں جسکے نقل کرنے والوں کے لئے محدثمین نے مجہول، مجروح ، متروک ،غیرمعرو ٹ،حتی کراسکے بعض راویوں کو کڈابین کی فہرست میں شامل کمیا ہے.

مشہورنا قدالحدیث ابن الجوزیؒنے اس صمون پر ایک تقل رسالہ کھا ہے جس کا نام بھاکت المنتظر نے شرح حال العظم ''ہے۔ اسمیں وہ ساری روایات جمع کردی ہیں جواُن کے حیات کے بارے بین نقل کی جاتی ہیں اور اِن سب پر محدثانہ کلام بھی کیا ہے۔ اسمیں اور اِن سب پر محدثانہ کلام بھی کیا ہے۔ اور اُن کا صنعف اور غیر بھی ہونا ثابت کیا ہے۔

اسی طرح مشمہور محدث ومفسرا بن کثیر پی کے مبھی اپنی کتاب قصص الانہیار" میں مبھی اُن تمام روایات کومفل کیاہے اور دعویٰ کیاہے کہ ایک روایت بھی صحیح نہیں ہے اور اکٹرروایات موضوع ہیں ۔

مزیدمعلومات اورعلمی بحث کے لئے البدایہ و النہایہ، و ۱ موح المعانی ج ۱۵، عینی شرح البخاسی ج ۱۵، عینی شرح البخاسی ج ۱۵، عینی شرح البخاسی ج ۱۵، فتح الباسی ۲۰۱۰ اصابہ ج ۱ قابل مطالعہ ہیں۔ ان میں وہ ساری تفصیلات موجود ہیں جس کا فلاصہ ہم نے سطور بالا میں لکھا ہے۔

البتہ ایک روایت امام ثنافعی نے اپنی مسند میں نقل کی ہے جسمیں بیان کہا گیاکہ رسول الٹر صلے الٹر علیہ ولم کی وفات سے دن ایک اجنبی شخص آئے اور صحائبہ حرام کو اِن کلمات سے سبکی وہی :۔

"اللّه كى بازگاہ بيں صبر ہى ہر صيبت كاعوض اور ہر فوت ہونے والى شنى كابدلہ ہے ،اللّه ہى پر بھروسہ كروا در اُسى كى طرف رجوع ہوكيونكر محروم و تشخص ہے جومصيبت كے ثواب سے محروم ہوجائے ." يہ مديث الفاظ كے مقور ہے بہت اختلان كے ساتھ امام بيبقى نے بمبئ نقل كيا ہے ۔ ابن كثير فرماتے ہيں كرم ندشافعى كى اس روايت بيں قاسم بن عبداللّہ العرى متروك الحديث ہے ۔

امام احدٌ اوريميل بن معين جيسے ناقدين مديث نے کہا کہ نيخص حبوث بوت مخالہ مام احدٌ اور مين ميں مام احدُ اور مين امام احد تنے يرمني کہا کہ اما ديث محطر ليا کرتا مخالہ روایت سیقی میں عباد بن عبدالصمدرا وی کے بارے میں خووسیقی فرماتے

این درصعیف ہے۔ ابن حبان اور تقبیلی ککھتے ہیں کہ اسکی روا یات اکثر موضوع ہوتی ہیں۔امام بخاری ہ زیر سر مرسوں میں میں میں اور تا ہے کہ سات ہوتا ہوتا ہوتی ہیں۔ امام بخاری ہے۔

نے کہا کہ یہ منگر الحدیث ہے۔ ابوما تم سنے کہا کہ بہ نہایت ضعیف الحدیث ہے۔ ابن عدی میں اللہ میں اللہ میں اللہ می نے کہا کہ یہ غالی قسم کاشیعی مسلمان تھا حضرت علی می شان میں اما دیث تھڑیا تھا .

الغرض حیات خصر علیہ الت لام کے بارے میں جسقدر معی روایات ہیں اُن کا

يهى حال ہے كه يا تو و ه بنداً ضعيف بن يا بيم متناً منكرا ورغريب بن ـ

ابن کشیرنے ساری روایات کوجمع کرنے سے بعد کھواکہ بیسب

احا دیثِ مرفوعه ضعیف الاسا و بی ان سے کوئی حجت قائم نہیں کی جاسکتی

اورنه وین میں اِن کا اعتبار کیا جا سکتاہے۔ (قصص الانبیار صلامی)

البنته بخاری و لم میں ایک روایت امام زہری سے مروی ہے کہ نبی کریم صلی الترعلیہ ولم نے

قیامت سے قریب وجال نکلے گاا ورباری زبین کا چکرلگائیگا کین مدینہ منورہ بیں اُس کا داخلہ نہ ہو سکے گا وہ باہر مقیم رہے گا اس سے مقابلہ سے کے ایک خص مدینہ منورہ سے نکل کر آ کے گا جو اُس زیا نے کا سب سے بہترین انسان ہوگا وہ وجال سے مخاطب ہوکر کہ بگا کہیں شہاد سب سے بہترین انسان ہوگا وہ وجال سے مخاطب ہوکر کہ بگا کہیں شہاد ویتا ہوں کہ تو وہی وجال سے جسکی اطلاع نبی کر کم صلی التّر علیہ و کم سنے ویتا ہوں کہ تو وہی وجال سے جسکی اطلاع نبی کر کم صلی التّر علیہ و کم سنے

دی ہے۔

وبارہ زندہ کر دوں تو کیا تم میرے بارے ہوگو! اگریں اسکونس کرے۔
دوبارہ زندہ کر دوں تو کیا تم میرے بارے بیں بھربھی شک کروگے ؟
لوگ کہیں گئے نہیں! بھر د قبال اس خیرات میں کوفتس کر دے گا اور دوبالا از دہ بھی کر دے گا، دلوگ بھین کرلیں گئے، لیکن وہ مقتول کے گا کہ بی اب پوری بھیرت کے سابھ شہادت دیتا ہوں کہ تو وہی د قبال ہے جسی خبر نبی کرمے میں النزعلیہ ولم نے دی ہے۔ بھر د قبال ان کو د و بارہ قبل کرنے کا ادا وہ کرمیگالیکن عاج و بے بس ہوجا تیگا اور قبل نہ کرسکیگا۔

اِن خیرات سے بارے بین شہور ہے کہ وہ حضرت خضر علیہ استام ہوں سے۔اسی وجہ سے اکثر لوگوں نے اس حدیث کی یہی علیہ است کا میں ہے اور اس سے نابت کیا ہے کہ حضرت خضر علیہ است کا میں بقید حیات ہیں اور قیامت تک زندہ رہیں سے.

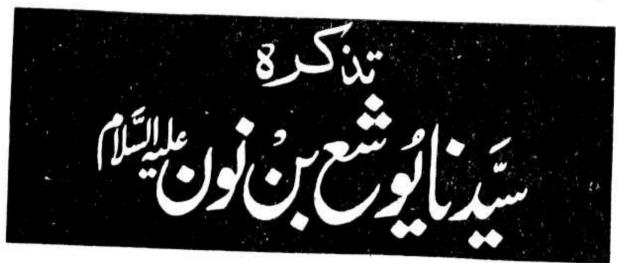
بھید حیات ہیں اسی روایت کے ایک راوی ابواسحاق ابراہم الفقیرہ میں اسی روایت کے ایک راوی ابواسحاق ابراہم الفقیرہ سمجتے ہیں کہ بیم محمر کا قول ہے جو اس روایت کو زہری سے نقل کرتے ہیں۔ محمد کی میں کا بیم مرکا قول ہے جو اس روایت کو زہری سے نقل کرتے ہیں۔ دخصص الانبیار ابن کثیرہ میں کا

اس مدیث میں سر مجل میں تھینے التا میں اور دوسری روایت میں شاہ منظیے شکبا ہا،
ایک نوجوان مجی جوانی محر لور ہوگی) کے الفاظ ہیں بعض را ولوں نے اس سے مراد حضرت
خضر علیہ الت لام مجھا ہے بنیکن مدیث میں نبی کریم ملی التی علیہ ولم نے نام کی کوئی تھیج
نہیں فرائی۔

مهر می مراق به مصرت خطر علیه است لام سیمتعلق اور تھی مہرت سی عجیب وغریب روایات حضرت خطر علی میں ملتی ہیں مجتمعین اہل علم می نگاہ میں سب موضوع اور ہے اصل تفسیرو تاریخ می کتا بوں میں ملتی ہیں مجتمعین اہل علم می نگاہ میں سب موضوع اور ہے اصل ہیں اور میہودی روایات سے ماخو ذہیں راسلتے نا قابل اعتماد ہیں۔

مشہورمفتر ابوتیان نے ابنی تفسیر البحر المحیطیں منعدد بزرگوں سے واقعات نقل سے ہیں جن کی حضرت خضر علیہ است ام سے الماق ت ہوئی ہے مگر آخر ہیں یہ میں لکھ دیا ہے :-وَالْحَدَّ مِنْ وَدِهِ عَلَا آتَ مَا مَا اَنْ الْبِحِ الْمِعِطْ صِلَا ہِ ٢٠)

كين جبورعلماري دائے ميں ہے كه وه وفات باكتے والله اعلم وعلمه اتھ۔



سلساز سی وقع الوق وگیرانبیار کوام کی طرح حضرت بیقوب علیه السّلام سے وگیرانبیار کوام کی طرح حضرت بیقوب علیه السّلام سے جاملتا ہے ، مورضین نے اِنھیں اسباط بوسف دا ولا دیوسف علیہ السّلام ، میں شمار کیا ہے اور سلسلۂ نسب اس طرح بیان کیا ہے:-میوشع بن نون بن فراہیم بن یوسف بن میقوم بن سستید نا

ابراہیم علیہ استام و قرق علیہ استام میں میکورنہیں ہے البتہ سور ہ کہف ہیں و و مجمع حضرت قرآن کیم میں حضرت یوشع علیہ استام کا نام مذکورنہیں ہے البتہ سور ہ کہف ہیں و و مجمع حضرت موسیٰ علیہ استام کے رفیق سفر (نوجو ان) کا ذکر موجو د ہے ۔ جب حضرت موسیٰ علیہ استام می ملا قات سے لئے سنے سخے تو اپنے سا بھ بطور فیق سفر حضرت خصر علیہ استام می ملا قات یک ہمسفر رہے ۔ یہی نوجو ان ایک نوجو ان کو جو ان کو خضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :حضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :وضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :وضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :وضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :وضرت یوشع ہیں جن کا ذکر ان آیات ہیں ملتا ہے :-

أَوْ أَمْضِيَ كُفَّيًّا. الآية ركبف آيتِ عنك)

اور وہ وقت یادکر وجبکہ موسیٰ نے اپنے خادم سے فرایا کہ میں اور وہ وقت یادکر وجبکہ موسیٰ نے اپنے خادم سے فرایا کہ میں برابر چلاجا وُں گا یہاں تک کہ اُس موقعہ پر پہنچ جا وُں جہاں دکو دریا آپ میں ملتے ہیں یا یوں ہی زمانۂ دراز تک جلتا رہوں گا۔

قلتما جَا دَ اَ قَالَ لِلْمَتَاءُ اَیْنَاعَدَاءً مَا اللهِ اکہف آب ملا)

عیرجب وونوں آگے بڑھ گئے توموسیٰ نے اپنے خادم سے

فرمايا تمارا ناست ته لاؤ.

فتی نوجوان کو تھنے ہیں اور فادم عمو ہا ایسے ہی رکتے جاتے ہیں۔ یہ فادم جن کو حضرت موسیٰ علیہ استلام نے اپنا رفیق سفر بنا یا تھا بخاری کی روایت کے مطابق اِن کانا کو شع بیان کیا گیا ہے۔ یہ حدیث حضرت ابی بن کعرب سے منقول ہے۔ اس لحاظ سے حضرت یوشع علیہ الستلام کا دکر بھی قرآن مکیم ہیں آ جا نا ہے۔ اس وجہ سے اکثر مفسر بن نے اِن نوجوان کا نام میمی بیان کیا ہے۔ یہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کی حیاتِ طیّبہ بیں آئی کے فادم منظے اور حضرت ہارون وحضرت موسیٰ علیہ السلام کی وفات سے بعد ان کے جانشین ہے کتاب اور حضرت ہارون وحضرت موسیٰ علیہ السلام کی وفات سے بعد ان کے جانشین ہے کتاب تورات میں مجمی حضرت یوشع دیشوع ، کا بمرت و کر موجود ہے۔ اہل کتاب انکی نبوت پر اتفاق ورات میں مفسر بن کی ایک بڑی جماعت بھی اِن کو نبی قرار دیتی ہے اور مہی اسلامی مؤرمین

کی بھی تین ۔ بجہ اور بیض دیگر مفسرین کرام کی دائے کے مطابق حضرت موسیٰ علیہ التلام نے جب بنی اسرائیل کو ارض مقدس ذفلسطین) بیں واضل ہونے کا حکم دیا بہنا تو اس سے پہلے ارض مقدس کے جابر وظالم لوگوں کی تحقیق حال کے لئے جن ترافت خصوں کور وانہ کیا تھا اِن میں ایک یہی حضرت یوشع علیہ الت لام ہیں جنھوں نے آگریہ بیان کیا تھا کہ قوم آگر جز برت فریل وی ول کی ہے لیکن ان کے ول کمزور اور بے قوت ہیں ، مقا بلہ ہوتے ہی بھاگ تھوے وی بول کے دمزینے فصیل تذکرہ سید ناموسی میں آجی ہے ، چنا بخ حضرت موسیٰ علیہ التلام موں کے ۔ دمزینے فصیل تذکرہ سید ناموسیٰ میں آجی ہے ، چنا بخ حضرت موسیٰ علیہ التلام کی وفات کے جالیس مال بعد انہی کی قیادت میں بنی اسرائیل اپنے آبائی ولین ارض مقدس فی وفات کے جالیس مال بعد انہی کی قیادت میں بنی اسرائیل اپنے آبائی ولین ارض مقدس فی میں آجی کے تو کنعان ، سنام ، اگر دن سے تمام فیوں کو بھال باہر کیا۔

ارض مفرس کی باریا ہی است کوسی و ہارون علیہ اسلام کی و فات کے بعد اللہ اسلام کی و فات کے بعد اللہ اسلام کے بعد اللہ اللہ کا رہنمائی حضرت یوشع علیہ السلام کے ہمتھ آئی ، انہی کی قیا وت میں بنی اسرائیل نے چالیس سالہ زندگی گزاری ، اسکے بعد اللہ تو میں اور و ہاں قوم عمالقہ نے اسمائیل کولیکر اپنے آبائی وطن میں قیام کریں اور و ہاں قوم عمالقہ اور دوسری ظالم قوموں سے جہاد کریں اور اپنا آبائی وطن مصب کریں۔ تورات میں مجمی اور دوسری ظالم قوموں سے جہاد کریں اور اپنا آبائی وطن مصب کریں۔ تورات میں مجمی

اس کا ذکر موجود ہے جھزت ہوشع علیہ التلام نے بنی اسرائیل کو الند تعالیٰ کا یہ بیغام منایا اور النہ تعالیٰ کا ئید ونصرت کی بھی خوشخری دی سب کے سب وا دی تیہ سے کال کر ارض کنعان کے سب سے بڑے شہر آدیجا کی جانب بڑھے اور بخت مقابلہ کے بعد وضعن کو شکست دی اسکے بعد تمام ارض مقدس پر قابض ہوگئے اور بھرا ہے آبائی وطن کے الکہ ہے۔ تعدیمام ارض مقدس پر قابض ہوگئے اور بھرا ہے آبائی وطن کے الکہ ہے۔ تو رات میں مزید یہ وضاحت بنی ہے کہ جب بنی اسرائیل جنگ کے لئے تیار ہوئے تو النہ تعالیٰ جنگ کے لئے تیار ہوئے والنہ تعالیٰ جنگ کے برتن کے علاوہ دوسری ترکات بھی تھیں کیونکہ النہ تعالیٰ نے اتھیں کرون اور من وسلوئی کو مفوظ کر لوتا کہ تہماری آئندہ سی بھی مشاہدہ کرلیں کرتم پر النہ کا انعام ہوا تھا۔ یہ صندوق وراشت کے خاندان میں محفوظ چلا آر ہا تھا اور اسکی حفاظت کی جاتی تھی مصائب اور جنگوں میں اسکو ساتھ کہ کہ کر برکت حاصل کی جاتی تھی۔ قرآن حکیم میں بھی اس تابوت مصائب اور جنگوں میں اسکو ساتھ کہ گر برکت حاصل کی جاتی تھی۔ قرآن حکیم میں بھی اس تابوت مصائب اور جنگوں میں اسکو ساتھ کہ گر برکت حاصل کی جاتی تھی۔ قرآن حکیم میں بھی اس تابوت مصائب اور جنگوں میں اسکو ساتھ کہ گر برکت حاصل کی جاتی تھی۔ قرآن حکیم میں بھی اس تابوت مقرر ہونے کی یہ علامت سے کہ مقرر ہونے کی یہ علامت ہے کہ مقرر ہونے کی یہ علامت ہے کہ

مس کے عہد ہیں وہ صندوق (تابوتِ سکینہ) تمہارے پاسس پہنچ جائے گاجس ہیں تمہارے درت کی طرف سے تمہارے سکونِ قلب کا سامان ہے اورجس ہیں آلِ موسیٰ اور آلِ ہارون کے چیوڑے ہوئے تبرکات ہیں جسکو فرشتے اُمطاعے ہوئے ہوں گے بیٹ اسمین تمہارے گئے بہت بڑی فشانی ہے۔ دیقرہ آیت ۲۲۸)

اسی تفصیل نذکرہ سیدنا داؤ دعلیہ السّلام بیں آئیگی ابن اثیر فریاتے ہیں کہ حضرت موسیٰ علیہ السّلام اپنی زندگی ہی ہیں ارض مفدّس (فلسطین) کی فتح کے لئے حضرت یوشع علیہ السّلام کو امیرات کرنا مزوکر دیا بھا مجر جب النّر نعالیٰ نے حضرت یوشع علیہ السّلام کو نبوت سے سرفراز فریا یا تواکھوں نے بنی اسرائیل کی معیت ہیں ارض مقدس کو مشرک قوموں سے پاک کیا۔ اسطرح مشہر آریحا کی فتح نمام ارض مقدس کی فتح ونصرت کا ذریعہ بنی ۔ قرآن کیم نے یہ وضاحت نہیں کی مشہر آریحا کی فتح کیا صرف فریہ دشہر کہ کہ ملے کس شہرکو فتح کیا صرف فریہ دشہر کہہ کراس کا ذکر کیا ہے۔ ما فظ عماد الدین ابن کیر سے ہیں کہ پہلے کس شہرکو فتح کیا صرف فریہ دشہر کہہ کراس کا ذکر کیا ہے۔ ما فظ عماد الدین ابن کیر سے ہیں کہ فالم آیہ قریہ بیت المقدس تھا۔

ربی براسی باست است است استرامی استر تعالے نے جب بن اسرائیل پر دم فرما یا اور شہر

فلسطین میں اُن کا فانخانہ داخلہ ہوا توصکم دیا گیاکہ اس مقدس شہر میں مغرورا ورمتکبرانہ طور پر دال نہروں بلکہ الٹرکائ کرا داکرتے ہوئے خشوع فرصوع سے ساتھ تو بہ واستغفار کرتے داخل ہول مگر فتح ونصرت سے بعد بنی اسرائیل کی سابقہ فطرت لوٹ آئی اور وہ الٹرتعا لئے سے حکم کی خلاف ورزی کرتے ہوئے مغرور اورمتکبرانسانوں کی طرح شہر میں داخل ہوئے ، اِتراتے ،سربلند ہے ہوئے وزیر واستغفار سے بجائے سوقیانہ الفاظ کہتے ہوئے داخل ہوئے۔ اس ناسیاسی اورخدا فراموشی مالت پر الٹرتعالیٰ کا غضب نازل ہواا ورایک آسمانی عذاب نے اُن مغیر لیا۔

السّتَدَاءِ دَاسمانی عَذَاب کہ کراپنے عَضب کا اظہار کیا ہے۔ امام قرطبیؓ نے ککھاہے کہ یہ اسمانی عذاب کہ کراپنے عَضب کا اظہار کیاہے۔ امام قرطبیؓ نے ککھاہے کہ یہ اسمانی عذاب طاعون تھا جو اُن کے سشہر ہیں واخل ہونے کے بعد مجوٹ پڑا جس سے بہت بڑی تعداد میں مواقع کی تعداد ستر ہزار کھتی ہے ، والتّداعلم ۔ ہلک ہوگئی ۔ بعض مفسرین نے ہلاک تندہ انسانوں کی تعداد ستر ہزار کھتی ہے ، والتّداعلم ۔ قرآن مکیم نے اس واقع کو دور مقام پر قدر نے مصیل سے بیان کیا ہے ب۔

قرآن مضمول وَإِذْ قُلْنَا ادْ خُلُوْا هٰدِ لَا الْقَرْيَةَ فَكُوُا مِنْهَا حَيْثُ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ الْمُ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ الْمُ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ الْمُ الْعُرْقِيَةِ مَا الْعَرْقِيَةِ مَنْ الْمُ الْعُرْقِيَةِ مَنْ الْمُؤْلِقِينَ مَنْ الْمُؤْلِقِينَةُ مَنْ الْمُؤْلِقِينَ مَنْ الْمُؤْلِقِينَةُ مَنْ الْمُؤْلِقِينَ مَنْ الْمُؤْلِقِينَةُ مَنْ الْمُؤْلِقِينَةُ مَنْ الْمُؤْلِقِينَةُ مَنْ اللّهُ الدُّولِينَةُ اللّهُ اللللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

اورجب ہم نے حکم دیا کہ اس شہر میں داخل ہو اور اپنی مرضی سے مطابق جو چا ہو کھا ؤپیو اور شہر سے دروازے میں نیاز مندی سے ساخھ محصیتے ہوئے واخل ہوٹا اہلی ہماری خطاؤں کو معاف فرا اور عربے متمہاری خطاؤں کو معاف فرا اور عیق بہر ہم تمہاری خطاؤں کو بخش دیں گے اور عنقر بب نیکو کا روں کو مزید دینگے۔ سوظا کموں نے اس نول کوجو اُن سے کہا گیا تھا دوسرے قول دسوقیا نہ ی میں برل دیا۔ بس ہم نے بھی ظالموں پر اُن کی نافر بانی کی وجہ سے آسمان سے سخت عذاب بھیج ویا۔

وَإِذُ نِنْكَ لَهُ مُ الْسُكُنُو الهذِ ﴾ الْقَدْيَةَ وَكُلُو المِنْهَا حَيْثَ وَكُلُو الْمِنْهَا حَيْثَ وَكُلُو الْمِنْهَا حَيْثَ وَكُلُو الْمِنْهَا حَيْثُ وَلَا الْمُعَابِ اللّهِ الْمُعَدَّةُ الْمُحْدَا الْحُرا الْمُعَابِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ وَاللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ

ہماری خطاؤں کو معاف فرما، اور شہری عاجزی کے ساتھ تجھکتے ہوئے دافل ہوتوہم تمہاری خطاؤں کو بخش دینگے اور عنقریب نیکو کاروں کو مزید دیں گے۔
یس ظالموں نے اُس قول کو جو اُسفیں بتا یا گیا تھا دوسر سے قول سے بدل دیا شوہم نے اُن پر آسمان سے عذاب نازل کر دیا ان کے قال سے بدل دیا شوہم نے اُن پر آسمان سے عذاب نازل کر دیا ان کے فالم ہونے کی وجہ سے۔

بخاری کی ایک روایت کے مطابق نبی کریم صلی الٹرعلیہ و کم نے اد ثناد فرما یا کہ بنی اسرائیل نے 'چینظرہ'' 'معاف فرما) کی جگہ ''تحبیّہ ہونی شُخعیّے''

رسم كومحفوظ غلے كى صرورت ہے) مہت ہوئے داخل ہوئے جويا النّرتعالے

كے علم محاسات مذاق كرركے تقے۔

حضرت عبدالله بن مسعود رمز فرماتے ہیں کہ بنی اسرائیل اپنے سٹرینوں کو اُمجارتے اُن سے بل پر

مشکتے ہوئے داخل ہورے تھے۔

میر مال النّرتعالی نے إن آیات ہیں اپنے سیخے اور نیک بندوں اور منکترانسانوں کے درمیان ایک النّرتعالی نے اِن آیات ہیں اپنے سیخے اور نیک بندوں اور منکترانسانوں کے درمیان ایک النّرتعالیٰ کے درمیان ایک النّری کیلئے نہیں اور جب غلبہ نہیں اور جب غلبہ پارٹی کے بیکے جائے ہیں اور نیاز مندی اور جب غلبہ پارٹی کے النّری کے بی اور نیاز مندی اور سجدہ ریزی سے شکراداکر تے ہیں جو دنبی کریم میں النّرعلیہ ولم جب مکر محرمہ بی فانخانه واصل ہوئے تو تواضع والکساری کی میں جو دنبی کریم میں النّرعلیہ ولم جب مکر محرمہ بی فانخانه واصل ہوئے تو تواضع والکساری کی سے میں کر جاتی تھی کہ اور جب حرم شریف میں واصل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں کر جاتی تھی اور جب حرم شریف میں واصل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہی ہیں آ کھر کھت نماز سے میں داخل ہوئے تو بارگاہ اللّٰہ دائی۔

یہی حال صحابہ کرام کا تھا حضرت عمر کے ہاتھ پرجب بیت المقدس فتح ہوا اور حضرت سعد بن ابی الوقاص سے ہاتھ پرا بران فتح ہوا توحریم قدس اور ایوا ن کیسری میں داخل ہوتے ہی سجدہ ریز ہوکرنمازٹ کرانہ اواکی ۔

حضرت يوشع عليه التيام اور بني اسرائيل كے مذكورہ واقعدين جو بات قابل توجہ اور یا در کھنے کے قابل ہے وہ پیر کہ جب کسی انسان تومصیبت پاکسی آز ہائش سے نجات ملے اور و ہ کامیاب ہو کر فائز المرام ہو تو غرور وشخوت سے یہ نہ سمجھ ہیٹھے کہ بیرکامیا ہی میری اپنی استعدا دا ور قابلیت کانتیجہ ہے بلکہ و ہ النگروامد کا مشکر گزار ہے اور اپنے عجز و بندگی کا اعتراف کرتے ہوئے اِسکوفضلِ الہی قرار دے۔ ایسے مل پر اللہ نغالے کی وائمی سنت یہ طی آرہی ہے کہ اس نعمت کومحفوظ کر دیا جا تا ہے اور اس ہیں مزيداضافه تمجى ہوتاہے۔

نیک کرنے والوں کومزیر دیتے ہیں۔

لَيُّنُ شَكِرُتُمُ لِأَذِيدَ تَكُمُ الآيه

أكرتم ني نعمت كالشكراد اكبا تومين نعمت اورزياده كرول گا-

جس فرد ياجماعت پرالنّدرِّيعاليْ كافضل واحبان كفك نشانيون کے ذریعہ ہواکر تانے وہ اگرشکر واطاعت کے بچا نے ناسپاسی اور نا فرمانی پراُ تر تی ہے تو تمھر حبلہ ہی انٹر تعالیٰ کی سخت بکڑ کا ٹیکار بھی ہوجا تی ہے سحیونکہ اُسکی یہ ناسکیاسی اور نافر مانی نعمت کے مثابرہ اور تجربے کے بعد ہوتی ہے۔ ایسی صورت میں کفرانِ عمت اپنی آخری مدبر آجاتی ہے جو مقیناً سخت سنزا کی ستحق ہے۔ فَأَرْسَلْنَا عَكِيْ مُ مِن جُزًّا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ. (اعراف آیت علاا)



محمہ و میں اسمانی کے ان میں علیہ الت لام کی و فات کے بعد بنی اسرائیل کی رہنمائی کے لئے کم میں میں گئے۔ ان درمیانی صدیوں میں گئے انہیار ورسل مبعوث ہوئے ان کی پوری تعداد کاعلم الترقیا ہی ہی کے باس درمیانی صدیوں میں گئے انہیار ورسل مبعوث ہوئے ان کی پوری تعداد کاعلم الترقیا ہی ہی کے باس ہے۔ قرآن کی مے انہاں کا ذکر کیا ہے اور اِن میں کھی بعض کا تذکر فصیلی طور پر اوربعض کا اجمالی طور پر اوربعض کا صرف نام ہی مذکور ہے۔

ابن کشیر کی تحقیق کے مطابق حضرت موسی اور حضرت ہارون علیہ ماات ملم کی و فات سے بعد ابن کشیر کی تحقیق کے مطابق حضرت موسی علیہ الت الم می بہن مربم بنت عمران کے شوہر محقے ابن کشیرہ کی حضرت یو شع علیہ الت الم می بہن مربم بنت عمران کے شوہر محقے ابن کشیرہ کی حقیق کے مطابق یہ بنی اسرائیل کے قائد ورہنما سمتے نبی یا رسول نہ سمتے اور ابن جریر طبری می محقیق کی مطابق یہ بنی اسرائیل کی قیادت کے لئے جس سمتی کو نتخب کی گیا و ہ حضرت حرقیل علیہ الت لام کی بین ۔ والتُراعلم

اورات کی تفریج کے مطابق و ہ بوذی کا بہن کے بیٹے ہیں اوران کا نام جزتی ایل ہے۔ بید لفظ عبرانی زبان کا ہے جسٹے ہیں اوران کا نام جزتی ایل ہے۔ بید لفظ عبرانی زبان کا ہے جس کے معنی الٹرکی قدرت کے ہیں۔ حضرت حزقیل علیہ الت لام کے بچین ہی ہے۔ ولد کا آتھ ال ہوگیا تھا مال کی زیر پرورش دہے۔ اورجس وقت نبوت سے سرفراز ہوئے ماں مہایت ہمر وضعیف مبوی متی اسی وجہ سے ابکو تورات ہیں ابن العجوز دائر صیا کا بیٹیا) کے گائی جھی یا د

کیا گیاہے۔

میں سیاسی میں میں میں است الم نے عرصۂ دراز تک بنی اسرائیل کی رمہنمانی وقیادت میں ہے تاہم اِن کا اسم مبارک قرآن کی میں موجود نہیں البتہ سور ہ بقرہ میں ایک بیان کر دہ واقعہ سے تعلق عام مفسرین کا خیال سے کہ وہ واقعہ انہی سے نسوب ہے۔

ستدنا حرقما اورقران میم استدن مضرت ابن عباس اور بعض ستدنا حرفی اورقران میم است میرددایت نقل کی گئی ہے کہ

محسی زمانے میں بنی اسرائیل کی ایک بڑی جماعت سے اُن کے پیغیر برحضرت حزقیل علیہ اُسلام نے فرما یا کہ فلاں وشمن سے مقابلہ کرنے کے لئے تیار ہوجا وَاور اللّٰرِکے نام کو لمند کرنے سیلئے جہاد کروا پیچم سنتے ہی پوری جماعت کی جماعت خوف کے مارے، ہماگ کھڑی ہوگئی اورایک وُور دراز علاقہ میں پناہ کی اور اپنے اس مل سے اُمھوں نے مقین کر بیا کہ اب وہ اپنی موت

محفوظ ہو گئے ہیں۔ النّد تعالیٰ کو اِن کی پیرکت سخت ناپ ند آئی اور اُسی علاقہ ہیں النّد کا غضب

ٹوٹ پڑااور ہرایک کوائٹی موت نے آپکڑا سب سے سب ہلاک ہو گئے۔

ایک ہفتے کے بعد حضرت حزقیل علیہ الت لام کا اُن پرگزر ہوا دیکھا کہ پوری قوم موت کی آغوشش میں جلی گئی ہے ۔ اِن کی اس حالت پر انھیں نہایت افسوس ہوا اور النّرتو کی جناب میں معذرت بیٹ کی اور دُعا مانگی کہ اُن کوموت کے عذاب سے بنجات مل جا نے ٹاکہ اُن کی زندگی خود اُن کے لئے اور دوسروں کے لئے عبرت ونصیحت بنے

چنانچه حضرت حزقیل علیه ات لام کی وُعا قبول ہوئی اور التّٰرنعالے نے اپنی قدرتِ خاص ہے اُن سب کو دو ہارہ زندہ کر دیا بھران لوگوں نے عرصۂ دراز تک حضرت حزقیل علیٰلتلام کی رہنما ئی بیں زندگی بسرکی .

ی ور برق برق ایران ایرا

قُرْ فَى مُضمون الْمُوتَدَالَ الَّذِيْنَ خَرَجُوا مِنْ دِيَادِهِمُ وَهُمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الل

اے مخاطب کیا تونے ان لوگوں کونہیں ویکھا جوموت کے ڈرسے
اپنے گھروں سے ہزاروں کی تعدا دہیں نکلے، سُوالٹّرنے اُن کو دغضب سے)
کہا مرجا وُ رسواُن پرموت طاری ہوگئی) مجھرالٹّرنے اُن کے نہوں نر ندہ کر دیا۔ بیشک الٹّریوگوں پونیس کرنہیں اواکرتے۔
الٹّریوگوں پونیس کرنے والا جے سکین اکثر لوگ شکرنہیں اواکرتے۔

الترونوں پر میں ترمے والا کے یہ اسرون کو اسلام کے ان اسرون کا عذاب مسلط کر دیا تاکہ اس جہاد کے خوف سے بھاگ جانے والوں پر اللہ تعالیے نے موت کا عذاب مسلط کر دیا تاکہ اس واقعہ سے لوگ عبرت حاصل کر ہیں اوران کے قلوب میں شجاعت و بہا دری کا جذبہ پیدا ہوا ور بُرُ دلی و نا مردی سے نفرت پیدا ہو ہو ہے کہ قرآن حکیم نے اس مختصر واقعہ کے بعدی مسلمانو کو جہاد فی سبیل اللہ کا حکم منایا اور یہ میں جتلا یا کہ خدائی را ہ ہیں جہا داور قربانی سے گریز کرنازوال وانحطاط کا باعث ہوتا ہے جمیساکہ بنی اسرائیل کی روگر دانی پر فلاہر ہوا۔ جہاد سے فرار کی سب سے بڑی وجزندگ سے محبت اور موت کا ڈر جب ایک اور حکم قرآن کر ہم ہیں ارشاد باری تعالیٰ ہے کہ در جب انہوت تم کو ہے۔ ایک اور حکم قرآن کر ہم ہیں ارشاد باری تعالیٰ ہے کہ در جب انہوت تم کو بالے گی خواہ تم مضبوط قلعوں اور بر جوں ہی ہیں کیوں نہ ہو " یہاں النٹر نے خودان کومٹ ہر ہر کرا دیا کہ وہ جس موت کے خوب سے مجاگر کرا ور اپنے کو خودان کومٹ ہر ہر کرا دیا کہ وہ جس موت کے خوب سے مجاگر کرا ور اپنے کو خودان کومٹ ہر ہر کرا دیا کہ وہ جس موت کے خوب سے مجاگر کرا ور اپنے کو

منائج وسيب

محفوظ سمجھ کرحس مجگہ آئے تھے موت و ہاں تھی آکر رہی ۔

حیات بعد الموت نہیں اللہ تعالے کے عام قانون کے مطابق اگرچہ دوبارہ زندگی الموت بیس نہیں ہوگا البقہ قیامت بیں دوبارہ زندہ نہیں ہوگا البقہ قیامت بیں دوبارہ زندگی کا واقعہ بیش آئےگا، کیکن اسی عالم بیں اللہ تعالے کے قانونِ فاص (قدر اللہ کا کے بیت میں میں نظر کسی محمت وصلحت کی بنا پر اگر کسی مُرد کے کو دو بارہ حیات حاصل ہوجا کے صرف می نہیں بلکہ واقع ہوا ہے۔ قوم حزفیل علیہ استلام کا یہ قرآنی واقعہ اِس کا واضح نبوت کی اور پر قیقت میں ہے کہ جو وات جس می کو ترکیب رہے ہو ہے ہیں کہ جھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے اور کیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب سے بھر جانے کے بعد دوبارہ اُس کو ترکیب دیتا ہے دوبارہ ترکیب

مے مکن ہونے کے بعد حیات بعد الموت کا ابحار کمیا جائے جو بعض خاص مالات ہیں نبی اور رسول كى تصديق اور تائيد كے لئے اسى ونبيا ميں بصورت معزه ظاہر بهوجا تاہے۔ اسكى مزيد فصيل معزات كى حقيقت مي كرنشة صفحات يراجي ہے.

جہاد آگرجہ قوم کے بعض افراد کے لئے پیغام موت بن کران کو دنیوی لذا ندم محروم محرویتا ہے لیکن حقیقت یہ ہے کہ وہ پوری امت اور قوم کے لئے آکسیر حیات تابت ہو تا ہے اور ملک وملت کی دوام وبقا کا ذریعہ بنتا ہے اور جو لوگ اس راہ میں کام آجاتے ہیں اُن کے لئے دائمی حیات اور باعزت موت کا باعث ہوتا ہے۔ موت وحیات کایہی و وفلسفہ ہے جس نے مسلمانوں کی زندگی کو دوسری قوموں سے اسطرح ممتاز كردياكه التذكانام لمندكرنے والامسلمان أكرزنده رباتوغازى اورمجا بربنتاہے اوراگراس راہ بیں کام آجا تا ہے توسیبید کے باعزت نام سے یاد کیا جا تاہے :۔ وَلَا تَعَوُّلُوا لِلَنَ يُنْفَتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ اَمُوَاتُ بَلُ اَحْيَامِ ۖ وَ لَكِنُ لَا تَشْعُرُونَ. ربقروايت ١٥٤٠) اورجولوگ اللہ کی راہ میں قتل کئے گئے انھیں مردہ مذکبوبلکہ

حقیقی حیات تواک ہی کو ماصل ہے سکین تم اسکی حقیقت سے آگاہ ہیں.

بهور بانتجاعت اسلام نے شجاعت كوفكيّ حَسَنُ قرار ديا ہے اور بُزدلى كونامردى ا ورعبب شمارکیا ہے۔ نبی کریم ملی الشرعکیہ ولم سے پوچھا گیا گیا مسلمان سے گنا ہ ہوسکتا ہے؟ فرمایا ہال مکن ہے! پوچھا گیا کیا مومن بُزدل ہوسکتا ہے ؟ارشاد فرما یانہیں !‹الدیث،حق پر قائم رئیتے ہوئے غیر سے نینخوف ہوجا ناشجاعت اور بہا در*ی ہے* بيجا قوت آزمانی يا بے مقصد بہوم كرنا شجاعت نہيں تہوركہلا آ ہے جوانسانی كمالات سے متعملی نہیں ہے سیدناحز قیل علیہ التِلام کے اس واقعہ میں شجاعت اور تہوّر کانما یاں فرق معلوم ہو^{تا} ہے. ہزاروں کی تعدا دہیں اپنے تھروں سے نکلے اورجب رشمن کو دیکھا تو ہیٹھ بھیرکر مما کر محفرے ہوئے.

تنكولا الرئاس على السّام

حضرت موسیٰ و ہارون علیہماات لام کے بعد قرآن تھیم ہیں سب سے پہلے جس نبی کا ذکر صراحت کے ساتھ آیا ہے وہ حضرت الیاس علیہ ات لام ہیں۔ بیہ حضرت حرقبل علیالسلام کے جانشین اور بنی اسرائیل ہیں ایلیا نبی کے نام سے مشہور ہیں۔

اریم کرامی اور لیے گذشت فرآن کیم نے ان کانام الیاس بتایا ہے اور آجیل میں اِن کوا لیمانبی کہا گیا ہے۔ حضرت الیاس

علیہ الت لام کا ذکر خیر قرآن تکیم میں صرف قرقہ میں آپائے۔اُنگ سورہُ انعام کمیں دوسرے سورہُ صافات میں بسورہُ انعام میں توصرف انبیار کرام کی ایک فہرست میں آپکااسم کرامی موجود ہے اور کو نی واقعہ یا تفصیل موجو دنہ ہیں .البتہ سورہُ صافات میں آپ کی دعوت وتبلیغ کا مختصر بھر میں ا

میر بیر است میں ایک سے معلق مختلف روایات ملتی ہیں جن میں بیشتر اسرائیلی روایات سے ماخو ذہیں ۔ بعض مفسرین کا خیال ہے کہ حضرت الیاس اور حضرت ادر نیس علیہ الت لام ایک ہیں۔ رسول کے نام ہیں لیکن اہل تحقیق نے اِن اقوال کی تر دید کی ہے جبکی سب سے بڑی وجہ یہ ہے کہ قرآن جکی سب سے بڑی اور حضرت الیاس علیہ است لام کا تذکرہ مُدا مُدا کیا ہے۔ اور دونوں کی نوعیتِ دعوت کو بھی مختلف بیان کیا ہے۔ اور دونوں کی نوعیتِ دعوت کو بھی مختلف بیان کیا ہے۔

حضرت ادربس علیه ابت لام سید نا نوح وسیدنا ابرانهیم علیهما است لام کے درمیانی دور میں مبعوث ہوئے ہیں اور حضرت الیاس علیہ الت لام اسرائیلی نبی ہیں جو حضرت موسیٰ

عليه التام كے بعد مبعوث ہوئے

مورخ طبری فقل کرتے ہیں کہ حضرت الیاس علیہ السلام ،حضرت الیسع علی السلام مخترت الیسع علی السلام سے جاتا ہما ہے جاتا ہما ہے جازا دہمائی بختے اور اِنکی بعثت حضرت حزقیل علیہ التسلام سے بعد ہوئی اور بیر کہ حضرت الیاس علیہ التسلام ہے اور ایک بعثرت ہارون علیہ التسلام کی اولاد سے ہیں بسلسلۂ نسب اس طرح بیان کیا گیا ہے:۔ ادیاس بن یاسین بن فناض بن بعزاد بن ہارون دعلیہ السلام)

حضرت البیاس علیہ الت لام اُردن کے علاقہ جلعاد میں پیدا ہوئے ۔ اُس وقت ملک میں جو باد شاہ عکمران تھا اس کا نام کتاب بائیبل میں آخی آب اور عربی تواریخ میں اَجِبْ یا اَخِبْ مُدکور ہے۔ اور عربی تواریخ میں اَجِبْ یا اَخِبْ مُدکور ہے۔

سيدنا البياس عليه السّلام ادر قرآنِ مسلم ادر قرآنِ

' ہدایت کے چراغ

شعکش سے و و چار ہونا پڑا۔ اِن کی قوم نے تھی اِن کو حبشلا یا اور چندنجلس بندوں کے سواکسی نے بھی حضرت الباس علیہ ات لام کا ساتھ نہ دیا۔ بعض کتت شفسیر می فصیل سے ساتھ مالات بیان سے گئے ہیں۔ خاص طور پڑفسیرظہری ہیں علامہ بغوی سے حوالہ نے قصیلی تذکرہ موجود ہے جو غالباً اسرائیلی روایات سے ماخو ذہبے . دیگر کتب تفاسیر میں بھی ان واقعات کے بعض اجزاءً حضرت وہہب بن منبتہ ہوا ورکعب احبار الشخصے حوالہ سے بیان سے کئے ہیں جواسرائیلی روایات

نقل کرنے میں شہور ہیں۔

ان تمام روایات میں جو قدرمِشترک بات ہے وہ یہ کہ حضرت الیاس علیہ السلام نے اسرائیلی بادی اوا افی آب اور اسکی رعایا کوئعل نامی بن کی پرشش ہے منع کرمے اللہ وامد کی دعوت دی مگر د و چارخق پرست انسانوں کے علاوہ کسی نے بھی یہ بات نہ مانی ملکہ آکیو طرح طرح سے پریٹ ان کمیا بیہاں ٹیک کہ بادی اور اسکی منت پرست بیوی نے آ کیوفتل کرنے كامنَصُوبَهِ بنابیا، آپ كوجب اسكی اطلاع ملی تو ایك دورافتا ده غار میں پناه لی ا ورایک عرصہ ورازیک وہن تقیم رہے۔ اس درمیان ملک پر قعط سالی کاعذاب آیا ساری قوم پرایشان ہوگئی اور آپ کو تلاشش کرنے لگی تاکہ آپ سے وُعا کر واکر قِعط سالی سے بنجات پائیں آپ النّبرِتعالیٰ سرچر کر الم کے حکم پرغارے باہرآئے اور شہر تنے بادث واخی آب سے ملے اور بتا یاکہ یہ غذاب اُس ئے۔ بنت پرستی اور شرک کی وجہ ہے آیا ہے بہذا تم لوگ اب بھی تو بہ کر لو عذاب دور بہوسکتا ہے بھیر آپ نے اپنی صداقت وسیّائی کے لئے بیمی فرما یا کہ تم لوگ کہتے ہو کہ تعل نامی بنت کے ساڈھے چارسونبی ہیں جوائس کی طریجے امور کئے گئے ہیں تم اُن سب کو ایک دن جمع کروکہ و و کعل کے نام قربانی پیش کریں اور بیں النّٰروا مدتے نام قربانی پیش کروں گاجس کی قربانی کو آسمانی اگر آگر جلادے اُس کا دین سیجا ہے. اس تجویز کو ہا دیث ہ اور اُس کی قوم نے پینے دکیا جیائجہ سر سر ہا سے سات كووكرمل كمحمقام پريداجتماع بوائعل تے جھوٹے نبيوں نے تعل كے ام پرقر بانی تينے كى اُور دويېرىكى بىل سے التجائيں كرتے رہے مگر كوئى جواب نه آيا ، اِس كے بعد حضرت الیاس علیہ انت لام نے اپنی قربانی بیش کی اسپر آسمان سے ایک آگ نمو دار ہوئی اور میں نے خصرت الیاس علیہ السکام کی قربانی کو مبلاکر خاک کردیا. یہ دیجھ کر مہت ہے اوگ سجد ہے میں گریڑے اور حضرتِ الیاس علیہ السّلام پودا بیان ہے آئے نیکن تعل کے یہ حبوثے نبی اب بھی نہانے ۔ اسکے بعد حضرت الیاس علیہ الت لام نے انھیں وا دِی له زمانهٔ قدیم بی الترتعالیٰ نے حق اور باطل کوجانچنے کیلئے بیطریقه مقرکیا تھا. مزینے فصیل تذکرہ بابیل و قابیل میں کچھی جاتی ہے

برایت کے جراغ

قیثون میں قتل کروا دیا۔

ت بنفسیریں یہ وضاحت نقل ہوتے بلی آرہی ہے کہ حضرت الباس علیہ الت لام کی قوم جس بت کی پوجا کرتی تھی اس کا نام تعبل تھا اور وہ سونے کامجسمہ تھا بمین گزائس کا قدیھا اُسکے چارمنھ کھے اُسکی فدمت کے لئے چارشو فادم مقرر تھے۔ در دح المعانی جری سندہ

قرائی مضمول سورهٔ صافآت می حضرت الیاس علیه الت الم می تبلیغ کاذکر اس طریم موجود سے:۔۔

وَإِنَّ إِنْ يَاسَ لَيْنَ الْمُوْسَلِينَ. إِذْ قَالَ لِقَوْمِ مَ آكَ تَتَّ فَعُونَ الْمُوْسَلِينَ. إِذْ قَالَ لِقَوْمِ آكَ الْمَتَّ فَعُونَ الْمُوسِلِينَ الْمُؤْسَلِينَ. إِذْ قَالَ لِقَوْمِ آكَ الْمَتَّ فَعُونَ الْمُؤْسِلِينَ الْمُثَلِينَ. إِذْ قَالَ لِقَوْمِ آكَ الْمُؤْسِلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَالِينَ الْمُثَلِينَ الْمُلْمُ الْمُثَلِينَ الْمُلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِينَ الْمُثَلِّينَ الْمُثِلِينَ الْمُلْمِينَ الْمُثَلِينَ الْمُلْمِينَ الْمُثَلِينَ الْمُلْمِينَ الْمُلْمِينَ الْمُلْمِينَ الْمُلْمِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُلْمِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِلِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنِينَ

اور بلاسٹ ہوالیاس رسولوں ہیں ۔ و و وقت فابل ذکر ہے جب انصوں نے اپنی قوم سے کہا کیا تم الٹریے مہیں ڈرتے ؟

کیاتم بعل کو پکارتے ہوا ورسب سے بہتر پیداکرنے والے خالق کو حپوڑ دیتے ہو۔ الترسى تمہارااورتمہارے باپ دا دا وں كا پرور دگارہے. پر انھوں نے الیاس كوجھلا یا توبے شک وہ لائے جائیگے كيليے موئے (جہنم میں) بجزان كے جرالتركي مخلص بندے ہيں. اور ہم نے بعد كے لوگوں ہيں اتياس كا ذكر ہاتى ركھا۔ اتياس پرسام ہو۔

بین میرست میرد. بینک ہم نیکو کاروں کو اسی طرح بدلہ دیا کرتے ہیں۔ بینک وہ ہمارے مومن بندوں ہیں سے ہیں۔

وَ زَكْرِيًا وَ يَعْنِى وَعِيْسِى وَ إِلْيَاسَ كُلُّ مِنَ الصَّلِعِيثِ.

دانعام آیت، هی اور زکریا اور مینی اور الیاس کوهی ہم نے بدایت عطاکی بیسب صالحین بس شمار ہیں۔

مثانج وعبستر

ایک مفسیری مکت اسور ہ انعام کے دسویں رکوع بیں لسل اٹھارہ انبیار کرام کے اسمار گرام کے اسمار گرامی آئے ہیں۔ ان ہیں حضرت الیاس علیہ السلام کا اسم طرامی ہمی موجود ہے۔ اور آخریں نبی کریم صلی التعظیہ ولم کو ہدایت فرائی گئی کہ یہ سب التلا کی طرف سے دایت یا فتہ ہیں . آپ بھی ان کی بیروی کیجئے ۔ اِن سب کوہم نے جہان والوں پر برتری بختی ہے۔

قرآن محیم نے اس فہرست ہیں انبیار کرام کوئین مجدا مُداطبقوں ہیں بیان کیا ہے:
پہلے طبقے ہیں حضرت واو دہسلیمان ، ایوب ، یوسف ، موسیٰ ، بارون علیہم السّلائم ۔
وَوْسِرے طِبقے ہیں حضرت زکریا ، یعییٰ ، عیسیٰ ، الیاس علیہم السّلام ۔
تیسیرے طبقے ہیں حضرت آملعیل ، الیسع ، یونس ، لوطاعلیہم السّلام ۔
اس ترتیب کی محمت میں مفسرین کرام نے مختلف توجیہات کلمتی ہیں ، لیکن مفسر المّن ارنے بہت عمدہ محمت بیان کی ہے جس کا ماصل یہ ہے : ۔

انبیار بنی اسرائیل بی خصوصی امتیازات کے پیشِ نظر تین قسم کی جماعتیں گزری ہیں ہے تعض انبیار صاحب تخت و تاج اور دولت و ٹروت سے

اللہ سعے المحصان کے بالکل عکس زاہدانہ اور راہبانہ زندگی کے مالل سے انھیں دولت و شروت سے تعلق ہی نہیں بلکہ شخت بیزاری تھی ۔ تعییر اطبقہ چندانبیار کرام کا ایسانھی تھا جو نہ اپنی قوم کے ماکم سطے نہصاحب دولت و شروت سطے اور نہی صرف زاہدانہ زندگی کے مائل سطے بلکہ اپنی قوم کے سابھ متوسّط معاش بھی رکھتے تھے نہ وہ محتاج تھی اور نہ صاحب دولت و شروت ،

قرآن کیم نے سورہ انعام کے اس وسویں رکوع میں غالبًا اسی خصوصی ابتیاز کے پہیٹِ نظرانِ انبیار کرام کوسلسلہ وارتبین طبقوں میں ذکر کیا ہے:-

تینی فہرست میں حضرت داؤ دوسلیمان علیہماالسلام جوصاحبِ مکومت رسول ہیں اورحضرت ایوب وحضرت یوسف علیہما السلام آگری صماحبِ مملکت نہ منفے لیکن اوّل الذکر ایک چیوٹی سی ریاست کے مالک منفے اور ثانی الذکر عکومت مقرکے وزیرا در منجا دِکل منفے اسکے بعد حضرت موسیٰ و ہارون علیہماات لام کااسم گرامی آیا ہے جو نہ صاحبِ مکومت منفے نہ وزیرملکت بلکہ اپنی قوم کے بیغیمبرا در اُن سے سردار منفے داکس حیثیت سے صاحب اقتدار میمی منفے)

توسری فہرت میں حضرت ذکریا، تحییٰ ہمینی، الیاس میں اسلام کا تذکرہ ہے جو اپنے اُر کہ و قناعت ہیں شہور زبانہ ہیں۔ ساری زندگی نہ اپنے کا سالم کے سکان بنایا نہ کھانے پینے کا سابان فراہم کیا ون تھر سلیغ حق ہیں مشغول رہتے اور رات کو یا و الہی ہیں صرف کرتے جب بیندا تی تو ہا تھ کا تکمیہ سرکے رہے رکھ کر سوجاتے (التٰداکبر)
نیجے رکھ کر سوجاتے (التٰداکبر)
تیجے رکھ کر سوجاتے (التٰداکبر)
تیجے رکھ کر سوجاتے کی فہرست ہیں حضرت اسمعیل ، الیسع ، یونس ، لوط میں ہمالاً

کا ذکرہے جن کی زندگی درمیانہ حالت کی رہی ہے اِمفوں نے نہ حکومت د وسرداری کی اور نہ خالص رُ ہدو قناعت اختیار کیا بلکمتوسط زندگی سے وابستہ رہ کرتبلیغ کا فریضہ اداکرتے رہے اور قوم کی خیرخواہی میں اپنی زندگی صرف کردی۔

حیات الباس علید السلام اصرت خضرعلید استلام ی طرح حضرت الیا علیه استلام ی حیات سے بارے میں بھی

مؤرضین اورمفسرین نے تفصیل بحث کی ہے بنفسیر نظهری میں علّامہ بغویؒ کے حوالہ سے جو طوبل روایت بیان کی گئے ہے اس میں یہ بھی ندکور سے کہ ہے ۔

مضرت الیاس علیه اتسام کوایک آنشین گھوڑے پرسوار سرکے آسمان کی طرف اُٹھا لیا گیا تھا اور و ہ حضرت علیے علیہ السلام

کی طرح زندہ ہیں. دمظہری جہصلتا) علامہ سیوطیؓ نے بھی ابن عساکرا ور حاکم سے حوالہ سے کئی ایک روایات نقل کی ہیں جسے معلوم ہوتا ہے کہ وہ زندہ ہیں.

کعب احبار شے ایک روایت منقول ہے کہ چار انبیار کرام ابتک زندہ ہیں جوز مین میں حضرت خضر علیہ الت لام اور حضرت الیاس علیالسلام اور دو آسمان میں حضرت علیہ الت لام اور حضرت ادر ایس علیہ السلام، اور دو آسمان میں حضرت علیہ الت لام اور حضرت ادر میں علیہ السلام، دور منتورج ہ مصن

اور بعض مفسرین نے یہ مجی لکھا ہے کہ حضرت خضرا ورحضرت الیاس علیم مات لام ہرسال رمضان المبارک ہیں بیت المقدس بیں جمع ہونے ہیں اور روزے رکھتے ہیں۔ د تنفیر قرطبی جرہ اصلاب لیکن شہور ناقد مدیث ما فظ ابن کثیر ٹنے اِن روایات کو صحیح قرار نہیں دیا ۔ان جسی روایا کے بارے میں اُن کا اینا یہ فیصلہ ہے :۔

وَ هُوَمِنَ الْإِسْرَائِيُلِيّاتِ الَّيْ لَا تُصَدَّقُ وَلَا تُكَلَّابُ بَلِ الظَّاهِدُ أَتَّ صِعَّنَهَا بَعِيدًة لللهِ والنهايه جامعة) یہ اُن اسرائیلی روایات میں سے ہیں جبی نہ تصدیق کی جا سے اور نہ تکذبیب ، بلکہ حقیقت یہ ہے کہ ان روا یات کی صحت بعید ترہے۔

ابسامعلوم ہوتاہے کہ تعب احبار اور وہب بن منبرؓ جیسے علمار نے جواہل کتاب کے علوم کے ماہرین میں سے تھے اس قسم کی روایات مسلمانوں سے آگے بیان کی ہونگی جس سے خصرت الیاس علیہ است لام کی حیات کا نظریم سلمانوں بیں بھیل گیا ورینہ قسران ومديث ين أليي كوني وليل نهين التي جس سان كي حيات كاعقيده قائم كيا جاسكے يا يدكه وه حضرت مبینی علیه است لام کی طرح آسمان براً مطالخ کئے ہوں البتہ ایک روایت ستدرک حاکم میں ملتی ہے جسٰ میں کیہ بات مذکور ہے کہ تبوک کی راہ میں نبی کریم ملی اللہ عليه ولم كى مِلا قات حضرت الياس عليه التلام ي بوني.

نکین اس روایت کومحذ نمین نے موضوع دا گھڑی ہوئی) قرار دیا ہے مشہور نا قدمد^ی

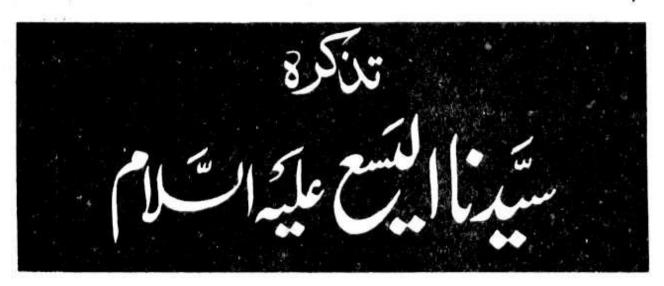
علاًمہ ذہبی اس روایت سے بارے میں تکھتے ہیں :۔

یہ مدیث موضوع ہے الٹرائس کا بڑا کرے جس نے یہ مدیث محصری ہے اس سے پہلے مبرے کمان میں بھی نہ تھاکہ امام ماکم کی بیخری اس مدیک پیچ سحتی ہے کہ وہ اس مدیث کو مجیج قرار دیں ۔

(دُرمنتورج ۵ مهیمی)

الغرض كسى سندم محيح سے يہ ثابت نہيں ہے كہ حضرت الياس عليه الت لام بقيد حيات ہيں ۔ لہذا اس معاملہ میں امتیاط کا تمقاصہ یہی ہے کہ سکوت اختیار کیا جائے اور اسرائیلی روایات سے فلسلے بیں نبی کریم سلی الٹیولیہ ولم کی تعلیم پڑل کیا جا ہے کہ رُم ان کی تصدیق کرو نه نیکذیب " نُم ان کی تصدیق کرو نه نیکذیب "

كيونكه قرآن عكيم كى تفسيرا ورعبرت فصيحت كامقصداس كے بغير بھي يورا بوجا آ والثراعلم ـ



آعارفی حضرت اُلیسکنے علیہ الت لام بنی اسرائیل پنجیبر ہیں قرآن کیم میں اور انہیں انکو شمیر ہیں قرآن کیم میں اور انہیں انکو شمیر ہیں البتہ انہیار کرام کی فہرست میں انکو شمار کیا ہے اور صوف نام کی حدیک نذکرہ موجود ہے۔ اسرائیلی روایات میں بھی آپ کا اسم گرامی البیسع بیان کیا گیا ہے۔ کتب تاریخ ہیں یہ و ضاحت بھی آئی ہے کہ آپ حضرت الیاس علیہ الت لام سے جیازا و بھائی سے ۔ ابن عماکر نے اپنی تاریخ ہیں لسلۂ نسب الیاس علیہ الت الم سے اور آپ نو حضرت یوسف علیہ السلام کی اولا دہیں شماد کیا ہے : ۔ اس طرح لکھا ہے اور آپ نو حضرت یوسف علیہ السلام کی اولا دہیں شماد کیا ہے : ۔ الیسع بن عدی بن شوتم بن افرائیم بن یوسف بن میعقوب

لِعنت فعرت الیسع علیہ التلام حضرت الیاس علیہ التلام کے نائب اورخلیفہ ہیں۔

الجینت کی حضرت الیاس کے بیائی ۔ اور جب حضرت الیاس علیہ التلام کا انتقال ہوا تو الٹرتعالیٰ نے علیہ التلام کی رہنمائی کے لئے حضرت الیاس علیہ التلام کو نبوت سے سرفراز کیا۔ آپ نے مضرت الیاس علیہ التلام کو نبوت سے سرفراز کیا۔ آپ نے حضرت الیاس علیہ التلام ہی کے طریقہ پر بنی اسرائیل کی قیادت فرمائی اور آخر عمر تک میں خدمت انجام ویتے رہے۔

یہی خدمت انجام ویتے رہے۔

مزية نفصيلات سے قرآن عکيم اور اما ديث صحيحہ ساکت ہيں۔

قران كميم اورسيدنا البسع قرآن عليم بي وتؤمقام برحفرت البيع عليه استلام

كااسم كرامى ملتاب اورصرف ذكراسم يراكتفا كياكمياس اورآب كوانبيار كرام كى فهرست میں شمار کیاہے۔

سورهٔ انعام آیت ملاه اورسورهٔ ص آیت مهیم.

وَإِسْمُعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُؤْنُسُ وَلُؤَكَّا وَكُلًّا فَكُلًّا فَضَلْنَا عَلَى

العُلَيدِين. وانعام آيت علام)

اوراسمُعیل اورالبیع ا ورپونس اورلوط ا و ران سب کو

ہم نے دنیا والوں پرفضیلت عطائی ہے۔ وَاذُكُوُ اِسْمُعِیُلَ وَا لُیسَعَ وَ ذَا الْکِفُلِ وَكُلُ مِسْنَ

الأَخْمَادِ. دِصَ آيت ٢٨)

اوريا دكرو المعيلُ اور البيعُ اور ذُو الكفلُ كواوريه سب

الجھے لوگول میں ہیں۔

حضرت آتیسے علیہ الت لام کی زندگی کا یہ اہم نکتہ تھی قابل ذکرہے کہ حضرت آآباس علیالسلام کی معبت نے اتھیں خلافت اور تھے راس کے بعد نبوت سے سرفراز کیا۔ نیکوں کی صحبت حصول خبرکے لئے نہایت مُوثر ثابت ہوتی ہے نیکوں کی صحبت کے چند کمات بساا و قات انقلاب زندگی کا ذرایه بنے ہیں۔

عارف رومی کہتے ہیں :۔

ك زمانه صحيح بااوليار بہتر از صدیالہ طاعت ہے ریار



حضرت موسیٰ علیہ الت لام کی و فات سے بعد تقریباً ساڑھے تین سو سال بنی اسرائیل میں مذکوئی بادشاہ پیداہوا نہ پوری قوم کا کوئی ایک مروار مقا. خاندانوں اور قبائل ہیں جھوٹے حیوٹے سرد ارمکومت کرتے تھے اور اُن کے مناقبتات ومعاملات کے فیصلے مقرر کر دہ قاضی انجام دیتے تھے اور موجودہ نبی اِن تمام امور کی نگرانی کے ماتھ ماتھ دعوت و تبلیغ کی خدمت انجام دیا کرتے تھے جضرت یوشع علیہ الت لام نے بھی اپنی آخرعمر کے مہی خدمت انجام دی اور قوم کے معاملات اور باہمی مناقشات کے فیصلوں کے لئے قاضیوں کومقرر کیا تاکہ وہ آئندہ کمبی اسی طرح اپنا نظام قائم رکھیں مجمعی ایسائھی ہوتا تھا کہ اللہ تعالیے کی طرف ہے کسی قاضی کومنصب نبوت عطا ہوجا یا اوروہ دونو خدمتيں انجام دینے تھے۔ چونکہ پوری قوم کاکوئی ایک حکمراں پاسردار نہوتا تھا اس لئے ہمایہ اقوام إن يراكنز حمله آور ہوتی رہتی تھیں اور بنی اسرائیل ان كانتَ منتے دستے متھے جمجی قوم عمالقه چره آتے اور مجھی فلسطین میں مدیانی قوم حملہ آور ہوتی تو مجھی آرامی قوم جھا یہ مارتی۔ آنے دن کی اس لوٹ مار ، غارت گری سے پوری قوم بنی اسرائیل ننتشراور ہے قوت ہوگئی تھی یہاں یک کہ چوتھی صدی موسوی کے آخر جبکوئیلی کا بن کا دور تھا فِلسطینی قوم نے اُنپرَ زر دست حمله کیا اورٹ کست دے کرمتبرک صَندوق " تابوت سکینہ" بھی چھین کے گئے مسى حفاظت بنى اسرائيل صديوں سے كرتے جلے آرہے تھے۔ اس سرك صندوق ميں تورا كالصلى تسخدا ورحضرت موسى وبإرون عليهما التسلام تصعصاا وربير ببن اورمن وسلوى كا برتن محفوظ تھا فلسطینوں نے اس صندوق کو اسے مستصبور مندر "بیت دجون" بین رکھدیا يەمندران كےسب سے بڑے ديو تا "وجون" كے نام سے موسوم مقا۔

اس بُت کاچېره انسانی شکل کا اور شیم محیل کا تھا۔ قصص الانبیار سے مؤلف خوار مصری محیتے ہیں کو کسطین کے مشہور شہر رملہ کے قریب آج مجی ایک بستی بیت دجون کے نام سے پائی ماتی ہے۔ فالب گمان یہ ہے کہ تورات ہیں دجون کے جس مندر کا ذکر ہے وہ میہیں واقع ہوگا اور اسی نسبت سے بستی کا نام میمیت دجون 'رکھدیا گیا ہو۔

نام ونسب اعمین کائن کی وفات کے بعد فضاۃ میں سے ایک قامِنی شموئیل کو جو منطا ہوئی میں سے ایک قامِنی شموئیل کو جو تقویٰ وطہارت میں ممتاز تقے منجانب الٹرمنصب نبوت عطا ہوئی اور وہ بنی اسرائیل کی رشد و ہدایت کے لئے مامور ہوئے .

تاریخ تی بعض کتابوں میں تیقصیل بھی ملتی ہے کہ جب حضرت الیسع علیہ الت الم کی وفات ہوگئی اسوفت مصراو وفلسطین کے درمیان بحروم کے خطہ پر آبا دعمالغہ قوم ہیں جا توں نامی جا ہر وفالم حکمرال نے بنی اسرائیل کو مغلوب کر سے اُن کی آبادیوں پر قبضہ کر لیا اور اِن کے مہت سے سرواروں اور قبیلہ کے مغزز لوگوں کو گرفتار کر سے ساتھ لے گیا اور تورات کو بھی جلا کرراکھ کردیا. بنی اسرائیل کے لئے یہ ایسا نازک دور مقاکہ اِن میں نہ کوئی نبی ورسول موجو دینھا اور نہ کوئی سردار اور امیر خاندان نبوت میں سے صرف ایک جا ملہ عورت کے اور کوئی باتی نہ تھا۔ ایسی بے سروسا بائی کی حالت میں اللہ تو موف ایک جا ملہ عورت کے اور کوئی باتی نہ تھا۔ ایسی بے سروسا بائی کی حالت میں اللہ تو بی فرایا اور اس خاتون کے بینی اسرائیل سے ایک بڑرگ کومقرر کیا گیا۔ شمویل نے قوم پر کرم فرایا اور اُس خاتون کے بینی اسرائیل کے ایک بزرگ کومقرر کیا گیا۔ شمویل نے اور اس بھی تو معلی موسل کی جب سن مُرتدکو پہنچے تو تمام بی اسرائیل میں ممتاز اور نمایاں مقع آخرالٹر تعالی نے اِن کومنصب نبوت سے سرفراز فرایا اور قوم کی مُرتد میں ممتاز اور نمایاں مقع آخرالٹر تعالی نے اِن کومنصب نبوت سے سرفراز فرایا اور قوم کی مُرتد میں ممتاز اور نمایاں مورکیا کسی بھی قوم ہیں نبی ورسول کا مبعوث ہونا اُسکی نے و ثانبہ کا باعث بھرائیل کے عوری واقع اِل کا آغاز ہوا۔

مؤرفین کھنے ہیں کرحضرت شموئیل علیہ الت لام حضرت ہارون علیہ الت لام کینسل سے بھے اور سلسلہ نسب یہ ہے :۔

شموئيل بن حنّه بن عا قربن عا قرسے او پر کی کرا یاں

نذکورنہیں ہیں. شموسل عبرانی زبان کالفظہ ہے جس کا عربی ہیں ترحبہ اسمعیل سے کمیا جا تاہیے اور کشرت استعا سے شموسل ہوگیا۔

طالوث کی ممرافی این اسرائیل پر قدم عمالقہ سے ظلم وستم جب زیادہ ہوگئے تو است انفوں نے اپنے ہوگئے تو است انفوں نے اپنے بی حضرت شموئیل علیہ استلام سے درخواست کی کہ ہم پر ایک بادسشاہ مقرد کر دیں جبی قیادت میں ظالموں کا مقابلہ کیا جاستے اور جہاو فی سبیل التہ کے ذریعہ وشمنوں کی لائی ہوئی مصیبت کا خاتمہ کیا جاسکے۔

صفرت شمونل علیه استلام نے ان شے اصرار و مطالبہ پر اپنا یہ اندیشہ ظا ہر کیا کہ اگرتم پر اللّٰہ تِعالے کی مانب سے کوئی باد شاہ مقرر ہوگیا اور نم نے اسکی مخالفت کی یا اگروہ جہاد کا تکم دے تو کہیں مزول ثابت نہ ہوجاؤ اور جہاد ہے انکار کر بیٹھو۔

بنی المرائیل نے بڑی قوت سے جواب و یا کہ یہ کیسے مکن ہے کہ ہم جہاد سے سے مقدس فرلفینہ کا انکار کر دیں بہم خوب جانتے ہیں کہ دشمنوں نے ہم کو مہت زیادہ ونسیل مقدس فرلفینہ کا انکار کر دیا ہے اور اسمفوں نے ہم کو ہمارے تھروں تک سے بحال ہاہر کہا ہے اور ہماری اور ہماری اور ہماری اسماری کے اس مرار پر حضرت شمویل علیہ السلام نے بارگا والہی میں وُعاکی کہ ایساکوئی انتظام فرمایا جائے جس سے قوم کی خواہش پوری ہو۔

ورخواست بنظور مروئي أورا ولا ومعقوب دعليه التلام) سے ايك في

نامزد ہوا جوملم اور جم کے لحاظ سے نمایاں حیثیت رکھتا تھا اس کا نائم طالوت تھا۔ بنی اسرائیل نے جب پیٹ ناتومنھ بنانے گئے اور ناگواری سے کہنے لگے ثیخص توغریب خاندان کا ہے اس سے پاس تومعولی سی دولت تھی نہیں پیس طرح ہمارا بادست ہ ہوسکتا ہے۔ باوٹ اس سے کاحق تواس سے زیادہ ہم رکھتے ہیں ہم میں سے سی کو بادست اہ مقرر کر دیجئے۔

اس مخالفت کی ایک وجرمئوزمین بر لکھتے ہیں کہ بنی اسرائیل ہیں ایک عرصہ درازسے نبوّت کاسلسلہ حضرت بعقوب علیہ الت لام کی نسل سے اولا دِ لا قسی ہیں اور حکومت و سرداری کاسلسلہ اولا دیم ہودا ہیں چلا آر ہا تھا اب جبکہ حضرت شمونیل علیہ الت لام نے اللّرتعالے ہے مکم سے بیشرف اولا دِ نبیآ مین مینتقل کر دیا تو بنی اسرائیل کے اِن سردار وں میں حسد **پیدا ہواا در و ہ** اسکو برداشت مذکر سکے۔

بہرمال جب انفوں نے خلاب توقع کومت کو اولادِ بنیا بین بین بین تقل ہوتے دکھا توحید کی آگ نے انفیں برا فروخة کردیا اور حضرت شموئیل علیہ الت الام سے جبگڑا کرنے گئے۔ حضرت شموئیل علیہ الت الام سے جبگڑا کرنے گئے۔ یا بزرگی کی علامت نہیں ہے حکمرانی کے ذاتی اوصا ف کے لئے قوتِ علم وطا قتِ جبم ضروری ہیں اوریہ دونوں وصف طالوت ہیں ممتاز ونما یاں چیٹیت رکھتے ہیں اس لئے آپ اسکو بادشاہ مقرر کیا گیا ہے اسکی رسمائی میں تم جہا دکروا ورا پنے آبائی وطن دفلسطین کو ماصل کر و اور اپنے آبائی وطن دفلسطین کو ماصل کر و ،الٹر تعالیٰ کی تائید ولصرت استی ص کے ساتھ ہے۔ اور الٹر تعالیٰ جسکو چا۔ بسکو واسے زمین کی حکمرانی کے لئے نمتخب کرلیہ ہے۔ اور الٹر تعالیٰ جسکو چا۔ بسکو چا۔

ورقى مضمون الكُوتَدالَى الْمَلَامِنُ بَيْنَ اسْرَايَيُكَ مِنْ الْمُلَامِنُ بَيْنَ اسْرَايَيُكَ مِنْ الْمُدَامِينَ الْمُورِيَّةِ الْمُدَامِينَ الْمُدَامِدِينَ الْمُدَامِدِينَامِ الْمُدَامِدِينَ الْمُدَامِينَ الْمُدَامِدِينَ الْمُدَامِدِينَّ الْمُدَامِدِينَ الْمُدَامِدُو

کی تم کوبی اسرائیل کی اُس جماعت کا مال معلوم نہیں جس نے موسیٰ کے بعد اپنے زمانے کے نبی دشموئیل) سے درخواست کی کہ ہم اللّٰہ کی راہ میں جہاد کریں گے ہمارے لئے ایک حکمرال مقرد کردیجے ! نبی نے اُن سے کہا کچھ بعید نہیں کہ اگر تم کو لڑائی کا حکم دیا گیا تو تم لڑنے سے انکار کردو!

سرواروں نے کہا ایراکیونکر مکن ہوسکت ہے کہ ہم الٹرکی راہ یں دلا یں جبکہ ہم اینے اصلی گھروں سے نکا لے جا چکے ہیں اور اپنی اولا دے ہمی علیٰدہ کئے جا چکے ہیں ، مجرجب اُن کولڑائی کاحکم دیا گیا تو تھوڑے ہے۔ آدمیوں کے علاوہ سب نے پہٹے دکھلادی ، اور الٹرتوظالموں سے خوف واقعنہ ہے۔ آخر کار اُن کے اصرار پر اُن کے نبی نے کہا کہ الٹر تو خوف واقعنہ کے طالوت کوماکم مقرد کرد یا ہے۔

حب انموں نے یہ بات تی تو دا طاعت و فرمانبر داری کے بجائے ہے کہنے گئے وہ ہم پر کیسے ظمران بن سکتا ہے جبکہ اس سے نہیں زیادہ حکمران بنے کے ہم حقدار ہیں، علاوہ ازیں اس کو مال و دولت کی وسعت بھی حال نہیں نبی نے فرمایا دھمران کا جو معیار تم نے بنالیا ہے وہ غلطہ) بلاشبہ النّرتم نے جا کھران کی قابلیت واستعدا دہیں تم پر اُس کو برگزیدہ اور فائق کیا ہے اور علم کی فراوانی اور ضبم کی توت وطاقت دونوں ہیں اُسکو وسعت بخشی ہے اور عکومت و قیادت تمہارے چا ہے نہیں ملتی بلکہ النّرجہ کو چاہتا ہے اور عکومت و قیادت تمہارے چا ہے نہیں ملتی بلکہ النّرجہ کو چاہتا ہے اور عکومت و الاجانے والا ہے۔ این زمین کی عمرانی بخش و بنا ہے وہ بڑی وسعت والا جانے والا ہے۔

ما روس کی بینے کا صفرت شموئیل علیہ الت لام کی یوکیما نہ نصیحت کیومفید ثابت نہیں ہوتی قوم کا اوٹ است کے لئے تحسی دولت مند انسان ہوگا تو کا استراز بڑھتا ہی گیا کہ باد شاہت کے لئے تحسی دولت مند انسان ہوا تخاب ضروری ہے۔ آخر توم سے دولتمندلوگ ایک غریب مفلس کی کیونکرا طاعت قبول کرنگے۔ جب بیززاع طویل ہوگئی تو قوم کے بعض سر داروں نے کہا کہ اگر طالوت کا انتخاب النہ تعالیٰ کی جانب سے طے پاچکا ہے تواسکے لئے کوئی دلیل اورنشان چا ہئے تاکہ ہمیں مجمی یقین ہوجا سے کہ طالوت کا انتخاب النہ تواسکے لئے کوئی دلیل اورنشان چا ہئے تاکہ ہمیں مجمی یقین ہوجا سے کہ طالوت کا انتخاب النہ توالی کی طرف سے ہے۔

یسین ہوجائے دہا وں ہوا ہوہ استریاں اس سے معلا حضات کے حضرت شموئیل علیہ است ام کی دُما پر اللہ تعالیے نے ایک نشان وعلامت عطا کی فرما یا کہ اے لوگوا تمہارے علم ویقین کے لئے اللہ تعالی نے بدنشانی روانہ کی ہے وہ یہ کہ جو مشرک صندوق تمہارے ہا مقوں سے جبین لیا گیا تھاجس میں تورات کا اصلی نسخه اور خشر موسی و ہارون علیہ ہما السلام کے تبرکات محفوظ ہیں۔ وہ طالوت کی بدولت تمہارے پاس والیس آجائے گا۔ یہ اُسکے حق اور منجانب اللہ یونی علامت ہوگی۔ اِدھر اللہ تعالیٰ نے ایسا انتظام فرما یا کہ وہ وشمن جو اس صندوق کو گے کراپنے ولن چلے سے سے اسکوجہاں کہیں رکھتے فرما یا کہ وہ وشمن جو اس صندوق کو گے کراپنے ولن چلے سے سے اسکوجہاں کہیں در کھتے ہوگئ نہ کوئی و با اور بلا اُجاتی اس طرح اُن کے پانچ شہر و یران ہو سے سے آخر پرلینان ہوگئے کے مقد اسکوجہاں کہیں در وازے پر بہنچا دیئے سیج کے وقت قوم نے جو یہ تابوت و کھا توطا لوت کی بادشا ہت کے در وازے پر بہنچا دیئے سیج کے وقت قوم نے جو یہ تابوت و کھا توطا لوت کی بادشا ہت پر بینچا دیئے سیج کے وقت قوم نے جو یہ تابوت و کھا توطا لوت کی بادشا ہت پر بینچا دیئے سیج کے وقت قوم نے جو یہ تابوت و کھا توطا لوت کی بادشا ہت پر بینچا دیئے اُماد ہ ہوگئے۔

تابوتِ سكينه كايه واقعه قرآن عليم كى آياتِ ذيل بين اس طرح آيا ہے:-

اور اُن کے نبی نے اُن سے کہا کہ طالوت کے بادشاہ ہونے کی بہ علامت ہے کہ وہ صندوق تمہارے پاس آ جائے گاجہمیں تسکین کی چیز ہے تمہارے باس آ جائے گاجہمیں تسکین کی چیز ہے تمہارے رب کی طرف سے اور کچھ بچی ہوئی چیز میں جنکو حضرت موسیٰ اور حضرت ہارون علیہما الت لام چھوٹر گئے ہیں اُس صندو ق کوفرشتی ہے آگر تم میقین کے آئیں گے اسمیں تم لوگول کے واسطے پوری نشانی ہے آگر تم میقین

چنائج حضرت شمونیل علیہ انستالام کی یہ بیٹ ارت پوری ہوئی اور بنی اسرائیل کے آگے ملاکمۃ النّد نے تا بوت سکینہ طالوت کوسپیش کر دیا۔اس طرح ان پرنظام رہوگیا کہ طالوت کا با دسٹ ہ مقرر ہونا منجانب النّہ ہے .

جہا و من قدس اور کی جا گوت تو اور ایک بڑی تعداد طالوت بادت اہ مقرد کردیے گئے اور من اس کو و تمنول دفلہ طیبی اور ایک بڑی تعداد طالوت کی سرکر دگی میں روا نہ ہوئی، در سیان سفر حضرت طالوت نے بخیال محاکم دیا اور ایک بڑی تعداد طالوت کی سرکر دگی میں روا نہ ہوئی، عرصہ درازے فرنفیۂ جہا د جبور بیٹے ہیں یعض مرتبہ ایک خص کی مرولی یا منا فقا نہ حمومت یوری فوج کو نقصان پہنچا سے اس لئے ضروری ہے کہنی اسرائیل کو جہاد سے پہنچ بوری فوج کو نقصان پہنچا سے اس لئے ضروری ہے کہنی اسرائیل کو جہاد سے پہنچ مہیں جب کے کون خص تعمیل مکم اور ضبط نفس کا حامل سے اور کس میں یہ اوصاف پائے نہیں جانے تاکدا وائے فریضہ سے قبل ہی ایسے عناصر کو علیا تو حضرت طالوت نے اعلان میں کہا کہ النہ تعالیٰ اس نہوے فریعہ تمہارا استحان لینا جاستے ہیں وہ یہ کو کوئی ششخص بھی اس سے پانی نہ ہے اور جو ضلا ف ورزی کرے گا اس توات کرسے نمال ویا جاسے گا۔

البیة سخت پیاس کی حالت میں گھونٹ بھریا نی پی کرحلق ترکر لینے کی اجازت ہے۔ مفسرین لکھتے ہیں کہ یہ واقعہ نہراً دن پر بیش آیا بخاری

كى ايك روايت بي ہے حضرت برار بن عاز ب كہتے ہيں كہ ہم اصحاب رسول النصلي الشرعلية ولم آيس ميں يه بات چيت كياكرتے تھے كداصحان

برر کی تعداد اصحاب طالوت سے برا برہے ۔ (بخاری باب المغازی)

الغرض جب بیٹ کر دریا کے بار ہوگیا توجن لوگوں نے خلاف ورزی کرے یا نی پی لیا تھا وہ اپنے قنمن جالوت کی قوت وطاقت کو دیچ*ھ کر تھبنے لگے کہ ہم ج*الوت جیسے قوی ہیکل اور اُس کی فوجی طا^{قت} سے رونے کی ہمت نہیں یاتے لہذاہمیں والیس لوشنے کی اجازت وی جائے۔

ليكن جن لوگوں نےضبط نفس اوراطاعتِ امير كاثبوت ديا تھا انھوں نے جرأت اوربے خوفی ہے کہا کہ ہم وشمن کامقابلہ ضرور کریں سے اور اکثر ایسا ہواہے کہ التّٰدی تائیب کہ ونصرت سے بہت سی حیون چیونی جماعتیں بڑی جماعتوں پر غالب آگئی ہیں . شرط صرف یہ ہے

كەلائىرىراعتما دا در ثابت قدمى ہو۔

ا سے بعد اِن خلص مجا دین کانٹ کرآ گے بڑھا اور ڈٹمن کی فوج کے آگےصف آ را بوگیا ، وتمن کی فوج کاسر دارجاگوت نامی مشرک دیوبه کیل شخص تفا اور اس کے نشکر کی تعداد بھی زیاد ہ تھی مجا ہرین نے الٹر کی بارگاہ میں اخلاص ونضرع سے ساتھ دعا کی کہ اے اللّٰر تهمين صبرويمت عطاكرا ورمهين ثابت قدمى نصيب كرا وردشمنوك يريمين كاميا بي عطا فرما-تورات اور تاریخی کتب میں ندکورے کہ جا کوت کی غیم عمولی طاقت وقوت کے بنی اسرائیل کومتاً ژکررکھا تھاا وراس کے آگے نیش قدمی کی ہمت کرنا کوئی معمولی بات نەپقىلىكىن بنىاسرائىل كےاس سے كريں ايك غيرمورون نوجوان جواس سے قبل نەشجاعت وبهادری میں کوئی شہرت رکھتا تھا نہ جنگ آ زمود ہ تھا جا نُوت کی مسلسل للکاریرمقا بلہ کے لئے . آسمے بڑھائیکن بنی اسرائیل سے سردار حضرت طالوت نے اتنجیں رو کا اور کہا کہ اتھی تم ناتجرکار رو کے ہوجا او کے مقابلے کی بردانشت نہ کرسکو سے لیکن اس نوجوان کا اضرار طرحتا ہی گیا آخر حضرت طانوُت کواجازت دبنی پڑی . به بهاور نوجوان حضرت داؤ دعلیه است لام <u>حقے (جو</u>

بعد میں نبتوت سے سرفراز ہوئے ، کہاجا تاہے کہ یہا ہے باپ کے سب سے جھوٹے بیٹے تھے اور شرکتِ جنگ

کے ادا دے سے بھی نہ آئے تھے بلکہ باپ کی جانب سے بھائیوں اور دوسرے اسرائیلیوں کے مالات معلوم کرنے بھیجے گئے تھے۔ جب اسمفوں نے جا گوت کی جنگ طلبی لاکا رکو بار بارٹنا و ر اسرائیلیوں کی بس وسیشیں کو دیکھا تو اُن سے رہا نہ گیا اور وہ جا گوت جیسے دیو بہی بخر برکار آزیوہ جنگ کے مقابلے میں نہا دوڑ بڑے اور میدان جنگ میں جالوت کو لاکارا، جالوت نے اپنے مقابلہ میں ایک نوجوان کو دیکھ کے حقیرا نہ انداز میں کچھڑ یا وہ اسمیت نہیں وی محرجب دونوں میں نبرد آز مائی سفروع ہوئی توجاگوت کو حضرت داؤ دکی بے بناہ قوت وطاقت کا میں نبرد آز مائی سفروع ہوئی توجاگوت کو حضرت داؤ دکی بے بناہ قوت وطاقت کا این گوھیں سنبھالی ادر تاک کریے در بے بین بچھڑ اسکے سریر بارے اور جالوت کا سریا ش یا ش کر دیا، آگر بڑھکر اور تاک کریے در بے بین بچھڑ اسکے سریر بادے اور جالوت کا سریا ش یا ش کر دیا، آگر بڑھکر اس کی گرون میں کا میں قوالی۔ جالوت کے قتل سے بعد جنگ کا نقت ہو براگیا ، جالوت کے قتل سے بعد جنگ کا نقت ہو بات یا تی ۔ شکست کھانے گئی آخر کا رمیدان جھوڈ کر مجاگ کھڑی ہوگئی۔ بنی اسرائیل فاتحانہ سف ہم فلسطین میں داخل ہوئے اور وشمنوں کی سب سے بڑی طاقت سے نجات یا تی ۔

اس واقعه کے بعد فاتح سید نا واؤڈ کی شجاعت و دلیری کا ہرایک معترف ہوگیا اور وہ ہرایک کے ہرول عزیز رہنما بن گئے ۔ تھیر الٹرتعالی نے اپنے فضل وکرم سے سید نا واؤد علیہ التسلام کو نبوت ورسالت سے سرفراز کیا اور الیسی ظیم حکومت عنایت فر مائی جو تایخ عالم میں ملاحظ فر مائے ، حضرت طالوت کا یہ واقعہ اود ظالم جالوت کی ہلاکت اور سید نا واؤ دعلیہ السلام کی عظیم الثان دلیری وشجاعت کا تذکرہ قرآن مکیم کی آیات ذیل میں فصیل سے بیان کیا گیا ہے۔

قُرِ آئَ مُضمون فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ قَالَ إِنَّ اللهُ مُنْتِلِيكُمُ بِنَهُ وَنَهُ شَدِبَ مِنْ مُ فَلَيْسَ مِنِي . الإ

دبقره آیات ۱<u>۲۳۹ تا ۲۵۲</u>۲)

مجرجب طالوت فوجوں کولیکر دبیت المقدس سے قوم عمالقہ کی طرف) چلے توانھوں نے کہا الٹرتعالے تمہاراامتحان کریں گے ایک نہرے و ہرکے ایک نہرے ۔ لہذا جوشخص اس نہرے افراط کے ساتھ یانی ہے گاوہ تومیرے ساتھیوں میں نہیں اور جو اس کوزبان برمعی نہ رکھے وہ بہرے ساتھیوں

میں ہے لیکن جو خص اپ ہاتھ ہے ایک چلو تھر پی لے د تو اُسے اجازت ہی الغرض سبب نے اُس نہرسے ہے تھائ پیپانٹروغ کر دیا منحر تھوڑ ہے ہے آدمیوں نے اُن بین ہے د پچھا تک نہیں اس امتحان کی حکمت غالباً بیعلوم ہوتی ہے کہ ایسے مواقع پر جوش وخروش تھی مجھ مجھ مجھ مجھ مجھ مجھ مجھ مجھ مجھ میں اور اس وقت ایسوں کا اکھڑ جا نا باقی لیکن وقت رہے ہے اور اس وقت ایسوں کا اکھڑ جا نا باقی لوگوں کے پاؤں بھی اکھاڑ دیا ہے۔ اس موقعہ پر النگر تعالے کو ایسے لوگوں کی عالم خدہ کرنا منظور تھا۔ تفسیر بیان القرآن)

موجب طالوت اورجوا ہل ایمان ان کے ہمراہ بقے نہرے پار اُرْكَے د توان لوگوں نے جربے تخاشا پانی بی لیا تھا) کہنے لگے آج توہم میں جالوت اوراً سکے کشکرے بڑنے کی طاقت نہیں معلوم ہوتی (پیسنکر) وہ لوگ جنہیں قبالمت کے دن اللّٰہ کے رو بروپیش ہونے کا بقین تھا کہنے تفيح كمكرت سيبهت سيحيو فل حيو في جماعتيں بڑي بڑي جماعتوں براللہ كے حكم سے غالب آگئی ہيں اور البير تعاليے ثابت قدم رہنے والوں كاساتھ دیتے ہیں اورجب جالوت اور اُسکی فوجوں سے سامنے میدان ہیں آئے تو کہنے گے کہ اے ہمارے پرور دگارہم پر ثابت قدمی دغیب سے) نازل فرمائیے اور ہمارے قدم جمائے رکھنے اور ہم کو اِس کا فرقوم پر غالب تعیمیجے دمومنین کی اس وُعاکی ترتیب بڑی پاکیزہ ہے کہ غلبہ تحیلیے چونکہ نابت قدمی کی ضرورت ہے اس لئے پہلے اس کی ڈعا کی گئی۔ اور تابت قدمی کا انحصار تقویتِ قلب پر ہے اس لئے تابت قدمی ہے مہلے تقویت قلب کی م^وعا کی) تھرطانوت والوں نے مالوت والوں کو الله تعالے سے حکم سے شکست دی اور داؤد رعلیہ السّلام) نے جالو^ت کوقتل کرڈالااور رمھری الٹرتعالے نے داؤ د کوسلطنت اور حکمت انبوت)عطا فرمانی اور جوجومجی الترتعالے کومنظور مقاان کوتعلیم فرمایا اوراگریہ بات نہ ہوتی کہ البتر تعالے بعضے آ دمیوں کوبعضوں کے ور بیجہ سے و فع کرتے رہا کرتے توسر زمین دتمام تر) فسادے تھرجا تی سب

الشرتعالے بڑے فضل والے ہیں جہان والوں پر۔ یہ الشرتعالے کی آیات ہیں دلیعنی یہ قصتہ جو ذکر کیا گیا)جس کو صحیح صحیح طور پر ہم تم کو پڑھ پڑھ کرسنارہے ہیں (اور اس سے ٹابت ہواکہ اے نبی آپ بلاشبہ پنجمبروں ہیں۔

بعض اسرائیلی روایات بین ہے کہ جا گوت کی زبر دست قوت وطاقت اور اُس کے بیشکروں کی تعداد کا اندازہ کرکے حضرت طالوت نے جنگ سے پہلے اعلان کر دیا تھا کہ جوشخص بھی جالوت کوفت کی کردوں گا اور مکومت بین بھی حسبہ دوں گا اور مکومت بین بھی حسبہ دوں گا ۔

چنانچېرجب حضرت داؤد دعليه استلام) نے جالوت کوتس کرديا توحضرت طالوت نے حسب وعدہ اپنی بڑکی ميکال کا نکاھ اُن سے کرديا اور حکومت ميں بھی حصّه دار بناديا .
اسی دور ان حضرت شموئيل عليه السلام کا انتقال ہوگيا اور حضرت داؤد عليه السلام اُنکی جگه بنی اسرائيل کے نبی ورسول قراريا ئے اور دنيا وی فيادت بھی عاصل ہوئی جس کا مفصل ذکر تذکرہ سيدنا داؤد عليه الت ام نميں مطالعہ کيجئے ۔

منارنج وعب

مرسر مرس اسرائیل پر دیمنوں کے مسل مماوں اورغیر محفوظ زندگی نے مجبور کیا کہ اِن غیر نظینی مالات میں اسرائیل پر دیمنوں کے مسل مماوں اورغیر محفوظ زندگی نے مجبور کیا کہ اِن غیر نظینی حالات میں رہنما اور قائد کا انتخاب ہونا چا ہئے چنا بی آئموں نے مقرت شموئیں علیہ اسلام سے یہ مطالبہ کیا کہ ہماری وُنیا وی زندگی کے تحفظ کے لئے ایک حکمران متخب فرماُویں ۔ سے یہ مطالبہ کیا کہ ہماری وُنیا وی زندگی کے تحفظ کے لئے ایک حکمران متخب فرماُویں ۔ اُبعَتُ لَنَا مَلِكا نَقَا مِل فَی سَیدیلِ اللّٰہِ ،

د بقرہ آیت مائیں) ج**ں قرم کے نصیبے** میں عروج مقدّر ہو تاہے اس کے بعض صالح ا فراد میں غیر شعوری طور پر یه احساس شدّت سے پیدا ہوجا تاہے کہ اپنے گئے ایک مرکز بنایا جائے اور ایک قابل اعلام رہنما کا انتخاب کیا جائے۔ یوغیر شعوری احساس در اصل قوموں کی نشاۃ ثانیہ کا ذریعہ بنتے ہو۔ اور جو قویں ایسے حسّاس افراد سے محروم رہتی ہیں وہ بہت جلد دنیا سے معدوم ہوجاتی ہی۔

جابل اغتقاد بب

قوم کی خواہش واصرار پر اُس زمانے کے نبی نے حضرت طالوت کو امیرلشکر مقرر کر دیا تھا جو غیر معروف ہونے کے علاوہ دولت وٹروت سے نہی دست سخے ۔ اقوام وامم کے مختلف اعتقادات ہیں ایک عقیدہ یہ بھی رہا ہے کہ قیادت دکھتا ہوا ورحسب ونسب چاہیے جو دولت و ٹروت کا مالک اور قوم ہیں نمایاں چئیت رکھتا ہوا ورحسب ونسب مجمی معروف و شہور ہو۔ بنی اسرائیل کا دامن بھی اس فاسدِ خیال سے فالی نہتھ! اُمخوں نے مجمی حضرت طاکوت کی امارت پراعتراض کرتے ہوئے یہ کہہ دیا۔

نَحُنُ آحَقُ بِأَلْمُلُكِ مِنْمُ وَلَمْ يُؤْنَ سَعَتًا مِّنَ

المال - ربقرة يت ١٠٠٠

ہم اُسکے مفابلہ ہیں زیادہ سخق حکومت ہیں اور اُس کو تو

وسعت دولت بھی حاصل نہیں ہے۔

گراسلام نے اس ما ہلانہ عقیدے شے خلاف یہ واضح کیا کہ الٹر تعالے کے نز دیک حکومت وقیادت کا تعلق دولت و ثروت سے والبتہ نہیں ہے اور مذصب ونسل کیکے گے علامت ہیں بلکھلم و حکمت ، قوت وانصاف جس فرد ہیں پائے ماتے ہیں عمومًا اُس کا انتخاب عمل ہیں آتا ہے ۔

مَصْرِت شَمُوبِيُ عَلِيهِ السّلام نِے اس فطری قانون کے مُطابِق قوم کوجواب دیا :۔ اِنَّ اللّٰهَ اَصُطَعْنُهُ عَکنِکُهُ وَزَاءَ لا بَسْطَتُ فِی الْعِلْدِ وَ

الْجِسْمِ - ربقره آیت ۲۲۰)

بیشک اللہ نے تم پر طالوت کو فضیلت دی ہے اور اُس کو علم وسم کی وسعت عطائی ہے.

روح کامراقی :-جب بن و باطل کامعرکیریش آناب اور حق کی جانب سے مخلصین ف دا کارانہ جذبات کے سب تھ بن کی حمایت کے لئے اُٹھ کھڑے ہوتے ہیں اور اُنہیں خوداعتمادی سے زیادہ توکل علی الٹرکی روح سرابت کر جاتی ہے تو بھرکامیا بی کا مدار قوت اور کڑتا فراد پرنہیں ہوتا . بلکہ بساا و قات قلت کثرت پر غالب ہوجاتی ہے اور کٹرت مغلوب ہور مجاک کھری

> رى سى حقيقت كوقر آن كيم نے اس طرح اواكيا ہے:۔ كُوْمِ مِنُ فِحَةٍ قَلِيْ لَةٍ غَلَبَتُ فِئَ قَلِيْ كَاذِيْنِ انْهِ - دبقرہ آیت ۲۲۹)

منتی ہی جیوتی جماعتیں النّد کے حکم سے بڑی جماعتوں پر غالب آگئی ہیں اور النّد صبر کرنے والوں کے ساتھ ہوتا ہے۔

(الحدُلِنَّهِ "ہرایت کے چراغ "جلدا وّل ختم ہوئی)

بطوات کعبه رفتم بحرم کث ده دیرم که برون در تو کر دی که درونِ خانه آئی بزمین چوں سجده کردم ززمین ندا برآمد که مرابث اد کر دی توبسے وُفُدا تی

(الحدُّلِيْرُ برايت كحيراغ " جلدا وّل تم بروا)